

प्रवचन नं. १

शक्ति-१ - ता. ११-०८-१९७७

आत्मद्रव्यहेतुभूतचैतन्यमात्रभावधारणलक्षणा जीवत्वशक्तिः ॥१॥

समयसार, परिशिष्ट अधिकार है. सूक्ष्म तत्त्व है. अपूर्व बात है (लेकिन) कभी सुनी नहीं. रुचिसे सुनी नहीं. वैसे तो अनंतबार सुनी है, आडाडा ! समझमें आया ? क्या कइते हैं ? जो यह आत्मा वस्तु है न ? आत्मा वस्तु - पदार्थ - द्रव्य, वह तो शक्तिवान है. उसमें शक्तियां-गुण अनंत हैं. भगवान आत्मा ये शक्तिवान - स्वभाववान (है) और उसकी शक्तियां - स्वभाव अनंत हैं. उसमेंसे ४७ शक्तिका वर्णन यवेगा. चार और सात. है तो अनंत. (शक्ति) सूक्ष्म है भगवान ! उसमें आत्मद्रव्यमें दृष्टि करना वह सम्यग्दर्शन है. तो कइते हैं कि, आत्मद्रव्य है कैसा ? आत्मद्रव्यमें अनंत शक्ति जवतर (जैमके) शक्ति, यिति, दशि, ज्ञान, आनंद, सुख आदि अनंत शक्तियां हैं. संप्यासे अनंत (शक्ति) है, वस्तु अेक है. परंतु शक्ति अनंत हैं. समझमें आया ?

कितनी शक्ति है ? शक्ति है, भगवान ! परंतु आत्माकी जबर नहीं. आडाडा ! आत्मा क्या चीज है ? ये तो ४३-मिट्टी-धूल, रागादि, पुण्यादि तो पर वस्तु है, आडाडा ! जसको सम्यग्दर्शन प्रगट करना हो तो ये आत्म द्रव्यका विषय-(लक्ष किये बिना), ध्येय बिना सम्यग्दर्शन होता नहीं. धर्मकी पडेली सीढी (सम्यग्दर्शन है). छ ढाणामां आता है न ? 'भोक्ष महलकी प्रथम सीढी' सूक्ष्म बात है भगवान ! उसने अनंत बार मुनिपना दिया, पंचमहाव्रत अनंत बार दिया, २८ मूलगुण अनंत बार किया, वह तो सब रागकी किया है. ये कोई आत्माकी शक्ति या आत्माके गुणकी किया नहीं, आडाडा !

(यहां) कइते हैं कि, आत्मद्रव्य जो वस्तु है, ये अनंत अकम गुणसे ढरी है, क्या कडा ? अेक साथ अकम अनंत शक्तियां अंदर हैं और शक्तिका कमवर्ती परिणामन होता है. यहां (शुद्ध) परिणामन लेना है, विकार नहीं. यह भगवान आत्मा अेकइप वस्तु, उसके दरबारमें अनंत शक्तियां हैं. संप्यासे अनंत शक्तियां (हैं) कितनी ? कि आकाशका प्रदेश है न ? जव जो है, जव जो अनंत है, उससे अनंतगुणी संप्या परमाशुकी है. यह अेक चीज नहीं. यह तो टुकडा-अेक-अेक परमाशु - परम अशु-सूक्ष्म अशु-टुकडा करते-करते, करते

आभीरके टुकडेको परमाणु कहते हैं. तो इस जगतमें जवकी संख्या अनंत है, (और) उससे अनंतगुणा परमाणु है. और परमाणुकी संख्यासे तीन कालका समय अनंतगुना है, आडाडा ! अेक 'क..' बोलनेमें असंख्य समय जाता है. कालका असंख्य समय (है). उसके भंड करते-करते आभीरका समय रहे, अैसा अेक समय (है). (अैसा) 'क..' बोलनेमें असंख्य समय जाता है. तो ये त्रिकालका जो समय है, वह परमाणुकी संख्यासे अनंतगुना है. सूक्ष्म है भगवान ! अंदर तेरी यीज मडान है (उसकी) खबर नहीं. और ये तीन कालके समयसे आकाश नामका अेक पदार्थ है वह जगतमें - यौद ब्रह्मांडमें तो है. और खाली भाग- अलोक है, वहां भी आकाश है. तो ये आकाशका कोई अंत नहीं. यहां कहते हैं कि आकाश नामका अेक अरुपी पदार्थ है. वह जगत-लोक और अलोक, सबमें अेक पदार्थ व्यापक है. और उस आकाशका कहीं अंत नहीं. अनंत... अनंत... अनंत... अनंत... अनंत... अनंत... तो आकाशका कहीं अंत नहीं. अंत हो तो पीछे क्या ? आडाडा ! Logicसे न्याय समजना याहिये ना ? समजमें आया ? ये आकाश नामका जो पदार्थ है वह लोक-जगत, यौद ब्रह्मांड और अलोक खाली (भाग), वह सबमें व्यापक है. अनंत...अनंत...अनंत दसों दिशामें कहीं अंत नहीं. (अैसे) आकाश नामके पदार्थमें अेक परमाणु जो Point है - (वह) जितनेमें रुके उतनी जगहको प्रदेश कहनेमें आता है. अैसे आकाशके प्रदेश अनंत है. किससे अनंत है ? कि तीनकालके समयसे भी आकाशका प्रदेश अनंतगुना है. यह तो भगवानकी वकालत है, आडाडा !

उसने आत्मा क्या यीज है, ये समजनेका कभी प्रयत्न किया ही नहीं. अैसा किया, अैसा किया. अेक तो संसारमें पाप किया. धंधा-पानी, स्त्री-कुटुंब परिवार, धंधा अकेला पापका धंधा और धर्मके नामसे आया तो दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा ये (सब) पुण्यका धंधा (है) - यह आत्माका धंधा नहीं, आडाडा ! (यहां) कहते हैं कि आकाश नामका पदार्थ अमाप...अमाप... है. अनंत जव और अनंत परमाणु उसका क्षेत्र तो असंख्य योजनमें है. परंतु पीछे क्या है ? आकाश नामका पदार्थ है उसका अंत कहां ? उसका विचार कर पडले. नास्तिक हो तो पडले विचार कर. ये यीज आकाशका अंत कहां ? है अंत ? तो अंत कहां ? अैसी यीजको तर्कसे नहीं समजनेमें आती - स्वभावकी दृष्टिसे समजनेमें आती है. जो क्षेत्र है वह अंत बिनाका है. उसका प्रदेश अनंत है और उससे अनंतगुनी शक्तियां अेक जवमें है. आडाडा ! अरे..! भगवान तुजे खबर नहीं तेरे अंदरमें अनंती शक्तियां भरी पडी है, आडाडा !

परमात्मा त्रिलोकनाथ जिनेश्वरदेव दिव्यध्वनि द्वारा जगतको कहते थे. उनकी तो (बोलनेकी) उच्छ्वा है नहीं. वे तो सर्वज्ञ वीतराग है. उच्छ्वा बिना ओम ध्वनि निकलती थी और वर्तमान मडाविदेह क्षेत्रमें निकलती है. ये दिव्यध्वनिमें अैसा आया, प्रभु ! तू अेकबार सुन तो सही. तू अेक द्रव्य-वस्तु है लेकिन तेरी ज्ञान, दर्शन, आनंद अैसी अनंत शक्तियां है और कितनी

अनंत है ? कि आकाशका अंत नहीं छतने प्रदेश से भी अनंतगुनी शक्तियां तेरेमें है. सुभ आदि उसका गुण है. (अैसे) अनंत गुण है.

यहां कलते हैं कि, आत्मद्रव्य जो वस्तु है, उसमें अनंतगुण अकमी है. अकम माने अेक साथ अनंतगुण है. जैसे शक्करमें (मिसरीमें) भीठास, सफ़ेदाई अेक साथ है, अैसे आत्मामें ज्ञान, दर्शन, आनंद आदि अनंत शक्तियां अेकसाथ है. तो उसको अकम कलते हैं. अकम नाम अेक के पीछे अेक, अैसा नहीं. (लेकिन) अेक साथ अनंत शक्तियां है, आहाहा ! और उसकी पर्याय जो ढोती है-अवस्था- वल कभवती (है). अनंत गुणकी अेक समयमें अेक-अेक गुणकी अेक-अेक पर्याय-दशा-हालत अैसी अनंत गुणकी अेक समयमें कभसे ढोनेवाली अनंती पर्याय है. अैसा कठिन है बापू ! कहीं सुना भी नहीं ढो. जैनमें जन्म हुआ ढो, जे नारायण... (करके यवा जये). आहाहा !

परमेश्वर, जिनेश्वर त्रिलोकनाथ अैसा इरमाते हैं कि, प्रभु ! अेकबार सुन तो सली. तेरे घरमें क्या है ? समजमें आया ? तेरे घरमें तो अनंती शक्तियां है. अेक-अेक शक्ति भी अनंत सामर्थ्यवाली है और अेक-अेक शक्तिकी पर्याय अनंत है, आहाहा ! पर्याय समजते ढो ? अवस्था-हालत-दशा. जैसे सोना है, सुवर्ण है, वल द्रव्य है और उसमें पीलापन, यीकनापन, वजन है वल उसकी शक्ति-गुण है. उसकी अंगुठी, कडे, कुंडल ढोते हैं वल उसकी अवस्था है. समजमें आया ? अैसे तगवान आत्मा, अेक समयमें द्रव्य है. ये सांकली है, सांकली ढोती है न सांकली ? येन - (Chain) ढजार मकोडे ढोते हैं न उसमें ? मकोडेको क्या कलते हैं ? कडी, कडी कलते हैं. ढजार कडी के अेक समुदायकी अेक सांकली. अैसे आत्मा, 'असंभ्य प्रदेशी छती आत्मा'. अेक परमाणु (आकाशकी जितनी जगल) रोके उसका नाम प्रदेश (है). अैसा असंभ्य प्रदेशी तगवान आत्मा असंभ्य प्रदेशी है और ये असंभ्य प्रदेशमें, अेक-अेक (प्रदेशमें) अनंत गुण सर्व व्यापक है. समजमें आया ?

छन शक्तियोंमें पलली जवत्व शक्ति लेंगे. पलले थोडा सा विचार आया था. (लोग) सुने तो सली. अरे ! सुन तेरी यीज क्या है, तैया ? तुजे ढबर नहीं और धर्म ढो जये (अैसा कहांसे ढोगा ?). प्रभु ! जैन धर्म कोई अलौकिक यीज है. आहाहा ! ये कोई संप्रदाय नहीं है. यल तो वस्तुका स्वरूप है.

(यहां) कलते हैं, आत्म द्रव्य - जैसे सांकली है न ? येन कलते है येन. अैसे ढजार मकोडाकी कडी. अैसे सांकली समान आत्मा और कडी समान उसमें असंभ्य प्रदेश है और जैसे अेक कडीमें सोना - यीकनापन आदि है. ये उसके गुण है और उसमें अंगुठी-कडे आदिका, जो परिवर्तन ढोता है वल पर्याय है. अैसे तगवान आत्मा असंभ्य प्रदेशी है. यल जैन वीतरागके अलावा असंभ्य प्रदेशी किसीने देषा नहीं (है). सर्वज्ञ परमेश्वरके अलावा किसीने देषा नहीं है. सर्वज्ञ परमेश्वर जिनेश्वरदेव उन्ढोंने आत्माको असंभ्य प्रदेशी देषा है. यानी ?

अर्थात् अंदरमें यहाँ जो अंश है, वह यहाँ नहीं, यहाँ जो (अंश) है, वह यहाँ नहीं. यह (शरीर) तो जड़ है. परंतु आत्मा असंख्य प्रदेशी है. जैसे एक हजार कड़ी है, वैसे असंख्य प्रदेश है. (असंख्य प्रदेश है) वह उसका क्षेत्र है. द्रव्यकी / वस्तुकी क्षेत्र-भूमि है और उसमें ज्ञान आदि गुण है वह शक्ति है. ये शक्ति अनंत है और अनंत शक्तिकी समय-समयमें अवस्था पलटती रहती है; कुटस्थ नहीं - पर्याय पलटती है. द्रव्य-गुण कुटस्थ है. द्रव्य और शक्तियां कुटस्थ है. पर्याय पलटती है तो पर्याय पलटती है उसको कमवर्ती कहते हैं. कमे-कमे वर्तनेवाली दशाको कमवर्ती कहते हैं और अकसाथ रहनेवाले गुणको अकम कहते हैं. ये अकमवर्ती और कमवर्ती (गुण)-पर्यायके समुदायको आत्मा कहते हैं. भैया ! सूक्ष्म बात है. समजमें आया ?

(यहाँ) कहते हैं कि, कमवर्ती और अकमवर्ती जो द्रव्य / वस्तु है, इसमें एक साथ रहनेवाली शक्तियां और समय-समयमें बदलती दशा (एक साथ है). जब आत्माका भान नहीं था तो अज्ञान था और भान हुआ तो ज्ञानदशा हुई. ये अवस्था पलट गई. आत्माका भान नहीं था तब दुःख दशा थी और आत्माका भान हुआ तो मैं सच्चिदानंद प्रभु पूर्ण आनंद परमात्म स्वरूप हूँ. आहाहा ! ऐसी दृष्टि जब हुई तो दुःखकी दशा पलटकर आनंदकी दशा हुई, आहाहा ! समजमें आया ? तो ये दशा पलटती है उसको पर्याय कहते हैं.

यहाँ यह कहते हैं, कि, अकमवर्ती शक्तियां और कमवर्ती पर्याय उसका समुदाय वह आत्मा है. (सभी भाते) न्यायसे हैं. न्याय समजते हो न ? न्यायमें 'नी' धातु है. 'नी' नाम ज्ञानस्वरूप जैसी चीज है उस ओर ले जाना उसका नाम न्याय. न्यायमें 'नी' धातु है. तुम्हारे वकालतके न्याय नहीं हों ! यह तो भगवानके घरका (न्याय है).

जैसी चीज है उस ओर 'नी' धातु नाम ज्ञानको ले जाना, उसका नाम न्याय (है). तो यहाँ न्यायसे ये बात सिद्ध करते हैं. भगवान ! तेरी चीजको अकबार सुन तो सही. आहाहा ! उस चीजकी दृष्टि कभी तुझे हुई नहीं. क्योंकि जाने बिना दृष्टि कैसे हो ? जो चीज कैसी है वह ज्ञानमें आये बिना दृष्टि कहांसे हो ? समजमें आया ? तो ये चीजमें अकमवर्ती और कमवर्ती - पर्याय कमे-कमे होनेवाली और शक्ति एक साथ रहनेवाली - ये दो का समुदाय यह आत्मा है. समजमें आया ? भाषा तो सादी है भगवान ! भाव तो जो है वह है. यह तो तीन लोकके नाथकी बात है. पहले उसको ज्ञानमें सत्यताका निर्णय तो करना पड़ेगा कि नहीं ? तो ये कहते हैं. देजो ! "आत्मद्रव्य" - ये छतनी व्याख्या की. "आत्मद्रव्य.." आत्मद्रव्य क्या ? कि अनंत गुण और अनंत पर्यायका पिंड वह द्रव्य. समजमें आया ? सूक्ष्म बात है, भगवान ! ऐसी बात है.

अरेरे...! ऐसा मनुष्यपना और उसमें जैन धर्ममें अवतार (मिला). और ये चीज न समजे तो भव (भ्रमण)का अंत नहीं आयेगा, आहाहा ! यौरासीके अवतार करके (भर जायेगा).

अपनी यीजकी मडता और कीमतका प्याल नहीं करके, पर यीजकी कीमत और रागकी कीमत और अेक समयकी पर्यायकी कीमत करके, मिथ्यादृष्टि यार गतिमें धुमते हैं. समजमें आया ? आडाडा ! समजमें आता है न तैया ? भाषा बहुत (सादी है). छिन्दीमें थोडा फेरफार आ जाये. तुम्हारी जैसी छिन्दी है, वैसी नहीं है.

“आत्मद्रव्य”. पहले ये आत्मद्रव्यकी व्याख्या की. ‘आत्मद्रव्य’ शब्द पडा है न ? तो ये भगवान आत्मा वह द्रव्य. द्रव्य क्यों कडा ? कि जैसे जलमें तरंग उठते हैं, वैसे भगवान आत्मामें (पर्याय उठती है). ‘द्रवति इति द्रव्यम्’ पर्याय ‘द्रवति’ - पर्याय अंदरसे निकलती है, अंदर नजर करनी पडे. ये वीतरागका मार्ग संप्रदायमें पडे हैं, उनको सुनने (नहीं मिले). आडाडा ! बापू ! ये वस्तु क्या है ? अरिहंत कौन है ? और उन्होंने तत्त्व कैसा जाना ? और कैसा कडा ? ये सब समजे बिना जैनपना है नहीं. जैन कोई संप्रदाय नहीं (है). जैसी यीज अनंत गुण और पर्यायका पिंड है, ऐसी अंतरमें दृष्टि करनेसे मिथ्यात्वका नाश होता है और सम्यग्दर्शनकी उत्पत्ति होती है. उसका नाम जैन कहनेमें आता है, आडाडा ! समजमें आया ? “आत्मद्रव्य” - ये अेक शब्दका इतना अर्थ हुआ. कम-अकम गुण और पर्यायके पिंडको आत्मद्रव्य कहते हैं. समजमें आया ?

वस्तु अंदर भगवान आत्मा (यैतन्य स्वरूपी है). यह (शरीर) तो मिट्टी-धूल-जड है. अंदर कर्म भी जड है और अंदरमें पुण्य-पापका भाव होता है - कृत्रिम - अेक क्षणकी अवस्था (होती है) वह भी परमार्थसे तो अयेतन है, ये येतनकी जात नहीं, आडाडा ! और येतन जो है वह तो पुण्य-पापके परिणामसे रहित, अनंत शक्तिका संग्रहालय (है) संग्रहालय (अर्थात्) अनंत शक्तिका संग्रह+आलय - संग्रहका स्थान है, स्थानको आलय कहते हैं न ? आडाडा ! भगवान आत्मा तो.... आडाडा ! अनंत शक्तिका संग्रहालय (है). समजमें आया ? अेक शक्ति नहीं अनंत शक्ति है. प्रभु ! और अेक-अेक शक्तिमें भी अनंत ताकात है, आडाडा !

अेक-अेक शक्ति-गुणमें अनंत गुणका रूप है. थोडी सूक्ष्म बात आयी, आडाडा ! क्या कडा ? कि, जैसे आत्मा ज्ञानस्वरूप है और उसमें अेक अस्तित्व नामका - सत्ता - होनेपनाका अेक गुण है. अस्तित्व - ‘है’ न ? (है) न ? ‘है’ इसकी अेक शक्ति है और अेक ज्ञान शक्ति है. ऐसी अनंत शक्तियां (है). अेक ज्ञान शक्ति है, उसमें (आत्मामें) अस्तित्व गुण है ये अस्तित्व गुण उसमें (ज्ञानमें) नहीं. अेक शक्तिमें दूसरा गुण नहीं परंतु अेक शक्तिमें दूसरी शक्तिका रूप है. अर्थात् भगवान आत्मा ज्ञान है. यहां जवतर शक्ति कहेंगे. जवतर शक्तिमें तो अनंत आनंद, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य यह लेंगे. ऐसी जो आत्माकी जवत्व शक्ति है, ये शक्तिमें अस्तित्व नामका अेक दूसरा गुण है. (उसका रूप है). ये गुण है तो वह आनंद प्राण, ज्ञान प्राणमें (अस्तित्व) गुण नहीं आता, परंतु गुणका रूप आता

है. अर्थात् ये आत्मा ज्ञान 'है', आनंद 'है', तो यह 'है' नामकी शक्तिका रूप अपनी वजहसे अंदरमें आया. आहाहा ! सत्ताका गुण भिन्न रहा. वह तो निमित्त है. ओक गुणमें दूसरा गुण तो निमित्त है, सूक्ष्म बात है, भगवान !

यह तो तीनलोकके, नाथ जिनेश्वरका पंथ-मार्ग है, भाई ! समझमें आया ? यहां ओक ज्वतर शक्ति कहेंगे जिसमें ज्ञान-दर्शन-आनंद और वीर्य ये शक्तिसे ज्वतर-ज्व जिता है. अपने ज्वका टिकना-रहना (यस शक्तिसे होता है). ज्वत्वशक्ति पहले क्यों ली ? कि समयसारकी दूसरी गाथामें आया 'जीवो चरित्तदंसणणाणद्धिदो' पहली ज्वतर शक्ति वहांसे ली है. पहली गाथा वह है 'वंदितु सव्वसिद्धे ध्रुवमचलमणोवमं गदिं पत्ते, वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुदकेवलीभणिदं' १. कुंदकुंद आचार्य कहते हैं कि, मैं आत्माकी बात कहूंगा - 'सुदकेवलीभणिदं' श्रुतकेवली और केवलीओंने कही हुई बात हम तुमको कहेंगे. जिन भगवानको तीन कालका ज्ञान है, उन्होंने आत्मा क्या कहा ? वह तुमको कहेंगे, आहाहा ! और (वैसा ही) कहते हैं. ऐसा कहा कि, हम भी हमारी पर्यायमें पूर्ण सिद्ध भगवान जो अशरीरी हुअे, इन अनंत सिद्धोंको हम अपनी पर्यायमें स्थापन करते हैं और तुम्हारी - श्रोताकी पर्यायमें भी अनंत सिद्धोंको स्थापन करके हम समयसार कहेंगे, आहाहा ! सूक्ष्म बात है प्रभु ! क्या हो सकता है ? मार्ग तो अभी गुम हो गया है, और कुछ का कुछ मान लिया है, आहाहा !

भगवान आत्मा ! ज्वतर शक्ति कहते हैं न ? ज्वन माने टिकना. किससे (टिकना) ? अपने ज्ञान प्राण, आनंद प्राण, दर्शन प्राण, वीर्य प्राण - ये अंदर शक्तियां है. ये शक्तिके प्राणसे ज्वन जाता है. ये शरीरसे जाता है, कि रागसे जाता है, ऐसा नहीं. यहां कहते हैं कि, ज्वतर शक्तिमें चार प्राण-भावप्राण है. अंदरमें ज्ञान प्राण आया तो ज्ञानमें अस्तित्वगुण है. यह गुण आया नहीं. परंतु ज्ञान 'है' ऐसा आया, यह अस्तित्व(का) रूप उसका है.

श्रोता : रूप यानी निमित्त आया ?

पूज्य गुरुदेवश्री : नहीं, रूप यानी अपनी शक्तिका स्वरूप आया. अस्तित्व नामका ज्ञानमें स्वरूप है. आहाहा ! ओकबार सुने तो सही, प्रभु ! यह बात कोई साधारण नहीं. ये कहीं सुननेमें आती नहीं तीन लोकके नाथ जिनेश्वरदेव आत्माको ऐसा इरमाते हैं और ऐसा है कि, जिसमें अनंत शक्तियां है. यह ओक शक्ति दूसरी शक्ति रूप होती नहीं. नहीं तो अनंत संख्या रह सकती नहीं. परंतु ओक शक्तिका रूप प्रत्येकमें आता है. ज्वतर शक्ति (यानी) ज्वन. आत्माका ज्वन ज्ञान, दर्शन, आनंदसे है, आहाहा ! समझमें आया ? उसका टिकना (वह) अपने ज्ञान-दर्शन-आनंदसे टिक रहा है. बाहरसे टिक रहा है, शरीरमें रहनेकी योग्यतासे टिक रहा है ऐसा है नहीं. ये टिक रहा है अपने ज्ञान, दर्शन, आनंद, सत्ता, वीर्य उससे वह टिक रहा है. ज्वकी ज्वन शक्तिसे (टिक रहा है). ज्वकी ज्वन शक्ति-

गुण-स्वभाव है. इस शक्तिमें यार प्राण (है). ज्ञान, दर्शन, आनंद, वीर्य-उसके ज्वनका ये प्राण है. इसमें अक ज्ञान प्राण है. सब कलते हैं न ? कि इस प्राणसे आत्मा जता है. पांय इन्द्रिय, मन-वचन-काया ये तो जउका प्राण है. यह तो मिट्टीके प्राण है, प्रभु ! और तेरी अशुद्ध पर्यायमें इस प्राणसे ज्वन है, वह भी तेरा वास्तविक ज्वन नहीं. अशुद्ध क्या (है) ? पांय इन्द्रियकी योग्यतासे, आयुष्यमें रहनेकी योग्यतासे, श्वासकी योग्यतासे जो रहता है, वह अशुद्ध प्राणकी पर्याय है - वह तेरी यीज नहीं, आलाहा ! तेरी यीजमें वह गुण (भी) नहीं और तेरी यीजमें उसकी पर्याय भी नहीं. आलाहा ! यह तो बालकी पाल (उतारने जैसा है). बात तो ऐसी है, बापू ! आलाहा !

(यहां) कलते हैं कि, अक बार सुन तो (सही) प्रभु ! तू कैसा है ? कहां है ? किस प्रकारसे है ? समजमें आया ? ऐसा जाने बिना उसमें (स्वप्नमें) दृष्टि होगी नहीं और दृष्टि हुअे बिना सम्यग्दर्शन-सत्य दर्शन-जैसी सत्य वस्तु है, जैसा सत् है, वैसा दर्शन कभी होगा नहीं. समजमें आया ? आलाहा !

यहां दूसरा कलना है कि, “आत्मद्रव्यके कारणभूत” आत्मद्रव्यके कारणभूत, है ? “ऐसे यैतन्यमात्र भावका धारण जिसका (लक्षण)...” वह यैतन्य मात्र यैतना...यैतना...जानना-देखना, यैतनमात्र, ऐसा जो अपना भावका धारण जिसका (लक्षण है). आलाहा ! यह तो भाई अध्यात्म शब्द है. ये कोई कथा-वार्ता नहि है. यह तो अक-अक शब्दमें कितनी गंभीरता है (उसकी) पहर नहीं, आलाहा !

कलते हैं कि “आत्मद्रव्य...” वस्तु - भगवान, उसका कारणभूत. आत्मद्रव्यको टिकनेका-ज्वतरका-ज्वनका, “...कारणभूत ऐसे यैतन्यमात्र भावका धारण (जिसका लक्षण अर्थात् स्वप्न है)” यैतन-जानना-देखना स्वभाव, ऐसे भावका (धारण करनेवाला है). आत्मा भाववान है और यैतनमात्र उसका भाव है. समजमें आया ? आलाहा ! ऐसी बात है, बापू ! कभी समज नहीं, सुनी नहीं, आलाहा ! अरेरे...! जूंदगी यली जाती है और देह छूटते ही कहां भवाब्धि - यौरासीके अवतारमें यला जायेगा, भाई ! वहां तेरी दया करनेवाला कोई नहीं है. वहां कोई पांजरापोण (पिंजरापोल = गौशावा) नहीं है (कि, तेरी दया करे). तेरी यीज तेरे शरणमें है उसकी तो तुजे पहर नहि. समजमें आया ?

यहां कलते है प्रभु ! अक बार सुन तो सही. यहां तो भगवान कलकर बुलाते हैं. आचार्य महाराज दिगंबर संत, अमृतचंद्र आचार्य ७२ गाथामें भगवान आत्मा (कलकर बुलाते हैं). अरे...! उसे कैसे बैठे ? आलाहा ! पामरतामें पडे हुअे को प्रभुता कलनेमें (उसको) प्रभुता कैसे बैठे ? आलाहा ! आगे आयेगा आत्मामें प्रभुत्व नामकी शक्ति है. सातवी प्रभुत्व नामकी शक्ति है. यह पहली शक्तिका वर्णन है.

(यहां) कलते हैं कि, ज्वन शक्तिसे आत्मा जता है, टिकता है. तो ज्वन शक्तिका -

आत्मद्रव्यका कारण कौन ? यैतन्यमात्रभाव (कारण) है. आहाहा ! उसका कारण - यैतन्यमात्र आत्मद्रव्यका कारण-उसका धारण (यैतन्य मात्र भाव) जिसका लक्षण है. ये तो वीतरागी भातें हैं. बापू ! क्या कहा ? “आत्मद्रव्यके कारणभूत जैसे यैतन्यमात्रभावका धारण जिसका लक्षण है” (अर्थात्) यैतनमात्र धारण करना जिसका लक्षण है. समजमें आया ? अरे..! जैसे तो ११ अंग और ८ पूर्वके शास्त्र पढ लिये, उसमें क्या हुआ ? आहाहा !

भगवान आत्मा-आत्मद्रव्य-वस्तु उसका टिकनेका कारण, ऐसा यैतनमात्र भाव उसका धारण (किया हुआ है). - आत्माने यैतनमात्र भावको धारण किया है. उसने कभी राग और शरीरको धारण किया ही नहीं. समजमें आया ? समजमें आये उतना समजना, प्रभु ! यह तो भगवानकी बात है, आहाहा ! जिनेश्वरदेवकी यह बात और कहीं नहीं है. जिनेश्वर, त्रिलोकनाथ परमात्मा महाविदेहमें तो बिराजते हैं, समजमें आया ? यह आत्म विज्ञान है. लोग कहते हैं, वह विज्ञान नहीं. यह तो विज्ञान का विज्ञान है, प्रभु ! तुने कभी किया नहीं, तेरे भयालमें कभी आया नहीं. भगवान आत्मा अनंत शक्तिका पिंड है, वह तुजे भयालमें कभी आया नहीं. तेरी कीमत तुने की नहीं. समजमें आया ?

“आत्मद्रव्यके कारणभूत जैसे यैतन्यमात्र भाव....” जब कि यिति शक्ति बादमें कहेंगे. परंतु जवन शक्तिका यितिशक्ति लक्षण है. बादमें दूसरी यिति शक्तिमें कहेंगे समजमें आया ? परमार्थसे तो जवनशक्ति ज्ञान, दर्शन, आनंद प्राण है. प्राण नाम उसकी शक्ति है. त्रिकाण भगवान आत्मा ज्ञानसे, आनंदसे, दर्शनसे, वीर्यसे (टिका हुआ है). अंदर वीर्य नाम शक्ति-आत्मबल-जो स्वरूपकी रचना करे. ऐसा आत्मामें बल है. ऐसा ज्ञान, दर्शन, आनंद और बल उसका धारण, आत्मद्रव्यका कारण, (ऐसा) यैतनमात्र (का) धारण (है). आहाहा ! अरे... प्रभु ! ऐसी बात सुनने न मिले. और कहां जायेगा ? और (क्या) होगा ? और क्या करो, व्रत करो, उपवास करो, भक्ति करो, पूजा करो, (उसमें धर्म मान लिया). भाई ! ये तो सब रागकी किया है. ये धर्म नहीं - भगवान ! तुजे भबर नहीं, आहाहा !

यह भगवान आत्मा तो यैतनमात्रका धारण जिसका स्वरूप-लक्षण का अर्थ (स्वरूप) किया. आत्म पदार्थ, उसका कारण यैतन्य मात्र जिसका धारण (है). यैतनमात्र जिसका स्वरूप (है). (उसने) इसको धारण किया है. साधारणमें उपदेश चलता है, उससे अलग यीज है. समजमें आया ? यह जवतर शक्तिकी बात चलती है.

हमको समयसार तो ७८ की सालसे मिला है. ५५ वर्ष हुआ. हमे छोटी उमरमें धंधाका विचार था नहीं, पिताजकी दुकान थी, हम तो दुकान पर ली शास्त्र पढते थे. कहते हैं कि, तेरे घरमें क्या है प्रभु ? कि तेरे घरमें तो जवत्वशक्ति पडी है, आहाहा ! समजमें आया ? ये शक्ति कैसी है ? कि यैतन्य लक्षण जिसका धारण है ऐसा स्वरूप, ऐसी जवत्वशक्ति (है). देओ ! और ये शक्तिवान जो शक्तिको धरनेवाला, ऐसी अनंत शक्तिको धरनेवाला

द्रव्य-वस्तु जो है, उस पर दृष्टि करनेसे सम्यग्दर्शन होता है. शक्ति (के भेद) उपरसे भी (सम्यग्दर्शन) नहीं (होता). शक्ति तो गुण है. तो गुणी के गुणके भेददृष्टिसे भी सम्यग्दर्शन नहीं होता, आहाहा ! समझमें आया ? ऐसी बात है, भाई !

ये जवत्वशक्ति “(आत्मद्रव्यके कारणभूत जैसे यैतन्यमात्रभाव रूपी...)” वस्तु भाववान है और शक्ति है वह भाव (है) शक्कर (मिसरी) है वह भाववान और भीढास और सकेदाई है उसका भाव (है). जैसे भगवान आत्मा द्रव्य है वह भाववान और जवत्वशक्ति-ज्ञान-दर्शन प्राण उसका भाव (है). अभी पर्यायकी बात नहीं.

“आत्मद्रव्यके कारणभूत जैसे यैतन्यमात्रभावरूपी भावप्राणका धारण करना” भाषा देओ ! (यैतनमात्र भाव) भावप्राण (है). ४३ पांय छन्द्रीय, मन-वचन-काया, आयुष्य और श्वास ये दस, (४३ प्राण है). वह तो ४३ की दशा है. अपनी पर्यायमें पांय छन्द्रीय क्षयोपशमपने हो. वह भी अशुद्ध निश्चयनयसे पर्यायमें है. उसके द्रव्यमें-गुणमें है नहीं, आहाहा ! और वह जवत्वशक्ति यैतन्यभावप्राण-आनंद और ज्ञानमें धरनेवाला, ऐसा शक्तिका धरनेवाला भगवान ! उस पर दृष्टि करनेसे यैतन भावप्राणकी परिणति—कमवर्ती दशा होती है, आहाहा ! समझमें आया ? फिर से (लेते है).

वस्तु जो यैतन शक्तिवान है, उसकी यैतन्य शक्ति है. यैतन यह द्रव्य है. उसकी शक्ति - यैतन्य शक्ति वह भाव है और इस भावको धरनेवाला भगवान उपर दृष्टि देनेसे पर्यायमें सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रकी पर्याय होती है. ये कमवर्ती (पर्याय) होती है, आहाहा ! उसकी भी तकरार, कमवर्ती की भी तकरार.

आज (पेपरमें) आया है. (अक आर्जिका कलती है) कि, ‘अक द्रव्य दूसरे द्रव्यका नहिं करता है ?! क्या है ? अकांत है.’ अरे..! भगवान ! ‘क्या कर्म बिना आत्मामें विकार होता है ? और तुम चार गतिमें रभडते हो तो क्या कर्म बिना रभडते हो ?’ (ऐसा उनको लगता है). आहाहा ! अपनी त्रांति और विकारसे चार गतिमें रभडता है. ‘कर्म बियारे कौन ?’ वह तो धूल-मिट्टी-४३-पर है. ‘अपने को आप लूके हैरान हो गया’ अपनी यीज आनंदकंद प्रभु, सख्यिदानंद, आनंद स्वरूप (है). सत् नाम शाश्वत आनंद स्वरूप, यिदानंद—ज्ञान—आनंदका भान बिना, उसकी कीमत किये बिना मिथ्यात्ममें ‘राग आदि भेरा है’. ‘शरीर भेरा है’. ‘पर्याय जितना मैं हूँ’ ऐसा मान कर, त्रांतिसे चार गतिमें रभडता हूँ, समझमें आया ?

कलते हूँ कि, ज्ञानमात्रभाव आत्मामें भावप्राणका धारण करना कि, ज्ञान-जानना, दर्शन-देखना, आनंद-सुभरूप दशा-सुभरूप शक्ति और वीर्य-बल शक्ति उसका - भावप्राणका धारण करना (वह) जवत्वशक्तिका स्वरूप है. ध्यान रभे तो समझमें आये ऐसा है-कुछ समझमें नहीं आये ऐसा नहीं है. ऐसी कोई यीज नहीं है, आहाहा ! यह तो परमेश्वर (का)

वीतराग का मार्ग (है) बापू !

ये सब शरीर और वाणी धूल-घाड़ी है. ये पैसा, स्त्री, पुत्र, कुटुंब सब मसानकी शान है. मसानका भपका. मसान समजते हो ? स्मशानमें जो लड़ी होती है न ? उसमें फ़सफ़ूस (फ़ोस्फ़रस) होता है. यमक-यमक होता है. छोटे बच्चे स्मशानमें जाये तो उसे कहे कि, भूत लगता है. (वह) भूत नहीं-लड़ीमें फ़सफ़ूस होती है (उसकी यमक होती है). ऐसे जगतमें आत्माके सिवा जगतकी ये सभी (यीज) फ़सफ़ूस है, समजमें आया ? आहाहा ! ये पैसे, और बडे बंगले धूलमें तेरी यीज है क्या ? उसकी कीमत करता है, प्रभु ! ये अनंत लक्ष्मीका पिंड प्रभु ! अनंत-अनंत लक्ष्मीका-शक्तिका पिंड प्रभु ! उसकी तो प्रतीति नहीं-कीमत नहीं और अज्ञानीको इस धूलकी कीमत (है). आहाहा ! ये पैसेवाले हैं, और ये सेठ हैं. सेठ है कि डेठ है सब ? धूलमें भी सेठ नहीं, कौन कहता है सेठ ?

यहां तो अनंत आनंदका नाथ, अनंत शक्तिका भंडार उसकी जिसको प्रतीत और अनुभव हो वह श्रेष्ठ और सेठ है. यहां तो ऐसी बात है, बापू ! दुनियासे दूसरी जात है. बहुत आदमी बाहरसे आये हैं, सेंकडो गाँव दूरसे आये हैं. थोडा सुने तो सही ! यहां छतनी अनुकूलता-प्रतिकूलता हो. घर जैसी अनुकूलता यहां कहांसे हो ? तो भी बाहरसे आये हैं न ? सुने तो सही कि प्रभु ! तेरी यीज क्या है ? तुने कभी सुना नहीं और तेरी यीजकी कीमत तुजे आयी नहीं. क्योंकि नजरमें वह यीज ली नहीं. वर्तमान नजरमें छन्दियका विषय लक्षमें लिया, समजमें आया ? और भगवान आदि पर द्रव्य है उसे लक्षमें लिया. वह भी छन्दियका विषय है.

समयसारकी ३१ गाथा है उसमें ऐसा लिया है, थोडी सूक्ष्म बात है. ‘जो इन्दिये जिगिता’ जो छन्दियको जितते हैं वह अनिन्दियकी कीमत करते हैं. अनिन्दिय भगवान आत्मा अनंत शक्तिका पिंड प्रभु ! (है). छन्दियके तीन प्रकार (है). (१) जड छन्दियां. (२) और अंदर भाव छन्दिय जो ज्ञानसे पर जाननेमें आता है ये भाव छन्दियां. (३) और (छन्दिय-विषय) ज्ञानमें छन्दियमें जाननेमें आते हैं भगवान, स्त्री, कुटुंब ये सब छन्दिय है. तीन (प्रकारकी) छन्दियां (है) आहाहा ! क्योंकि (ये सब) छन्दियका विषय है. भगवान त्रिलोकनाथ परमात्मा वह भी छन्दियका विषय है. अपना स्वरूप (है) यह अनिन्दियका विषय है, समजमें आया ? तो ३१ गाथामें ऐसा कहा “जो इन्दिये जिगिता णाणसहावाधियं मुणदि आदं” जिसने द्रव्य छन्दिय, भाव छन्दिय और छन्दियका विषय, तीनका लक्ष छोडकर, ज्ञान स्वभावको अधिक-भिन्न किया है. भगवान आत्मा ज्ञान स्वभावसे परसे अधिक-भिन्न पडा है, उसका अनुभव करे. (उसने) छन्दियको छत लिया (कहते हैं). और उसका नाम सम्यक्दृष्टि है. आहाहा ! यहां ये कहते हैं. देपो !

“भावप्राणका धारण करना जिसका लक्षण है...” जवत्त्व शक्तिका भाव - ज्ञान, दर्शन,

આનંદ યે પ્રાણ હૈ. પ્રાણી આત્માકા યે પ્રાણ હૈ. આહાહા ! ભગવાન આત્મા પ્રાણી, ઉસકા આનંદ, જ્ઞાન, દર્શન આદિ પ્રાણ હૈ. (ઇસ) પ્રાણસે ઉસકા જીવન હૈ, આહાહા ! ઐસે પ્રાણસે જીતા હૈ, પ્રાણસે જી રહા હૈ ઓર જીએગા, આહાહા ! ઐસી બાતે હૈં ! સમજમેં આયા ?

જીવતર શક્તિ જો હૈ વહ અનંત શક્તિમેં વ્યાપક હૈ. ક્યા કહા સમજે ? અનંત શક્તિયાં-ગુણ હૈ. શક્તિયાં કહો, ગુણ કહો, સ્વભાવ કહો, ભાવ કહો (સબ એકાર્થ હૈ) તો એક ભાવ સર્વમેં વ્યાપક હૈ. અનંતમેં વ્યાપક હૈ. આહાહા ! વઢવાણમેં કિસીને એક મુમુક્ષુકો પુછા થા કિ, 'નિમિત્તસે કુછ હોતા નહીં ઐસા માનતે હો તો સોનગઢ ક્યોં જાતે હો ?' તો ઉન્હોંને જવાબ દિયા કિ, 'નિમિત્તસે હોતા નહીં યે દૃઢ કરને કો જાતે હૈં'.

યહાં તો કહતે હૈં, ભગવાન આત્મા ! પ્રાપ્ત હોતા હૈ વહ નિમિત્તસે નહીં, ઐસા કહતે હૈં, આહાહા ! ભગવાનકી વાણીસે ભી પ્રાપ્ત નહિ હોતા. ઐસા પરમાત્મપ્રકાશમેં હૈ. દિવ્યધ્વનિસે ભી પ્રાપ્ત નહીં હોતા. (ક્યોં) કિ દિવ્યધ્વનિ પર હૈ. ઉસકા લક્ષ છોડકર અપનેમેં લક્ષ કરતા હૈ, તબ પ્રાપ્ત હોતા હૈ. ઐસી બાતે હૈં, બાપૂ ! આહાહા ! ભાગ્યવાનકો તો સુનને મિલે ઐસી ચીજ હૈ. યે પૈસેવાલે ભાગ્યવાન વહ તો સબ ઠીક હૈ. વે તો સબ ભાંગશાલી હૈ, આહાહા ! ભાગ્યશાલી નહીં-ભાંગશાલી (હૈ). વીતરાગકી બાત - અંતરકે તત્ત્વકી સૂક્ષ્મતા જિસે સુનને મિલે-વહ ભાગ્યશાલી જીવ હૈ.

યહાં કહતે હૈં કિ “ચૈતન્યમાત્રભાવરૂપી ભાવપ્રાણકા ધારણ કરના જિસકા લક્ષણ હૈ ઐસી જીવત્વ નામક શક્તિ જ્ઞાનમાત્ર ભાવમેં-આત્મામેં ઉછલતી હૈ”. યે ક્યા કહતે હૈં ? પહલેસે (આચાર્ય ભગવાન) ઐસા કહતે આયે હૈં કિ, આત્મા ‘જ્ઞાનમાત્ર’ હૈ. ઐસા કહતે આયે હૈં. ‘જ્ઞાનમાત્ર’ કહતે હૈં તો એકાંત હો જાયેગા. તો અનંત શક્તિ હૈ ન ? ભાઈ ! સુન તો સહી પ્રભુ ! જ્ઞાનમાત્રકે સાથમેં - યે જીવ જ્ઞાન સ્વરૂપ હૈ, ઐસી જ્ઞાનકી પર્યાય જબ હોતી હૈ તો ઉસ પર્યાયમેં સાથમેં અનંત શક્તિયાં ઉછલતી હૈ. અનંત શક્તિકી પર્યાય ઉસમેં પરિણમતી હૈ. સમજમેં આયા ? ઐસા માર્ગ હૈ, પ્રભુ !

“ચૈતન્યમાત્રભાવરૂપી ભાવપ્રાણકા ધારણ કરના જિસકા લક્ષણ હૈ ઐસી જીવત્વ નામક શક્તિ જ્ઞાનમાત્ર ભાવમેં - આત્મામેં ઉછલતી હૈ.” દેખો ! ક્યા કહા ? જીવત્વ શક્તિ હૈ (ઓર) જ્ઞાન, દર્શન, આનંદ, બલ પ્રાણ, ઐસી અનંત શક્તિયાં (હૈ). હમને ‘જ્ઞાનમાત્ર’ આત્મા કહા તો આચાર્ય કહતે હૈં કિ, ઉસમેં ‘જ્ઞાનમાત્ર’ અકેલા નહીં - પરંતુ જ્ઞાનમાત્રકા જહાં ભાન હુઆ તો જ્ઞાનકી પરિણતિમેં - પર્યાયમેં આનંદ આયા. તો (ઇસ) પર્યાયમેં - જ્ઞાનકી પર્યાયમેં અનંતી શક્તિકી પર્યાય ઉછલતી હૈ. અનંત શક્તિકી પર્યાય સાથમેં આતી હૈ. સમજમેં આયા ? સમજમેં આયે ઉતના સમજો પ્રભુ ! આહાહા !

‘સહેજે સમુદ્ર ઉલ્લસ્યો, જેમાં રતન તણાંણા જાય. ભાગ્યવાન કર વાવરે, એની મોતીએ મુઠીયું ભરાય’ આહાહા ! સમુદ્ર ઉલ્લસ્યો છે, ભગવાન ! ઓર અંદર તેરા અનંત ગુણકા

સમુદ્ર ઉમડ પડા છે. ઇસમેં 'જ્ઞાનમાત્ર' કહા થા તો જ્ઞાનમાત્રમેં એકાંત હો જાતા છે, એસા તુજે લગે તો એસા છે નહીં. આત્મા જ્ઞાનમાત્ર છે, એસી દૃષ્ટિ-અનુભવ હુઆ તો જ્ઞાનકી પર્યાય કે સાથ અનંત ગુણકી પર્યાય સાથમેં ઉછલતી છે. આહાહા !

શ્રોતા : શક્તિયાં જાનનેમેં આતી હેં ?

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : જાનનેમેં આતી છે ઓર પરિણમનમેં આતી છે. જાનનેમેં તો પરિણમન છે ઇતના છે. અનંત ગુણકી પર્યાય જ્ઞાનમાત્રકી પર્યાયકે સાથમેં છે, સમજમેં આયા ?

યહ તો શક્તિકા વર્ણન છે ના ? તો દ્રવ્યસ્વરૂપ, ઉસકી શક્તિયાં ઉસકી પર્યાયમેં નિર્મળપણે પરિણમે ઉસે યહાં પર્યાય ગિનનેમેં આયા છે - મલિનપણે પરિણમેં યે બાત યહાં નહીં છે. યે ક્યા કહા ? કિ શક્તિ છે યહ શુદ્ધ છે ઓર ભગવાન ભી શુદ્ધતા ધરનેવાલા શુદ્ધ છે, તો ઉસકી દૃષ્ટિ કરનેસે પર્યાય ભી શુદ્ધ હોતી છે. સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્ર કી પવિત્ર પર્યાયકો યહાં ક્રમવર્તી પર્યાયમેં ગિના છે. રાગ હોતા છે ઉસકો ક્રમવર્તી પર્યાયમેં નહીં દિયા છે. વિશેષ કહે...



ઉપયોગ નામનું લક્ષણ કહ્યું. કોનું લક્ષણ કહ્યું ? - કે જીવનું, આત્માનું. હવે આત્માનું જે લક્ષણ છે તે નિમિત્તને અવલંબને થાય એ લક્ષણ જ નથી. ભાઈ ! આ તો ધીરા થઈને સમજવાની વાત છે. આત્માનું લક્ષણ ઉપયોગ છે, લક્ષ આત્મદ્રવ્ય છે. હવે એ ઉપયોગ નામના લક્ષણ વડે જે લક્ષણ લક્ષને જાણે એવા લક્ષણમાં પરજોયને જાણવાનું જે અવલંબન થાય તે ઉપયોગ જીવનો નહિ.

(પરમાગમસાર-૫૧૫)

प्रवचन नं. २

शक्ति-१ - ता. १२-०८-१९७७

आत्मद्रव्यहेतुभूतचैतन्यमात्रभावधारणलक्षणा जीवत्वशक्तिः ॥१॥

यह समयसार यलता है. उसमें शक्तिका अधिकार है. शक्तिका अर्थ क्या ? आत्मा जो वस्तु है, आत्म पदार्थ है उसमें गुण है. जैसे शक्कर (मिसरी) पदार्थ है, उसमें भीकास-सङ्केदाई शक्ति है. जैसे आत्मद्रव्य है वह वस्तु है और इसमें जवत्व आदि शक्तियां- ये गुण है. प्रश्न तो यह यलता है कि, अभी तक ऐसा कहा कि, आत्मा ज्ञानमात्र है, ऐसा कहते आये हैं. समजमें आया ? वह शरीर नहीं, वाणी नहीं, मन नहीं, पुण्य-पापरूप भी नहीं और अक समयकी पर्यायमात्र भी नहीं. सूक्ष्म बात (है). समजमें आया ? भगवान आत्मा सर्वज्ञ जिनेश्वरदेवने जैसा देखा है, जैसा है वैसा कहते हैं. तो कहते हैं कि 'ज्ञानमात्र' आत्मा ऐसा कहते आये (हैं) तो इसमें अकांत नहीं हो जाता ? क्या कहा ? तो दूसरे गुण है नहीं, ऐसा हो जाये. तुम तो ज्ञानमात्र भगवान आत्मा उसकी दृष्टि करो तो तुम्हें आनंद आयेगा और उसका नाम धर्म है. ऐसा आपने कहा. तो उसमें तो ज्ञानमात्र अक ही गुण आया. अक ही गुण आया (और) अनंत गुण तो आये नहीं. आहाहा ! समजमें आया ? तो उसमें तो अकांत हो जाता है. (यहां) अनेकांतकी यर्था करते (हुअे आचार्य भगवान) शक्तिका वर्णन करते हैं. बात तो ऐसी है, भगवान ! क्या करे ? अभी इस बात(में) ऐसा फेरफार हो गया. 'योर कोटवालको दंडते हैं' ऐसी बात हो गयी. आहाहा ! क्या करे ? उसे ये थिज प्यालमें आयी नहीं.

यहां कहते हैं, आया न ? "आत्मद्रव्यके कारणभूत जैसे चैतन्यमात्र भावका धारण जिसका लक्षण अर्थात् स्वरूप है ऐसी जवत्व शक्ति" आत्मामें है. आत्मामें जवत्व शक्ति है तो इसका यार बोल मुप्यरूपसे लिया. ज्ञानप्राण, दर्शनप्राण, आनंदप्राण (और) वीर्यप्राण. (सब) त्रिकाली (है). ये त्रिकाली जवन शक्तिमें भावप्राण धारण करनेकी शक्ति है. आहाहा ! समजमें आया ? ये पुण्य-पापका धारण करना उसकी शक्तिमें नहीं है. आहाहा ! दया, दान, व्रत, भक्ति आदि शुभ भाव हो परंतु वह (विभाव) शक्तिका (-स्वभावका) धारण करना उसका स्वभाव नहीं. आहाहा ! सूक्ष्म बात भगवान ! यह तो परमात्मा जिनेश्वरकी वाणी

है

(यहां) कहते हैं कि, हमने ज्ञानमात्र आत्मा जो कहा-तो द्रव्य स्वभावमें ज्ञानमात्रके कारण दृष्टि ज्ञान उपर गई. वर्तमान पर्याय जो परको देखती है, वह तो विपरीत दशा है. ये ज्ञानकी पर्याय अपने (स्वयंको) देखनेमें जाती है. आहाहा !

भगवान आत्मा ! द्रव्य-वस्तु (और) जवत्वशक्ति ये गुण - वस्तु और उस द्रव्य पर दृष्टि पडती है, द्रव्यकी दृष्टि जब होती है, तो पर्यायमें ये जवत्व शक्तिका परिणामन आता है. जवत्वशक्ति है (यह) त्रिकाल ज्ञान, दर्शन, आनंद प्राणको धरनेवाली शक्ति ये गुण है. द्रव्य त्रिकाली है, उसकी शक्ति (त्रिकाली) है और वह वर्तमान पर्याय त्रिकाली द्रव्यको जब पकडती है, तब जवत्व शक्तिका तीन रूप हो जाता है. सूक्ष्म बात है, भगवान ! ये जवत्व शक्ति द्रव्यमें भी व्यापक है, गुणमें भी व्यापक है और पर्यायमें भी व्यापक हो जाती है. धीरेसे समजनेकी चीज है, बापू ! ये वीतराग सर्वज्ञ परमेश्वर जिनेश्वरका कथन बहुत सूक्ष्म (है) और अपूर्व बात है. कभी उसने किया ही नहीं.

जो ज्ञानकी वर्तमान दशा है, (वह) उसकी है उसको देखती नहीं और जो पर्याय जिसकी नहीं उसको देखती है. वह तो विपरीत दृष्टि है, आहाहा ! समजमें आया ? तो कहते हैं कि जब ज्ञानकी पर्याय-अवस्था जवत्व शक्तिको धरनेवाला जव - आत्मा उस पर जब दृष्टि पडती है, तो जवत्व शक्ति तीन रूप परिणामन करती है. समजमें आया ? (शक्ति) द्रव्यमें रहती है, गुणमें रहती है और पर्यायमें (रहती है). कमवर्ती और अकमवर्ती गुण-पर्यायका पिंड वह आत्मा, ऐसा कहना है. सब बात सूक्ष्म है, भगवान !

अक कमजमें आता है. 'नंदलाल नहि रे आवुं रे घरकाम छे' अन्यमतिमें ऐसा आता है. श्रीकृष्णको नंदलाल कहते हैं. श्रीकृष्णकी जो सप्ती थी वह ऐसा कहती थी कि, 'नंदलाल नहीं रे तेरे पास नहीं आवुं, घरमें काम है' वैसे ये 'नंदलाल नहीं रे आवुं रे, घरकाम छे' पर्यायमें ऐसी मान्यता अनादिसे है कि घरमें (स्वमें) नहीं जाकर परमें जाती है.

'अध्यात्मपंचसंग्रह' है न ? उसमें बहुत लिया है, द्विपयंदजका किया हुआ (है). उसमें 'ज्ञानदर्पण' है. उसमें ये बात बहुत ली है. बहुत ली है. शक्तिका वर्णन जो विशेष हुआ तो अक द्विपयंदजने किया है, थोडा समयसार नाटकमें आता है. किंतु उन्होंने स्पष्ट किया है. 'ज्ञानदर्पण' में आभीरमें अक सवैया है. 'पंचसंग्रह' नामका अक ग्रंथ है. इसमें पांच ग्रंथ है. उसमें ऐसा लिया है. शक्तिका वर्णन बहुत किया है, दूसरा कोई ऐसा किया नहीं. विद्विलासमें और पंचसंग्रहमें जवत्व नामकी शक्तिका वर्णन भी बहुत किया है. द्विपयंदज समकित्ती थे, आत्मज्ञानी थे. शुरु-शुरुमें ऐसा कहा है कि 'मैं साधर्मी हूं' द्विपयंदज साधर्मीकृत ऐसा मैं कहता हूं. भगवान ! तुम्हारा तो मैं साधर्मी हूं. ऐसा लिखा है. तुम्हारा द्रव्यस्वभाव ये मेरा साधर्मी है. पर्यायमें भूल है उसे अक ओर रजो, ऐसा कहते हैं. तुम्हारा द्रव्य

जो है वस्तु भगवान परिपूर्ण आनंदस्वरूप उस अपेक्षासे मैं भी द्रव्य हूँ और तुम भी द्रव्य हो। तो तुम मेरे साधर्मी हो। समझमें आया ?

जवन शक्तिका वर्णन करते (हैं)। इसमें ऐसा लिया कि जवन शक्ति जो पहली है वह सारे जगतको सुभ देनेवाली है, समझमें आया ? ये जवन शक्ति ज्ञान, दर्शन, आनंद, बलके प्राणको धरनेवाली - ऐसी शक्ति और शक्तिवान ऐसा भेद भी छोड़कर, आहाहा ! ये जवन शक्ति और जवद्रव्य शक्तिवान - ऐसा शक्ति और शक्तिवानकी भेददृष्टि भी छोड़कर - ये भगवान पूर्णानंद जवन शक्ति आदि अनंत शक्तिका धरनेवाला अेकरूप ज्ञायक है। इस ज्ञायक पर दृष्टि देनेसे - ज्ञान भावकी परिणति जब होती है, (तो सब गुणकी पर्याय साथमें उछलती है)। हमने कहा कि ज्ञानमात्र आत्मा है, तो ज्ञानमात्रकी सम्यक्ज्ञान पर्याय आनंद सहित लुई। तो इस ज्ञानकी पर्यायमें - उत्पत्तिमें अनंत गुणकी पर्याय साथमें उछलती है। देओ है अंदर ?

“आत्मद्रव्यके कारणभूत जैसे चैतनमात्रभावरूपी भावप्राणका धारण करना जिसका लक्षण है।’ यह तो अध्यात्मवार्ता है भगवान ! कोई कथा-वार्ता नहीं है। यहां तो वीतरागी संतों, दिगंबर मुनिओं, वीतरागी मुनिओं अतीन्द्रिय आनंदमें जुलनेवाले, उनको विकल्प आया, तो ये शास्त्र बन गया। आहाहा ! उन्हें कोई दृष्टिप्राप्ति पडी नहीं थी। परंतु ऐसा टीका करनेका विकल्प वारंवार आता है।

नियमसारमें पद्मप्रभमलधारीदेव कहते हैं कि, मुझे वारंवार विकल्प आता है तो टीका लिखी है। मेरे मनमें ऐसा आता है कि, नियमसारकी स्पष्टता करना, ऐसा विकल्प आता है तो शास्त्र बन जाता है। समझमें आया ? (मुनिराज) ये विकल्पके भी स्वामी नहीं। जवत्व शक्तिका धरनेवाला भगवान ! आहाहा ! उस पर दृष्टि देनेसे जवन शक्तिका पर्यायमें / उत्पाद-व्ययमें परिणामन होता है, तो ज्ञान, आनंद, शांति, बल उसके परिणाममें-पर्यायमें ज्ञानमात्रकी पर्याय (के) साथ उछलती है। उछलती का अर्थ उसमें उत्पन्न होती है। समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बात है।

अेक शक्ति द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्यापती है। कैसे ? कि, जो जवनशक्ति है ज्ञान, दर्शन, आनंद-अतीन्द्रिय आनंद और वीर्य प्राण जिसका - ऐसी शक्तिका धरनेवाला आत्मा (है)। आहाहा ! उस पर दृष्टि पडनेसे ज्ञानकी पर्याय अपनी यीजको ज्ञेय बनाकर (परिणामन करती है)। आहाहा ! पर्यायमें - ज्ञानकी पर्यायमें ज्ञेय बनाकर (परिणामती है तो द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्यापत हो जाती है)। भगवान ! मार्ग बहुत सूक्ष्म है।

अपनी ज्ञानकी पर्याय व्यक्त - प्रगट है। निश्चयसे तो ऐसा स्वभाव है - समयसार १७-१८ गाथामें भगवान कहते हैं, पर्यायमें द्रव्य ही जाननेमें आता है। पर्यायका स्वभाव स्वपरप्रकाशक है। अज्ञानीकी पर्यायमें भी स्वपरप्रकाशक स्वभाव है। तो पर्यायमें द्रव्य ही ज्ञेयरूप

ज्ञान आता है, आडाडा ! सूक्ष्म बात, बापू ! मार्ग बहुत अलग भाई !

ये यौरासीके अवतारमें से निकलना (आसान नहीं है). आडाडा ! बाहरमें तो दुःख, दुःख (है). आडाडा ! शरीर पर देभो तो मिट्टी-धूल है, पैसा देभो तो मिट्टी-धूल है. उसको देभने जाते हैं तो सामान्यरूपसे अशुद्धता उत्पन्न होती है और अपनेको अपनी पर्याय देभने जाती है तो शुद्धता उत्पन्न होती है, समझमें आया ? वर्तमानमें तो बहुत गडबड हो गई है, इसलिये ऐसा लगे कि, ये क्या कहते हैं ? अरेरे... ! भाई ! मार्ग तो ऐसा है, समझमें आया ?

श्रोता :- यहाँ नया धर्म निकाल दिया न ?

पूज्य गुरुदेवश्री :- ये नया धर्म नहीं, अनादिका (मार्ग) है. बिल्लीका बय्या आसपासके बय्येके परिययमें आ जाता है, तो बिल्ली सात दिनमें बय्येको बदल देती है. दूसरे स्थानमें ले जाती है. बय्या तो दूसरे स्थानमें है. (कहनेका) हेतु तो ये है कि बय्याकी आंभे सात दिन तक पुलती नहीं है. बिल्ली सात दिन सात तरफकी दिशा बदलती है और तब उसकी जैसे आंभ पुलती है. आंभ पुलती है तब देभे, ओहो ! ये जगत है ? तो जब तुम देभता नहीं था तब भी जगत तो था.

छोटी उम्रमें सब देभा है. उमरावा-छोटा गांव-पांच हजारकी बस्ती. वहाँ १३ वर्ष रहे और ८ वर्ष पालेज दुकान पर रहे. त्रय के पास पालेज (है), त्रय और वडोदराके भीयमें है. दुकान ५ वर्ष यलाई. वह सब धूल-धाड़ी, सारा पापका धंधा (है).

यहाँ तो परमात्मा ऐसा कहते हैं कि, तेरी यीजमें अक जवन नामकी शक्ति नाम गुण नाम सत् का सत्व, सत् द्रव्यका कस है. जवत्वशक्ति ये कस है. आडाडा ! उस पर तेरी दृष्टि (कर). शक्ति और शक्तिवान - उसका भी त्मेद छोडकर, शक्तिवान जो आत्मा है - ज्ञायक - (उस) पर दृष्टि करनेसे जवनशक्ति तीनमें व्यापक हो जाती है. द्रव्यमें जवनशक्ति, गुणमें जवनशक्ति और पर्यायमें जवनशक्ति प्राप्त होती है. तो उसमें प्राप्त क्या होता है ? आनंद, ज्ञान, शांति आदि अनंत गुणकी पर्यायकी प्राप्ति (होती है). (उस) जवनशक्तिकी पर्यायके साथ अनंतगुणकी पर्याय उत्पन्न होती है, समझमें आया ? भाषा तो सादी है, भगवान ! भाषा आकरी (कठिन) नहीं है. भाव तो वीतरागका (है). ऐसी यीज तो कहीं है नहीं. जैन परमात्मा (के) सिवा ऐसा मार्ग कहीं है नहीं, आडाडा ! वेदांत आदिने (कुछ जगहमें) आत्माकी बात की है. उपनिषदमें बहुत की है, परंतु ये यीज नहीं. समझमें आया ? श्वेतांबरने बात की है, परंतु ये यीज नहि. आडाडा ! ऐसी बात है, भगवान ! हमने तो करोडो श्लोक देभे हैं. श्वेतांबरमें ४५ वर्ष निकाले है न ! ४३ वर्ष यहाँ हुआ. ४५ और ४३, ८८ वर्ष हुआ. करोडो श्लोक देभे है परंतु ये यीज नहीं. ये यीज तो दिगंबर संतोंके सिवा और कहीं है नहीं. समझमें आया ?

યહાં કહતે હૈં કિ, જીવનશક્તિકો ધરનેવાલા ભગવાન (હૈ). યહાં તો આત્માકો ભગવાન કહતે હૈં. ક્યોંકિ ભગ નામ લક્ષ્મી, જ્ઞાન ઓર આનંદકી લક્ષ્મી. વાન નામ (જ્ઞાન ઓર આનંદકી) લક્ષ્મીકા સ્વરૂપ ઉસકા હૈ. સમજમેં આયા ? જીવનશક્તિ ભી ઉસકી લક્ષ્મી હૈ. (જીવનશક્તિ) યહ આત્માકા સ્વરૂપ હૈ. યે જીવનશક્તિકા ધરનેવાલા ભગવાન ઉસ પર પર્યાયકી દૃષ્ટિ વહાં જાતી હૈ, તો પર્યાયમેં આનંદકી, જ્ઞાનકી, શાંતિકી પર્યાય ઉત્પન્ન હોતી હૈ ઓર વહ પર્યાય દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાય ત્રીનોંમેં વ્યાપ્ત હુઈ હૈ. આહાહા ! ઓર જીવનશક્તિમેં ધ્રુવ ઉપાદાન ઓર ક્ષણિક ઉપાદાન દોનોં આ જાતે હૈં. ત્રિકાલી જીવનશક્તિ ધ્રુવ ઉપાદાન હૈ ઓર પર્યાયમેં પરિણમન હુઆ - સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્રાદિ પર્યાય હુઈ (વહ) ક્ષણિક ઉપાદાન હૈ ઓર અપનેમેં ઉસ ક્ષણિક ઉપાદાનકા પરિણમન, નિર્મળ પર્યાય હુઈ તો ઉસમેં વ્યવહારકા અભાવ હૈ. યહ અનેકાંત હૈ. આહાહા ! ઇસ શક્તિકે પરિણમનમેં વ્યવહારકા ભાવ આતા હી નહીં. સૂક્ષ્મ (બાત) હૈ, ભગવાન ! જો આત્માકી જીવન શક્તિ હૈ - ગુણ સ્વભાવ - ઉસકા દ્રવ્ય પર દૃષ્ટિ હોનેસે જબ પરિણમન હોતા હૈ, તો પર્યાયમેં નિર્મળ જ્ઞાન, નિર્મળ દર્શન, નિર્મળ આનંદ, શાંતિ, પ્રભુતા, સ્વચ્છતા ઐસી અનંત ગુણકી પર્યાયકી નિર્મળતા પ્રગટ હોતી હૈ. ઉસકા નામ ધર્મ ઓર ઉસકા નામ મોક્ષકા માર્ગ. ઉસ માર્ગમેં વ્યવહારકા અભાવ હૈ, વહ અનેકાંત હૈ. શક્તિકે પરિણમનમેં અશુદ્ધતા આતી નહીં. ક્યોંકિ શક્તિ પવિત્ર ઓર શુદ્ધ હૈ તો શક્તિકા પરિણમન શુદ્ધ હોતા હૈ-અશુદ્ધ નહીં. અશુદ્ધ(તા) તો પર્યાયદૃષ્ટિકે લક્ષ્મી હોતી હૈ. વહ દૃષ્ટિ તો ઘૂટ ગયી, આહાહા ! સમજમેં આયા ? થોડા સમજો, આહાહા ! માર્ગ ઐસા હૈ.

જ્ઞાયકભાવ એક વસ્તુ-જ્ઞાનકા પરિણમન-જ્ઞાનભાવ ઐસા આત્માકો કહા; તો જ્ઞાનભાવકે સાથમેં અનંત શક્તિ હૈ. એક જ્ઞાન હી હૈ, ઐસા નહીં. ઉસકા નામ અનેકાંત હૈ ઓર ઉસકી જીવત્વ શક્તિકી જ્ઞાન પરિણતિ જબ હોતી હૈ, તબ નિર્મળ સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્ર આદિ અનંત ગુણકી નિર્મળ પર્યાય સાથમેં ઉત્પન્ન હોતી હૈ. રાગકા ઉસમેં અભાવ હૈ, વ્યવહારકા ઉસમેં અભાવ હૈ, ઉસકા નામ અનેકાંત હૈ. વ્યવહારસે નિશ્ચય હોતા હૈ વહ બાત તો વસ્તુમેં ત્રીનકાલમેં હૈ નહીં. કઠિન બાત હૈ, ભગવાન ! આહાહા ! ક્યા કહતે હૈં ?

પહલે જબ શક્તિ પઢી થી (તબ) ૨૧ બોલ ઉતારે થે. એક-એક શક્તિ પર ૨૧ બોલ. એક શક્તિ પર ૨૧ બોલ (ઉતારે થે). દેખના હૈ ? (દેખો !) અનેકાંતકો અબ વિશેષ ચર્ચતે હૈં.

(૧) કમરૂપ ઓર અકમરૂપ અનંતધર્મસમૂહ જો કુછ જીતના લક્ષિત હોતા હૈ, વહ સબ વાસ્તવમેં એક આત્મા હૈ. ક્યા કહતે હૈં ? આત્મામેં જો અનંત ગુણ અકમ હૈ, (અર્થાત્) એક સાથ રહનેવાલે (હૈ). ઓર પર્યાય કમે-કમે હોતી હૈ, યે કમ ઓર અકમકા સમુદાય યહ આત્મા હૈ. સમજમેં આયા ?

(૨) જ્ઞાનમાત્ર એક ભાવકી અન્ત:પાતિની અનંત શક્તિયાં ઉછલતી હૈ. જહાં આત્માકા

ज्ञानमात्र ऐसा अनुभव हुआ, सम्यग्दर्शन हुआ-त्रिकाही पर दृष्टि करनेसे सम्यग्दर्शन - ज्ञान जहां हुआ तो उसके साथ अनंत शक्तिकी पर्याय भी परिणामन (करती है) - उछलती है. समझमें आया ? आहाहा ! ज्ञानमात्र लवे ही हमने कहा. लेकिन जहां द्रव्य पर दृष्टि होनेसे ज्ञानमात्रकी पर्याय हुई, तो उसमें अनंत शक्ति उछलती है. अनंत शक्ति एक समयमें पर्यायमें उत्पन्न होती है.

(३) कमवर्ती और अकमवर्तीरूप वर्तन जिसका लक्षण है. द्रव्यका लक्षण यही है. अकमवर्ती अनंत गुण और कमवर्ती उसकी पर्याय (है).

(४) एक-एक शक्ति अनंत (शक्तिमें) व्यापक है. एक-एक शक्ति अनंत(शक्तिमें) प्रसरी है. एक शक्ति(का) क्षेत्र विन्न है और दूसरी शक्तिका क्षेत्र विन्न है, ऐसा है नहीं. आहाहा !

श्रोता : एक शक्ति अनंतमें है ?

पू. गुरुदेव : व्यापक है, पड़ले तो अभी व्यापक - प्रसरी है, घटना कलना है. रूप है वह बादमें आयेगा.

(५) एक शक्ति अनंतमें निमित्त है. एक-एक शक्ति दूसरे गुणको निमित्त है. दूसरा गुण कारण है और एक गुण कार्य है, ऐसा भी कहनेमें आता है. निमित्तसे कहनेमें आता है. समझमें आया ? ऐसा है. एक गुण कारण-दूसरा गुण कार्य. वही गुण कारण - वही गुण कार्य. सूक्ष्म बात, भाई ! वीतरागका मार्ग बहुत सूक्ष्म (है).

लोगोंको बाह्य क्रियाकांडमें रुचि और मूल शीज रह गयी. पंचमहाव्रत और मुनिपना अनंत बार लिया. उसमें आया न ? “मुनिव्रत धार अनंतभैर त्रैवेयक उपजायो” ऐसी तो द्रव्यविंगकी क्रिया अनंतबार की. वह तो परकी क्रिया है. रागकी क्रिया है. इसमें धर्म नहीं. वह तो शुभभाव है. धर्मसे विरुद्ध भाव है. और भीठी भाषामें कहें तो शुभभाव अधर्म है.

जब अपनेमें एक शक्तिका परिणामन अनंतके साथमें हुआ, तो इसमें अनंत शक्ति साथमें परिणामती है और एक शक्ति दूसरेमें निमित्त कहनेमें आती है. निमित्तका अर्थ कि, एक स्थिति है, दूसरे गुणमें दूसरा गुण (निमित्त है). एक-एक गुणमें (गुणके परिणामनमें) दूसरा गुण निमित्त कहनेमें आता है. उपादान तो अपना गुण है. सूक्ष्म है.

(६) एक शक्ति द्रव्य-गुण-पर्यायमें व्यापती है. अभी कहा वह.

(७) एक शक्तिमें ध्रुव उपादान और क्षणिक उपादान है. आहाहा ! यह तो दरिया है, प्रभु ! आत्मामें ज्वलत्वशक्ति है. त्रिकाही (स्वरूप) है वह ध्रुव उपादान है और उसका शुद्ध परिणामन होता है. द्रव्य पर दृष्टि होनेसे सम्यग्दर्शन आदि जो पर्याय उत्पन्न होती है, वह पर्यायमें क्षणिक उपादान है. रागका क्षणिक उपादान यहां है नहीं. यहां तो शक्ति शुद्ध है, उसका वर्णन है तो उसका परिणामन (भी) शुद्ध ही है. आहाहा !

प्रवचनसारमें जहां ४७ नय यत्ने हैं, वहां लिया है. क्योंकि वहां ज्ञान प्रधान कथन है. आत्मामें सम्यग्दर्शन, ज्ञानकी परिणति हुई, धतनी तो शुद्धता है. और जितना राग रडा और रागका परिणामन है, धतना वहां कर्तापना है. करने लायक है उस अपेक्षासे (कर्तापना) नहीं. परंतु रागका परिणामन है, तो कर्ता है. असा ४७ नयमें लिया है. गंभीर बातें हैं, बापू !

यहां तो कहते हैं कि, आत्मामें आनंदस्वरूप है और जवनशक्तिका अवलंबन लेनेवाली (पर्यायकी) द्रव्य (पर) जब दृष्टि होती है, तो आनंदकी पर्याय उत्पन्न होती है. उसमें दुःखकी पर्याय उत्पन्न होती है, असा है नहीं. आहाहा ! असी बातें (है), भाई !

यहां दृष्टिका विषय लिया है. शक्ति है यह तो स्वभाव है. स्वभावका धरनेवाला स्वभाववान है. ये इसकी अपेक्षासे (कथन) है, और जहां ज्ञान प्रधान कथन (होता है वहां असा कहते हैं कि) दृष्टिके साथ ज्ञान हुआ (उस) पर्यायमें जितना राग है उसका कर्ता वह पर्याय है, भोक्ता भी पर्याय है. असा लेते हैं. आहाहा !

श्रोता : ये मानना या वह मानना ?

पू. गुरुदेव : दोनों मानना. क्यों दोनों मानना ? कि, यहां समयसारमें शक्तिकी प्रधानतासे वर्णन है. तो ये द्रव्यके गुणकी प्रधानतासे वर्णन है; गुण (तो) परिणामन करता है, वह अशुद्ध होता ही नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! सूक्ष्म बात है, भाई ! परंतु जब (तक) उसकी परिणति - साधक है, तब तक बाधक रागका परिणामन तो है. मुनिको भी है. ये ज्ञान जानता है क्योंकि ज्ञान(का) स्वपरप्रकाशक स्वभाव है और दृष्टिका स्वभाव तो निर्विकल्पदृष्टि है, तो उसका विषय निर्विकल्प अके ही यीज है. क्या कहा ? समझमें आया ? सम्यग्दर्शन है वह निर्विकल्प वस्तु है और उसका विषय (भी) अत्मेद और निर्विकल्प है और ज्ञानका स्वभाव स्वपरप्रकाशक है, तो राग (का) जितना परिणामन होता है वह भेरेसे हुआ, भेरेमें हुआ असा ज्ञान जानता है. ये सब सीजने कहां जाये ? बहुत बात है, यहां तो सेंकडो बात हो गयी है. ये समयसार तो १८वीं बार चलता है. १७ बार तो अके-अके अक्षरका पूरी सत्तामें व्याख्यान हो गया (है). यह १८वीं बार चलता है. शक्तिका (वर्णन) तो १८वीं बार चलता है. आहाहा ! यह तो भगवानका (मार्ग है) !

श्रीमद् राजयंद्र कहते हैं कि,

“जे स्वरूप समज्या विना, पाभ्यो दुःख अनंत;

समजायुं ते पद नमुं, श्री सद्गुरु भगवंत.”

“रे गुणवंता रे ज्ञानी, अमृत वरस्या रे पंथमकाणमां”

आहाहा ! “जे स्वरूप समज्या विना” समजे बिना अनंतकाल गया. जो स्वरूप समजे बिना काल गया अनंत. वह स्वरूप समजा आहाहा ! “समजायुं ते पद नमुं” असी यीजकी

अनुभवदृष्टि हुई. “गुणवंता रे ज्ञानी, अमृत वरस्या रे पंचमकाण्मां” यह तो बात दूसरी है. दुनियाकी सब जानते हैं.

यहां तो १८ वर्षकी उम्रसे शास्त्र पढते हैं. शास्त्रका बहुत अभ्यास (किया). ७० साल पहलेकी बात है. ये तो ८८ हुआ. दुकान पर हम बहुत शास्त्र पढते थे. हमको सब भगत कहते थे. श्रेतांबरके सब शास्त्र देखे हैं. दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आचारंग, सुयगडांग, अध्यात्म कल्पद्रुम, ऐसे पुस्तक पहलेसे बहुत देखे हैं. आहाहा ! लेकिन जब ७८ की सालमें समयसार हाथ आया और पूर्वका संस्कार था, समझमें आया ? ऐसा हो गया और बाहरमें ऐसा कहा ‘भगवंत ! समयसार तो अशरीरी होनेका पुस्तक है’ जिसको सिद्ध होना है (उसके लिये) यह पुस्तक है. बाकी चार गतिमें रभडना, स्वर्ग आदि भव करना, ऐसा उसमें है नहीं. समझमें आया ? यहां ये कहते हैं, आया न ?

(८) अक-अक शक्तिमें व्यवहारका अभाव है. यह अनेकांत (है). ये क्या कहते हैं ? बहुत गंभीर (है) ! जवन शक्तिको धरनेवाला द्रव्य-वस्तु- उसकी जब दृष्टि लुयी तो जवन शक्तिका परिणामन हुआ, वह निर्मण (परिणामन) हुआ. उसमें व्यवहारका - मलिनताका अभाव है. यह अनेकांत है. व्यवहारसे निश्चय परिणति हुई, ऐसा नहीं. समझमें आया ? ऐसे ‘सूँठना गांगडे गांधी न थवाय’ (गुजरातीमें कहावत है). ऐसा यहां नहीं है. हम लोग ऐसा नहीं कहते ? सूँठ होती है न सूँठ ? अक हलदीका गांठीया और सूँठका गांठीया - इससे गांधी (यानी पंसारी) हो जाता है क्या ? गांधीको तो बहुत चीज याहिये. ऐसे (शास्त्रके) दो-चार-पचीस बोलकी धारणा कर ली तो हो गये ज्ञानी, ऐसा नहीं है. समझमें आया ? क्या कहा ?

(शक्तिके परिणामनमें) व्यवहारका अभाव (है). जवनशक्ति, आनंद शक्ति आदि भगवान आत्मामें है. तो इस आनंद शक्तिका धरनेवाला भगवान - द्रव्य, उस पर दृष्टिका स्वीकार हुआ तो पर्यायमें निर्मण परिणति हुई, इसमें व्यवहार परिणतिका अभाव है. उसका नाम अनेकांत है. यह निर्मण परिणति हुई ये व्यवहारसे हुई (है), ऐसा है नहीं. आहाहा ! यह बड़ी गडबड अभी करते हैं न ? (कहत हैं) व्यवहार कारण है, निश्चय कार्य है. व्यवहारसे कार्य होता है. (यह सब मिथ्या मान्यता है). लसुन जाते-जाते कस्तुरीका उकार (नहीं) आता है, समझमें आया ? पहलेके तो पंडित भी बहुत (समर्थ थे). टोडरमल, बनारसीदास, भाग्यंदज छाबडा की बात अलौकिक है ! पंडितोंकी २०० वर्ष पहलेकी बात अलौकिक थी ! आचार्य कहते थे, वही (बात) अनुभवसे कहते थे. समझमें आया ? निमित्तसे हुआ नहीं. ऐसा उसका अर्थ है. समझमें आया ? क्योंकि निश्चय शुद्ध यैतन्य आत्मा भगवान (का) (अर्थात्) अपना शुद्ध यैतन्यका जहां स्वीकार हुआ तो शुद्ध परिणामन हुआ. उसमें रागका उस क्षणमें अभाव है. समझमें आया ?

હૈ એસા નિધાનકા ધરનેવાલા ભગવાન ! ઉસ પર દૃષ્ટિ (કરનેસે, ઉસકા) સ્વીકાર કરનેસે, આદર કરનેસે, રાગ કો હેય કરનેસે, સ્વભાવકા આદર કરનેસે, પર્યાયમે જો નિર્મળ દશા ઉત્પન્ન હોતી હૈ, ઉસમે વ્યવહારકા અભાવ હૈ, ઉસકા નામ અનેકાંત હૈ. યહ અનેકાંતકી ચર્ચા કરતે હૈ. ઉપરમે વિખા હૈ. અભી “અનેકાંતકે સંબંધમે વિશેષ ચર્ચા કરતે હૈ.” ઉસમે હૈ. આહાહા ! અરેરે...! એસી ખાત સુનનેમે ન આયે વહ કબ સમજે ઔર કબ રુચિ કરે ? આહાહા ! ચીજ બડી દુર્લભ હો ગયી. સમજમે આયા ? યહ અનેકાંત ઔર સ્યાદ્વાદ હૈ. અપની નિર્મળ પરિણતિ અપનેસે હુઈ હૈ-વ્યવહારસે નહીં, ઉસકા નામ સ્યાદ્વાદ હૈ. સ્યાદ્વાદ એસા નહીં હૈ કિ, વ્યવહારસે ભી હોતા હૈ ઔર નિશ્ચયસે ભી હોતા હૈ. વહ તો એકાંતવાદ હૈ, આહાહા !

(૮) કર્તા આદિ છ કારક અભિન્ન હૈ ઔર નિરપેક્ષ હૈ. ક્યા કહતે હૈ ? જો વસ્તુ હૈ - ચૈતન્ય ભગવાન, ઇસમે શક્તિ હૈ. જીવત્વ આદિ એક-એક શક્તિ (હૈ). એક-એક શક્તિકે પરિણમનમે - શક્તિ હૈ ઉસમે ષટકારકકા રૂપ હૈ. ષટકારક ભી દૂસરી શક્તિ હૈ. આત્મા હૈ ઉસમે શક્તિ હૈ - જીવત્વ શક્તિ, આનંદ શક્તિ, કોઈ ભી શક્તિ (લો), તો યે શક્તિમે ષટકારકકી શક્તિ ભિન્ન હૈ. ષટકારકકી શક્તિ ભિન્ન હૈ. વહ ષટકારક(રૂપ) ગુણ-શક્તિ ઉસમે નહીં. પરંતુ ષટકારકકા એક-એક શક્તિમે રૂપ હૈ. અર્થાત્ જ્ઞાનમે કર્તાકા રૂપ હૈ, કર્તા શક્તિ ભિન્ન હૈ. પરંતુ જ્ઞાન અપનેસે કર્તા હૈ - તો શક્તિકા રૂપ ઉસમે હૈ. ઔર કર્મ શક્તિ ભિન્ન હૈ. કર્મ નામ કાર્ય - પરંતુ ઉસમે કર્મ શક્તિકા રૂપ હૈ. જ્ઞાન કર્તા હોકર અપના પરિણમન-કર્મ કરતા હે, વહ ઉસકા રૂપ હૈ. સૂક્ષ્મ ખાત હૈ, ભાઈ ! આહાહા ! સમજના પડેગા, ભાઈ ! અનંતકાલમે સત્ કુછ સમજે નહીં, આહાહા ! ઇસ શક્તિમે ષટકારકકા રૂપ તો હૈ પરંતુ પરિણતિમે - પર્યાયમે ષટકારકકા રૂપ આ ગયા, એસા કહતે હૈ. જો જીવત્વશક્તિ હૈ, ઉસકા ધરનેવાલા ભગવાન આત્મા ઉસકે સાથ અનંત શક્તિ હૈ. અનંત શક્તિકે (સાથ) જીવન શક્તિકા જેસે નિર્મળ પરિણમન હુઆ - એસી અનંત શક્તિકા પર્યાયમે નિર્મળ (પરિણમન) હુઆ. તો ઉસ શક્તિમે ષટકારક શક્તિ ભિન્ન હૈ. ફિર ભી એક-એક શક્તિમે ષટકારકકા રૂપ હૈ ઔર ઉસકે પરિણમનમે ભી ષટકારકકી પર્યાય હો જાતી હૈ, આહાહા ! ધીરે-ધીરે સમજના બાપૂ ! યહ તો વીતરાગ માર્ગ - સર્વજ્ઞ પરમેશ્વર કિસે કહે ? લોગ સાધારણ માનતે હૈ ‘ણમો અરિહંતાણં’, બાપૂ ! વહ પરમેશ્વર કૌન ? આહાહા ! જિસકી એક ગુણકી એક સમયકી એક પર્યાયમે સારા દ્રવ્ય જાનનેમે આતા હૈ, સારા ગુણ જાનનેમે આતે હૈ, અનંતી પર્યાય જાનનેમે આતી હૈ ઔર ત્રિકાલ પર ચીજકે ભી દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાય જાનનેમે આતે હૈ, આહાહા ! પરમેશ્વર કિસકો કહે !! બાપૂ ! આહાહા ! દેવાધિદેવ અરિહંત - એસે બોલે ‘ણમો અરિહંતાણં’ બાપૂ ! ઉસ અરિહંત કે પદકો જાનકર નમસ્કાર કરના વહ કોઈ અલૌકિક ચીજ હૈ, સમજમે આયા ?

યહાં કહતે હૈ કિ, દ્રવ્યમે અનંત શક્તિ હૈ. એક શક્તિમે દૂસરી શક્તિ નહીં કિન્તુ એક શક્તિમે દૂસરી શક્તિકા રૂપ હૈ અર્થાત્ જેસે જીવન શક્તિ હૈ તો જીવન શક્તિમે કર્તાપનાકા

रूप है. ज्वन शक्ति अपनेसे कर्ता छोकर निर्मण पर्यायका कार्य करती है. अरेरे..! ऐसा है. कोई ऐसा कलता था कि, यह थोडा सूक्ष्म पडेगा. आहाहा ! सूक्ष्म है ऐसा लवे माने परंतु थोडा प्यालमें तो आवे.

(यहां) कलते हैं कि, द्रव्यमें जो ज्वन शक्ति है, उस द्रव्यका अनुभव करनेसे, शक्तिमें भी षटकारकका रूप है और परिणामनमें भी - षटकारककी पर्यायका - अक-अक पर्यायमें षटकारकका परिणामन है. ऐसी बात है. क्या कला ? कि अपनेमें आनंद है, तो आनंद शक्ति-गुण है उसको धरनेवाला भगवान गुणी है. तो द्रव्य पर दृष्टि होनेसे पर्यायमें द्रव्यको ज्ञेय बनाकर और पर्यायमें द्रव्य जाननेमें आया. फिर भी उस पर्यायमें द्रव्य आया नहीं. क्या कला ? द्रव्य तो तिम्र है, आहाहा ! इस पर्यायमें अक-अक गुणकी पर्यायका षटकारक(का) परिणामन है. समझमें आया ? द्रव्य स्वभावकी दृष्टि करनेसे अक आनंदकी पर्याय उत्पन्न हुई. अतीन्द्रिय आनंदका अनुभव हुआ. उस अतीन्द्रिय आनंदकी अक समयकी पर्यायमें षटकारकका परिणामन है. ये आनंदकी पर्याय कर्ता, आनंदकी पर्याय कर्म-कार्य, आनंदकी पर्याय करण-साधन, आनंदकी पर्याय अपादान (अर्थात्) उससे हुयी, और आनंदकी पर्याय संप्रदान-पर्याय रभकर, पर्याय रभी. आनंदकी पर्यायका अधिकरण आनंदकी पर्याय. (ऐसे) षटकारकका परिणामन अक पर्यायमें है. आहाहा ! ऐसा मार्ग कहां है ? बापू ! यह तो समझमें आये ऐसी बात है. भाषा तो सादी है, बापू ! मार्ग तो ये है भाई ! लोग कुछ भी बोले. (लोग कलते हैं) 'निश्चयात्मासी है, व्यवहारका लोप करते हैं.' अरे प्रभु ! सुन तो सही, भाई !

यहां तो कलते हैं कि, निर्मण पर्याय हुई उसमें व्यवहारका तो अभाव है. (निर्मण पर्याय) व्यवहारसे हुई (है क्या) ? हुई तो अपने द्रव्य उपर लक्ष देनेसे अनंत गुणकी निर्मण पर्याय हुयी. निर्मण पर्यायमें से हुई. वहां साथमें राग बाकी है तो उसमें रागका अभाव है.

'दविहं पि मोक्खहेउं ज्ञाणे पाउणदि जं मुणी णियमा' ऐसे भगवान नेमियंदण्ण सिद्धांत यक्वतीके द्रव्य संग्रह की गाथा है. आहाहा ! पाठशाणामें द्रव्य संग्रह तो बहुत यलता है. परंतु अर्थ की ખબर नहीं (है). छ ढाणा भी बहुत यलती है परंतु अर्थ क्या है ? (उसकी ખબर नहीं). निश्चय और व्यवहार मोक्षमार्ग अक समयमें साथमें है. उसका अर्थ क्या हुआ ? व्यवहारसे निश्चय हुआ ऐसा आया ? साथमें है ना ? आहाहा ! श्रीमद् ने ऐसा कला - "नय निश्चय अकांतथी, आमां नथी कहेल, अकांते व्यवहार नहि बने साथ रहेल" (गाथा - १३२) यह गुजराती भाषा है. निश्चयनय अकांत अक ही नहीं. व्यवहारनय भी साथमें है. परंतु व्यवहारमें निश्चय नहीं और निश्चयमें व्यवहार नहीं. आहाहा !

ऐसा मनुष्यत्व मिला उसमें जैन संप्रदायमें जन्म हुआ और जैन क्या कलते हैं, वह

समजमें न आये तो प्रभु ! वह तो निरर्थक होगा. समजमें आया ?

कर्ता आदि छ कारक तो अभिन्न है, निरपेक्ष है. राग कर्ता और निर्भण परिणति कार्य, ऐसा स्वरूपमें है नहीं. आहाहा ! अक-अक शक्तिमें अनंत शक्तिका रूप है. ऐसा आगे आ गया है. रूप (मतलब) क्या समजे ? अंदरमें ज्ञान है ना ज्ञान, तो (ऐसे) अक अस्तित्व गुण भी है, सत्ता-अस्तित्व. तो अस्तित्वगुण है वह ज्ञानगुणमें नहीं. गुणाश्रयसे गुण नहीं. वह आता है न उमास्वामीमें ? गुणाश्रयसे गुण नहीं. द्रव्याश्रयसे गुणा. जो गुण है वे सब द्रव्यके आश्रयसे हैं. गुणके आश्रयसे गुण नहीं. क्या है कि, अक शक्तिमें दूसरा गुणका रूप (आया तो) ये आश्रय आया कि नहि ? तो कहा, नहीं. गुण तो भिन्न रह गये. परंतु उसमें ज्ञान 'है'. 'है' ऐसा अपना अस्तित्व अपने गुणमें अपनेसे है. अस्तित्व गुणके कारणसे ज्ञानका अस्तित्व है (ऐसा नहीं है). ऐसा है भाई ! आहाहा !

गणधर-संतोंने वाणीकी रचना की है, आहाहा ! वह वाणी कितनी गंभीर होगी ? और यह वाणी सुननेको छन्दों आते हैं. वर्तमानमें भगवानके पास छन्द आते हैं. शकरेन्द्र अक भवतारी है. वर्तमानमें शकरेन्द्र सौधर्म देवलोकाका छन्द है. उर बाण विमान है. अक-अक विमानमें असंख्य देव है. वह उसका स्वामी बाहरसे कलनेमें आता है. (उसका) स्वामी नहीं. वे तो समकितके स्वामी हैं. वह समकिति है. उसकी स्त्री-पट्टराणी है वह भी समकिति है. सिद्धांतमें (उन) दोनों को अक भवतारी कहा है. वहांसे निकलकर दोनों मनुष्य छोकर भोक्ष जानेवाले हैं. आहाहा ! उर बाण विमान ! और अक-अक विमानमें असंख्य देव ! और करोड़ो अप्सरा (होती है) ! 'वह मैं नहीं', 'वह मैं नहीं', 'मैं तो आनंद स्वरूप हूं' मेरी थीजमें तो इसका अभाव है. (अंदरमें ऐसी दृष्टि है). आहाहा !

भरत यकवर्ती आत्मज्ञानी, अनुभवदृष्टि समकिति थे. 'राग मेरेमें नहीं', 'राग मैं नहीं' (ऐसा अनुभवज्ञान था). जिसके हीरेके पलंगमें छन्द मित्र तरीके आके बैठते थे. भरत यकवर्ती - ८६ हजार स्त्रीयां, ८६ करोड़ पायदण, ४८ हजार नगर, ७२ हजार पाटण उसका स्वामी - वे ऐसा कहते हैं कि 'ये मैं नहीं', 'ये मैं नहीं' आहाहा ! राग आता है-वह भी मैं नहीं. 'मैं तो आनंद और ज्ञानस्वरूप हूं' आहाहा ! छन्द जैसा मित्र है. तो (कहते हैं) 'नहीं, छन्द मेरा मित्र नहि', आहाहा ! समजमें आया ? दृष्टिका विषय और दृष्टि कोई अलौकिक थीज है ! साधारण लोग मान ले कि, देव-गुरु-शास्त्रकी श्रद्धा, नव तत्वकी श्रद्धा समकिति (है). (लेकिन) बापू ! ऐसा नहि है, भाई ! आहाहा ! सर्वज्ञ परमात्मा - अनंत गुणका पिंड प्रभु ! जिसकी प्रतीतिमें ज्ञेय छोकर, (अनुभवमें आया, वह समकित है). अज्ञानीको भी पर्यायमें द्रव्यका ज्ञान होता ही है. परंतु उसकी दृष्टि वहां नहीं. दृष्टि पर्याय और राग पर है. इसदिये द्रव्य पर्यायमें जाननेमें आता है - वह बात उसको प्रतीतमें न आयी.

(समयसार) १७-१८ गाथा (मैं आता है). अज्ञानी को भी ज्ञानकी पर्यायमें सारा ज्ञेय

अभंडानंद पूर्ण स्वरूपी (का) ज्ञान होता है. क्योंकि ज्ञानकी पर्याय स्वपर प्रकाशक सामर्थ्यवादी है. तो अज्ञानीकी पर्यायमें भी स्वपरप्रकाशक सामर्थ्य है तो पर्यायमें स्वका प्रकाश तो है. परंतु दृष्टि उस पर नहीं. दृष्टि पर्याय और राग पर है. तो उसको जाननेमें नहीं आता है. आहाहा ! ऐसा मार्ग है. फिर तो लोग ऐसा ही कहे न ? 'सोनगढमें अंकांत है.'

अरेरे..! देओ न ! वह सम्यग्ज्ञान दीपिकाकी बात यही न ! इलटनमें-ललितपुरमें बात यलाई थी न ! सम्यग्ज्ञान दीपिका - अरे..! वह तो क्षुल्लक ब्रह्मचारी की बात है, भगवान ! यहां की बात नहीं है. अरे...! प्रभु ! क्या करते हो भाई ! तुझे नुकसान होगा नाथ ! उसके परिणाममें (इलमें) दुःख-वेदन होगा, बापू ! कठिन पड़ेगा, भाई ! (ब्रह्मचारी) क्षुल्लकने तो ऐसा कहा कि, जिसके सर पर पति है, तो कदाचित् उसे कोई दोष लग जाये तो बाहरमें प्रसिद्धिमें नहीं आता, आहाहा ! ऐसे जिसके सर पर आत्मा है, उसमें कोई राग आदि अशुद्धि आ जाये तो बाहर प्रसिद्धिमें नहीं आता. आहाहा ! इसका मतलब ऐसे भोगका भाव सुखरूप है और वह करने लायक है, ऐसा है उसमें? अरेरे...! जहां अंक दया, दानका विकल्प भी दुःखरूप है, वहां भोगका भाव, स्वस्त्री हो या परस्त्री हो, मलापाप है, प्रभु ! समजमें आया ? उसने लांछन लगा दिया, कोई पूछता नहीं कि ये क्या करते हो ? और क्या है ?

यहां कहते हैं कि, अंक-अंक शक्तिमें अनंत शक्तिका रूप है.

(१०) जन्म क्षण वही नाश क्षण है. (ये क्या कहते हैं ?) आत्मामें जो जीवन शक्ति है, आत्माने इसका जहां स्वीकार किया, तो पर्यायमें आनंद की अनंत पर्याय उत्पन्न हुई. वह पर्याय उत्पन्न होनेका जन्म क्षण ही था. ये उत्पत्तिका काल ही था. और उस वक्त पूर्वकी पर्यायका नाशका काल है. आहाहा ! थोडा सूक्ष्म है भगवान ! परंतु ये तेरी ऋद्धि तो देओ ! यह बाहरकी धूल-धानी और पैसे-करोडो और अरबो उस धूलमें कुछ नहीं है. आहाहा ! मिट्टी-धूल है. यह शरीरकी सुंदरता - वह मसाणकी (स्मशानकी) लडी - फोसकरस है. भगवान अंदर अनंतरूपका धनी प्रभु ! आत्मा ! इसका रूप देभना या ये रूप देभना ?! अंदर तेरा स्वरूप तो ध्रुव-ज्ञायक परमात्म स्वरूपी है. वह रूप देभने के लायक है. यह बाहरका रूप (तो) - धूल-राज-क्षणमें नाश हो जाये (ऐसा है). सुंदर शरीर हो और अंक क्षणमें हार्ट ईथल हो जाता है. यह तो मिट्टी है, बापू ! तेरा रूप तो शाश्वत अंदर है. ज्ञान, दर्शन, आनंद आदि तेरा शाश्वत रूप है. ऐसे द्रव्यकी जब दृष्टि हुई. शक्तिवान और शक्तिका भेद निकालकर, द्रव्य शक्तिवान है ऐसी दृष्टि हुई तो कहते हैं उस क्षणमें निर्विकल्प दशा उत्पन्न (होने) का ये काल था - जन्मक्षण है और पूर्वकी पर्यायका नाश करनेका काल था. विशेष कहेंगे...



પ્રવચન નં. ૩

શક્તિ-૧, ૨ - તા. ૧૩-૦૮-૧૯૭૭

આત્મદ્રવ્યહેતુભૂતચૈતન્યમાત્રભાવધારણલક્ષણા જીવત્વશક્તિ: ॥૧॥

અજહત્વાત્મિકા ચિત્તિશક્તિ: ॥૨॥

યહ સમયસાર, શક્તિકા અધિકાર હૈ. થોડા સૂક્ષ્મ હૈ, ધ્યાન રખના. અનંતકાલસે આત્મા આનંદસ્વરૂપ ઓર અનંત શક્તિ સ્વરૂપ ભંડાર(સે) ભરા હૈ. યહ સુખકા સાગર હૈ. આનંદકા સમુદ્ર હૈ, આહાહા ! ઉસમેં અનંત શક્તિયાં હૈ. યહાં અપને તો પહલી જીવત્વ શક્તિ ચલતી હૈ ન ? યે સૂક્ષ્મ બાત હૈ. બહુત સૂક્ષ્મ હૈ. યહ આત્મ વસ્તુ જો હૈ - આત્મા, યે દ્રવ્ય હૈ, વસ્તુ હૈ, અસ્તિ પદાર્થ હૈ. અનાદિ અનંત ચીજ શાશ્વતધામ હૈ. ઇસ “આત્મદ્રવ્યકે કારણભૂત ઐસે ચૈતન્યમાત્ર ભાવકા ધારણા જિસકા લક્ષણ અર્થાત્ સ્વરૂપ હૈ” આહાહા ! જો જીવતર શક્તિ હૈ પહલે ઉસે (સમયસારમેં) દૂસરી ગાથા હૈ (વહાં લી હૈ) ન ? “જીવો ચરિત્તદંસણાણઢિદો” વહાંસે જીવકી જીવત્વ શક્તિ લી હૈ.

અમૃતચંદ્ર આચાર્ય કહતે હૈં કિ, ભગવાન આત્મા ! શરીર, વાણી, મન તો પર હૈ - વહ તો ઉસમેં હૈ નહીં. પુણ્ય ઓર પાપકા ભાવ - દયા, દાન, વ્રત, ભક્તિ, કામ, ક્રોધભાવ વહ તો ઉસમેં હૈ હી નહીં. પરંતુ ઉસમેં એક સમયકી પર્યાય જીતની શક્તિ નહીં, આહાહા ! જો ત્રિકાલ શક્તિ હૈ (વહ) એક સમયકી પર્યાય જિતની નહીં. સમજમેં ન આયે તો યહાં વિશેષ કહતે હૈં. જો આત્મ દ્રવ્ય વસ્તુ હૈ ઉસમેં યે જીવત્વ નામકી શક્તિ (હૈ), ઐસી અનંત શક્તિ હૈ. યહ શક્તિયાં ધ્રુવ હૈ. વર્તમાન પર્યાય ઇસમેં પ્રગટ હૈ, (વહ) ધ્રુવમેં નહીં. સૂક્ષ્મ બાત હૈ, ભગવાન ! વીતરાગકા માર્ગ બહુત સૂક્ષ્મ હૈ. અભી તો ઝઘડેમેં ચડ ગઈ બાત. વ્યવહાર કરો, વ્યવહાર કરો, ઉસસે (ધર્મ) હોગા. અરે ભગવાન ! સુન તો સહી પ્રભુ ! વ્યવહાર-શુભરાગ દયા, દાન, વ્રત, આદિ હો, વહ તો પુણ્ય બંધકા કારણ હૈ. વહ કોઈ આત્માકી શક્તિ યા, આત્માકી નિર્મળ પર્યાય હૈ નહીં, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

યહાં તો પરમાત્મા સર્વજ્ઞદેવ, જિનેશ્વરદેવ ઐસા કહતે હૈં કિ, પ્રભુ ! તુમ વસ્તુ હૈ કિ નહીં ? પદાર્થ હૈ કિ નહીં ? આહાહા ! તો પદાર્થકા કારણ જીવન શક્તિ હૈ, (ઐસા કહતે હૈં). આહાહા ! જીવન શક્તિ નામકી ગુણ - શક્તિ હૈ, ઉસ કારણસે જીવ ટિક રહા હૈ,

आहाडा ! जवत्व शक्ति नामका उसमें गुण है. पहले यह बोल दिया है. और ये जवत्वशक्ति यैतनमात्र द्रव्य जो वस्तु भगवान ! उसका कारणभूत है, आहाडा ! द्रव्यके कारणभूत - निमित्तरूप परमात्मा या पुण्य और पापके भाव, आत्म द्रव्यमें कारणभूत - वह थीज नहीं, आहाडा ! समझमें आया ? सूक्ष्म है भगवान ! भगवान तो अतीन्द्रिय आनंद स्वरूप उसकी ये जवनशक्ति है. ये जवन शक्तिमें यार भावप्राण लिया. ज्ञान, आनंद, दर्शन, बल मुष्यरूपसे यार (लिया). जवनशक्तिमें अनंत यतुष्टय शक्तिरूप - यार यतुष्टय शक्ति पडी है, आहाडा ! ये जवन शक्ति जव - आत्म द्रव्य वस्तु जो है, उसका वह कारण है. उसका जवनमें टिकना ये जवत्वशक्तिके कारण है, आहाडा ! समझमें आया ? मार्ग बहुत सूक्ष्म है, भगवान ! आहाडा !

जब हम दुकान पर पढते थे न ? तो हमारे (पढनेमें) अेक श्लोक आया था. ये तो ६५-६६ की बात है. बहुत वर्ष ढो गये. श्वेतांबरमें यार सज्जयमावा है. अेक-अेक सज्जयमावामें २५०-२५० सज्जय है. अेक-अेक सज्जयमें १०-१५-२० आदि श्लोक है. अैसी यार सज्जयमावा (है). हम तो दुकानमें थे. निवृत्ति थी न ! हमारे पिताजकी घरकी दुकान (थी). उसमें अेक अैसा आया था. 'सहजानंदि रे आत्मा' तुम सहज आनंद स्वरूप भगवान है न ! आहाडा ! तेरा आनंद कहीं बाहरमें है नहीं और तेरा आनंद कोई अपूर्ण और विकृत नहीं है. आहाडा ! 'सहजानंदि रे आत्मा, सुतो कांई निश्चित रे' आहाडा ! है गुजराती भाषा. अरे ! तुम निश्चित क्यों सो रहे ढो ? राग और पुण्य आदिका परिणाम मेरा, उसमें तेरा जवन यवा जा रहा है, आहाडा ! समझमें आया ? 'सुतो कांई निश्चित'. (अर्थात्) मैं अंदर कौन हूं ? (उसकी) यिंता है नहीं, आहाडा ! 'सुतो कांई निश्चित, भोड तणा रणिया भमे' अरे प्रभु ! 'राग और पुण्यका परिणाम मेरा' ये तो भडा मिथ्यात्वका देणा सर पर है. देणा समजते ढो न ? कर्जा. आहाडा ! 'भोड तणा रे रणिया भमे, जाग जाग रे मतिवंत रे' येतन आनंदका नाथ ये तेरा जागृत (ढोनेका) का काल (है). अब जाग रे जाग ! ये राग और पुण्यके परिणामसे तेरी थीज अंदरमें भिन्न पडी है. इस निज निधानको नजरमें ले. तेरी नजरमें ये पर थीज जाननेमें देजनेमें आती है. परंतु नजरकी पर्याय - नजर निधानमें ढाल. आहाडा ! यहां तो भुंभई - भोडमयीसे दूसरी बात है. आहाडा ! 'भोड तणा रणिया भमे, जाग, जाग रे मतिवंत रे, अे लूटे जगतना जंत रे' ये कुटुंब-कभिला (कडता है) मेरा रक्षण करो, मेरी शादी करो,' अैसा करके तुजे लूटते है. आहाडा ! 'लूटे जगतना जंत रे, नाभी वांक अनंत रे' हमसे क्यों शादी की ? हमारा पुत्र क्यों हुआ ? हम तुम्हारा पुत्र क्यों हुआ ? अैसा करके तेरी थीज लूट लेते है, आहाडा ! समझमें आया ? 'कोई विरला उगरंत रे' (अर्थात्) कोई विरल (अैसा) उगता है. (वह अैसी दृष्टि कर लेता है कि) '(मैं) आनंदकंद सखिदानंद प्रभु हूं' आहाडा ! 'मेरी थीज तो सुभसागरसे भरी

है' आडाडा ! और 'पुण्य और पापका भाव - विकल्पसे तो मैं भावी हूँ.'

मैं तो शून्य हूँ. प्रवचनसारमें सप्तभंगीमें आता है न ? भाई ! कि स्वसे अशून्य हूँ - परसे शून्य हूँ. क्या कडा ? कि मैं मेरेसे अशून्य हूँ, (यानी) मैं मेरे भावसे भरा पडा पूर्ण हूँ. (और) राग आदि पर भावसे मैं शून्य हूँ. सप्तभंगी यही है. स्वसे अस्ति और परसे नास्ति. ऐसा पहले कहकर बादमें ये लिया है कि, मैं अशून्य हूँ यानी शून्य नहीं. मैं तो आनंद और ज्ञानस्वभावसे परिपूर्ण भरा हुआ मैं परमात्मा स्वरूप हूँ और शरीर, वाणी, मन, पुण्य-पापका भाव जो विकल्प - राग है, उससे मैं शून्य हूँ. बापू ! मेरेमें ये चीज है नहीं, भाई ! आडाडा ! समझमें आया ? यह तो ७० साल पहलेकी बात है. दुकान पर पढते थे न ? (तबकी बात है) ! आडाडा !

प्रभु तू कौन है ? अभी तो ऐसा कहते हैं कि, शुभभाव-दया, दान, व्रत आदि हो, उससे तेरा कल्याण होगा और करते-करते तुझे चैतन्यका अनुभव होगा, बापू ! ऐसा है नहीं, भगवान ! ये पुण्य और पापका भाव प्रभु ! वह तो दुःखरूप है और तु तो आनंद स्वरूप-सुखरूप है, आडाडा ! इस सुखरूपके सागर पर नजर करनेसे उसमें एक जवत्व नामकी शक्ति है. इस शक्ति के कारण जव टिक रहा है. ऐसा कहते हैं. और यह शक्ति और शक्तिवानकी दृष्टि होनेसे, उसकी पर्यायमें जवत्व शक्तिका परिणामन होता है, आडाडा ! सूक्ष्म बात भाई ! ऐसी बात कहीं है नहीं. ये उपनिषदमें कहीं है नहीं. आडाडा ! वहां कहीं पर्याय, द्रव्य, गुण है नहीं. आडाडा ! ये तो अलौकिक बात है, बापू !

कहते हैं कि, ये जवत्व शक्तिका भाव क्या ? कि ज्ञान, दर्शन, आनंद और बल ये उसका ध्रुवस्वभाव जवन शक्तिका कारण (है). और ये जव शक्ति द्रव्यत्वका कारण (है). आडाडा ! समझमें आया ? बापू ! मार्ग सूक्ष्म (है), भाई ! सर्वज्ञ परमेश्वर त्रिलोकनाथ ! ये प्रभु सर्वज्ञ स्वरूपी ही आत्मा है. क्या कडा वह ? सभी भगवान सर्वज्ञ शक्तिसे भरा पडा है. आडाडा ! देखका लक्ष छोड दे, वाणीका लक्ष छोड दे, कर्मका (लक्ष) छोड दे, पुण्य-पापका लक्ष छोड दे, एक समयकी प्रगट अवस्थाका भी लक्ष छोड दे, आडाडा ! भगवान आत्मा ! अतीन्द्रिय आनंदसे-आनंदकी शांतिसे भरा पडा पदार्थ है, आडाडा ! उसकी दृष्टि करनेसे तुझे सम्यग्दर्शन होगा और उसकी दृष्टि करनेसे तेरी पर्यायमें जवत्व शक्तिके ज्ञान, दर्शन, आनंदके प्राणकी पर्यायकी उत्पत्ति होगी.

ये 'उछलती है' (का) प्रश्न सेठने किया था. 'उछलती है' (का मतलब) क्या ? आत्मामें (अनंत शक्तियां) उछलती है, आडाडा ! दरियामें - समुद्रमें जैसे पानीकी भरती और बाढ आती है. समुद्र के किनारे बाढ आती है. जैसे भगवान आत्मा ! जवत्व शक्तिका धरनेवाला आत्मा - ऐसी अंतरमें दृष्टि होनेसे, वर्तमान पर्यायमें - प्रगट दशामें आनंदकी भरती आती है. ये कहते हैं, आडाडा ! ये पूरी दुनियासे अलग बात है. आडाडा ! समझमें आया ?

उसमें जवत्व शक्ति उछलती है. उछलतीका अर्थ ? उत्पादपने (उत्पादरूपसे) परिणामति है. जो ध्रुवपने है, और ध्रुवपने शक्ति जो द्रव्यका कारण है - ऐसी दृष्टि जब लुई तो जवत्व शक्ति पर्यायमें-ज्ञान, दर्शन, आनंद(रूपका) पर्यायमें उत्पाद होता है. ये 'उछलती है' उसका अर्थ यह है. आहाहा ! ऐसी बातें (हैं).

“आत्मद्रव्यके कारणभूत ऐसे चैतन्यमात्रभावरूपी भावप्राणका धारण करना जिसका लक्षण है ऐसी जवत्व नामक शक्ति ज्ञानमात्र भावमें - आत्मामें - उछलती है” आहाहा ! और जब यह ज्ञानमात्र वस्तु ऐसी दृष्टि लुयी तो, ये जवत्व शक्तिकी निर्मण पर्याय (के साथ) उसमें आनंदकी पर्याय प्रगट लुयी शान्ति, स्वछता, चारित्रिकी पर्याय प्रगट लुई और उसमें अकारणकार्य शक्तिकी पर्याय प्रगट लुयी. वह क्या (कहा) ? भगवान ! यह वीतरागका मार्ग तो सूक्ष्म (है) प्रभु ! अमी तो लोप हो गया. बाहरमें तो सत्य बातको गुम कर दिया है. 'ये नहीं, ये नहीं, ये सब करो, ये करो,' (ऐसा कहते हैं). आहाहा !

भगवान ! तेरी चीजमें जब अनंत शक्ति पडी है, तो उसमें एक अकारणकारण नामकी भी शक्ति पडी है. ये सब विवाद (यल रहल) है न अमी ? जैसे जवत्व शक्ति है (तो) उसके साथ अविनाभावसे एक अकारणकार्य नामकी शक्ति (भी) है. तो कहते हैं कि, जब जवत्व शक्तिको धरनेवाला (द्रव्य) उस पर दृष्टि करनेसे पर्यायमें जैसे जवत्व शक्ति - ज्ञान, दर्शन (आदि) शक्ति है, वैसे अकारणकार्य शक्तिकी पर्यायमें उत्पत्ति (होती है). उछलती है. अर्थात् अकारणकार्य शक्ति पर्यायमें उत्पन्न होती है. ये व्यवहार रत्नत्रयका - रागका कार्य नहीं और रागका कारण नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? अमी ये विवाद बहुत चलता है न ! कि व्यवहार करो, व्यवहार करो, व्रत करो, तप करो, उपवास करो आहाहा ! भगवान ! ये हो, राग मंद हो तो हो परंतु वह कोई चीज नहीं. ये वस्तुका द्रव्य नहीं, वस्तुका गुण नहीं और वस्तुकी पर्याय नहीं, समझमें आया ? ऐसा मार्ग है, प्रभु !

अरे ! भरतक्षेत्रमें परमात्माका विरह हुआ और इनकी बात रह गयी. भगवान कुंदकुंद आचार्य वहां गये और वहांसे ये संदेश लाये, प्रभु ! तुम जवन शक्ति के कारणरूप भरा पडा है न ! आहाहा ! और ये जवन शक्तिमें - अकारणकारण नामकी शक्ति दूसरी है - तो जवत्व शक्तिमें अकारणकारण शक्तिका रूप ही पडा है. भाषा सादी है, भाव सूक्ष्म है, आहाहा ! यह तो भगवानके घरकी वकालत है. आहाहा ! क्या कहते हैं ?

भगवान आत्मा ! पुण्य-पाप और शरीरसे तो शून्य है और अपनी अनंत शक्तिसे अशून्य नाम पूर्ण है; ऐसे पूर्णानंदके नाथ पर दृष्टि करनेसे उस द्रव्यकी भी श्रद्धा लुयी, गुणकी - शक्तिकी श्रद्धा लुयी और उसकी परिणति निर्मण लुयी. उसमें जवन शक्तिकी पर्यायकी परिणति भी आयी और उसमें अकारणकार्य शक्तिकी परिणति भी आयी - साथमें अकारणकार्य शक्तिकी पर्याय उछलती है, आहाहा ! ऐसी बात है. जब द्रव्य उपर रुचि होनेसे पर्यायमें

जवन शक्तिका परिणामन - उत्पाद्-व्ययरूपसे हुआ, असा अकारणकार्य शक्तिका भी पर्यायमें उत्पाद् हुआ कि, जो शक्ति ऐसी है कि, रागके कारणसे निर्मल पर्याय होती है, असा है नहीं. व्यवहार रत्नत्रयसे निश्चय होता है, ऐसी बात है नहीं. असा है भगवान ! आहाहा ! तेरी महिमाका पार नहीं नाथ ! तेरे साथमें तो अंदर आनंद आदि है न ! आहाहा ! तो पर्यायरूपसे परिणामन करती (है). उसका अर्थ 'उछलती है' असा कहनेमें आता है. सर्वज्ञ के सिवा ये चीज कहीं है नहीं. द्रव्य, गुण और पर्याय तीनोंमें जवनशक्ति व्यापक है, आहाहा ! यह तो कल कल गये, समझमें आया ? ये सब शब्द नये हैं.

असा प्रभुका मार्ग (है), नाथ ! तुझे खबर नहीं, प्रभु ! तेरी शक्तिमें प्रभुता पडी है. इस जवन शक्तिके परिणामनमें प्रभुत्व शक्तिका भी परिणामन (साथमें है). ईश्वर शक्तिका परिणामन भी उत्पाद्रूप (साथमें होता है). आहाहा ! समझमें आया ? असा चैतन्य हीरा (है). और हीराके जैसे पहलू होते है न ? वैसे भगवानमें अनंत पहलू - अनंत शक्ति है.

यहां तो कहते हैं कि, जवन शक्ति-उसका धरनेवाला भगवान आत्मा ! उस आत्माकी नजर जब हुयी, तो जवन शक्तिके परिणामनमें अकारणकार्य शक्तिका परिणामन भी साथमें उछलता है. ये सब अलग जात है. कडो समझमें आया कुछ ? आहाहा ! क्या कहते हैं ? चैतन्यमात्र भावरूपी भावप्राणका धारण करना, उसमें - आत्मामें शक्ति उछलती है, आहाहा ! भगवान आत्मा आनंदसे भरा है. इस द्रव्य स्वभाव पर दृष्टि करनेसे पर्यायमें - अवस्थामें - डालतमें; जैसे दरियाके - समुद्रके किनारे बाढ आती है, वैसे पर्यायमें आनंदकी बाढ आती है. उसका नाम सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान है. समझमें आया ? अरे..! ये शरीर तो मिट्टी-धूल है, आहाहा ! यह तो उसमें है नहीं, तो 'उसकी किया मैं करता हूं' (ये) मिथ्यात्वभाव है, आहाहा !

यहां तो पुण्य और पापका भाव - दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा इस भावसे भी भगवान तो शून्य है, आहाहा ! पर्यायमें भी शून्य है, आहाहा ! पर्यायमें जैसे जवत्व शक्तिका परिणामन हुआ तो अकार्यकारण नामकी शक्ति भी साथमें है, उसका भी परिणामन है और जवत्व शक्तिमें अकार्यकारण शक्तिका रूप है तो उसमें उसका भी अकार्यकारणरूपसे परिणामन होता है. आहाहा ! ऐसी बातें, भाई ! कभी सुने तो सही - मार्ग तो असा है भाई ! अरे..! ये मनुष्यपना मिला, उसमें जैन संप्रदायमें जन्म हुआ और उसकी चीज न समझे तो जवन यला जाता है, आहाहा ! ऐसे जवनकी कोई कीमत नहीं. समझमें आया ? फिर लले ही करोड, पांच करोड, दस करोड मिल जाये (सब) जड-धूल है. भरकर नरकमें यला जायेगा. आहाहा ! यहां तो असा है, बापू !

यहां ये कहा, आत्मामें (अनंत शक्ति) उछलती है. रात्रिमें सेठने प्रश्न किया था. 'उछलती

હૈ' (કા મતલબ) ક્યા ? ઉછલતી નામ ગુણકી પરિણતિ હોતી હૈ. જો દ્રવ્ય-વસ્તુ હૈ, ઉસમેં જો અનંત શક્તિયાં હૈ, ઉસમેં એક શક્તિરૂપ પરિણમન જબ હોતા હૈ, તો અનંત શક્તિકી પરિણતિ એક સાથ ઉત્પન્ન હોતી હૈ, ઉસકા નામ 'ઉછલતી હૈ' કહનેમેં આતા હૈ. આહાહા ! એસા માર્ગ - લોગોંકો બેચારેકો એસા લગે કિ, યે સોનગઢવાલોંને તો એસા કર દિયા. અરે..! બાપૂ ! યે સોનગઢકી બાત હૈ કિ સ્વરૂપકી બાત હૈ ? આહાહા ! ભગવાન તેરે હિતકી બાત હૈ નાથ ! તુજે અહિત લગતા હૈ. આહાહા ! યે શુભ ભાવ હો પરંતુ વહ તો પુણ્ય તત્વ હૈ. પુણ્ય તત્વ બંધકા કારણ હૈ. ભગવાન આત્મા અબંધ સ્વરૂપ હૈ, આહાહા !

(સમયસારકી) ૧૫ ગાથામેં આયા ન ? જો કોઈ આત્માકો અબદ્ધસ્પૃષ્ટ દેખતા હૈ વહ જૈન શાસન દેખતા હૈ. ક્યા કહા ? ૧૫ ગાથા - 'જો પરસ્સદિ અપ્પાણં અબદ્ધપુટ્ટં અણ્ણમવિસેસં । અપદેસસંતમજ્જં પરસ્સદિ જિણસાસણં સવ્વં -૧૫- ઉસમેં દો બાત હૈ. જૈન શાસન કી જો વાણી - દ્રવ્ય સૂત્ર હૈ ઉસમેં ભી યહ કહા હૈ. 'અપદેસસંતમજ્જં' જિતના જૈન શાસ્ત્ર હૈ ઉસ શાસ્ત્રમેં 'અપદેસ' ઉસમેં આત્મા અબદ્ધ હૈ (એસા કહા હૈ). સમજમેં આયા ? આયા ન ? 'અપદેસસંતમજ્જં' ઉસકા અર્થ દ્રવ્ય સૂત્ર હૈ. આહાહા ! દ્રવ્ય સૂત્રમેં ભી ભગવાનકી વાણીમેં-દ્રવ્ય શાસ્ત્રમેં ભી આત્માકો અબદ્ધ ઓર પુણ્ય-પાપકે ભાવસે રહિત, એસે આત્માકો દેખે તો ઉસને જૈન શાસન દેખા. પુણ્ય-પાપકો દેખે ઉસને જૈન શાસન દેખા, એસા નહીં કહા હૈ, આહાહા !

શ્રોતા : અરિહંત - સિદ્ધ તો અબદ્ધસ્પૃષ્ટ હી હૈ ના ?

પૂ. ગુરુદેવ : આત્મા અનાદિકા અબદ્ધસ્પૃષ્ટ હૈ. અરિહંત-સિદ્ધ તો પર્યાયમેં (અબદ્ધસ્પૃષ્ટ) હો ગયે. આહાહા !

ભગવાન આત્મા ! યે આત્મદ્રવ્ય જો કહા ન ? યે અબદ્ધસ્પૃષ્ટ હૈ. રાગ આદિકા સંબંધરૂપી બંધ હૈ નહીં, આહાહા ! ત્રિકાલી જ્ઞાયક મૂર્તિ પ્રભુ ! ઉસમેં રાગકા સંબંધ - બંધ કહાંસે આયા ? ભગવાન તો અબંધસ્વરૂપ પ્રભુ હૈ, આહાહા ! ઓર જિસને ભગવાન આત્મા અબદ્ધસ્વરૂપી દેખા - વિશેષપના છોડકર સામાન્યરૂપસે દેખા, વિષય-કષાયકા પરિણામ-પુણ્ય-પાપકા (પરિણામ) છોડકર નિર્વિકારીપને દેખા, ઉસને જૈન શાસન દેખા, આહાહા ! એસી બાત હૈ. અબ ક્યા કરેં ? યે લોગ એસા કહતે થે કિ, 'વ્યવહાર કરતે-કરતે હોતા હૈ.' (લેકિન) વ્યવહાર યે જૈન શાસન હૈ હી નહીં. સમજમેં આયા ? આહાહા ! અગમ-નિગમકી એસી બાતોં હૈ. આહાહા ! અરે બાપૂ ! અનંતકાલસે પરિભ્રમણ કરતા હૈ. ઉસકા નાશ કરનેકા ઉપાય તો કોઈ અપૂર્વ હોતા હૈ. આહાહા !

(યહાં) કહતે હૈ કિ 'ઉછલતી હૈ' - એક સમયમેં આનંદકી પર્યાય ઉછલતી હૈ ઓર એક સમયમેં અકારણકાર્યકી શક્તિકી ભી પરિણતિ ઉછલતી હૈ. કિ જો પર્યાય હૈ વહ દ્રવ્યકા કોઈ કારણ નહીં, ગુણકા કારણ નહીં, પર્યાયકા કોઈ કારણ નહીં, આહાહા ! રાગ આદિ વ્યવહાર આદિ કર્તા-કારણ ઓર યે નિર્મળ પર્યાય કાર્ય, એસા હૈ નહીં. ઓર નિર્મળ પર્યાય

कारण और राग उसका कार्य, ऐसा है नहीं. ये पर्यायमें ऐसा नहीं है, ऐसा कहते हैं. द्रव्य-गुणमें तो है ही नहीं, आडाडा ! मार्ग तो ऐसा है भगवान ! अरे..! ऐसी वास्तविक तत्त्वकी बात सुनने मिले, वह भाग्य है तो मिलती है, ऐसी चीज है, आडाडा ! जवत्त्व शक्ति द्रव्य-गुण और पर्याय तीनोंमें व्यापक है. अभी पर्याय किसको कहते हैं ? गुण-द्रव्यकी उसकी तो भबर नहि, आडाडा ! समझमें आया ? ये ओक शक्तिके वर्णनमें अढाई घंटे छुअे.

श्रोता :- हम शक्तिका वर्णन सुनने नहीं आये. हमतो मोक्षमार्गकी बात सुनने आये हैं.

पूज्य गुरुदेवश्री : शक्ति और शक्तिवानकी प्रतीति करते हैं तो पर्यायमें मोक्षमार्ग उत्पन्न होता है, आडाडा ! अबद्धस्पृष्ट - जिसे रागका तो भाव नहीं (लेकिन) पर्यायका विशेष भी नहीं. आडाडा ! आया न ? अबद्धस्पृष्ट, अनन्य, नियतम्, अविशेषम् - (अर्थात्) विशेष जो पर्याय वह भी नहीं, आडाडा ! गजब बात है, प्रभु ! आडाडा ! समझमें आया ?

यह स्त्रीका, नपुंसकका देह भिन्न है. इस देहको न देओ ! प्रभु ! अंदर भगवान आत्मा बिराजते है, परमात्मस्वरूप है, उसको देओ ! यह तो मिट्टी है उसको न देओ कि, ये पुरुष है, ये स्त्री है और ये तिर्यय है और ये मनुष्य है. वह आत्मा है ही नहीं. आत्मा तो अंदर आनंदका नाथ प्रभु ! (है). आडाडा ! अपने आत्मा (में) जवत्त्व शक्ति के साथ अनंत शक्तिका रूप है, जैसे आत्माको जब देजा तो अबद्धस्पृष्ट ही आत्मा देजा. ये अबद्धस्पृष्ट देजा तो प्रतीति(में) - पर्यायमें सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र हुआ. उसका नाम मोक्षमार्ग है, आडाडा ! सेठने ऐसा कहा न ? कि 'हम तो मोक्षमार्ग सुननेको आये हैं' तो मोक्षमार्ग यह है. आडाडा !

देओ ! मोक्ष - ऐसा कहनेमें आता है. वह तो ओक दृःभका अभाव और विकारका अभावको सुचित करता है. 'मोक्ष' - ऐसा है न ? मोक्ष- माने मुकाना (छूटना). ये तो नास्तिकसे कथन है परंतु मोक्षकी पर्याय अस्ति है. वह तो आनंदरूप और मुक्तरूप पर्याय है. अस्तिरूप है, ऐसा है. दृःभ और विकारकी नास्ति है और आनंद और अपनी शांतिकी अस्तिकसे अस्ति है.

Logic से तो कहते हैं, भैया ! परंतु पकडना-समजना तो उसकी बात है. आडाडा ! यहां तो अकार्यकारण पर विशेष बात है. लोगोंमें बहुत तकरार है न ? अरे ! भगवान सुन तो सही प्रभु ! छढाणामें आया था. ये लोक अकृत्रिम है. किसीने किया नहीं. "किनहु न करौ न धरै को, षट्द्रव्यमयी न हरै को" (पांचवीं ढाण-गाथा - १२) उसका अर्थ क्या ? कि, उसमें जो द्रव्य है वह भी किसीने किया हुआ नहीं. उसका गुण है वह किसीका किया हुआ नहीं, उसकी पर्याय भी किसीने की नहीं, आडाडा ! उसका (ऐसा अर्थ है). सारा

લોકકા કર્તા કોઈ નહીં તો લોકકા જો એક દ્રવ્ય છે ઉસકા કોઈ કર્તા નહીં, તો દ્રવ્યકા ગુણ છે ઉસકા ભી કોઈ કર્તા નહીં. હાં, ગુણકા કર્તા દ્રવ્ય કહો, પરંતુ દૂસરા કોઈ કર્તા છે, એસા છે નહીં, આહાહા ! ઓર ઉસકી પર્યાયકા કર્તા ગુણ-દ્રવ્ય કહો વહ ભી વ્યવહાર છે. નિશ્ચયનયસે પર્યાય કર્તા, પર્યાય કર્મ ઓર પર્યાયકા કારણ પર્યાયમેં અપને કારણસે છે. પર્યાય ભી દ્રવ્ય-ગુણકે કારણસે નહીં ઓર પરકે કારણસે તો નહીં, નહીં ઓર નહીં.

શ્રોતા : તીન બાર નહીં, નહીં ક્યોં કહા ?

પૂ. ગુરુદેવ : દર્શન, જ્ઞાન ઓર ચારિત્ર, આહાહા ! એક શક્તિ વહાં તક રખેં.

અબ દૂસરી (શક્તિ). “અજડત્વસ્વરૂપ ચિત્તશક્તિ” ચિત્ત શક્તિકા અર્થ એસા છે કિ, જો જીવત્વ શક્તિ છે ઉસકા ચિત્ત શક્તિ લક્ષણ છે. પરંતુ ચિત્ત શક્તિ ભિન્ન બતાનેકા કારણ યે અજડત્વ છે અર્થાત્ ઉસમેં રાગ ઓર પુણ્ય-પાપકા (ભાવ) જડ છે (વહ) ઉસમેં છે નહીં, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

શ્રોતા : પલટ-પલટકર વહી બાત છે.

પૂ. ગુરુદેવ : ગુલાંટ ખાતી છે બાત.

ઉસમેં તો ફર્ક ઇતના આયા થા કિ, અસ્તિપણે પરિણમન (હે). અબ યહાં તો કહતે હેં કિ, ઇસમેં ચિત્ત શક્તિ નામકી એક ભિન્ન શક્તિ છે. યે ચિત્ત શક્તિકા રૂપ જીવત્વ શક્તિમેં છે અથવા જીવત્વ શક્તિકા લક્ષણ યે ચિત્ત શક્તિ છે. આહાહા ! યે અજડત્વ ચિત્તશક્તિ છે. ઉસમેં જડપના નહીં. સ્પષ્ટ કરતે હેં, આહાહા ! જડપનાકા અર્થ ? શરીર, વાણી, મન તો જડ છે, કર્મ જડ છે, વહ તો ચિત્ત શક્તિમેં છે હી નહીં. ક્યોંકિ અજડત્વ ચિત્ત શક્તિ છે. જડ બિનાકી ચિત્ત શક્તિ (હે). જ્ઞાનસ્વરૂપ ભગવાન (હે, ઉસમેં) - ચિત્તમેં દો લેના છે - જ્ઞાન ઓર દર્શન. સમજમેં આયા ? ચૈતનશક્તિ યે જીવત્વ શક્તિસે ભિન્ન ચૈતનશક્તિ (હે). એસે એક દ્રવ્યમેં સંખ્યાસે અનંત શક્તિયાં હેં, આહાહા ! વહ તો કહા થા ન ?

આકાશકા પ્રદેશ છે ઇસ આકાશકે પ્રદેશકા અંત નહીં. યહ લોક છે વહ તો અસંખ્ય યોજનમેં છે. જગત સંગ્રહાત્મક (હે). ઇ દ્રવ્યકા સંગ્રહાત્મક સ્થાન તો અસંખ્ય યોજનમેં છે. પીછે ખાલી ભાગ - અનંત..અનંત..અનંત..અનંત..અનંત.. નજર કરે તો કહાં આકાશ નહીં છે ? આકાશકે પીછે ક્યા ? પીછે ક્યા ? પીછે ક્યા ? પીછે ક્યા ? પરંતુ પીછે ક્યા - (કુછ) છે હી નહીં. કહા થા ન ? એક બાર (કિસીકો) કહા થા, ‘સુનો એક બાત ! યે આકાશ ચીજ છે એસી એસે...એસે...એસે...ચલી જાતી છે (ઉસકા) કહાં અંત આયેગા ? યે ચીજકા તો અંત આયેગા પરંતુ પીછે કોઈ ક્ષેત્રકા અંત છે ? તો ક્ષેત્રકા અંત નહીં તો ક્ષેત્રકો જાનનેવાલા - ક્ષેત્ર-જ્ઞકા - ભાવકા અંત નહીં, આહાહા ! ૯૧ કી સાલકી માગશર માસ (કી) બાત છે. હમારે તો બહુત બીત ગઈ છે ન ! આહાહા ! યે ક્ષેત્ર જો છે એસે..એસે..એસે...એસે...વહ તો અસંખ્ય યોજનમેં (હે). એસે અનંત..અનંત...અનંત...અનંત...અનંત...અનંત...યોજનકા છે. તો ૧૪ બ્રહ્માંડકે પીછે

જો ખાલી જગા છે, તો ખાલી જગહ કો ક્યા કહના ? ઉસે આકાશ (કહના). તો આકાશકા અંત કહાં ? કિ આકાશ ખલાસ હો ગયા ? આહાહા !

યહ ક્ષેત્રકા અંત નહીં. યે ક્ષેત્ર'જ્ઞ' ભગવાન આત્મા - ક્ષેત્રકા જાનનેવાલા છે. ઉસકા ભાવકા - જ્ઞાનકા ભી અંત નહીં. જૈસે ઇસ ક્ષેત્રકા અંત નહીં ઉસકે અસ્તિત્વકી અગર તુજે પ્રતીતિ હો તો યે ક્ષેત્રકા જાનનેવાલા જ્ઞાન ભી અંદર અપરિમીત-અપાર પડા છે. આહાહા ! સૂક્ષ્મ બાત છે, ભાઈ !

યહાં યે કહતે હૈં, “અજડત્વ ચિત્તિશક્તિ” તો ચિત્તિ નામ ચેતના. યહાં દર્શન ઔર જ્ઞાન દોનો સાથમે લેના છે. બાદમે ભિન્ન કરેંગે. ચેતના શક્તિ - જાનના ઔર દેખના યે દો રૂપ એક ચેતનશક્તિ-વહ અજડત્વ છે. આહાહા ! તો ઇસ જીવત્વ શક્તિમે ભી ચેતન શક્તિકા રૂપ છે. ઉસમે ભી અજડત્વ છે. જીવત્વ શક્તિકા પરિણમન હુઆ તો ઉસમે યે પુણ્ય-પાપકા-જડપના કા અભાવ છે. સમજમે આયા ? આહાહા ! એસી સૂક્ષ્મ બાત છે.

આ વાત છે ઝીણી. લોગ નહીં કહતે ? કિ ‘લોહુ કાપે છીણી’. (એસી ગુજરાતીમે કહાવત હૈ). યે લોહેકી છીની હોતી છે વહ છીની-લોહેકો કાટે. લકડા કાટે ? લકડા લોહેકો કાટે ? લોહેકી છીની સૂક્ષ્મ હો વહ લોહેકા ફડાક કરકે દો ભાગ કર દે. વૈસે યહાં સૂક્ષ્મ જ્ઞાન છે, વહ રાગસે ભિન્ન કરકે (આત્માકા અનુભવ કરે) - જીસકો પ્રજ્ઞાછીની કહતે હૈં. ભગવાન ! એક બાર સુન તો સહી, આહાહા ! યે રાગ ઔર પુણ્ય-પાપકા - દયા, દાનકા ભાવ - ઉસમે તો ચેતન્યકા અભાવ (હૈ). ચેતન્યકે ભાવસે વહ શૂન્ય છે. તો ભગવાન આત્મા યે અચેતનભાવસે શૂન્ય છે. આહાહા ! સમજમે આયા ? એસા માર્ગ છે. લોગોંકો સૂક્ષ્મ પડે ના ! ઔર વહ સ્થૂલરૂપસે પકડા દિયા કિ - કરો દયા, કરો વ્રત, ભક્તિ, પૂજા, દાનમે દો-પ-૧૦ લાખ ખર્ચ કર દો, જાઓ ધર્મ હોગા. યહાં કહતે હૈં કિ, ધૂલમે ભી (ધર્મ) નહીં હોગા. તેરા કરોડ દે દે ના ! કદાચિત્ રાગ મંદ કિયા હો તો પુણ્ય છે - ધર્મ નહીં. યે પુણ્યભાવકા ચેતન શક્તિમે અભાવ છે. આહાહા !

શ્રોતા : પહલે માલૂમ હોતા તો ભાઈ-ભાઈકો કોઈ પૈસા નહીં દેતે.

પૂ. ગુરુદેવ : કૌન દેતા છે, કૌન લેતા છે ?

જિસકો સત્કા આદર નહીં, વહ અસત્કા આદર કરનેવાલા તો સત્કા અનાદર હી કરેગા. ઉસમે કોઈ નવીન ચીજ નહીં. આહાહા ! નાથ તેરા માર્ગ અલગ પ્રભુ ! જહાં તુમ હો વહાં તો પુણ્ય-પાપ ભી નહીં. તુમ જહાં હો તો વહાં તો અપાર અપરિમિત શક્તિકા ભંડાર છે ! આહાહા !

આહાહા ! આચાર્ય મહારાજને ગજબકા કામ કિયા છે ! અમૃતચંદ્ર આચાર્ય (ને) સમયસારમેસે ૪૭ શક્તિયાં નિકાલી. (વૈસે તો) અનંત શક્તિયાં છે, પરંતુ કથનમે અનંત કરને જાયે તો અનંત સમય જાયે. આહાહા !

श्रोता : उसका रहस्य हमारे सामने आपने बताया.

पू. गुरुदेव : वस्तु ऐसी है और समझमें आये ऐसी है. भाषा सादी (है) कोई संस्कृत-व्याकरण जैसी चीज नहीं. आहाहा ! यह तो सादी भाषा है. सत्य सादा है, सत् सरण है.

श्रीमद् कहते हैं, सत् सरण है, सत् सर्वत्र है, सतका पाना-मिलना, सत् पानेका गुरु मिलना वह मला दुर्लभ है, ऐसा कहते हैं. श्रीमद् वहां कहते हैं. पत्रमें लिखा है. आहाहा ! गुरु मिला कब कहनेमें आता है ? कि जब अपना आत्माका अनुभव करे तब गुरु मिला ऐसा कहनेमें आता है. आहाहा !

भगवान आत्माका आनंदका अनुभव वह धर्म है. आहाहा ! “अनुभव रत्न चिंतामणी, अनुभव है रसकूप, अनुभव मार्ग मोक्षनो, अनुभव मोक्ष स्वरूप” अनुभव मोक्षका मार्ग (है). आनंदके नाथ का स्वसन्मुख होकर अनु नाम स्वभावका अनुसरण करके भव नाम होना - आनंद रूप होना, ये अनुभव मोक्षका मार्ग है. बाकी व्यवहार रत्नत्रय आदि सब बंधका कारण है, समझमें आया ?

यह चिति शक्ति भी अकारणकार्यसे भरी पड़ी है. ये चिति शक्ति साथमें उछलती है. ज्वलत शक्तिके साथमें चिति शक्तिकी पर्याय उछलती है - उत्पत्ति होती है. ये चिति शक्तिकी ज्ञान, दर्शनकी पर्याय जब उत्पन्न होती है - उसमें कोई रागका कारण नहीं और चिति शक्तिकी पर्याय जो परिणामती है ये रागका कारण नहीं. रागका कारण नहीं और राग कारण और चिति शक्तिकी पर्याय कार्य नहीं, आहाहा ! ऐसी बातें (है). पर्यायकी मुदत एक समयकी है. भगवान आत्मामें द्रव्य, गुण त्रिकाव है. द्रव्य और गुण त्रिकाव है और पर्यायकी मुदत एक समयकी है. आहाहा ! दूसरे समयमें दूसरी, तीसरे समयमें तीसरी. पर्यायका समय तो एक समय है. एक समयकी पर्यायमें चिति शक्ति परिणामती है. त्रिकावी ज्ञायकभावमें चिति शक्ति पड़ी है तो ज्ञायकभाव शक्ति और शक्तिवानका भेद भी दृष्टिमें न लेनेसे, ये शक्ति और शक्तिवान दो भेद नहीं करके शक्तिवान है - (ऐसे) ज्ञायक पर दृष्टि करनेसे (सम्यग्दर्शन होता है). क्योंकि ज्ञायकभाव चिति शक्तिसे पूरा भरा है. आहाहा ! ये पर्यायमें जब चिति शक्तिका - शक्तिवानका अंदर जहां आदर आया और व्यवहारका आदर छोड़ दिया (तो निश्चय धर्म प्रगट हुआ). आहाहा ! अभी तो ऐसा कहते हैं कि, प्रज्ञा भी ये करते हैं कि, व्यवहार करते-करते निश्चय होगा. अरे..! वह श्रद्धा ही मिथ्यात्व है. आहाहा ! क्या हो (सकता है) ? समझमें आया ?

चिति शक्तिकी पर्याय उछलती है उसमें अकारणकार्यकी पर्याय भी आती है. यह ज्ञान, दर्शनकी पर्याय जो उत्पन्न होती है उसका कारण द्रव्य-गुण व्यवहारसे कहनेमें आता है और परिणामन हुआ उसका कारण-कार्य परिणामनमें हैं. आहाहा ! द्रव्य-गुण भी कारण नहीं है.

कणशटीकामें यह अपने आ गया है कि, अपना परिणाम कार्य और द्रव्य - गुण कारण - यह उपचारमात्रसे है. गजब बात है, भाई ! निर्मल पर्यायका अनुभव हुआ इस अनुभवमें अनुभवरूपी कार्य - कर्म, कर्म कडो, कार्य कडो, दशा कडो (सब अकार्य है), उसका कारण द्रव्य - गुण है, यह उपचारसे है - व्यवहारसे है. आहाहा ! परका कारण - कार्य तो है ही नहीं. यह बात सबेरे चलती है न ?

७४ की सालसे व्याख्यान चलता है. ५८ वर्ष हुआ. संप्रदायमें भी हमारी बहुत प्रतिष्ठा थी न ! पुण्य दिने, शरीर भी सुंदर दिखता है. बाहरमें तो हजारों लोग सुनने आते थे. समझमें आया ? तो ७१ (की) सालमें उस (वक्त) भी हमने कडा था. कितने वर्ष हुआ ? ६२ (वर्ष हुआ). दोपहरको एक घंटा वांचन देते थे, तो सभामें कडा 'अपनी पर्यायमें जो विकार होता है (वह) कर्मसे बिलकुल नहीं (होता). गुरु सुनते थे. (गुरु) त्रिदिक थे. गुरु पीछे बैठे थे. व्याख्यान चलता था, आहाहा ! अपनेमें जितना विकार होता है - मिथ्यात्व हो या राग-द्वेष हो - उसमें निमित्त कारण कर्मसे हुआ, यह बिलकुल है नहीं. और विकारका नाश करनेमें कोई परका कारण नहीं है. अपना स्वभावका पुरुषार्थ करते (हैं, तो) सब विकारका नाश हो जाता है. कर्म नाश हो तो विकारका नाश होता है, ऐसी चीज है नहीं. यह तो ७१ की साल (में कडा था). कितनों का तो जन्म भी नहीं हुआ होगा. आहाहा ! हलचल मय गयी. संप्रदायमें जलबली हो गयी. ये कहांसे लाये ? आहाहा ! दामोदर सेठ कहते थे, ये 'वगर दोराकी पडाई' चलती है. दोरा समझे ना ? धागा. क्योंकि हमारे गुरुने कडा नहीं और हमने कभी सुना ही नहीं और ये बात कहांसे निकाली ? आहाहा ! बापू ! मार्ग तो ऐसा है, भाई ! विकार अपनी पर्यायमें (होता है वह कर्मसे नहीं होता).

२० वर्ष पहले वही बात वर्णाञ्ज के साथ लुयी. पंचास्तिकायकी ६२ (वी) गाथा (का आधार दिया) कि, परमाणुमें कर्मकी पर्याय जो होती है वह भी षटकारक परिणामन जडसे होती है. आत्मामें विकार होता है वह भी अपने षटकारकसे पर्यायमें होता है - द्रव्य-गुणसे नहीं, परसे नहीं. परके कारणसे इसमें विकार होता नहीं. सबमें ये गडबड चलती है. आहाहा !

एक आर्जिका ऐसा कहती है, 'विकार कर्मसे न हो तो अकांत है. निश्चयनयसे अकांत है, व्यवहारनयसे मानना पडेगा'. परंतु व्यवहारनयका अर्थ क्या ? निमित्त है - इतना व्यवहार है. परंतु उससे विकार होता है, ऐसा नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बात है.

“अजडत्वस्वरूप यिति शक्ति” आहाहा ! इस जवत्व शक्तिमें दूसरी शक्ति निकाली कैसे ? यिति शक्ति तो वास्तवमें जवत्व शक्तिका ही लक्षण है. लक्षण है परंतु भिन्न बतानेको ये अजडत्व स्वरूपे भिन्न बतानेको दूसरी बताया (है). समझमें आया ? भगवान आत्मामें यिति शक्ति दर्शन-ज्ञान येतना स्वरूप येतना शक्ति है. यह शाश्वत है. द्रव्य जैसे शाश्वत

है जैसे यिति शक्ति शाश्वत है. (धस) शाश्वत शक्तिमें अकार्यकारण शक्ति भी साथमें पडी है. ये यितिशक्तिकी द्रव्य स्वभाव पर दृष्टि होनेसे, ज्ञान-दर्शनकी पर्याय जैसे उत्पन्न होती है, उछलती है, उत्पन्न होती है तो उसके साथ अकार्यकारणकी पर्याय भी (हुयी). ज्ञानकी पर्याय हुँ, उसका कोई कारण नहीं और ज्ञानकी पर्याय रागका कारण नहीं. आहाहा ! ऐसी बातें. अक घंटेमें कितना याद रहना ? आहाहा ! बहुत तरलकी बात है. पत्नी सुनने न आयी हो और घर जाकर पुछे कि, क्या सुनकर आये ? तो कहे ऐसा..ऐसा कुछ कहते थे. आहाहा ! मार्ग तो देखो ऐसा है, भाई ! यह तो अपूर्व मार्ग (है). अनंतकालसे रहउते-रहउते पूर्वमें कभी किया नहीं. आहाहा !

यिति शक्ति द्रव्य, गुण, पर्यायमें व्यापक होती है. यिति शक्ति गुण है. परंतु द्रव्य पर दृष्टि होनेसे, शक्ति और शक्तिवानका भेद छोडकर, शक्तिवान आत्मा ऐसी दृष्टि करनेसे, ये यिति शक्तिका पर्यायमें परिणामन होता है. ज्ञान और दर्शन, देखने-जाननेकी पर्याय अपनेसे होती है. ये पर्यायका कारण पर नहीं, भगवानकी वाणी सुनी तो पर्याय हुयी, ऐसा नहीं, समझमें आया ? ऐसा सूक्ष्म है.

ज्ञानकी पर्याय उत्पन्न होती है और दर्शनकी पर्याय उत्पन्न होती है तो भगवानकी वाणी सुननेसे उत्पन्न होती है कि नहीं ? और यहां देखो - पहले ज्ञान नहीं था. ऐसा सुननेमें ज्ञान आया - तो अंदरमें ये सुननेके कारणसे ज्ञान उत्पन्न होता है कि नहीं ? यहां ना कहते हैं. ऐसा है नहीं. आहाहा ! ये सुननेमें आया है तो ज्ञानकी पर्याय उत्पन्न (हुयी) ये ज्ञानकी पर्याय भी अपनेसे होती है. और सुनना तो निमित्त है. परंतु निमित्तसे होती नहीं. अक बात. और ज्ञानकी पर्याय जो अपनेसे हुयी है वह वास्तविक ज्ञान नहीं. द्रव्य स्वभाव पर दृष्टि देनेसे जो ज्ञान पर्याय होती है वह वास्तविक ज्ञान है. ऐसी बात है.

श्रोता : उपयोगके तो १२ भेद है.

पू. गुरुदेव : अंदर अक ही भेद है.

धर्मदास क्षुल्लकने लिखा है कि, आत्मा अक और २२ परिषद कहांसे आया ? आहाहा ! आत्मा अक और १० प्रकारके धर्म कहांसे आये ? वह तो भेदसे कथन है. वीतराग स्वभाव यही दस लक्षण पर्व और वीतरागस्वभाव वही धर्म है. उसका १० प्रकारसे कथन है. धर्मदास क्षुल्लकने सम्यग्ज्ञान दीपिकामें लिखा है कि, आत्मा अक और १२ प्रकारका तप ! २२ प्रकारका परिषद ! (ऐसा) कहांसे आया ? ऐसा मार्ग है भगवान ! वीतराग सर्वज्ञ परमेश्वरका पंथ - प्रभु का पंथ यह है. बाकी सब पामरके पंथ यह है, आहाहा ! कुछ समझमें आया ?

बहुतोंको तो अभी पर्याय क्या है उसकी ખबर - ज्ञान नहीं (है). वहां धर्म कहांसे आया ? धर्म तो पर्याय है. धर्मी और धर्मीका धर्म (स्वभाव) वह ध्रुव है. द्रव्य - उसका

ज्ञान-दर्शन धर्म - स्वभाव. वह शाश्वत है. परंतु वह परिणति— पर्याय जो हुयी वह तो एक समयकी पर्याय है. ये शाश्वत नहीं. शाश्वतके आश्रयसे (पर्याय) होती है तो भी पर्याय अशाश्वत है.

अनित्यसे नित्य जाननेमें आता है. ये क्या कडा ? आडाडा ! पर्याय अनित्य है. ये अनित्यसे नित्य जाननेमें आता है. ये सब बातें तुम्हारे हिसाब-किताबमें नहीं मिलेगी. क्या कडा ? अंतमें क्या कडा ? नित्यसे नित्य जाननेमें नहीं आता. नित्य तो कूटस्थ - ध्रुव है. और कार्य होता है पर्यायमें. तो पर्यायसे नित्य जाननेमें आता है. अनित्यसे नित्य जाननेमें आता है. आडाडा ! ऐसी बातें हैं. आडाडा ! अरे ! लोग विरोध करे, प्रभु ! बापू ! तू नुकसान करता है. सत्का विरोध करना (और) सत्की भबर नहीं. आडाडा ! अंदर सख्खिदानंद प्रभु ! सत् नाम शाश्वत द्रव्य और गुण. और पर्याय अशाश्वत - अनित्य (है). आडाडा ! नित्यानित्य स्वरूप वह आत्मा है, समझमें आया ?

अकबार राजकोटमें ८८की सालमें एक साधु आया था. वेदांती साधु था. उसने कडा जैनमें अध्यात्मकी बात और आत्माकी बात करनेवाले साधु कौन है ये ? जैनका नाम बाहरमें ऐसा है कि, किया करनी, व्यवहार करना, पुण्य करना और दया करनी वह जैन. वह सुनने आया. सुननेके लिये यर्यामें आया था. हमने कडा कि 'आत्मा अनित्य है' (यह) सुनते ही भाग गया. आडाडा ! अरे ..! सुन तो सही प्रभु ! तुझे भबर नहीं. ये 'आत्मा है' ऐसा निर्णय किया तो द्रव्यने किया ? ध्रुव तो कूटस्थ है. कूटस्थ समझे ? शिपर (को कूट कहते हैं). पर्याय पलटती है उसमें कार्य होता है. आत्माकी पर्याय अनित्य है और द्रव्य नित्य है. पर्याय अनित्य है. दो मिलकर आत्मा है. तो अनित्यसे नित्य जाननेमें आता है. विशेष कछे....



प्रवचन नं. ४

शक्ति-२,३ - ता. १४-०८-१९७७

अजडत्वात्मिका चितिशक्तिः ॥२॥
अनाकारोपयोगमयी दशिशक्तिः ॥३॥

यह समयसार. परिशिष्ट अधिकार (यह रहा) है. शक्तिका अधिकार है. थोडा सूक्ष्म लगे लेकिन वस्तुकी स्थिति (ऐसी है). क्या कहते हैं ? कि, अभी तक इसमें ऐसा दिया कि आत्मा ज्ञानमात्र स्वरूप है. उसमें कोई शरीर, वाणी, कर्म और पुण्य-पापका भाव नहीं है. तो शिष्यने प्रश्न किया कि, (आत्मा) ज्ञानमात्रभाव है, तो अंकांत हो जाता है. ज्ञानमात्र कहा तो अकेला ज्ञानस्वरूप तो अंकांत हो गया और उसमें अनंत गुण नहीं आये. और है तो अनंत गुण. तो प्रभु ! आपने ऐसा अंकांत क्यों कहा ? तो आचार्य कहते हैं कि, अकेला सुन तो सही. ज्ञानमात्र प्रभुका अनुभव करनेसे उसमें वर्तमान ज्ञानकी परिणति उत्पन्न (होती है), उछलती है, उसमें अनंतगुणकी पर्याय साथमें उत्पन्न नाम उछलती है, आछाछा !

यह आत्मा ज्ञानस्वरूप (है ऐसा) कहते (आये) हैं. तो शिष्यका प्रश्न है कि, ज्ञानस्वरूपी अकेला ही गुण हुआ, वह तो अंकांत हो गया. उसमें अनंतगुण नहीं आये. भैया ! सुन तो सही. प्रभु ! ये ज्ञानगुण आत्माका (है). आत्मा-गुणीका ये गुण (है). जैसे गुणी (अर्थात्) भगवान आत्मा - ज्ञायक परमात्मा उसकी जब दृष्टि होती है, (जब) उसके स्वभावका स्वीकार हुआ, तो पर्यायमें उत्पाद-व्ययपने ज्ञानकी पर्याय उत्पन्न हुयी, (तो) उसके साथ आनंदकी पर्याय भी उत्पन्न होती है, उसके साथ श्रद्धाकी पर्याय उत्पन्न होती है, यारित्रकी पर्याय अपनी सर्व ऋद्धिको सेवे, ऐसी यारित्र पर्याय भी साथमें उत्पन्न होती है. 'उछलती है' शब्द पडा है न ? आछाछा !

भगवान ! समुद्रमेंसे जैसे बाढ आती है (तो) किनारे पर पानी उछलता है. जैसे भगवान आत्मा, अकेले समयमें ज्ञानगुण मात्र कहा - परंतु ज्ञान 'है' - 'है' - ऐसा अस्तित्वगुण भी साथमें आया. समझमें आया ? ज्ञान 'है', तो अस्तित्व गुण भी साथमें 'है'. तो है तो दूसरा अस्तित्व गुण भी साथमें आया. अस्तित्व समझते हो ? अस्तित्वगुणका रूप भी

ज्ञान 'है' - ज्ञान 'है' तो ज्ञानमें भी 'है' पना आया. ये अस्तित्वगुणका रूप उसमें है. असा मार्ग जरा सूक्ष्म है. प्रभु ! अंदरमें बिराजमान है नाथ !

आत्मा अनंत-अनंत शक्तिका-गुणका संग्रहालय, अनंत गुणका गोदाम है. गोदाममें से माल निकालते है ना ? असे भगवान आत्मा अक समयमें अनंत शक्ति कडो, या गुण कडो, या सत्का सत्व कडो, या भाववानका भाव कडो (सब अकार्थ है). समजमें आया ? आडाडा ! (आत्मा) अनंत गुणका समुदाय - गोदाम है. आडाडा ! इसमें विकारका वेदनका गोदाम नहीं. जो राग और दया, दान, व्रत आदिका व्यवहार है, वड तो कृत्रिम (है). पर्यायमें पर्यायदृष्टिसे उत्पन्न होता है - वस्तुमें नहीं. सूक्ष्म भातें बहुत भाई ! पर्यायमें पर्यायअंश पर दृष्टि - लक्ष जाता है, तो विकृत निमित्त पर लक्ष जाता है, तो वहां विकार उत्पन्न होता है, समजमें आया ? भगवान आत्मा ! अक सेकंडके असंख्य भागमें अनंतगुण - शक्ति, शुद्ध चैतन्यका पिंड है, आडाडा ! और उस द्रव्य पर दृष्टि आने से, निमित्त परसे लक्ष छोडकर, शुभ रागादि है उसका भी लक्ष छोडकर और रागके कालमें - रागको जाननेकी पर्याय जो व्यक्त - प्रगट है, उसका भी लक्ष छोडकर (स्वभावका आश्रय करनेसे पर्यायमें अनंत शक्तियां उछलती है). आडाडा ! अक तो क्षणिक पर्याय है, (दूसरा) राग विकृत है, (तीसरा) निमित्त - पर है, तो तीनोंसे लक्ष छोडकर (स्वभावका आश्रय करना है). आडाडा ! भगवान आत्मा ! अनंत शक्तिका संग्रहालय है. अनंत शक्तिका संग्रह का आलय (अर्थात्) संग्रहका स्थान है. और अनंत स्वभावका सागर है, प्रभु ! (आत्मा) शक्तिका संग्रहालय, गुणका गोदाम, स्वभावका सागर (है). आडाडा ! क्या कडा ?

श्रोता : ये सत्य नारायणकी कथा है.

पू. गुरुदेवश्री : (लोग) सत्य नारायण कडते हैं, वड नहीं. यड तो सत् नारायण है. आडाडा ! नरमेंसे नारायण होनेकी लायकात उसमें है. परमात्मा होनेकी लायकात उसमें है, आडाडा ! असी चीज (अंदरमें है). अनंत गुणोंका गोदाम, अनंत शक्तिका संग्रहालय और अनंत स्वभावका सागर अकरूप प्रभु ! आडाडा ! उसका आश्रय करनेसे जितनी अनंत शक्तियां है, सबका पर्यायमें उत्पाद् (होता है) - उछलता है. असी भातें हैं. असा धर्म तो भारी भाई ! साधारण मनुष्यने बेचारेने सुना भी न डो.

यहां इस शक्तिके वर्णनमें अनेकांत आया. (आत्माको) अकेला ज्ञानमात्र जो कडनेमें आया था तो वड ज्ञान (अस्तित्वरूप) है, ज्ञान वस्तुत्व है, ज्ञान प्रमेयत्व है, इस ज्ञानमें भी अनंत गुणका रूप है और अनंत गुण भिन्न है. आडाडा ! समजमें आया ? भाई ! यड तो वीतराग मार्ग है, बापू ! ये साधारण मनुष्यको पता लग जाये असी चीज नहीं, ये तो महान पुरुषार्थ है. स्वरूप की ओरका मडा (पुरुषार्थ है). पर्याय पर अनादिका लक्ष है. साधु हुआ, दिगंबर मुनि हुआ, पंथ मडाव्रत का पालन किया, रट मूलगुण लिये परंतु

दृष्टि पर्याय उपर (रही). अक समयकी ज्ञानकी पर्यायमें (भेल रहा है). भगवान ! पर्यायके पीछे बादशाह पडा है. सारा परमात्मा (पडा है). आहाहा ! उसकी दृष्टिका तो अभाव (है). उस कारणसे पंथ मलाप्रत आदि शुभ क्रियाकांड करे तो उसे देवादिका (भव) मिले. (परंतु) भवका अभाव न हो, आहाहा ! भगवान आत्मा ज्ञान स्वरूप है, असा अनंत शक्तिस्वरूप है. असी अंतर दृष्टि करनेसे भवका अभाव (होता है और उस समय) आनंदका अनुभव आता है और शांतिका स्वाद आता है. शांति शब्दसे यारित्र (कहना) है. आनंद शब्दसे सुभ (कहना) है. समझमें आया ? और वीर्यगुणसे, वीर्य अनंत गुणकी पर्यायकी रचना करता है. अंतर (में) जो वीर्य है (अर्थात्) आत्मबल (है). इस ज्ञानके परिणामनके साथ वीर्य अनंत गुणकी निर्मण परिणतिकी रचना करता है. रागकी रचना करे यह वीर्य नहीं, आहाहा ! दया, दान, व्रत, भक्ति, पुण्यकी रचना करे यह नपुंसक है, हीजडा है. हीजडेको जैसे वीर्य नहीं (होता है तो) पुत्र नहीं (होता). भैया ! बात तो असी है, भगवान ! वैसे शुभभावमें नपुंसकता है. तो उसमें (से) धर्मकी पर्यायकी प्रजा उत्पन्न हो (असा) शुभभावमें नहीं, आहाहा ! महाराजा भगवान त्रिलोकनाथ परमात्मा जिसमें अनंत गुण (के साथ) वीर्य गुण भी है तो गुणके धरनेवाले भगवानका स्वीकार जहां हुआ (तो) शुद्धस्वभावकी पर्यायकी उत्पत्ति (होती है). (भगवान) है तो सही, परंतु 'है' तो उसका स्वीकार जिसे आता है, उसके लिये 'है'. 'है' तो 'है'. 'है' लेकिन उसके लिये है कहां आया ? समझमें आया ?

श्रोता :- हम तो हं कहते हैं, हमको तो स्वीकार है.

पूज्य गुरुदेवश्री :- असा स्वीकार नहीं, भगवान ! आहाहा ! भगवानके सामने टेभकर स्वीकार होना यह (स्वीकार) है.

दो शक्ति यही है. जवत्व शक्ति, यिति शक्ति. यिति शक्ति साधारण यही है. परंतु आज दश शक्ति थोड़ी लें. आत्मामें अनादिसे जवत्वशक्ति है. यह द्रव्य जो आत्म द्रव्य है, उसका कारणरूप जवत्व शक्ति. और जवत्व शक्तिरूप ज्ञान, दर्शन, आनंद और बलरूप उस शक्तिका भेद है. भावप्राणरूप उसका शक्तिका भेद है. अनादिसे भावप्राणसे भगवान आत्मा जता आया है, ज रहा है और जयेगा. लोग असा कहते हैं - हमारी इस विषयमें टीका भी हुई है कि, (हम असा कहते हैं कि) 'जओ और जने दो' (असा जो कहते हैं) यह भगवानकी वाणी नहीं. सभी लोग रथयात्रा निकलती है तब (बोले कि) 'महावीरका संदेश - जओ और जने दो' (लेकिन) असा है नहीं. असा जओ और जने दो, ये कहां है ? इस प्राणसे (आत्मा) जता है ? ये पांय छन्दियका प्राण, श्वास, आयुष्य, मन, वचन और काया, (असे) इस (प्राण). उससे जओ और जने दो - ये भगवानकी वाणी नहीं है. यह तो (प्रिष्टीके) अंग्रेजोंके बायबल की वाणी है.

यहां तो जवतरशक्ति - जो ज्ञान, आनंद, दर्शन, बलसे भरी है, उससे जवनका जवन

जोओ और दूसरेको जवन जने दो, आहाला ! समजमें आया ? कल ये कला था, (समयसारमें) दूसरी गाथा है न - 'जीवो' शब्द लिया है न ? पहली गाथामें तो 'वंदितु सव्वसिद्धे' कला (और) दूसरी गाथामें 'जीवो चरित्तदंसणणाणद्धिदो' इसमें 'जीवो' में से जवत्व नामकी शक्ति निकाली. पहली जवत्व शक्ति निकाली. आहाला ! समजमें आया ? और इस जवत्व शक्तिमें अनंत शक्तिका रूप है. अनंत शक्ति-गुणके आश्रय - गुण नहीं - गुणके आश्रयसे गुण नहीं. परंतु गुणमें अनंत गुणका रूप है. आहाला ! ऐसी बात है, समजमें आया ? जैसे जवतर शक्तिमें कम-अकम (रूप) प्रवृत्ति जो है - कमसे निर्मण पर्याय होती है और गुण अकमसे है. वल सब कमवर्ती और अकमवर्ती गुण और पर्यायके समुदायको आत्मा कहते हैं. समजमें आया ? ध्रुव को आत्मा कहते है वल बात अत्मी नहीं है.

नियमसार शुद्धभाव अधिकारमें आता है न ? त्माई ? - वहां तो आत्मा किसको कहते हैं ? कि पर्याय बिनाकी नित्यानंद ध्रुव वस्तु - उसको आत्मा कहते हैं, समजमें आया ? नियमसार ३८ गाथामें लिया है. वहां तो ये लेना है - ध्रुव शब्द आया न ? "ध्रुव धामके ध्येयके ध्यानकी धधकती धुशी धैर्यसे धमाने से..." हमारे गुजरातीमें ऐसा कहते हैं कि 'धीरजथी धभाववी'. ध्रुवधाम भगवान आत्मा जिसका स्थल ध्रुव है. और जिसमें अनंत अपार शक्ति ध्रुवरूप है. इस ध्रुव धामके ध्येयके ध्यानसे धधकती धुशी - शांति और आनंदकी (धुशी). आनंद...आनंद...आनंद...सम्यग्दर्शनमें अतीन्द्रिय आनंद आदिकी धधकती धुशीको धैर्यसे - धीरजसे धमाना. ङागुन मासमें गुजरातीमें बनाया था. यह शब्द तो अत्मी बनाये थे. ये धर्मके धारक धर्मी धन्य है. सब ध..ध..है.

यहां कहते हैं, यह जवत्वशक्ति बहुत यली. दो - अढाई घंटे यली. अब यिति शक्ति थोड़ी ले. इस यिति शक्ति(को) भिन्न शक्ति कही (है) परंतु निश्चयसे तो (यह) जवत्वशक्तिका ही लक्षण है. समजमें आया ? त्माई ! बहुत सूक्ष्म बात है, बापु ! यह तो भगवानके दरबारका भजना भोलनेकी बात है. आहाला ! जवत्व शक्ति है इसमें यिति शक्ति है वल भिन्न-भिन्न है. जवत्व शक्तिका यिति शक्ति लक्षण है. यितिमें दो साथमें आया - दर्शन और ज्ञान. दर्शन-ज्ञान साथमें आया तो यिति शक्तिका धरनेवाला द्रव्य, उसको दृष्टिमें लेनेसे पर्यायमें यिति शक्तिका (अर्थात्) दर्शन-ज्ञानका परिणामन - येतनाका परिणामन अक साथ होना, उसके साथ अनंत गुणकी पर्याय उछलती है. समजमें आया ? आज तो अब हम तीसरी (शक्ति) दें.

दशि शक्ति लेते हैं. क्योंकि इसका तो पार नहीं है. शास्त्रमें तो अक-अक शक्तिको गृहस्थपने उतारी है, ब्रह्मचर्यपने उतारी है, वानप्रस्थपने उतारी है, साधुपने उतारी है, यतिपने उतारी है, ऋषिपने उतारी है, मुनिपने उतारी है. जैसे ये अक दशि शक्ति है - जो देपनेकी शक्ति और देपती है, (वल) आत्म द्रव्यको देपती है, अपनेको देपती है, पर्यायको देपती

है और सबको देवती है. देवनेमें भेद नहीं. ये पर द्रव्य है (और) ये स्व द्रव्य है. असा भेद नहीं. आया ? देवो ! “अनाकार उपयोगमयी दशिशक्ति” सूक्ष्म बात है भगवान ! अनाकार उपयोगमय. ये तो वस्तु अलौकिक (है) बापू ! आहाहा ! जो दर्शन शक्ति है उसमें आकार नहीं. आकार नहीं अर्थात् ये यीज आत्मा है और ये यीज जड है, असा भेदरूपी आकार नहीं. आहाहा ! ऐसी बातें (हैं) !

भाई ! तेरी समृद्धि ऐसी है परंतु तुने निधान (की ओर) नजर कभी नहीं की. आहाहा ! ये दया, दान, व्रत, पूजा, भक्ति, तप करनेसे धर्म डोगा (ऐसा मानकर) अनादि कालसे तू मर गया. यह यैतन महाराज भगवानका तुने अनादर किया और विकृतभाव (जो) उसमें नहीं (है) उसका आदर किया. जो देवनेवाला है - उसको देवनेकी शक्तिसे देवा नहीं.

श्रोता : अभी तक किसीने देखाया नहीं तो देवे कैसे ?

पू. गुरुदेवश्री : देवनेकी दरकार नहीं की, भगवान !

अक प्रश्न हुआ था. (किसीने) पूछा था. “महाराज ! तुम असा कहते हो कि, आत्मा कारण परमात्मा है - कारणस्वरूप परमात्मा है. इस द्रव्यको कारण परमात्मा कहते हैं और केवलज्ञानकी पर्यायको कार्य परमात्मा (कहते हैं). उसको तो इतना प्रश्न था - ये भगवान आत्मा - ध्रुव, यह कारण परमात्मा है - तो कारण है तो कार्य आना चाहिए” असा प्रश्न किया. (हमने कहा) कारण है तो सही. परंतु ‘है’ ऐसी दृष्टिमें आस्था नहीं आयी (तो) उसके लिये ‘है’ (असा) कहाँसे आया ? समझमें आया ? असा प्रतीतमें आया हो तो कारण परमात्मा है, समझमें आया ? वस्तु तो भगवान पूर्णानंद बिराजमान है. यैतन भगवान परमात्मा ये कारण परमात्मा उसको परमात्मा कहते हैं. और केवलज्ञानी परमात्माको कार्य परमात्मा कहते हैं. पर्यायरूप कार्य पूर्ण हुआ न ! इसलिये कार्य परमात्मा (कहते हैं). परंतु कहते हैं कि, कारण परमात्मा है, कारण है तो कार्य आना चाहिए. तो कारण परमात्मा तो अनादिसे हैं, तो कार्य क्यों नहीं आया ? आहाहा !

भगवान ! ये कारण परमात्मा अक समयमें अनंत-अनंत शक्ति संपन्न प्रभु ! (है). अक-अक शक्तिकी अनंत शक्ति, अक-अक शक्तिकी अनंती पर्याय, आहाहा ! अक शक्तिकी अनंत शक्ति और अक-अक शक्तिको (अनंत शक्तिका) रूप (है). परंतु सामर्थ्य - शक्ति अनंत है. अक दशिशक्ति लो, इस दशिशक्तिमें अनंत सामर्थ्य है और दशिशक्तिकी देवनेकी पर्याय भी अनंती है. देवनेकी शक्तिका धरनेवाला असा परमात्मा है. परंतु ‘है’ असा ज्ञानमें आये बिना ‘है’ कहाँसे आया ? आहाहा ! भगवान ! थोड़ी सूक्ष्म बात आ गयी है.

अपनी ज्ञानकी वर्तमान पर्यायमें ये ज्ञेय बना नहीं, तो उसको ‘है’ कहाँसे आया ? सूक्ष्म बातें हैं, बापू ! ज्ञानकी पर्यायमें ज्ञेय सारा द्रव्य जाननेमें आया तब उसको वर्तमान

શ્રદ્ધાકી પર્યાય (મેં) 'હૈ' એસા સ્વીકાર હુઆ. ઇસકે બિના જ્ઞાનકી પર્યાયમેં પૂર્ણાનંદ પ્રભુ જ્ઞેયરૂપ ન હુઆ. પર્યાયમેં ત્રિકાલી જ્ઞેય આતા નહિં, પરંતુ પર્યાયમેં ત્રિકાલી જ્ઞેયકા જ્ઞાન આતા હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ? સમ્યગ્દર્શનકી પર્યાયમેં ત્રિકાલી વસ્તુકી શ્રદ્ધા આતી હૈ. પરંતુ ત્રિકાલી ચીજ પર્યાયમેં નહીં આતી, આહાહા ! સમજમેં આયા ? તો (ઉસકી જ્ઞાન) પર્યાયમેં 'ત્રિકાલી ચિદાનંદ ભગવાન હું' એસા જ્ઞેય બનાકર જ્ઞાન ન હુઆ, શ્રદ્ધાકા વિષય બનાકર શ્રદ્ધા ન હુયી - તબ તક કારણ પરમાત્મા ઉસકે લિયે નહીં હૈ. આહાહા ! એસી બાતેં હૈં. ઓર જબ સ્વીકાર હુઆ (તો પર્યાયમેં કાર્ય પ્રગટ હુઆ). એસી બાત હૈ. ભગવાન આત્મા ! પૂર્ણાનંદ પ્રભુ ! અનંત શક્તિકા એકરૂપ પિંડ, શક્તિ ઓર શક્તિવાનકા ભેદ ભી જિસમેં નહીં (હૈ). સમ્યગ્દર્શનકા વિષય અભેદ હૈ. યે શક્તિ ઓર શક્તિવાનકા ભેદ ભી સમ્યગ્દર્શનકા વિષય નહીં, આહાહા ! જબ (એસા) અભેદ (સ્વરૂપ) દૃષ્ટિકા વિષય હુઆ, તબ કારણ પરમાત્મા પૂર્ણાનંદ (સ્વરૂપ) હૈ (એસા) ઉસકી પ્રતીતિમેં આયા. વસ્તુ (પર્યાયમેં) આયી નહીં. વસ્તુ તો વસ્તુમેં રહી. પર્યાયમેં ઇતના સામર્થ્યવાલા તત્ત્વ હૈ, એસી શ્રદ્ધાકી પર્યાયમેં ઉસકે સામર્થ્યકી શ્રદ્ધા આયી. પરંતુ યે ચીજ પર્યાયમેં નહીં આતી. ચીજ તો ચીજમેં રહતી હૈ, આહાહા ! યહ તો અલૌકિક બાતેં હૈં ! આહાહા !

પર્યાય સમજતે હો ના ? વર્તમાન (દશાકો પર્યાય કહતે હૈં). યે ઉછલતી દશા જો કહતે હૈં - યે (પર્યાય હૈ). શ્રદ્ધાકી દશા ઉત્પન્ન હોતી હૈ, જ્ઞાનકી (દશા) ઉત્પન્ન હોતી હૈ, આનંદકી (દશા) ઉત્પન્ન હોતી હૈ. એસી પર્યાયમેં યે પર્યાયવાનકી પ્રતીતિ ઓર જ્ઞાન આયા, તબ યે કારણ પરમાત્માકા 'હૈ' એસા સ્વીકાર આયા. ચીજ કો દેખે બિના દેખના કહાં ?

યહ દશિશક્તિ હૈ ન ? તો કહતે હૈં કિ, દશિ શક્તિ ધરનેવાલેકો દેખે નહીં તો દશિ શક્તિકી ઓર દશિ શક્તિકે વિષયકી પ્રતીતિ કહાંસે આયી ? સમજમેં આયા ? એસા હૈ ભાઈ ! દશિ શક્તિ જો હૈ, યહ સબકો દેખતી હૈ તો અદૃશ્યપના રહા નહીં - દેખે બિના રહા નહીં. એક બાત. - તો દશિ શક્તિ સબકો દેખતી હૈ, તો 'યે નહીં હૈ', એસા રહા નહીં. કૌન નહીં હૈ ? (તો કહતે હૈં) વસ્તુ. યે દશિમેં દેખનેકી ચીજ નહીં હૈ, એસા નહીં રહા. અદૃશ્ય ન રહા, અદૃશ્યપના નહીં રહા, આહાહા ! સમજમેં આયા ? ભાઈ ! માર્ગ સૂક્ષ્મ હૈ. એસે વ્રત લિયા, મુનિપના લિયા, મહાવ્રત લે લિયા - યહ સબ સમ્યગ્દર્શન બિના બેકાર હૈ, સંસાર હૈ. મોક્ષકા માર્ગ કોઈ દૂસરા હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ?

(યહાં) કહતે હૈં - અનાકાર (માને) ઉસમેં આકાર નહીં. યાની ક્યા ? કિ યે આત્મા હૈ, મેં દર્શન હું - એસા ભેદ નહીં. અનાકાર ઉપયોગરૂપી દર્શન શક્તિમેં ભેદ નહીં કિ, યે આત્મા હૈ, યે જડ હૈ, યે ગુણ હૈ, પર્યાય હૈ, એસા ભેદ નહીં. સામાન્ય-જિસકા અનાકાર (અર્થાત્) આકાર બિના માને વિશેષ ભાવ બિના. આહાહા !

“અનાકાર ઉપયોગમયી” જાનના-દેખના (ઇસમેં) દેખને(રૂપ) ઉપયોગમયી, આહાહા !

देखनेकी शक्ति तो कायम है. आहाहा ! “अनाकार उपयोगमयी दशिशक्ति. (जिसमें ज्ञेयरूप आकार अर्थात् विशेष नहीं है...)” बारीक है. दर्शनशक्ति - ज्ञानशक्तिसे बारीक है. क्यों बारीक है ? कि ये दशिशक्ति है और देखने जाती है और भेद होते हैं, तो दशिशक्ति न रही. थोड़ा सूक्ष्म है. दशिशक्ति(में) ये ज्ञान है और ये आत्मा है, ऐसा जाननेमें आये तो दशिशक्ति रहती नहीं है. वह ज्ञान (शक्ति) हो गयी. दशिशक्ति - ये शक्तिवान और ये शक्तिकी पर्यायका परिणामन (ऐसा भेद नहीं देखती). यह दशिशक्ति तो गुण है. और (उसे) धरनेवाला गुणी है. और जब गुणीका स्वीकार हुआ तो दशिशक्तिका परिणामन पर्यायमें - देखनेरूपी पर्याय हुयी. देखनेरूप ध्रुवपना था वह पर्यायपने आया. समझमें आया ? यह तो ऐसी वकालत है.

द्विगंबर जैनमें जन्म हुआ (तो) भी भबर नहीं. आहाहा ! द्विगंबर धर्म ये तो वस्तुका स्वरूप है. द्विगंबर नाम अंतरमें आत्मा अनंत शक्तिका पिंड, विकल्पसे रहित नग्न (स्वरूप) है. मुनिपना जब होता है तब पंच महाव्रत और नग्नपना निमित्तपने (होता) है, उसका नाम द्विगंबर. यह तो वस्तुका स्वरूप ही ऐसा है. ये कोई पक्षसे संप्रदाय भडा किया है, ऐसा नहीं (है). समझमें आया ? आहाहा !

“अनाकार उपयोगमयी दशिशक्ति, (जिसमें ज्ञेयरूप आकार अर्थात् विशेष नहीं है...)” ज्ञेयरूपभाव आता है - देखनेमें आता है परंतु विशेषता नहीं (देखती). समझमें आया ? भेद नहीं (देखते). द्रव्य है, गुण है, पर्याय है, इसके अलावा अनंत द्रव्य, गुण, पर्याय है उसको देखनेकी पर्याय देखती है. अपने को देखती है, परको देखती है. परंतु ये आत्मा और ये पर, ऐसा भेद उसमें नहीं. दशिशक्तिमें ऐसा आकार नहीं. आकार नाम विशेषता नहीं. ये विशेषता बिनाकी उपयोगमयी दशिशक्ति (है). आहाहा ! अभी तो पकड़में आना मुश्किल है.

“जिसमें ज्ञेयरूप आकार अर्थात् विशेष नहीं है ऐसी दर्शनोपयोगमयी - सत्तामात्र...” (अर्थात्) अस्तित्वपने (है). आत्मामें दशिशक्ति अस्तित्वपने / सत्तापने है - अभावपने नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? “सत्तामात्र पदार्थमें उपयुक्त होनेरूप-दशिशक्ति अर्थात् दर्शनक्रियारूप शक्ति” भाषा ली है. देखा ? दर्शनक्रियारूप (दिया है). शक्ति तो त्रिकाल है परंतु उसका जब परिणामन होता है तो उसकी क्रियामें दर्शन-देखनेकी परिणति - पर्याय उत्पन्न होती (है). इसमें अनंत गुणकी पर्याय साथमें उत्पन्न (होती है). उसको दशिशक्तिका परिणामन (कहते हैं). इस दशिशक्तिका परिणामन कमसे होता है और दशिशक्ति आदि अकम है. सब गुण अकम है और पर्याय कमवर्ती है. यहां विकारकी बात लिये ही नहीं. क्योंकि विकार (होना यह) कोई शक्तिका कार्य नहीं. ये तो पर्यायबुद्धिमें परलक्षसे विकार होता है तो ये स्वरूपमें नहीं. विकार का तो यहां अभाव ही है. दशिशक्तिको देखनेसे इस दशिशक्ति

का निर्मण परिणामन होता है तो उसके साथ अनंत गुणकी निर्मण पर्यायकी उत्पत्ति होती है।

अब एक साथ अनंत (गुणका परिणामन) हुआ तो अनेकांत हुआ. अब दूसरी (बात). ये दश शक्तिके परिणामनमें (हुआ). देवनेकी पर्याय (के) साथ अनंत गुणकी पर्यायका परिणामन (हुआ). उसमें राग आदि व्यवहारका अभाव (है). यह अनेकांत है. अनेकांत दो प्रकारका (है). समझमें आया ? ये तो लोग ऐसा कहते हैं न ? कि व्यवहारसे निश्चय होता है - इसकी यहां ना कहते हैं. आहाहा ! अरे..! समझमें तो ले. ज्ञानमें तो ले कि बात क्या है ? बादमें अंतर्भूत प्रयोग करना वह तो अलौकिक बात है ! समझमें आया ?

यह दश शक्ति जो है इसके परिणामनकी पर्यायमें अनंत गुणकी पर्याय साथमें लुयी. ये सब कमवर्ती पर्याय है. उसमें कमबद्ध हो गया. कमबद्धकी ना कहते थे ना ? कि कमबद्ध नहीं. यहां कमबद्ध है. जिस समय दशिका परिणामन उत्पन्न होता है. वह अपना निज क्षण है. निज क्षण / जन्म क्षण है. दश शक्ति और शक्तिका धरनेवाला भगवान, उसकी दृष्टि करनेसे दश शक्तिका परिणामन जो होता है, ये उसकी उत्पत्तिका एक जन्म क्षण है. उसी कालमें उत्पन्न होनेवाला क्षण है. आहाहा ! समझमें आया ?

प्रवचनसारमें १०२ गाथा (में) कडा. प्रवचनसारमें ज्ञेय अधिकार लिया (है) (कि), ज्ञेयका स्वभाव ऐसा है और उस ज्ञेय अधिकारमें जयसेन आचार्यने ऐसा लिया है कि, ज्ञेय अधिकार कडो कि समकित अधिकार कडो (एक ही बात है). ऐसा लिया है. पहले ८२ गाथा (पर्यंत) ज्ञान अधिकार है. बादमें ८३ से १०८(गाथा) तक ज्ञेय अधिकार है. और बादमें यरणानुयोग (का अधिकार है). तीन अधिकार है. तो ज्ञेयका स्वभाव (कडो या) छ द्रव्यका स्वभाव (कडो एक ही बात है). ज्ञेयमें छ द्रव्य आये ना ? तो छओं द्रव्योंका स्वभाव (ऐसा है कि) उसकी (पर्याय होती है उस) पर्यायका (वह) जन्म क्षण है. जिस समय उत्पन्न होनी है उसी समयमें उत्पन्न होगी. आहाहा ! दूसरे समयमें जो उत्पन्न होनी है, वही होगी. तीसरे समयमें जो उत्पन्न होनी है, वही होगी. ऐसी जो कमवर्ती पर्याय है, और अकमवर्ती गुण है, उस पर्याय और गुणके समुदायको आत्मा कहते है. ऐसी बातें हैं.

भाई ! तुम ये सुननेको बहुत दूरसे आये (हो). सेंकडो गाँ (दूर से) आये, आहाहा ! और यहां तो आपके घर अनुकूलता होती है इतनी अनुकूलता तो यहां है नहीं. फिर भी भटकते-भटकते कष्ट लेकर सेंकडो कोससे आये हैं, तो इसमें नवीन चीज क्या है ? भगवानका पंथ क्या है ? उसका भयाल तो आना चाहिए ना ? आहाहा !

श्रोता : यहां तो आत्मानंदकी वर्षा होती है.

पूज्य गुरुदेवश्री :- बात सखी है, भैया ! अब हमें तो यह लेना है कि, कल दश शक्तिका पत्र लिया था न ? एक शक्ति (के) उपर इतने (२१) बोल उतारे (हैं). क्या है

पहला बोल ? अनेकांत के संबंधमें विशेष बर्खा करते हैं.

(१) कम और अकमरूप अनंत धर्म समूहका जो कुछ जितना लक्षित होता है वह सब वास्तवमें एक आत्मा है. एक बोल.

(२) ज्ञानमात्र एक भावकी अंतःपातिनी अनंत शक्तियां उछलती है. भगवानने (आत्माको) ज्ञानमात्र कडा तो द्रव्यके आश्रयसे ज्ञानकी पर्याय जब आनंदके साथ उत्पन्न होती है, तो उस पर्यायमें अनंत पर्याय उछलती - उत्पन्न होती है. दो बात.

(३) कमवर्तीरूप-अकमवर्तीरूप वर्तन जिसका लक्षण है. ये आत्माका लक्षण ही ऐसा है. कमसे पर्याय कमबद्ध होनी और अकम (माने) एक साथ व्यापक गुण तिरछा रहना, तिरछा, तिरछा समझे ? अनंत गुण एक साथ जैसे तिरछे एक साथमें है. एक साथमें अर्थात् ऐसे नहीं है कि एक गुणी है, उसमें दूसरा गुणी, (उसमें) तीसरा गुणी, ऐसे नहीं. गुणीमें जैसे यावल एक है, यावलकी सङ्केदाई, मीठास स्वभाव सब एक साथ है. जैसे आत्मामें अनंत गुण एक साथ है. एक गुण जैसे है और बादमें ऐसा है और बादमें ऐसा है, जैसे नहीं. आहाहा ! अनंत गुण एक साथ है, उसको अकम कहते हैं, समझमें आया ?

(४) एक-एक शक्ति अनंतमें व्यापक है. एक शक्ति - दश शक्ति है वह अनंत गुणमें व्यापक / प्रसरती है. आहाहा !

(५) एक-एक शक्ति अनंतमें निमित्त है. वस्तु स्थिति ऐसी है, आहाहा !

(६) एक शक्ति द्रव्य-गुण-पर्यायमें व्यापती है. क्या कडा ? भगवान आत्मा (में) जो शक्ति है, (मानो) दश शक्ति है (तो) वह दश शक्ति - देवनेकी शक्ति द्रव्यमें है, गुणमें है और पर्यायमें है. तीनोंमें व्यापती है.

(७) एक शक्तिमें ध्रुव उपादान (और) क्षणिक उपादान है. ये दश शक्ति जो है - देवनेकी शक्ति भगवानको देवे, अपनेको देवे, पर्यायको देवे-त्वेद बिना, अनाकार / विशेष उपयोग बिना (देवे). ऐसा दश शक्तिमें त्रिकाली ध्रुव उपादान है. और वर्तमान कमसर जो पर्याय उत्पन्न होती है, यह क्षणिक उपादान है. समझमें आया ?

(८) एक-एक शक्तिमें व्यवहारका अभाव है. यह अनेकांत (है). दश शक्ति अपने स्वभावसे परिणामन करती है, तो निर्मलपने परिणामन (करती) है. उसमें रागका अभाव है. ये व्यवहारका अभाव - यह अनेकांत और स्याद्वाद है. व्यवहारसे भी दश शक्ति प्रगट होती है और निश्चयसे भी प्रगट होती है, ऐसा है नहीं. अभी तो यह सब गडबड है न ? यहांका विरोध करते है न ! करते तो है भुदका विरोध. हम क्या है ? कैसे है ? उसने देखा है ? कि, हमारा विरोध करे. समझमें आया ? तत्त्वकी ખબર नहीं है तो अपना विरोध करते हैं. यहां कहते हैं - एक-एक शक्तिमें व्यवहारका अभाव है. यह स्याद्वाद है. यही अनेकांत और स्याद्वाद है. अनेकांतका (अर्थ) ऐसा नहीं कि, व्यवहारसे भी निर्मल

पर्याय होती है और द्रव्य-गुणसे भी निर्मल पर्याय होती है. समझमें आया ? कितना जेलना ?
 अक घंटेकी सब बातें नयी लगे.

यह तो वीतराग मार्ग - यैतन रतन हीरा (है). आहाहा ! अक साधारण हीरा अक करोड या अक अबजका हो तो उसकी कीमत करनेवाला कोई जौहरी होना चाखिये. यह तो यैतन हीरा (है). ये हीरा है, उसके अस्तित्वकी श्रद्धा करनेवाला तो आत्मा है. हीराको मालूम नहीं है - मैं हीरा हूँ. आहाहा ! अैसा यैतन हीरला भगवान ! द्रव्य-गुण-पर्यायमें व्यापते है. ये बात कहीं है नहीं. दूसरे कोई स्थानमें, कोई धर्ममें के कोई ठिकाने (है नहीं) अैसा कहे कि 'आत्मा अक है - (उसका) अनुभव करो'. अैसा कहते हैं. परंतु अनुभव करो, वह क्या चीज है ? अनुभव तो पर्याय हुयी, समझमें आया ? आहाहा ! अनुभवमें आनंद आता है, (अैसा कहते हैं). आनंद आता है वह तो पर्याय हुई. पर्यायके नामका तो ठिकाना नहीं और अनुभव करो - अनुभव (करो). (कहते हैं, लेकिन) क्या अनुभव करे ? समझमें आया ?

यह वस्तु है - यह द्रव्य है. शक्ति द्रव्यमें है, गुणमें है - शक्ति-शक्तिमें है, और शक्तिका पर्यायमें परिणामन हुआ तो तीनोंमें व्यापक है. समझमें आया ? ये शक्तिका वेदन हुआ. (यह) पर्यायमें वेदन होता है. कल थोडी बात कही थी कि, अनित्यसे नित्य जाननेमें आता है. नित्यसे नित्य जाननेमें नहीं आता. आहाहा ! समझमें आया ?

राजकोटमें यर्था हुई. (अक परम हंस वेदांती आये थे) (हमने) कहा कि, तुम पर्याय(को) मानते नहीं. हम कहते हैं कि अनुभव करना. भूल है तो उपदेश करते हैं कि भूल (को) टालो. तो ये भूल क्या चीज है ? भूल कोई द्रव्य है, गुण है, कि पर्याय (है) ? मालूम है कुछ ? क्योंकि भूल है वह नाश होती है और उसके स्थानमें अभूल (अर्थात्) निर्मल परिणति होती है. तो वह तो पर्याय है. तो पर्यायकी तो तुम्हें भबर नहीं और हमको अनुभव (है). तो तुम कहाँसे अनुभव लाये ? समझमें आया ? और बादमें कबूल किया कि, हां..हां..हां.. (बात बराबर है).

वेदांत अैसा तो कहता है न ? कि, आत्यंतिक दुःख से मुक्त हो और आनंदका अनुभव हो. तो उसमें क्या आया ? पर्यायमें दुःख था, अवस्थामें दुःख था. द्रव्य-गुणमें नहीं. अवस्थामें दुःख था, इस दुःखका अभाव हुआ और आनंदकी नयी अवस्था उत्पन्न हुयी. तो ये तो पर्याय हुई और पर्यायकी तो भबर नहीं और हमें अनुभव (है) (अैसा कहते हैं). कहाँसे आया तेरा (अनुभव) ? समझमें आया ? यह तो सर्वज्ञ परमेश्वर के सिवा ये मार्ग कहीं है नहीं, समझमें आया ? यहां कहते हैं..

(८) (शक्ति) द्रव्य, गुण, पर्यायमें व्यापक है. आया न ?

(१०) शक्ति पारिणामिकभावसे है. क्या कहते हैं ? आत्मा दृश्यमान (है). आत्मा भाववान

और दृशि शक्ति भाव (है). यह शक्ति है वह पारिष्णामिकभाव है. पारिष्णामिकभाव अर्थात् उसकी पर्यायमें जो भाव होता है वह दूसरी चीज (है). यह तो सहज स्वभाव है. उत्पन्न हुआ नहीं, अभाव हुआ नहीं, नया भाव उत्पन्न हुआ नहीं. ऐसी पारिष्णामिक स्वभाव शक्ति है.

३२० गाथामें ऐसा आया था कि, कमसर जो पर्याय है, वह नयी-नयी उत्पन्न होती है. समझमें आया ? नयी-नयी उत्पन्न होती है तो (वह) पर्याय हुयी. ज्ञान गुण उत्पन्न होता है ? दर्शन शक्ति उत्पन्न होती है ? दृशि शक्ति तो त्रिकाल है. समझमें आया ? यह Logic तो बहुत सूक्ष्म है, भगवान ! जैन दर्शन कोई अलौकिक चीज है ! उसका पता लग जाये तो जन्म-मरणका अंत आ जाये. इसके बिना जन्म-मरण (का अंत नहीं आयेगा). क्रियाकांड करके दया, दान, व्रत, तप करके मर जाये (तो भी भवका अंत नहीं आयेगा). ये व्रत और उपवास बंधका कारण है. समझमें आया ?

यहां कहते हैं कि, (शक्ति) पारिष्णामिक भाव है. ३२० गाथामें आया है कि, मोक्ष किस भावसे होता है ? वहां आया है कि (पांच भावमें) चार भाव तो पर्यायके है, अेक भाव गुणका है. त्रिकाली द्रव्य और गुण ये पारिष्णामिकभाव है और पर्यायमें चार भाव है. अेक रागादि उदयभाव, उसका ठरना उपशमभाव, कुण-कुण उदय और कुण-कुण (उपशम) ये क्षयोपशमभाव और क्षायिकभाव - ये चार भाव पर्यायमें है. गुण और द्रव्य पारिष्णामिकभाव है. अब इस चार भावमें मोक्ष किस भावसे होता है ? तो वहां कहा कि, उदयभावसे मोक्ष नहीं होता. उदयभाव तो बंधका कारण है. वहां संस्कृत टिकामें पाठ लिया है कि “बंध कारण उदयभावाः” अब तीन भाव रहे - उपशम, क्षयोपशम (और क्षायिक) ये मोक्षका कारण है. पर्याय मोक्षका कारण है. मोक्षका मार्ग है न ? मार्ग (है) ये पर्याय है और मोक्ष भी पर्याय है. आहाहा ! ये मोक्षका मार्ग जो है यह उपशम, क्षयोपशम और क्षायिक तीन भावसे है, समझमें आया ? यौथे गुणस्थानमें क्षायिक समकित होता है. वह भी क्षायिकभाव है, पर्याय है. समझमें आया ?

श्रेणिक राजा बौद्ध थे. उन्हें मुनिपनाका संयोग हुआ तो समकित हुआ - आत्मज्ञान हुआ, सम्यग्दर्शन (हुआ). बादमें समवसरणमें गये और उसमें क्षायिक समकित हुआ. वह तो अपनेसे हुआ है, भगवानसे हुआ नहीं. क्षायिक समकित !! ओहोहो ! उजरो देश और उजरो राजा जिन्हें यामर ढाले और जिनके ईन्द्र जैसे मित्र (है). समझमें आया ? “मैं तो पूर्णानंदस्वरूप शुद्ध (हुं)” ऐसी क्षायिक समकित दशा हुई कि, जो दशा फिर पलटे नहीं. पलटे नहीं नाम अभाव नहीं हो. पर्याय है तो पलटे सही परंतु उसका अभाव हो जाये और मिथ्यात्व हो जाय, ऐसा है नहीं. आहाहा ! वे क्षायिक समकित (थे). परंतु नरकका आयुष्यका बंध हो गया था. तो नरकमें गये वहां भी है तो क्षायिक समकित. श्रेणिक

राजा ! आडाडा ! समजमें आया ? परंतु वहां नरकमें भी समय-समयमें तीर्थकर गोत्र बांधते हैं. छतना तो वहां शील है. आठ पाहुडमें, शील पाहुडमें आया है कि नरकमें भी शील है. सम्यग्दर्शन, ज्ञान और स्वरूपायरुण रुपी शील तो वहां भी है. और यहांसे निकलकरके तीर्थकर होंगे ये शीलका प्रताप है. ऐसा कहते हैं. शील यानी (स्वरूप स्थिरता). पंचम गुणस्थान-छह गुणस्थानमें शील है. वह तो विशेष है (परंतु) यह तो यौथे गुणस्थानमें शील है. स्वरूप आयरुणकी दृष्टि हुयी, स्वरूपकी प्रतीति हुयी, स्वरूपका अनुभव हुआ, और जितना अनंतानुबंधी गया छतनी स्वरूपमें लीनता भी हुई. आडाडा ! नारकीमें भी शील है. शील यानी ब्रह्मचर्य ऐसा नहीं. समजमें आया ? और नवमी त्रैवेयकमें (गया) 'मुनिव्रत धार अनंत बैर, त्रैवेयक उपजायो' तो उसके पास शील नहीं था. आडाडा ! पंच महाव्रत और राग वह तो अशील भाव है, आडाडा ! समजमें आया ? यहां कहते हैं कि,

(११) कर्ता आदि छ कारक अभिन्न है. क्या कहते हैं ? ये दश शक्ति है, यह गुण है और दृष्टिवान जो आत्मा है, उस पर जब दृष्टि हुई तो अनुभवमें दश शक्तिकी पर्यायमें षटकारक परिणामन अपनेसे होता है. देवनेकी पर्यायका कर्ता देवनेकी पर्याय, देवनेकी पर्याय कर्म, देवनेकी पर्याय करण, देवनेकी पर्याय संप्रदान, पर्याय करके पर्याय रभी, पर्यायमें से पर्याय हुयी, पर्यायके आधारसे पर्याय हुयी. आडाडा ! ऐसी बात है. अंधी दुनिया (संसारमें) कुदकर पडी है और संसारमें रभडते हैं. आडाडा ! कहते हैं कि अक-अक शक्तिमें षटकारक अभिन्न है. उसमें परकी अपेक्षा नहीं.

(१२) अक-अक शक्तिमें अनंत शक्तिका रूप है. ज्ञान 'है' अस्तित्वगुण है यह गुण तो भिन्न है. परंतु ज्ञान 'है', ऐसा अस्तित्व भी ज्ञानमें है. इसे अस्तित्वगुणका रूप कहनेमें आता है. गुणके आश्रयसे गुण नहीं. अक शक्तिके आश्रयसे दूसरी शक्ति नहीं (है). द्रव्यके आश्रयसे शक्ति है. फिर भी अस्तित्वगुणके आश्रयसे ज्ञान है, ऐसा नहीं. ज्ञान अपनेसे है, ऐसा अस्तित्व गुणका रूप अपनेसे अपनेमें है. अरे..! ऐसी बातें (है). मार्ग ही ऐसा है, भगवान ! आडाडा !

जन्म-मरणके यौरासीके अवतार, स्वर्गका भव कर-करके मर गया. स्वर्गमें भी पराधीनता और दुःख है. ये राजा-सेठ लोग तो सब दुःखी है. परंतु छन्दो, देवो भी जो समकित बिना के है, वे सब दुःखी है. आडाडा ! रागके भावमें लीन है. याहे तो अशुभ हो के शुभ हो. ये सब दुःखमें ही लीन है, आडाडा ! आनंदका नाथ भगवान ! (उसमें सुख है).

यहां तो कहते हैं, अक-अक शक्तिमें अनंत शक्तिका रूप है.

(१३) जन्म क्षण वह नाश क्षण है. क्या कहते हैं ? दश शक्तिको धारण करनेवाला आत्मा (उस) द्रव्य पर जब दृष्टि हुई तो दश शक्तिकी पर्यायमें देवनेकी पर्याय उत्पन्न हुयी. ये उसकी उत्पत्तिका जन्म क्षण है और उसी क्षणमें पूर्वकी पर्यायका नाशका क्षण है.

समय तो अेक ही है. आडाडा ! (सभ) अपने-अपनेसे होता है. दूसरी बात है, ये दशि शक्ति जो है, उसका धरनेवाला भगवान आत्मा, पुण्य-पाप और विकल्पसे लक्ष छोडकर, यैतन्य पर दृष्टि पडती है तो उस क्षणमें दशि शक्तिकी उत्पत्ति हुं. ये उत्पादके कारणसे उत्पन्न हुं - यह ध्रुव के कारणसे नहीं और उसकी पूर्व (पर्यायके) नाशके कारणसे नहीं. इसमें अब्यास करना पडेगा. नोकरीमें पैसा मिले पांय-पयास लजार तो ओडो ! डो जाये. वह तो धूल है. बारड मडिनेमें दो-पांय-दस लाभकी कमाई डो, वह कमाई है या नुकसान है ? यहां तो कडते हैं कि, (सभी पर्याय) अपने-अपने आश्रयसे डोती है.

यहां अपनी दशि शक्ति. “अनाकार उपयोगमयी दशि शक्ति” ज्ञानमय आत्मा कडा, तो ज्ञान की पर्याय जो आनंदके साथ हुं, तो दशि शक्तिकी पर्याय साथमें उत्पन्न डो गयी, आडाडा ! समजमें आया ?

दुनियाके अब्यासके लिये L.L.B. और B.A. के नाम के लिये १०-१०, १५-१५ वर्ष अब्यास डिया. अकेला पापका अब्यास डिया. इस अब्यासके लिये कुरसद नहीं मिलती. आडाडा !

श्रोता : इसमें तो पैसा मिलेगा - इसमें क्या मिलेगा ?

पू. गुरुदेवश्री : इसमें आनंद मिलेगा. उसमें दुःखका निमित्त मिलेगा; दुःख मिलेगा, अेसा नहीं कडा.

श्रोता : रूपीयेसे रोटि मिलेगी.

पू. गुरुदेवश्री : रोटि डिसकी है ? रोटि जड है. वह आता है ना ? जानेवालेका दाने-दाने नाम है. आता है ? उसका क्या अर्थ ? जो रजकण जिसके पास आनेवाला है वह आयेगा ही और नहीं आनेवाला, नहीं आयेगा. प्रयत्न करता है इसलिये आयेगा और नहीं करे तो नहीं आयेगा, अेसा है नहीं. अपनेमें अेसी कडावत है कि “जानेवालेका दाने-दाने पर नाम है” डिन्दीमें क्या कडते हैं ?

श्रोता : दाने-दाने पर लिभा है जानेवाले का नाम.

पू. गुरुदेवश्री : नाम लिभा है यहां ? परंतु जो रजकण और जो परमाणु दाल, यावल, रोटि, पैसा आदिका जिसके पास आनेवाला है वह आयेगा, आयेगा और आयेगा ही. उसके प्रयत्नसे नहीं, समजमें आया ?

यहां तो दशि शक्तिकी बात चलती है ना ! आडाडा ! अनाकार उपयोगमय परिणामन जो हुआ तो साथमें आनंदका अनुभव है. अतीन्द्रिय आनंद के वेदनकी पर्याय के साथ अनाकार उपयोगकी परिणति डोती है. ये कमवर्ती पर्याय और अकमगुणके समुदायको आत्मा कडते हैं. दृष्टिमें (अेसा) आत्मा लेना ये इसका सार है. सारे कथनका सार - ज्ञायक भाव पर दृष्टि करना, ये उसका सार है. (विशेष लेंगे).....

प्रवचन नं. ५

शक्ति-३,४,५ - ता. १५-०८-१९७७

| | |
|-----------------|-----------------|
| अनाकारोपयोगमयी | दशिशक्तिः ॥३॥ |
| साकारोपयोगमयी | ज्ञानशक्तिः ॥४॥ |
| अनाकुलत्वलक्षणा | सुखशक्तिः ॥५॥ |

समयसार. शक्तिका अधिकार (यलता है). थोडा सूक्ष्म है, भगवान ! शांति से सुनना. यह तो आत्माकी अंतरकी बात है. आत्माका (हित) करनेकी बात है. दुनिया समझे कि न समझे, दुनिया ना-ना करे उसके साथ कोई संबंध नहीं. दशि शक्ति. “अनाकार उपयोगमयी दशिशक्ति” कल यली तो है. थोडा फिरसे लेना है. क्या कलते हैं ? भगवान आत्मामें अेक दशि शक्ति है. – दर्शन शक्ति. यहां ऋद्धा शक्ति की बात नहीं (है). यह ज्ञान-दर्शन जो आता है, उसमें दशि (शक्तिकी बात है). शक्तिका पर्यायमें उपयोग - देभना. यह दशि शक्ति है. दशि शक्तिको धरनेवाला द्रव्य जो है, उस दशि शक्तिसे अपने द्रव्यको, गुणको देभना, पर्यायमें देभना, तो पर्यायमें अनंत गुण (प्रगट होते हैं). और अपनी दशि शक्ति और द्रव्य, ये पर्यायमें / उपयोगमें देभनेमें आता है. परंतु इस उपयोगमें द्रव्य-गुण-पर्याय आते नहीं. आहाहा ! ऐसी बात है. भगवान ! आत्मामें दृश्य नामकी शक्ति है. ये शक्तिको देभना इसमें आनंद है. आहाहा ! समजमें आया ?

यह दशि शक्ति गुणरूप है और इस दशि शक्ति को देभने जाती है, तब वह दशि शक्ति द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्याप्य हो जाती है. सूक्ष्म है, भगवान ! इस दशि शक्तिकी पर्यायमें दशि गुण और द्रव्य, और दशि शक्तिकी पर्यायमें अनंती पर्यायको देभना, गुणको देभना, द्रव्यको देभना, अनंत द्रव्य, गुण, पर्यायको देभना और निराकारपने देभना (ऐसा होता है). आहाहा ! समजमें आया ? परको देभनेसे दर्शन उपयोगमें साकार(पना) हो जाना है, ऐसा नहीं है. देभनेकी पर्यायकी ताकत ही घतनी है ! आहाहा ! समजमें आया ? यह तो अपने घरकी बात है, भाई ! ऐसी बात है.

પુણ્ય-પાપકા વિકાર ભી દશિ શક્તિમેં અભેદ(રૂપ) દેખનેમેં આતા હૈ - ભેદસે નહીં. એસી દશિ શક્તિકી પર્યાયમેં ઇતની તાકાત હૈ કિ, દશિ શક્તિ ઓર ઉસકે સાથ અનંત ગુણ ઓર એકરૂપ દ્રવ્ય (યહ) સબ દશિ શક્તિમેં દેખનેમેં આતા હૈ. ફિર ભી ઇસ દેખનેકી પર્યાયમેં યહ દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાય આતે નહીં. થોડી સૂક્ષ્મ બાત હૈ. પહલેસે હી કહા થા ન ? આહાહા ! એસી બાત ! એસા મનુષ્યપના કબ મિલે ? ઓર અંતર ચીજ કબ દેખે ? ઇસ દશિ શક્તિકો દેખનેસે દ્રવ્ય દેખનેમેં આતા હૈ, પર્યાય ભી દેખનેમેં આતી હૈ. ઓર અનંત દ્રવ્ય, ગુણ પર્યાય ભી ભેદસે નહીં પરંતુ અભેદસે દેખનેમેં આતા હૈ. આહાહા ! અર્થાત્ “અનાકાર ઉપયોગમયી” એસા કહા ન ? ઉસમેં આકાર નામ વિશેષ (નહીં). યે દ્રવ્ય હૈ, ગુણ હૈ ઓર પર્યાય હૈ. એસા વિશેષ નહીં. આહાહા ! સમજમેં આયા ? વસ્તુ એસી હી હૈ, ભૈયા ! બહુત સૂક્ષ્મ ભાઈ ! દશિ શક્તિકો દેખનેવાલી (પર્યાય) દ્રવ્યકો દેખતી હૈ. અનંત ગુણકો દેખતી હૈ, તો ઇસમેં આનંદકો ભી દેખતી હૈ. યહ તો અપને (કો) દેખનેકી બાત હૈ. ભાઈ ! પરકો દેખના હોતા હૈ, પરંતુ વિશેષરૂપ (દેખના) નહીં (હોતા). સામાન્યરૂપ નિરાકાર ઉપયોગમેં સ્વ (ઓર) પરકા નિરાકારપને, દશિકી પર્યાયમેં અનાકાર ઉપયોગમય દશા હો જાતી હૈ.

એસી બાત હૈ, ભાઈ ! અંતરકી ચીજકો પહુંચના યહ બડી બાત હૈ. બાપૂ ! યહ કોઈ સાધારણ (બાત) નહીં (હૈ). ૧૧ અંગકા જાનપના કર લિયા (ઇસલિયે) દેખનેમેં આતા હૈ, એસી યે ચીજ નહીં હૈ. સમજમેં આયા ?

“અનાકાર ઉપયોગમયી (દશિ શક્તિ)” આહાહા ! ઉપયોગ તો ત્રિકાલ હૈ. લેકિન જબ અનાકાર ઉપયોગકા પર્યાયસે દેખના હુઆ. પર્યાયસે દેખનેમેં આતા હૈ ના ? કિ દ્રવ્ય-ગુણસે દેખનેમેં આતા હૈ ? દ્રવ્ય-ગુણ તો ધ્રુવ હૈ. આહાહા ! યહ અનાકાર ઉપયોગમય પર્યાયમેં અનંતા દ્રવ્ય, ગુણ (અર્થાત્) સર્વ દ્રવ્ય-ગુણકી દૃશ્ય પર્યાય (ઓર) અદૃશ્ય નામ દૃશ્ય નહીં ઉસમેં એસી સબ શક્તિ હૈ. આહાહા ! ઉસકો ભી દશિ શક્તિ અનાકાર ઉપયોગમેં દેખતી હૈ. તો ઉસકે સાથ અતીન્દ્રિય આનંદકા સ્વાદ ભી સાથમેં આતા હૈ. ઉસકા રૂપ આતા હૈ, લક્ષણ નહીં આતા. ક્યા કહા ? દર્શન ઉપયોગમેં અનંત ગુણકા રૂપ હૈ, વહ ખ્યાલમેં આ જાતા હૈ. પરંતુ ઉસકે ગુણકા લક્ષણ હૈ, વહ દશિ શક્તિકે ઉપયોગમેં આતા નહીં. ઉસકા લક્ષણ નહીં આતા, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

એસા અનાકાર ઉપયોગમયી - “જિસમેં જ્ઞેયરૂપ અર્થાત્ આકાર વિશેષ નહીં હૈ.” (સબ) જાનનેમેં આતા હૈ પરંતુ આકાર / વિશેષ નહીં હૈ. યહ નિર્વિકલ્પ / નિરાકાર (દશિશક્તિ) જો હૈ, યે સવિકલ્પ જ્ઞાનકો દેખતી હૈ, તો જ્ઞાનાકાર / સવિકલ્પ હો જાતી હૈ, એસા નહીં હૈ. આહાહા ! જ્ઞાન સ્વરૂપ તો સવિકલ્પ હૈ, સ્વ-પરકો જાનનેકી શક્તિ રખતા હૈ. જ્ઞાનકો, અનંત ગુણકો ઓર દ્રવ્યકો ઇસ દશિ ઉપયોગમેં દેખનેમેં આતા હૈ. ઇસલિયે યે દશિ શક્તિકા ઉપયોગ સાકાર હો જાયે, એસા હૈ નહીં. એસી બાતેં હૈ, સમજમેં આયા ?

“दर्शनोपयोगमयी - सत्ता मात्र पदार्थमें...” दर्शन उपयोगमयी सत्ता (माने) मौजूदगीपना - असे पदार्थमें - “....उपयुक्त होनेरूप - दृशिशक्ति अर्थात् दर्शनक्रियारूप शक्ति....” आडाडा ! (यहां) क्रियाको दर्शनक्रियाशक्ति कडा, उसका परिणामन - क्रिया होती है परंतु दृशि शक्तिको ही क्रियारूप कडा. समजमें आया ? भाई ! यह तो अपने गुणके भजनेकी बात है. आडाडा !

श्रोता : ज्याल पर्यायमां आवे छे ?

पू. गुरुदेवश्री : ज्याल पर्यायमें आता है परंतु पर्यायमें ज्याल आने पर भी पर्याय निराकार है. साकार नहीं / विशेष नहीं. आडाडा ! समजमें आया ?

श्रोता : शक्तिको क्रियारूप क्यौं कडा ?

पू. गुरुदेवश्री : क्रिया गुण है न इसलिये क्रियारूप कडा. परिणामनमें उसकी परिणति होती है तो उसको क्रियारूप कडा. (शक्ति) है तो ध्रुव. परंतु परिणामन उसका ऐसा है कि, यह एक दृशि शक्तिकी क्रिया है, स्वरूप ऐसा है, आडाडा ! बहुत भारी बात. यह कोई धारणामें लेकर दूसरेको कडना है और दूसरेको विस्मयता करानेकी बात नहीं है, बापू ! यहां ये बात नहीं है, प्रभु ! स्वयंको अंदरमें विस्मित करानेकी बात है. आडाडा ! ऐसी अद्भुत आश्रय भूत शक्ति यह अकेले परको देपती है, यह दृशि शक्तिका रूप ही नहीं. दृशि शक्ति सकल पर संहित सारा पूर्ण सत्ताका निराकारपने पर्यायमें भास होता है, उसका नाम दृशि शक्तिका पर्याय / परिणामन कडनेमें आता है. आडाडा ! बहुत सूक्ष्म बात है. अरेरे...! आडाडा ! अनंतकालसे वह रजडता है. कुछ-कुछ अटकनेके स्थानमें रहकर पडा है. यह तीसरी शक्ति हुई.

अब यौथी शक्ति. “साकार उपयोगमयी ज्ञानशक्ति” देभो ! ओहोहोहो....!! अध्यात्म पंथ संग्रह है न ? इसमें ऐसा लिया है कि, ओहोहो ! एक समयकी पर्यायमें दृशि शक्तिका उपयोग कोई भी त्मेद किये बिना पूर्ण देभे और इस दृशि शक्तिके परिणामन (के) साथमें ज्ञान शक्तिका जो परिणामन है, ये परिणामन एक-एक द्रव्य त्मिन्न, गुण त्मिन्न, पर्याय त्मिन्न, पर द्रव्य (त्मिन्न), एक पर्यायमें अनंत अविभाग प्रतिच्छेद त्मिन्न ऐसी एक समयकी ज्ञानकी पर्याय सारा त्मिन्नको देभे और उसी समय दृशिका उपयोग अत्मेदताको देभे. ऐसी कोई (अद्भुतता) है. उसमें ऐसा लिया है. अद्भुत रसमें ऐसा लिया है. आडाडा ! समजमें आया ? ऐसी बातें हैं, बापू ! पुण्य-पाप की क्रिया तो कहीं रह गयी और दया, दान, व्रत, भक्ति और पूजा, उपदेश देना और उपदेश सुनना उसमें लाभ है, वह बात कहीं रह गयी. वह तो विकल्प है, राग है, भाई ! आडाडा !

यहां तो जो साकार उपयोगमयी ज्ञान है, वह जिस समयमें दृशि शक्ति है, उसी समय साथमें ज्ञान शक्ति है. ज्ञान शक्तिमें अनंत शक्तिका रूप है. अनंत शक्तिका लक्षण नहीं, समजमें आया ? आडाडा ! परंतु ज्ञान शक्तिके अंदर (अनंत गुणका) रूप है. साकार उपयोग -

यह साकार उपयोग जब अपनेको देवता-जानता है, तो अनंत गुण और द्रव्य त्रिकाली वस्तुको (जानता है). तब श्रुतज्ञानका उपयोग हो, तो भी पर्यायका (अर्थात्) श्रुतज्ञानकी पर्यायका धर्म नाम सामर्थ्य घटना है कि, अपना त्रिकाली द्रव्य, त्रिकाली गुण अपनी अनंत पर्याय और अनंत द्रव्य, गुण, पर्याय पर(के), ज्ञानकी पर्याय सबको एक समयमें जानती है. ऐसी उसकी ताकात है. समझमें आया ? ऐसी बात है, बापू ! आहाहा !

“साकार उपयोगमयी ज्ञानशक्ति” समयसार - १७-१८ गाथामें (ऐसा लिया है कि), ज्ञानकी पर्याय जो वर्तमानमें है (उस) ज्ञानकी पर्यायमें स्वज्ञेय-पूर्णा आनंदका नाथ (ही) पर्यायमें ज्ञेयरूप जाननेमें आता है. क्या कदा ? कि, ज्ञानकी एक समयकी पर्यायमें ज्ञान शक्तिमें (सब जानना होता है). जैसे दृशि शक्तिकी पर्यायमें द्रव्य, गुण और सबका देवना होता है. परंतु इस दृशि शक्तिमें साकारपना नहीं आता है. जैसे ज्ञान तो ऐसी चीज है कि, पूर्ण स्व द्रव्य, त्रिकाली गुण और अपनी पर्याय और इसके सिवा अनंती पर्याय और अनंता सब द्रव्य, गुण, पर्याय एक समयमें साकार नाम विशेषरूपसे परिणामन करना ये साकार उपयोगमयी शक्तिका कार्य है. मार्ग बापू ! सूक्ष्म भाई ! समझमें आया ? अभी तो बहुत गडबड हो गयी है, आहाहा !

भगवान आत्मा ! एक सेकंडके असंख्यवे भागमें अनंत गुण संपन्न द्रव्य जो है, उसको ज्ञानकी शक्तिका परिणामन (लक्ष करता है). शक्ति तो ध्रुवरूप है. परंतु ध्रुवरूपका लक्ष करनेसे द्रव्य, गुणमें तो ज्ञान शक्ति व्यापक है. परंतु उसका लक्ष करनेसे पर्यायमें भी ज्ञान शक्तिकी व्यापक पर्याय हो गयी. आहाहा ! एक बात. अभाविको ज्ञान परिणति नहीं है. ज्ञानका क्षयोपशमका अंश है. समझमें आया ? परंतु मिथ्यादृष्टि है (इसलिये) ज्ञानकी परिणति नहीं है. ज्ञानकी परिणति तो समकितदृष्टिको ही होती है, आहाहा ! समझमें आता है ? अज्ञानीकी ज्ञानकी पर्यायमें भी सारा ज्ञेय - द्रव्य जाननेमें आता है, ऐसा कदा है. क्योंकि ज्ञानकी पर्यायका (ऐसा स्वभाव है). गुण तो ध्रुव है. ध्रुव जाननेकी शक्ति रहता है, परंतु उसमें जाननेका कार्य नहीं. जाननेका कार्य जो होता है वह पर्यायमें होता है. आहाहा ! समझमें आया ? उस पर्यायका जाननेका कार्य - अज्ञानीको भी (ज्ञानकी) पर्यायमें स्व द्रव्य ही जाननेमें आता है. ऐसा आचार्य (भगवान) कहते हैं. परंतु अज्ञानीकी दृष्टि पर्याय, पर (पदार्थ) और राग पर है. वर्तमान क्षयोपशमज्ञान जो हुआ, उस पर उसकी दृष्टि है. उस कारणसे पर्यायमें (स्व) ज्ञेय - ज्ञायक पूर्ण जाननेमें आने पर भी उसको जाननेका प्याल नहीं (है). समझमें आया ? आहाहा !

“साकार उपयोगमयी...” उपयोगमयी, ऐसा पाठ लिया है, हां ! उपयोग स्वरूप ऐसा तबेद भी नहीं. (दृशि शक्तिमें) अनाकार उपयोगमयी (ऐसे) अतबेद लेना है, आहाहा ! भगवान आत्मा वस्तु है, उसमें एक साकार उपयोगमयी शक्ति अतबेद है. शक्ति और

शक्तिवान कोई भिन्न-भिन्न नहीं हैं, उसके प्रदेश भिन्न नहीं. शक्ति और द्रव्य - जो शक्तिवान, उसके प्रदेश भिन्न नहीं. आहाहा ! ज्ञानकी पर्यायमें उसका जो उपयोग होता है, यह ज्ञानकी पर्याय स्वद्रव्यको पूर्ण जानती है. फिर भी इस पर्यायमें वह द्रव्य आया नहीं. परंतु जाननेकी ताकात (की प्रतीति) आ गयी और ये पर्यायके प्रदेश भी द्रव्य-गुणसे भिन्न हैं. समझमें आया ?

शक्तिका अधिकार बहुत सूक्ष्म है. भाई ! आहाहा ! यह तो अपने हित के लिये बात है. समझमें आया ? ऐसा कहते हैं, अपना हित तो तब होगा - जब ज्ञानकी पर्याय ज्ञानको और द्रव्यको (स्व) सन्मुख होकर जाने और उसका स्वभाव भी ऐसा है. अज्ञानीको भी ज्ञानकी पर्यायमें द्रव्य ही जाननेमें आता है. परंतु लक्ष वहां नहीं (है). समझमें आया ? लक्ष पर्याय उपर और राग उपर है. इसलिये पर्यायमें सारा द्रव्य जाननेमें आता होने पर भी उसके ज्ञानमें आया नहीं और ज्ञान जब अपनेको जानता है, तब तो पर्यायमें अतीन्द्रिय आनंदका अनुभव होता है, ऐसा कहते हैं. आहाहा ! समझमें आया ? ज्ञानकी पर्याय साकार उपयोगमयी (है). साकार नाम विशेषरूपसे सब द्रव्य-गुणके भेदसे, दूसरे द्रव्य-गुणके भी भेदसे, अपनी अक-अक पर्यायका भेदसे, साकार नाम विशेषरूपसे जाननेका ज्ञानकी पर्यायका स्वभाव है, आहाहा !

यह ज्ञानकी पर्याय जब अपनेको जानती है, तो इस पर्यायमें द्रव्य, गुणका सामर्थ्य कितना है - इतना पर्यायमें (प्रतीति)में आया. पर्यायमें द्रव्य (और) गुण आया नहीं. परंतु द्रव्य-गुणकी कितनी ताकात है ! ये सब ज्ञानकी पर्यायमें आ गया. ऐसी पर्यायमें तो अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद आता है. उसका नाम सम्यग्ज्ञान और ज्ञानकी पर्यायमें अपनेको देखा-जाना, ऐसा कहनेमें आता है, आहाहा ! सूक्ष्म बात है, भाई ! क्या हो (सकता है) ? आहाहा ! समझमें आया ?

“साकार उपयोगमयी ज्ञानशक्ति - (जो ज्ञेय पदार्थोंके विशेषरूप...)” विशेषरूप (अर्थात्) भेदसे स्व-पर दोनों (भेद से). “....आकारोंमें उपयुक्त होती है. ऐसी ज्ञानोपयोगमयी ज्ञानशक्ति” आहाहा ! ज्ञानशक्ति भी क्रमरूप परिणामती है. ये पर्याय (हुयी). अक्रमरूप रहते हैं वे गुण, और गुण और पर्यायका समुदाय, अक्रम और क्रमका समुदाय वह आत्मा (है). समझमें आया ? और यह ज्ञान शक्ति है वह पारिणामिकभाव है, सहज स्वभावभाव है. आहाहा ! परंतु ये पारिणामिकभाव है उसकी सत्ताका पर्यायमें स्वीकार हुआ तो पारिणामिकभाव है ऐसा भान हुआ. है तो सही, परंतु ‘है’ उसका परिणामनमें भास आया, तो ये है उसका प्याल आया; नहीं तो नहीं. आहाहा ! समझमें आया कुछ ? यहां तो ऐसी बातें हैं. बालकी भाल उतारने जैसा है. भाई ! वस्तुका स्वरूप ऐसा है. उसका स्वरूप ही ऐसा है.

ज्ञानकी पर्याय द्रव्य-गुणको जाने, फिर भी वह पर्याय द्रव्य-गुणरूप होवे नहीं, इतनी

जिसमें ताकत है, आडाडा ! उस ताकतको देखे - जाने और द्रव्य-गुणको जाने, उसको अतीन्द्रिय आनंदका अनुभव हुआ बिना रहे नहीं. ये अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद आना उसका नाम धर्म और सम्यग्दर्शन है. मार्ग ऐसा है. लोग 'अंकांत है...अंकांत है...' ऐसा (कहते हैं). अरे...प्रभु ! सुन तो सही. अंक बार ८-१० दिन सुन तो सही, नाथ ! तो तुझे मादूम पडे. आडाडा ! भाग्य बिना सुननेमें आता नहीं, आडाडा !

यह ज्ञान शक्ति अनंत गुणमें निमित्त है और ज्ञान शक्ति अनंत गुणमें व्यापक है और ज्ञान शक्ति ध्रुव उपादान सखित है. त्रिकाणी शक्ति ध्रुव है और परिणामनमें उसका प्याल आया ये क्षणिक उपादान है. क्षणिक उपादानमें प्याल आता है. कल-परसों कडा था न ? अनित्यसे नित्यका ज्ञान होता है. आडाडा ! समजमें आया ? यह तो भगवानकी - केवलज्ञानकी कोर्ट है, प्रभु ! यह तो केवलज्ञानकी कोलेज है, तो कोलेजमें तो समजना थोडा सूक्ष्म पडेगा ना ? थोडा समजमें आया हो तो उसकी समजमें आता है. ऐसी बात है, भैया !

ज्ञान शक्ति अपने द्रव्यको जानती है तो पर्यायमें व्यवहारका अभाव होता है. जिसको लोग व्यवहार रत्नत्रय कहे उसका (अभाव होता है). ज्ञान शक्तिका भान हुआ और जानने अपने द्रव्यको देखा, गुणको जाना और अपनी पर्यायको जाना तो उस समयमें आनंदकी पर्याय उत्पन्न हुई, उसमें रागका अभाव है. उसमें व्यवहार रत्नत्रयका अभाव है, वह अनेकांत और स्याद्वाद है, आडाडा !

लोग तो स्याद्वाद के नाम पर बहुत कुछ करते हैं. आडाडा ! व्यवहारसे भी धर्म होता है और निश्चयसे भी धर्म होता है, तो यह अनेकांत है. अभी सब ऐसा कहते हैं. समजमें आया ? भाई ! क्या करे बापू ? यहां तो शक्तिका वर्णन है. तो शक्ति उसका गुण है और गुणको धरनेवाला गुणी है. उस गुणी पर दृष्टि हो तो शक्ति विकाररूप परिणामे ऐसा है ही नहीं. व्यवहार रत्नत्रयरूप परिणामे ऐसा शक्तिका कार्य नहीं. आडाडा ! समजमें आया ? ये व्यवहारका विकल्प है (उसका अभाव होता है). यह ज्ञान शक्ति धरनेवाले भगवान (की) पर्याय जाननेवाले को जानती है - जाननेवालेकी पर्याय जाननेवालेको जानती है, आडाडा ! तब आनंदकी पर्यायमें व्यवहार रत्नत्रयका / रागका अभाव (होता है). उसका नाम अनेकांत कहनेमें आता है. ऐसा मार्ग है, भाई ! वह भी द्विगंबर संतोंने जो स्पष्टता की, ऐसी बात कहीं है नहीं, समजमें आया ? आडाडा !

इसमें आत्मा प्याल करे तो समजमें आता है ऐसी चीज है. और आचार्य कहते हैं तो समजाने को कहते हैं कि नहीं समजमें आये उसके लिये कहते हैं ? तुम जान सकते हो, भगवान ! ध्यान रभो ! आडाडा ! पानीकी तृषा लगी हो तो, घरमें घोडा हो, बैल हो उसको कहते हैं ? कि पानी लाव. उसको प्याल है कि, उसे पानी लानेका मादूम नहीं

पडेगा. और आठ सालकी लडकी हो (उसको कहते हैं कि) बेटा पानी लाव. वह जानता है कि, मैं कहता हूँ (तो) वह समझेगी. आहाहा ! वैसे आचार्य कहते हैं कि, मैं जो कहता हूँ वह समझेगा, और उसको कहते हैं. हम शरीरको और रागको नहीं कहते हैं, जाननेवाला भगवान है उसको हम कहते हैं. आहाहा ! समझमें आया ?

साकार उपयोगमयी (ज्ञान शक्ति). इसमें कितना भर दिया है, आहाहा ! ज्ञानकी पर्याय जब ज्ञाताको जानती है तब ज्ञानकी पर्यायमें कर्ता-कर्म षट्कारकका परिणामन अपने से होता है और ज्ञानकी शक्तिमें भी कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण ये षट्कारकका ज्ञानशक्तिमें रूप है. समझमें आया ? परंतु ज्ञान शक्तिमें ये षट्कारक शक्ति है - यह शक्ति उसमें नहीं. परंतु ज्ञान स्वतंत्र कर्ता होकर (परिणामे ऐसी) शक्ति उसमें है और कर्म नाम ज्ञानकी परिणति करते है यह इसका स्वतंत्र कर्म है. ये कर्ता और कर्म शक्ति होनेकी शक्ति अपनेमें है. कर्ता और क्रिया शक्ति है उसके कारण से नहीं. आहाहा ! ऐसी बात है. समझमें आया ?

ज्ञान गुण है, ऐसी स्व सन्मुखकी पर्याय जब होती है, तब द्रव्य और गुण है, ऐसा भ्याव आया. है तो है ही. भैया ! सूक्ष्म बात है. है तो है ही, (लेकिन) भ्यावमें आया तब 'है', (ऐसा कहनेमें आता है). समझमें आया ? यह ज्ञानशक्ति स्वपरप्रकाशक प्रधान शक्ति है. आहाहा ! अनंत गुणमें ये असाधारण शक्ति (है) कि जो शक्ति के कारण - यह उपयोगमयी शक्ति, यह ज्ञव है. चिति और दृशि साथमें लेना और इस शक्तिकी अपेक्षासे दूसरी शक्ति है वह अचेतन है. क्योंकि श्रद्धा, चारित्र, आनंदकी शक्ति स्वयं है, ये उसको जानते नहीं हैं. ये शक्ति अपनेको जानती नहीं. समझमें आया ? मार्ग ऐसा है, भाई ! समझमें आये ऐसी बात है. भाषा तो सादी है, भगवान ! अनंत कालमें कभी स्व सन्मुख हुआ नहीं और पर्यायका यथार्थ ज्ञान किया नहीं, आहाहा ! समझमें आया ?

ज्ञान उपयोगमयी - उपयोग तो त्रिकाल है. परंतु यह ज्ञान उपयोगमयी शक्ति है, उसको जब पर्यायमें जाननेमें आया, तो ये पर्यायमें ज्ञानगुण, द्रव्य-गुण अनंत गुणका साकार पर्याय रूपसे / विशेष रूपसे पर्यायमें जाननेका उपयोग हो गया. आहाहा ! तो उसी समय उसको अनंत आनंद आता है. आहाहा ! सुभ सागर अमृतका सागर (उछलता है). जब ज्ञान शक्तिकी पर्याय उछलती है, उसमें आनंद आदि अनंत शक्तिकी पर्याय साथमें उछलती है. आहाहा ! समझमें आया ? मार्ग तो ऐसा है, भैया ! अभी तो मार्गमें डेरडार हो गया. यहां तो अस्ति है और व्यवहारसे नास्ति है, आहाहा !

शक्ति चलती है न ! तो अनेकांत रचते हैं. उपर क्या कहते हैं ? अनेकांत अभी विशेष रचते हैं. तो उसका अर्थ यह है कि, अपनी ज्ञान शक्ति द्वारा - पर्याय द्वारा, शक्ति है - द्रव्य है, ऐसा ज्ञानकी पर्यायमें उसे ज्ञेय बनाया तब 'है' ऐसा ज्ञान हुआ. 'है' ऐसा

ज्ञान होनेसे अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद भी उसी समय पर्यायमें साथमें उछलता है, आहाहा ! समझमें आया ?

ये तुम्हारे पैसेकी आडमें सुनने भिले ऐसा है नहीं. यहां पैसा की कोई कीमत नहीं. यहां तो अकेले क्षयोपशम आदि ज्ञानकी भी कीमत नहीं है, आहाहा ! समझमें आया ? और वह भी (जब) ज्ञानकी पर्याय अपनेको जानती है, उस समय ज्ञानकी पर्यायकी उत्पत्ति हुई, यह उसका जन्मक्षण है. ये पर्यायमें उत्पन्न होनेका काल ही था. समझमें आया ? और ये (पर्यायका) उत्पाद् जो हुआ, ज्ञानके जाननेसे जो पर्यायमें उत्पाद् हुआ, वह पूर्वकी पर्यायके व्ययकी भी अपेक्षा नहीं रखती है और उत्पन्न हुई पर्याय वह ध्रुवकी अपेक्षा नहीं रखती है. ध्रुवको जाने सही परंतु उसको ध्रुवकी अपेक्षा नहीं. समझमें आया ? ज्ञानकी पर्याय (ही) कारण और ज्ञानकी पर्याय वह कार्य, आहाहा ! ऐसा मार्ग है प्रभुका. यह “साकार उपयोगमयी ज्ञानशक्ति (जो ज्ञेय पदार्थोंके विशेषरूप आकारोंमें उपयुक्त होती है ऐसी ज्ञानोपयोगमयी ज्ञानशक्ति)” ये चार (शक्ति) हुई.

अब आयी आनंद (शक्ति). “अनाकुणता जिसका लक्षण अर्थात् स्वरूप है ऐसी सुभशक्ति” आहाहा ! क्या कहते हैं ? आत्मामें एक अनाकुण आनंद शक्ति पडी है. आहाहा ! सत् विद्वानंद प्रभु ! सत् नाम शाश्वत विद् और आनंद शक्ति उसमें पडी है. अतीन्द्रिय आनंद (शक्ति) त्रिकाल पडी है. द्रव्य जैसे त्रिकाल है, वैसे अंतरमें अतीन्द्रिय आनंदकी शक्ति ध्रुव - त्रिकाल है, आहाहा ! परंतु त्रिकाल आनंद और त्रिकाल द्रव्य है. ऐसी आनंदकी पर्याय प्रगट करती है, तो इसमें ‘ये आनंद पूर्ण है’, ऐसा ज्ञान आता है. समझमें आया ? आहाहा !

सम्यग्दर्शन होता है, तब श्रद्धा तो श्रद्धा है. (ऐसा) क्यों आया ? सुभ है न ! इस ४७ शक्तिमें समकित और चारित्र शक्ति भिन्न नहीं ली है. क्या कहते हैं वह समझे. ४७ शक्तिमें समकित शक्ति और चारित्र शक्ति भिन्न ली ही नहीं. वह सुभ शक्तिमें समा दी है. समकित और चारित्रमें सुभ है तो दोनों उसमें समा दिया.

किरसे, यह ४७ शक्ति के जो नाम है उसमें समकित शक्ति और चारित्र शक्ति आयी नहीं. क्योंकि दर्शन शक्ति जो त्रिकाली है, सम्यग्दर्शन शक्ति (की बात है) सम्यग्दर्शन पर्याय भिन्न (है). त्रिकाली जो सम्यग्दर्शन शक्ति है उस शक्ति की पर्याय स्वको और शक्तिको पर्यायमें प्रतीत करती है. प्रतीत करती है ये पर्याय है. किसको प्रतीत करती है ? ये शक्ति और शक्तिवान इसको (प्रतीत करती है). (जो पर्याय) प्रतीत करती है इसमें द्रव्य, गुण आते नहीं, परंतु प्रतीतमें द्रव्य, गुणका सामर्थ्य कितना है वह सब प्रतीतमें आ गया है. इस समकित के साथ आनंद साथमें है. इस कारणसे सुभमें शक्ति समकित और चारित्र शक्ति भिन्ना दी है. आहाहा ! समझमें आया ? नहीं तो सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र तो मूल यीज

है. उसका इसमें नाम तो आया नहीं. तो (इस तरह) उसमें वह आ गया. क्योंकि सम्यग्दर्शन शक्ति है, वह त्रिकालीको पर्यायमें प्रतीत करती है. तो पर्यायमें जब त्रिकालीको प्रतीत करती है तो साथमें आनंद आता है, तो आनंद आता है वह सुषु शक्तिका परिणामन है. श्रद्धाशक्तिका परिणामन सम्यक् पर्याय (है). परंतु आनंद शक्तिका परिणामन - साथमें आनंद आया वह आनंद शक्तिका परिणामन है. आहाहा !

यह कुछ समझना नहीं और करो व्रत, करो पडीमा, ले लो महाव्रत (तो लो जायेगा धर्म !) आहाहा ! सारा दिन स्त्रीमें से कुरसद मिले नहीं. ऐसा कब समझने मिलनेवाला है ? आहाहा ! भाई ! यारित्र जब होता है तब यारित्रके साथ आनंद आता है. इसलिये यह सुषुमें दोनों शक्ति समा दी हैं. यारित्र कोई ऐसा (दुःखदायी) नहीं. छ ढाणामें आता है ना ? “आतमहित हेतु विराग ज्ञान, ते लभै आपकूं कष्टदान” (दूसरी ढाल - गाथा - ६) अंदरमें रागका अभाव और वीतरागताका (सद्भाव) (उसे) लोग दुःखदायी मानते हैं. छ ढाणामें आता है.

यहां तो कहते हैं कि, प्रभु ! अक बार सुन तो सही. तीन लोकका नाथ, त्रिदानंद भगवान, अनंत गुणका सागर, अनंत शक्तिका भंडार, जिसकी अक-अक शक्तिमें अनंत शक्तिका रूप, अक-अक शक्तिमें अनंत-अनंत शक्ति व्यापक हैं. जैसे भगवानको जब शक्ति देपती है, स्पर्शती है और उसमें रमण करती है, तो आनंद आता है. तो आनंदमें दोनों शक्ति समा दी हैं. आहाहा ! सम्यग्दर्शन हुआ और आनंद नहीं आया, ऐसी चीज है नहीं ऐसा कहते है. (कोई ऐसा कहते हैं), हमे समकित तो है परंतु आनंद नहीं आया. वह बात ही जूठी है, ऐसा कहते हैं. आहाहा ! समझमें आया ?

कोई ऐसा कहते थे, दिगंबर जैनमें जन्मे वह समकित तो है ही. अब उसको यारित्र अंगीकार करना. हमारे (संप्रदायके) गुरु भाई भी ८०की सालमें ऐसा कहते थे. हम तो वांचन करते थे ना ! हम उसकी बात करते थे, तो उनको रुची नहीं. हम संप्रदायमें आ गये, इसलिये संप्रदायकी दृष्टि यहां है नहीं. तत्त्व क्या है? वही हमारी दृष्टि है. यातुर्मासके बाद उन्होंने सबको कहा, ‘देखो भैया ! हम लोगोंको सम्यग्दर्शन तो गणधर जैसा मिला है. अब हम लोगोंको अहिंसा आदि व्रतका यारित्र लेना वह विशेष कार्य है, अरे..! भगवान बापू ! आहाहा ! ऐसी चीज नहीं है. बापू ! समकित ऐसी चीज नहीं (है).

समकितकी पर्याय पूर्णानंदके नाथको प्रतीतमें लेती है. फिर भी पूर्णानंद प्रभु श्रद्धाकी पर्यायमें आता नहीं. उसका सामर्थ्य कितना है - वह पर्यायमें - श्रद्धामें आता है. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसी बात है, भाई ! क्लासमें (आये लुअे) आदमी अकबार सुने तो सही, क्या चीज है ? समझमें आया ? शोभाबाल तो यह आत्मा है. सम्यग्दर्शनसे पूरे पूर्णात्माको प्रतीत करते हैं, यह उसकी शोभा है. समझमें आया ? और अकेले सम्यग्दर्शनसे

कोई मुक्ति नहीं होती. समझमें आया ? जब कि उसको मोक्षमार्ग कड़ा है. छ ढाणामें आया है. तीनों शीवमग्यारी (हैं). यौथे, पांयवें और छहे गुणस्थानमें सम्यक्दृष्टि है वल शीवमग्यारी हैं. फिर भी शीवमग्यारीमें छहे गुणस्थानमें यारित्र है. वहां पूर्णता है. वैसे तो यारित्रकी पूर्णता यौदहवे (गुणस्थानमें) आभीरमें होती है. परंतु स्वरूपकी दृष्टि / अनुभव हुआ और आनंदका वेदन हुआ, उसके साथ यारित्रकी रमणता हुई, तो छहे-सातवें (गुणस्थानमें) यारित्र गिननेमें आता है. मोक्षमार्ग तो दर्शन-ज्ञान-यारित्र तीनों छोकर होता है. अकेले सम्यग्दर्शन-ज्ञानसे मुक्ति होती है, ऐसा नहीं. यारित्र तो साथमें है, न ले सके वल दूसरी बात है. आहाहा !

श्रेणिक महाराज जैसे क्षायिक समकित्ती यारित्र न ले सके. परंतु प्रतीतमें तो ऐसा था कि, स्वरूपकी रमणता-यारित्र होगा तब मुक्ति होगी. समझमें आया ?

अरे..! ऋषभदेव भगवान(का दृष्टांत) वो. तिरासी (८३) वाप पूर्व ग्रहस्थाश्रममें रहे. यारित्र नहीं था. तीर्थकर-क्षायिक समकित, तीन ज्ञान लेकर आये (थे). तो भी यारित्र बिना तिरासी वाप पूर्व (ग्रहस्थाश्रममें) रहे. यारित्र नहीं था. अक पूर्वमें ७० वाप करोड और पद्द हजार करोड वर्ष जाते हैं. ऐसा-ऐसा तिरासी वाप पूर्व यारित्र नहीं था. शास्त्रमें छतना लिया है कि आठ वर्षकी उम्रमें १२ व्रत लेते हैं. उत्तर पुराणमें आता है कि, जितने तीर्थकर छो, सब समकित लेकर तो आते हैं, परंतु आठ वर्षकी उम्रमें वे १२ व्रत धारण करते हैं, ऐसा आता है. फिर भी करोडो वर्ष-अरजो वर्ष वहां रहे (लेकिन) यारित्र नहीं था. वहां (यारित्रका) अंश है. यौथे गुणस्थानका, पांयवें गुणस्थानका स्वरूपायरण (यारित्र) था. परंतु जो यारित्र छहे-सातवें (गुणस्थानका) याछिये वल नहीं था. उसमें तो महान-महान पुरुषार्थ (होता है). सम्यग्दर्शन से भी यारित्रका तो महान पुरुषार्थ है. नग्न छो जाना और पंय महाव्रत धारण कर लेना, वल कोई यारित्र नहीं (है). स्वरूप आनंदके नाथ(की) रमणतामें रमणण छो जाना, आहाहा ! आनंद के नाथमें / आनंदमें मशगुल - तन्मय छो जाना, उसका नाम यारित्र है. पंय महाव्रत आदि तो अयारित्र है. आहाहा !

यहां तो अत्मी पंय महाव्रत का भी ठीकाना नहीं है और मानते हैं कि यारित्र है. जब नववी ग्रैवेयक गये थे - “मुनिव्रत धार अनंत बैर, ग्रैवेयक उपजायो, पण आतमज्ञान बिन लेश सुभ न पायो” - ११ अंग पढ़ें थे, पंय महाव्रत धारण किये थे, २८ मूलगुण साङ्ग-साङ्ग पालते थे, प्राण जाय तो भी उसके लिये आहार / भोजन करे तो लेते नहीं थे. ऐसे क्रियाकांडके शुक्ल लेश्याके भाव थे. परंतु आतमज्ञान बिन लेश सुभ न पाया; ये सब दुःख था. पांय महाव्रतका परिणाम ये राग है, दुःख है और आस्रव है. वल यारित्र नहीं. व्यवहार आता है परंतु है दुःख, है जग पंथ, छतना संसार है. पंयसंग्रहमें आया है कि, अज्ञानीको भी जितना राग आता है, (वल) सब संसार है. समयसार नाटकमें मोक्ष अधिकारमें

आता है. ४० वां बोल है. यहाँ तो ये कहते हैं कि, सम्यग्दर्शनकी ખબर नहीं कि सम्यग्दर्शन कैसे उत्पन्न होता है ? और हो तो कैसी दशा हो ? उसकी ખबर नहीं है. और व्रत इत्यादि अपनी कल्पनासे लेकर नववीं ग्रैवेयक गया. तो यहाँ तो जैसे व्रत भी नहीं और माने कि हमें यारित्र है, पंचम गुणस्थान है, छह गुणस्थान है, मानो बापू ! आहाहा !

स्वरूपकी दृष्टि हुई और स्वरूपका ज्ञान हुआ, स्वरूपमें लीनता-रम जाना, इस आनंदमें अंदर घुस जाना, आनंदकी उग्र पर्याय होना - उसका नाम यारित्र है. समजमें आया ? तो जैसे यारित्र बिना मुक्ति कभी नहीं होती. अकेले सम्यग्दर्शन-ज्ञानसे मुक्ति नहीं होती. भले ही शीवमगयारी, ऐसा कहनेमें आता है. (लेकिन) आत्मामें यारित्रकी रमणता (हुआ बिना मुक्ति नहीं होती). आहाहा ! कोई नग्नपना ले लिया और पंचमहाव्रत ले लिया इसलिये यारित्र हो गया, ऐसा नहीं है. आहाहा ! समजमें आया ? अंतरमें आत्माका दर्शनपूर्वक, आनंद पूर्वक, ज्ञान पूर्वक स्वसंवेदन होकर, आनंदका रमण (होना वह यारित्र है). जिसके सुभके स्वादके आगे इन्द्रके, इन्द्राणीके करोड़ों के सुभ भी जहर जैसा दिखे - ये तो सम्यक्दृष्टिको ऐसा है, समजमें आया ? आता है ना ? “यक्वर्तीकी संपदा, इन्द्र सरीभा भोग, कागवीट सम मानते समकित्दृष्टि लोक” आहाहा ! इन्दोरमें कायका मंदिर है उसमें लिखा है. बताया था, देओ ! क्या लिखा है ?

सम्यक्दृष्टि अपने आनंदके स्वादमें आया (तो उसकी दृष्टिमें) “यक्वर्तीकी संपदा, इन्द्र सरीभा भोग कागवीट” (समान लगती है). मनुष्यकी विष्टा तो पादमें भी काम आती है. परंतु कागकी विष्टा पादमें भी काम आती नहीं है. सुभी विष्टा नुकसान करती है. आहाहा ! लोग कहते हैं कि पुण्यको विष्टा क्यों कहते हो ? परंतु भगवानने तो जहर कहा है - विष्टा तो अभी सादी भाषा है - तो यहाँ तो विष्टा कहा. पुण्यके इलको कागवीट सम मानते हैं. जिसके इलको कागविष्टा सम माने, उसके कारणको विष्टा ही मानते है, जहर ही मानते हैं, आहाहा ! समजमें आया ? आहाहा !

यहाँ कहते हैं कि, ज्ञान उपयोग प्रधान थीज है. क्योंकि ज्ञान अपनेको जाने, ज्ञान दूसरे गुणको जाने, ज्ञान द्रव्यको जाने, ज्ञान परको जाने, ज्ञान जड आदिके अस्तित्वको जाने. जडके अस्तित्वकी जडको खबर नहीं. दूसरी बात, ज्ञानस्वरूपी भगवान आत्मा आहाहा ! ज्ञान-ज्ञानको जब जानता है तब तो अतीन्द्रिय आनंद आता है. समजमें आया ? ये आनंदकी भूमिकामें यारित्रमें राग आदि आता है परंतु यह दुःखरूप है. व्यवहार हेय बुद्धिसे आता है. समकित्तीको भी व्यवहार आता तो है परंतु हेय बुद्धिसे आता है, ऐसी बात है और जिसे हेयबुद्धि नहीं (वह) आत्मा (को) हेय मानता है और जिसने आत्मा उपादेय माना है, वह रागको हेय माने बिना रहने नहीं. समजमें आया ? आहाहा ! ऐसी बात है, बापू !

“अनाकुलता जिसका लक्षण अर्थात् स्वरूप है ऐसी सुभशक्ति” आहाहा ! सुभमें

આકુળતા જરા ભી નહીં છે. રાગ ઓર પુણ્યકે પરિણામમેં તો આકુળતા છે. યે સુખ શક્તિકા પરિણમન નહીં. વહ તો દુઃખરૂપદશા છે. આહાહા ! દુનિયા સુખકે લિયે તરસતી છે ન ! સુખકી અભિલાષા છે, પરંતુ સુખ છે કહાં ? પૈસામેં કોઈ સુખ નહીં. સુખ તો અપની પર્યાયમેં જ્ઞાનકા ક્ષયોપશમ છે ઉસમેં ભી નહીં. જ્ઞાનકા ક્ષયોપશમ હુઆ, પરલક્ષી જ્ઞાન(મેં) ૧૧ અંગ - ૮ પૂર્વ પદે, તો ભી (ઐસી પરલક્ષી) જ્ઞાનકી પર્યાયમેં સુખ નહીં છે, આહાહા ! સુખ તો અંદર ભગવાન આત્મામેં છે. જિસકે સાથ સમ્યગ્દર્શન ઓર ચારિત્ર ભી સાથમેં છે, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

એક શક્તિમેં દો શક્તિ સમા દી છે. બહુત પ્રશ્ન આતે થે કિ, ઇસમેં સમકિતદર્શન (ઓર) ચારિત્ર ગુણ ક્યોં નહીં આયા ? પરંતુ ઇસ પ્રકારસે આયે. સિદ્ધમેં આઠ ગુણ દિયે હૈં, ઉસમેં ચારિત્ર ગુણ નહીં આયા - સુખ આતા છે, સમજમેં આયા ? સિદ્ધમેં ચારિત્ર નહીં છે, ઐસા નહીં, ચારિત્ર તો છે. તો (ચારિત્ર) ક્યા ? સ્વરૂપકી પૂર્ણ રમણતા વહ ચારિત્ર (હૈ). ઇસે સુખ ગુણમેં સમા દિયા છે. સિદ્ધકે આઠ ગુણમેં સમા દિયા છે. ઐસા યહાં લેના. (વહાં સિદ્ધમેં) સમ્યગ્દર્શન (ઓર) ચારિત્ર (કો) સુખમેં સમા દિયા છે. સમજમેં આયા ? વૈસે યહાં ભી સુખમેં દો ગુણ સમા દિયે હૈં, વૈસે લે લેના. યહ તો સિદ્ધાંતકા આધાર દિયા. જ્ઞાન, દર્શન, સુખ ઓર વીર્ય (યે) ચાર (ગુણ ઘાતી કર્મકે અભાવસે પ્રગટ) હુએ ઓર (અવ્યાબાધ, અવગાહ, અગુરુલઘુ ઓર સૂક્ષ્મત્વ - યહ) ચાર ગુણ અઘાતીકે (અભાવસે પ્રગટ હુએ). આહાહા !

ઐસે યહાં સુખશક્તિકી જહાં સંભાલ હુઈ, વહાં પ્રતીત ઓર ચારિત્રકી (પર્યાય) સાથમેં હુઈ, ઐસા કહતે હૈં. સમજમેં આયા ? ઓર સુખકી પરિણતિ / આનંદ જો આયા, વહ સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્રકા ફલ જો આનંદ છે, વહ સાથમેં છે. આહાહા ! ચારિત્ર ઉસકો નહીં કહતે હૈં કિ, પંચ મહાવ્રતકે પરિણામ ઓર નગ્ન હો જાયે, ૧૧ પડીમાધારી હો જાયે, સાત પડીમા, આઠ પડીમા, દસ પડીમા આતી છે ન ? પંદ્રહ પડીમા હો તો પંદ્રહ પડીમા લે લેવે. આહાહા ! વહ પડીમા નહીં, ભાઈ ! તુજે ખબર નહીં છે, આહાહા ! સ્વરૂપ તો આનંદમય, સમ્યગ્દર્શન ઓર ચારિત્રમય આત્મા છે. ઇસકી પ્રતીતિ, જ્ઞાન, રમણતા ઓર સુખ એક સમયમેં હોતા છે. ઉસકો યહાં સુખ શક્તિકા પરિણમન કહનેમેં આતા છે. દૂસરી રીતસે કહેં તો યે સુખ શક્તિ દ્રવ્ય-ગુણ-પર્યાયમેં વ્યાપતી છે. તબ સુખ ગુણકી પ્રતીતિ આયી. પર્યાયમેં સુખ આયા નહીં ઓર સુખકી પ્રતીતિ આતી છે, ઐસા છે નહીં. વિશેષ કહેંગે....



प्रवचन नं. ६

शक्ति-५, ६ - ता. १६-०८-१९७७

अनाकुलत्वलक्षणा सुखशक्तिः ॥५॥
स्वरूपनिर्वर्तनसामर्थ्यरूपा वीर्यशक्तिः ॥६॥

(समयसार शक्तिका अधिकार यलता है). आत्मा जो पदार्थ है; आत्म वस्तु वह तो शक्तिवान है, स्वभाववान है. उसका स्वभाव, उसकी शक्तिको - गुणको यहां शक्ति कहते हैं. द्रव्य भी त्रिकाल शाश्वत है और अनंत गुण भी अेक समयमें तिरछा - अेक साथमें अकम (रूपसे) वर्तते हैं.

क्या कडा ? अपना असंभ्य प्रदेश - भूमिका - अपना देश - क्षेत्र उसमें अनंत गुण ज्ञान, दर्शन, आनंद अेसा तिरछा अनंत गुण अेक समयमें अेसे व्यापक है. तिरछा समजते डो ? तिरछेको क्या कहते हैं ? टेडा - कहते हैं. आडाडा !

भगवान आत्माके देशमें - देश नाम असंभ्य प्रदेशके क्षेत्रमें अनंत शक्तियां रहती हैं. यह अनंती शक्ति अेक समयमें (अेक) साथमें है और पीछे पर्याय जो डोती है, वह कमसर डोती है. आयत समुदाय अेसी (पर्याय) जिस समयमें अनंत गुणकी अनंती पर्याय डुई, (वड) उसी समयमें डोनेवाली डुई. दूसरे समयमें वडी डोनेवाली डुई, अेसे कमसर-आयत लंबाईमें अनंत पर्याय उत्पन्न डोती है. उसको आयत समुदाय कहते हैं. और अेक आत्मा उसके असंभ्य प्रदेशमें अेक-अेक प्रदेशमें अनंत गुण (है). सारा असंभ्य प्रदेशमें अनंत गुण व्यापक है. अेक प्रदेशमें पूर्ण गुण (व्यापक) नहीं. असंभ्य प्रदेशमें पूर्ण गुण व्यापक डुआ है - रहड है. आडाडा ! अेसे स्वदेशकी सेवा किये बिना स्वतंत्रता प्रगट नहीं डोगी. आडाडा ! समजमें आया ? कल १५ अगस्त थी ना ? स्वराज-स्वतंत्र (डुआ) धूलमें भी स्वतंत्र नहीं है.

आतमराज - अेसा (समयसारकी) १७-१८ गाथामें आया है. आतम राज (कडा है). आडाडा ! जैसे बाहरका राज है वह छत्र-चामर आदि से जाननेमें आता है कि, यह राज है और उसके शरीरकी ऋद्धि-समृद्धि अेसी दिखनेमें आती है कि, यह राज है. समजमें आया ? अेसे आतमराज. अेसा समयसार १७-१८ गाथामें पाठ है. आडाडा ! भगवान

आत्मा ! राजा नाम 'रज्जते - शुभते इति राजा'. अपनी शक्ति और सुभ आदि गुणसे शोभते हैं, इसलिये उसको राजा कहनेमें आता है. विकारका परिणामसे - संयोगसे शोभता है, वह आत्मा नहीं. क्या कदा ? यह संयोग - यकवर्तिका राज हो या इन्द्रपद हो, उससे आत्मा शोभे वह राजा - आत्मा नहीं; और पुण्य-पापके भावसे आत्मा शोभे, वह आत्मा नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? आत्मा तो अपनी अनंती शक्तिसे अंदर शोभायमान है. आहाहा ! जिसका सुभ शरणार है.

अपना सुभ स्वभाव है. पांयवी शक्ति यलती है न ? आहाहा ! तो अपने स्वभावमें जैसे ज्ञान, दर्शन, आनंद आदि शक्ति है, ऐसी सुभ शक्ति - आनंद शक्ति है. इस आनंद शक्तिकी अनंत शक्ति है और इस आनंद शक्तिमें अनंत गुणका रूप है. तो क्या कहते हैं ? आहाहा ! जब यह ज्ञान शक्तिका तंडार भगवान आत्मा ! उस पर दृष्टिका स्वीकार होने से अर्थात् सम्यग्दर्शन होने से, अर्थात् सम्यक्-सत्य पूर्ण आनंद स्वरूप उसको देवना-दर्शन होना-प्रतीत होना, उसमें अनंत गुणके सुभका स्वाद आता है, ऐसा कहते हैं. क्या कदा वह ? ये सुभ स्वरूप शक्ति है. तो सुभका रहनेवाला सागर - भगवान आत्मा ! उस पर दृष्टि करने से (सुभ प्रगट होता है). आहाहा ! समझमें आया ?

आज तो द्रोपदरमें द्विभागमें ऐसी बात यली थी कि, मुनिराज - आत्मज्ञानी, आत्मध्यानी है. आनंदका अनुभव लेनेवाले हैं. उन्हें देखकी स्थिति पूरी होनेका जयाव आ जाय कि, अब देखकी स्थिति नहीं रहेगी, समझमें आया ? (तो ऐसी भावना भाते हैं) वह भक्ति हिन्दीमें भी है. 'यलो सभी वहां जाईये, जहां अपना न कोई, कलेवर लभे जनावरा, मुआ न रोये कोई' ऐसा आता है. 'माटी लभे जनावरा' - तुम्हारी हिन्दी भाषामें होगा. हम तो बहुत बार कहते हैं, 'यलो सभी वहां जाईये' मुनिराज ! अपनी शुद्ध परिणतिको (ऐसा) कहते हैं. आहाहा ! 'यलो सभी वहां जाईये, जहां अपना न कोई' मुझे कोई पिछाने नहीं. अपना कोई नहीं है, वहां हम जंगलमें - गुफामें यले जायें. जहां आनंद सागर भगवान है, उसकी लीनतामें हम यले जावे. आहाहा ! 'माटी लभे जनावरा' - हमारे यहां (गुजरातीमें) 'कलेवर लभे जनावरा' - (ऐसा आता है). कलेवर (माने) शरीर - मृतक कलेवर. वह कलेवर शियाण (जानवर) लभे (जाये). और 'मुआ न रोये कोई' देख छूटे तो कोई रोनार नहीं. रोनार समझे ? रोनेवाला कोई नहीं. आहाहा ! क्योंकि आनंदका सागर मेरा आत्मा (उसके) आनंदमें लीन होनेको - मैं गिरि गुफामें (अर्थात्) अंदरमें यले जाता हूं. आहाहा ! समझमें आया ? समयसारकी ४८ गाथामें 'गिरि गुफा' (आता है). भगवान निश्चय से तो गिरि गुफा तो उसको कहते हैं, कि भगवान आत्मा जिसमें अनंत गुण है - वहां जाना उसको उसे गिरि गुफामें जाना कहते हैं. आहाहा ! बाहरकी गिरि गुफा तो व्यवहारका - निमित्तका कथन है. समझमें आया ? जहां अपना भगवान आत्मा है (वह गिरि गुफा है), आहाहा !

प्रवचनसार यरष्ठानुयोग (अधिकारमें) ओक बात यली है. जब (कोई सम्यक्दृष्टि राजा) अपने आनंदमें लीन होनेको दीक्षित होते हैं, तो स्त्रीको कलते हैं कि 'हे स्त्री ! तू शरीरको रमाउनेवाली (काम क्रिडा करनेवाली) स्त्री है, मुझे नहीं. मेरी तो अनादि-अनंत अनुभूति अंदर पडी है, वह मेरी स्त्री है. मैं तो उसमें रमनेको जाता हूं' आहाहा ! समझमें आया ? 'हे स्त्री ! रजा दे. मेरे आनंद स्वप्नमें जानेको (रजा दे)' आनंद स्वप्न ऐसी मेरी अनुभूति अनादिकी (है). आहाहा ! अनादिकी अनुभूतिकी (बात) कलते हैं, पर्यायकी नहीं. यह तो उसका स्वप्न त्रिकाल (है, उसकी बात है).

समयसारकी ७३ गाथामें भी आता है. वहां आता है कि, आत्माकी पर्यायमें राग आदि तो नहीं परंतु राग आदि से भिन्न परिश्रति, राग रहित परिश्रति (जो) पर्यायमें षटकारककी होती है, वह भी मेरी (त्रिकाल) अनुभूतिमें नहीं. मैं तो राग से भिन्न हूं, पर से तो भिन्न हूं परंतु मेरी परिश्रतिमें निर्मण शुद्ध षटकारककी परिश्रति (होती है, उससे भी मैं भिन्न हूं). पर्यायमें षटकारक ३पी दशा होती है. पर्यायकी कर्ता पर्याय, पर्यायका कर्म पर्याय, पर्यायका साधन पर्याय, पर्यायका संप्रदान पर्याय, अपनी पर्याय छोकर (अपनेमें रभी) - पर्यायसे पर्याय दुर्घ, पर्यायका आधार पर्याय. जैसे षटकारक की निर्मण परिश्रति जो है, उससे भी मेरी अनुभूति तो भिन्न है. आहाहा ! अनुभूति नाम त्रिकाण स्वभाव. यह अनुभूति पर्याय नहीं. ७३ गाथामें है, समझमें आया ? आहाहा !

मैं जहां हूं वहां मेरी अनुभूति मेरेमें है. 'हे स्त्री ! मुझे छोड दे ! नहीं छोडेगी तो भी आज्ञा मांगुगा (कि) अब रजा दे !' बादमें तो घर छोडके यले जाते हैं. रजा दे तो यले जाना, ऐसा कुछ है नहीं. आहाहा ! समझमें आया ?

माताको कलते हैं, 'जनेता ! तू शरीरकी जनक - जनेता है. मेरी जनेता तू नहीं. मैं तो आत्मा हूं. माता ! अेकवार माता रजा दे ! मैं मेरी आनंद३पी माता (है) वहां मैं जाना याहता हूं. मेरे अंदर शुद्ध आनंदकी दशा - माता, उसके पास मैं जाना याहता हूं. वही मेरी माता है. उसमें से आनंदकी दशा उत्पन्न होती है. समझमें आया ? माता ! जनेता कलते हैं न जनेता ? तू शरीरकी जनेता हो, मेरे आत्माकी नहीं. माता ! अेकवार रोना हो तो रो ले. मैं २५ वर्षकी युवान अवस्थामें हजरो रानीयां छोडकर यला जाता हूं. माता ! मेरा आनंद स्वभावका स्वाद लेने मैं जंगलमें यला जाता हूं. माता ! अेकवार रोना हो तो रो ले, मां ! मैं कोल करार करता हूं, माता ! फिर दूसरी माता नहीं करुंगा. मैं दूसरी माता नहीं करुंगा' आहाहा !

हम संप्रदायमें थे तब भी कलते थे. श्वेतांबरका उत्तराध्ययन है, उसमें १४वां अध्याय है. उसमें ब्राह्मणका लडका दीक्षित होता है तो माताके पास आज्ञा मांगता है. तो उस समय ६० वर्ष पहले हम तो कलते थे. उत्तराध्ययन सूत्र है उसमें श्लोक है. ६ हजरो श्लोक

કંઠસ્થ થા. ૭૦-૭૧ કી સાલમેં શ્વેતાંબરકે ૬ હજાર શ્લોક કંઠસ્થ થે. ઉસમેં યહ એક શ્લોક આયા થા.

‘અજૈવ ધમ્મમ્ પહિવજ્જયામો, જહિં પુવણાન પુનમભવામો;

અણાગયેણ એવ ય સ્થિત્તિચિ, શ્રદ્ધાખમમ્ એવ વિણ એ તુણાગમ’

ઉત્તરાધ્યયનકા શ્વેતાંબરકા ઐસા શ્લોક હૈ. અબ ઉસકા અર્થ કરેંગે. ઉસમેં ભી હમ કહતે થે. ‘અજૈવ ધમ્મમ્ પહિવજ્જયામો’ હે માતા ! જનેતા ! મેરા આનંદ સ્વરૂપકો અંગીકાર કરનેકો મેં જંગલમેં જાતા હું. ‘અજૈવ ધમ્મમ્’ આજ હી, ‘ધમ્મમ્ પહિવજ્જયામો, જહિં પુવણાન પુનમભવામો;’ ‘માતા ! મેં અંદરમેં ધર્મ અંગીકાર કરને જાતા હું’ ઔર હમ કહતે હૈ, ‘જહિં પુવણાન પુનમભવામો’ ‘માતા ! દૂસરા ભવ હમ નહીં કરેંગે. હમ તો આનંદકા નાથમેં રમણતા કરનેકો યલે જાતે હૈ’ આહાહા ! અંદર સુખકા ભંડાર ભગવાન હૈ, આહાહા ! મેં વહાં જાતા હું. ‘અણાગયેણ એવ ય સ્થિત્તિચિ’ ‘માતા ! ઇસ જગતમેં નહીં પ્રાપ્ત હુઈ ઐસી કૌનસી ચીજ રહ ગઈ હૈ ? સબ મિલા (હૈ). સ્વર્ગ મિલા, માતા, કુટુંબ, રાજ મિલા, સબ મિલા. પ્રભુ ! કોઈ ‘અણાગયેણ’ – ભૂતકાલમેં નહીં પ્રાપ્ત હુઈ કોઈ ચીજ રહી નહીં. સબ ચીજ પ્રાપ્ત હુઈ હૈ. એક આત્મા મેંને પ્રાપ્ત નહીં કિયા. આહાહા ! ‘અણાગયેણ એવ ય સ્થિત્તિચિ’ ઉસ સમય યહ શ્લોક આતા થા. ઉસ વક્ત સભા ડોલ ઉઠતી થી. ૬૦ સાલ પહલેકી (બાત હૈ). ‘જહિં પુવણાન પુનમભવામો અણાગયેણ એવ ય સ્થિત્તિચિ’ ‘હે માતા ! જગતકી કોઈ ભી સંયોગ-ચીજ મિલે બિના નહીં રહી. સબ સંયોગ અનંત બાર મિલા’ ‘શ્રદ્ધાખમમ્ એવ’ ‘હે માતા ! એકબાર શ્રદ્ધા નક્કી કર ઔર હમે ક્ષમા કરકે રજા દે દે’ ‘શ્રદ્ધાખમમ્ એવ વિણ એ તુણાગમ’ ‘માતા ! જનેતા ! હમારે પ્રતિ - શરીર પ્રતિ રાગ છોડકર હમકો રજા દે દે’, આહાહા !

યહાં કહતે હૈ સુખ શક્તિ જો આત્મામેં હૈ, એ સુખ શક્તિમેં જ્ઞાનકા સુખ, દર્શનકા સુખ, ચારિત્રકા સુખ, સુખકા સુખ, વીર્યકા સુખ, અસ્તિત્વકા સુખ, વસ્તુત્વકા સુખ, કર્તા શક્તિકા સુખ, કર્મ શક્તિકા સુખ, (ઐસી) અનંત શક્તિકા સુખ મેરી સુખ શક્તિમેં આતા હૈ, સમજમેં આયા ? જૈસે યહાં કહતે હૈ ન ? હમારી સ્ત્રી સુખકા કારણ હૈ, લડકા સુખકા કારણ હૈ, પૈસા સુખકા કારણ હૈ, ધૂલમેં ભી (સુખકા કારણ) નહીં હૈ. આહાહા ! અજ્ઞાનમેં હૈરાન હો ગયા.

યહાં તો કહતે હૈ મેરે સુખમેં મેરા જ્ઞાનકા સુખ હૈ, દર્શનકા સુખ હૈ, ઐસે અનંત ગુણકા સુખ મેરે સુખમેં હૈ. યે તુમ્હારે પૈસે, સેઠ તો કહીં રહ ગયે. આહાહા ! સરાફકા ધંધા તો અંદરમેં હૈ. યે શક્તિ કહી ન ? અપને પાંચવીં શક્તિ યલતી હૈ ન ? ‘અનાકુલતા જિસકા લક્ષણ અર્થાત્ સ્વરૂપ હૈ ઐસી સુખશક્તિ’ યે શબ્દ બહુત થોડે હૈ, પરંતુ ભાવ બહુત ભરા હૈ. આહાહા !

ભગવંત ! તેરે આત્મામેં અનાકલ જિસકા સ્વરૂપ (હૈ) ઐસી સુખ શક્તિસે તુમ ભરા

पडा है, प्रभु ! आहाहा ! छिरनकी नाभिमें कस्तुरी (है लेकिन छिरनको) कस्तुरीकी कीमत नहीं. वैसे अपनी शक्तिमें आनंद है उसकी भबर नहीं. (छसलिये) परमें आनंद डुंढने जाता है, आहाहा ! समजमें आया ? यह तो वस्तुकी स्थिति ऐसी है, भाई ! प्रभु ! वीतराग मार्ग ऐसा बताते हैं. आहाहा ! मैं मेरे मार्गमें जाता हूँ, आहाहा !

गजसुकुमार थे न ? श्रीकृष्णके भाई (थे). जब श्रीकृष्ण नेमिनाथ भगवानके दर्शन करने जाते हैं, तो हाथी पर बैठकर जाते हैं. गजसुकुमार तो छोटा कुमार था. भाईकी गोदमें बैठे हैं. गोदमें बैठकर हाथी पर जा रहे थे. नेमिनाथ भगवान पधारे थे तो हाथी पर बैठकर दर्शन करने जा रहे थे. (श्रीकृष्ण) वासुदेव थे ना ? तो हाथी पर (बैठकर जा रहे थे). वहां अेक सोनीकी कन्या थी. अे कन्या सोनेके गेंदसे खेल रही थी. बहुत सुंदर थी. श्री कृष्णको ऐसी छच्छा लुई कि, उस सोनीकी कन्याको अंतःपुरमें ले जाव. गजसुकुमारकी शादी करेंगे, आहाहा !

ध्यान रभो ! क्या कहते हैं ? उस (कन्याको) अंतःपुरमें ले गये. गजसुकुमार, श्री कृष्ण आदि भगवानके पास गये और भगवानकी वाणी सुनी, और वाणी सुनकर ही अंदरमें से वीर्य उल्लसीत हुआ, (और कहा) 'नाथ ! मैं मुनिपना लेना चाहता हूँ, मैं मेरी माताके पास आज्ञा लेने जाऊँ.' देवकी माता (थी). (माताको कहा) 'माता ! मुझे मुनिपना (लेना है). मेरे आनंदके नाथकी संभाल करनेको जा रहा हूँ. मेरा आनंद स्वरूप, सुभ स्वरूप उसकी संभाल और उसकी रक्षा करनेको जा रहा हूँ. मेरे परिणाममें - पर्यायमें जो दुःख है, वह मेरी आनंद (और) सुभकी परिणतिमें दुःखका अभाव है'. आहाहा !

क्या कहा ? मेरे आत्मामें आनंद नामका सुभ है और वह द्रव्य-गुण-पर्याय तीनोंमें व्याप्त है. जब द्रव्य पर दृष्टि पडती है तो अे सुभ गुण द्रव्यमें, गुणमें और पर्यायमें तीनोंमें व्याप्त होता है. और सुभकी व्याप्ति जब पर्यायमें लुई तो उस समय व्यवहार भोक्षमार्ग जिसको कहे (ऐसा) राग-विकल्प उसका उसमें अभाव है. आहाहा ! ऐसी बात है, प्रभु ! आहाहा ! अभी तो बहुत गडबड हो गई है, आहाहा ! बात तो ऐसी है.

(समयसारमें) पहला श्लोक कहा न ?

नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकासते।

चित्स्वभावाय भावाय सर्वभावांतरच्छिदे।। १।।

यह समयसारका पहला कलश (है). आत्मप्याति - प्रसिद्धिका पहला कलश (है).

नमः समयसाराय - मैं आनंद और ज्ञानका स्वरूप से भरा प्रभु (हूँ). मेरा आनंद उस ओर जुकता है; राग और परकी ओर जुकना छोडकर मेरा समयसार आनंदका सागर उस ओर मेरा नमन - विनय जुकता है, आहाहा ! **नमः समयसाराय स्वानुभूत्या चकासते** - मेरा आनंदका नाथ मेरी अनुभूति से प्रगट होता है. कोई विकार या दया-दानके व्यवहार

से प्रगट नहीं होता है, ऐसा कहते हैं. **स्वानुभूत्या चकासते** – अपनी आनंदकी परिणतिके कारण से वह प्रगट होता है, आछाछा ! **चित्स्वभावाय भावाय** – मैं भावाय नाम आत्म पदार्थ हूँ और मेरा ज्ञान आदि गुण यिद् स्वभाव नामका गुण है. और स्वानुभूतिसे मेरी पर्यायमें आत्मा प्रसिद्ध होता है, आछाछा ! पहले श्लोकमें आता है ना ? **सर्वभावांतरच्छिदे** – यह यौथा बोल है. मैं तीन काल, तीन लोकके पदार्थको अपनी ज्ञान शक्तिमें जो सर्वज्ञ शक्ति गर्भित पडी है, (उससे जानता हूँ), आछाछा ! पहली ज्ञान शक्ति आ गयी न ? उसमें आगे १० वीं शक्तिमें सर्वज्ञ शक्ति लेंगे. परंतु वह ज्ञान शक्ति आर्य उसमें सर्वज्ञ शक्ति गर्भित पडी है, आछाछा ! बहुत सूक्ष्म बातें हैं, भाई ! मार्ग तो सूक्ष्म है ना ?

यिद्विलासमें ऐसा लिया है, आत्मामें एक सूक्ष्म नामका गुण है. तो ज्ञान सूक्ष्म, दर्शन सूक्ष्म, आनंद सूक्ष्म, स्वच्छत्व सूक्ष्म, कर्ता सूक्ष्म, सर्व गुण सूक्ष्म है. समझमें आया ? पुण्य-पापके विकल्पमें यह सूक्ष्म गुण आता नहीं, आछाछा ! मैं सूक्ष्म गुण से भरा (हूँ). ज्ञान सूक्ष्म, दर्शन सूक्ष्म, अनंत अतीन्द्रिय आनंद सूक्ष्म रूपसे है. ये लोग कहते हैं कि (यह विषय) सूक्ष्म पडता है. भगवान ! तू सूक्ष्म ही है, आछाछा !

ऐसा आत्मा **सर्वभावांतरच्छिदे** – एक समयमें तीन काल, तीन लोकको जाने. **सर्वभावांतरच्छिदे** – (अर्थात्) जाने. यह तो अस्ति से बात ली है, वहां नास्तिकी बात नहीं ली. पुण्य-पापका भाव उसमें नहीं है, ऐसा भी नहीं लिया है. **चित्स्वभावाय भावाय** – आत्मा भावाय - पदार्थ है. **चित्स्वभावाय** – यिद् ज्ञानानंद गुण है और अनुभूति से प्रगट होता है. अस्ति से द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों लिये और पूर्ण पर्यायमें सर्वज्ञ लिये. यारों अस्तिसे लिये. वहां अणुव नहीं है, पुण्य नहीं है, पाप नहीं है, यह बात ली ही नहीं है, आछाछा ! ये लोग यिद्विलाते हैं न कि, व्यवहारका निषेध करते हैं. भाई ! हम निषेध नहीं करते हैं, परंतु वस्तुका स्वरूप ऐसा है. भगवान ! तुझे भयर नहीं है, भाई ! आछाछा !

यहां कहते हैं कि आत्मामें अनाकुणता लक्षण (अर्थात्) स्वरूप ऐसी सुभ शक्ति है, सुभ स्वभाव है, आछाछा ! वीणा होती है न ? (उसके) तारमें जैसे जनजनाहट करते हैं तो तारमें जनजनाहट होती है. जैसे सुभ शक्तिसे भरा हुआ भगवानमें अकाग्र होता है तो पर्यायमें सुभकी जनजनाहट आती है. वहां सुभकी वीणा बजती है. आछाछा ! यहां तो भगवान ऐसी बात है, प्रभु ! तुम सब तो भगवान है न, प्रभु ! आछाछा ! तेरी शक्तिका माहात्म्य तुझे नहीं और तेरेमें नहीं (जैसे) पुण्य-पाप (और) पुण्य-पापका इल उसका तुझे माहात्म्य आया और तेरी यीजका माहात्म्य जो दिया. आछाछा ! तेरे स्वरूपमें तो प्रभु सुभ शक्ति पडी है न ! सुभका स्वभाव सामर्थ्य पडा है न ! आछाछा ! यह सुभ शक्तिमें अनंत शक्ति है. दूसरा (भी) सुभ है, ज्ञानका सुभ, दर्शनका सुभ वह दूसरी बात (है). परंतु यह सुभकी शक्ति (स्वयं) अनंत सामर्थ्यवाली है. यहां तो ऐसी बातें हैं, भगवान !

अरेरे ! अनादिसे निजपदको संभावे बिना परपदमें गोथा भाते हैं. आडाडा ! पुण्य-पाप और पुण्य-पापका फल, वह निज पद नहीं, प्रभु ! निजपदमें तो आनंद पडा है ना प्रभु ! आडाडा ! उस निधान पर अेकबार नजर तो दे. “मेरी नजरने आणसे रे, में निरभ्या न नयने हरि” – अन्यमतमें आता है. अन्यमतमें ऐसा आता है – “मेरी नजरने आणसे रे, में निरभ्या न नयणे हरि” आडाडा ! हरि अेटले आत्मा, हों !

पंथाध्यायीमें दिया है, भाई ! यह आत्मा हरि (है). क्यों हरि (कहा) ? ‘हरते एति हरि’. पुण्य-पाप और मिथ्यात्वका भाव हरता है – नाश करता है, एसदिये हरि कइनेमें आता है. पंथाध्यायीमें पाठ है. ‘हरते एती हरि’ क्या हरता है ? भगवान आनंद स्वरूपकी दृष्टि करनेसे और उसमें लीन होने से – मिथ्यात्व और राग-द्वेषका नाश करता है, एसदिये भगवान आत्माको हरि कइनेमें आता है, आडाडा ! समजमें आया ?

“मेरी नजरने आणसे रे, में निरभ्या न नयणे हरि” मेरी नजरकी आलसमें में राग, पुण्य, परवस्तु, पुण्यका फल इन सबको देभनेमें मेरी नजर गई. परंतु मेरी नजरकी आलससे ‘नयणे न निरभ्या हरि’ – मेरी ज्ञानकी पर्यायकी नजरमें मेरे हरिको मेंने देभा नहीं. कर्मके कारणसे अटका है, ऐसी बात यहां है नहीं. समजमें आया ?

(यहां) कहते हैं, “अनाकुलता जिसका लक्षण अर्थात् स्वरूप है ऐसी सुभशक्ति.” ओहोहो ! गजसुकुमारने (दिव्यध्वनि) सुनी और माताके पास (गये) और वैराग्य हुआ. अब प्रभुके पास आये (और कहा), “प्रभु ! हम मुनिपना अंगीकार करना चाहते हैं” आडाडा ! और उसी समय ऐसा कहा. “नाथ ! आपकी आज्ञा हो. मैं द्वारिकाकी स्मशान भूमिमें यवा जाऊँ” आडाडा ! यहां श्वेतांबरमें ऐसा शब्द है.

गजसुकुमार राजकुमार (है). गज नाम हाथीकी जोपडी जैसे सुकोमल होती है. हाथीकी जोपडी होती है ना ? लाल-लाल सुंदर होती है. ऐसा लाल-लाल सुंदर शरीर था. एसदिये उसका नाम गजसुकुमार (रभा था). सुकुमार माताके पास आज्ञा लेकर भगवानके पास जाते हैं (और) मुनिपना लेते हैं, आडाडा ! मेरा आनंदका भजना मेंने देभा है. अब उस भजानेको जोलनेको मैं स्मशानमें जाता हूँ. जगतके प्राणी मुट्टे छोकर (उसे) सर पर ले जाते हैं. मैं यलके स्मशानमें जाता हूँ, ऐसी बात है. भगवान ! क्या करे ? आडाडा !

एसकी कीमत क्या कहें ? अेक-अेक गुणकी क्या कीमत और अनंत गुणकी क्या कीमत ? आडाडा ! अनंत गुणको धरनेवाला द्रव्यस्वभाव परमात्मा ! यह आत्मा परमात्मा ही है. उसकी क्या कीमत कहें ? वह अमूल्य चीज है. जिसका मूल्य नहीं.

ऐसा भगवान आत्मा ! सुभसागरमें वीर्य शक्ति भी पडी है. क्या कहते हैं ? सुभमें शक्ति भी पडी है (अर्थात्) वीर्यका रूप (है). वीर्य शक्ति (सुभमें) नहीं. क्या कहा ? आडाडा ! सुभ शक्तिमें बलकी शक्तिका रूप है. सुभमें ही बल है. अपने रूपमें परिणामन करना (ऐसा)

સુખમેં હી બલ હૈ. અપને રૂપમેં પરિણમન કરના વહ સુખમેં બલ હૈ. વીર્યગુણ ભિન્ન હૈ. વીર્યગુણ વહાં નહીં જાતા. વીર્યકા લક્ષણ સુખમેં નહીં જાતા. પરંતુ વીર્યકી જો શક્તિ હૈ વહ શક્તિ ઇસમેં હૈ. સુખ ગુણમેં વીર્ય શક્તિ અપને સે હૈ. વીર્ય શક્તિકે કારણ સે નહીં. આહાહા ! ઐસી બાતેં (હેં) ! આહાહા ! ઐસા શક્તિવંત પરમાત્મા અનાકુળ આનંદકા સાગર મેં હું ઔર ઉસ પર મેરી નજર જાતી હૈ તો અનાકુળ આનંદકી પર્યાય (હોતી હૈ). દ્રવ્યમેં-ગુણમેં તો અનાકુલતા થી. દ્રવ્ય માને વસ્તુ ઔર ગુણ માને શક્તિ. ઇસમેં તો અનાકુળતા શક્તિ થી પરંતુ ઉસકા સ્વીકાર કરને કે લિયે જહાં અંતરમેં જાતા હું તો પર્યાયમેં આનંદ આતા હૈ. પર્યાય જબ દ્રવ્ય-ગુણમેં આયી (તો) ઉસ પર્યાયમેં આનંદ ગુણકી પરિણતિ આતી હૈ. સમજમેં આયા ?

ઇસ આનંદકી પરિણતિ જબ હુઈ તો દયા, દાનકા વિકલ્પ જો વ્યવહાર (હે) વહ દુઃખ હૈ. ઉસ દુઃખકા ઉસમેં અભાવ હૈ. યહ અનેકાંત હૈ. ઉસ રાગકી ક્રિયાસે આનંદકી પર્યાય પ્રગટ હોતી હૈ કિ મોક્ષમાર્ગ પ્રગટ હોતા હૈ, ઐસા નહીં. આનંદકી પર્યાય કહો કિ મોક્ષમાર્ગ કહો (એક હી બાત હૈ). સમજમેં આયા ? આહાહા ! ઐસી બાત હૈ. આહાહા ! વચનાતીત, વિકલ્પાતીત, શરીરાતીત, ભેદસે અતીત - ઐસા તેરા અભેદ સ્વરૂપ અંદર પડા હૈ, નાથ ! ઐસી અનાકુળ શક્તિ - ઉસકા સ્વરૂપ ઐસી પાંચવીં શક્તિ હુઈ, આહાહા ! કલ ચલી થી. આજ થોડી દૂસરી રીતસે ચલી, આહાહા !

ગજસુકુમાર સ્મશાનમેં જાતે હેં તો સોનીકી લડકી થી ના ? ઉસે અંત:પુરમેં લે ગયે. ઉસકે પિતાજીકો ખ્યાલ આયા કિ અરેરે...! (કન્યાકો) અંત:પુરમેં લે ગયે ઔર (ગજસુકુમાર) તો સાધુ હો ગયે, (અબ) કન્યાકો કૌન લેગા ? ઔર ઉસકે પિતાજી વહાં (સ્મશાનમેં) ગયે. સ્વાધ્યાયમંદિરમેં ફોટો રખા હૈ. (ગજસુકુમાર) આનંદકે ધામમેં મસ્ત હેં. મરે હુએ લોગોંકી સ્મશાનમેં રાખ હોતી હૈ ના ? ઉસ રાખકી સર કે ઉપર પાલ બાંધકર અગ્નિ જલાયી. પરંતુ (ગજસુકુમાર) અંદર ધ્યાનકી અગ્નિમેં - (આત્માકી) જળહળ જ્યોતીમેં પડે હેં તો અગ્નિકી ખબર નહીં પડતી. ઐસી સુખશક્તિકા ભંડાર (ભોગનેવાલેકી) ઐસી દશા હોતી હૈ, ઐસા કહતે હેં. આહાહા !

યહાં પાંચ પાંડવ ભગવાનકે દર્શન કરનેકો નિકલે થે. મુનિ થે ઔર મહાન આનંદકો ભોગનેવાલે થે, આહાહા ! જબ પાલીતાણા આયે તો ખબર પડી કિ, પ્રભુ ! તો મોક્ષ પધારે હેં. નેમીનાથ ભગવાન મોક્ષ પધારે હેં. અરે...! હમ દર્શન કરનેકો જાતે હેં (ઔર ભગવાનકા) વિરહ પડ ગયા. એક મહિનેકા ઉપવાસ થા. પૈરોંસે શેત્રુંજય ચડ ગયે. અતીન્દ્રિય આનંદકે વેદનમેં પાંચ પાંડવ ખડે હુએ. ઇનમેં તીન જો થે ધર્મરાજા, ભીમ ઔર અર્જુન વે તો કેવલજ્ઞાન પાકર મુક્ત હો ગયે. સહદેવ ઔર નકુલ દો ભાઈ થે ઉનકો જરા વિકલ્પ આયા. તીનોં બડે ભાઈ થે ના ? સહોદર થે ના ? સહોદર માને એક ઉદરમેં સાથમેં જન્મ (હુઆ હો વહ).

आडाडा ! अरे..! धर्मराजाको क्या होता होगा ? क्योंकि दुर्योधनके भांजेने आकर लोहेके गहने बनाकर पैरोंमें लोहेके जुते, हाथमें लोहेकी धगधगती लुई अग्नि और सर पर लोहेकी अग्निका मुकुट पहनाया था. सडदेव-नकुलको ऐसा विकल्प आया 'अरे..! भैयाको क्या (होता होगा) ?' देओ ! अक विकल्प आया तो दो भव हो गये ! और (दूसरे तीन) विकल्प बिना ध्यानमें रहे तो केवलज्ञान हो गया. अक विकल्प आया तो सर्वार्थ सिद्धिमें उउ सागरमें गये. छतना केवलज्ञान दूर हो गया. साधर्मिका - मुनिके लिये विकल्प आया वह संसार है, ऐसा कहते हैं. समजमें आया ? छतना विकल्प आया. शुभ विकल्प है कि अशुभ है ? परंतु मुनिके लिये (विकल्प आया) न ? अक तो सडोदर है और साधर्मि है. सडोदर है - अक उदरमें उत्पन्न हुआ और साधर्मि है और बडे भाई है. उसको क्या होता होगा ? ऐसा अक विकल्प आया तो - केवलज्ञान अटका). (लोग कहते हैं) शुभ भावसे लाभ होता है. क्या लाभ होता है ? शुभ तो दुःख है, ऐसा कहना है न ? पर्यायमें जब आनंदकी परिणति हुई तो उसमें दुःखका तो अभाव है, उसमें रागका तो अभाव है, विकल्पका तो अभाव है. ऐसी यीज है. विकल्प आया और सर्वार्थसिद्धिमें गये गये. आडाडा ! केवलज्ञान उउ सागर दूर हो गया. अक साधर्मिके, सडोदरके, संतके उपसर्गमें अक विकल्प आया तो अे शुभ (विकल्पसे) उउ सागर संसार हो गया ? अरे..! लोग (ऐसी बात) कहां माने ? क्या करें ? शुभभावसे धर्म होता है, अरे.. प्रभु ! सुन तो सडी नाथ ! तेरी समृद्धिमें शुभभावका तो अभाव है न नाथ ! तेरी संपदा आनंदसे भरी है. उसमें दुःखका तो अभाव है. आडाडा ! और वह राग उत्पन्न हुआ तो दो भव हुआ, अक सर्वार्थसिद्धि और मनुष्य होंगे, उसमें भी आठ वर्ष तक तो उनको केवलज्ञान नहीं होगा. आडाडा ! समजमें आया ?

अपने आनंद स्वरूपकी परिणतिसे विरुद्ध वह विकल्प है. आडाडा ! उस विकल्पमात्रका तो स्वरूपमें अभाव है. परंतु वह भीयमें आया तो उसे व्यवहार मोक्षमार्ग कहनेमें आया. परंतु व्यवहार मोक्षमार्ग से तो संसार बंध हुआ, आडाडा ! ऐसी बातें हैं, भाई ! आडाडा ! अक छतना विकल्प आया उतनेमें तो उउ सागर संसार !! राग संसार है, छसका इल संसार है, आडाडा ! अरेरे...! उसे कुछ खबर नहीं है.

मेरा स्वरूप तो अतीन्द्रिय आनंद (स्वरूप है) और उसका स्वीकार करनेसे पर्यायमें आनंद आता है, अनंत गुणका आनंद आता है. समजमें आया ? ऐसा मैं हुं (ऐसी प्रतीति हुई) तो द्रव्य, गुण और पर्याय तीनोंमें आनंद व्याप्त हो गया, आडाडा ! अनादिसे द्रव्य और गुणमें आनंद था. समजमें आया ? यह सत्ता अनादिसे है. आनंदकी सत्ता और सत्तावान तो अनादिसे है. परंतु जब उस ओर दृष्टि गई और स्वीकार हुआ, अपनी ज्ञानकी पर्यायमें उसको ज्ञेय बनाकर जहां ज्ञान हुआ तो पर्यायमें भी आनंद आ गया. द्रव्य, गुणमें - शक्तिमें था वह व्यक्तमें आ गया. आडाडा ! समजमें आया ? अरे..! ऐसी बातें (हैं) !

यहां दुनिया (के लोग) स्त्री, पुत्र और कुटुंब सुभके निमित्त हैं (ऐसा मानते हैं). आहाहा ! वह सब तो दुःभके निमित्त हैं. दुःभ (है) न ? स्त्री, कुटुंब, परिवार, पैसा वह दुःभ नहीं परंतु दुःभका निमित्त (है). निमित्त दुःभको करता नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! यह बात सुननी भी मुश्किल पड़े. अरे.. प्रभु ! तेरी यीज तो ऐसी है ना ? और उसको ऐसा (लगता) है – ‘अंकांत है, अंकांत है. कान्छस्वामी अंकांत करते हैं’ अरे प्रभु ! सुन तो सही, नाथ ! तेरे घरकी बात है, भाई ! तेरा छित हो उसकी बात है. सम्यक् अंकांतकी बात है. अनेकांतकी बात है. राग उसमें नहीं है – यह अनेकांत है. स्वर्पकी ओरका जुकाव वह सम्यक् अंकांत है और रागका अभाव वह अनेकांत है. समझमें आया ? रागसे भी लाभ होगा और स्वभावकी अंकांतासे निर्मल परिष्कृतिका भी लाभ होगा, ऐसी बात है नहीं. आहाहा ! यह पांचवीं शक्ति हुई.

यह तो गंभीर है. याहे छतना निकल सकता है. दरिया भरा है. प्रभु ! सुभका सागर – समुद्र (है). आहाहा ! क्षेत्र भले ही शरीर प्रमाणा हो और प्रदेश असंभ्य हो परंतु गुण तो अनंत है. समझमें आया ? पानीका लोटा लोटा है न लोटा ? इसमें पानी भरा है तो लोटेके आकारके अनुसार पानी है परंतु पानीका आकार लोटेके कारण से नहीं. पानीका आकार पानीके कारण और लोटेका आकार लोटेके कारण (है). उस जडका आकार जडमें है और शरीर प्रमाणासे आत्मा है तो शरीरके आकारके कारणसे उस अनुसार आत्माका आकार है, ऐसा है नहीं, समझमें आया ? आहाहा ! यह मकान और घर तो कहीं दूर रह गये. आहाहा !

श्वेतांबरमें अंतरीक्ष होता ही नहीं. श्वेतांबरमें भगवान ५०० धनुष ऊंये हैं, ऐसी बात है ही नहीं. अंतरीक्ष तो द्विगंबरमें ही है. यह अंतरीक्ष है, वह द्विगंबरका ही क्षेत्र है. लेकिन क्या करें ? अरे.. प्रभु ! मार्ग अलग है. किसीको मारनेका भाव दुःभरूप (है). मुनिको (सहदेव और नकुलको) कल्पना आयी कि, ‘मुनिको क्या है ?’ ऐसा भाव (भी) दुःभरूप (है) तो परको मारनेका अशुभभाव वह तो (कहां रह गया) ?

यहां छोड़ी शक्ति कहते हैं, आहाहा ! “स्वर्पकी (–आत्मस्वर्पकी) रचनाकी सामर्थ्यरूप वीर्यशक्ति.” देओ अब उसमें क्या भरा है ! अंदर वीर्य नामका गुण है. जिससे पुत्र होता है, शरीरका वीर्य है वह तो जड–मिट्टी–धूल (है). यह तो आत्मामें वीर्य नामकी अंक शक्ति – बल (ऐसा) गुण है. आत्मामें बल नामकी अंक शक्ति है. वह बलवान शक्तिवानसे बलवान है. आहाहा ! समझमें आया ? इसमें वीर्य शक्ति है. बल शक्ति है तो इस बल शक्तिमें अनंत गुणकी शक्ति आती है, आहाहा ! और अनंत गुणमें भी वीर्य शक्ति अंदरमें है. यह वीर्य शक्ति नहीं बल्कि उस वीर्यका रूप प्रत्येक गुणमें है.

यहां कहते हैं, सुनीये ! बहुत अच्छी बात है. वीर्य – स्वर्पकी रचना करे यह सामर्थ्य

(है). बलका सामर्थ्य तो यह है कि, अपने आनंद, शांति और वीतराग स्वरूपकी रचना करे, यह वीर्य है. आहाहा ! (अपनी) पर्यायमें स्वरूपका सम्यक्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक्चारित्र, सम्यक् वीर्य, अनुभूती (रूप) आनंद – जैसे अपने स्वरूपकी पर्यायमें रचना करे, वह वीर्य है. (पर्यायमें) आत्मवीर्य प्रकाशित करे. समझमें आया ? (प्रत्येक) शक्तिमें जो बल है (वह) आत्माके वीर्यके कारणसे शक्तिमें बल है, ऐसा है नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! वीर्य (अर्थात्) स्वरूपकी रचनाका सामर्थ्य. इस बलका सामर्थ्य तो यह है कि, अपने आनंद, शांति और वीतराग स्वरूपकी रचना करे, वह वीर्य है.

पंचम आराके मुनि १००० वर्ष पहले हुए. यहां (परमागम मंदिरमें) तीन झोटो रभे हैं. भगवान कुंदकुंद आचार्य, अमृतचंद्र आचार्य और नियमसारके कर्ता पद्मप्रभु भगवान. द्विगंबर संतों...ओहोहो ! जगतमें शांति प्राप्त कराये (उसे) सुसंत कहीये. अपने स्वरूपकी दृष्टि करावे उसे संत कहीये. समझमें आया ?

(यहां) कहते हैं कि, वीर्यका स्वभाव क्या ? कि आत्मस्वरूपकी रचना (करे यह वीर्यका स्वभाव है). आहाहा ! आत्माका स्वरूप क्या ? कि ज्ञान, दर्शन, आनंद आदि अनंत गुण उसका स्वरूप है और स्वरूपवान आत्मा है, आहाहा ! सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र, सम्यक् वीर्य, अद्भुत आनंद – जैसे अपने स्वरूपकी पर्यायमें रचना करे वह वीर्य है. वीर्य शक्ति स्वरूपकी रचना करे. विकारकी रचना करे या परकी (रचना) करे, वह तो प्रश्न है ही नहीं. आत्म वीर्य परका कुछ करे (ऐसा है ही नहीं). समझमें आया ? शक्तिमें जो बल है (वह) आत्माके वीर्यके कारणसे शक्तिमें बल है, ऐसा है नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! उसकी (जडकी) शक्ति जडमें (है). परमाणुकी शक्ति परमाणुमें है, आहाहा !

नेमीनाथ भगवानकी बड़ी सत्ता भरी हुई थी. वीरोंकी, शूरवीरोंकी (सत्ता भरी थी). इसमें यर्था यली – कोई कहे कि पांडवोंमें बहुत बल है. कोई कहे धर्मराजमें घतना बल है. अक जन्ने कडा कि, देणो ! नेमीनाथ भगवान बैठे है. गृहस्थाश्रममें तीन ज्ञानके धनी (है). उनके शरीरका बल है ऐसा बल और किसीका नहीं है. सत्तामें ऐसी यर्था यली. तो कडा 'बल तपासो !' नेमीनाथ भगवान गृहस्थाश्रममें छद्मस्थ है ना ? (उनको) विकल्प उठा. पैर नीचे रभे. (और सत्ताको कडा) 'पैरको उपर करो.' टूटकरके मर गये लेकिन उनका पैर उपर नहीं कर सके. देहकी शक्तिका (घतना) सामर्थ्य ! (लेकिन वह) आत्माके कारण नहीं. समझमें आया ?

परमाणुमें भी वीर्य नामकी शक्ति है. आहाहा ! पंचाध्यायीमें (कडा) है. जडमें भी वीर्य शक्ति है. आहाहा ! यह (जड शरीरका) वीर्य नहीं, हां ! (यह आत्म) शक्तिरूप वीर्य (है). आहाहा ! (मात्र) आत्तामें ही वीर्य है (ऐसा नहीं). परमाणुमें भी वीर्य शक्ति है. यह वस्तु तो अनंत जड परमाणुका दल है.

(नेमीनाथ) भगवानने पैरको नीचे रखा. श्रीकृष्णने आकर उपर करके मोड़ दिया फिर भी उपर नहीं हुआ. ऐसी शक्ति तो भगवानके शरीरके परमाणुमें थी. समझमें आया ? यह शक्ति तो आत्माकी बात है. आत्माका वीर्य शरीरके वीर्यमें काम करता है, ऐसा है नहीं. और आत्म वीर्य पुण्य-पापकी रचना करे, वह वीर्य नहीं. आहाहा !

वह तो पहले अकबार कहा था कि, पुण्य-पापकी जो रचना होती है वह वीर्य नहीं – वह आत्माका वीर्य नहीं. थोड़ी कठिन बात है. वह नपुंसकका वीर्य है, लिजडाका वीर्य है. लिजडा होता है कि नहीं ? उसको वीर्य नहीं होता. उसको पुत्र-पुत्री नहीं होता. वैसे पुण्य-पापको रचनेवाला नपुंसक है; उसमें से धर्मकी प्रजा उत्पन्न नहीं होती. ऐसी भिन्न-भिन्न बातें हैं. अनादिसे बहुभाग ऐसा ही है. समयसारमें तीन पाठमें आया है. एक ३८ से ४३ गाथामें आया और एक पुण्य-पापका अधिकारमें आया. क्लीव शब्द आया. क्लीव (अर्थात्) नपुंसक. रागको अपना मानता है, रागकी रचना करता है (वह) नपुंसक, लिजडा, पावेया है. तुझे पुरुषकी ખબર नहि कि आत्म पुरुष क्या है ? आहाहा ! कठिन बात है.

यहां कहते हैं कि, पुण्य और पुण्यके परिणामसे – व्यवहारसे निश्चय होता है. (ऐसी) नपुंसकतासे (आत्म) वीर्य होता है (वह मिथ्या मान्यता है). आहाहा ! भगवान ! तुझे ખબर नहीं. (तुझे) ખबर नहीं (और कभी) सुना नहीं. संतोंके पास, सर्वज्ञसे यह क्या चीज है ? यह सुना नहीं. यह तो गुरुगम और संतोंके पास सुने बिना समझमें नहीं आये ऐसी चीज है, भगवान ! समझमें आया ? आहाहा !

(यहां) कहते हैं कि, राग आदि जो व्यवहार रत्नत्रय कहते हैं, (वह) राग कथनमात्र भोक्षमार्ग कहनेमें आया है. (परंतु) वह भोक्षमार्ग नहीं है. वह तो दूःख मार्ग है, बंध मार्ग है. (राग) आता है. मुनिको भी, समकित्तिको भी विकल्प आता है परंतु वह हेयबुद्धिसे (आता है). (वह) बंध मार्ग है, आहाहा ! समझमें आया ? क्यों ? कि वीर्य नामकी शक्ति है यह शक्ति अनादिसे द्रव्य-गुणमें तो व्याप्त है (ही). परंतु इस वीर्यको धरनेवाले भगवान आत्माके उपर दृष्टि और रुचि जाती है, तो वीर्यकी परिणति स्वरूपकी रचना करनेमें आती है.

यहां (ऐसी) बात है. अरे..! एक घंटा भी प्रवचन कहां (सुनने मिलता) है ? बापू ! कोई करोड़ो रुपिया (दे और) व्याख्यान मिले, ऐसी चीज है नहीं. आहाहा ! बापू ! यह तो वीतराग परमात्माके धरकी बात है. आहाहा ! (भरतक्षेत्रमें) परमात्माका विरह है. भगवान तो वहां (महाविदेहमें) बिराजते हैं. समझमें आया ? परमात्माकी बात तो यह है. भगवानका संदेश तो यह है.

प्रभु ! तुम वीर्य शक्तिको धरनेवाला है न ! आहाहा ! इस वीर्य शक्तिमें तो अनंत गुणकी शक्ति आती है. प्रत्येक गुणमें शक्ति है – यह वीर्य शक्ति (उसमें) निमित्त है. अंदर

(સ્વયંકી) ઉપાદાન શક્તિ છે. જ્ઞાનમાં ભી ઉપાદાન શક્તિ છે. વીર્ય શક્તિ તો નિમિત્ત છે, આહાહા ! સમજમાં આતા છે ?

એક-એક ગુણમાં અપનેસે શક્તિ છે, હાં ! ઉસમાં વીર્ય ગુણ તો નિમિત્ત છે. ઉપાદાન તો જ્ઞાન ગુણમાં તાકતકી શક્તિ અપનેસે – ઉપાદાનસે હોતી છે, આહાહા ! એસી બાર્તે (હૈં) ! યહ તો પરમાત્માકા માર્ગ છે, ભાઈ ! આહાહા !

હડકેકી માતા ઉસકો ગાના ગાકર સુલાતી છે. ગાલી દેગી તો નહીં સોતા (હૈ). સબ લોગ ધ્યાન રખો ! બાલકકો ‘મારા રોયા’ એસે કહોગે તો નહીં સોયેગા. પરંતુ ‘મારો દિકરો ડાહ્યો અને પાટલે બેસી નાહ્યો, મામાને ઘેર ગયો અને ગુંજામા ખારેક અને ટોપરા લાવ્યો.’ ગુજરાતીમાં એસા આતા છે. એસા બોલે તો વહ સો જાતા છે. ઉસકી માતા ઉસકે અવ્યક્તરૂપસે ગુણ ગાકર સુલાતી છે. (યહાં) પરમાત્મા ઉસકે ગુણ ગાકર જગાતે હૈં. જાગ રે જાગ, નાથ ! સમજમાં આયા ?

એક બાત યાદ આ ગઈ છે. ૬૪કી સાલકી બાત છે. પાલેજમાં હમારી દુકાન થી. હમ માલ લેને ગયે થે. ઉસ વક્ત તો ૧૮ વર્ષકી ઉમ્મ થી. મુંબઈ, વડોદરા માલ લેને તો હમ જાતે થે. એકબાર માલ લેને ગયે તો રાતકો નિવૃત્તિ થી. હમ નાટક દેખને ગયે. અનસુયાકા નાટક થા. ભરૂચકે પાસ નર્મદા (નદી) છે ન ? નર્મદા ઓર અનસુયા દો બહને થી. હમ સબ નાટક દેખને ગયે. નાટકમાં વહાં પુસ્તક ભી લિયા. તુમ ક્યા બોલતે હો ? યહ સમજે બિના હમ એસે હી નહીં બૈઠતે. ૧૨ આનાકી ટિકીટ ઓર ૧૨ આનાકી કિતાબ લી. વૈરાગી નાટક થા. અનસુયા થી વહ શાદી કિયે બિના સ્વર્ગમાં જા રહી થી. ઉસે કહા કિ ‘અપુત્ર ગતિ નાસ્તિ’ એસા વેદમાં આતા છે. પુત્ર ન હો ઉસે (સ્વર્ગ) ગતિ નહીં મિલેગી. તો ઉસને પૂછા ‘ક્યા કરના ?’ તો કહા ‘જાઓ નીચે, (ઓર) નીચે જાકર શાદી કરો. નીચે (એક) અંધ બ્રાહ્મણ થા. ઉસસે શાદી કી ઓર ઉસે બાલક આયા. ઉસકો (બાલકકો) જુલાતે થી. ઉસ વક્ત નાટકમાં (એસા આતા થા). ‘ઉદાસીનોસિ, શુદ્ધોસિ, બેટા ! તુમ તો શુદ્ધ હો. તૂ નિર્વિકલ્પ આત્મા છે.’ કિતને વર્ષ હુએ ? ૭૦ (વર્ષ હુએ). આહાહા ! સમજમાં આયા ? ઉસ વક્ત તો નાટક એસા થા. અભી તો અનીતિ ઓર દિખાવ ખરાબ (હો ગયે). ઉસ વક્ત નાટક એસા આતા થા, ભૈયા ! ‘ઉદાસિનોસિ, બેટા ! તૂ ઉદાસ છે. શુદ્ધોસિ, નિર્વિકલ્પોસિ (હૈ). આહાહા ! એસે તીન (શબ્દ) યાદ રહ ગયે હૈં. બાકી તો બહુત થા લેકિન બહુત વર્ષ હો ગયા ન ? (ઇસલિયે યાદ નહીં હૈ).

અપને બંધ અધિકારમાં આતા છે. બંધ અધિકારમાં આખિરમાં આતા છે, સર્વવિશુદ્ધજ્ઞાન અધિકારમાં આખિરમાં આતા છે ઓર પરમાત્મ પ્રકાશમાં આખિરમાં આતા છે. એસે તીનોંમાં યહ આતા છે. ‘ઉદાસિનો, નિર્વિકલ્પો, શુદ્ધો’ આદિ બહુત શબ્દ આતે હૈં. ત્રિકાલ – લોકાલોકમાં જીવ છે. સબ પૂર્ણાનંદસે આનંદસે ભરા ભગવાન છે. સર્વ જીવાદિ સર્વ કાલમાં ભગવાન સ્વરૂપ છે, એસી ભાવના કર. એસે લિખા છે. વિશેષ આયેગા....

प्रवचन नं. ७

शक्ति-६ - ता. १७-०८-१९७७

स्वरूपनिर्वर्तनसामर्थ्यरूपा वीर्यशक्तिः ॥६॥

(समयसार शक्तिका अधिकार यलता है). जिसको आत्मज्ञान करना हो उसको आत्मा क्या चीज है ? और उसमें कितनी और कैसी शक्ति है ? उसको जानना पड़ेगा. आत्मा तो (परसे) भिन्न अेक वस्तु है. प्रत्येक आत्मा भिन्न है. परंतु अेक स्वरूपमें अनंत शक्ति है और अेक-अेक शक्तिमें भी अनंत शक्ति है. और अेक-अेक शक्ति (का धारक) शक्तिवान जो आत्मा, यैतन्य प्रकाशका पुर ! वल तो यैतन्य प्रकाशका पुर-नुर-तेज है. इस यैतन्य प्रकाशको कभी निहारा नहीं - देखा नहीं.

यैतन्य प्रकाशका पुर प्रभु ! (है), उसने अपनेको भूलकर अंधकारको देखा. अंधेरा अर्थात् पुण्य-पापका भाव वल अंधेरा है. और पुण्य-पाप (भाव)का बंधन - जड कर्म वल भी अंधेरा है. और उसका इल अैसी यल बाहरकी लक्ष्मी आदि सब अंधेरा (है). (यैतन्य) प्रकाशका उसमें अभाव है. आहाहा ! यैतन्य प्रकाशका पूर्ण पुंज (है). उसने यैतन्य प्रकाशको कभी देखा नहीं. यैतन्य प्रकाशका पुंज प्रभु ! वल द्रव्य है. इस द्रव्य पर कभी दृष्टि दिया नहीं और पर्यायमें राग, द्वेष, पुण्य-पाप, शरीर, कर्म उसको देखा. अंधेरेको देखा परंतु उजालेको देखा नहीं. आहाहा ! अैसी सूक्ष्म बात (है).

यहां तो वीर्य शक्ति यलती है. आत्मामें अेक वीर्य नामकी शक्ति है. वीर्य नाम बल. आत्मामें अेक वीर्य नाम बल नामकी शक्ति है. ज्ञान शक्तिमें भी बल शक्ति पडी है. यल वीर्य शक्ति उस ज्ञान शक्तिमें नहीं. परंतु अंदर ज्ञान शक्तिमें भी वीर्य शक्ति यानि बल शक्ति है. आहाहा ! ज्ञान स्वरूपी प्रकाश प्रभु ! यैतन्य प्रकाशका पुंज प्रभु ! उसमें बल नामकी शक्ति है. आ बल नामकी शक्ति है वल तो भिन्न है. परंतु ज्ञान प्रकाशमें भी अपनेसे जाननेकी ताकत-बल है, आहाहा ! सूक्ष्म बात है, भाई ! क्या कडा ?

वस्तु अंदर यैतन्य प्रकाशका नुरका पुर है. यैतन्यका तेज स्वरूप भगवान है. उस यैतन्य प्रकाशका नुरका लक्ष नहीं करके अनादिसे राग, द्वेष, पुण्य, पाप, दया, दान (किया). सम्यग्दर्शन

बिना, स्वरूपका प्रकाशका अनुभव बिना यह सब दया, दान, व्रत, तप सब अंधेरा है. आहाहा ! यह सूक्ष्म बात है. समझमें आया ? इस अंधेरे को ज्ञानकी पर्यायमें देखा परंतु जिसकी पर्याय है ऐसा चैतन्य प्रकाश पर उसकी नजर नहीं गई. आहाहा ! भाषा सादी है (परंतु) भाव सूक्ष्म है. समझमें आया ?

ज्ञानमें बल नामका रूप है. वीर्य शक्ति है वह त्मिन्न है परंतु ज्ञान शक्तिमें शक्तिरूपे बल है, यह बल त्मी द्रव्य, गुण और पर्याय तीनोंमें व्यापक हो जाता है. अनादिसे वैसे तो द्रव्य और गुणमें ज्ञान और आनंदका शक्तिरूप भाव है. परंतु उस शक्तिका अंदरमें जब स्वीकार हो (तब पर्यायमें त्मी ज्ञान और आनंद प्रगट होता है). यह वस्तु (है) उसमें अनंत शक्ति (है). उसमें ज्ञान और आनंद शक्ति (है) तो ऐसी शक्तिका जब स्वसन्भुज होकर (और) परसे विभुज होकर स्वीकार हो, तब उसकी पर्यायमें त्मी ज्ञान और आनंदकी पर्याय व्याप्त होती है. क्या कदा समझमें आया ? सूक्ष्म बात है, प्रभु !

चैतन्य प्रकाश स्वरूप उसका जब पर्यायने स्वीकार किया; जिसकी पर्याय है उसको पर्यायने स्वीकार किया (तब पर्यायमें त्मी ज्ञान और आनंद प्रगट होता है). मैं चैतन्य प्रकाश पूर्णानंदका नाथ हूँ. उसमें सर्वज्ञ शक्ति पडी है. चैतन्य प्रकाशमें सर्वज्ञ शक्ति (अर्थात्) सर्वको जाननेकी ताकत रहती है. ऐसी सर्वज्ञ शक्तिका प्रकाशका पुंज प्रभु है, आहाहा ! समझमें आया ? ज्ञान शक्ति आ गई है. (इस) ज्ञान शक्तिमें अंदर सर्वज्ञ शक्ति गर्भपणे पडी है. जैसे पेटमें गर्भ हो तो प्रसव होता है. वैसे ज्ञानमें सर्वज्ञ शक्ति गर्भपणे पडी है. उस तरफका आश्रय करते हैं तो पर्यायमें सर्वज्ञका जन्म होता है. आहाहा ! ऐसी बात है.

अंदर दर्शन शक्ति जो है, वह पहले आ गई. थोडा-थोडा कहते हैं, पूरा तो कोई कह सकता नहीं. हमारी धतनी शक्ति त्मी नहीं (है). आहाहा ! जितना दिगंबर संतों कहे (उतना नहीं कह सकते). उनकी क्षयोपशम शक्ति त्मी अलौकिक है, आहाहा ! कहते हैं कि अकेबार सुन तो सही, प्रभु ! तेरी दृशि शक्ति जो है (इस) दर्शन शक्तिमें अंदर सर्वदर्शि शक्ति गर्भमें पडी है. इस सर्वदर्शि शक्ति पर जब दृष्टि जाती है अर्थात् शक्ति और शक्तिवानका भेद त्मी छोडकर, सर्वदर्शि शक्तिवान भगवान आत्मा है ऐसा पर्यायमें जब स्वीकार होता है, तब सर्वदर्शि शक्तिमें ज्ञानकी, दृशिकी शक्तिका परिणामन होता है. भले सर्वदर्शिपना अभी आया नहीं परंतु सर्वदर्शिपना 'है', ऐसा ज्ञान हो गया. आहाहा ! समझमें आया ? सूक्ष्म बात है, भाई !

अनंतकालसे (चैतन्य) प्रकाशका नुर है, प्रभु ! इसकी कत्मी नजर की नहीं और प्रकाशकी वर्तमान पर्याय है उसमें अंधेरा (विभावभावरूप अंधेरा) है (ऐसा) दिभा. राग, पुण्य, दया, दान, व्रत और त्मक्ति सब अंधेरा है, आहाहा ! भगवान आत्मा ! यहां कहते हैं कि सर्वदर्शि शक्तिमें त्मी बलका रूप पडा है. वीर्य शक्ति त्मिन्न है परंतु सर्वदर्शि शक्तिमें त्मी

बल है. वह अपनेसे प्रगट होता है. आहाहा ! समझमें आया ?

यहां अपने वीर्य शक्ति चलती है. क्या ? “स्वरूपकी (—आत्मस्वरूपकी) रचनाकी सामर्थ्यरूप वीर्य शक्ति.” आहाहा ! संतोंने तो गजब काम किये हैं !! अमृतयंद्र आचार्य महाराज — दिगंबर संत, वीतरागी पर्यायके जूलेमें जूलनेवाले, अतीन्द्रिय आनंदके जूलेमें जूलनेवाले. आहाहा ! (उनको) यह विकल्प आया और शास्त्रकी रचना छो गई. आहाहा ! तो कहते हैं कि, अकबार तेरी बात सुन तो सही, प्रभु ! प्रभुता शक्ति बादमें आयेगी. यह तो वीर्यशक्ति चलती है. वीर्य के बाद प्रभुता आयेगी.

वीर्य (शक्ति) आत्मस्वरूपकी रचना (करे). आहाहा ! जो आत्मामें वीर्य शक्ति है (वह) सारा आत्मामें व्यापक है. (आत्मा) चैतन्य प्रकाशका पुंज है. ज्ञान सारा असंख्य प्रदेशमें व्यापक है. जैसे वीर्यशक्ति भी असंख्य प्रदेशमें व्यापक है, आहाहा ! अपने देशमें वीर्यशक्ति व्यापक है. अपना देश असंख्य प्रदेशी — अपना देश — स्वदेश (है). राग और पुण्य-पाप वह सब परदेश (है). आहाहा ! समझमें आया ? भगवान आत्माका असंख्य प्रदेशी क्षेत्र है. (ईस) क्षेत्रका स्वभाव (क्या) ? जैसे नरकका क्षेत्रका स्वभाव दुःखरूप है, स्वर्गका क्षेत्रका स्वभाव लौकिक सुखरूप है. भगवान आत्माका क्षेत्र—स्वभाव अतीन्द्रिय आनंदका स्वभाव क्षेत्र है. इस क्षेत्रमें से तो अतीन्द्रिय आनंद (रूपी) पाक होता है.

कलथी होती है न ? कलथी समझे ? लाल होती है. साधारण जमीनमें कलथी होती है. ठीकी जमीनमें यावल होते हैं. साधारण जमीनमें यावल नहीं होता. यावल है वह ठीकी जमीनमें होता है. वैसे इस भगवानका क्षेत्र असंख्य प्रदेशी (है). इसमें आनंदका क्षेत्र (है). इसमेंसे आनंद और आनंदके वीर्यकी उत्पत्ति होती है. परंतु कब (उत्पत्ति होती है) ? उसका स्वीकार होवे तब. कि, यह ‘है’ ? उसकी ज्ञानकी पर्याय प्रगटपने है. उसमें पूर्ण ज्ञान, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, सुखरूप यह पूरी चीज है, व्यापक (है), जैसे पर्याय अंतरमें जब सारे द्रव्यमें व्याप्ति है, तभी पर्यायमें आनंद और ज्ञानका पाक आता है. आहाहा ! समझमें आया ? असंख्य प्रदेशमें विकार उत्पन्न हो, ऐसा यह प्रदेश नहीं. समझमें आया ? भगवान आत्माका असंख्य प्रदेश है न ? जैसे सोनाकी येँन होती है न ? येँनमें अक हजार मकोडा—कडी होती है. सारी कडीका पिंड वह येँन है. कडी है वह प्रदेश है (और) सांकली है वह द्रव्य है. और कडीमें छतना सोनेका पीलापन, चीकनापन, वजन है वह उसके गुण—शक्ति है. समझमें आया ? यह तो दृष्टांत हुआ. वैसे भगवान आत्मा जैसे हजार कडीकी सांकली होती है, वैसे असंख्य प्रदेशका आत्मा है. इतना उसके क्षेत्रका विस्तार है.

अक पॉईन्ट—परमाणु (जितना क्षेत्र रोके उसको प्रदेश कहते हैं). यह अंगुली अक चीज नहीं है. टूकडा करते-करते... आभीरका परमाणु (अर्थात्) परम अणु, सूक्ष्म अणु रहता है, उसको परमाणु कहते हैं. वह परमाणु जितनी जगह रोके उसका नाम प्रदेश. वैसे आत्मा

असंभ्य परमाणु रोके असा असंभ्य प्रदेशी है. अक परमाणु के गजसे (मापसे) नापनेसे आत्मा असंभ्य प्रदेशी है. अंदर असंभ्य प्रदेशमें अनंत आनंद, अनंत ज्ञान और अनंत वीर्य व्यापक रूपसे पडा है. आहाहा ! समजमें आया ?

यह वीर्य शक्ति द्रव्य-गुणमें अनादिसे है. (लेकिन) अनादिसे पर्यायमें प्रगट नहीं है. क्योंकि अनादिसे पुण्य-पापके भावकी रचना करता है. दया, दान, व्रत, भक्ति, पुण्य आदिके भावकी रचना करे, वह आत्माका वीर्य नहीं, आहाहा ! समजमें आया ? आत्माका वीर्य तो इसको कहते हैं कि सारे स्वरूपमें जो अनंत गुण आदि है उसकी पर्यायमें रचना करे, उत्पन्न करे, प्रगट करे उसका नाम वीर्य है. आहाहा !

परसों थोडा कडा था कि, दया, दान, व्रत, भक्ति, पुण्य, और काम, क्रोध, मान, लोभ, राग यह शरीरकी संभाल करना, कुटुंबकी संभाल करना वह सब विकार (हैं). समजमें आया ? विकारकी रचना यह वीर्य गुणकी (रचना) नहीं, असा कहते हैं. विकार अंधा है. उसको ज्ञान देभता है परंतु ज्ञान ज्ञानको देभता नहीं. जो वीर्य स्वरूपकी रचना करे उस वीर्यको धरनेवाला जो आत्मा उसको देभता नहीं और पुण्य-पापकी रचना लुई उसको देभता है, वह मिथ्यादृष्टि – अज्ञानी है. याहे तो पंथ मडाव्रत धारण किया हो, बारह व्रत धारण किये हो, वह सब राग, द्वेष और अचेतन है. समजमें आया ? भगवान ! जिस भावसे तीर्थंकर गोत्र अंधता है ना ? वह राग (भी) अचेतन है. क्योंकि वह राग अपनेको जानता नहीं, राग चैतन्यको जानता नहीं और राग चैतन्य द्वारा जाननेमें आता है. इस कारणसे राग अचेतन है. आहाहा !

इतना तो उसको प्यालमें आना याहिये ना कि, पर्यायमें जो ज्ञानका प्रकाश है वह पर्याय किसकी है ? पूर्ण ज्ञानस्वरूप है उस पर्यायके पीछे कोई पूर्ण (स्वरूप) है कि नहीं ? पहले अनुमानसे प्यालमें आना याहिये ना ! अक पर्यायमें—अंशमें - अक समयकी मुदतमें ज्ञानकी पर्याय जो जाननेमें आती है, वह तो बढलती थीज है. उत्पाद्-व्यवहारी थीज है, तो यह थीज किसकी ? ध्रुवकी है. तो सामने ध्रुव क्या है ? जो नहीं बढलता है, वह थीज क्या है अंदर ? आहाहा ! असा प्रभुका मार्ग (है). आहाहा ! द्विगंबर संतों इतना स्पष्ट करके गये हैं ! ओहोहो ! सूर्यकी भांति प्रकाश कर दिया है. परंतु देभे उसके लिये ना ?

यहां कहते हैं कि, वीर्य किसको कहीये ? कि अपने स्वरूपकी रचना करे. स्वरूपकी अर्थात् अपना स्व जो ज्ञान, दर्शन, आनंद, शांति, स्वच्छता, प्रभुता आदि जो शक्तियां हैं, उसकी पर्यायमें (रचना करे), वह वीर्य शक्ति है. आनंद और अनंत गुणकी शुद्ध पर्यायकी रचना करे उसको वीर्य कहते हैं. अशुद्ध (पर्याय)की रचना करे वह वीर्य नपुंसक-हिजडा है.

यहां तो भगवान कहते हैं, वह बात हो गई. पुण्य-पाप अधिकारमें ४० से ४३ गाथां नपुंसक—कलीव (कडा) है. आहाहा ! राग और पुण्यके परिणामको अपना माने वह नपुंसक, मिथ्यादृष्टि है. आहाहा ! जैसे नपुंसकको वीर्य होता नहीं तो प्रजा (बालक) होती

नहीं. वैसे पुण्य परिणाम और पाप परिणाम नपुंसक है, उसमेंसे धर्म प्रजा उत्पन्न नहीं होती. आहाहा ! बात तो ऐसी है, भगवान ! क्या करें ? उसे (ऐसी) चीज सुनने न मिले वह कब विचार करे, कब रुचि करे और (कब) परिणामे ? ऐसी चीज है, भाई ! आहाहा !

अरे...! वह यौरासीके अवतारमें दुःखी है. पंचमहाव्रत पालता है वह (भी) दुःखी है. क्योंकि व्रतका विकल्प है वह राग है, आसव है और दुःख है. आहाहा ! जो भगवानके स्वभावमें द्रव्य-गुण-पर्यायमें नहीं है. उसकी तो निर्मल पर्याय हो, उसको पर्याय कहते हैं, आहाहा !

आत्म द्रव्य अनंत शक्ति(वान है). ज्ञान, दर्शन (आदि) अनंत शक्तिका असंप्रय प्रदेशमें पुंज (है). जो ज्ञानका पुंज-प्रकाशका पुंज है उस पर दृष्टि करनेसे वीर्य शक्ति भी साथमें आती. वीर्य शक्ति अनंत गुणकी निर्मल अवस्थाकी रचना करे, उसका नाम वीर्य है. समझमें आये ऐसा है, भाई ! सादी भाषा है, यह कोई कडक भाषा नहीं है, आहाहा !

अरे भगवान ! भगवान है न तुम ! यह स्त्री और पुरुष वह तो मिट्टीका-हड्डीका शरीर है. वह तो हड्डी है. वह थोड़ी ना आत्मा है ? आहाहा ! अंदर पुण्य-पापका भाव वह भी आत्मा कहां है ? वह तो अचेतन तत्त्व है, जड तत्त्व है, आहाहा ! जो प्रकाशका पुंज प्रभु (है) और वीर्य द्वारा उस प्रकाशके पुंजकी पर्यायमें रचना हो (उसे वीर्य कहते हैं). द्रव्य-गुणमें तो (शक्तियां) है ही. द्रव्य-गुणमें तो शुद्धता, परिपूर्णता, आनंद, वीर्य, ज्ञान, शांति, स्वच्छता, प्रभुता, ईश्वरता ऐसी अनंत शक्तियां है ही. परंतु उसकी पर्यायमें जब (प्रगट) हो तब उसे वीर्यकी रचना कहनेमें आती है. आहाहा ! सूक्ष्म बात है, प्रभु ! आहाहा ! अरे...! भगवान है और पामर होकर रजसता रहता है, आहाहा !

तीन लोकका नाथ चैतन्य स्वरूप ! जिसके गर्भमें सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, अनंत आनंद जिसके पेटमें पडा है. आहाहा ! उसका प्रसव नहीं करके पुण्य और पापका प्रसव करे, उसे यहां प्रभु वीर्य कहते नहीं. समझमें आया कुछ ? आहाहा !

ऐसा सुना है कोई स्त्रीके पेटमेंसे सर्प निकलता है. कोई ऐसा सर्प गर्भमें हो जाता है तो सर्पका जन्म होता है. सुना है, बहुत सुना है. ८८ वर्ष हुआ है. हम तो निवृत्तिमें थे. पांच वर्ष दुकान बलाई थी. बाकी तो सारी जिंदगी निवृत्ति है. बहुत सुना है कि, स्त्रीको पेटमें कभी ऐसा रह जाता है (तो) सर्प हो जाता है (और) पेटमेंसे सर्प निकलता है. आहाहा ! और शास्त्र तो ऐसा कहते हैं कि, किसीको १२ वर्ष तक (बालक) गर्भमें रहता है. भगवानने उसकी स्थिति गीनी है कि, बारह वर्ष तक गर्भमें रहे. वही बालक वहांसे मरकर फिर (बारह वर्ष गर्भमें रहकर) २४ वर्षमें जन्म ले. भगवान, सर्वज्ञ परमेश्वरने गर्भमें रहनेकी २४ वर्षकी कायस्थिति गीनी है. आहाहा ! ऐसा अनंतवार २४ वर्षकी स्थिति

गर्भमें (हुँई है). अकबार नहीं किन्तु अनंतबार जैसे किया है. समजमें आया ? (जव तो) अनादिकालका है. आहाहा ! यहां कहते हैं कि उसको २४ वर्षके बाद प्रसव होता है. यहां आत्माके गर्भमें तो अनंत ज्ञान और दर्शन पडा है. अनंतकालमें जब अपनी पर्याय उस पर जाती है तब आनंदका प्रसव होता है. वह २४ वर्षकी काय स्थिति, यह अनादि शांत स्थिति, आहाहा !

वीतराग सर्वज्ञ परमेश्वरकी अलौकिक बातें हैं, भगवान ! लोगोंको सत्य सुनने मिलता नहीं. क्या करें ? अरेरे...! आहाहा ! जिसमें ज्ञानका अंश नहीं, प्रकाशका जिसमें प्रकाश नहीं, उस चीजको अपनी मानना (वह) मिथ्यात्व-अंधेरा है. राग, दया, दान, व्रत, भक्तिका परिणाम भी अपना है, ऐसा मानना वह अंधकारको अपना प्रकाश माने (उसके जैसा है). आहाहा ! वस्तु ऐसी है, भगवान ! बाहरकी धूलमें क्या है ? करोडपति और अरबपति हो (वह) भरकर कहां चला जाता है ! आहाहा !

यह तो अनंत लक्ष्मीका भंडार (है). जिसके पेटमें नाम असंख्य प्रदेशमें अनंत ज्ञान, अनंत आनंद, अनंत शांति, अनंत स्वच्छता, अनंत प्रभुता, अपनी परिणतिको करे ऐसा अनंत कर्ता, अनंत कर्म (अर्थात्) अपनी पर्यायमें आनंदका कार्य करे, ऐसा अनंत कर्मरूपी (कार्यरूपी) शक्ति अंदर पडी है. आहाहा ! कर्म चार प्रकारके हैं. एक जड कर्म – यह परमाणुकी पर्याय, दूसरा भाव कर्म – पुण्य-पापका परिणाम, तीसरा निर्मल परिणति उत्पन्न होती है, वह भी कर्म (और) चौथा कर्म शक्तिरूप है वह कर्म. ऐसा मार्ग (है) बापू ! आहाहा ! क्या कहा वह ?

झिंसे कहते हैं. कर्म नाम कार्य. एक तो कर्मकी जड पर्याय होती है. उसको कर्म कहते हैं. वह जड कर्मका कार्य है. एक तो आत्मामें पुण्य और पापका भाव (होता है) वह अचेतन कार्य. वह जड कार्य – जड कर्म (है). वह जड रूपी कर्म और यह जड अरूपी कर्म. भाई ! और तीसरा कार्य-कर्म जो आत्मा शुद्ध चैतन्यधन भगवान ! उसमें वीर्य पडा है और उसमें कर्म शक्ति पडी है. कर्म शक्ति नाम कार्य होनेकी शक्ति. जब आत्मामें आनंद स्वरूपका-प्रकाशका पुंज प्रभु ! उस प्रकाशका (अर्थात्) प्रकाशकी सत्ताका स्वीकार किया, उस समय पर्यायमें जो निर्मल परिणति उत्पन्न होती है – वह कर्म. और शक्तिरूप कर्म है वह ध्रुव गुण. कर्मके चार प्रकार (हैं). आहाहा !

वकालतमें कभी ऐसी बात सुनी नहीं. अभी तो धर्मका नाम भी कहा है ? व्रत करो, अपवास करो, पडिमा ले लो, धूलमें भी उसमें (धर्म) नहीं, सुन तो सही. अरे...! भगवान ! तेरी चीज क्या है ? उसके अनुभवमें आया नहीं; उसके बिना स्थिरता कहांसे आयेगी ? श्रोता : कर दिया तो कर दिया, (अब) छोड देंगे सब.

पू. गुरुदेवश्री : किसने किया और कौन छोडे ? किया ही कहा है ? आहाहा !

यहां तो कार्य यानी कर्म. कर्म यानी कार्य. उसके चार प्रकारका वर्णन किया. एक जड़का कार्य—कर्मकी पर्याय वह जड़का (कार्य), वह रूपी कार्य. विकार कार्य — वह अरूपी विकारका कार्य है. कार्य कछो कि कर्म कछो. और निर्मल परिणतिका कार्य वह निर्मल वीतरागी कार्य. और एक गुण रूपी कर्म वह शक्ति है, उसको भी कर्म कहते हैं. ऐसी बात है. ऐसी यह थीज है. तीन लोकका नाथ अंदर पडा है, आडाडा ! जिसके गर्भमें केवलज्ञान, केवलदर्शन, आनंद प्रगट हो (ऐसी शक्तियां हैं).

अभी एक लेख आया है. अरेरेरे...! जैसे लेख लिखते हैं कि, सर्वज्ञ तो एक वर्तमान दशाको ही देखे. भूत-भविष्यको नहीं (देखे). अररर...! गजब करे छे ! क्या करता है प्रभु !? आज लेख आया है कि, 'श्रीमद् भी कहते हैं कि वर्तमान पर्याय वर्तती है उसको जाने'. परंतु वह तो वर्तती है उसको जाने, ऐसा कहा है. परंतु भूत-भविष्यको नहीं जानते, ऐसा उसमें कहा ही नहीं है. वर्ततीरूप एक समय है. भूत-भविष्यकी (पर्याय) वर्तमान वर्तती नहीं. परंतु उस समय वर्तगी और वर्तती होगी. उसको भगवान एक समयमें प्रत्यक्ष जानते हैं, आडाडा ! अरे..! सर्वज्ञको भी दूसरी रीतसे माने उसको आत्माकी प्रतीति कब हो ? आडाडा !

आत्मामें सर्वज्ञ शक्ति पडी है और उसके साथ शक्तिमें बल भी है. वीर्य शक्ति भिन्न है. ऐसा आत्मा अपनी पर्यायमें — ज्ञानकी वर्तमान दशामें द्रव्यको ज्ञेय बनाकर द्रव्यका ज्ञान करती है. अपनी ज्ञानकी वर्तमान दशामें द्रव्यको ज्ञेय बनाकर पर्यायमें द्रव्यका ज्ञान करते हैं, तो उस पर्यायमें द्रव्य आता नहीं परंतु द्रव्यका सामर्थ्य—शक्ति पर्यायमें—ज्ञानमें आ जाता है. समझमें आया ? ऐसी बाते हैं. द्रव्य तो द्रव्य है. द्रव्यका पूर्ण ज्ञान आया. जैसे पूर्ण स्वरूप है ऐसी पूर्ण प्रतीति पर्यायमें आई. पूर्ण ज्ञान आया. वह थीज (पर्यायमें) आई नहीं, वह थीज तो थीजमें रही. आडाडा ! अभी उसको सर्वज्ञ शक्ति है, उसकी प्रतीति नहीं और (माने ऐसे कि) सर्वज्ञ यानी वह की जो (मात्र) वर्तमानको देखे.

तीस वर्ष पहले तीसरी सालमें उउ पंडित आये थे. उसमें एक पंडित थे. ललितपुरमें मेरे साथ बहुत चर्चा हुई थी. वहां वे ऐसा कहते थे 'एक समयमें तीनकाल तीनलोक देखे तो सर्वज्ञ नहि. (किन्तु) वर्तमानमें सबसे ओंथी शक्तिका विकास वह सर्वज्ञ.' अरे भगवान ! द्विगंबर जैनमें जन्म हुआ (और ऐसी विपरीत मान्यता !). आडाडा ! अरे..! भगवान बापू ! तुम यैतन्यके प्रकाशका पूर्ण पुर है.

शरीर भिन्न है, राग भिन्न है और छतने आकारके प्रमाणमें यैतन्य प्रकाशका पुंज, ज्ञान परिपूर्ण पुंज है. परिपूर्ण वस्तु है. अंदर उपयोगमें स्वपर प्रकाशक शक्ति त्वरी पडी है. आडाडा ! (यह) निश्चय उपयोग (की बात है). पर्याय उपयोग वह दूसरी बात है. उपयोगके दो प्रकार है. एक अंदर ध्रुवरूप उपयोग (और) एक परिणतिरूप उपयोग. ऐसी

भात है.

यहां कलते हैं कि, स्वरूपकी रचना (करे वल वीर्य). आलाला ! गजल शल्ल रला है ना !! अलृतयंद्र आचार्यने तो कल कलया है !! अलनल स्वरूप ज्ञान, आनंद, शांति (ऐसी— ऐसी) अनंत शक्तिका स्वरूप (है). स्व + रूप लला सादी है, लार्थ ! आलाला ! “आल्लस्वरूपकी...” (ऐसी) लला है ना ? देओ ! स्वरूप यानी आल्लाके स्वरूपकी रचना. आलाला ! ललगवान आल्लामें तो भेदद अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत आनंद, अनंत स्वच्छता, अनंत प्रल्लुता ऐसी अनंत शक्तियोंका संग्रलालय, अनंत शक्तियोंका गोदलम, गुणका गोदलम यल आल्ला है. आलाला ! अंदरमें (ऐसे स्वरूप पर) दृषुटि करनेसे वीर्य शक्तिके कारण अनंत गुणकी निर्लल पर्यायकी रचना लोती है. उसे आल्ल स्वरूपकी रचना कलनेमें आती है. ऐसी भात है. लार्थ ! प्रल्लुका मार्ग तो ऐसा है. परंतु लोगोंको अल्ल्यास नहीं और लिलती है आदरकी दूसरी लीज. ये करो, ये करो, व्रत करो, अलवास करो, तपस्या करो...जओ.. (लो जयेगा धरुम). आलाला ! वल सल तो विकल्पकी कलया, क्लेशकी कलया है. वल दुःखकी कलया है, आलाला !

वल तो छ दलणामें कल नहीं ? ‘लुनलव्रत धार अनंत भैर, त्रैवेयक उपजओ, पण आतलमज्ञान ललन लेश सुख न पायो.’ तो उसका अर्थ कया लुआ ? पंय लललव्रत, आरल व्रत वल सल शुल्लललव दुःखरूप है. आलाला ! दुःखकी रचना करे वल वीर्य नहीं, ऐसा कलते हैं. सलजमें आया ? वल आल्ललल नहीं, आलाला !

आल्लवीर्य तो वल है कि, अलनल त्रलकाली अनंत गुणका पलंड प्रल्लु ! उस पर लक्ष जलता है तो वीर्यमें—वर्तलनल परलललतिमें अनंत गुणकी शुद्ध पर्याय प्रगत करे—रचना करे, उसका नलम वीर्य कलते हैं. ऐसी भात है, ललगवान ! आलाला ! और स्वरूपकी रचना करे वल वीर्य अर्थात् उस सलयमें वीर्यने अलने अनंत गुणकी परलललतिमें रचना की. द्रव्य-गुणमें तो रचना करनी है नहीं. वल तो (अनलदलसे) है ली. द्रव्य-गुण तो ध्रुव है. उसकी तो कया रचना करनी है ? रचना तो नहीं लो तो (उसकी रचना) करनेका (आता) है. पर्यायमें जो आनंद आदल नहीं है (उसकी रचना करनी लोती है). आलाला ! ऐसा उपदेश तो किस प्रकारका है ? जैन धरुमका ऐसा उपदेश ?

८८ की सालमें ओक साधु ललला था. (उसे ऐसा लगा) कि, जैनके साधु आल्लाकी ऐसी भात करे वल कलसे आया ? क्यौंकि जैनकी छाप ऐसी है कि, वल तो कलया करे. दया, व्रत और तप करे, उसका नलम जैन. राजकोटकी भात है. वल राजकोट आया था. आज ली आया था कि, अललदललदलमें कोर्ष वेदलंतके साधु है. यलंका लल्लुत सुना है ना ? कि, यलं आल्लाकी अध्याल्लकी भात है. उसकी ओर से दो पुस्तक आये हैं. यलंकी प्रसलदुध आल्लाकी है न ? (आदरमें) जैन धरुमकी तो किस प्रकारसे प्रसलदुध है ? कि कलया (करो), यल व्रत

करना, योवीयार करना, कंदमूल नहीं खाना, झलाना करना, दया पालना वह सब जैन धर्म, बाहरमें ऐसी छाप है. रागकी रचनाको लोगोंने जैन धर्म मान लिया है. इसलिये आत्माकी बात सुनकर अन्यमतीको भी ऐसा हो जाता है कि, जैनमें ऐसा कहांसे आया ? आज दो पुस्तक आये हैं. देखे, लेकिन कोई ठिकाना नहीं है. (ऐसा लिखा है कि) ईश्वर ભક્તિ करो, आत्म चिंतवन करो. परंतु कौनसा ईश्वर ?

काशीसे किताब आई है उसमें सर्वज्ञका निषेध किया है कि, सर्वज्ञ एक समयकी पर्यायको जाने. (और उसमें) श्रीमद्का आधार दिया है कि, वह तो वर्तमान वर्तती (पर्याय)को जाने, ऐसा (श्रीमद्जने) कहा है. एक समय (की वर्तमान) वर्तती (पर्याय)को जाने. पूर्वकी (और) भविष्यकी (पर्याय) वर्तमानमें वर्तती है, ऐसा (जाने) नहीं. किन्तु उसने ऐसा निकाला कि, वर्तमान वर्तती है उसे जाने और भूत-भविष्यको नहीं जाने. आहाहा ! क्या करते हो ? और वैसे पंडित नाम धराते हैं. श्रीमद्में ऐसा आया है – सर्वज्ञ भी अनंत द्रव्यकी वर्तमान वर्तती एक समयकी अवस्थाको जाने. भूत-भविष्यकी (वर्तमानमें) वर्तती नहीं. (उसे) जाने नहीं, ऐसा नहीं (कहा है). समझमें आया ? ऐसा दृष्टांत दिया है. जैनके नामसे यह क्या करते हैं ? जैनके नामसे ऐसी विपरीत (मान्यता रखते हैं.) परमेश्वर, त्रिलोकनाथ सर्वज्ञ आहाहा ! उन्होंने कहा हुआ मार्ग अवैकिक है, भाई ! सर्वज्ञ शक्ति है उसके साथ अंदरमें बल भी है. वीर्य शक्ति त्रिभु है और अंदर सर्वज्ञ शक्तिमें भी बल है, तो वह अपने बलसे सर्वज्ञ (पर्याय) प्रगट होती है. शक्तिमें है – गर्भमें है तो प्रसव होता है. प्रसव (माने) उत्पत्ति.

श्रोता : (अंदरमें) ना हो तो कहांसे आवे ?

पू. गुरुदेवश्री : कहांसे आये ? प्राप्तकी प्राप्ति है कि अप्राप्तकी प्राप्ति है ? है उसमेंसे आता है. आहाहा ! सागर भरा है, प्रभु ! तुझे जबर नहीं, आहाहा ! अनंत ज्ञान, अनंत आनंद, अनंत वीर्य, अनंत स्वच्छता ऐसी अनंत शक्तियोंका सागर है, प्रभु ! शरीर प्रमाणासे भले ही क्षेत्र छोटा हो परंतु उसके भावमें तो दरिया पडा है.

यहां क्या कहा ? स्वरूपकी रचना करे (उसे वीर्य कहते हैं). अब दूसरी एक बात कि, जब वीर्यका कार्य यह है कि अनंत गुणकी निर्मल परिष्कृति प्रगट करे. तब उसमें व्यवहारका तो अभाव आया. व्यवहारकी रचना करे, ऐसा नहीं आया. व्यवहार है उसको जानते हैं. वीर्यने जहां शुद्ध परिष्कृति प्रगट की तो (साथमें) ज्ञानकी शुद्ध पर्याय प्रगट की, श्रद्धाकी (पर्याय) प्रगट की, दर्शनकी पर्याय प्रगट की. राग है उसको जाने. परंतु रागको जानता है वह कहना भी व्यवहार है. परंतु उस समयमें स्व और पर प्रकाशक ज्ञानकी पर्याय राग है तो जानती है, ऐसा भी नहीं. अपनी स्व-परको (जाननेवाली) पर्याय ही इतनी ताकतवाली है कि (वह) अपनेसे ही प्रगट होती है. आहाहा ! समझमें आया ? उसमें रागका तो अभाव है.

लोग ऐसा कहते हैं न कि व्यवहार करते-करते निश्चय होगा. शुभ जोग करो बादमें शुद्ध होगा. वह तदन मिथ्यादृष्टि-मूढ है. उसको आत्माकी श्रद्धा नहीं. आत्माके गुणकी श्रद्धा नहीं. उसकी परिणति कैसी हो ? उसकी भबर नहीं. आहाहा ! ऐसी बातें हैं. बापू ! वीतराग मार्ग (कोई अलौकिक है). आहाहा ! इस त्तरत(क्षेत्रमें) सर्वज्ञ परमेश्वर त्रिलोकनाथकी भौजूदगी नहीं है. महाविदेहमें तो भगवान बिराजते हैं. साक्षात् परमात्मा बिराजते हैं. करोड पूर्वका आयुष्य है. ओक पूर्वमें ७० लाख करोड पद्द हजार करोड वर्ष जाय, ऐसा करोड पूर्वका भगवानका आयुष्य है.

यह भगवानके मुभमेंसे निकली हुई वाणी कुंदकुंद आचार्य वहांसे लाये. समजमें आया ? दिगंबर संत, नग्न मुनि, मोरपींछी, कभंडल (जिनके पास होता है). वे भगवानके पास गये थे. आठ दिन रहे थे. वहांसे सुनकर आये बादमें समयसार पदवी गाथामें कदा 'केवली-श्रुतकेवलीने जो कदा है वह मैं कहूंगा',

वंदितु सव्वसिद्धे धुवमचलमणोवमं गइं पत्ते।

वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुदकेवलीभणिदं।।१।।

कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि, श्रुतकेवलीने जो कदा (वह मैं कहूंगा). (परंतु) अभृतयंद्र आचार्यने दो अर्थ किये हैं. श्रुतकेवली और केवली (ऐसे) दो अर्थ किये हैं. केवलीने कदा है वह हम कहेंगे, ऐसा कहते हैं. और नियमसारकी गाथामें तो स्पष्ट शब्द लिखा है. समजमें आया ? इसमें तो श्रुतकेवली (लिखा) है.

कुंदकुंद आचार्य भगवंत (नियमसार-गाथा-१में) कहते हैं,

“णमिरुण जिणं वीरं अणंतवरणाणदंसणसहावं।

वोच्छामि णियमसारं केवलिसुदकेवलीभणिदं।।१।।

केवली और श्रुतकेवलीने कही हुई बात मैं कहूंगा. समयसार गाथामें (भी) ऐसा है. परंतु कुछ लोग अर्थ करनेवाले गलत अर्थ करते हैं. वह तो श्रुतकेवलीने कदा हुआ—ऐसे शब्द है (ऐसा कुछ लोग कहते हैं). परंतु अभृतयंद्र आचार्यने 'सुदकेवली' के दो अर्थ निकाले हैं. ओक श्रुतकेवली और केवली. और यहां (नियमसारमें) 'केवलिसुदकेवलीभणिदं' (ऐसा कदा). आहाहा ! समजमें आया ? मैं नियमसार कहूंगा परंतु यह नियमसार कैसा है ? कि केवली परमात्माने साक्षात् कदा और श्रुतकेवलीके पास यर्था की, छन्दोंने (जो) कदा वह मैं कहूंगा. दो बात हुई. वहां महाविदेहमें केवलीके पास सुना और श्रुतकेवलीके पास सुना. समजमें आया ? बात तो बहुत गंभीर है, भगवान !

श्रोता : कुंदकुंद आचार्यकी गाथा है.

पू. गुरुदेवश्री : यह किसकी गाथा है ? कदा है न ? उसमेंसे तो निकाला, भगवान ! 'केवलिसुदकेवलीभणिदं' — सर्वज्ञ परमेश्वरने कदा हुआ मैं कहूंगा, आहाहा ! वह तो मुनिओं

સ્વયં કહે તો ભી સત્ય છે. પરંતુ આધાર દેકર કહતે હૈં કિ, ભગવાનને (જો કહા વહ મૈં કહુંગા). કોઈ કહતે હૈં કિ, મહાવિદેહમેં ભગવાનકે પાસ ગયે થે કિ નહીં (ગયે થે), ઉસ બાતકી શ્રદ્ધા નહીં, એસા કહતે હૈં. કિસીકો શંકા હૈ કિ, મહાવિદેહમેં ગયે વહ કોઈ શાસ્ત્રમેં નહીં હૈ. અરે..! પાઠમેં લેખ મિલતે હૈં. પંચાસ્તિકાયકી ટીકામેં લેખ હૈ ઓર દર્શનસારમેં લેખ હૈ. દર્શનસાર દેવસેન આચાર્યકા લિખા હૈ. અરે..! ભગવાન કુંદકુંદ આચાર્ય મહાવિદેહમેં ન ગયે હોતે તો હમ મુનિઓં એસા ધર્મ કેસે પ્રાપ્ત કરતે ? એસા પાઠ હૈ. અપને સમયસારમેં ડાલા હૈ. આહાહા ! અભી ભી શંકા કરતે હૈં. અભી આયા થા (ઉસમેં) લિખા હૈ – કુંદકુંદ આચાર્ય વહાં ગયે હૈં વહ કૌન કહતા હૈ ? કૌન માને ? અરે..! ભગવાન ! આહાહા ! બસ ! યહાં જો કહતે હૈં ઉસકા વિરોધ કરના હૈ.

યહાં નામ આયા વહ ક્યા હૈ ? ‘કેવલિસુદકેવલીભણિદં’ કુંદકુંદ આચાર્ય યહાં થે તો (ઉસ સમય યહાં) કેવલી તો નહીં થે. કેવલીને કહા વહ કહુંગા, એસા કહતે હૈં ઓર શ્રુતકેવલીને કહા હૈ વહ મૈં કહુંગા. સમજમેં આયા ? બહુત અધિકાર હૈ. પંચાસ્તિકાયમેં જયસેન આચાર્યકી ટીકા હૈ. મહાવિદેહમેં ગયે થે બાદમેં આકરકે શિવકુમારકે લિયે શાસ્ત્ર બનાયા ઓર દર્શનપાહુડમેં હૈ, સમયસારમેં હૈ. દેખો !

‘જઙ્ પત્તમણ્ડિનાહો સીમંધરસામિદિવ્વણાણેણ ।

જ વિવોહજ્ તો સમણા કહં સુમગ્ગં પયાણંતિ ॥ (દર્શનસાર).

દેવસેન આચાર્ય દિગંબર મુનિ થે. વે કહતે હૈં, અહો ! “(મહાવિદેહક્ષેત્રકે વર્તમાન તીર્થકરદેવ) શ્રીસીમંધરસ્વામીસે પ્રાપ્ત હુએ દિવ્યજ્ઞાન દ્વારા શ્રી પદ્મનંદિનાથને (શ્રી કુંદકુંદ આચાર્યદેવને) બોધ ન દિયા હોતા તો મુનિજન સચ્ચે માર્ગકો કેસે જાનતે ?” દેખો ! મુનિ કહતે હૈં. સાક્ષાત ભગવાનકે પાસ ગયે ઓર યહ લાયે. વે ન લાયે હોતે તો હમ સચ્ચા ધર્મ કેસે પ્રાપ્ત કરતે ? સમજમેં આયા ? ઇસમેં કોઈ દૂસરે મુનિકા અનાદર હોતા હૈ ?

યહાં તો કહતે હૈં, અપની જો વીર્યશક્તિ હૈ, બલ (શક્તિ જો હૈ) વહ અપને સ્વરૂપકી રચના કરતી હૈ. શ્રદ્ધા, જ્ઞાન, શાંતિ, વીતરાગતા (આદિકી રચના કરતી હૈ). ઉસ સમય જો ક્રમવર્તી પર્યાય હૈ વહ નિર્મલ હૈ. ક્રમવર્તી પર્યાય નિર્મલ હૈ. અક્રમવર્તી વહ ગુણ હૈ. ક્રમવર્તી પર્યાય ઓર અક્રમવર્તી ગુણકા સમુદાય યહ આત્મા હૈ. ઉસમેં રાગકી પર્યાયકા સમુદાય આત્મા હૈ, એસા નહીં કહા હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? યહ પહલે આ ગયા હૈ. પહલે કહા થા. ક્રમરૂપ ઓર અક્રમરૂપ અનંત ધર્મ સમુહ જો કુછ જિતના લક્ષિત હોતા હૈ વહ સબ વાસ્તવમેં એક આત્મા હૈ.

ક્રમે-ક્રમે જો નિર્મલ પર્યાય પ્રગટ હોતી હૈ (ઓર અક્રમરૂપ જો ગુણ હૈ, ઉસકા સમુદાય વહ આત્મા હૈ). રાગકી બાત તો યહાં હૈ હી નહીં. ક્યોંકિ રાગકા સમુદાય વહ આત્મા હૈ નહીં, આહાહા ! રાગ તો વિકાર જડ, અચેતન અજીવમેં ડાલા હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ?

यहां तो भगवान आत्मामें अनंत गुण निर्मल, शुद्ध है. द्रव्य शुद्ध है और अनंत शक्ति संप्रियासे शुद्ध है और उनकी जो परिष्कृति होती है, वह भी शुद्ध है. परिष्कृति-पर्याय होती है वह कमबद्ध-कमसर होती है. तो कमवर्ती कडा. कमवर्ती (अर्थात्) कमसे वर्तनेवाली और गुण अके साथ रहनेवाले हैं. इसलिये अकमवर्ती – अकमसे (अके साथ) रहनेवाले (कडा). निर्मल पर्यायका कम और अकम गुण उसका समुदाय वह आत्मा है. उसमें राग या व्यवहार आया नहीं. समझमें आया ? ऐसी बात है, भाई ! आहाहा !

कुंदकुंद आचार्य पोकार करते हैं. आहाहा ! टीका अमृतयंद्र आचार्यने की है. कुंदकुंद आचार्यकी गाथाके भाव थे, उसका स्पष्टीकरण किया है. जैसे गाय और भैंसके आवमें दूध है तो भाई (उसमेंसे) नियोडके (दूध) निकालती है. समझमें आया ? वैसे पाठमें भाव भरे हैं, उसकी अमृतयंद्र आचार्यने टीका करके स्पष्टीकरण किया है.

जब गाय-भैंसको दूधते है (वह) जैसे-जैसे नहीं दूधते है. (हमने) प्रत्यक्ष देखा है. हमारी बहने थी उसके वहां भैंस थी. यह तो छोटी उम्रकी बात है. पलकी साल (की बात है). बहने दूधती थी परंतु जैसे नहीं, जैसे (दूध) तो घाव पड जाये और आवमें भी घाव हो जाये. कोई भी बात नकी तो कि है ना ? जैसे ही नहीं कहते हैं. वैसे शास्त्रके पाठमें भाव भरा है, आवमें भाव भरा है (उसको) अमृतयंद्र आचार्य टीका करके बाहर निकालते हैं, आहाहा !

वीर्य गुणमें अके अकारणकार्य नामकी शक्ति है (उसका रूप है). क्या कडा ? जैसे आत्मामें ज्ञान, दर्शन, आनंद आदि शक्तियां है वैसे अके अकारणकार्य नामकी शक्ति है. उसका कार्य क्या ? कि वीर्य जो है (वह) अपने (स्वरूपकी) रचना करता है. उस कार्यकी रचनामें राग कारण है और स्वरूपकी रचना कार्य है, ऐसा है नहीं. अकारणकार्य शक्ति अभी आयेगी. जो वीर्य स्वरूपकी रचना करता है उसके कार्यमें व्यवहार रत्नत्रयका राग जो है वह कारण है और स्वरूपकी रचना कार्य है, ऐसा है नहीं. अके बात. दूसरी बात – स्वरूपकी रचना करता है वह कारण है (और) राग उसका कार्य है, (ऐसा भी नहीं है). भाई ! आहाहा ! वर्तमानमें गडबड जैसे करते हैं. 'व्यवहारसे निश्चय होता है' अरे प्रभु ! सुन तो सही नाथ ! राग तो पामर है उससे प्रभुता प्रगट होती है ? आहाहा ! आत्मस्वरूपकी रचना (करे वह वीर्य). आहाहा ! गजब बात की है !

पहलेके शराफ़ होते थे. वे सख्या रूपया आवे तो ले ले. जूठा रूपया आवे तो वापिस नहीं देते थे. भोटा रूपया शाहुकारकी दुकान पर आवे तो वापिस नहीं देवे. और पैसेमें गीनती भी नहीं करे. सौ रूपयेमें अके (भोटा रूपया) आया हो तो ८८ गिने और वह रूपया वापिस नहीं देवे. अपनी दहलीजमें (उंबरो) गाड दे. सामनेवालेसे ना नहीं हो सकती. शाहुकारकी दुकान पर जूठा रूपया आवे तो यलाने नहीं देते. वैसे यह तो भगवानकी दुकान

હૈ. જૂઠા ચલને ન દે. જૂઠા હો તો વહીં કા વહીં ગાડ દે. વ્યવહારસે નિશ્ચય હોતા હૈ – (યહ) તેરા જૂઠા રૂપયા હૈ. પહલે ઐસા થા. આહાહા ! અભી તો જૂઠા હો તો વાપિસ લે લેતે હૈં. પહલે તો શાહુકારકે પાસ જૂઠા રૂપયા આવે તો ચલને નહીં દે. ગાડ દેગા. બેંકમેં જાવે તો ગિને નહીં, આહાહા !

યહાં પરમાત્મા, સંતોં ઐસા કહતે હૈં – પરમાત્મા કી બાતે હી સંતોં આડતીયા હોકર કહતે હૈં. સમજમેં આયા ? ભગવાન ! તેરેમેં એક વીર્ય નામકા ગુણ હૈ ન પ્રભુ ! તો ઇસ વીર્યકા રૂપ તો અનંત ગુણમેં હૈ. વીર્ય જૈસે અનંત ગુણકી પરિણતિ પ્રગટ કરતા હૈ, ઉસમેં વહ રાગાદિકી રચના પ્રગટ નહીં કરતા હૈ. રાગાદિકા તો ઉસમેં અભાવ હૈ. આહાહા ! (નિર્મલ પરિણતિ પ્રગટ હુઈ) વહ રાગકા કાર્ય ભી નહીં. સ્વરૂપકી રચના જો નિર્મલ સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાનકી હુઈ વહ રાગકા કાર્ય નહીં ઔર રાગકા (કાર્ય) સ્વરૂપ રચનેકી પરિણતિ કારણ ભી નહીં. આહાહા ! અરે..! શાંતિસે સુને તો માલૂમ પડે કિ યહ ક્યા હૈ ? સુનને મિલે નહીં. ભગવાન ત્રિલોકીનાથકી વાણીકો સંતોને અંતરમેં ઉતારી ઔર જગતકે પાસ જાહિર કરતે હૈં, પ્રભુ !

(સ્વરૂપમેં) જિતની શુદ્ધ ચૈતન્યકી શક્તિયાં હૈં, (જો) સબ ગુણ રૂપ થી, વહ જબ દૃષ્ટિ અંદર સ્વીકાર કરનેમેં ગઈ તો પર્યાયમેં અનંત નિર્મલ પર્યાયકા કાર્ય હોતા હૈ. નિર્મલ પર્યાય કહો યા મોક્ષકા માર્ગ કહો (દોનોં એક હી બાત હૈ). આહાહા ! મોક્ષમાર્ગકી પર્યાયકી રચના વીર્ય ગુણ કરતા હૈ ઔર ઉસ કાલમેં જો વ્યવહાર-રાગ હૈ ઉસકા અભાવ હૈ. મોક્ષમાર્ગકી રચના વહ રાગકા કાર્ય નહીં. વૈસે હી મોક્ષમાર્ગકી રચના વહ કારણ ઔર રાગ કાર્ય હૈ, ઐસા (ભી) નહીં. એક ઘંટા ચલા. વિશેષ કહૈંગે....



પર્યાયમાં દ્રવ્યનું જ્ઞાન આવે છે પણ દ્રવ્ય આવતું નથી. અને દ્રવ્યમાં પર્યાય આવતી નથી. અને તે જ્ઞાન પણ દ્રવ્ય છે તો થાય છે એમ નથી. પર્યાય પોતાના સ્વરૂપમાં રહીને દ્રવ્યનું જ્ઞાન કરે છે. (પરમાગમસાર-૬૧૪)

प्रवचन नं. ८

शक्ति-६, ७ - ता. १८-०८-१९७७

स्वरूपनिर्वर्तनसामर्थ्यरूपा वीर्यशक्तिः ॥६॥
अखण्डितप्रतापस्वातन्त्र्यशालित्वलक्षणा प्रभुत्वशक्तिः ॥७॥

समयसार शक्तिका अधिकार यलता है. वीर्य शक्तिका अधिकार यला. वीर्य शक्तिका अद्भुत वर्णन आया. सिद्धिविलासमें अद्भुत वर्णन आया है. द्रव्यवीर्य, क्षेत्रवीर्य, कालवीर्य, भाववीर्य, द्रव्यवीर्य, गुणवीर्य, पर्यायवीर्य (अैसे) अद्भुत विस्तार किया है. यह तो भंडार है. सिद्धिविलास है उसमें वीर्य शक्ति (का अद्भुत वर्णन आया है). कल अेक घंटा यल तो गई. पार नहीं घतनी शक्तियां हैं.

वीर्य शक्ति है यह द्रव्यमें वीर्यपना है. द्रव्य द्रव्यसे शक्तिवान है, गुण गुणसे शक्तिवान है (और) पर्याय पर्यायसे शक्तिवान है.

जव द्रव्यका जो असंख्य प्रदेशी क्षेत्र है वड क्षेत्र वीर्य है. क्षेत्र, क्षेत्रसे अपनेसे रडा है (अन्य के कारणसे नहीं रडा है). आडाडा ! जैसे नरकका और स्वर्गका क्षेत्र (है उसमें) नरकका (क्षेत्र) दुःखका क्षेत्र है परंतु (वड) संयोगसे कथन है. स्वर्गमें लौकिक सुख इसका क्षेत्र है. यह संयोगसे कथन है (बटिक वहां भी) है तो दुःख. भगवान आत्मा असंख्य प्रदेशी जो देश है वड उसका प्रदेश क्षेत्र है. वड प्रदेश क्षेत्र उसका वीर्य है. असंख्य प्रदेशमें वीर्य शक्ति है. उसके कारणसे उस असंख्य प्रदेशमें अपनेसे आनंद आता है. समझमें आया ? जैसे मकानमें वास्तु लेते हैं न ? र-प लाजका मकान बनाया डो तो (गृह) प्रवेशका वास्तु लेते हैं. अैसे भगवान आत्मा ! असंख्य प्रदेशमें निवास करता है, यह इसका वास्तु है. समझमें आया ? आडाडा !

असंख्य प्रदेशमें अनंत क्षेत्रवीर्य है. नरकका, स्वर्गका क्षेत्रवीर्य (है). (नरकका क्षेत्र) दुःखका निमित्त (है). (यड) संयोगसे कथन है. यहां तो अंतरमें असंख्य प्रदेशी वीर्य वड सुखका स्वरूप है. असंख्य प्रदेशमें वीर्यसे आनंदका पाक (इसल) डोता है. सूक्ष्म बात है, भाई ! समझमें आया ? अपने असंख्य प्रदेशमें वीर्य शक्तिसे असंख्य प्रदेश अपनेसे अपनी ताकतसे रडा है. इसमें जिसका निवास है. आडाडा ! अपने स्वदेशमें जिसका निवास है, उसको अतीन्द्रिय

आनंदका अनुभव होता है. राग और पुण्य-पापमें जिसका निवास है, उसको दुःखका वेदन है. समझमें आया ? भाई ! बहुत सूक्ष्म मार्ग है, भाई ! प्रभु जुद सूक्ष्म है ना ? नाम कर्मके अभावसे सूक्ष्म (गुण प्रगट होता है). (औसा) आता है न ? सूक्ष्म गुण है तो प्रत्येक गुण (सूक्ष्म है). ज्ञान सूक्ष्म, दर्शन सूक्ष्म, आनंद सूक्ष्म, वीर्य सूक्ष्म, आडाडा !

जैसे वीर्य है वह द्रव्यका वीर्य (अर्थात्) द्रव्य-वस्तु जो है उसकी शक्ति. क्षेत्रका वीर्य (अर्थात्) असंख्य प्रदेशका वीर्य. कालका वीर्य (अर्थात्) अेक समयकी पर्यायका वीर्य और क्षेत्रमें अनंत भाव रहा वह भाव वीर्य. औसा मार्ग है. अरे..! सुननेको भिदे नहीं. उसके घरकी (भबर नहीं). उसे घरमें कैसे बसना ? उसकी भबर नहीं.

यिद्विवासमें वीर्यमें बहुत विस्तार दिया है. बहुत (वर्णन) किया है. द्रव्यवीर्य, क्षेत्रवीर्य, भाववीर्य, गुणवीर्य, द्रव्यवीर्य, पर्यायवीर्य (औसे) बहुत दिया (है). अपार वस्तु है. द्विपयंदण, साधर्मी हुआ है न ? जिसने अनुभव प्रकाश किया है. यिद्विवास किया है, उसमें शक्तिका वर्णन उन्हींने किया है. औसा दूसरेमें विशेष बहुत नहीं है. समयसार नाटकमें साधारण रूपमें (शक्तिका) नाम है. परंतु उसने शक्तिका जो विस्तार किया है, बहुत (किया है). द्विपयंदण गृहस्थ साधर्मी थे. गृहस्थ थे – वह बात आई थी. गृहस्थ तो वास्तवमें उसको कहते हैं – गृह नाम अपने घरमें स्थ. उसका नाम गृहस्थ कहीये. उसे गृहस्थ कहीये. तुम्हारे पैसेवालेको गृहस्थ कहते हैं, औसा गृहस्थ (यहां) नहीं है, आडाडा ! गृहस्थ – गृह नाम अपने घरमें स्थ (नाम) रहनेवाला. वीर्य भी अपने घरमें रहनेवाला वीर्य है. यह वीर्य पुण्य-पापमें नहीं जाता, औसा कहते हैं. आडाडा ! समझमें आया ?

यह वीर्य जो है वह अपने द्रव्य, गुण पर्यायमें और अपने क्षेत्रमें काम करता है. थोडा सूक्ष्म है. निर्मल पर्याय है. निश्चयसे तो निर्मल पर्याय, जो मोक्षमार्गकी पर्याय द्रव्यके आलंबनसे (प्रगट होती है उसका क्षेत्र भिन्न है). सूक्ष्म है, भगवान ! मार्ग औसा है. आडाडा ! इस समय तो सब लोप हो गया है. सत्यार्थ भगवानको पकड करके जो अनुभव हुआ, यह अनुभवकी जो पर्याय है उस पर्यायका क्षेत्र और द्रव्य, गुणका क्षेत्र वह दोनों भिन्न है. अरे.. औसी बात (है) ! समझमें आया ? त्देविज्ञानकी बात बहुत सूक्ष्म है, भाई !

पर्यायका क्षेत्र (भिन्न है). संवर अधिकारमें आया है. विकार वस्तु भिन्न है (और) उसका क्षेत्र भी भिन्न है. आडाडा ! औसी भगवानकी बात ! सर्वज्ञ परमेश्वर ! उनके संतो, द्विगंबर मुनिओ आउतीया होकर सर्वज्ञका माल देते हैं. समझमें आया ? कहते हैं कि, अपनी वस्तु, सत्यार्थ, भूतार्थ, ज्ञायक स्वभाव जो है, उसके आश्रयसे – उसमें स्थित रहनेसे आनंदके अनुभवकी, अनंत गुणकी पर्याय अेक समयमें उछलती है. वह आया न ? अेक समयमें अनंत गुणकी पर्याय उछलती है नाम उत्पन्न होती है. वह पर्याय उत्पन्न होती है उसका क्षेत्र और द्रव्य, गुणका क्षेत्र दोनों भिन्न गिननेमें आया है. आडाडा ! पर्यायका क्षेत्र पर्याय है, पर्यायकी

शक्ति पर्याय है, पर्याय पर्यायके कारणसे है — द्रव्य, गुणसे भी नहीं. भेदज्ञान सूक्ष्म (है), बापू ! सर्वज्ञ परमेश्वरके अलावा यह बात किसीने देभी नहीं और कल्पित बातें सब बनाई. आडाडा ! यह तो सर्वज्ञ परमेश्वरने, वीतराग देवने जो आत्मा देभा (वह कहते हैं).

अकबार कहा था न ? 'प्रभु तुम जाणग रीति, सौ जग देभता हो लाल' 'प्रभु तुम जाणग रीति' केवलज्ञानीको कहते हैं, 'प्रभु तुम जाणग रीति, सौ जग देभता हो लाल, निज सत्ताअे शुद्ध सौने पेभता हो लाल' हे नाथ ! हे सर्वज्ञदेव ! हे परमेश्वर, परमात्मा ! आप तीनकाल तीनलोकको देभते हो, तो हमारी निज सत्ता शुद्ध पवित्र है, असा आप देभते हैं. विकार अपनी सत्ता नहीं, आडाडा ! मार्ग बहुत सूक्ष्म (है), भगवान ! आडाडा ! 'निज सत्ताअे शुद्ध सौने पेभता-देभता' हमारी निज सत्ता शुद्ध चैतन्यधन है, जो पुण्य-पापके तत्त्वसे भिन्न है. उसको आप देभते हैं. जैसे भगवान निज सत्ता शुद्ध देभते हैं वैसे छद्मस्थ प्राणी भी अपनी पर्यायमें द्रव्य, गुण शुद्ध (है असा) अगर देभें, (तो) उसको सम्यग्दर्शन होता है. ऐसी बात है, भाई ! आडाडा ! समझमें आया ? अक वात. दूसरी बात, यहां भव भिले ये बात है नहीं. प्रभु ! क्योंकि भव है यह संसार है, आडाडा ! और उसका कारण जो रागादि, पुण्य आदि दया, दान आदि वह भी संसार है. समझमें आया ? संसारसे चार गति(रूप) संसार भिलता है. यहां तो परमात्मा भवके अभावकी बात करते हैं, भाई ! वह कभी किया नहीं. आडाडा ! समझमें आया ?

भगवान असा कहते हैं, ओ पुण्य-भाव है वह वर्तमान दुःखरूप है. वह आत्मस्वरूप नहीं. और उस दुःखका फल (जो संयोग भिले) वह भी दुःखरूप है, असा कहते हैं. आडाडा ! (समयसार) कर्ताकर्म (अधिकारकी) ७४ गाथा है. (उसमें) दुःख, दुःखफल-असा पाठ है. शुभभाव है वह दुःखरूप है और उसका फल दुःख है. स्वर्ग गति (भिले) वह भी दुःख है. यहां तो असा कहते हैं, आडाडा ! समझमें आया ? भगवान ! थोड़ी सूक्ष्म बात है. जो शुभभाव किया था वह दुःखरूप है और पुण्यका जो बंधन हुआ और उससे भगवानकी वाणी और भगवान भिले, वह दुःखका कारण है. पर द्रव्य है न ? समझमें आया ? पर द्रव्य भिला तो उस पर लक्ष जायेगा तो राग होगा. आडाडा ! बहुत सूक्ष्म बात है, बापू ! यह कर्ताकर्मकी ७४ गाथामें है. आडाडा ! 'दुःख, दुःख फल' शुभभाव है वह वर्तमान दुःखरूप है और उस पुण्यके कारण बंध (होगा) और (उसके फलमें) भगवानकी वाणीका संयोग भिलेगा. परंतु उस संयोगी चीज पर लक्ष जायेगा तो राग ही होगा, दुःख ही होगा. गजब बात है !! समझमें आया ?

यहां कहते हैं, अपना क्षेत्रका वीर्य, भावका वीर्य है. भाव माने शक्ति. उसका भाव भावसे रहा है, पर्याय पर्यायके वीर्यसे रही है, द्रव्य द्रव्यके वीर्यसे रहा है. आडाडा ! गजब बात है, भाई ! भगवानकी अक-अक शक्तिका वर्णन अलौकिक है. यह वीर्य शक्ति हो गई.

आज प्रभुत्व शक्ति लेनी है.

सातवीं शक्ति है ना ? “जिसका प्रताप अभंडित है...” यह तो अध्यात्मवाणी (है), प्रभु ! बापू ! यह तो अलौकिक बात है. यह कोई वार्ता-कथा नहीं. यह तो भागवत् कथा है. नियमसारमें लिखा है. नियमसारमें आभीरकी गाथामें (लिखा है.) यह नियमसार भागवत् शास्त्र है. वे लोग जो भागवत् कहते हैं वह सब समझने (जैसी बात है). वह तो सूक्ष्म बात है. कलशटीकामें तो रामायण अने भागवतको रागका कारण कहा है. यह तो वीतरागकी रामायण है. भागवत् कथा (अर्थात्) जिसमें वीतरागता उत्पन्न हो, वह भागवत् कथा है. समझमें आया ? आहाहा !

(यहां) कहते हैं कि, “जिसका प्रताप अभंडित है..” किसका (प्रताप अभंडित है) ? (आत्म) द्रव्यका (प्रताप अभंडित है). जो आत्म द्रव्य है इसमें प्रभुत्व शक्ति है. ईश्वर शक्ति है. समझमें आया ? ईश्वर शक्ति कहां या प्रभुत्व शक्ति कहां कि परमेश्वर शक्ति कहां (सब अके ही बात है). आहाहा ! अपना परमेश्वर ऐसा आया न ? भाई ! (परमेश्वरको) भूल गया है. वहां टीकामें आया है. अपने परमेश्वरको भूल गया (और) दूसरे परमेश्वरको याद करता है. परंतु अपने परमेश्वरको भूल गया. सर्वज्ञ वीतराग परमात्मा सख्ये परमेश्वर परमात्मा है, फिर भी इसका स्मरण करनेसे तो राग आता है, (ऐसा) कहते हैं. आहाहा ! पर द्रव्य है न (इसलिये).

(समयसारकी) उट गाथामें है. जव (अधिकारकी) अंतिम गाथा है. (कोई) मंजन करते हैं न ? तो दांतमें सोना रहते हैं. तो (मंजनके) समय थोड़ी देर (सोनेको) मुड़ीमें रहता है. (रहनेके बाद) भूल गया कि कहां गया सोना ? (मुड़ी ढोलकर देखा तो) मुड़ीमें (ही) है. वैसे भगवान आत्मा परमेश्वर स्वरूपको अनादिसे भूल गया और पुण्य-पाप और उसके झलकी यादगीरीमें (रुक) गया. और अपना परमेश्वर अंदर विद्वानंद भगवान (उसको भूल गया). आहाहा !

(यहां) कहते हैं कि, द्रव्य जो वस्तु है इसमें प्रभुत्व है. जो गुण है, उस प्रत्येक गुणमें प्रभुत्व है, आहाहा ! ज्ञानमें प्रभुत्व है, दर्शनमें प्रभुत्व है, आनंदमें प्रभुत्व है, अस्तित्वमें प्रभुत्व है. कर्ता (कर्म) नामकी षटकारक शक्ति है. उस प्रत्येक शक्तिमें प्रभुत्व है, आहाहा !

श्रोता : अनंत प्रभुत्व है ?

पू. गुरुदेवश्री : अनंत प्रभुत्व है. आहाहा ! अरे.. यह बात (कहां सुननेको मिले) ? आत्मा क्या चीज है उसकी कहां भबर है. और उसके ज्ञानमें उसका ज्ञेय आये बिना, सब झोगट-निरर्थक है, नाथ ! यार गतिमें (रखनेकी) बात है. याहें तो वह दया, दान, व्रत, तप, अपवास, भक्ति, पूजा (करे) और मंदिर बनाये, वह शुभ भाव है (और) संसार है. गजब बात है ! भाई ! ऐसी बात है.

यहां कलते हैं द्रव्यमें प्रभुत्व शक्ति (है). (यह शक्ति) द्रव्यमें, गुणमें और पर्यायमें तीनोंमें व्याप्ति है. अक बात. अनंत गुणमें प्रभुत्वका रूप है. प्रभुत्व शक्ति अनंत गुणमें नहीं परंतु (अनंत गुणमें) प्रभुत्वका रूप है. ज्ञानमें सामर्थ्यता, दर्शनमें सामर्थ्यता, यारित्रमें सामर्थ्यता, अस्तित्वमें सामर्थ्यता, कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अधिकरणमें (सामर्थ्यता), पर्यायमें सामर्थ्यता, गुणमें सामर्थ्यता, द्रव्यमें सामर्थ्यता (इस प्रकार प्रभुत्व शक्तिका रूप है). आलाला ! समजमें आया ? ऐसी अक प्रभुत्व नामकी शक्ति है. उसमें क्या कला ? इस शक्तिका स्वरूप कैसा ? कि "जिसका प्रताप अखंडित है..." आलाला !

द्रव्यमें और अनंत गुणोंमें जो प्रभुत्व है, उसका प्रताप अखंड है. उसका प्रताप कोई तोड सके, ऐसी कोई यीज जगतमें है नहि. समजमें आया ? कठिन कर्म उदयमें आये तो आत्माको लूट लेते हैं, वह बिलकुल खूठी बात है. आलाला ! जिसका अखंडित प्रताप है, वस्तु भगवान आत्मा उसका प्रताप अखंड है. आलाला ! अखंड प्रतापसे खंडित न हो, ऐसा स्वतंत्रशाली – स्वतंत्र सुभसे शोभायमान द्रव्य है, वह प्रभुत्व शक्तिके कारणसे है. आलाला ! जिसकी ईश्वरता द्रव्यमें है, गुणमें है और पर्यायमें है और प्रत्येक गुणमें उस ईश्वरताका रूप है, प्रभुताका रूप है, आलाला !

हमारी पढाई के समय दलपतराम कवि थे. बहुत लुशियार कवि थे. (उनका पूरा नाम) दलपतराम डाढाभाई. स्कुलमें उन्होंने अकबार ऐसी कडी बनाई थी. 'प्रभुता प्रभु तारी तो भरी, मुजरो मुज रोग ले हरि' यह तो स्कुलमें (आया) था. 'प्रभुता प्रभु तारी तो भरी' गुजराती समजे ? तारी यानी तुम्हारी. मुजरो यानी मेरी विनंती. 'मुजरो मुज रोग ले हरि' वैसे यह तेरी प्रभुता ऐसी है कि अज्ञान और राग-द्वेषको हरनेवाली प्रभुता है, समजमें आया ?

द्रव्यकी प्रभुता अखंड प्रतापसे शोभायमान, गुणकी प्रभुता अखंड प्रतापसे शोभायमान (और) पर्यायकी प्रताप शक्ति अखंड प्रतापसे शोभायमान (है). और द्रव्यकी स्वतंत्र शोभा (अर्थात्) अपने द्रव्यसे अपनी शोभा अपनेमें है. गुणकी शोभा (अर्थात् अपनी) स्वतंत्रतासे (गुणकी) शोभा है. और अक समयकी पर्याय है (उसकी प्रभुता उसमें है). यहां निर्मल (पर्यायकी) बात करनी है. यहां मखिन (पर्यायकी) बात नहीं है. अपने स्वद्रव्यके आश्रयसे निर्मल पर्याय, जो सम्यग्दर्शन(रूप) धर्म पर्याय होती है उसकी प्रभुता उसमें है. उसकी प्रभुताको कोई खंड कर सके (ऐसी कोई यीज नहीं है). आलाला ! कलते हैं न ? कि ऐसे कठिन कर्म (उदयमें) आये (तो लूट जाये). भाई ! (ऐसा माननेवाला) मला मूढ है. कर्म तो जड है, पर है. परका तो तुजे स्पर्श भी नहीं (होता). (तेरा) परको स्पर्श नहीं और पर तुजे स्पर्श करता नहीं. तेरेमें तेरा गुण-पर्यायका स्पर्श है. आलाला !

यहां शुद्ध (पर्यायकी) बात करनी है. अशुद्ध (पर्यायकी) तो यहां गिननेमें आया ही

नहीं. अशुद्धताका तो अभाव (है). शुद्धताकी पर्यायमें द्रव्य, गुण, पर्यायकी प्रभुता प्रगट हुई (इसमें) अशुद्धताका अभाव – वह नास्ति है. यह अनेकांत है. अशुद्धतासे प्रभुताकी पर्याय प्रगट होती है, ऐसा नहीं. आडाडा !

सम्यग्दर्शनकी पर्यायमें प्रभुता है. सम्यग्दर्शन यह पर्याय है. इसमें प्रभुता है और त्रिकालीमें श्रद्धा गुण है. इसमें (भी) प्रभुता है. द्रव्यमें श्रद्धा शक्ति पडी है. द्रव्यमें व्यापक होनेसे प्रभुता है, आडाडा ! अक श्रद्धा शक्ति द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्यापक है. और प्रभुत्व शक्ति अनंत गुणमें व्यापक है. यह तो भाई बहुत ध्यान रभे तो पकड़में आये औसी थीज है. आडाडा !

अंदर अनंत-अनंत गुणका विस्तार पडा है. आडाडा ! और पर्यायमें परिणामन होता है तो वह (पर्याय) अपनी प्रभुतासे – अण्ड प्रतापसे – स्वतंत्रपनेसे शोभीत होती है. क्या कहते हैं ? कि द्रव्य, गुण तो अण्ड प्रतापसे स्वतंत्र शोभीत है ही. परंतु जिसने द्रव्य उपर दृष्टि करके जो सम्यग्दर्शन आदि पर्याय प्रगट की, वह सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रकी जो पर्याय है, वह अण्ड प्रतापसे शोभीत है. उसको कोई अंड करे, औसी कोई ताकत जगतमें है नहीं. आडाडा ! समजमें आया ? अण्ड प्रतापसे शोभीत है और स्वतंत्रतासे स्वतंत्रशाली है. वह स्वतंत्रतासे शोभीत है. पर्याय अपनी स्वतंत्रतासे शोभीत है. राग है और व्यवहार है तो वह पर्याय प्रगट हुई, औसा है नहीं. समजमें आया ? औसी बातें हैं. यह तो शक्तिका भजना है. आडाडा !

तेरी पर्यायकी प्रभुता अण्ड प्रतापसे और स्वतंत्रतासे शोभीत है. आडाडा ! तेरी पर्याय उसको कहते हैं कि, जो त्रिकाली शुद्ध द्रव्य है और त्रिकाली शुद्ध गुण है, उसके अवलंबनसे जो पर्याय प्रगट हुई, वह उसकी पर्याय कहनेमें आती है. आडाडा ! समजमें आया ? उसके अवलंबन बिना जो निमित्तके अवलंबनसे पर्याय होती है, वह तो अशुद्धता और विकार है. वह बेकार है. आत्माके लिये वह लाभदायक है नहीं. आडाडा ! समजमें आया ?

भगवान आत्मा ! अरेरे..! (उसे) मादूम भी नहीं कि मैं कौन हुं ? प्रभु ! तेरी अक-अक शक्ति प्रभुताके अण्ड प्रतापसे और स्वतंत्रतासे शोभीत है. वह उसका शणगार (सिंगार) है. आडाडा ! शरीरमें गहने पहनते हैं कि नहीं ? वह धूलका शणगार है, मुरदेका शणगार है. यह (शरीर) तो मुरदा है, मुरदा. आडाडा ! अमृतयंद्र आचार्यने ८६ गाथाकी (टीकामें) कहा है.

शास्त्रमें औसा है - भावलींगी सख्ये मुनि हो. वे त्रिक्षाके लिये जाये और कोई रुदन करे तो वापिस आ जाते हैं. हम तो मोक्षमार्गमें निकले हैं तो यह रुदन कैसा ? आडाडा ! (आहारदानके) अंतरायमें औसा (होता) है. हम तो आनंदकी भौजमें चलते हैं ! और आनंदका स्वाद लेते हैं तो (बीचमें) यह क्या ? कोई बालक रोवे तो (वापिस) चले जाये, त्रिक्षा न

લે. યહાં હમારે આનંદકી લહેરમેં રૂદન કયા ? આહાહા ! વૈસે યહાં ભગવાન આત્મા ! અમૃતરસકા ભંડાર જહાં ખુલતા હૈ વહાં દુઃખ ઔર રૂદન કયા ? ભાઈ ! આહાહા !

યહાં કહતે હૈં, કિસી ચીજકા કર્તા હોકર, નિમિત્ત હોકર લાભ હો, ઐસી યહ ચીજ હૈ નહીં. આહાહા ! ઐસા કહાં મિલે ? ઐસા ભગવાન બિરાજ રહા હૈ, ભાઈ ! તુજે ખબર નહીં. તેરી કિંમત તુજે આતી નહીં. આહાહા ! અનુભવ પ્રકાશમેં કઠિયારાકા (લકડહારા) દૃષ્ટાંત દિયા હૈ ન ? કઠિયારા સમજે ? લકડીવાલા. ઉસકો કહીંસે કોઈ ચકચકાટ કરતા હુઆ રત્ન મિલ ગયા. ઘર આકર સ્ત્રીકો કહે ‘હમ લોગોંકો અભી મિટ્ટીકા તેલ જલાના મિટ જાયેગા. ઇસ રત્નકે પ્રકાશમેં રોટી કરના.’ (ઉસે) હીરાકી કિંમત નહીં. આહાહા ! ઉસકે પ્રકાશમેં અપના મિટ્ટીકા તેલ બચ જાયેગા (ઐસા માનતા હૈ). ઉતનેમેં ઉસકે ઘર એક ઝૌહરી આ ગયા. ઉસને દેખા (ઔર પૂછા) ‘યહ કયા હૈ ભૈયા ?’ (ઉસને જવાબ દિયા) ‘કોઈ પ્રકાશકી ચીજ હૈ, ઉસસે હમારા મિટ્ટીકા તેલ બચતા હૈ.’ (ઝૌહરીને કહા) ‘અરે પ્રભુ ! તુમ કયા કહતે હો ? યહ હીરા મુજે દે દો. (મેરે પાસ) હજાર ગોદામ પડા હૈ. એક-એક ગોદામમેં લાખ્ખો સોનામહોર (હૈ). ઐસે હજાર ગોદામ હમ તુમકો દેંગે. યહ હીરા હમકો દો.’ (લકડીવાલેકો લગા) ‘અરે ! ઐસી ચીજકી મુજે ખબર નહીં થી.’ આહાહા ! અનુભવ પ્રકાશમેં ઐસા દૃષ્ટાંત આતા હૈ.

ઐસે અંદર ભગવાન ચૈતન્ય હીરલા ! આહાહા ! જિસકે પ્રકાશમેં લોકાલોક જાનનેમેં (આયે) ઐસા કહના ભી અસદ્ભુત વ્યવહાર હૈ. અપની પર્યાય અપનેસે જાનતી હૈ, આહાહા ! ઐસે અખંડ પ્રતાપસે જ્ઞાનકી પર્યાય (શોભાયમાન) હૈ. ગુણ, દ્રવ્ય તો અખંડ પ્રતાપસે ધ્રુવરૂપ હૈ. પરંતુ યહાં તો જો પરિણમન હુઆ (ઉસમેં) જ્ઞાનકી પર્યાય અપને અખંડ પ્રતાપસે સ્વતંત્રપને પ્રગટ હુઈ હૈ. ઉસકો સ્વતંત્રપનાકી શોભા હૈ. ઐસે સમકિતકી પર્યાય ઉત્પન્ન હોતી હૈ, ઉસ પર્યાયમેં ભી અખંડ પ્રતાપ, સ્વતંત્ર સ્વભાવસે ઉત્પન્ન હોતી હૈ. આહાહા ! દર્શનમોહ ગયા, મિથ્યાત્વ ગયા તો સમકિત હુઆ, ઐસી અપેક્ષા હૈ નહીં. સમજમેં આયા ? ઐસે આનંદકી પર્યાય ઉત્પન્ન હોતી હૈ (વહ અપની સ્વતંત્રતાસે ઉત્પન્ન હોતી હૈ). અતીન્દ્રિય આનંદકા ખજાના ભગવાન હૈ. યહ આનંદ દ્રવ્યમેં, ગુણમેં, પર્યાયમેં જૈસે પ્રસરા તો આનંદકી પર્યાયમેં અખંડ પ્રતાપસે પ્રભુત્વ સ્વતંત્રપને શોભાયમાન હૈ. આનંદકી પર્યાયકી પ્રભુતાકો કોઈ લૂટે, ખંડ કરે, ઐસા હૈ નહીં. આહાહા ! ઐસા હૈ. યહ તો શક્તિયોંકા વર્ણન હૈ.

કલાસ (શિબિર) આ રહા હૈ તો શક્તિયોંકા વર્ણન કરના. (ઐસા કિસીને કહા) તો મુજે થોડા વિચાર આ ગયા કિ, યહ સુને તો સહી. યહાં ૪૩ વર્ષ હુએ. આહાહા ! ભલે સૂક્ષ્મ પડે પરંતુ બાપૂ ! ઐસા કુછ હૈ. માર્ગમેં પદ્ધતિ કોઈ અલગ જાતિકી હૈ. ઐસા ખ્યાલમેં તો આવે ના ? આહાહા !

શ્રોતા : બહુત બઢિયા બાત હૈ. બહુત-બહુત બઢિયા હૈ.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : પહલે નંબરકી બહુત બઢિયા (બાત) હૈ. એમ. એ. કે નંબરકી નહીં.

यहां तो पड़ले सम्यग्दर्शन हुआ (अैसे) अेक ही नंबरकी बात है. आडाडा ! अरे ! लोगोको कहां कुरसद है ? आडाडा !

यहां तो परमात्मा अैसा कडते हैं कि, पर जो रागादि व्यवहार रत्नत्रय है, उसके कारणसे सम्यग्दर्शन पर्याय प्रगट हुई, अैसा है ही नहीं. सम्यग्दर्शनकी पर्याय स्वतंत्रपने अण्ड प्रतापसे शोभायमान होकर प्रगट हुई है. आडाडा ! अैसे अपनेमें यारित्र गुणकी पर्याय (प्रगट होती है). अेक यारित्र शक्ति है. पर्यायका यारित्र भिन्न है. यारित्र नामकी अेक शक्ति है. अकषाय स्वभाव, वीतराग स्वभाव या यारित्र स्वभाव कडो (सब अेकार्थ है). यह यारित्र गुण भी द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्यापक है. व्यापक कब (कडा जाये) ? जब सम्यग्दर्शन हुआ तो (व्यापक है). समजमें आया ? द्रव्य, गुणमें (यारित्र) था परंतु पर्यायमें नहीं था. यहां तो वस्तु स्थिति अैसी है कि अनंत यारित्रका पिंड भगवान शक्तिरूप (है) उसका जहां आश्रय हुआ तो पर्यायमें यारित्र (प्रगट हुआ). आनंद...आनंद वैभव, अपने निज वैभवकी सेवना करनेवाला यारित्र, अनंत गुणका अनुभव करनेवाला यारित्र, ये यारित्रकी पर्याय अपने अण्ड प्रतापसे स्वतंत्रपने शोभे यह (यारित्रकी) पर्याय है. अरेरे...! अभी तो लोग पंचमहाव्रतके विकल्पको ही यारित्र गिनते हैं. अभी (यारित्रकी) जबर तक नहीं.

श्रोता : रागने यारित्र मनावे.

पू. गुरुदेवश्री : रागकी भी जबर नहीं. नवमी त्रैवेयक गया वह भी राग है. वह राग भी कहां है ? 'मुनिव्रत धार अनंत बैर त्रैवेयक उपजायो' भाई ! यह तो वस्तुकी यीज है. लोग अैसा समजते हैं, अरे ! हमारे साधुपनेकी निंदा करते हैं. प्रभु ! तू सुन तो सही भाई ! साधुपना किसको कडे ? उसकी निंदा (कैसे डो) ? आडाडा ! यह तो धन्य परमेश्वरपद है. साधुपद तो पंच परमेष्ठिपद है. आडाडा !

वह तो पड़ले कडा नहीं ? पड़ले अंदरमें बोलते हैं कि, 'शमो लोअे सव्व त्रिकालवर्ती अरिहंताणं' पड़ले बोलते हैं न अंदरमें ? 'शमो लोअे सव्व त्रिकालवर्ती सिद्धाणं, शमो लोअे सव्व त्रिकालवर्ती आयरियाणं, शमो लोअे सव्व त्रिकालवर्ती उवज्जयाणं, शमो लोअे सव्व त्रिकालवर्ती साहुणं' आडाडा ! जो वर्तमानमें साधु है नहीं और उसका कोई जव नरकमें भी डो, परंतु भविष्यमें साधु होंगे, तो कडते हैं कि हम तो त्रिकालवर्ती साधुको नमस्कार करते हैं. समजमें आया ?

यारित्रकी पर्याय जो है वह वीतरागी आनंद लेकर प्रगट होती है. आडाडा ! धन्य अवतार, बापू ! यारित्र माने क्या ? समजमें आया ? यारित्रकी पर्याय द्रव्य, गुणमें तो शक्तिरूप है परंतु जहां स्वभावका अवलंबन लेकर सम्यग्दर्शन हुआ और उग्र आश्रय लिया तब यारित्र हुआ. समजमें आया ? वह तो परमेश्वर पद (है) प्रभु ! आडाडा ! अरेरे...! भाई ! यारित्रकी पर्यायमें अपना अण्ड प्रताप (रूप) प्रभुत्व शक्तिपनाका रूप है. यारित्रकी

पर्यायमें प्रभुत्व शक्तिका रूप है. आडाडा ! वीतरागी पर्याय अण्ड प्रतापसे शोभायमान, स्वतंत्रतासे शोभायमान है. शाही कडा है न उसमें ? शाही कडा है. स्वतंत्रशाही (कडा है).

पहले प्रश्न किया था. कि यह स्वतंत्रशाही शब्द लिया है और यहां शोभायमान कडा है. और पंथास्तिकायमें यैतन्यशाही आता है. यैतन्यशाही है. यहां अर्थ नहीं किया. यैतन्यशाहीका दो अर्थ होता है. यैतन्यवान और यैतन्यसे शोभायमान. लोग ऐसा कहते हैं न कि, 'यह पुण्यशाही है, भाग्यशाही है' तो यह पुण्यवान और भाग्यवान कहनेमें (आता है). बस ! शोभायमान है, ऐसा कुछ है नहीं. ये धूल प-प० लाभ करोड-दो करोड मिले, यह कोई शोभा नहीं. वह शोभा नहीं है. वह तो अकेला पाप है. आडाडा !

योगसारमें तो योगीन्द्रदेव ऐसा कहते हैं 'पापको पाप तो सौ कहे, पण अनुभववी ज्व पुण्यको भी पाप कहे' आडाडा ! (ऐसा सुनकर) लोग तो चिद्वलयेंगे न ? पुण्य-पापमें भेद जाने वह घोर संसारी प्राणी है. प्रवचनसारमें आया है. पुण्य ठीक है और पाप अठीक है, ऐसा भेद करते हैं वह घोर संसार - चार गतिमें रभडनेवाला है. आडाडा ! ऐसी बात है. समझमें आया ? पुण्य-पाप दोनोंमें पुण्य ठीक है, शुभभाव ठीक है (यह मिथ्या मान्यता है). तो यहां कडा कि जो भाव कुशील है - संसारमें प्रवेश करावे - वह भाव ठीक (है ऐसा) कैसे आया ? आडाडा ! शुभ भाव है वह संसारमें प्रवेश कराता है, (उससे) भव मिलता है, आडाडा !

यहां तो सम्यग्दर्शनकी बात चलती है. जिसमें भवका अभाव हो तब मुक्ति होती है. तो पहलेसे भवका अभाव स्वभाव स्वरूप और भवका कारण विकारका अभाव स्वभाव स्वरूप भगवान आत्मा है. समझमें आया ? उसका द्रव्य, गुण, पर्यायमें प्रभुता, ईश्वरता व्यापक है, आडाडा ! वह दूसरे ईश्वरको दूढता है, (जैसे) कोई दूसरा ईश्वर है. आडाडा ! तेरी पर्यायकी ईश्वरताका द्रव्य, गुण कर्ता नहि, तो तेरा कर्ता कोई दूसरा ईश्वर है (यह बात तो कहां रह गई) ? आडाडा ! समझमें आया ? बापू ! यह मार्ग तो अलग है.

अक शक्तिमें कितना भरा है !! अपने द्रव्य, गुणमें और उसके अक-अक गुणमें अण्ड प्रतापसे स्वतंत्रपने वह गुण शोभायमान रहा है. और अपनी पर्यायमें निर्मल पर्याय जो स्वद्रव्यके आश्रयसे (प्रगट हुई) वही उसकी पर्याय है. यथार्थमें विकार उसकी पर्याय है ही नहीं. निश्चयसे तो वह (विकारी) पर्याय पुद्गलकी - जडकी है. आडाडा ! व्यवहार रत्नत्रय, देव-गुरु-शास्त्रकी श्रद्धाका भाव राग (है). वह पुद्गल है. वह आत्माकी पर्यायमें है नहीं, ऐसा बताना है, आडाडा ! अरे..! तेरा माहात्म्य ! तेरी पर्यायका माहात्म्य ! अलौकिक है ! प्रभुतासे अण्ड शोभायमान है, तो तेरे द्रव्य, गुणकी प्रभुताकी अण्ड शोभा और स्वतंत्रताका क्या कहना ? आडाडा ! समझमें आया ? परंतु बात विश्वासमें आना (बहुत कठिन है). आडाडा !

उसका द्रव्य, गुण, पर्याय छतनी प्रभुता शक्तिसे भरा है. अक-अक गुण प्रभुत्वसे भरा है. ऐसा प्रतीतिमें आना (याहिये). इस प्रतीतिमें अखंड प्रतापसे शोभायमान स्वतंत्र द्रव्य है (ऐसा आया). तब उसने प्रभुत्व शक्तिको जाना और माना. यह तो पामरता (मान ली है) अरेरे..! हम जैसे दीन हैं, हम तो गरीब इन्सान हैं. हमारा पुरुषार्थ बहुत कम है. (पुरुषार्थ) कम नहीं है, विरुद्ध है. स्वामी कार्तिकेयमें आया है. कम पुरुषार्थ तब कदा जाये कि, अपने स्वरूपका भान हुआ हो कि, मैं अनंत प्रभुत्वसे बिराजमान हूं. अक-अक शक्ति प्रभुत्वसे (भरी है) और पर्यायमें (भी) प्रभुत्व (है). अक समयमें अनंती पर्याय जो है वह प्रत्येक पर्याय अखंड प्रभुतासे शोभायमान है. दूसरी पर्यायसे शोभायमान है, ऐसा भी नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? वहां स्वामीकार्तिकेयमें लिया है कि, (ऐसा) भान हुआ, सम्यग्दर्शन (हुआ) – ओहो ! मेरी पर्यायमें पामरता है. किस अपेक्षासे ? केवलज्ञानकी अपेक्षासे. स्वामी कार्तिकेयकी बारह अनुप्रेक्षामें अक श्लोक है. सम्यक्दृष्टि जव द्रव्य, गुण, पर्यायकी प्रभुता मानते हैं. परंतु यह प्रभुता आत्माकी पूर्ण पर्यायके आगे पामर है. समझमें आया ? आहाहा ! अक बाजुसे पर्यायकी प्रभुता अखंड प्रतापसे स्वतंत्र शोभायमान (है) (ऐसा) कलना और दूसरी बाजुसे उस पर्यायको केवलज्ञानकी अपेक्षासे पामर कलना. यह स्याद्वाद मार्ग है. अनेकान्त स्वरूप आत्मा ऐसा है, आहाहा ! कहते हैं कि, पर्यायमें जब परमात्मदशाकी (प्रतीति) प्रगट हुई परंतु परमात्मपनाकी (पूर्ण) पर्याय प्रगट नहीं हुई है; तब तक पर्याय अखंड प्रतापसे शोभायमान है, स्वतंत्र है (ऐसा कहते हैं). फिर भी केवलज्ञानकी अपेक्षासे उस पर्यायमें पामरता है. अरे...! ऐसी बातें (है) ! आहाहा !

सम्यक्दृष्टि जवको अपने स्वरूपका अनुभव हुआ, आनंदका स्वाद आया, पूर्ण आनंदकी प्रतीति हुई तो भी जब तक यारित्रमें (पूर्ण) वीतरागता नहीं है, तब तक मैं पामर हूं (ऐसा जानते हैं). ऐसा पाठ है. अपनेको तृण समान मानते हैं. अपनेको पर्यायमें (तृण समान मानते हैं). अक ओर पर्यायमें प्रभुता है. (पर्याय) अखंड प्रतापसे शोभायमान है. परंतु पूर्ण केवलज्ञानका अभाव है, उस अपेक्षासे अपनेको तृण समान मानते हैं. मैं कहां ? (और) प्रभु कहां ? और यारित्रवंत मुनिराजकी आनंदकी रमणता और मेरी पर्याय कहां ?

श्रोता :- आंशिक शुद्धि और पूर्ण शुद्धिका (भेद जानते हैं).

पू. गुरुदेवश्री :- फिर भी यहां तो आंशिक शुद्धिको अखंड प्रतापसे स्वतंत्रतासे शोभायमान कदा. समझमें आया ? आहाहा ! परंतु केवलज्ञानकी अपेक्षासे, यारित्रकी रमणता (की अपेक्षासे पर्यायमें पामरता है). आहाहा !

श्रेणिक राजा क्षायिक समकित्ती (है). जिनको तीर्थकर गोत्र प्रगट हुआ है. आहाहा ! तो यह क्षायिक समकित्ती पर्याय अखंड प्रतापसे शोभायमान है. वही क्षायिक समकित्ती पर्याय आगे जाकर केवलज्ञान लेगी. परंतु यह क्षायिक समकित्ती पर्याय अखंड प्रतापसे शोभायमान

छोने पर भी अरेरे..! हमारी पर्याय पामर है. कहां यारित्रवंत संतों ! कहां केवलज्ञानी परमात्मा ! और कहां मैं ? आहाहा ! (इस प्रकार) अपनेको तृण मानते हैं. स्वामीकार्तिकेयमें ऐसा पाठ है. किस अपेक्षासे ? यहां तो प्रभुता कहते हैं और मेरेमें पूर्ण शुद्धिका अभाव है. (ऐसा भी कहते हैं).

यहां धवलमें तो ऐसा भी लिया है. मतिज्ञान और श्रुतज्ञानकी पर्याय अपने स्वभावके आश्रयसे प्रगट हुई, यह मतिज्ञान और श्रुतज्ञान केवलज्ञानको बुलाते हैं. ऐसा धवलमें पाठ है. एक आदमी मार्ग भूल गया हो और दूसरे आदमीको बुलाये (और कहे) 'ओ भाई, ओ भाई ! यहां आवो, यहां आवो. यह मार्ग कहां जाता है ? यह रास्ता बाडमेंसे जाता है या बाहर भेतमेंसे जाता है ? हमको सिद्धपुर जाना है. तो सिद्धपुर मार्ग यहां बाडमेंसे जाता है कि यहांसे जाता है ? वैसे भगवान कहते हैं कि, जिसे मतिज्ञानमें अण्ड प्रतापसे अनंत प्रभुता प्रगट हुई तो मतिज्ञान केवलज्ञानको बुलाते हैं, 'प्रभु ! मुझे तेरा विरह है !' आहाहा ! ऐसा पाठ है. यह तो आचार्योंने, संतोंने कमाव कर दी !! एक-एक गाथा कमाव-कमाव कर दी. आहाहा ! प्रभु ! एकबार सुन तो सही नाथ ! आहाहा ! नाथ क्यों कहा ? कि तेरे द्रव्य, गुण और पर्यायकी रक्षा करनेवाला तुम (पुत्र) हो. योगक्षेम करनेवालेको नाथ कहते हैं. तेरी पर्यायकी रक्षा करनेवाला तुम है. और क्षेम (अर्थात्) नहीं मिली उसको मिलानेमें भी तू नाथ स्वतंत्र है. समझमें आया ? नाथ नहीं कहते ? पति, पत्नीका पति नाथ है. क्यों ? कि पत्नीके पास जो संयोग है उसकी तो (वह) रक्षा करता है. और उसके पास नहीं है जैसे गहने और कपड़े उसको लाकर देता है. इस प्रकार उसके पतिको नाथ कहते हैं. वैसे यहां आत्माको पर्यायमें नाथ कहा. आहाहा !

निर्मल आनंदकी जितनी पर्याय उत्पन्न हुई हैं उसकी तो रक्षा करता है और नहीं मिली हुई (ऐसी) केवलज्ञान और यारित्रकी पर्यायका मिलान करता है. आवो..आवो...आवो...! धवलमें ऐसा पाठ है. (केवलज्ञानको) बुलाते हैं, ऐसा पाठ है. आहाहा ! धवल है न ? यहां ४० पुस्तक है. धवल, जयधवल, महाधवल. हजारो पुस्तक देखे हैं. उसमें ऐसा आया है. आहाहा ! धन्य अवतार ! मेरी ऋद्धि मुझे प्रगट हुई. परंतु पर्यायमें पूर्ण ऋद्धि मुझे नहीं है. द्रव्य, गुण तो पूर्ण ऋद्धिसे पडा ही है. आहाहा ! मेरा वैभव पूर्ण केवलज्ञान, अनंत आनंद (है). मतिज्ञान पोकार करता है कि, 'आवो पूर्ण, आवो पूर्ण (पर्याय) अब हम अपूर्णमें (अपूर्ण पर्यायमें) रह सकते नहीं.' यह तो 'बालकी भाल है' बात तो ऐसी है, भगवान ! आहाहा !

अब कोई लोग परतंत्र, परतंत्र.... पराधीन...पराधीनका पोकार करते हैं. यहां तो कर्ताकी व्याख्या ही यह है. 'स्वतंत्रपने करे सो कर्ता' षटकारक है न ? छ शक्ति – कर्ता शक्ति, कर्म शक्ति, करण शक्ति, संप्रदान शक्ति, अपादान शक्ति और अधिकरण. कर्ता किसको कहीअे ?

अेकबार तो आर्य समाज है उसके पास कर्ताकी व्याख्या (देखनेके लिये) छतिदास मंगवाया था कि छतिदास क्या कलता है ? कमलाशंकरके व्याकरणमेंसे अैसा नीकला कि, 'स्वतंत्रपने करे सो कर्ता' परकी अपेक्षा नहीं, परका दास नहीं, परकी पराधीनता नहीं, आडाडा ! वैसे आत्माकी सम्यग्दर्शन पर्याय, सम्यक्ज्ञान पर्याय स्वतंत्रपने शोभायमान (है). (वह) स्वतंत्र कर्ता डोकर करती है. आडाडा !

डम यौथी (कक्षामें) पढते थे तब छ कारक आते थे. यह तो ७० वर्ष पहलेकी बात है. कर्ता उसको कहीअे कि स्वतंत्रपने करे. अणंड प्रतापसे शोभायमान (अैसी) मेरी पर्याय है. आडाडा ! समजमें आया ? मैं स्वतंत्रपनेसे यह पर्याय करता हुं. मुजे राग या निमित्तकी अपेक्षा है तो यह पर्याय उत्पन्न डोती है, अैसी अपेक्षा नहीं है. आडाडा ! समजमें आया ?

नियमसार दूसरी गाथामें अैसा कडा. यारों ओरसे वस्तु अैसी सिद्ध करते हैं, आडाडा ! निश्चय सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र परकी अपेक्षा बिना निरपेक्षरूपसे उत्पन्न डोता है. परम निरपेक्ष (कडा है). आडाडा ! अब ये लोग चीभते हैं कि, व्यवहार डो तो निश्चय डोता है. अरे ! सुन तो सडी प्रभु ! तू क्या करता है ? ये दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा और भूष तपस्या करे और राग (करे) तो निश्चय डोता है. धूलमें भी नहीं डोगा. सुन तो सडी, आडाडा !

यहां अैसा कडा कि, (निर्मल पर्याय) परम निरपेक्षरूपसे (डोती है). जसमें व्यवहार रत्नत्रयकी और त्मेडकी भी अपेक्षा नहीं, अैसा भगवान आत्मा ! अपनी शक्तिकी अपार प्रभुता, उसकी प्रतीत, उसका ज्ञान और उसकी रमणता परकी अपेक्षा बिना निरपेक्षरूपसे करता है. समजमें आया ? अेक घंटेमें कितनी बात लुई ? यह तो महाराज प्रभु ! यैतन्यराजकी बात है. १७-१८ गाथामें आता है न ? राजकी सेवा करे कि, यह राज है. वैसे यैतन्य राज अपनी अनंत शक्ति और अनंत परिणतिसे शोभायमान है. अपनी बात है. आडाडा !

पंय संग्रहमें तो नव रस उतारा है. अपनेमें शृंगार रस है. अपना आनंद स्वरूप और अनंत शक्तिका परिणमन उसका शृंगार है. व्यवहार रत्नत्रयका शृंगार वह उसका शृंगार नहीं. आडाडा ! समजमें आया ? आठों रस उतारे हैं. अद्भुत रस उतारा है. बहुत सरस (उतारा है). द्विपयंदज साधर्मि-गृहस्थ थे परंतु आत्मा थे न ? (उसमें) गृहस्थ कडा और ब्रह्मयारी कडा. आत्माका अेक-अेक गुण ब्रह्मयारी है, क्यों ? कि अपने गुणमें ब्रह्म पडा है, उसमें दूसरा दोष आने नहीं देता. रागका अब्रह्म आने नहीं देता. आडाडा ! अैसी बात है.

अरे भगवान ! यह तो तीनलोकके नाथ वीतराग परमेश्वरके कथन हैं. त्माई ! यह कोई कथा-वार्ता नहीं है. समजमें आया ? आडाडा ! इसको समजनेके लिये समजनेवालेकी भी योग्यता डोनी याडिये. आडाडा ! उसे कंटावा नडि आना याडिये कि, 'अरे ! अैसा

સૂક્ષ્મ, એસા સૂક્ષ્મ !' અરે ! સૂક્ષ્મ નહીં (હૈ), તૂ તો ઉસસે ભી સૂક્ષ્મ હૈ. સમજમ્મે આયા ? આહાહા !

યહાં કહતે હૈં કિ, સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્ર યહ પર્યાય હૈ, ગુણ નહીં. ગુણ તો ત્રિકાલ હૈ. મોક્ષમાર્ગ પર્યાય હૈ. સંસાર ભી વિકારી પર્યાય હૈ. મોક્ષમાર્ગ નિર્વિકારી અપૂર્ણ પર્યાય હૈ ઓર સિદ્ધકી પૂર્ણ શુદ્ધ પર્યાય હૈ. યહ સબ પર્યાયકે ભેદ હૈ. સમજમ્મે આયા ?

યહાં કહતે હૈં, મેરી સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્રકી પર્યાય અખંડ પ્રભુત્વસે – પ્રતાપસે સ્વતંત્ર શોભાયમાન (હૈ). ઉસકો પરકી અપેક્ષા હૈ નહીં. વ્યવહાર રત્નત્રયકી અપેક્ષા હૈ નહીં, એસા કહતે હૈં. આહાહા ! ભાઈ ! તેરા શણગાર તો દેખ ! (પંચ સંગ્રહમ્મે) એક અદ્ભુત રસ લિયા હૈ. જિસ સમય, એક સમયકી (દર્શન) પર્યાય લોકાલોકકો ભેદ કિયે બિના દેખે, ઉસી એક સમયમ્મે જ્ઞાનકી પર્યાય યહ જીવ, યહ અજીવ, યહ ગુણ, યહ પર્યાય, યહ પર્યાયકે અવિભાગ પ્રતિચ્છેદ (એસે) સબકો ભિન્ન કરકે દેખે. ઉસી સમયમ્મે દર્શન પર્યાય (સબકો) ભિન્ન (કિયે) બિના – યહ મૈં જીવ હું, યહ જડ હૈ – એસે ભિન્ન કિયે બિના (માત્ર) સત્તાકા દર્શન કરે ઓર જ્ઞાનકી પર્યાય એક-એક ગુણકા ઓર પર્યાયકા ભેદ કર-કરકે જાને. એક સમયમ્મે એક હી ક્ષેત્રમ્મે રહી હુઈ દો પર્યાય હૈં. એક પર્યાય સામાન્ય સત્તાકો દેખે ઓર એક પર્યાય ઉસી સમયમ્મે દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાય (સબકો) ભિન્ન-ભિન્ન કરકે ત્રિકાલકો દેખે. યહ ભવિષ્યકી પર્યાય, યહ ભૂતકાલકી પર્યાય, (યહ) વર્તમાન પર્યાય (સબકો) દેખે. સમજમ્મે આયા ? આત્મામ્મે એસા અદ્ભુત રસ હૈ. સમજમ્મે આયા ?

યહ તો ગજબ બાત હૈ !! ઇસમ્મે (કથનમ્મે) પૂરા કરે એસી શક્તિ તો ભગવાનકે પાસ હૈ. આહાહા ! મુનિરાજ (સ્વયંકે) ક્ષયોપશમસે બાત કરતે હૈં. આહાહા ! “જિસકા પ્રતાપ અખંડિત હૈ” પ્રત્યેક ગુણમ્મે જિસકા પ્રતાપ અખંડિત હૈ. પ્રત્યેક પર્યાયમ્મે ભી જિસકા પ્રતાપ અખંડિત હૈ. આહાહા ! વીર્ય શક્તિકા ભી અખંડ પ્રતાપ શોભાયમાન હૈ. એક વીર્ય શક્તિ અંદરમ્મે હૈ. પુરુષાર્થ....પુરુષાર્થ...પુરુષાર્થ.. દ્રવ્યમ્મે પુરુષાર્થ, ગુણમ્મે પુરુષાર્થ, પર્યાયમ્મે પુરુષાર્થ. આહાહા ! કોઈ એસા કહતે હૈં ન ? તુમ કમબદ્ધકો માનતે હો તો પુરુષાર્થ કહાં રહા ?

શ્રોતા : ઉસકા ખુલાસા તો કરના.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : (ખુલાસા) કરના ? ટાઈમ હો ગયા હૈ. કલ બાત (કરેંગે).



प्रवचन नं. ९

शक्ति-८ - ता. १९-०८-१९७७

सर्वभावव्यापकैकभावरूपा विभुत्वशक्तिः ॥८॥

समयसार शक्तिका अधिकार (यलता है). (अभ) आठवीं शक्ति है. सात शक्ति यदी. सातवी (शक्तिमें) क्या आया ? कि यह आत्मा जो वस्तु है उसमें संप्र्यासे अनंत शक्ति हैं. शक्तिका सामर्थ्य अनंत है, यह दूसरी बात है और १, २, ३, ४, ५, ६ (ऐसी) संप्र्यासे अनंत शक्ति हैं (और) द्रव्य अेक है. समजमें आया ? उसमें ऐसी अेक प्रभुत्व नामकी शक्ति है. यह कल यला था. तुम्हारा कमबद्धका थोडा रह गया है. कल प्रश्न आया था न भैया ? प्रभुत्व शक्तिका प्रताप अंजित है. जिसा द्रव्यमें, गुणमें और पर्यायमें जिसका प्रताप अंजित है. सूक्ष्म है, भगवान ! मार्ग वीतरागका बहुत सूक्ष्म, भाई ! अपूर्व बात है, भाई !

यहां कलते हैं कि, प्रभुताके अंजित प्रतापसे पर्याय स्वतंत्र शोभायमान है. फिर भी प्रभुत्व शक्ति आगे-पीछे पर्याय कर सके, ऐसी ताकत नहीं. समजमें आया ? क्यों ? कि प्रभुत्व शक्ति जो है वह सत् द्रव्य उसका सत्व है, कस है, माल है. यह शक्ति अपने द्रव्यमें, गुणमें और पर्यायमें व्यापक होकर व्याप्ति है. फिर भी प्रभुत्व शक्तिकी पर्याय जिस समय जो होनेवाली है, ऐसी होगी. समजमें आया ?

४७ शक्तिमें अेक १८वीं शक्ति है. “कमवृत्तिरूप और अकमवृत्तिरूप वर्तन जिसका लक्षण है....” क्या कलते हैं सुनो ! आज कमबद्ध लेना है ना ? तो “कमवृत्तिरूप और अकमवृत्तिरूप वर्तन जिसका लक्षण है....” आत्मामें अेक उत्पाद्, व्यय, ध्रुव नामकी शक्ति है. उमास्वामीके तत्त्वार्थ सूत्रमें आया कि, ‘उत्पाद्, व्यय, ध्रुव युक्तं सत्’ और ‘सत् द्रव्य लक्षणं’ ऐसा पाठ है. यहां कलते हैं कि, आत्मामें अेक उत्पाद्, व्यय, ध्रुव नामकी शक्ति है कि जो शक्ति अनंत गुणमें व्यापी है, तो प्रभुत्व शक्तिमें भी उत्पाद्, व्यय, ध्रुवका रूप है, आछाछा !

उसमें उत्पाद्, व्यय, ध्रुव नामकी शक्ति है कि जिस समय जो पर्याय उत्पन्न होनेवाली है वह उत्पन्न होगी और पूर्वकी पर्यायका व्यय होगा और ध्रुवरूप जो सदश (है वह) कायम रहेगा. समझमें आया ? कोई ऐसा कहे कि, कमबद्ध (है तो) पर्यायमें पुरुषार्थ कहां रहा ? यह प्रश्न है न भैया ? आहाहा ! तो कहते हैं कि उत्पाद्, व्यय, ध्रुव नामकी शक्ति है यानी गुण है. वह अनंत शक्तिओंमें व्यापक है. अनंत शक्तिओंमें वर्तमान पर्यायमें जो पर्याय उत्पन्न होनेवाली है (वही पर्याय उत्पन्न होगी). अर्थात् कमसे वर्तनेवाली. (ऐसी) भाषा है ? “**कमवृत्तिरूप और अकमवृत्तिरूप वर्तन जिसका लक्षण है..**” वर्तना जिसका लक्षण है. आहाहा ! क्या कहा ? सूक्ष्म है, भाई ! अपूर्व बात है, बापू ! आहाहा ! आत्मामें उत्पाद्, व्यय, ध्रुव नामकी शक्ति है, यह गुण है, यह स्वभाव है कि जो अनंत शक्तिओंमें व्यापक है. अनंत शक्तिओंमें भी प्रत्येक शक्तिमें कमवर्ति पर्याय होती है. कमसे वर्तनेवाला वर्तन (जिसका लक्षण है). आहाहा !

मार्ग बहुत सूक्ष्म है, भैया ! कमसे वर्तनेवाली अनंत गुणकी अनंती पर्याय (प्रगट होती है). अनंत गुणमें उत्पाद्, व्यय, ध्रुव शक्ति व्यापक है न ? (उसका) रूप है. अनंत शक्तियोंमें जिस समय उत्पाद् होनेवाला है उस समय उत्पाद् होगा और उसी समय व्ययका क्षण है. उत्पाद् जन्मक्षण है और व्ययका भी वही क्षण है, आहाहा !

पर्याय जो है उसका उत्पाद्का काल भी वही है (और व्ययका काल भी वही है). आगे-पीछे नहीं, आहाहा ! ऐसी बात है. बापू ! भगवानका-वीतरागका मार्ग सूक्ष्म है. ऐसी यीज सर्वज्ञ के सिवा, वीतराग मार्ग के सिवा कहीं है नहीं, बापू ! उसे समझने के लिये तो बहुत प्रयत्न चाहिए. समझे ? संसारकी पढाई के लिये खे. खे. बी. और एम. ए. की डिग्रीके लिये कितना पढते हैं ? उस समय जो पढनेकी पर्याय उत्पन्न हुई, वह उत्पाद्रूप होनेवाली थी वही हुई है. आहाहा !

यहां कहते हैं कि, अगर ऐसा है तो फिर पुरुषार्थ कहां रहा ? प्रश्न तो वह था न ? भाई ! स्वामी कार्तिकेयमें प्रभु तो ऐसा कहते हैं कि, जिस समयमें, जिस क्षेत्रमें, जिस संयोगमें, जो प्रकारकी पर्याय उत्पन्न होनेवाली है वही होगी. ऐसा माने वह सम्यक्दृष्टि है, ऐसा लिखा है; न माने वह कुदृष्टि-मिथ्यादृष्टि है, ऐसा लिखा है. उसका अर्थ क्या आया ? कि प्रत्येक गुणकी जिस समय जो पर्याय उत्पाद्, व्यय, ध्रुव गुणके कारण (होनेवाली है वही होगी). उत्पाद्, व्यय, ध्रुव तो गुण है. परंतु उसकी पर्याय उत्पाद्, व्यय और ध्रुव तीनरूपसे परिणामे, ऐसा उस शक्तिका रूप है. उस समय अनंत गुणमें उत्पाद्, व्यय, ध्रुव (रूप परिणामन होता है). लोगोंको यह नियत लगता है, परंतु नियत ही है. समझमें आया ? परंतु नियतके साथ पुरुषार्थ आया. जिस समय जो गुणकी पर्याय होनेवाली है, ऐसा निर्णय करनेवाला पर्याय उपर लक्ष नहीं रहता. जरा सूक्ष्म बात है. बड़ी गडबड हो गई न ?

कमबद्धकी तो बड़ी यर्था हुई थी. १३की सालमें बनारस गये थे. अक टिगंबर गृहस्थ थे. वहां भोजन करने जाते थे. साथमें (दूसरे बडे विद्वान भी) थे. उनको मैंने कहा कि, 'भैया ! दरेक द्रव्यकी पर्याय कमबद्ध है.' दूसरे विद्वान कुछ नहीं बोले. यह बात (उस समयमें) बाहर नहीं थी. अक समयकी कमे-कमे (पर्याय) हो तो-तो नियत हो जायेगा तो पुरुषार्थ कहां रहा ? अरे भगवान ! अनंत गुणकी कमसर पर्याय जिस समय होनेवाली है वही होगी, उसका निर्णय तो द्रव्य स्वभाव पर दृष्टि करनेसे हुआ. समझमें आया ? आहाहा ! कहते हैं कि, जिस समय जो (पर्याय) होगी ऐसी पर्यायका निर्णय करनेवालेकी दृष्टि द्रव्य पर जाती है. पर्यायका निर्णय पर्यायमें रहकर नहीं होता, समझमें आया ? सूक्ष्म बात है, भगवान !

अरे प्रभु ! तेरी बात तो (गजब है) ! तेरी प्रभुता (अंदर) पडी है न नाथ ! तेरे द्रव्यमें प्रभुता, गुणमें प्रभुता (और) पर्यायमें प्रभुता. फिर भी वह प्रभुताकी पर्यायका काल है तब उत्पन्न होती है. प्रभुताकी शक्ति भी पर्यायका फेरफार कर दे, (ऐसा नहीं है). आहाहा ! परमेश्वर, ईश्वर, सर्वज्ञदेव भी जिस समय जो पर्याय होनेवाली है, उसका फेरफार करे, ऐसा द्रव्यका स्वभाव नहीं, आहाहा ! तो उसका पुरुषार्थ कहां रहा ? भगवान ! अकबार सुन तो सही, प्रभु !

पर्यायमें कमवृत्तिपना जिसका वर्तन है, ऐसा पाठ है. कमवृत्ति जिसका वर्तन है. (अर्थात्) कमसे वर्तना जिसका वर्तन है. उसका वर्तन ही यह है. आहाहा ! जिसका लक्षण ऐसा है, उसकी द्रव्य उपर (दृष्टि गये बिना) 'मैं ज्ञायकभाव चिदानंद हुं' ऐसा दृष्टिमें निर्णय हुआ बिना कमबद्धका निर्णय होता नहीं. (जब दृष्टि द्रव्य स्वभावपर जाये) तब वह कमबद्धका निर्णय सख्या है. समझमें आया ? आहाहा ! यह बहुत अलौकिक बात है !! भगवान ! आहाहा !

उज्जैनमें अक (साधु) थे. यहांका वांयन बहुत किया. उमको गजपंथामें मिले थे. (हमे मिलने आये तब) उठ-बैठ कर वंदन किया. परंतु रात्रिको आये थे इसलिये कुछ बोल सके नहीं. (दूसरे दिन) दोपहरको उमको गजपंथासे यले जाना था. वे आये नहीं तो मुझे ऐसा हुआ, उसका हृदय क्या है ? ये उमे जानना है. वे वांयन करके बात तो बहुत करे. बादमें उम वहां मेडी (छोटे मकानकी उपरकी मंजिल) पर गये (और) बैठे. दरवाजा खोल दिया, (जुद) नीचे उतर गये, उम पाटके उपर बैठे, उमको वंदन किया. उमें तो उसका हृदय लेना था कि, ये बात करते हैं परंतु क्या है ? उमने पूछा 'शास्त्रमें ऐसा यला है. कालनयसे मोक्ष और अकालनयसे मोक्ष (होता है, ऐसी) दो बात यली हैं.' प्रवचनसारमें ४७ नयमें कालनय-काल पर भी मोक्ष होता है और अकालमें भी मोक्ष होता है, ऐसा पाठ है. तो फिर कमबद्धमें जिस कालमें (मोक्ष) होनेवाला हो (उस समयमें होगा) तो फिर अकालमें मोक्ष कहांसे आया ? पाठमें अकालमें मोक्ष है. (ऐसा भी लिखा है). ४७ नयमें कालनयसे भी

भोक्ष और अकालनयसे भी भोक्ष, असा पाठ है. यह तो ४७ शक्ति है. प्रवचनसारमें ४७ नय है. उसको प्याल आ गया कि, ये महाराज मुझे कहीं पकड़ेंगे. फिर तो (उन्होंने) कबूल कर लिया. नहीं (बाहर) तो हम जैसा कहते हैं, वैसा ही कहते थे कि, 'जिस समयमें जो होगा उस समयमें वह होगा.' ऐसी बात करे. हमने कहा शास्त्रमें अकालनय है न ? कालसे भोक्ष और अकालसे भोक्ष, असा पाठ है. तो कहा कि, 'मैंने विचार नहीं किया.' असा कहकर छूट गये. उसका अर्थ तो असा है कि, कालनयसे तो जिस समय भोक्ष होना है उसी समय भोक्ष होता है. परंतु उस समयमें अकालनय भी साथमें है. अकालनयका अर्थ ? आगे-पीछे (भोक्ष) होता है, असा अर्थ नहीं. अकालनयका अर्थ पुरुषार्थ और स्वभावको मिलाकर कहते हैं तो अकालसे (भोक्ष) हुआ. समझमें आया ? आहाहा !

सर्वज्ञ वीतराग त्रिलोकनाथ उनकी वाणीकी अमृतधारा उसका क्या कहना !! आहाहा ! जिसकी समझमें आ जाये, वह तो निहाल हो जाये, आहाहा ! जन्म-मरणसे रहित हो जाये, बापू ! (भुट) यार गतिमें दुःखी है.

अकालनयका अर्थ — जिस समय भोक्ष होगा उसी समय होगा. अकालनयमें दूसरा समय आगे-पीछे है, असा अर्थ है नहीं. अकालका अर्थ क्या है ? कालनयमें अकेला काल लिया था. अकालमें स्वभाव, पुरुषार्थ, भवितव्यता, काललब्धि आदि पांच आये. मात्र काल नहीं परंतु साथमें पुरुषार्थ स्वभाव है, उसको अकालनय कहनेमें (आता है). अकालनयका अर्थ आगे-पीछे काल है, असा नहीं है. समझमें आया ? फिरसे कहते हैं.

अकालनयका अर्थ यह है कि, कालमें तो जिस समय केवलज्ञान और भोक्ष होगा उसी समय होगा. परंतु अकालका अर्थ उस समय स्वभाव की ओर पुरुषार्थ गया, काल तो वही है. परंतु त्रिकाली स्वभावकी ओर पुरुषार्थ गया तो पुरुषार्थ और स्वभाव साथमें आया. उसे अकाल कहनेमें आता है. भाई ! समझमें आया ? यह तो कमबद्धका यलता है न ? आहाहा ! यहां तो पहलसे भूब यर्या यलती है न !

अक विद्वान आये थे. बहुत नरम थे. उन्होंने अक शास्त्रका अर्थ किया था उसमें भूल थी. उसमें क्या भूल थी ? हमने तो सब पुस्तक देखे हैं न ! उसमें असा लिखा था कि छोटे गुणस्थानमें जो मुनि हैं उन्हें बुद्धिपूर्वकका राग है और सप्तम गुणस्थानमें अबुद्धिपूर्वकका राग है. असा उन्होंने लिखा था. हमने कहा 'आपकी भूल है' तो उन्होंने कहा 'कहो महाराज !' (हमने कहा) 'देखो भैया ! छोटे गुणस्थानमें भी बुद्धि और अबुद्धिपूर्वक दोनों राग हैं. बुद्धिपूर्वक अकेला राग है और अबुद्धिपूर्वक सातवे (गुणस्थानमें) है, असा नहीं. गोमट्टसारमें व्यक्त-अव्यक्तका पाठ है. राग प्यालमें आता है छतना बुद्धिपूर्वक है और उसी समय प्यालमें नहीं आता वह अबुद्धिपूर्वकका (राग) है. छोटे गुणस्थानमें भी बुद्धिपूर्वक-अबुद्धिपूर्वक दोनों लागू पड़ते हैं. अकेला बुद्धिपूर्वकका (राग) है, असा नहीं और सप्तम गुणस्थानमें

अकेला अबुद्धिपूर्वकका राग (है). समजमें आता है ? यह बात जरा सूक्ष्म है परंतु (उन्होंने) कबूल किया (और) बोले 'महाराज ! मेरी दूसरी कोई तूल छो तो मुझे बताईये' बहुत नरम थे. बादमें तो (कहनेका) विचार किया था कि, तुम अके छ मास यहां रहो. अकेबार हमारी बात सुनो फिर आपको जो प्रचार करना छो वह करो. परंतु अके बार सुने तो सही कि, बात क्या है ? उस समय यह बात यही. समयसार ३०८ गाथा है न ?

“दवियं जं उप्पज्जइ गुणेहि तं तेहि जाणसु अणणं ।

जह कडयादीहिं दु पज्जएहि कणयं अणणमिह ॥३०८॥

है ना ? देखो पीछे उसकी टीका है. “प्रथम तो जव कमबद्ध जैसे अपने परिणामोंसे उत्पन्न होता हुआ...” है ? प्रथम तो मुख्य (बात) यह कहनी है कि प्रथम नाम संस्कृतमें 'तावत्' शब्द पडा है. 'तावत्' - हमें मुख्य ये कहना है कि. 'तावत्' नाम प्रथम - मुख्य जो कहना है वह बात यह है कि....(ऐसे). संस्कृत टीकाके अके-अके अक्षर देखे हैं. कितनी बार देखा है. समयसार ७८ की सालमें मिला था. ५५ वर्ष हुआ. पहला पुस्तक यह आया था. तो 'तावत्' नाम “प्रथम तो जव कमबद्ध जैसे...” देखो ! आया. पाठमें क्या है ? संस्कृत पाठमें कमनियमित है. कमसे नियमसे होनेवाली पर्याय कमसर होती है. नीचे कमनियमितका अर्थ कमबद्ध दिना है ? कमनियमितका अर्थ कमबद्ध है. यह कमबद्ध शब्द तो बहुत जगह आता है. अब तो बहुत जगह आता है. कमबद्धकी व्याख्या क्या ? आडाडा ! समजमें आया ? कि पहले जवकी बात है. 'जव कमबद्ध..' (अर्थात्) कमे-कमे जो समये जो (पर्याय) होनेवाली है वह बद्ध नाम नियमित(रूपसे) उत्पन्न होगी. समजमें आया ?

अके विद्वानने अर्थ किया था. कमबद्धकी व्याख्या की थी. उन्होंने इतना अर्थ जोला कि, पर्याय कमबद्ध अके के बाद अके है - ऐसी बंधी हुई नहीं है. ऐसा अर्थ किया था. परंतु बंधी हुई नहीं है इस बातका यहां काम नहीं है. अकेके बाद यह पर्याय उसके साथ बद्ध है, जैसे बद्धकी बात यहां नहीं है. यहां तो अके पीछे (अके) होनेवाली है, उसको कमनियमित-बद्ध कहते हैं. आडाडा ! यह तो तत्वकी मुख्य चीज है. आडाडा ! ऐसी बद्धकी व्याख्या है नहीं. कमबद्धका अर्थ तो समये-समये नियमित होनेवाला है, वह कमबद्ध है. कमबद्धका ऐसा अर्थ नहीं कि, इस पर्यायको बादवाली पर्यायके साथ बंधन है-बंधी हुई है, ऐसा नहीं.

ऐसा आत्मअवलोकनमें यला है. मोक्षमार्गकी पर्याय है तो केवलज्ञान होगा, इसके जोरसे होगा, ऐसा है नहीं. क्या कडा ? शांतिसे समजना. यह सम्यग्दर्शन, ज्ञानकी मोक्षमार्गकी पर्याय है ना ? तो इस पर्याय के पीछे केवलज्ञान-मोक्ष होता है; तो इस पर्यायके जोरसे वह पर्याय उत्पन्न होगी, यह पर्याय है तो यह पर्याय उत्पन्न होगी, ऐसा है नहीं. ऐसी

भात है. आडाडा ! क्या समजमें आया भगवान ? कि यहां पडले जवकी भात कही. अजवकी भात बादमें लेंगे. आत्मा जो है... जव कडो या आत्मा कडो (अक ही भात है). सभेरे आया था. आत्मा शब्द आया था और बादमें जव द्रव्य कडा था. कोई समजे कि, जव अलग है. आत्मा अलग है, (तो) असा नहीं है.

यह जव जो है – आत्मा, उसके अनंत गुण जो हैं उसकी कमबद्ध-कमसर जिस समय जो पर्याय होनेवाली है (वह) कमनियमित-कमसे निश्चयसे वही होनेवाली है. समजमें आया ? देखो ! “अपने परिणामोंसे उत्पन्न होता हुआ...” (अर्थात्) कमसर अपनी पर्यायसे उत्पन्न होता हुआ. “अपने परिणामोंसे उत्पन्न होता हुआ जव ही है..” कमसर परिणाम जो उत्पन्न हुआ वह जव ही है. आज सभेरे भी आया था. शुद्ध येतना परिणाम और अशुद्ध येतना परिणाम – यह जव है. (वह) जड है और पर है, असा नहीं. समजमें आया ? मार्ग बहुत सूक्ष्म (है), बापू ! भाग्यशाली लोग यहां दूरसे सुननेको आते हैं. दूर-दूरसे आये हैं. मार्ग तो असा है. नाथ ! सर्वज्ञ परमेश्वर त्रिलोकनाथकी अमृतवाणीका यह जरना है, नाथ ! आडाडा !

कहते हैं कि कमसर परिणाम उत्पन्न होते हैं वह जव ही है. असा (उस विद्वानको कडा). (विद्वान) नरम आदमी थे. (उन्होंने कडा) ‘ओहो ! सिद्धांतमें साधुको आगम यक्षु कहते हैं. यह भात यहां दिखती है.’ कोई संत समागम-गुरुगम नहीं इसलिये अर्थ करनेमें जरा डेरडार हुआ. अर्थके डेरडार करके सुधार दिया. (और कडा) ‘हमारी भूल हो तो बताईये.’ (हमने) कडा ‘छह गुणस्थानमें बुद्धि-अबुद्धिपूर्वक दोनों राग हैं. (छह गुणस्थानमें) अकेला बुद्धिपूर्वकका (राग) है और अबुद्धिपूर्वक (राग) सातवें (गुणस्थानमें) है, असा नहीं’ समजमें आया ? आडाडा !

अध्यात्मदृष्टिसे जो राग बुद्धिपूर्वक ज्वालमें आता है उसको असद्भुत उपचार कहते हैं. (समयसार) ११वीं गाथामें आया था न ? सर्व व्यवहार अभूतार्थ (है). अध्यात्मके यारों व्यवहार (अभूतार्थ हैं). असद्भुत व्यवहार, सद्भुत व्यवहार. असद्भुत व्यवहारका दो प्रकार – उपचार और अनउपचार. सद्भुत व्यवहारका दो प्रकार – उपचार और अनउपचार. छह गुणस्थानमें जो राग ज्वालमें आता है उसे बुद्धिपूर्वक असद्भुत उपचार कहते हैं. और उपयोग स्थुल है तो ज्वालमें नहीं आता है, इसमें अबुद्धिपूर्वक है. अबुद्धिपूर्वकको असद्भुत अनउपचार नय कहते हैं. ज्वालमें आता है उसे असद्भुत उपचार कहते हैं. असद्भुत व्यवहार उपचार (कहते हैं). और उसी समय जो ज्वालमें न आवे (उसे) असद्भुत अनउपचार कहनेमें आता है. थोड़ी सूक्ष्म भात है, आडाडा !

अंदर नजर करनी पड़ेगी. यह तो (रस) लेनेकी यीज है, भगवान ! करना तो यह है. बाकी (सब) थोथा है. आडाडा !

श्रोता : रस लेनेके लिये यहाँ कितने दिन रहना चाहिये ?

पू. गुरुदेवश्री : कमानेमें गिनती करते हैं कि, मुझे कितने वर्ष कमाना ? वहाँ नहीं कहते. कदा न कि नौकरीमें भी पप वर्ष हुआ तो निकाल देते हैं और व्यापारमें तो उसका कोई ठिकाना नहीं. ७०-८० वर्ष तक मजदूरी करते रहते हैं. वहाँ मुदत (समय) मांगते हैं ? कि घतने समय तक मुझे कमाना, बादमें छोड़ देना. वैसे समझनेमें घतने वर्ष – घतने दिन तक (समझना) इस प्रकार उसकी मुदत होती नहीं. समझमें आया ?

किर भी अमृतचंद्र आचार्यने कलशमें लिखा है, लैया ! छ महिने ध्यान रखकर इसका अभ्यास कर. तेरी यीजकी प्राप्ति होगी कि नहीं होगी ? (तो कहते हैं) होगी ही होगी. लैया ! छ महिने अभ्यास कर. छ महिने (कदा है बटिक) है तो जघन्य अंतर्मुहूर्त. जघन्य नाम अल्प कालमें – अंतर्मुहूर्तमें अनुभव हो जाता है और उत्कृष्ट हो तो अनंतकालमें भी नहीं होता है. तो मध्यमें लीया. भगवान ! अेकवार छ महिने लगनी तो लगा. मैं आनंदकंद शुद्ध यैतन्यघन हूं. मैं राग (और) परसे रहित हूं. ऐसा अभ्यास छ महिने लगा दे. तुझे आत्मप्राप्ति होगी, होगी और होगी. ऐसी बात है, भाई ! आहाहा !

यहाँ कहते हैं कि, कमसर होगा यह बात सुनकर वह विद्वान जैसे बोले कि, ‘ओहोहो ! ऐसी बात तो हमने कभी सुनी नहीं. और महाराज ! हम सब पंडितोंकी पढाई अभी तक तो निमित्त आधिन है. कोई अपवाद छोड़कर सब पंडितोंकी निमित्त आधिन दृष्टि है. पर्याय उपादानसे – अपनेसे होती है, यह बात तो हमारी कोई पढाईमें आई नहीं.’ समझमें आया ? पढाईमें आया नहीं और पढाई की नहीं, अनुभव तो बादकी बात है. समझमें आया ?

यहाँ कहते हैं “(जव कमबद्ध जैसे अपने परिणामोंसे उत्पन्न होता हुआ) जव ही है.” जो कमसर परिणाम उत्पन्न हुआ वह जव ही है. जवसे उत्पन्न हुआ और जो नियतकाल है, उस कालसे उत्पन्न हुआ है. “अजव नहीं..” (वह) परसे उत्पन्न हुआ नहीं. कर्मसे (उत्पन्न) नहीं हुआ. आहाहा ! सम्यग्दर्शन उत्पन्न हुआ तो कर्मके अभावसे नहीं. मिथ्यात्व उत्पन्न हुआ वह कर्मके उदयसे नहीं, अजवसे उत्पन्न होता नहीं. समझमें आया ?

“ईसीप्रकार अजव भी...” अब दूसरे पांय अजव लिये. छ द्रव्यमें अेक जव (और बाकी) पांय अजव लिये. “कमबद्ध अपने परिणामोंसे उत्पन्न होता हुआ अजव ही है..” आहाहा ! रजकषा (-पुद्गल), आकाश, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, (काल) आदि पांयों जड हैं. भगवानने छ द्रव्य देजे. (उसमें) जवकी अेक बात कही (और) बाकी पांय अजव हैं. वह भी कमसर (जो) पर्याय जिस समयमें होनेवाली है वह पांय द्रव्यमें भी होगी. समझमें आया ?

ध्यान रखना, भगवान ! ध्यानसे (सुने तो) नहीं समझमें आये ऐसी यीज नहीं है.

आहाडा ! अरे भगवान ! तेरी ओक समयमें डेवलज्ञान लेनेकी ताकत है, नाथ ! उसे यह समयमें नहीं आवे ? (यह कैसे हो सकता है ?) वह ऐसा मान लेता है कि, 'यह सब सूक्ष्म है, यह भुजसे समझ नहीं जायेगा' (ऐसा अतिप्राय) समझने नहीं देता है. आहाडा ! भगवान आत्माको नहीं समझमें आये ऐसी बात कहां है ? प्रभु ! आहाडा ! वह बात तो कही थी न कि, वृद्ध आदमीको तृषा लगी हो तो घरमें दो हजरका घोडा हो, बैल हो तो उसको कहेगा कि पानी लाव, जल लाव ? आठ सालकी लडकी होगी तो उसे कहेगा कि, 'बेना ! जल लाव, पानी लाव' क्योंकि मैं जो कहता हूं वह समझेगी. घोडा और बैल नहीं समझेंगे. वैसे आचार्य कहते हैं कि, मैं कहता हूं वह शरीर और रागको नहीं कहता हूं. मैं आत्माको कहता हूं. जो समझे उसे मैं कहता हूं. ऐसी बातें हैं, भगवान ! जो समझ सके उसको मैं समझता हूं. रागको, व्यवहारको और जडको नहीं कहते हैं. आहाडा ! ऐसे आचार्य कहते हैं कि तुम समझ पाओगे. आहाडा !

कुंदकुंद आचार्यने समयसार पांचवी गाथामें वहां तक कहा है, "तं एयत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो सविहवेण ।" मैं मेरे निज वैभवसे समयसार कहूंगा. यह सारा शास्त्र तो रहस्यसे भरा है. मैं एयत्तविहत्तं ॐ मेरे स्वभावसे ओकत्व है और रागसे विभक्त है, ऐसी मैं बात कहूंगा. ऐसा दिया है. "तं एयत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो सविहवेण । जदि दाएज्ज..." आहाडा ! यदि रागसे पृथक और स्वभावसे अपृथक ऐसी बात तुमको दिभाऊ तो, "जदि दाएज्ज पमाणं..." थोड़ी गंभीर भाषा है. प्रभु ! तुम अनुभवसे प्रमाश करना, ऐसा कहते हैं. आहाडा ! दो बार 'दाएज्ज' आया है. ओकबार ऐसा कहा है कि "तं एयत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो" अपने वैभवसे दिभाऊंगा. प्रत्येक पदमें बहुत गंभीर भाषा है. बादमें तीसरे पदमें (कहा), "जदि दाएज्ज" यदि दिभानेवाली वाणी आदि आ गई (तो) प्रमाश करना, प्रभु ! प्रमाश माने अकेली 'हां' नहीं. मेरी वाणीको अनुभवसे प्रमाश करना. आहाडा ! समझमें आया ? दिगंबर संतोंकी वाणी, रामबाण वाणी है. आहाडा ! समझमें आया ?

यहां कहते हैं "अज्जव भी कमबद्ध अपने परिणामोंसे उत्पन्न होता हुआ अज्जव ही है, ज्व नहीं. क्योंकि जैसे सुवर्षाका कंकण आदि परिणामोंके साथ तादात्म्य है." सोनेकी कुंडल, कडा आदि जो पर्याय होती है (उसमें) सोना उस पर्यायसे तादात्म्य है. सोना कंकण आदिसे तादात्म्य स्वरूप है. ऐसे भगवान आत्मा और जडमें जो पर्याय कमसर उत्पन्न (होती है) उसके साथ वह द्रव्य तादात्म्य है. अग्नि जैसे उष्णताके साथ तादात्म्य है, वैसे (आत्माकी) पर्याय आत्माके साथ तादात्म्य है, तत् स्वरूप है.

ज्वकी पर्याय कमसर होती है वह भी ज्वके साथ तद्द्रूप और तन्मय है और अज्वकी पर्याय जो उस समयमें होती है, वह अज्वके साथ तन्मय-तद्द्रूप-तादात्म्य है. आहाडा ! समझमें आया ? इस (टीकामें) तो बड़ी व्याख्या है. यहां तो अपने थोडा कहना था. गाथाकी

व्याख्या लंबी है. यहां तो थोड़ी कमबद्धकी व्याख्या कही. कम नियमित यहा निकाला है.

कोई अेक शास्त्री है (वे कहते हैं) कि, कमबद्ध शब्द शास्त्रमें नहीं है. ये तो सोनगढवालोंने निकाला है. लेकिन अब सुना है कि नरम हो गये हैं. आहाहा ! लूल अनादिसे है. उसमें क्या ? लूल हो उसकी विशेषता नहीं. लूलका निकाल करना वह विस्मयता है. समजमें आया ? आहाहा !

यहां कहते हैं कि, अपनी पर्यायमें प्रभुता कमसर होती है. परंतु यह प्रभुता पर्यायको बढल दे, ऐसी शक्तिकी प्रभुता नहीं. ईश्वरता है, प्रभुता है, बल है, सामर्थ्य है परंतु अनंत गुणकी जिस समय, जो पर्याय होती है उसकी वह प्रभुता है. आहाहा ! अपनेमें बल बढत है, प्रभुता है तो पर्याय आगे-पीछे करूं, ऐसा स्वरूप है ही नहीं. समजमें आया ? ऐसी बातें (है) !

यह तो वीतराग त्रिलोकनाथ (जिनेश्वरदेवकी वाणी है). (और) दिगंबर संतोंने तो केवलीओंके पेट भोलकर रभ दिये हैं, भाई !

श्रोता : तो फिर इसमें पुरुषार्थ क्या है ?

पू. गुरुदेवश्री : कहा न कि ऐसी कमबद्धकी पर्यायका निर्णय करते हैं तो पर्यायसे पर्यायमें निर्णय नहीं होता. पर्याय द्रव्यके सन्मुख होती है तब पुरुषार्थ होते ही स्वरूपका निर्णय होता है. यह तो पहले कहा था. समजमें आया ? बापू ! यह तो भगवानकी वाणी—उपदेश ऐसा है. आहाहा ! दया पावो, व्रत करो, भक्ति करो, पूजा करो – ऐसा तो कुंभार भी कहते हैं. कुंभार किसको कहते हैं समजमें आया ?

हमारा जन्म गाम उमरावा है. यहां से ११ मील है. उस समय पांच हजरकी बस्ती थी. हम तो १३ वर्ष वहां रहे. हमारे गांवमें रीवाज था. श्रावण सुदी अेकम आये तो सेठ लोग कुंभार, धांथी के पास प.प सुपारी लेकर जाये. वे पांच सुपारी लेकर जाये तो उनको प्याल आ जाये कि, ये सेठ लोगोंके पर्युषण आनेकी तैयारी है. वे पांच सुपारी दे तो श्रावण सुद १ से घाणी (तिलहन सरसों पेलनेका यंत्र) बंध. मुसलमान धांथीकी घाणी बंध कर दे. कुम्हार निंत्माडा (मटके बनानेका यक्का) (बंध कर दे) समजमें आया ? ऐसा रिवाज था. ये तो कुम्हार भी छूट्टी रभते हैं. अेक मछिना और पांच दिन निंत्माडा नहीं करना, घाणी नहीं करना. और बादमें भी शर्त चलती थी कि, भादो सुदी पंचमी तक तो (धंधा शुरु) नहीं करे. बादमें कौन पहले शुरु करता है ? (ऐसा देभते थे). (उसमें) छठ, सप्तमी, अष्टमी यदी जाये. हमारे गांवमें ऐसा चलता था. अरे..! वैसी घाणी पेलना तो मुसलमान भी बंध कर दे और कुम्हार निंत्माडा बंध कर दे. ये कोई नयी चीज है ? समजमें आया ? वैसा तो मुसलमान भी करते हैं. आहाहा !

यहां तो तीनलोकके नाथकी वाणी तो जिसको अंदरमें आत्माका ध्यान करना हो उसके

लिये है. ये दया पावो, व्रत करो ऐसा नहीं. उसे ज्ञानमें जाननेमें आता है, परंतु वह जाननेके लिये आता है. वह चीज करने लायक है, इसलिये आता है, ऐसा है नहीं. समझमें आया ?

(यहां) कहते हैं कि, प्रभुताकी शक्ति अपने अखंड प्रतापसे शोभित है, आहाहा ! उत्पाद्-व्यय-ध्रुव नामकी शक्तिके सकारे, उसका रूप (होनेसे) अनंत गुणकी प्रभुतामें जिस समयमें जो पर्याय स्वतंत्ररूपसे उत्पन्न होती है, उससे वह शोभायमान है. उसका प्रताप कोई भंड कर सके, फेरफार कर सके और स्वतंत्रताको कोई परतंत्र कर दे, ऐसी किसीकी ताकत जगतमें है नहीं. ऐसी बात है, भाई !

श्रोता : हम जल्दी मोक्षमें नहीं जा सकते ?

पू. गुरुदेवश्री : किसने कहा (जल्दी नहीं जा सकते) जल्दी, एक समयमें जा सकते हैं. अपने स्वभाव सन्भुषका जोर दिया तो उस समयमें केवलज्ञान होनेके समय तो केवलज्ञान होगा ही. आहाहा !

श्रोता : उसके लिये क्या शर्त है ?

पू. गुरुदेवश्री : शर्त कही न ? अंदर पुरुषार्थ करे तो (होगा). आहाहा ! ऐसा वीतरागका मार्ग, अरे..! सुननेको नहीं मिले. अरे..! वह क्या करे ? अरे..! दुःखी प्राणी यार गतिमें — धाड़ीमें (तिलहन सरसों पेलनेका यंत्र) तिलको पेलते हैं, वैसे अनादिसे आत्मा राग-द्वेषमें पला जाता है. राग और द्वेषमें आनंदको पेल देता है.

यहां कहते हैं कि, जहां कमबद्धका निर्णय हुआ तो उसको आनंदकी पर्याय उत्पन्न होती है उसका निर्णय द्रव्य पर जाता है. समझमें आया ? उसकी पर्यायमें कमबद्धके निश्चयके कालमें द्रव्य स्वभाव पर दृष्टि होनेसे कमबद्धमें आनंदकी पर्यायका कम है, आहाहा ! सूक्ष्म भातें हैं, समझमें आया ? भाषा तो बहुत सादी है. भाव भले सूक्ष्म हो. आहाहा ! प्रभुत्व शक्तिकी ऐसी व्याख्या नहीं (है) कि, जो पर्याय होनेवाली है उसे न करे और दूसरी पर्याय उत्पन्न हो, ऐसा नहीं है. समझमें आया ? वस्तुका स्वरूप ही ऐसा है.

पहले अकवार कहा था. हमारे सज्जाय आती थी. श्वेतांबरमें यार सज्जाय आती है. अक-अक सज्जायकी किताबमें २००-२५० सज्जायमावा और अक-अक सज्जायमें ८-१०-१५-२० श्लोक (होते हैं). ऐसी अक-अक करके यार सज्जायमावा है. हमको तो गृहस्थाश्रममें निवृत्ति थी ना. पिताजीकी दुकान थी. बादमें मैं भी दुकान चलाता था. (लेकिन) निवृत्ति थी. तो यारों पुस्तक पढ़े. समझमें आया ? उसमें भी यह आया था. 'सहजानंदी रे आत्मा, सुतो कांई निश्चित रे' प्रभु ! तुने आत्माकी चिंता कैसे छोड दि ? और तू राग और पुण्य-पापकी चिंतामें जो गया. आहाहा ! 'सहजानंदी रे आत्मा, सुतो कांई निश्चित रे, मोड तणा रणिया भमे' राग और पुण्य-पाप भेरा है (ऐसा) मोडका रंग (वह) तेरा बडा करजा है. आहाहा ! 'मोड तणा रणिया भमे, जाग, जाग रे भतिवंत रे' अरे प्रभु! जाग न

अब. अनादिसे रागमें सोया है. 'जाग जाग रे मतिवंत रे, लूँटे जगतना जंत रे' स्त्री कहे कि, 'हमसे क्यों शादि की थी ? हम जवान औरत है और तुम (हमारा) भोग लेते नहीं हो. छोड़कर बैठे हो, तो (कोई) वृद्धके साथ शादी करनी थी न' ऐसा कहे. समजमें आया ? 'लूँटे जगतना जंत रे' सब लूटनेवाले छकट्टे हुआ हैं. नियमसारमें पाठ है. धुतारेकी टोली तुजे मिली है. स्त्री, पुत्र, कुटुंब सब धुतारेकी टोली मिली है. आञ्चविकाके लिये धुतारेकी टोली मिली है. (वे ऐसा कहते हैं) हमारा कुछ साधन नहीं किया. हमें बराबर वस्त्र देना, गहने लाना (यह कुछ नहीं किया). गहने समझे न ? ये गाय और घोडेको गहने पहनाते हो और हमको कुछ नहीं ? ऐसा कहकर तुजे ताना मानकर लूटारे तुजे लूटेंगे. सारी दुनियाको देखा है. नाये नहीं है परंतु नायनेवालेको देखा तो है. आहाहा ! 'लूँटे जगतना जंत, विरला कोई उगरंत' ऐसा शब्द उसमें है. कोई विरल उगरते (बयते) हैं (और) अपने स्वभावके साधनमें जाते हैं. 'सहजानंदी रे आतमा' आहाहा ! वांचनमें अक यह बात आयी थी और अक दूसरी बात भी आयी थी. 'केवणी आगण रही गयो कोरो' कोरा समझे ? तुम समवसरणमें केवलज्ञानीके पास गये थे फिर भी लुभा रह गया. शून्य-रिक्त आ गया. समजमें आया ?

हमारा तो श्वेतांबर शास्त्रका अभ्यास था. घरकी दुकान थी, निवृत्ति थी और घरमें छोटी उमरमें (हमको) भगत कहते थे. हम दुकान पर बैठते थे. बादमें भागीदार दुकान पर आवे तो हम शास्त्र पढते थे. वहां यह पढते थे. आहाहा ! अरे.. ! इस जगतके प्राणी तुजे लूट रहे हैं, भाई ! तेरी यीजकी समजके बिना तेरा माहात्म्य तुजे आता नहीं. अंदर आनंदका नाथ भरा है, वहां आनंद मानता नहीं और परमें - लूटारोंमें आनंद मानता है, आहाहा !

यहां कहते हैं, अपने तो आज वह लेना था कि, कमबद्धमें पुरुषार्थ कहां रहा ? जिस समयमें जो (पर्याय) नियत कमसे होगी और भगवानने देखा वैसा होगा. भगवान तो ज्ञायक हैं, वे तेरी पर्यायके कर्ता नहीं हैं. वे तो निमित्त हैं. लोकालोकमें केवलज्ञान निमित्त है और केवलज्ञानमें लोकालोक निमित्त है. वहां केवलज्ञानकी पर्यायको लोकालोकने बनाई है ? और लोकालोक केवलज्ञानकी पर्यायसे बना है ? क्या (कहा) समजमें आया ? सर्वविशुद्ध (अधिकारमें) यह बात है कि, केवलज्ञानकी पर्याय लोकालोकको निमित्त है. निमित्तका अर्थ उपस्थिति थी परंतु केवलज्ञानकी पर्यायने लोकालोक उत्पन्न नहीं किया. वैसे लोकालोक केवलज्ञानकी पर्यायमें निमित्त है - तो लोकालोकने केवलज्ञानकी पर्याय उत्पन्न की है, ऐसा नहीं है. आहाहा ! निमित्तका अर्थ (संयोगमें पदार्थ) है, छतनीसी बात है. इससे परमें कुछ होता है, (ऐसा नहीं है).

यह भी बड़ी गडबड है ना अभी ? 'निमित्तसे होता है, कर्मी निमित्तसे होता है' बिलकुल ठूठ बात है. समजमें आया ? यह कमबद्धकी व्याख्या, निमित्तसे होता है, व्यवहारसे

નિશ્ચય હોતા હૈ ઐસી પાંચ બાતમેં (વિરોધ) હૈ. અભ છટ્ટી બાત અભી નિકલી હૈ કિ, પર્યાયમેં અશુદ્ધતા હો તો દ્રવ્ય ભી અશુદ્ધ હો જાતા હૈ. કહતે હૈં કિ 'પર્યાયમેં જબ શુભાશુભ ભાવ આદિકી અશુદ્ધતા હો તો દ્રવ્ય ભી અશુદ્ધ હો જાતા હૈ.' તીન કાલમેં નહીં (હોતા). દ્રવ્ય તો તીન કાલમેં શુદ્ધ પરમાત્મરૂપ બિરાજ રહા હૈ. પર્યાયમેં અશુદ્ધતા હો તો વહ ક્ષણિક પર્યાયકી હૈ. દ્રવ્યમેં અશુદ્ધતા કહાંસે ઘુસ ગઈ ? પંચાધ્યાયીમેંસે ઐસા અર્થ નિકાલા હૈ. પંચાધ્યાયીમેં તો ઐસા એક શ્લોક હૈ કિ, શુભભાવ દુષ્ટ હૈ. દુષ્ટ પુરુષકી ભાંતિ શુભભાવ દુષ્ટ હૈ. ઐસા શ્લોક હૈ. ઉસકા અર્થ ક્યા હૈ ? ઔર કોઈ વિદ્વાન ઐસા કહતે હૈં કિ, શુભભાવ હો તો મોક્ષકા માર્ગ હૈ. ઐસા અભી આયા હૈ. કહો અભી ઐસા હોતા હૈ ક્યા ? પંચાધ્યાયીમેં એક શ્લોક ઐસા હૈ કિ, શુભભાવ દુષ્ટ પુરુષકી ભાંતિ દુષ્ટ હૈ. દુષ્ટ પુરુષકા ઉપદેશ જૈસે દુષ્ટ હૈ વૈસે શુભભાવ દુષ્ટ હૈ. આહાહા !

યહાં કહતે હૈં કિ, તેરી પ્રભુતા શક્તિકો ધરનેવાલા ભગવાન પર જૈસે હી દૃષ્ટિ પડતી હૈ તો કમસર કેવલજ્ઞાન આદિ પર્યાય જિસ સમય હોનેવાલી હૈ, વહ હોગી હી. યે તેરા પુરુષાર્થ હૈ. સમજમેં આયા ? વિશેષ કહૈંગે....



અભેદના અનુભવમાં ભેદ દેખાતો નથી. અને જો ભેદ દેખાય તો
અભેદનો અનુભવ રહેતો નથી. (પરમાગમસાર-૬૧૮)

प्रवचन नं. १०

शक्ति-८, ९ - ता. २०-०८-१९७७

सर्वभावव्यापकैकभावरूपा विभुत्वशक्तिः ॥८॥
विश्वविश्वसामान्यभावपरिणतात्मदर्शनमयी सर्वदर्शित्वशक्तिः ॥९॥

समयसार, शक्तिका अधिकार यलता है. सात वीं प्रभुत्व शक्ति आ गई. क्या कहते हैं ? जो यह आत्म पदार्थ है – आत्म वस्तु, वह तो कर्म, शरीर आदिसे भिन्न थीज है. अनादिसे भिन्न थीज है और अंदरमें पुण्य-पापका विकल्प जो राग है, उससे भी भिन्न है, परंतु अपनी अनंती शक्तिसे अभिन्न है. आहाहा ! समझमें आया ? यह शक्तिका वर्णन है. आत्मद्रव्य है उसमें अनंत शक्तियां हैं. सात शक्ति तो आ गई. अक-अक शक्तिमें अनंती शक्ति है और अक-अक शक्ति अनंत पर्यायरूप होती है. ऐसी (जो) अनंत शक्ति (है) इसमें आज विभु शक्ति आती है. सात तो हो गई. ये शक्तियोंका पार नहीं, (ऐसी) अपार थीज है.

“सर्व भावोंमें...” क्या कहते हैं ? देओ ! आत्म वस्तु है इसमें सर्व भाव नाम अनंत शक्तियां हैं. उसे भाव कहते हैं. ज्ञान, दर्शन, आनंद, ज्वतर, यैतन्य ऐसी अनंत शक्तिको यहां भाव कहते हैं. आहाहा ! भावमें चार प्रकार हैं. द्रव्यको भाव कहते हैं, शक्तिको भाव कहते हैं, पर्यायको भाव कहते हैं और रागको भी भाव कहते हैं. आहाहा ! समझमें आया ? यहां त्रिकाली शक्तिको भाव कहते हैं. जैसे आत्मा त्रिकाल है वैसे ज्ञान, प्रभुत्व शक्ति आदि अनंत शक्तियोंको यहां भाव कहते हैं. कहते हैं कि, “सर्व भावोंमें व्यापक....” अन्य (लोग) ऐसा कहते हैं कि, यह आत्मा सर्व व्यापक है. (लेकिन) ऐसा नहीं (है). परंतु आत्मा अनंत शक्तिमें व्यापक है, यह विभु है.

भक्ताभर (स्तोत्रमें) विभु आता है. यह प्रश्न अकबार यला था. (अक) वेदांतके अब्यासी थे. लगभग ६ ह्री साल होगी, तो (उन्होंने कहा) यह आत्मा विभु है न ? (ऐसा) विभुका प्रश्न हुआ. विभु तो सर्व व्यापक है. (लेकिन) ऐसे नहीं. यह विभु तो भक्ताभरमें आया है वही विभु शक्तिकी बात है.

अनंत शक्तिमें “सर्व भावोंमें व्यापक जैसे एक भावरूप...” सर्व भावोंमें व्यापक (है). परंतु विभु शक्ति अेकरूप है. सर्वमें व्यापक है तो अनंत रूप नहीं हो गई. समझमें आया ? “जैसे, ज्ञानरूपी अेक भाव सर्व भावोंमें व्यापक होता है...” आहाहा ! ज्ञान शक्ति सर्व भावमें व्यापती है. जैसे दर्शन शक्ति सर्व भावमें व्यापती है. जैसे आनंद शक्ति सर्व भावमें व्यापती है, जैसे वीर्य शक्ति सर्व भावमें व्यापती है. यहां ज्ञानका दृष्टांत दिया है. ज्ञान सर्व भावमें व्यापता है. अनंत शक्तियां हैं उसमें ज्ञान सर्वांग तिरछा (है). पर्याय है यह कमसर है और शक्ति है यह तिरछी – अेक साथ है. ज्ञान सर्व भावमें वर्तमानमें अनंत शक्तिमें व्यापक है.

यहां अतलाना यह है कि, शक्ति है अैसा ज्ञान कराना बादमें शक्तिवान और शक्तिका त्तेद निकालकर (अत्तेदकी दृष्टि करना). यह शक्तिवान आत्मा है, वह त्ती व्यवहार हुआ. निश्चय अकेला अत्तेद हुआ. सूक्ष्म बात है. ‘यह शक्तिवान आत्मा’ अैसा त्तेद हो गया. शक्ति अतलाते हैं (तो) उसकी शक्तिका-स्वभावका सामर्थ्य अतलाते हैं. द्रव्य शक्तिवान (है और) गुण शक्ति (है). शक्ति और शक्तिवानका त्तेद करना वह त्ती सम्यग्दर्शनका विषय नहीं. आहाहा ! सूक्ष्म बात है, त्ती !

सम्यग्दर्शनका विषय तो शक्तिवान जो अत्तेद अकेला है, वह सम्यग्दर्शनका विषय है. जिसको सम्यग्दर्शन प्रगत करना हो उसको शक्तियां हैं अैसे जानना, परंतु शक्ति और शक्तिवान अैसा त्तेद त्ती दृष्टिमेंसे छोड देना, आहाहा !

अेक दूसरी बात कि, जो यह ज्ञान शक्ति है वह ज्ञान सर्वमें व्यापक है. ज्ञानकी कमअद्ध पर्याय होती है. ज्ञानमें त्ती कमसर पर्याय होती है. अेक के बाद अेक, अेक के बाद अेक. तो सर्व गुणकी पर्याय त्ती अेक के बाद अेक कमअद्ध होती है. कुछलोग तो अैसा कहते हैं, केवलज्ञानकी अपेक्षासे नियत कमसर पर्याय है, वह अराअर है. केवलज्ञान है (उसकी अपेक्षासे) पर्याय कमसर ठीकती है, उस अपेक्षासे कमअद्ध अराअर है. परंतु श्रुतज्ञानकी अपेक्षासे कमअद्ध अराअर नहीं, अैसा प्रश्न था. जाणिया यर्यामें है. समझमें आया ?

यहां तो भावश्रुतज्ञानकी बात चलती है. आहाहा ! शक्ति और शक्तिवानका त्तेद छोडकर दृष्टि होती है तब उसको भावश्रुतज्ञान होता है. यह भावश्रुतज्ञान त्ती कमअद्धको मानता है. क्योंकि भावश्रुतज्ञान केवलज्ञानके अनुसारी होता है. केवलज्ञान मानते हैं कि (पर्याय) कमसर होती है और श्रुतज्ञानमें अैसा नहीं, अैसा पंडित लोग कहते हैं. जाणिया यर्यामें अैसा (प्रश्न) उठाया है.

यहां तो कमअद्धकी बात पहलेसे हो गई थी. उसकी यर्या तो बादमें हुई. यह तो २० वर्ष पहले काशीमें कहा था. त्तीया ! प्रत्येक द्रव्यकी पर्याय जिस समयमें होती है उसी समयमें (वह होती है) और दूसरे समयमें दूसरी (होती है). कमअद्ध (पर्याय) है इसमें

आगे-पीछे (नहीं होती). आगे-पीछेकी व्याख्या क्या ? समझमें आया ? जैसे मोतीकी मालामें जहां-जहां मोती है, वहां-वहां है; वही आगे-पीछे होवे तो मोतीका डार तूट जायेगा. समझमें आया ? सूक्ष्म बात है. (कमबद्धकी बात सुनकर) विद्वानोंने विरोध किया कि, कमबद्ध नहीं (है). (पर्याय) एक के बाद एक होगी परंतु एक के बाद यही होगी और यही होगी, ऐसा नहीं. एक के बाद एक होनेवाली है वही होगी. समझमें आया ? क्षणिक उपादानकी अवस्था कमसर जो पर्यायमें होती है, वही होगी.

(आत्मामें) अनंत शक्तियां हैं, उसमें विभुत्व शक्ति व्याप्त है तो अनंत शक्तियां कमबद्ध परिणामन करती हैं, आहाहा ! फिर भी वह शक्ति और शक्तिवान (ऐसे भेदकी) दृष्टि छोड़कर अभेदकी दृष्टि करना. निश्चयसे तो त्रिकाली शक्ति और शक्तिवान ऐसा ज्ञानकी पर्यायमें ज्ञेयरूप आया और प्रतीतमें भी आया तो यह प्रतीतकी पर्याय द्रव्य-गुणने की, ऐसा है नहीं. समझमें आया ? विभु शक्ति है यह सर्व गुणमें व्यापक है तो ज्ञान भी विभु हुआ. और उसकी पर्यायमें (जब) कमसर पर्याय होती है तो अनंत गुणकी (पर्याय) साथमें कमसर होती है. (विभुत्व शक्ति) व्यापक है न ? विभुत्व पर्याय भी अनंत पर्यायमें व्यापक है. आहाहा ! ऐसा मार्ग (है) ! द्रव्य, गुण और पर्याय तीन चीज है. (उसमें) द्रव्य जो है वह तो पूर्ण शक्तिवान है और गुण है, यह शक्ति है और उसका बहलना-पलटना-परिणामन होना यह पर्याय है. यहां तो कहते हैं कि, यह विभुत्व शक्ति सर्व गुणमें व्यापक है तो पर्यायमें भी जो अनंत पर्याय होती हैं, उसमें विभु शक्तिकी पर्याय भी व्यापक है.

कोई ऐसा कहे कि, कमबद्ध पर्यायमें तो नियत हो जायेगा. तो (यहां) कहते हैं कि, नियत ही है. (लेकिन) किस अपेक्षासे ? जैसे द्रव्य, गुण नियत है कि नहीं ? निश्चय है कि व्यवहार है ? द्रव्य और शक्तियां यह निश्चय है और नियत है तो पर्याय भी नियत है. समझमें आया ? पर्याय भी नियत (अर्थात्) जिस समय जो होगी वह होगी. कमबद्धका निर्णय करनेवालेकी दृष्टि ज्ञायक उपर जाती है, आहाहा ! शुद्ध स्वरूप त्रिकाल भगवान उस पर दृष्टि जाये तब उसको कमबद्धका निर्णय यथार्थ होता है. समझमें आया ?

यह पंडित लोग ऐसा कहते हैं कि, केवलज्ञानकी अपेक्षासे तो नियत कम है, वह (बात) तो बराबर है. परंतु श्रुतज्ञानकी अपेक्षासे नहीं. क्योंकि छद्मस्थका श्रुतज्ञान है और अल्प ज्ञान है तो वह तो जिस समय पुरुषार्थ करेगा उस समयमें होगी. कमसर होगी ऐसा उसमें नहीं. ऐसी बात जूठी है. समझमें आया ? सूक्ष्म बात है. अंदर पुरुषार्थ करना पड़ेगा, ऐसे नहीं चलता.

श्रोता : अमृतयंद्रायार्यदेवने अनियतनय कहा है.

पू. गुरुदेवश्री : ४७ नयमें अनियतका अर्थ क्या ? कालनय और अकालनयका (स्पष्टीकरण) कल किया था. कालनयसे मोक्ष है और अकालनयसे मोक्ष है, उसका अर्थ क्या ? नियतके

साथ अनियत स्वभाव, पुरुषार्थ आदि (है) उसको अनियत कहते हैं. आगे-पीछे होता है, उसका प्रश्न है ही नहीं.

एक प्रश्न तो यह आया है. पंचास्तिकायमें १५५ गाथा है (उसमें) नियत-अनियत दो है, (ऐसा विभा है). पंडित लोग ऐसा कहते हैं कि, देओ ! 'नियत भी है और अनियत भी है'. तो वहां ऐसा अर्थ नहीं है. वहां तो नियत नाम गुणकी पर्याय जो होती है, वह नियत है. समझमें आया ? और दूसरी पर्याय जो अंदर नियत है (वह) तो नियत है परंतु स्वभावकी पर्याय, पुरुषार्थकी पर्याय अनियत है. अनियत नाम वह नियत नहीं. परंतु है तो नियतमें. समझमें आया ?

पंचास्तिकायमें १५५ (गाथा) देओ.

“जीवो सहावणियदो अणियदगुणपज्जओघ परसमओ।

जदि कुणदि सगं समयं पवस्सदि कम्मबंधादो।। १५५

“निजभाव नियत अनियत गुणपर्याय...” ऐसा पाठ है. उसका अर्थ ऐसा करते हैं कि, पर्याय अनियत है और नियत भी है, दोनों हैं. ऐसा पाठ वहां है नहीं. वहां क्या है ? देओ ! ‘ज्व, (द्रव्य अपेक्षाओ) स्वभावनियत होवा छांतां,...’ अनियत गुण-पर्यायसे अनियत है. यानी गुणसे जो अकल्प वस्तु है उसकी पर्याय अनियत (है). यानी विकारी पर्याय जो होती है उसको अनियत कहते हैं और निर्विकारी (पर्याय) और गुण उसको नियत कहते हैं. ऐसा अर्थ है. उसमें नियत-अनियत शब्द पडा है. नियतका अर्थ स्वभाविक पर्याय (और) अनियतका अर्थ विभाविक पर्याय. नियत-अनियतका अर्थ कम और अकम, ऐसा है नहीं.

“संसारी ज्व, (द्रव्य अपेक्षाओ) ज्ञानदर्शनमां अवस्थित होवाने लीधे स्वभावमां नियत (-निश्चणपणो रडेलो) होवा छांतां,...” स्वभाव तो नियत है. “ज्यारे अनादि भोडनीयना उदयने अनुसरीने परिणति करवाने लीधे उपरक्त उपयोगवाणो (- अशुद्ध उपयोगवाणो) होय छे त्यारे (पोते) भावोनुं विश्वरूपपणुं (- अनेकरूपपणुं) ग्रह्युं होवाने लीधे तेने जे अनियतगुणपर्यायपणुं होय छे ते परसमय अर्थात् पर्यारित्र छे.” उसे अनियत गुणपर्याय कहनेमें आता है. विकारी पर्यायको अनियत कहनेमें आती है. अनियतका अर्थ अकम, ऐसे नहीं. शास्त्रके अर्थ करनेमें बड़ी मुश्किल है. समझमें आया ? (इसका आधार देकर कहते हैं) देओ ! १५५ गाथामें अनियत (कहा) है. ‘अनियत यानी कम नहीं, अकम है. कम और अकम दोनों अनेकांत हैं’, ऐसा अर्थ है ही नहीं.

अनियत नाम पानीका स्वभाव ठंडा है, यह नियत है. (पानी) उष्ण है – यह अनियत है. वहां ऐसी बात है. बहुत सूक्ष्म बात है, बापू ! वहां तो अक-अक श्लोकका अर्थ हो गया है. परंतु लोगोंको (स्वयंके) पूर्वके आग्रहके (कारण) वह बात थी नहीं.

જૈન તત્ત્વ મિંમાસામં (સામનેવાલે પક્ષને દલિલ કી હૈ), જબસે પ્રમુખપને કમબદ્ધકી ખાત બાહર આયી હૈ, તબસે કેવલજ્ઞાનકો માનનેવાલે ભી શંકા કરને લગે. ઔર ખાણિયા ચર્યામં ભી (સામનેવાલે પક્ષને) ઐસા કહા કિ, જિનવાણી ઔર મહાપુરુષને જો કમબદ્ધકા સ્વતંત્રતાકા ઢંઢેરા પીટા હૈ, તબસે જગતમં કેવલજ્ઞાનમં ભી શંકા હો ગયી કિ, કેવલજ્ઞાન હૈ વહ જહાં જો પર્યાય હોગી ઐસા દેખતે હૈં. વહ પર્યાય ઉસ સમય હોગી. તો ઉસમં તો કમબદ્ધ હો ગયા. ઔર ખાણિયા ચર્યામં પંડિતને તો કબૂલ કિયા હૈ કિ, કેવલજ્ઞાનકે હિસાબસે તો કમનિયત હૈ હી પરંતુ શ્રુતજ્ઞાનકી અપેક્ષાસે (કમબદ્ધ) નહીં હૈ. ઐસા કહતે હૈં.

(ઉસકે સામને) પ્રશ્ન હૈ કિ, શ્રુતજ્ઞાન કેવલજ્ઞાનીકે અનુસારીકા હૈ કિ કલ્પનાકા હૈ ? સમજમં આયા ? અગર કેવલજ્ઞાનકે અનુસારીકા શ્રુતજ્ઞાન હૈ તો કેવલજ્ઞાન માનતા હૈ ઐસા શ્રુતજ્ઞાન ભી જાનતા-માનતા હૈ. આહાહા ! અરેરે...! મૂલ ખાતકી ખબર નહીં ઔર ધર્મ...ધર્મ...ધર્મ... હો ગયા. બાહરમં શુભ કિયા કર લી (તો) ધર્મ હો ગયા. ધૂલમં ભી ધર્મ નહીં હૈ, ભાઈ ! આહાહા ! ઐસે શુભભાવ તો અભવિને ભી અનંત બાર કિયે હૈં. વહ તો બંધકા કારણ હૈ. શક્તિ ઔર શક્તિવાન જૈસે નિયત હૈ વૈસે પર્યાય ભી નિયત હૈ. ઐસા નિર્ણય કરનેવાલા-દ્રવ્ય પર દૃષ્ટિ કરનેસે ઐસા નિર્ણય હોતા હૈ, આહાહા ! સમજમં આયા ? સૂક્ષ્મ ખાત હૈ.

ઇસમં અભ્યાસ કરના પડેગા, ઐસે અદ્ધરસે (ઉપર-ઉપરસે) નહીં ચલતા. આહાહા ! અરે..! ઐસા મનુષ્યપના મિલા (ઉસમં) સર્વજ્ઞ વીતરાગ જિનેશ્વર દેવ ક્યા આજ્ઞા કરતે હૈં ઔર કેસા વસ્તુકા સ્વરૂપ હૈ ? ઐસા નિર્ણય ન કરે તો ઉસકા ક્યા હોગા ?

શ્રોતા : અભ્યાસકા ક્રમ આયેગા તબ પુરુષાર્થ કરેંગે.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : અભ્યાસકા ક્રમકા પુરુષાર્થ કરેગા તબ ક્રમ આયેગા. સમજમં આયા ? કાલલબ્ધિ હૈ કિ નહીં ? શાસ્ત્રમં કાલલબ્ધિ હૈ કિ, જિસ સમયમં (પર્યાય) હોગી વહ કાલલબ્ધિ હૈ. સ્વામી કાર્તિકેયમં ઐસા પાઠ હૈ. ઇઓં દ્રવ્યકી કાલલબ્ધિ કહી હૈ. કાલલબ્ધિકા અર્થ ઇઓં દ્રવ્યકી પર્યાય જિસ સમયમં જો પર્યાય હોનેવાલી હૈ વહ હોગી. યહ કાલલબ્ધિ હૈ. ઇઓં દ્રવ્યકી (ખાત હૈ). સમજમં આયા ? ઔર પ્રવચનસારમં ભી ૧૦૨ ગાથામં ઐસા કહા કિ, જ્ઞેયકી જિસ સમય, જો પર્યાય હોનેવાલી (હૈ) (વહ ઉસકા) જન્મક્ષણ (હૈ). ઉસકી ઉત્પત્તિકા વહ કાલ હૈ ઔર ૯૯ ગાથામં જ્ઞેય અધિકારમં જ્ઞેયકા સ્વભાવ લીયા. અપને-અપને અવસરે (કાલમં) પર્યાય હોગી. અપને અવસર (કાલ) સિવાય આગે-પીછે નહીં હોગી, ઐસા વહાં લિયા હૈ.

અબ યહાં દૂસરી ખાત, કિ જબ ઐસી પર્યાયમં કાલલબ્ધિ હોતી હૈ તો કાલલબ્ધિકા જ્ઞાન કિસકો હોતા હૈ ? સમજમં આયા ? મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશકકે નવવે અધ્યાયમં પાઠ આયા હૈ. શિષ્યને પ્રશ્ન કિયા હૈ, ‘મહારાજ ! પ્રભુ ! કાલલબ્ધિ હોગા તબ હોગા ? પુરુષાર્થસે હોગા ? સ્વભાવસે હોગા ? કર્મકા અભાવ હોગા તો હોગા. ઇસમં ક્યા હૈ ?’ તો ઉત્તર ઐસા દિયા હૈ કિ,

काललब्धिमें भवितव्यता कोई वस्तु नहीं है. ऐसा कहा है.

ऐसी प्रश्न-यर्था तो ५० वर्ष पहले ८३की सालमें यली थी. दामनगरमें अेक सेठ थे. गृहस्थ थे. सेठ कहे कि, '(अपने) कालमें डोगी... (अपने) कालमें डोगी, अपने पुरुषार्थ क्या करें ?' ऐसा कहा. हमने कहा टोडरमलज्ज क्या कहते हैं ? कि काललब्धि कोई भिन्न वस्तु नहीं. जिस समयमें डोनेवाली डोगी उसका नाम काललब्धि. भवितव्यतामें जिस समयमें भाव डोनेवाला है वह भवितव्यता. परंतु वह कोई चीज नहीं है. जब आत्मा अपना स्वभाव सन्मुख पुरुषार्थ करके कार्य करता है तो काललब्धिका ज्ञान उसे डोता है और उस समयमें काल आया उसका ज्ञान उसे है. काललब्धिकी धारणा करनी है ? न्याय समयमें आया, भाई ? सूक्ष्म है, भैया !

पंचास्तिकायमें १७२ गाथामें ऐसा दिया कि, यारों अनुयोगका तात्पर्य वीतरागता है. (आता) है ? तो वीतरागता कब डोगी ? कि द्रव्यका आश्रय करे तो वीतरागता डोगी. क्या कहा ? शांतिसे समजना, बापू ! यह वीतरागका मार्ग तो सूक्ष्म है. द्रव्यानुयोग, यरज्ञानुयोग, करज्ञानुयोग, कथानुयोग यारों अनुयोगका सार तो १७२ गाथामें वीतरागता कहा. तो वीतरागता कैसे उत्पन्न डोती है ? निमित्तके आश्रयसे (उत्पन्न) डोती है ? रागके आश्रयसे डोती है ? पर्यायके आश्रयसे डोती है ? उसका अर्थ ही यह डो गया कि, स्वका आश्रय करे तो वीतरागता डोगी. यारों अनुयोगमें स्वका आश्रय करना, वह बात यलती है. समजमें आया ? थोडी सूक्ष्म बात है. परंतु भाई ! यह समजना पडेगा, बापू ! यह समजे बिना सख्या ज्ञान भी नहीं मिलेगा तो दृष्टि तो कहांसे डो ? आडाडा ! व्यवहारीक ज्ञान जहां जूठा है (वहां श्रद्धान सख्या कहांसे डोगा ?) परसे डोता है, अकमसे डोता है, यह तो ज्ञान ही जूठा है. परलक्षी ज्ञान भी जूठा है. आडाडा !

यहां कहते हैं कि, पर्यायमें जो अनियत कहा वह तो विकारी पर्यायकी अपेक्षासे कहा. आगे-पीछे डोता है, उस अपेक्षासे अनियत नहीं कहा. ५० वर्ष पहले बडी यर्था डुई थी. दामनगरमें नगरसेठ थे. वहां हमारा यातुर्मास रहता था. वहां द्विगंबर पुस्तकें बहुत रभते थे. (लेकिन) श्रद्धा और दृष्टि विपरत थी. उनके साथ बहुत यर्था डुई कि, काललब्धि है न ? तब (कार्य) डोगा. २४ तीर्थकर उसके कालमें डोते हैं, यकवर्ती उसके कालमें डोते हैं. ऐसा प्रश्न आया. समजमें आया ? तो (हमने) कहा, भाई ! काललब्धि है तो काललब्धिका अर्थ क्या ? काललब्धि है उसका ज्ञान किसको डोता है ? न्यायसे समजना याडिये ना ? कि जिसको ज्ञायक स्वरूप भगवान आत्मा (की दृष्टि डोती है, उसको काललब्धिका सख्या ज्ञान डोता है).

१७२ गाथामें कहा न ? सारे शास्त्रका तात्पर्य वीतरागता है. सारा शास्त्र १२ अंग और १४ पूर्वका तात्पर्य वीतरागता है. तो वीतरागता डोगी कब ? कि जब वीतराग स्वरूप

भगवान् आत्मा है (उसका आश्रय ले तब वीतरागता होगी). आहाहा ! सवेरे कड़ा था न ? 'शुद्धता विचारे ध्यावे, शुद्धतामें केली करे, शुद्धतामें मगन रहें, अमृतधारा वरसे' शुद्ध स्वरूप भगवान् आत्मा ! उसका आश्रय ले तो वीतरागता उत्पन्न होगी. यह यारों अनुयोग और सारे शास्त्रका तात्पर्य द्रव्य स्वरूपका आश्रय लेना, यह तात्पर्य है. समजमें आया ? जब आत्मा अपने पुरुषार्थसे द्रव्यका आश्रय लेता है तब वीतरागता उत्पन्न हुई. सम्यग्दर्शन यह वीतराग पर्याय है. उसमें भी बहुत तकरार है.

सम्यग्दर्शन सराग समकित है, (ऐसा कहते हैं). वह तो समकितिको चारित्रिके दोष सहित कड़ा. समकित तो वीतराग पर्याय ही है. चारित्रिके राग है तो उसको सराग समकित कड़ा. परंतु समकित, सराग है ही नहीं. समकित तो वीतराग पर्याय ही है. समजमें आया ?

यहां कहते हैं कि, काललब्धिके ज्ञानकी धारणा कर ली परंतु यह काललब्धिका यथार्थ ज्ञान किसको होता है ? कि जिसने द्रव्य स्वभाव, शुद्ध चैतन्यधन उसका अवलंबन लिया तो (उसे) वीतरागता उत्पन्न होती है. सारे शास्त्रोंका तात्पर्य तो स्वका अवलंबन लेना, स्वका आश्रय लेना यह मार्ग है. आहाहा ! जब अवलंबन लिया तब पर्यायमें वीतरागता, सम्यग्दर्शन आदि हुआ तो काललब्धि जानी कि इस समयमें (पर्याय) होनेवाली थी, तो जान लिया. और भवितव्यता नाम सम्यग्दर्शन आदिके भाव हुआ वह भवितव्यता है, भाव है. यह भाव भी तब जाननेमें आया कि, इस समयमें यही भाव होनेवाला था और इस समयमें यही काललब्धि थी. स्वभावकी ओर पुरुषार्थ करनेवालेको उसका यथार्थ ज्ञान होता है. आहाहा !

अरे.. भाई ! भगवान् के यारों अनुयोगमें (और) १२ अंग और १४ पूर्वमें यह कहते हैं. वीतरागता भतलाते हैं. तू वीतराग है न ? तो वीतरागता भतलाते हैं. शुरुआतसे वीतरागता उत्पन्न कैसे हो ? ये भतलाते हैं. यह वीतरागता – राग रहित वीतरागता कहांसे उत्पन्न होती है ? कि 'जिन सोहिले है आत्मा, अन्य सोहिले है कर्म, यही वचनसे समज ले, जिन प्रवचनका मर्म.' यहां तो अलग-अलग बात है. कभी सुनी न हो ऐसी बात है. द्विगंबर वाडेंमें (संप्रदायमें) जन्म हुआ हो (किर भी) कुछ खबर नहीं.

जयपुरमें (अके) पंडित ऐसा कहते थे कि, द्विगंबरमें जन्म हुआ वह सम्यक्दृष्टि तो है ही. अब उसको चारित्र लेना, ऐसा कहते थे. अरे.. भगवान् ! प्रभु ! मोक्षमार्ग प्रकाशकमें सातवें अधिकारमें तो यह लिया है कि, जैनमें जन्म हुआ, जैनमें मानते हैं किर भी सूक्ष्म मिथ्यात्व रह जाता है. पांचवा अधिकार अन्यमत (निराकरण) का है. विशेषरूपसे वेदांत, श्वेतांबर, स्थानकवासी सब अन्यमती हैं. जैनमत है ही नहीं. छहवें अधिकारमें कुट्टेव, कुगुरुका, कुशास्त्रका लेख लिया. सातवें (अधिकारमें) द्विगंबर जैनमें जन्म हुआ हो उसको भी मिथ्यात्व क्यों रहता है ? (यह भतलाते हैं). समजमें आया ? आहाहा ! वाडेंमें (संप्रदायमें) जन्म हुआ तो क्या हुआ ? आहाहा !

યહાં કહતે હૈં, વિભુત્વ શક્તિ કે સાથમેં કાલલબ્ધિ ઓર કમબદ્ધકા જ્ઞાન હોતા હૈ. સમજમેં આયા ? ક્યોંકિ વિભુ શક્તિ અનંત ગુણમેં વ્યાપક હૈ. યહ દૃષ્ટાંત દિયા ન ? “જૈસે, જ્ઞાનરૂપી એક ભાવ સર્વ ભાવોમેં વ્યાપ્ત હોતા હૈ.” તો પર્યાયમેં અપના જ્ઞાન જબ હુઆ તો દ્રવ્ય-ગુણમેં—સબ ગુણમેં જ્ઞાન વ્યાપક હૈ હી. (પરંતુ) પર્યાયમેં ભી વ્યાપક હુઆ. સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્રકી પર્યાયકે સાથ જ્ઞાન વ્યાપક હૈ. સમજમેં આયા ? બાત સૂક્ષ્મ પડે બાપૂ ! (લેકિન) ક્યા કરે ?

યહ તો મિથ્યાત્વ જિસકા મૂલ સંસાર હૈ. મિથ્યાત્વ યહી સંસાર હૈ. બાદમેં રાગ-દ્વેષ ઓર અવિરતીભાવ રહતા હૈ, વહ તો અલ્પ સંસાર હૈ. ઉસકી બાત ગિનનેમેં નહીં આયી. આહાહા ! મિથ્યાત્વ સંસાર (હૈ). સ્ત્રી, કુટુંબ, પરિવાર, પૈસા, લક્ષ્મી યહ સંસાર નહીં. વહ તો બાહરકી ચીજ હૈ. સંસાર તો ઉસકી પર્યાયમેં રહતા હૈ. ભૂલ ઓર અભૂલ, મોક્ષમાર્ગ ઓર ભૂલ તો પર્યાયમેં હોતી હૈ. આહાહા ! (ભૂલ ઓર અભૂલ) પરમેં નહીં હોતી હૈ, દ્રવ્ય-ગુણમેં નહીં હોતી હૈ. આહાહા ! અરે..! દિગંબર સંતોંને બહુત સ્પષ્ટ કર દિયા હૈ. પરંતુ અભ્યાસ નહીં ઓર ઉસ ઓરકી રુચિ ઓર ઝુકાવ નહીં. બાહરમેં ઝુકાવ હૈ — યહ ક્રિયા ઓર વહ ક્રિયા.

યહાં કહતે હૈં કિ, છઠ્ઠાં દ્રવ્યકી કાલલબ્ધિ (હોતી હૈ). એક બાત. પ્રવચનસારમેં જ્ઞેય અધિકાર (હૈ). જ્ઞેય શબ્દ યાની છ દ્રવ્ય. જ્ઞેય અધિકારમેં ૧૦૨ ગાથામેં એસા લિયા, જિસ સમય જો પર્યાય ઉત્પન્ન હોગી ઉસકા જન્મક્ષણ—ઉત્પત્તિકા વહ કાલ હૈ, આગે-પીછે નહીં, આહાહા ! જ્ઞેયકા એસા સ્વભાવ હૈ. જયસેનઆચાર્યને તો એસા લિયા હૈ કિ, હમ યહ જ્ઞેય અધિકાર કહતે હૈં પરંતુ યહ અધિકાર સમકિતકા હૈ. આહાહા ! જિસ સમય જો પર્યાય હોગી વહ ઉસ સમયમેં હોગી, ઉસકા વહ જન્મક્ષણ હૈ, એસા સમ્યગ્દૃષ્ટિ પ્રતીત કરતે હૈં. સમજમેં આયા ? વૈસે સમ્યગ્દર્શનકા વિષય ભલે હી અભેદ (આત્મા) હૈ. પરંતુ જબ જ્ઞાનપ્રધાન સમકિતકી વ્યાખ્યા હો તો પ્રવચનસારમેં લિયા હૈ કિ જ્ઞાન ઓર જ્ઞેય દોનોંકી યથાર્થ પ્રતીતિ ઉસકા નામ સમ્યગ્દર્શન (હૈ). સમજમેં આયા ? અકેલે દ્રવ્યકી અભેદ દૃષ્ટિ — વહ દૃષ્ટિકી અપેક્ષાસે બાત હૈ. પરંતુ જબ જ્ઞાનપ્રધાન શ્રદ્ધાન કહના હો તો જ્ઞાન (અર્થાત્) જ્ઞાયક ઓર જ્ઞેય દોનોંકી યથાર્થ પ્રતીતિ યહ સમ્યગ્દર્શન હૈ.

(પ્રવચનસારમેં) ચરણાનુયોગસૂચક ચૂલિકાકી ૨૪૨ ગાથા હૈ. “જ્ઞેયતત્ત્વ અને જ્ઞાતૃતત્ત્વની તથા પ્રકારે (જેમ છે તેમ, યથાર્થ) પ્રતીતિ જેનું લક્ષણ છે તે સમ્યગ્દર્શનપર્યાય છે.” જ્ઞાન પ્રધાન શ્રદ્ધાન હૈ ના ? દૃષ્ટિ પ્રધાન શ્રદ્ધાનમેં તો અકેલે અભેદકી દૃષ્ટિ (આતી હૈ). સમજમેં આયા ? પ્રવચનસારમેં જ્ઞાનપ્રધાન (કથન) હૈ. સમયસારમેં દૃષ્ટિપ્રધાન કથન હૈ. તો કહતે હૈં કિ, જ્ઞેય તત્ત્વ — છ દ્રવ્ય ઓર જ્ઞાયક તત્ત્વ — જ્ઞાયક તત્ત્વ, ઉસકી તથા પ્રકારસે (અર્થાત્), જૈસે હૈ વૈસી યથાર્થ પ્રતીતિ જિસકા લક્ષણ હૈ યહ સમ્યગ્દર્શન પર્યાય હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? ઉસમેં છઠ્ઠાં દ્રવ્યકે જ્ઞેય સ્વભાવમેં જિસ સમય જો પર્યાય હોગી, વહ જ્ઞેયકા સ્વભાવ

હૈ. સમજમેં આયા ? તો પ્રવચનસાર દૂસરે અધિકારમેં આચાર્ય કહતે હૈં કિ, હમ સમકિતકા અધિકાર કહતે હૈં. સમકિતકે અધિકારમેં એસા આયા કિ છ: દ્રવ્ય જો જ્ઞેય હૈં (ઉસકી) જિસ સમય જો (પર્યાય) હોગી સો હોગી, એસા જ્ઞેયકા સ્વભાવ હૈ. સ્વ ઓર પર જ્ઞેયકી યથાર્થ પ્રતીતિ હો ઉસકો સમ્યગ્દર્શન કહતે હૈં. આહાહા ! ભૈયા ! બાત એસી સૂક્ષ્મ હૈ. અભી તો બહુત ગડબડ હો ગઈ હૈ. આહાહા ! ઓર “જ્ઞેયતત્ત્વ અને જ્ઞાતૃતત્ત્વની તથા પ્રકારે અનુભૂતિ....” દેખો ! યહાં જ્ઞાનકે અધિકારમેં અનુભૂતિ લી હૈ. સમજમેં આયા ? પહલે જો શ્રીમદ્મૈસે લિયા થા વહાં ચારિત્રકી અનુભૂતિ થી. ‘અનુભવ લક્ષ પ્રતીત’ તો લક્ષ હૈ યહ જ્ઞાનકી પર્યાય, પ્રતીત શ્રદ્ધાકી પર્યાય (ઓર) અનુભવ ચારિત્રકી પર્યાય.

યહાં દૂસરી (બાત) હૈ. યહાં અનંત જ્ઞેય તત્ત્વ ઓર યહ જ્ઞાયક તત્ત્વ. ‘તથા પ્રકારે અનુભૂતિ જેનું લક્ષણ છે તે જ્ઞાનપર્યાય છે.’ ઓહોહો ! ઉસકા નામ સમ્યક્જ્ઞાનકી પર્યાય – શ્રુતજ્ઞાનકી પર્યાય હૈ. જ્ઞેયમેં અપની-અપની પર્યાયકે કાલમેં પર્યાય હોતી હૈ, એસા તો જ્ઞેયકા સ્વભાવ હૈ ઓર એસા સ્વભાવ નહીં માને તો મિથ્યાદૃષ્ટિ હૈ. સમજમેં આયા ? ઓર “જ્ઞેય અને જ્ઞાતાની જે ક્રિયાંતરથી નિવૃત્તિ...” ક્રિયાંતર યાની અનેરી ક્રિયા. (ફૂટનોટમેં) પહલા બોલ હૈ – અન્ય ક્રિયા. જ્ઞેય ઓર જ્ઞાતા અન્ય ક્રિયાસે નિવૃત્ત હો ઉસકે કારણ હોનેવાલી જો દૃષ્ટા-જ્ઞાતા આત્મતત્ત્વમેં પરિણતિ વહ ચારિત્રપર્યાયકા લક્ષણ હૈ. જ્ઞાન-દર્શનમેં રમણતા વહ ચારિત્ર પર્યાય હૈ. મહાવ્રત, નગ્નપણા વહ કોઈ ચારિત્ર નહીં. આહાહા ! હૈ ? ક્રિયાંતર – અનેરા રાગ (કિ) જો વિકાર હૈ, ઉસસે નિવૃત્તિ. શુભરાગસે ભી નિવૃત્તિ. ક્રિયાંતર – અનેરી ક્રિયાસે નિવૃત્તિ. એસી સ્વરૂપમેં રમણતા યહ ચારિત્ર હૈ. આહાહા ! યહ ‘સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્રાણી મોક્ષમાર્ગ’ હૈ. સમજમેં આયા ?

શ્રોતા : સમ્યગ્દર્શન દો પ્રકારકા હુઆ કિ કથન દો પ્રકારકે હૈં.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : નહીં, કથન દો પ્રકારકે હૈં. જ્ઞાન પ્રધાન ઓર શ્રદ્ધા પ્રધાન. સમજમેં આયા ? આહાહા ! યહાં અપને “સર્વ ભાવોમેં વ્યાપક એસે એક ભાવરૂપ વિભુત્વ શક્તિ.” યે આઠવીં શક્તિ હુઈ. અબ ૯ વીં (શક્તિ).

“સમસ્ત વિશ્વકે સામાન્યભાવકો દેખનેરૂપસે...” સર્વદર્શિત્વશક્તિ થોડી સૂક્ષ્મ હૈ. ઇસમેં ભી થોડા મર્મ હૈ કિ, “સમસ્ત વિશ્વકે...” સમસ્ત વિશ્વ-સારા વિશ્વ – સામાન્યભાવ (અર્થાત્) સામાન્યરૂપસે ભેદ કિયે બિના. યહ જીવ હૈ ઓર યહ જડ હૈ, યહ ગુણ હૈ ઓર (યહ) ગુણી હૈ, પર્યાય હૈ, એસે ભેદ કિયે બિના. “સમસ્ત વિશ્વકે સામાન્યભાવકો દેખનેરૂપસે (અર્થાત્ સર્વ પદાર્થોકે સમૂહરૂપ લોકલોકકો સત્તામાત્ર ગ્રહણ કરનેરૂપસે) પરિણમિત એસે આત્મદર્શનમયી સર્વદર્શી શક્તિ.” આહાહા ! ક્યા કહતે હૈં ? સામાન્ય જો પદાર્થ (ઉસમેં) ‘હૈ’ ઇતના (લેના હૈ). આત્મા હૈ, ગુણ હૈ, પર્યાય હૈ, ‘યહ હૈ’ એસા ભી નહીં. યહાં તો સમજાનેમેં ‘યહ સત્તા હૈ’ એસા ભી નહીં. એસા (ભેદકા) જ્ઞાન હો તો વહ જ્ઞાન શક્તિ હો ગયી. દર્શનમેં એસે

(भेद) नहीं. (मात्र) 'है' ऐसा दर्शनमें होता (है).

आत्मदर्शनमयी सर्वदर्शीशक्ति है न ? क्या कहते हैं ? कोई ऐसा कहते हैं ना कि, सर्वको देखना वह तो उपचार है. अपने सिवा परको देखना वह सब उपचार है. यहां कहते हैं कि, ऐसा नहीं है. एक बात ऐसी है कि, अपनी दर्शनशक्तिका अपनेमें दर्शनरूप परिणामन हो तो उसमें सर्व सत्ताका देखना आता है. परंतु देखनेमें सर्व आया तो वह परका उपचार हुआ -- (कि) सर्व है, तो ऐसा नहीं है. सर्वदर्शनमें आत्मदर्शनमयी शक्ति है. थोड़ी सूक्ष्म बात है, भाई !

सर्व शब्द पडा है न ? सर्वदर्शित्व सबको देखे. सबको देखे तो परको देखे, वह तो असद्व्यूत व्यवहारनय है. परको देखे वह तो असद्व्यूतव्यवहारनय है. यहां सर्वदर्शित्व शक्तिको आत्मदर्शनमयी कहा. यहां परकी बात है नहीं. यहां तो आत्मदर्शनकी सर्वदर्शित्व शक्ति है, ऐसा कहा है. देखो ! यह सर्व शब्द पडा है तो यहां परकी अपेक्षा नहीं. अपनेमें सर्वदर्शि शक्तिका स्वरूप है. वही परिणामित होता है. सर्व आया तो पर आया और परकी अपेक्षा आयी, ऐसा है नहीं. समझमें आया ?

किर से (लेते हैं). सर्व दर्शित्व ऐसा आया न ? सर्व (आया) तो सर्वमें तो पर भी आया, पर आया तो परको देखे वह तो उपचार है. परंतु यहां तो कहते हैं कि, सर्वदर्शि शक्तिका स्वरूप ही अपनेसे है. स्वयंको और परको देखनेरूप परिणामित भूद आत्मदर्शनमयी सर्वदर्शि शक्ति है. परको देखना, यह बात यहां है नहीं. समझमें आया ?

किर से (लेते हैं). सूक्ष्म बात (है), बापू ! वीतरागका मार्ग सूक्ष्म है. यहां कहते हैं कि, समस्त विश्वको सामान्यरूपसे देखे, उसे सर्वदर्शित्व कहा. तो सर्वमें पर आया. पर आया वह तो उपचार है; तो सर्वदर्शिपना उपचारसे है, ऐसा कोई कहते हैं. (तो) ऐसे नहीं (है). सर्वदर्शिपनाका परिणामन अपनेमें हुआ, यह आत्मदर्शनमयी पर्याय है, वह पर दर्शनमयी पर्याय नहीं है. क्या कहते हैं ? समझमें आया ? क्या कहा देखो !

“समस्त विश्वके...” (अर्थात्) सारा विश्व, समस्त अनंत द्रव्य, गुण, पर्याय, लोकालोककी त्रिकाव्येक रूप सत्ता. “समस्त विश्वके सामान्यभाव...” (अर्थात्) भेदरूप नहीं. सामान्य यानी 'है', महासत्ता है. महासत्ताका अर्थ — महासत्ता नामकी शक्ति त्रिभूत है, ऐसा नहीं परंतु सब 'है', 'है' सामान्य. उसे 'देखनेरूपसे...' (अर्थात्) सर्वभावको देखनेरूपसे. अरे..! सूक्ष्म बात (है), बापू ! आहाहा ! “(अर्थात् सर्व पदार्थोंके समूहरूप लोकालोकको सत्तामात्र ग्रहण करनेरूपसे...” (अर्थात्) लोकालोककी उपाति मात्र उसे देखनेरूप. “(ग्रहण करनेरूपसे) परिणामित” यहां सर्वदर्शनमें परिणामित दिया है. परिणामन शक्ति तो है परंतु सर्वदर्शित्व शक्ति है और शक्तिवान द्रव्य है; तो द्रव्य पर दृष्टि होनेसे सर्वदर्शित्वका परिणामन हुआ. सर्वदर्शित्व (शक्तिका) परिणामन हुआ वह आत्मदर्शनमयी है. सर्वदर्शनमयी यानी सर्वमें पर

आया, ऐसा है नहीं। समझमें आया ? ऐसी बातें (हैं)। साधारण बेयारी औरतोंको तो जाना पकानेसे दुरसद नहीं होती। बच्चोंको संभालने होते हैं, उसमें ऐसी सब बातें होती है। आहाहा ! मार्ग प्रभु (सूक्ष्म है)।

यहां कहते हैं कि, तेरेमें ओक अनादि—अनंत सर्वदर्शित्व शक्ति है। जैसे ज्ञान शक्ति, ज्योतर शक्ति, दर्शन शक्ति आयी न ? दर्शन शक्तिमें सर्वदर्शि शक्ति गर्भित है। दर्शि शक्ति पहले आ गयी। दर्शन शक्तिमें सर्वदर्शि शक्ति है, उस कारणसे दूसरी (शक्ति) गिननेमें आयी है। वहां दर्शि शक्ति छतना था। परंतु उसमें सर्वदर्शिपना नहीं था। दर्शि शक्तिमें सर्वदर्शि शक्ति गर्भित पडी है। सर्वदर्शि शक्तिको धरनेवाले द्रव्य पर दृष्टि करनेसे पर्यायमें सर्वदर्शिपनेकी पर्याय प्रगट होती है। यह सर्वदर्शिपनेकी पर्याय हुयी तो सर्व पर आया। वह तो उपचार हो गया। सर्वको और स्वयंको देखनेकी पर्याय अपनेसे अपनेमें अपने कारणसे हुई है। यह लोकालोक है तो उत्पन्न हुई है, (ऐसा नहीं है)। आहाहा ! ऐसी बात है। अपनी दर्शनमय पर्याय (अपनेसे) पूर्ण है, (उसमें) सर्वकी अपेक्षा नहीं। अपनी पर्याय अपनेसे सर्वको देखे, ऐसी अपनी पर्याय, अपनेसे परिणामित हुई। लोकालोकके कारणसे नहीं।

श्रोता : सम्यक्दृष्टिका श्रुतज्ञान उस पर्यायको जानता है ?

पू. गुरुदेवश्री : जानता है। बराबर जानता है। सर्वदर्शिपना अपनी पर्यायमें है।

श्रोता : श्रुतज्ञानी जानता है ?

पू. गुरुदेवश्री : जैसे जानता है। कदा नहीं ? पर संबंधी और अपने संबंधी पर्याय अपनी उत्पन्न हुई है, परके कारणसे नहीं। परको देखना यह बात यहां नहीं है। आहाहा ! आत्मामें सर्वदर्शि शक्ति है तो उसका सर्वदर्शिपनारूप परिणामन हुआ तो वह सामान्य, सब चीजको देखते हैं। (उसमें) सर्व आया तो सर्व परको देखते हैं। यह तो उपचार हुआ। यहां तो कहते हैं, आत्मदर्शनमयी सर्वदर्शि शक्ति है। क्या कदा ? “...सामान्यभावको देखनेरूपसे परिणामित जैसे आत्मदर्शनमयी सर्वदर्शित्व शक्ति.” यहां सर्वदर्शनमयी शब्द नहीं दिया। आहाहा ! सर्वको देखते हैं, यह अपनी दर्शन शक्ति अपनेमें है। सर्वको देखते हैं, यह प्रश्न यहां नहीं है। आहाहा !

झिंसे (लेते हैं)। यहां जो सर्वदर्शि शक्ति है, (तो) परिणामनमें (जब) सर्वदर्शिपनाकी पर्याय प्रगट हुई तो सर्वदर्शिपना है तो सर्वमें पर आया कि नहीं ? (तो कहते हैं) कि नहीं। ये बात यहां है नहीं। सर्वमें स्व और परको देखनेरूप परिणामन करना इस पर्यायकी छतनी ताकत है (कि) यह अपनेसे उत्पन्न हुई है। समझमें आया ? सूक्ष्म बातें (हैं), बापू ! क्या कहते हैं ? सर्वदर्शि शब्द आया न ? तो सर्वदर्शिमें सर्व परकी अपेक्षा आयी कि नहीं ? (तो कहते हैं) ना, अपनी स्व-परको (देखनेरूप) पर्याय अपनेसे, अपने कारणसे, अपनी पर्यायमें आत्मदर्शनमयी सर्वदर्शि शक्ति कहनेमें आती है।

प्रभु ! तेरी ऋद्धि कितनी है ! ऐसा कहते हैं. तेरेमें सर्वदर्शि शक्ति पडी है. प्रभु ! तेरी शक्तिमें सर्वदर्शपना पडा है. आहाहा ! यह सर्वदर्शि शक्तिका आश्रय-आधार द्रव्य (है). उस द्रव्यका आश्रय लेकर जब सर्वदर्शिपनाका परिणामन हुआ, उसमें सर्वदर्शिपनाकी पर्याय उत्पन्न हुई. यह 'सर्व' शब्द है तो पर लागू पडा तो सर्व है ? (तो कहते हैं) कि नहीं. यह सर्वदर्शि पर्याय आत्मदर्शनमयी शक्ति है, उसकी पर्याय है. समझमें आया ?

थोडा ईर्क कहां पडा ? बहुत ईर्क पडा. लोग ऐसा कहे कि, सर्व आया न ? तो सर्वमें पर आया. यहां कहते हैं कि, नहीं. सर्वको जाने-देखे वह अपनी दर्शनकी पर्याय सर्वदर्शनमयी आत्मदर्शनमयी है. आत्मदर्शनमयी है-पर दर्शनमयी नहीं. अपनी परिणति अपनेमेंसे हुई है. आहाहा ! शब्दमें थोडा ईर्क (लगे) परंतु उगमशा-आथमशा जितना ईर्क है. उगमशा-आथमशाको (हिन्दीमें) क्या कहते हैं ? पूर्व-पश्चिम.

यहां क्या कहते हैं ? द्रव्यमें सर्वदर्शिशक्ति व्यापक है, गुणमें सर्वदर्शिशक्ति व्यापक है. यह सर्वदर्शि शक्ति अनंत गुणमें व्यापक है और सर्वदर्शि शक्ति है यह पारिणामिकभावरूप है. लो ! यह दूसरी नयी बात आयी. अंदर जो सर्वदर्शि शक्ति है वह पारिणामिकभावरूप है. पारिणामिक नाम अपना सहज स्वरूप ही ऐसा है. उसमें कोई परकी अपेक्षा-निमित्तके (सद्भावकी) या निमित्तके अभावकी अपेक्षा नहीं. आहाहा ! यह सर्वदर्शि शक्ति आत्मामें है (और) आत्मा पारिणामिक स्वभावरूप सहज है. सवेरे सहज श्रुतज्ञानमय-स्वाभाविक श्रुतज्ञानमय आया था. ऐसे स्वाभाविक - पारिणामिक स्वभावमयी आत्मा है. पारिणामिक नाम किसीकी अपेक्षा नहीं. ऐसी सर्वदर्शिशक्ति पारिणामिक स्वभावरूप है-सहजभावरूप है. उसका आश्रय लेकर जो परिणामनमें सर्वदर्शिपना आया; तो उस पर्यायमें सर्व देखना-ऐसा आया. यह कथन तो व्यवहारसे आया परंतु पर्यायमें अपनेको देखते हैं, यह आत्मदर्शनमयी शक्ति है. आहाहा !

(स्वद्रव्यके आश्रयसे) पर्याय उत्पन्न हुई वह क्षयोपशम और क्षायिकभावरूप उत्पन्न हुई. आत्मा सहज स्वभाव-पारिणामिकभाव(रूप है). सर्वदर्शिशक्ति पारिणामिकभाव(रूप है) और उसके आश्रयसे जो सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रकी पर्याय (प्रगट) हुई (वह उपशम, क्षयोपशम और क्षायिकभावरूप है). सर्वदर्शिपनाकी पूर्ण पर्याय है वह क्षायिकभाव है और नीचेकी जो सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रकी पर्याय है वह क्षायिक, उपशम और क्षयोपशम तीन भावरूप हैं. पांच भाव हैं कि नहीं ? वस्तु और वस्तुका स्वभाव यह पारिणामिकभावस्वरूप है और उसकी धर्मकी पर्याय जो होती है, सर्वदर्शिपनाकी पूर्ण (पर्याय होती है) वह क्षायिकभावरूप है. और सर्वदर्शि शक्तिवानकी प्रतीति, ज्ञान और स्थिरता हुई वह परिणति-पर्याय उपशम, क्षयोपशम और क्षायिकभावरूप है और राग उत्पन्न होता है, वह उदयभावस्वरूप है. समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बातें (हैं) !

(યહાં) કહતે હૈં કિ, જો પર્યાય પ્રગટ હુઈ ઉસમેં સર્વદર્શિપના આયા. પહલે પ્રતીતમેં આયા, શ્રુતજ્ઞાનમેં આયા. યહ પ્રતીત ઓર જ્ઞાન (કી પર્યાય) ક્ષયોપશમ, ક્ષાયિક ઓર ઉપશમભાવ હૈ. જ્ઞાન ક્ષયોપશમભાવરૂપ હૈ. દર્શન-પ્રતીત ઉપશમ ઓર ક્ષયોપશમભાવરૂપ હૈ ઓર પૂર્ણ સર્વદર્શિકા પરિણમન હુઆ, વહ ક્ષાયિકભાવરૂપ હૈ. સમજમેં આયા ? યહ ક્ષાયિકભાવકી પર્યાય યા ક્ષયોપશમભાવકી પર્યાય પ્રગટ હુઈ ઉસકા કર્તા વાસ્તવમેં દ્રવ્ય-ગુણ નહીં. વિશેષ આયેગા....



શક્તિઓનું વર્ણન કરવાનો હેતુ એ છે કે, બહારમાં તારા જ્ઞાન આનંદ સુખ શાંતિ નથી. અંદરમાં તારી શક્તિઓનાં નિધાન ભર્યા પડ્યા છે. ત્યાં દૃષ્ટિ કર અને બહારથી દૃષ્ટિ ઉઠાવી લે ! અંદરમાં જ્ઞાન દર્શન આનંદ સુખ વીર્ય પ્રભુતા આદિ શક્તિઓથી જીવવું એ ધર્મી જીવનું જીવન છે. બહારના દેહાદિથી જીવવું એ ધર્મી જીવનું જીવન નથી, અંદરમાં અનંત શક્તિઓનો ભંડાર ભગવાન સહજાનંદની મૂર્તિ પડ્યો છે એના દૃષ્ટિ વિશ્વાસે જીવવું એ ખરું જીવન છે.

(પરમાગમસાર-૫૫૬)

प्रवचन नं. ११

शक्ति-८,१० - ता. २१-०८-१९७७

विश्वविश्वसामान्यभावपरिणतात्मदर्शनमयी

सर्वदर्शित्वशक्तिः ॥९॥

विश्वविश्वविशेषभावपरिणतात्मज्ञानमयी

सर्वज्ञत्वशक्तिः ॥१०॥

(समयसार शक्तिका अधिकार यलता है). व्यवहार शुभजोग धर्म है या धर्मका कारण है (यह) बडा शय्य (है). मिथ्यात्व शय्य है. क्योंकि समयसारमें पुण्य-पाप अधिकारमें शुभजोगको स्थूल शुभभाव कडा है. भगवान उस अपेक्षासे सूक्ष्म है. और उसकी सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रकी परिणति वल भी सूक्ष्म है. समजमें आया ?

यहां कहते हैं कि, आत्मामें (सर्वदर्शि) शक्ति है. सर्वदर्शि शक्तिके अर्थमें थोडा स्पष्टीकरण बाकी रहल है. परिणमित—थोडा सूक्ष्म है. सर्वदर्शिमें परिणमित शब्द पडा है. “समस्त विश्वके सामान्य भावको देजनेरूपसे (अर्थात् सर्व पदार्थोंके समूहरूप लोकालोक्को सत्तामात्र ग्रहण करनेरूपसे) परिणमित जैसे आत्मदर्शनमयी सर्वदर्शित्व शक्ति.” भाषा देजो ! क्योंकि यहां तो पहलेसे ऐसा लिया है. कम (रूप पर्याय) और अकम (रूप गुण) का समूह वल आत्मा. थोडा सूक्ष्म विषय है. यहां विकारका कम नहीं (है). यहां तो शक्तियोंका वर्णन है तो सभी शक्तियां शुद्ध हैं तो उसकी परिणति भी शुद्ध है. द्रव्य शुद्ध है, शक्ति शुद्ध है, उसकी परिणति (भी) शुद्ध है. शुद्ध परिणति है यह कमसर छोती है और शक्ति है यह अकम रहती है. ये कमसर शक्तिकी परिणति और अकम (शक्तिका) समुदाय, यह आत्मा है. ऐसा कहना है. आलाहा ! समजमें आया ?

आज तो विचार बहुत आये थे. यह परिणमित शब्द आया न ? यहां तो सारा दिन यही धंधा है, कुछ दूसरा तो है नहीं. थोडा सूक्ष्म आया है. आत्मामें सर्वदर्शि शक्ति है. अगर (यह शक्ति) न छो तो वस्तु अदृश्य छोती. अदृश्य माने देजनेमें न आये इसलिये (उसका) अभाव छोता. सर्व है ना ? सर्वदर्शि शक्ति जो है (उसका) यहां तो परिणमन लिया है. समजमें आया ?

अध्यात्म पंथ संग्रह है, उसमें ऐसा लिया है कि, अत्मविको ज्ञान है परंतु ज्ञानकी परिणति नलि (है). भाई ! ध्यान रचना. अत्मविको ११ अंग और ८ पूर्वकी लब्धि छोती

હૈ – પરંતુ વહ જ્ઞાન પરિણતિ નહીં. આહાહા ! સમજમેં આયા ? જ્ઞાન પરિણતિ તો સમ્યક્રૂપસે પરિણમે ઔર દ્રવ્ય ઔર ગુણકો જ્ઞેય બનાકર પરિણમે, ઉસે જ્ઞાન પરિણતિ કહનેમેં આતા હૈ. સમજમેં આયા ? અભવિકો ૧૧ અંગ ઔર ૯ પૂર્વકી લબ્ધિ હોતી હૈ. ૧૧ અંગ (અર્થાત્) એક પદમેં ૫૧,૦૦૦ શ્લોક, એસા-એસા ૧૮,૦૦૦ પદ. ૧૮,૦૦૦ પદકા આચાર અંગ (હૈ). એક પદમેં ૫૧ કોડ ઝાઝેરા શ્લોક. એસા-એસા ૧૧ અંગકા જ્ઞાન ઔર ૯ પૂર્વકા જ્ઞાન. ફિર ભી વહ જ્ઞાનકી પરિણતિ નહીં. આહાહા ! ક્યોંકિ જો જ્ઞાન સ્વરૂપ ભગવાન આત્મા હૈ, ઉસકી (વહ) પરિણતિ (નહીં હૈ). જ્ઞાનકે (આશ્રયસે અર્થાત્) સ્વકે આશ્રયસે જ્ઞાનકી પરિણતિ હો, ઉસે જ્ઞાનકી પરિણતિ કહનેમેં આતી હૈ. આહાહા ! આત્મા જ્ઞાન સ્વરૂપ હૈ. જ્ઞાન આ ગયા ન પહલે ? આજ તો અબ હમ સર્વદર્શિ (શક્તિ) થોડી લેકર સર્વજ્ઞત્વ લેના હૈ. જ્ઞાનસ્વરૂપ જો ભગવાન આત્મા ઉસકી જ્ઞાનકી પરિણતિકે સાથ આનંદકા અનુભવ (હો), ઉસે જ્ઞાન પરિણતિ કહનેમેં આતી હૈ. સમજમેં આયા ? (આનંદકા અનુભવ હો) તો જ્ઞાન પરિણતિ કહનેમેં આતી હૈ. આહાહા ! અભવિકો જ્ઞાન પરિણતિ નહીં કહા હૈ. ઇતના ૧૧ અંગ ઔર ૯ પૂર્વકા જ્ઞાન હોને પર ભી (વહ) જ્ઞાન પરિણતિ નહીં (હૈ). આહાહા ! જો જ્ઞાન પરિણતિ હોતી હૈ તો ઉસે (જ્ઞાન) પરિણતિકે સાથ આનંદકા વેદન આતા હૈ, સમજમેં આયા ?

અધ્યાત્મ પંચ સંગ્રહમેં દૃષ્ટાંત દિયા હૈ. રાવણને લક્ષ્મણકો શક્તિ મારી થી. (ઔર લક્ષ્મણ) બેશુદ્ધ હો ગયે. હમ તો ૬૫-૬૬કી સાલમેં દુકાન પર બોલતે થે. રામચંદ્રજી લક્ષ્મણકો કહતે હૈ, “આવ્યા હતા ત્યારે ત્રણ જણાં અને જાશું એકાએક” યહ તો ૬૫-૬૬ (કી સાલમેં) દુકાન પર કંઠસ્થ ક્રિયા થા. લક્ષ્મણકો શક્તિ લગી હૈ ના ? વે અસાધ્ય હો ગયે. રામચંદ્રજી કહતે હૈ, “આવ્યા હતા ત્યારે ત્રણ જણા અને જાશું એકાએક, માતાજી ખબરું પૂછશે તેને શા-શા ઉત્તર દઈશ ? લક્ષ્મણ ! જાગ ને ઓ જીવ ! એકવાર બોલ દે. બોલ દે એકવાર, જવાબ તો દે પ્રભુ ! તું સુઈ ગયો” આહાહા ! સીતાજીકો રાવણ લે ગયા. અબ તૂ અસાધ્ય હો ગયા. મેં માતાકે પાસ અકેલા જાઉંગા. માતા પૂછેગી, ‘ભાઈ ! અકેલા ક્યોં આયા ? આહાહા ! એસા કહતે થે. ઉતનેમેં વિશલ્યા આયી.

ઇસને પ્રશ્ન પૂછા થા કિ, ઇસકા ક્યા કરેં ? તો કિસીને કહા કિ, વિશલ્યા નામકી એક કન્યા હૈ. (વહ) લક્ષ્મણકી પત્ની હોગી. ઉસકે પાસ એક લબ્ધિ હૈ—શક્તિ હૈ. પૂર્વમેં વહ ચક્રવર્તીકી લડકી થી ઔર ઉસ લડકીકો જંગલમેં કોઈ છોડ ગયા થા. જંગલમેં છોડ દિયા થા તો અજગર ઉસે (નિગલ ગયા). અજગર સમજે ના ? ગલ જાયે. અજગર યાની ગલ જાયે (નિગલ જાયે). જંગલમેં અજગર કન્યાકો નિગલ ગયા. ઇતના મુખ બાહર રહા. ઉતનેમેં ઉસકે પિતાજી આ ગયે, ઉન્હેં લગા—અજગરકો બાણ મારું (તો) (લડકીકા) જીવ બચ જાય. (લડકીને કહા) પિતાજી બાણ નહીં મારના. મુજે આહાર—પાનીકા જાવજીવ ત્યાગ હૈ. મેં બાહર નિકલુંગી તો (ભી) આહાર નહીં (લુંગી). (ઇસે) મારના નહીં. આહાહા ! (શરીર) અજગરકે પેટમેં થા. મુહ થોડા

बाहर था. अजर समजते हो ना ? अज नाम बोकडा और गर नाम गल जाये (निगल जाये) इसलिये अजर (कलनेमें आता है). अज नाम बडे बकरेको पेटमें गल जाये, इसलिये अजर (कलनेमें आता है). जैसे मृत्यु हो गया (और दूसरे भवमें) ओक राजकी कन्या छुई.

यहां प्रश्न हुआ कि, यह शक्ति पुले कैसे ? क्या करना ? कोई निमित्तज्ञानीने कहा कि भरतका राज है. रामचंद्रज तो वनवासमें थे. भरतको राज सौंपा था. भरतके राजमें ओक विशल्या (नामकी) राजकन्या है. भरतको बताओ. उस राजकन्या विशल्याको यहां लाओ. कुंवारी कन्या है. उसके आते ही (रावणकी) शक्तिका नाश होगा. ऐसी उसकी लब्धि है. समजमें आया ? यह तो दृष्टांत है. सिद्धांत कहां उतारेंगे ध्यान रचना ! विशल्या आती है. भरतको पता पडा कि, यह बडे राजकी कन्या है तो (कहा), आपकी कन्याको लक्ष्मणके पास ले जाओ. (उन्हें जो शक्ति लगी है वह) शक्ति असाध्य है. यह (विशल्या) पंडालमें आती है तो वहां घायल (सिपाही) बहुत थे. घायल पडे हुअे शूरवीरोंका घायलपना मिट जाता है और लक्ष्मणके पास आती है तो शक्ति छूट जाती है, शक्ति पुल जाती है. बादमें तो उसके साथ शादी करते हैं.

यहां कहते हैं कि, आत्मामें शुद्ध परिणति (रूप) नारीका संभोग करे तो वास्तवमें वह शक्तिका कार्य, वह शक्ति पुल जाये. समजमें आया ? परिणमित शब्द पडा है ना ? भाई ! दो ठिकाने कहा है कि आप ज्ञान प्रमाण क्यों कहते हो ? उत्तर—“परस्पर भिन्न जैसे अनंत धर्मोंके समुदायरूपसे परिणत ओक ज्ञानि मात्र भाव...” ऐसा शब्द है. यहां थोडा सूक्ष्म है. परंतु बात यथार्थ आ गई है. यह शक्ति है परंतु उसकी परिणति पर्यायमें परिणमित होती है तब उस शक्तिका कार्य हुआ. तब इस शक्तिका अस्तित्व प्रतीतमें आया. समजमें आया ? परिणति बिना यह शक्ति शक्तिरूप रही. (पर्यायमें) पुली नहीं. समजमें आया ? आहाहा ! जैसे भगवान आत्मामें सर्वदर्शि, सर्वज्ञत्व शक्ति आदि हैं. यह शक्तिरूप हैं.

आचार्य (भगवानने) ऐसा शब्द इस्तमाल किया है. देजो ! पहले आगे परिणमित शब्द बोले थे. परंतु स्पष्टीकरण बहुत नहीं हुआ था. देजो ! “समस्त विश्वके सामान्य भावको देजनेरूपसे...” ओक (बात) तो यह कि, जगतमें सारी चीज है उसको देजनेरूप. जो देजनेरूप न हो तो वह चीज अदृश्य (हो जायेगी). नहीं है, ऐसा हो जाये. देजनेकी पर्याय है तो देजनेमें आयी चीजकी हयाति प्यालमें आयी. समजमें आया ? सर्वदर्शि नामकी शक्ति है वह सर्व विश्वके सामान्यभावको (देजती है). यह भगवानकी अध्यात्म वाणी तो बहुत सूक्ष्म है.

लोग कहते हैं, शुभभाव धर्म है. (सोनगढवाले) शुभ(भावका) निषेध करते हैं. अरे..! भगवान सुन तो सही, प्रभु ! अरे..! शुभभाव तो अनंत बार हुआ. अभी तो जैसे शुभभाव

હૈ હી નહીં. નવમી ગ્રૈવેયક જાયે ઉતના શુભભાવ—શુક્લ લેશ્યા કિ જિસકો શુક્લ લેશ્યા (કહતે હૈ). શુક્લ ધ્યાન અલગ ઔર શુક્લ લેશ્યા અલગ (ચીજ હૈ). શુક્લ લેશ્યા તો અભવિકો ભી હોતી હૈ. શુક્લ ધ્યાન તો સમ્યક્દષ્ટિકો આઠવેં (ગુણસ્થાનમેં) જાયે તબ શુક્લ ધ્યાન હોતા હૈ. શુક્લ લેશ્યા અલગ ઔર શુક્લ ધ્યાન અલગ (હૈ). શુક્લ લેશ્યા (કે ફલમેં) નવમી ગ્રૈવેયક પહુંચે. છઠ્ઠે સ્વર્ગમેં જાયે તો (ભી) શુક્લ લેશ્યા હૈ. ક્યા કહતે હૈ ? શુક્લ લેશ્યા હો તો છઠ્ઠે સ્વર્ગમેં ભી જાયે ઔર શુક્લ લેશ્યાસે નવમી ગ્રૈવેયક ભી જાયે. શુક્લ લેશ્યાસે છઠ્ઠે દેવલોકમેં ભી જાય તો વહ શુક્લ લેશ્યા ભાવોંકી હોતી હૈ. શુક્લ ભાવ (અર્થાત્) શુભ ભાવ, બહુત હી ઉજલે (ભાવ). શુક્લ લેશ્યા (કે ફલમેં) તો અભવિ યા ભવિ છઠ્ઠે સ્વર્ગમેં જાતે હૈ. સમકિતી ભી શુક્લ લેશ્યાસે સાતવેં, આઠવેં, નવવેં, દસવેં, ગ્યારહવે, બારહવેં ઔર બાદમેં નવમી ગ્રૈવેયક (પર્યંત જાયે). નવમી ગ્રૈવેયક (તક) જાયે વહ શુક્લ લેશ્યા કેસી ? ફિર ભી વહ ધર્મ નહીં—અધર્મ હૈ. આહાહા ! ગજબ બાત હૈ ! ભાઈ ! (વહ) કષાય પરિણામ હૈ, આકુલતા હૈ.

યહાં તો કહતે હૈ કિ, દેખનેરૂપ સર્વદર્શિ શક્તિ હૈ. દર્શિ શક્તિ — દેખનેકી શક્તિકા અર્થ યહ કિ, દેખનેકી શક્તિને વસ્તુકો દેખા. અગર દેખનેકી શક્તિ ન હો તો જો ચીજ દેખનેમેં આતી હૈ ઉસ ચીજકા અભાવ હો જાતા હૈ. સમજમેં આયા ? દર્શિ શક્તિકા વિષય પૂર્ણ ત્રીન કાલ — ત્રીન લોક(કી) સબ વસ્તુ હૈ. આહાહા ! યહાં કહતે હૈ કિ, “(સમસ્ત વિશ્વકે) સામાન્ય ભાવકો દેખનેરૂપસે (અર્થાત્ સર્વ પદાર્થોંકે સમૂહરૂપ લોકાલોકકો સત્તામાત્ર ગ્રહણ કરનેરૂપસે)” ગ્રહણ કરના નામ દેખનેરૂપ. “પરિણમિત ઐસી” ભાષા હૈ. તેરહવે ગુણસ્થાનમેં યહ સર્વદર્શિ શક્તિ પરિણમિત હુઈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? શક્તિકા પરિણમન હુઆ તબ શક્તિકી પ્રતીત ઔર સત્તાકી સત્તા દેખનેમેં આયી. ભગવાનકો પર્યાયમેં સર્વદર્શિપને પરિણમન હુઆ તો જો ચીજ દેખનેમેં આતી હૈ ઉસકી સત્તાકી પ્રતીત તબ હુઈ. યહ દેખનેકી ચીજ હૈ. દેખનેકે ભાવસે દેખનેકી ચીજકો દેખા. સમજમેં આયા ? અરે..! ઐસી બાત (હૈ) ! સબકો ફિર કઠિન લગે (લેકિન) ક્યા હો ? પ્રભુ ! તેરા માર્ગ બહુત અલગ હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ?

એકબાર દલપતરામ (કવિકી કવિતા) કહી થી. “પ્રભુતા પ્રભુ તારી તો ખરી” હમ ગુજરાતી પઢે થે. ૪-૫વી કક્ષામેં (યહ કવિતા આયી થી). ૭૫ વર્ષ પહલેકી બાત હૈ. વે તો પ્રભુકો કહતે હૈ. પરંતુ યહાં તો યે પ્રભુ ! પ્રભુત્વ શક્તિ આ ગયી ન ? (ઉસે કહતે હૈ). “પ્રભુતા પ્રભુ તારી તો ખરી” પ્રભુતા તેરી કબ ખરી ? કિ, “મુજરો મુજ રોગ લે હરિ” પ્રભુતાકી શક્તિ અપ્રભુતાકા નાશ કર દેતી હૈ. સમજમેં આયા ?

દર્શન શક્તિ હૈ ઉસમેં ભી ઐસે ઉતારા હૈ કિ, સર્વદર્શિ શક્તિ યતિ હૈ. અપનેમેં જતનાસે (યત્નસે) પરિણમન કિયા તો અશુદ્ધતા આને નહીં દેતા, ઐસા યતિ હૈ. ક્યા કહા ? યતિ (અર્થાત્) યત્ન કિયા. અપને સર્વદર્શિ (શક્તિકી) પરિણમિત હુઈ તો અલ્પજ્ઞપના ઔર અશુદ્ધતા આને નહીં દેતા, યતિને ઐસી યત્ના કી હૈ. સર્વદર્શિ શક્તિ યતિ હૈ. આહાહા ! ઐસી બાતેં !

ऐसा यहाँ परिणामितमेंसे निकाला है. समझमें आया ?

सर्वदर्शि शक्ति परिणामित हुई है. वैसे अधिकार तो शक्तिका है कि, आत्मामें ऐसी अनंत शक्तियां हैं. ४७ शक्तिका वर्णन किया परंतु यहाँ शक्तिके वर्णनमें यह दिया कि, शक्तिका परिणामन जब होता है, कमसर जो परिणामित होती है, वह कम(रूप) परिणामित (पर्याय) और अकम (रूप गुणका) समुदाय आत्मा है. समझमें आया ? यहाँ परिणामित दिया है. अंदरमें सर्वदर्शि शक्ति अकेली पड़ी है, जैसे नहीं. जैसे विशल्याने आकर लक्ष्मणकी शक्तिको तोड़ दी (और शक्ति) फुल गयी, जैसे सर्वदर्शि शक्ति जो अंदर पड़ी है उसे परिणामितने फोड़ दिया. पर्यायमें सर्वदर्शिपना प्रगट हुआ, आहाहा ! ऐसी बातें (है), भाई ! प्रभुका मार्ग बहुत सूक्ष्म है. आहाहा ! अभी तो बहुत गडबड हो गयी है. इस समय तो 'योर कोटवालको दंडे' ऐसा हो गया है. बहुत योर छकके हो जाये तो कोटवालको (दंडे). प्रभु ! यह तो सत्य है, भाई ! यह तो सत्य मार्ग है. समझमें आया कुछ ?

यहाँ कहते हैं, "... परिणामित जैसे आत्मदर्शनमयी..." यहाँ वजन है. आत्मदर्शन शक्ति तो गुण है, शक्ति है, सत्का सत्व है, आत्माका स्वभाव है परंतु वह स्वभाव परिणामित हुआ, तब आत्मदर्शनमयी शक्ति कहनेमें आती है. आहाहा !

दूसरी एक बात है. श्रीमद्के पत्रमें ऐसा आता है कि, योथे गुणस्थानमें श्रद्धापने केवलज्ञान प्रगट हुआ है. सम्यग्दर्शन बिना 'केवलज्ञान है' ऐसी श्रद्धा पड़ले नहीं थी. सम्यग्दर्शन हुआ तो 'यह केवलज्ञानमयी (स्वरूप) है' ऐसा परिणामनमें प्रतीत हुआ. तब केवलज्ञान श्रद्धापने प्रगट हुआ, ऐसा कहा है. आहाहा ! यीज तो भले हो परंतु श्रद्धामें – परिणामितमें जब आया तब श्रद्धापने केवलज्ञान है, ऐसा श्रद्धापने प्रतीत हुआ. श्रद्धापने केवलज्ञान हुआ. परिणामितपने केवलज्ञान तेरहवें (गुणस्थानमें) होगा. समझमें आया ? ऐसी बातें (है), बापू ! यैतन्यमें भंडार-भजना छतना पडा है कि, यह भजनेकी बात सुनना मुश्किल हो गया है.

इस निधान पर नजर करके पर्यायमें निर्मल परिणामित होती है. यहाँ विकारकी परिणामितकी बात-गंध भी नहीं है. शुद्ध परिणामित है उसमें शुभभावका अभाव है, ऐसा अनेकांत दिया है. (विभावका) उसमें अभाव है. भावपने तो सर्वदर्शि शक्ति अपनेसे परिणामित हुई है. वह परिणामित हुई तो शक्ति पीली. शक्तिरूप था और (पर्यायमें) परिणामित हुआ तो शक्ति फुल गयी. जैसे विशल्या आयी और (लक्ष्मणकी) शक्ति फुल गयी. वैसे यहाँ नारी अपनी परिणामित (रूपी) स्त्री उसके साथ अकाग्र हुआ तो आनंदका अनुभव करके आनंद पुत्र उत्पन्न हुआ. समझमें आया ? ऐसी बात है, भाई ! कितनोंको तो पड़ली बार सुनने भिले ऐसी बात है. आहाहा !

यहाँ कहते हैं, "... परिणामित ऐसी आत्मदर्शनमयी..." सर्वदर्शि है यानी सर्वको देखे

उसलिये अंदर सर्व आया है, ऐसा नहीं. सर्वको और अपनेको (देखे ऐसा) आत्मदर्शनमयी शक्तिका रूप है. आत्मदर्शनका परिणामनका शक्ति रूप ऐसा है, वह आत्मदर्शनमयी है. आहाहा ! समझमें आया ? क्या कहा ? कि सर्वदर्शिपना है तो कोई ऐसा कहे कि, अंदर परको देखनेवाली पर्याय है, (लेकिन) परको देना, जैसे नहीं. वह सर्वको देखे और स्वको देखे यह आत्मदर्शनमयी अपनी पर्यायमें है. सर्वको देना वह भाव यहां है नहीं. आहाहा ! क्या कहा ? परमात्मा जिनेश्वरदेवका मार्ग बहुत सूक्ष्म (है). इस समय तो स्थूल हो गया. अभी तो शुभभावसे धर्म होता है (ऐसी विपरीत मान्यतामें पड़े हैं). आज एक पत्र आया है. सत्याग्रह करो कि, शुभभावसे धर्म होता है. परंतु उसका कुछ यत्न ऐसा नहीं है. मार्ग यह है. (ऐसा) श्रद्धामें तो नकी करो ! आहाहा !

यहां कहते हैं कि, “... देखनेरूपसे परिणामित जैसे आत्मदर्शनमयी...” दो शब्द आये. एक तो आत्मदर्शनकी परिणामित और आत्मदर्शन पर्याय. यह आत्मदर्शनकी पर्याय है वह सर्वको देखनेकी पर्याय नहीं. यह सर्वदर्शि अपनी आत्मदर्शनमयी शक्ति है, आहाहा ! समझमें आया ? आज हम सर्वज्ञ (शक्ति) लेते हैं.

“समस्त विश्वके विशेष भावोंको...” दर्शन शक्ति है इसमें तो भेद किये बिना सब है, सामान्यरूपसे सब सत्ता है, सबका पूर्ण अस्तित्व है, ऐसा दर्शन शक्तिमें देखनेमें आता है. उसमें ये आत्मा है, ये जड है, ये गुण है, ये पर्याय है, ऐसा भेद नहीं (दिखाता). समझमें आया ? सर्वदर्शिमें ऐसा है.

अध्यात्मपंथ संग्रहमें लिया है. ओहोहो ! एक समयमें सर्व अस्तित्वको भेद किये बिना देना – यह सर्वदर्शिका कार्य (है). उसी समयमें सर्वज्ञकी पर्यायमें सबको भिन्न-भिन्न करके जानना यह सर्वज्ञ (शक्तिका कार्य है). एक साथ दो पर्याय (हैं). परंतु एक पर्याय ये है, और एक पर्याय ये है, यह अद्भुत रस है. (ऐसे-ऐसे) नव रस उतारे हैं. समझमें आया ? आहाहा ! एक अद्भुत रस है. साधारण मनुष्यको प्यालमें आना मुश्किल पड़े (ऐसा है). सर्वदर्शि (शक्ति) भारीक चीज है. क्योंकि ‘ये शक्ति है’ ऐसा (भेद करके) जाननेमें आया तो (वह तो) ज्ञान हो जाता है. समझमें आया ? सर्वदर्शि शक्ति सामान्य(रूपसे) ‘सब है’ (ऐसा देखती है). लोकालोक, अपना द्रव्य, अपना गुण, अपनी अनंत पर्याय आदि सबको ‘है’ उस रूप (देखनेकी) परिणामन करनेकी शक्ति है, बस ! और सर्वज्ञ शक्ति उसी समयमें (विशेषरूपसे देखती है). देखो !

“समस्त विश्वके विशेष भावोंको...” उसमें (सर्वदर्शिमें) सामान्य था. “समस्त विश्वके सामान्य भावोंको...” जैसे था. यहां “(समस्त) विश्वके विशेष भावोंको...” सर्व विशेषभाव (लिया). विशेष भावमें तो – द्रव्यभाव, गुणभाव, पर्यायभाव, एक समयकी पर्यायमें अनंत अविभाग प्रतिच्छेद (सब आ गया). केवलज्ञानकी पर्यायमें तो अनंते केवली जाननेमें आते

हैं. तीनों कालके केवली जाननेमें आते हैं, आहाहा ! अनंता केवलीने सब जाना, जैसे अनंत केवलीको केवलज्ञान पर्याय जाने. आहाहा ! उस पर्यायमें कितनी ताकत आयी !! अविभाग प्रतिच्छेद (अर्थात्) पर्यायमें छेद करके—भाग करते..करते...करते... आभीरका (भाग) रहे उसे अविभाग प्रतिच्छेद कहते हैं. जैसे अनंत अविभाग प्रतिच्छेद (है). ऐसी एक केवलज्ञानकी एक पर्यायमें अनंत अविभाग प्रतिच्छेद है. अरे...! उसमें तो है परंतु निगोदका जो व जिसे अक्षरके अनंतवे भागमें विकास रहा, उस पर्यायमें भी अनंत अविभाग प्रतिच्छेद है. आहाहा ! पर्याय है ना ? आहाहा ! निगोदका जो वहां ! जिसे अक्षरके अनंतवे भागमें विकास रहा. शक्ति तो सर्वज्ञ-सर्वदर्शि है ही. निगोदके जो वमें भी सर्वज्ञ और सर्वदर्शि शक्ति तो है ही. परंतु परिश्रमन बिना, कार्य बिना कारण प्रतीतमें आया नहीं. समझमें आया ? आहाहा !

एकबार कहा था. 'प्रभु तुम जाणग रीति, सौ जग देभतां' प्रभु ! आपका केवलज्ञान जगतको – सभीको देभता है. 'निज सत्ताओ शुद्ध....' प्रभु ! हमारी आत्माकी जो निजसत्ता है उसे तो आप शुद्ध देभते हो. पुण्य-पाप ये कोई आत्मा नहीं. 'निज सत्ताओ शुद्ध सौने...'. हे नाथ ! निगोदके जो व आदि सर्व जोकों आपके ज्ञानमें उसकी सत्ता, उयाति शुद्धपने आप देभते हो. आहाहा ! समझमें आया ? बात बहुत गंभीर है, भाई ! निगोदका जो व भी स्वभाव और शक्तिसे तो शुद्ध ही है. पर्यायमें अशुद्धि है वह तो एक समयकी है. वह तो एक समयकी अशुद्धता (है). (एक) सेकंडके असंख्य भागमें एक समयकी अशुद्धता अथवा अक्षरके अनंतवे भागमें विकास यह एक समयकी चीज है. अंतर वस्तु तो सर्वज्ञ, सर्वदर्शि, परिपूर्णपने पडी है. परंतु यहां तो कहते हैं कि, परिश्रमित किये बिना, अपनी परिश्रति(रूपी) स्त्रीकी परिश्रतिके साथ वेदन किये बिना यह सर्वज्ञ शक्ति प्रतीतमें आती नहीं. नीचे भी (नीचेके गुणस्थानमें) सर्वज्ञ शक्ति है, ऐसी प्रतीत आयी, केवलज्ञानकी प्रतीति हुई (परंतु) केवलज्ञान हुआ नहीं. पहले अल्पज्ञपनेमें – सम्यग्दर्शनमें ऐसा माना था कि, मैं केवलज्ञानी हूं. केवलज्ञान अर्थात् अकेला ज्ञान ऐसी केवलज्ञानकी शक्तिकी प्रतीत हुई तो श्रद्धासे केवलज्ञान प्रगट हुआ. श्रद्धासे केवलज्ञान प्रगट हुआ. क्या कहा ? जिस श्रद्धामें पूर्ण ज्ञान, आनंद है, ऐसी प्रतीत नहीं थी तब वह प्रगट नहीं हुआ. आहाहा ! मैं केवलज्ञानी हूं, ऐसा केवलज्ञान श्रद्धासे प्रगट हुआ. केवलज्ञानकी परिश्रतिकी पूर्ण दशा तेरहवे (गुणस्थानमें) होगी. समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बातें हैं. यह तो कैसा उपदेश है ? इसमें दया पालनी, व्रत करने, उपवास करने ऐसा कुछ हो तो समझमें भी आये, भाई ! तेरा निधान तेरी नजरमें कभी आया नहीं और नजरमें आये बिना यह चीज है, ऐसा प्रतीतमें भी आया नहीं. समझमें आया ? आहाहा !

यहां कहते हैं कि, "परिश्रमित जैसे आत्मज्ञानमयी..." आहाहा ! सर्वज्ञ शक्तिपने जो शक्ति है उसकी ज्ञानकी पर्याय परिश्रमित हुई. आहाहा ! तेरी पर्यायमें उसका परिश्रमन

હુઆ, યહ પરિણમન આત્મજ્ઞાનમયી હૈ. સર્વજ્ઞપને કહા પરંતુ યહ પરિણમન આત્મજ્ઞાનમયી હૈ. યે આત્માકા જ્ઞાન હુઆ હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? પરકો જાનના ઐસા કહના વહ તો અસદ્ભુત વ્યવહાર નયકા વિષય હૈ. ક્યોંકિ પરમેં તન્મય હોકર જાનતા નહીં. ઇસલિયે પરકો જાનતા હૈ ઐસા કહના વહ તો અસદ્ભુત વ્યવહાર હૈ. આહાહા ! પરંતુ અપની પૂર્ણ પર્યાયકો તન્મય હોકર જાનતે હૈં. સમજમેં આયા ? બાત થોડી સૂક્ષ્મ તો હૈ, પરંતુ સુને તો સહી. યહ સબ કહાં (સુનનેકો મિલે) ?

નિયમસારમેં સિદ્ધાંત તો ઐસા કહતે હૈં કિ, કોઈ ઐસા કહે કિ નિશ્ચયસે આત્મા લોકાલોકકો જાનતા નહીં તો ઉસે દોષ ક્યોં દે ? (ઐસા) નિયમસારમેં (આતા) હૈ કિ, સર્વજ્ઞ લોકાલોકકો જાનતે નહીં યહ બરાબર હૈ ? નિશ્ચયસે લોકાલોકકો નહીં જાનતે. નિશ્ચયસે તો અપની પૂર્ણ પર્યાયકો હી જાનતે હૈં, ઔર વ્યવહારનયસે કોઈ ઐસા કહે કિ, આત્મા પરકો જાનતા હૈ પરંતુ સ્વકો જાનતા નહીં. (ઐસે) દો બોલ આયે હૈં. નિયમસારમેં શુદ્ધ ઉપયોગ અધિકારમેં આખીરમેં (આયા હૈ). વ્યવહારસે અપનેકો જાનતે હૈં, ઐસા નહીં. (પરંતુ) વ્યવહારસે પરકો જાનતે હૈં, યહ વ્યવહાર હૈ. અપનેકો જાનતે હૈં યહ તો નિશ્ચય હૈ. પરકો વ્યવહારસે જાનતે હૈં ઐસે હી સ્વકો વ્યવહારસે જાનતે હૈં, ઐસા હૈ નહીં. આહાહા ! ઐસી બાત (હૈ) ! વાસ્તવમેં તો લોકાલોકકો જાનતે હી નહીં. ક્યોંકિ લોકાલોકકમેં તન્મય હુઆ નહીં. જો લોકાલોકકમેં તન્મય હો જાયે તો નારકીકે દુઃખકા વેદન આના ચાહિયે. સમજમેં આયા ? લોકાલોકકમેં સાતવી નરકકા નારકી મહા દુઃખી...દુઃખી...દુઃખી હૈ.

મહા ચક્રવર્તી રાજાઓં નરકમેં પડે હૈં. બ્રહ્મદત્ત ચક્રવર્તી ચક્રવર્તીપદમેં થોડે વર્ષ રહે. પરંતુ જીવન ૭૦૦ વર્ષકા થા. મરકર સાતવી નરકમેં ગયા. (વહાં) અભી ૩૩ સાગરકી આયુ સ્થિતિ હૈ. એક સાંસમેં ૧૧ લાખ પદ્ હજાર ૭૫ પલ્યોપમકા એક સાંસકા દુઃખ (હૈ). યહાં એક સાંસ લી ઉતનેમેં ઉસકી જો જંદગી ગયી (ઉસમેં) ઇતના દુઃખ ભોગતે હૈં. ઇતના એક સાંસમેં ૧૧ લાખ પદ્ હજાર પલ્યોપમકા દુઃખ (ભોગતે હૈં). સમજમેં નહીં આયા ? ફિરસે લેતે હૈં. એક-(એક) સાંસ (લેકર) ૭૦૦ સાલ ગયે. એક સાંસમેં સંસારકા કલ્પનાકા સુખ ભોગા, ઉસ એક સાંસકે ફલમેં ૧૧ લાખ પલ્યોપમકે દુઃખ આયે. સમજમેં આયા ? ઔર વહ ભી છોટી ઉમ્રમેં તો ચક્રવર્તી પદ નહીં થા. બાદમેં (ચક્રવર્તી) હુએ. ૭૦૦ સાલકી સાંસકી સંખ્યા હો (ઉસમેં) વહાં ૧ સાંસકે ફલ સ્વરૂપ ૧૧ લાખ પલ્યોપમકા દુઃખ હૈ. આહાહા ! તો કોઈ ઐસા કહે કિ, 'કકડીકે ચોરકો ફાંસીકી સજા' ! નહીં...નહીં...નહીં (ઐસા નહીં હો સકતા). ઇતને પરિણામ તીવ્ર થે કિ ઉસ હિસાબસે યહાં ૭૦૦ સાલ કલ્પનાકે-પાપકે દુઃખ ભોગે. યહાં ભી પાપકા દુઃખ થા પરંતુ ઉસકે ફલમેં (ઇતના દુઃખ ભોગતે હૈં). એકબાર હિસાબ કિયા થા. યહાં તો સબ બાત હૈ. ૧૧ લાખ પદ્ હજાર ૮૭૫ પલ્યોપમ. એક પલ્યકે અસંખ્યવે ભાગમેં અસંખ્ય અબજ વર્ષ જાય.

अेक पत्ये कालकी उपमा है. अेक पत्योपमके कालकी मुद्दतमें (अेक पत्येके) असंभ्ये भागमें असंभ्ये अरुव वर्षे जाय. अैसा १ पत्योपम. अैसा १० कोडा-कोडी पत्योपमका १ सागरोपम, ब्रह्मदत्त यकवर्ती सातवीं नरकमें अैसे ३३ सागरोपममें पडा है. आडाडा ! 'ककडीके थोरको फांसी' नहीं है. बडा गुना किया (है). आत्माका अनादर करके तीव्र रौद्रध्यान किया. आडाडा ! भगवान अनंत आनंद और अनंत शक्तिका निधान प्रभु ! उसका अनादर करके यह (आत्माका) सुभ है नहीं, और यह (सुभ) है, यह (सुभ) है, विषयका सुभ, भोगका सुभ ये (सुभ) है. (अैसे) इसके अस्तित्वकी कबूलातमें भगवान अनंत आनंदका नाथका अनादर किया. जिसके फलमें ११ लाख पत्योपम आदि पत्योपमका मुद्दतके दुःखमें गया. समजमें आया ? समजमें आता है कि नहीं ? आडाडा ! वह भी कल्पित सुभ अरेरे...! भोगमें तो दुःख है. आडाडा ! उसकी कुइमति रानी थी. ८६ हजार (रानीयोंमें) अेक (कुइमति) रानी थी. अेक हजार देव सेवा करते थे. समजमें आया ? आडाडा ! उसको स्त्री रतन कहते हैं. स्त्री रतन क्यों ? कि (उसका) बहुत कोमल और बहुत सुंदर शरीर (होता है). हजार देव तो उस स्त्रीकी सेवा करे. स्त्रीके भोगमें छतना मशगुल हो गया कि मृत्यु के कालमें अैसा बोले कि, 'कुइमति...कुइमति.. !' हीराके पदंगमें सोते थे. १६००० देव अंदर तैयार थे. आडाडा ! 'अे कुइमति...' कोई भोग न ले सके. मरके सातवीं नरकमें गये. भाई ! आडाडा !

यहां कहते हैं कि, तेरा ज्ञानस्वभाव है, उसकी परिणति होवे तो अनंत आनंद तुझे आता है. साथमें आनंद(इपी) पुत्रका जन्म होता है. सर्वज्ञकी परिणतिके साथ आत्मा भोग-वेदन करता है तो आनंदके पुत्रका जन्म होता है. उसमें (भोगमें) दुःख उत्पन्न होता है. आडाडा ! यह तो भारी मार्ग भाई ! अेक अंतर्मुद्दत आत्माका ध्यान करनेसे केवलज्ञानकी जणहणती ज्योत प्रगट होती है और ये केवलज्ञान अनंत आनंदके साथ उत्पन्न होता है. यह अनंत आनंद और केवलज्ञानकी पर्याय समय-समयमें भिन्न-भिन्न होती है. जो पहले समयमें केवलज्ञान हुआ वह दूसरे समयमें नहीं रहेगा. जो पहले समयमें अनंत आनंद आया वह दूसरे समयमें नहीं (आयेगा). दूसरे समयमें अैसा परंतु वह (आनंद) नहीं. समजमें आया ? और यह दुःख तो ओहोहो...! सातवीं नरकका अनंत भव किया भाई! तुझे मालूम नहीं. भूल गया.

पेटमेंसे बय्या आवे बादमें वह उँआ-उँआ करे. (उसका अर्थ यह है कि) तुम यहां और हम यहां. अब हमारा कोई संबंध नहीं. अव्यक्तपने अैसा है. यह होला (पंडुक-अेक पक्षी) होता है, वह भी 'सोडम्-सोडम्' बोलता है. परंतु सोडम्का उसे भान कहां है ? (होला) कबूतरसे छोटा होता है. पारेवा अलग होता है और होला अलग है. दोनों अलग-अलग हैं. हमारी भाषामें होला कहते हैं. वह होला भी होलेके भवमें भाषा तो अैसी बोलता है, सोडम् (अर्थात्) स - परमात्मा ते हुं. सो वह मैं. यह तो अभी भेद

આયા. સોહમ્ નિકાલ કરકે 'અહમ્' પૂર્ણ સર્વજ્ઞ, સર્વદર્શિ શક્તિ પરિપૂર્ણ પરમાત્મ સ્વભાવ (મૈં હું). આહાહા ! સમજમૈં આયા ? બાદમૈં કૌન પૂછેગા ? જહાં આત્માકા આનંદ આયા બાદમૈં કૌન કર્તા-કૌન કર્મ ? ઉસમૈં રાગકા કર્તા ઔર ક્રિયાકા રસ હી નહીં. આહાહા ! સમજમૈં આયા ?

યહાં પરિણમિત લિયા હૈ. સર્વજ્ઞ શક્તિ હૈ, યહ પરિણમિત હુઈ તો સર્વજ્ઞ શક્તિકા યથાર્થ વેદન હુઆ. સમજમૈં આયા ? આહાહા ! પહલે કહા થા ન ? કિ પહલે જ્ઞાનમાત્ર આત્મા કહા થા તો શિષ્યને પ્રશ્ન ક્રિયા થા. 'જ્ઞાનમાત્ર આત્મામૈં તો એકાંત હો જાતા હૈ. (ઇસમૈં તો) એક હી ગુણ આયા. અનેકાંત નહીં રહા અનેક ધર્મ નહી રહે.' (તો આચાર્ય ભગવાન કહતે હૈં) સુન તો સહી. જ્ઞાનમાત્ર આત્મા કહનેમૈં અનંત ધર્મ આ ગયે. જ્ઞાન હૈ તો જ્ઞાન અસ્તિપને હૈ, જ્ઞાન વસ્તુત્વપને હૈ, જ્ઞાન પ્રમેયપને હૈ, જ્ઞાન જ્ઞાતાપને હૈ-એસી અનંત શક્તિયાં ઉસમૈં આ ગયી ઔર જ્ઞાનકે પરિણમનમૈં અનંતી શક્તિ ઉછલતી હૈ. આહાહા ! અર્થાત્ સમ્યક્જ્ઞાનકી પરિણતિ જબ હુઈ (તો સાથમૈં આનંદ આયા). ૧૧ અંગકા બોધ યહ કોઈ જ્ઞાનકી પરિણતિ નહીં. આહાહા ! અંદર સ્વરૂપકો જ્ઞેય બનાકર જ્ઞાન હુઆ યહ સ્વરૂપકી પરિણતિ (હૈ). સમજમૈં આયા ? યહ યથાર્થ પરિણતિ જબ હુઈ તો આનંદ આયા. જબ કાર્ય હુઆ તો ઉસને કારણકો યથાર્થ (રૂપસે) દેખા ઔર જાના. આહાહા ! સમજમૈં આયા ? બાત થોડી હૈ પરંતુ બાત બહુત સત્ય હૈ. ઇસ સમયમૈં યલે નહીં ઇસલિયે સભીકો કઠિન લગે પરંતુ ક્યા હો સકતા હૈ ? ભાઈ ! આહાહા !

યહાં તો શક્તિકા વર્ણન હૈ, પ્રભુ ! (ઉસમૈં) વ્યવહારકા તો અભાવકી બાત હૈ. યહાં અભાવકી બાત કી નહીં પરંતુ યહાં નિશ્ચય કરનેકો યૌથે ગુણસ્થાનમૈં સર્વજ્ઞ (સ્વરૂપકી) પરિણતિ જબ હુઈ તો કેવલજ્ઞાન પ્રગટ હુઆ. (કેવલજ્ઞાન સ્વરૂપ) થા તો થા પરંતુ જ્ઞાન જ્ઞેય બનકર પ્રતીત હુઈ તબ શ્રદ્ધામૈં કેવલજ્ઞાન પ્રગટ હુઆ. ઔર તેરહલે ગુણસ્થાનમૈં કેવલજ્ઞાનકી પરિણતિ પ્રગટ હુઈ. યહ પરિણતિ પ્રગટ હુયી ઉસકી યૌથે ગુણસ્થાનમૈં પ્રતીત આયી. આહાહા ! ભાઈ ! સમ્યગ્દર્શન ક્યા ચીજ હૈ (તુજે માલૂમ નહીં). જિસને સારે પૂર્ણ સત્યકો પ્રતીતમૈં (લિયા). સમ્યક્ (કહા) ન ? (સમ્યક્ યાની) સત્ય. સારા - પૂર્ણ સત્યકી પ્રતીતિ (હુઈ). જ્ઞાનમૈં જ્ઞેય હોકર પ્રતીતિ હુઈ. જાનનેમૈં આયા બાદમૈં પ્રતીતિ (હુઈ). જાનનેમૈં નહીં આયા તો પ્રતીતિ કિસકી ? સમજમૈં આયા ? આહાહા !

સર્વજ્ઞ શક્તિકા પરિણમન હો તો સર્વજ્ઞ શક્તિકા કાર્ય આયા; તો કારણકી પ્રતીતિ હૈ (એસા કહા જાયે). આહાહા ! યૌથે ગુણસ્થાનમૈં તો સર્વજ્ઞ શક્તિકી પ્રતીતિ આયી. 'મૈં કેવલજ્ઞાન હું' એસી કેવલજ્ઞાનકી પ્રતીત શ્રદ્ધામૈં આયી. (કેવલજ્ઞાન) પ્રગટમૈં નહીં આયા. પ્રગટમૈં ૧૩ વે ગુણસ્થાનમૈં આતા હૈ. સમજમૈં આયા ?

એકબાર વહ બાત કહી થી. મતિ-શ્રુતજ્ઞાનમૈં સારી પૂર્ણ વસ્તુ પ્રતીતમૈં આયી. ઇસ મતિ-

श्रुतज्ञानमें केवलज्ञान श्रद्धामें प्रगट हुआ. नहीं माना था उसे माना. बादमें यह मति-श्रुतज्ञान हुआ वह केवलज्ञानको बुलाते हैं. (जैसे कोई किसीको पूछता है) 'भैया ! मुझे सिद्धपुर जाना है. उसका मार्ग कहांसे निकलेगा ? थोरमेंसे जाता है कि नदीके किनारेसे जाता है ? भाई ! यहां आवो, मार्ग दिखाओ.' ऐसा कहते हैं ना ? यहां मति-श्रुतज्ञानमें आत्माकी-केवलज्ञानकी पूर्ण प्रतीति ज्ञानमें आयी तो यह प्रतीति, मति-श्रुतज्ञानकी पर्याय केवलज्ञानको बुलाते हैं कि, 'आव परिशति आव, परिशति आव.' ऐसी बातें कभी सुनी न हो. आहाहा ! धवलमें आता है. जयधवल, धवल (ऐसे) ४० पुस्तकें हैं. सब देखे हैं. आहाहा !

आत्मामें पूर्ण आनंद, सर्वज्ञ और सर्वदर्शि शक्तिकी परिशति हो तब पूर्ण दशा है ऐसा प्रतीतमें आया कि, यह शक्ति है. (पहले) उसकी श्रद्धा नहीं थी वह अनुभवमें श्रद्धा हुई और पर्यायकी प्रतीति हुई कि, यह पर्याय पूर्ण है, उसको केवलज्ञान कहते हैं, आहाहा !

इसलिये प्रवचनसारकी ८० गाथामें लिया. "जो जाणदि अरहंत दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहि" जिसने अरिहंतकी केवलज्ञानकी पर्याय परिशतिरूप है, ऐसा माना वह विकल्पसे माना है. यह केवलज्ञानकी पर्याय है, ऐसा जाना वह विकल्पसे (जाना) है. परंतु बादमें वह आत्मामें मिलान करता है कि, मेरे पास केवलज्ञानकी पर्याय तो है नहीं. यहां शक्तिके रूपमें तो केवल(ज्ञान) है, तो उसकी दृष्टि सर्वज्ञ शक्ति उपर पडनेसे (श्रद्धामें केवलज्ञान प्रगट हुआ). प्रवचनसारमें ज्ञान अधिकारमें ऐसा कहा है कि, त्रिकावी ज्ञानको कारण बनाकर पर्यायमें कार्य हुआ, आहाहा ! ऐसी बातें हैं. असाधारण ज्ञानको कारण बनाकर, ऐसा पाठ है. आहाहा !

प्रभु ज्ञान शक्तिसे परिपूर्ण है. इस शक्तिको कारण बनाकर जब दृष्टिमें सम्यग्दर्शन हुआ तब प्रतीतमें भी आया कि, मेरी यह (पूर्णाताकी) परिशति अल्प कालमें होगी. समझमें आया ? वर्तमानमें केवलज्ञान है, ऐसी प्रतीति आयी (इसके पहले) केवलज्ञान नहीं है, ऐसी प्रतीति थी. 'मैं अकेला पूर्ण ज्ञानस्वरूप शक्ति(रूप) हूं.' ऐसी प्रतीति नहीं थी तो उसको केवलज्ञान नहीं था. समझमें आया ? आहाहा ! परंतु जब अंदर (स्वरूपको) ज्ञेय बनाकर ज्ञानमें प्रतीत आयी तो श्रद्धामें केवलज्ञान प्रगट हुआ. उसे पूर्ण (पर्याय) प्रगट होनेकी तैयारी हो गयी. आहाहा ! ऐसी बात है.

लोग तो अभी बाहरकी तकरारमें पडे हैं. 'पुण्य है सो धर्म है, शुभभाव धर्म है. उसे धर्म नहीं माने तो उसके साथ सत्याग्रह करो' ऐसा आया है. अरे.. प्रभु ! किसके साथ तू सत्याग्रह करता है ? अरे भाई ! शुभभाव तो स्वरूपमें है नहीं. द्रव्यमें है नहीं, गुणमें है नहीं. यहां तो शक्तिके परिशमनमें (भी) शुभभाव है नहीं. समझमें आया ? याहे तो सम्यग्दर्शनका परिशमन हो परंतु उस परिशमनमें शुभभाव है नहीं. समझमें आया ? आहाहा !

परिष्ठाभित भाषा कडकर तो गजब काम किया है ! और उपर भी है. “....परिष्ठाभित
 अेक ज्ञानिमात्र भाव किया...” ज्ञानके आश्रयसे ज्ञानकी पर्याय परिष्ठाभित हुँ. जैसे यह
 केवलज्ञान भी, ज्ञान शक्ति त्रिकाल है उसके आश्रयसे पर्यायमें केवलज्ञानकी परिष्ठाभित हुँ.
 आडाडा ! जैसे छत्रस्थको केवलज्ञान प्रतीतमें आया. अेक ज्ञानमूर्ति भगवान आत्मा पूर्ण
 है. उसकी पूर्ण शक्ति है. उसका आश्रय लेकर जो सम्यग्दर्शन हुआ (उस) सम्यग्दर्शनकी पर्यायमें
 पूर्णकी प्रतीति है. विकारका अभाव है. समझमें आया ? शुभरागका भी जिसमें अभाव है.
 तब यथार्थ प्रतीति कडनेमें आती है. आडाडा !

त्रिकावी ज्ञायक स्वभावकी परिष्ठाभितमें प्रतीति हुँ तो उस समयमें जो ज्ञान पर्याय प्रगट
 हुँ, वह राग जिस प्रकारका है (उसे जानती हुँ) स्वपर प्रकाशक ज्ञानकी पर्याय अपनेमें
 अपने कारणसे प्रगट होती है. राग है तो परको जाननेकी पर्याय प्रगट हुँ, ऐसा भी
 नहीं. समझमें आया ? राग होता है, ज्ञानीको भी राग आता है. १२वीं गाथामें कडा न ?
 जाननेमें आता हुआ प्रयोजनवान (है). ‘तदात्वे’ जाननेमें आता हुआ प्रयोजनवान उसका
 अर्थ यह है कि, रागके कालमें अपने ज्ञानस्वरूपके लक्षसे स्वपर प्रकाशक पर्याय अपने कारणसे,
 अपनी सत्तामें, अपनी सत्ताके सामर्थ्यसे प्रगट होती है. उसमें रागका ज्ञान कडना यह व्यवहार
 है. राग संबंधी अपना ज्ञान और अपना ज्ञान दोनों अपने ज्ञानसे उत्पन्न होता है, रागके
 कारणसे नहीं. रागका तो अभाव है परंतु रागके कारणसे ज्ञान भी नहीं, आडाडा ! गजब
 बात है ! समझमें आया ? १२ वीं गाथामें ‘तदात्वे’ शब्द पडा है. उस समयमें (अर्थात्)
 उस कालमें. जिस समय ज्ञानकी अल्प पर्याय है और राग आदि है, तब उस समय ज्ञान
 उसे जानता है. वह जाननेमें आता हुआ प्रयोजनवान है. उसका अर्थ कि, वहां परको जानता
 है, ऐसा भी व्यवहार कडा है. परंतु यहां तो उससे भी निकाल दिया कि अपनी परिष्ठाभितको
 ही जानते हैं. बाकी रागको जानना कडना – वह तो असद्वृत्त उपचार है. आडाडा !
 विशेष देंगे....



પ્રવચન નં. ૧૨

શક્તિ-૧૦,૧૧ - તા. ૨૨-૦૮-૧૯૭૭

વિશ્વવિશ્વવિશેષભાવપરિણતાત્મજ્ઞાનમયી સર્વજ્ઞત્વશક્તિ: ॥૧૦॥
 નીરૂપાત્મપ્રદેશપ્રકાશમાનલોકાલોકારમેચકોપયોગલક્ષણા
 સ્વચ્છત્વશક્તિ: ॥૧૧॥

સમયસાર શક્તિકા અધિકાર ચલતા હૈ. ૧૦ વીં શક્તિ. “સમસ્ત વિશ્વકે વિશેષ ભાવોંકો...” સર્વજ્ઞ શક્તિમેં બહુત ગંભીરતા હૈ. સર્વજ્ઞ શક્તિ હૈ ઉસકા પરિણમન અપનેસે હોતા હૈ. ઇસલિયે કહા કિ, “સમસ્ત વિશ્વકે વિશેષ ભાવોંકો જાનનેરૂપસે પરિણમિત...” સમજમેં આયા ? સૂક્ષ્મ હૈ.

સર્વજ્ઞ શક્તિ જો ત્રિકાલ હૈ વહ સર્વ ભાવોંકો જાનનેરૂપ વર્તમાનમેં પરિણમિત હોતી હૈ. હૈ ? “એસે આત્મજ્ઞાનમયી સર્વજ્ઞત્વ શક્તિ...” ઉસમેં બહુત તકરાર હૈ ના ? વે કહતે હૈં કિ, સર્વજ્ઞ શક્તિ હૈ, વહ સર્વકી અપેક્ષા રખતી હૈ, ઇસલિયે વહ વ્યવહાર સર્વજ્ઞ હૈ. (લેકિન) એસા નહીં (હૈ). આત્મામેં સર્વજ્ઞ સ્વભાવ – શક્તિ (હૈ). ઉસકી પ્રતીતિ કરનેસે, ઉસકે સન્મુખ હોનેસે અથવા સર્વજ્ઞ શક્તિકા ધરનેવાલા ભગવાન આત્મા ! ઉસકા આશ્રય કરનેસે પ્રથમ સમ્યગ્દર્શન હોતા હૈ. ઇસ સમ્યગ્દર્શનમેં સર્વજ્ઞ શક્તિ – કેવલજ્ઞાન શ્રદ્ધામેં ઉત્પન્ન હુઆ. કયા કહા ? શ્રદ્ધાપને કેવલજ્ઞાન હુઆ. સૂક્ષ્મ બાત હૈ. જો શ્રદ્ધામેં આત્મા અલ્પજ્ઞ હૈ અથવા સર્વજ્ઞ શક્તિ નહીં, એસી જો દૃષ્ટિ થી, વહ મિથ્યાદૃષ્ટિ હૈ. આહાહા ! એક પ્રશ્ન બહુત ચલા થા ન ? કિ જગતમેં સર્વજ્ઞ હૈ કિ નહીં ? તો પ્રશ્નકા એસા ઉત્તર દિયા કિ, “સર્વજ્ઞકી સર્વજ્ઞ જાને” અરે પ્રભુ ! કયા કરે ભાઈ ! આહાહા !

આત્મા પદાર્થ હૈ. ઉસમેં સર્વજ્ઞ – ‘જ્ઞ’ સ્વભાવ કહો કિ સર્વજ્ઞ સ્વભાવ કહો, ઉસકા યહી સ્વરૂપ હૈ. સર્વજ્ઞ સ્વભાવકો ધરનેવાલા શક્તિવાન આત્મા (હૈ). ક્યોંકિ ધર્મકા મૂલ તો સર્વજ્ઞ હૈ. સર્વજ્ઞસે ધર્મકી સ્થિતિ ઉત્પન્ન હુઈ હૈ. આહાહા ! તો સર્વજ્ઞ કયા હૈ ઓર સર્વજ્ઞ કેસે પરિણમિત હોતે હૈં ? વહ બાત તો ઉસકો જાનની પડેગી. આત્મામેં સર્વજ્ઞ શક્તિ – સ્વભાવ હૈ.

ઉસમેં ભી દો મત હૈં. શ્વેતાંબર કહતે હૈં કિ, કેવલજ્ઞાન સત્તારૂપ હૈ ઓર દિગંબર કહતે

हैं कि, (केवलज्ञान) शक्तिरूप है. दोनोंमें फर्क है. (श्रेतांबर कहते हैं) केवलज्ञान है, (लेकिन) उस पर आवरण है, (लेकिन) ऐसा नहीं है. केवलज्ञान है वह शक्तिरूप है. उसके परिणामनमें अल्पज्ञता है, यह उसका आवरण है. संप्रदायमें तो बहुत बर्बा बर्बा थी न ! सत्ता है और आवरण है, ऐसा होता नहीं. शक्तिरूप है (दोनोंमें) फर्क है. सत्ता और शक्तिमें बहुत फर्क है. वे लोग ऐसा कहते हैं, प्रगट है और आवरण है. यहां थोड़े फर्कमें बहुत फर्क है. समझमें आया ?

यहां तो शक्तिरूप (है). शक्ति नाम ताकत. उसकी सर्वज्ञ होनेकी ताकत – शक्ति है. यह सर्वज्ञ शक्तिकी ताकत परिणामनमें जब छोड़े तो सर्वज्ञकी परिणति आती है. आहाहा ! यह सर्वज्ञ शक्ति द्रव्यमें ली है, गुणमें ली है और उसका पर्यायमें परिणामन होता है. इसलिये ऐसी भाषा है देखो ! “विशेष भावोंको जाननेरूपसे परिणामित...” आहाहा !

शक्तिका अधिकार चलता है. उसका (ऐसा) सामर्थ्य है. परंतु जिस समय, जिस कालमें इस सामर्थ्यका परिणामन होता है, उसी कालमें सर्वज्ञ शक्तिका परिणामन छोकर उस कालमें सर्वज्ञपना प्रगट होता है. आहाहा ! मार्ग बहुत अलौकिक है, भाई ! यह सर्वज्ञ शक्ति जाननेरूपसे परिणामित (होती है). आहाहा ! यहां परको जानना ऐसा शब्द नहीं है. “विशेष भावोंको जाननेरूपसे परिणामित...” जो अनंत द्रव्य, अनंत गुण आदि त्मेद्वरूपभाव है, उस सबको, सर्वज्ञ एक समयमें जाननेकी शक्ति रहते हैं. समझमें आया ?

(प्रवचनसार ८० गाथामें) कहा कि, “जो जाणदि अरहंतं दव्वत्तगुणत्तपज्जयत्तेहि” जिसने अरिहंतके द्रव्य, गुण और पर्यायको जाना, तो उस पर्यायमें केवलज्ञान आया. जगतमें केवलज्ञानकी परिणति है उसको जाना. वह अपने आत्मामें मिलान करता है कि, मेरी पर्यायमें सर्वज्ञपना क्यों नहीं ? समझमें आया ? क्योंकि उनमें सर्वज्ञ शक्ति थी, तो सर्वज्ञ शक्तिका परिणामन उनको हुआ. मेरेमें सर्वज्ञ शक्ति है तो परिणामन क्यों नहीं ? समझमें आया ? आहाहा ! मेरी दृष्टि अंतरमें गयी नहीं (और) सर्वज्ञ शक्तिका स्वीकार नहीं (है). इसलिये सर्वज्ञकी परिणति नहीं होती है. समझमें आया ? अरिहंतकी पर्यायको जाने तो वह अपने आत्माको जाने और “मोहो खलु जादि तस्स लयं।” उसको दर्शनमोहका नाश होता है.

सवेरे कहा था कि, मुख्यवृत्तिसे केवलज्ञान वर्तता है, यह साधारण बात है. श्रीमद् राजयंद्र (आत्मज्ञानको) प्राप्त थे. समझमें आया ? तो कहते हैं कि, जिनके वचनके योगसे, विचार करनेसे सर्वज्ञ शक्तिकी प्रतीति हुई, जैसे भगवानको हम नमस्कार करते हैं. परंतु यह सर्वज्ञ शक्तिकी प्रतीति हुई – केवलज्ञान है, ऐसा जो प्यालमें नहीं था; (उसे) केवलज्ञान है, पूर्णज्ञान है, ऐसी प्रतीति हुई तो श्रद्धापने केवलज्ञान उत्पन्न हुआ. समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बात है !

“शमो अरिहंतां” वह तो क्या थी है, बापू ! जैसे के जैसे भाषा तो अनंतबार रट ली. परंतु अरि नाम विकारका नाश करके जिन्होंने स्वआश्रयसे सर्वज्ञ पर्याय प्रगट की. (उन्होंने) सर्वज्ञ पर्याय प्रगट की परंतु यहां अभी जिसने (सर्वज्ञ पर्याय) प्रगट नहीं की, उसे प्रतीतमें आया कि, मैं सर्वज्ञ स्वरूप हूं. तो प्रतीतमें आनंद आया. प्रतीतमें अतीन्द्रिय आनंद आया. इस आनंदके कारणसे अंदर सारी थीजकी प्रतीति उत्पन्न हुई. ओहोहो ! समझमें आया ?

यहां कहते हैं कि, श्रद्धापने केवलज्ञान हुआ. सम्यग्दर्शनमें श्रद्धापने केवलज्ञान हुआ. दूसरी बात – विचारदशासे केवलज्ञान हुआ. पहले दर्शन लिया, बादमें ज्ञान (लिया), बादमें यारित्र (लिया). तीन बोलेंगे. सुनो ! आत्मा वस्तु अकेले ज्ञानका पिंड, ‘ज्ञ’ स्वभावी त्रिकाल ‘ज्ञ’ स्वभाव (है). त्रिकाल ‘ज्ञ’ स्वभावमें सर्वज्ञ स्वभाव शक्तिरूप है. सम्यग्दर्शनमें उसकी प्रतीति हुई. श्रद्धापने केवलज्ञान नहीं था (उसकी जगह) प्रतीतमें केवलज्ञान है, ऐसी प्रतीत आयी तो श्रद्धापने केवलज्ञान प्रगट हुआ. सूक्ष्म बात है, भगवान ! आहाहा ! विचारदशासे केवलज्ञान प्रगट हुआ. क्योंकि ज्ञानकी पर्यायमें सारे ज्ञेयकी प्रतीति आती है. तो ज्ञानकी पर्यायमें भी विचारदशासे केवलज्ञान आया. श्रद्धापने (केवलज्ञान) आया (और) विचारदशासे भी (केवलज्ञान) आया. आहाहा ! थोड़ी सूक्ष्म बात है. छयादशासे केवलज्ञान आया. तीन बोल लिये. पहले दर्शन लिया, बादमें ज्ञान, फिर छया (लिया). (छया) यानी यारित्र. भाई ! सर्वज्ञपना मानना यह कोई अलौकिक थी है. समझमें आया ? आहाहा ! जैसे-जैसे (तो) (उपर-उपरसे तो) सर्वज्ञ है, अरिहंत है ऐसा तो बहुत गोप्य लिया. गोप्य लिया समझे ? (अर्थात्) रट लिया. आहाहा !

भगवान आत्मा ! वर्तमान ज्ञानकी पर्यायमें यह सर्वज्ञ शक्ति स्वभावरूप है. ऐसा स्वआश्रय करके सर्वज्ञपनाका परिणामन जिसको हुआ, उस परिणामनकी प्रतीति पहले सम्यग्दर्शनमें होती है. समझमें आया ? श्रद्धापने केवलज्ञान उत्पन्न हुआ. (पहले) प्रतीतमें ज्ञानस्वरूपी पूर्ण नहीं था. ‘मैं तो अल्पज्ञ और रागरूप हूं’ (ऐसा प्रतीतिमें था). वर्तमान पर्यायबुद्धिमें अल्पज्ञ और रागबुद्धि थी. सर्वज्ञ और केवलज्ञान (स्वरूप) है, ऐसी श्रद्धा नहीं थी. आहाहा ! ऐसा मार्ग ! भगवान आत्मा पूर्णानंद यैतन्यप्रकाशका तेजका पुंज है. आहाहा ! यह यैतन्ययंद्र, प्रकाशका पुंज, शितलता, शांति और उपशमरसका कंद (है). आहाहा ! ऐसा प्रतीतमें जब आया तो कहते हैं कि, श्रद्धापने केवलज्ञान प्रगट हुआ. (केवलज्ञानको) नहीं माना था और (अब) माना तो (केवलज्ञान) प्रगट हुआ, (ऐसा कहते हैं). सूक्ष्म बात है, भाई ! विचारदशासे केवलज्ञान हुआ. ज्ञानकी पर्यायमें सारे सर्वज्ञ स्वभावकी परिणति ऐसी है, उसकी प्रतीत आ गयी. ज्ञानमें भी आ गयी.

रातको अेक प्रश्न हुआ था. भंभा होता है न भंभा ? उसकी हांस होती है. हांस

(માને) એક ભાગ (હિસ્સા). એક ભાગ હૈ યહ અવયવ હૈ. (ઉસ એક ભાગકો દેખા તો) સારી ચીજ-અવયવીકા જ્ઞાન હો ગયા. યહ અવયવ ઇસ અવયવીકા હૈ. પૂરા ખંભા મતિજ્ઞાનકી પર્યાયમે પ્રતીતિમે આ ગયા. ઐસે મતિજ્ઞાન ઓર શ્રુતજ્ઞાનમે સર્વજ્ઞ શક્તિકી પ્રતીતિ હુઈ. મતિજ્ઞાનકા જો અંશ (પ્રગટ) હુઆ, યહ કેવલજ્ઞાનકા અંશ હૈ. ઇસ અંશકો જિસને જાના ઉસને અંશીકો જાના. (જિસને) અવયવકો જાના ઉસને અવયવીકો જાના, ઐસા જયધવલમે પાઠ હૈ. બાત થોડી સૂક્ષ્મ તો હૈ લેકિન માર્ગ તો યહ હૈ. સમજમે આયા ?

ઇચ્છાદશાસે કેવલજ્ઞાન વર્ત રહા હૈ, ઐસા કહા. શ્રદ્ધાપને કેવલજ્ઞાન ઉત્પન્ન હુઆ, વિચારદશાસે કેવલજ્ઞાન ઉત્પન્ન હુઆ, ઇચ્છાદશાસે કેવલજ્ઞાન ઉત્પન્ન હુઆ. ક્વોંકિ ઇચ્છા-ભાવના અબ કેવલજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરનેકી હૈ. સમજમે આયા ? કહા ન ? “જાનનેરૂપસે પરિણમિત...” ઐસી જો પર્યાય હૈ, ઉસે પ્રગટ કરનેકી સમ્યક્દૃષ્ટિકો ઇચ્છા હુઈ તો ઇચ્છાદશાસે કેવલજ્ઞાન વર્ત (રહા હૈ), ઐસા કહનેમે આયા હૈ. બહુત સૂક્ષ્મ બાત હૈ, બાપૂ ! વીતરાગકા ધર્મ બહુત સૂક્ષ્મ હૈ. એક બાત (હુઈ).

(અબ) દૂસરી (બાત). “જાનનેરૂપસે પરિણમિત ઐસી આત્મજ્ઞાનમયી સર્વજ્ઞશક્તિ.” સર્વજ્ઞ કહા તો પરકી અપેક્ષા આયી, ઐસા નહીં હૈ. યહ આત્મજ્ઞાનમયી અપની પર્યાય સર્વજ્ઞરૂપસે – આત્મજ્ઞાનમયી પરિણમિત હુઈ હૈ. અપને કારણસે સર્વકો જાનના ઓર અપનેકો જાનના, ઐસી આત્મજ્ઞાનમયી સર્વજ્ઞ શક્તિ (હૈ). પરકો જાનના ઐસા નહીં લેકિન સર્વકો ઓર અપનેકો જાને, ઐસી આત્મજ્ઞાનમયી શક્તિ (હૈ). આહાહા ! ક્યા કહા સમજમે આયા ? માર્ગ-ધર્મ ઐસા સૂક્ષ્મ હૈ, ભાઈ ! ક્રિયાકાંડ કરતે-કરતે જિંદગી પૂરી હો ગયી, આહાહા !

યહાં કહતે હૈં કિ, સર્વજ્ઞશક્તિકે સ્વાશ્રયસે સર્વજ્ઞ પર્યાય પ્રગટ હુઈ હૈ. સર્વ હૈ તો ઉસકે જાનને કે લિયે પ્રગટ હુઈ હૈ, ઐસા ભી નહીં. સમજમે આયા ? અભી શક્તિમે બહુત વિરોધ હૈ. સમજમે આયા ?

ખાણિયાચર્યામે સામનેવાલે પંડિત ઐસા કહતે હૈં કિ, સર્વજ્ઞશક્તિ હૈ ઇસમે સર્વકી-પરકી અપેક્ષા આયી તો એક ધર્મ આત્મજ્ઞાનમયી હૈ ઓર એક પરકો જાનનેકા ધર્મ અંદર હૈ, ઐસે દો ધર્મ હૈ. (પરંતુ) દો ધર્મ નહીં-એક હી ધર્મ હૈ. આત્મજ્ઞાનમયી સર્વજ્ઞશક્તિ (કહા) હૈ લેકિન ધર્મ એક હી હૈ. સર્વજ્ઞપના કહો યા આત્મજ્ઞપના કહો, ઇસમે વિવક્ષાકા કથનભેદ હૈ. વસ્તુભેદ નહીં હૈ. આહાહા ! ઐસી બાત હૈ. સમજમે આયા ? સમજમે આયે ઐસા હૈ, નહીં સમજમે આયે ઐસા નહીં હૈ, બાપૂ ! ઉસમે કેવલજ્ઞાન લેનેકી તાકત હૈ ન, પ્રભુ ! આહાહા !

એક સમયમે ઉસ સમયકે કાલમે, વહી કેવલજ્ઞાન પર્યાય ઉત્પન્ન હોનેકા સ્વકાલ હૈ, ઇસલિયે ઉત્પન્ન હોતી હૈ. પૂર્વકે ચાર જ્ઞાન થે ઓર (ઉસકા) વ્યય હોકર (કેવલજ્ઞાન) ઉત્પન્ન હુઆ, યહ વ્યવહાર હૈ, આહાહા ! યહ સર્વજ્ઞ પર્યાય-કેવલજ્ઞાન ઉસ સમયમે ઉત્પન્ન હોનેકા સ્વકાલ હૈ. ઓર યહ કેવલજ્ઞાનકી પર્યાય સર્વકો જાને ઇસલિયે પરકો જાનના ઉસમે આયા, ઇતની

अपेक्षा आयी, असा नही है. यह सर्वज्ञपना वही आत्मज्ञपना है. समजमें आया ? सर्वको जाननेरूप परिणामन अपना अपनेसे स्व आश्रित है, परके कारण नहीं. लोकालोक है तो सर्वज्ञपनाका परिणामन हुआ, असा नहीं है. समजमें आया ? थोडा इर्क (लगे) लेकिन उसमें बहुत इर्क है.

यह यर्था तो हमारे (साथ) ५० साल पहले बहुत हो गयी थी. ८३की सालमें दामनगरमें एक सेठ थे. वे कहते थे कि, यह लोकालोक है तो सर्वज्ञपना उत्पन्न होता है. यहां कडा कि, यह सर्वज्ञपनाकी पर्याय अपनेसे अपने कारणसे स्वआश्रयसे उत्पन्न हुई है. लोकालोक है इसलिये उत्पन्न हुई है, असा नहीं है. ज्ञेय है तो ज्ञानकी पूर्ण परिणति प्रगट हुई है, असा नहीं है. अपने कारणसे प्रगट हुई है, आडाडा !

लेकिन किसे नक्की – निर्धार करनेकी पडी है ? अरे प्रभु ! आपू ! तू कौन है ? भाई ! तेरी शक्तिमें सर्वज्ञपना पडा है. छतना इसका सामर्थ्य है ! रागको (करनेका) सामर्थ्य तेरेमें नहि, अल्पज्ञपने रहना असा सामर्थ्य तेरेमें नहीं, आडाडा ! असी बात है. लोगोंके साथ मेल नहीं पाये इसलिये बेयारे विरोध करे.

अरे.. भाई ! आत्मज्ञान कडो कि सर्वज्ञ कडो, एक ही शब्द है. यह शब्दका इर्क है. आत्मज्ञान यह निश्चय है और सर्वज्ञपना (है), यह व्यवहार है, असा नहीं. “आत्मज्ञानमयी..” असा कडा न ? आत्मज्ञानवाला असा भी नहि (कडा). लेकिन आत्मज्ञानमयी (कडा), आडाडा ! आत्मज्ञानमयी कौन ? कि सर्वज्ञ. आत्मज्ञानमयी सर्वज्ञ. आडाडा ! एक समयमें सर्वज्ञकी परिणति आत्मज्ञानमयी है. यहां परके ज्ञानकी बात नहीं है. समजमें आया ? पर संबंधी अपना ज्ञान और अपना (स्वका) ज्ञान, उस समयमें अपनेसे परिणमित हुआ है. परको जानते है तो सर्वज्ञ शक्ति प्रगट हुई, असा नहीं, आडाडा ! अरे.. असी बात है. असा सूक्ष्म समजकर कब धर्म हो ? असी बात है, आडाडा ! अरे ! समजमें नहीं आये असा नहीं है. आडाडा ! उसे पात्री (भरोसा) हो जाये और अल्पकालमें केवलज्ञान होगा, असा निर्णय आ जाये. निःसंदेह निर्णय हो जाये. समजमें आया ? उसको भगवानको पूछना नहीं पडे, आडाडा ! असे अंदरमें आत्मामें आत्मज्ञानमयी अनुभूतिमें प्रतीति हुई, ‘मैं तो अकेली ज्ञानशक्ति, सर्वज्ञ (शक्तिसे) भरा पडा हुं’ आडाडा ! यह सर्वज्ञशक्तिके स्वभावके आश्रयसे प्रतीति हुई. प्रतीति असे (ही) नहीं (हुई). ज्ञानमें (शक्ति) आयी नहीं और प्रतीति हुई, वह प्रतीति नहीं. (उसे प्रतीति नहीं कहते).

ज्ञानकी पर्यायमें सर्वज्ञ शक्ति (स्वरूप) असा द्रव्य लक्षमें आया. ज्ञानकी पर्यायमें सर्वज्ञ शक्ति और सर्वज्ञ शक्तिको धरनेवालेका ज्ञान आया. सर्वज्ञशक्ति पर्यायमें नहीं आयी. अरे.. ! असी बातें हैं. समजमें आया ? परिणति शब्दका प्रयोग किया है न ? कल बहुत दिया था. यह (दो पद) श्रीमद्में से निकलते हैं. ३१३ पन्ने पर है. श्रीमद् राजयंद्रमें से पढा न ?

(हमने) तो हजारों शास्त्र पढ़े हैं.

यहां कहते हैं, “आत्मज्ञानमयी सर्वज्ञशक्ति...” सर्वज्ञ आया तो परकी अपेक्षा आयी, ऐसा नहीं है. ऐसा कहते हैं. समझमें आया ? आत्मज्ञानमयी सर्वज्ञशक्ति है. सर्वज्ञशक्ति कछो या आत्मज्ञानमयी कछो, अक ही यीज है.

आत्मज्ञान है यह निश्चयसे है और सर्वज्ञ शक्ति व्यवहारसे है, ऐसा नहीं है. अथवा सर्वको जाननेका सर्वज्ञ (इप) परिणामन हुआ, यह व्यवहार और अपनेको जाना वह निश्चय, ऐसा नहीं है. परको और अपनेको जाननेकी परिणति अपनेसे, अपने कारणसे, अपनी सत्तासे परिणमित हुई है. पर ज्ञेयकी सत्ता है तो सर्वज्ञपनाका परिणामन हुआ, ऐसा नहीं है. परकी अपेक्षा नहीं है. आहाहा ! अरे..! ऐसी सूक्ष्म बातें हैं.

मार्ग अलग (है). जिसके फलमें अनंत केवलज्ञान (आये). “सादि अनंत अनंत समाधिसुषमां”— जिसका फल केवलज्ञान, अनंत आनंद ऐसी आदि (शरुआत) हो. पर्यायमें अनंत आनंदकी आदि हुई न ? अनादिसे शक्ति तो है लेकिन (मान हुआ तो) आदि हुई—प्रगट हुई. ‘सादि अनंत अनंत समाधि सुषमां’ जबसे केवलज्ञान हुआ (तबसे उसकी) आदि हुई. क्योंकि शक्ति तो अनादिसे है परंतु प्रगट हुई (यह) आदि (हुई). और जब आदि हुई वहां सादि अनंत अनंत समाधि, शांति..शांति..शांति..शांति (प्रगट हुई). ‘उपशमरस वरसे रे प्रभु तारा नयनमां’ (ऐसी) स्तुति आती है. जैसे केवलज्ञानमें अकेला उपशमरस वर्त रहा है. आहाहा ! उपशमरस यानी यारित्र. यारित्र यानी वीतरागदशा. केवलज्ञान हुआ तो साथमें यथाभ्यात यारित्र हुआ. यथाभ्यात यानी जैसी वस्तु है, ऐसी पर्यायमें प्रसिद्धि आयी. सर्वज्ञपनामें यारित्रकी पूर्ण पर्याय (प्रगट हुई). शांति..शांति..अकषाय स्वभाव..वीतरागरस..उपशमरसकी परिणति पूरी हो गयी, आहाहा ! समझमें आया ? यह बात परिणमितमें से चलती है. यह तो गंभीर (मार्ग है) भाई !

अमृतचंद्रआचार्य द्विगंबर संत आकाशके स्थंभ (धर्मके स्थंभ है). आकाशको स्थंभ नहीं होता लेकिन वे तो धर्मके स्थंभ (है), आहाहा ! आकाश होता है उसको स्थंभ होता है ? वैसे यह तो वीतरागी परिणतिका स्थंभ है, भगवान ! इस तरह तुम भी जैसे हो !

स्वभावमें, शक्तिमें, सामर्थ्यमें, सत्वमें, सत्के भावमें, सत्-वस्तु उसके भावमें सर्वज्ञशक्ति है. आहाहा ! ऐसी प्रतीति जहां हुई, तो (वर्तमानमें) सर्वज्ञकी परिणति भले न हो लेकिन सर्वज्ञकी परिणतिकी पर्यायमें प्रतीति आयी कि, ओहो ! इसमें से तो अब सर्वज्ञकी पर्याय ही प्रगट होगी. मैं अभी सर्वज्ञ पर्यायमें आऊंगा. बीज उगी है तो १३वें दिनमें पुर्णिमा होगी, होगी और होगी, आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बातें हैं. दूसरेके साथ कोई भेल नहीं जाये. बापू ! मार्ग ऐसा है, भाई ! समुद्रमें जैसे लबालब पानी भरा हो जैसे भगवान ज्ञान शक्ति और आनंद शक्तिसे लबालब भरा है, आहाहा ! उसका

परिणामन जब होता है (तो) उसको आत्मज्ञानमयी सर्वज्ञशक्ति कही.

सर्वज्ञ है तो उसमें परकी अपेक्षा है ही नहीं. निश्चयसे आत्मज्ञानमयी सर्वज्ञशक्ति है. बादमें परको जानना जैसे कलना, वह व्यवहार हो गया. परंतु (परिणामन) निश्चय है. समझमें आया ? ऐसा मार्ग (है), भाई ! यहां क्लासमें शक्तिका वर्णन देनेको कहा था, आहाहा !

यह सब ४३के-मिट्टीके रजकण भिन्न, कर्मके रजकण ४३-अयेतन भिन्न, पुण्य-पापके परिणाम भिन्न, अल्पज्ञ पर्याय भी जिसमें नहीं है, ऐसी भिन्न सर्वज्ञशक्ति है. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसी बात है. रागसे (धर्म) उत्पन्न होता है, ये बात (यहां) नहीं है. ऐसा कहते हैं. व्यवहार रत्नत्रय करते-करते सम्यग्दर्शन होगा, केवलज्ञान होगा, ऐसा नहीं है. यहां तो सम्यग्दर्शनमें ऐसी प्रतीति आयी कि, मैं सर्वज्ञ शक्तिमयी हूं, तो उसकी पूर्ण परिणति अपनेसे होगी. आत्मज्ञानमयी सर्वज्ञ परिणति है, यह मेरेसे उत्पन्न होगी और षट्कारक परिणामन होकर परकी अपेक्षा रहे बिना उत्पन्न होगी. ज्ञेय-लोकालोक है तो (उसकी) अपेक्षा रहे बिना मेरी पर्याय सर्वज्ञरूपसे परिणमेगी. भैया ! ऐसी बात है. भगवान ! आहाहा ! ऐसा मार्ग (है). अरे भगवान ! तू कौन है प्रभु ? समझमें आया ? आहाहा !

समयसारमें जयसेन आचार्यकी टीकामें लिखा है. अक भाव अगर यथार्थ बैठे तो सर्व भाव यथार्थ बैठे. कोई भी अक भाव ! सर्वज्ञ कहे, सर्वदर्शि कहे, शक्ति कहे, ज्ञान पर्याय कहे, द्रव्य कहे-अक भाव भी यथार्थरूपसे जिसको प्यालमें आया तो सर्व भाव उसको यथार्थ (रूपसे) प्यालमें आता है. आहाहा ! यहां ये ८ वीं शक्ति और १० वीं शक्तिमें तो गजब बात है ! भैया ! आहाहा !

(गवालियरसे अक मुमुक्षु आये थे उनको पूज्य गुरुदेवश्रीका बहुमान करनेका भाव था तो) पूज्य गुरुदेवश्रीने कहा - हमारा और बहनका कुछ बाहरमें देना नहीं. भगवान और देव, गुरु, शास्त्रकी बात करो. हम तो देव, गुरु, शास्त्रके दास हैं, आहाहा ! बहनको तो कहां पड़ी है ? बहन तो धर्म रत्न हैं. वह कौन है, बापू ? पहचानना मुश्किल पड़े. स्त्रीका देह, जैसे शांतिसे यत्ने, बोलनेका बहुत कम, आहाहा ! यह नव भव (का जातिस्मरणज्ञान है), यह कैसे बैठे ? भाई ! नहीं बैठे तो विश्वास रहो ! दूसरा क्या हो सकता है ? यह शीज कोई बाहरमें दिखानेकी है ? आहाहा !

यहां आत्मज्ञान और सर्वज्ञपना, जैसे दो (बात) नहीं हैं. आत्मज्ञान कहे कि सर्वज्ञपना कहे, दोनों अक ही शीज है. आत्मज्ञान है यह निश्चय परिणति है और सर्वज्ञ है यह व्यवहार है, जैसे दो (बात) नहीं है. यह तो दो होकर अक (बात) है. समझमें आया ? बादमें लोकालोकको जानते हैं, ऐसा कलना यह व्यवहार है. यह (परिणामन) व्यवहार नहीं है. यह आत्मज्ञानमयी सर्वज्ञशक्ति, यह तो निश्चय है. यह बाहरकी वकालतसे अलग प्रकारकी वकालत है. यह भगवान बननेकी वकालत है. और वह भगवान है. है वह (भगवान)

હોગા. સ્વભાવ ઓર શક્તિરૂપસે (ભગવાન) હૈ. હૈ વહ હોગા નહીં હોગા કહાંસે આયા ? સવેરે આયા થા ન ? આજ અચ્છા લિયા થા. સવેરે કલશ અચ્છા આયા થા. હિન્દી હો ઉન લોગોંકો સમજમેં આયે ઐસા થા. બહુત અચ્છી બાત આઈ. સુખરૂપ સાર (હૈ) ઓર દુઃખરૂપ અસાર (હૈ), આહાહા ! વહાં તો ઐસે લિયા. પુદ્ગલકે એક પરમાણુસે લેકર કર્મ, શરીર, વાણી, પૈસા, લક્ષ્મી, સ્ત્રીકા શરીર ઉસમેં જ્ઞાન ભી નહીં ઓર સુખ ભી નહીં. ઓર નિગોદકે જો અનંત જીવ હૈ, ઉસમેં જ્ઞાન ભી નહીં (ઓર સુખ ભી નહીં). (યહાં) શક્તિકી બાત નહીં હૈ. (લેકિન પરિણતિમેં) જ્ઞાન ભી નહીં ઓર સુખ ભી નહીં. નિગોદકે અનંત જીવ હૈં ઓર યહ શરીર અનંત પરમાણુકા સ્કંધ હૈ, ઉસકો જાનનેવાલેકો ભી જ્ઞાન ઓર સુખ નહીં. ક્યા કહા ? યહ સવેરે આયા થા કિ, સંસારી પ્રાણી (ઓર) અનંત નિગોદકે જીવ મલિનરૂપસે પરિણમનેવાલે (હૈં). ઇસકો પર્યાયમેં સુખ ભી નહીં ઓર જ્ઞાન ભી નહીં. વસ્તુમેં સુખગુણ હૈ, યહ તો ત્રિકાલી હૈ, ઉસકી બાત નહીં. ઓર ઐસે અનંત સંસારી પ્રાણી નિગોદકો ભી જાને, તો ઉસે જાનનેવાલેકો જ્ઞાન ભી નહીં ઓર સુખ ભી નહીં, આહાહા ! ઉસકો (નિગોદકે જીવકો) તો નહીં લેકિન ઉસકો જાનનેવાલેકો ભી નહીં. આહાહા !

યહાં તો શુદ્ધ ચૈતન્ય ભગવાન પૂર્ણાનંદકો (જાને, ઉસે જ્ઞાન ઓર સુખ હૈ). સંસારી લિયા હૈ ઇસલિયે સિદ્ધ ભી લિયા હૈ. સિદ્ધ ઓર શુદ્ધ આત્મા દોનોં સાથમેં હૈ. સિદ્ધકો-શુદ્ધકો જાને, ઉનકો જ્ઞાન ઓર સુખ હૈ. ઓર ઉસકો અપનેમેં હૈ (ઐસા) જાને તો ઉસકો ભી જ્ઞાન ઓર સુખ હોતા હૈ, આહાહા ! લેકિન ઉસે જાના કબ કહા જાયે ? કિ ભગવાન પૂર્ણ શુદ્ધ હૈ, અપના આત્મા ભી ઐસા હી પૂર્ણ શુદ્ધ હૈ. ઇસ શુદ્ધ (સ્વરૂપકી) દૃષ્ટિ કરનેસે, શુદ્ધકા આશ્રય-સ્વકા (આશ્રય) કરનેસે, જો જ્ઞાન હોતા હૈ, ઇસમેં સુખ હોતા હૈ ઓર જ્ઞાન હોતા હૈ. ઉસકો જ્ઞાન ઓર સુખ કહનેમેં આતા હૈ.

શુદ્ધાત્મામેં જ્ઞાન ઓર સુખ હૈ. (ઉસે) જાનનેવાલેકો જ્ઞાન ઓર સુખ હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

શ્રોતા : અકેલે સિદ્ધકો જાને તો સુખ હૈ કિ નહીં ?

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : સુખ હૈ. પરંતુ સિદ્ધકો જાના કબ કહા જાયે ? કિ, અપને સ્વરૂપમેં શુદ્ધતા (હૈ ઓર) મેં સિદ્ધ સમાન હું, ઐસી દૃષ્ટિ હુઈ તબ જાના કહા જાયે.

શ્રોતા : અપને આત્માકી કોઈ જરૂરત નહીં હૈ.

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : ફિર તો (આત્મ કલ્યાણ) હો ગયા ! (જરૂરત) નહીં હૈ તો વહ પરદ્રવ્ય હૈ ઓર પરદ્રવ્યકા વિચાર યહ વિકલ્પ હૈ.

શ્રોતા : દુઃખરૂપ હૈ કિ નહીં ?

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : દુઃખ હૈ, આહાહા ! વહ તો મોક્ષપાહુડકી ૧૬વી ગાથામેં કહા ન ? 'પર દવાઓ દુગઈ' ભગવાન તો અલૌકિક બાતેં કરતે હૈં. તેરે દ્રવ્યકે અલાવા દૂસરે દ્રવ્ય

पर लक्ष जायेगा तो विकल्प ही उत्पन्न होगा. परंतु वहां तो ऐसा जानकर आत्मामें घुस गया, उसकी बात ली है, आडाडा !

मेरी पर्यायमें सर्वज्ञपना नहीं और उनको सर्वज्ञपना (प्रगट) हुआ, वह कहांसे हुआ ? सर्वज्ञ शक्तिमें से हुआ. उनको सर्वज्ञ (शक्तिमेंसे) पर्याय हुआ, तो मेरी सर्वज्ञ पर्याय मेरी सर्वज्ञ शक्तिमें से होगी, तो उसकी दृष्टि सर्वज्ञ (शक्तिको) धरनेवाले आत्मा पर जाती है. ऐसी बात है, बापू ! धीरे-धीरे समजना. ऐसी बात है, बापू ! क्या हो सकता है ?

अरे..! लोग विरोध करे, भाई ! यैतन्यस्वरूप भगवान पूर्णानंदका नाथ ! जैसे आत्मज्ञानमयी सर्वज्ञशक्तिकी गजब बात है, बापू ! इसमें से कितना निकालना कि यह पूरा नहीं होता. समजमें आया ? यह १०वीं शक्ति हुआ. अब ११वीं (शक्ति) लेते हैं.

“अमूर्तिक आत्म प्रदेशोंमें..” क्या कहते हैं ? कहते हैं कि, भगवान (आत्मा) तो अमूर्तिक आत्म प्रदेशी है. आत्माके असंख्य प्रदेश है, वह तो अमूर्त है. इसमें कोई वर्षा, रस, स्पर्श, गंध नहीं है. “अमूर्तिक आत्म प्रदेशोंमें प्रकाशमान लोकालोकके आकारोंसे भेयक..” लोक और अलोकमें ४३ भी आया. उस ४३का वर्षा, गंध, रस, स्पर्श भी अमूर्त आत्म प्रदेशमें जाननेमें आता है. वह मूर्त (द्रव्य) यहां (आत्मामें) नहीं आता. समजमें आया ?

स्वच्छत्व शक्तिका घतना स्वभाव है कि, अपने आत्म प्रदेश अमूर्त होने पर भी मूर्त और अमूर्त सब चीजको, अपनेमें, परकी अपेक्षा रभे बिना, स्वच्छताके कारण स्वच्छ-शुद्ध परिणामन होता है.

श्रोता : लोक-अलोक है तो होता है.

पूज्य गुरुदेवश्री : ऐसा बिलकुल नहीं. यह स्वच्छताकी बात तो कहते हैं. दर्पणका दृष्टांत देंगे. यह तो सर्वज्ञ (परमात्माकी) भारी बातें (हैं), आडाडा !

भगवानके समवसरणमें १०० छन्दो जाते हैं. अरे..! सेंकडो केसरीया सिंह जंगलमें से चलते-चलते, धीरे-धीरे समवसरणमें जाते हैं, आडाडा ! शेर और २५-५० हाथके लंबे काले नाग जंगलमें से चलकर समवसरणमें एक क्षणमें उपर चले जाते हैं. समवसरणमें २० हजार सीढियां हैं. जैसे नाग अंतर्भुदूर्तमें चले जाये. आडाडा ! वहां जाकर वीतरागकी वाणी जैसे (विनयसे) सुने ! आडाडा ! शेर और सिंह दो पैर नीचे रखते हैं और दो पैर जैसे (रखते हैं). यहां कुत्ते बैठते हैं न ? नीचे बैठकर दो पैर जैसे रखे. इस प्रकार सत्तामें शेर और सिंह दोनों पैर नीचे रखकर (सुनने बैठते हैं), आडाडा !

श्रोता : वह भी समज सकता है ?

पूज्य गुरुदेवश्री : वह भी समज सकता है और सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लेता है. (तिर्य्य भी) आत्मा है कि नहीं ? आत्मा है तो अंदर पूर्ण आनंदका नाथ पडा है. आडाडा ! ऐसा कहते हैं, वह समज जाते हैं ? ये मनुष्य नहीं समजते हैं और (तिर्य्य समज जाता

है) ? तुम मनुष्य हो ही नहीं. तू तो आत्मा है. आहाहा ! समझमें आया ? (समवसरणमें) सम्यक् प्राप्त कर लेता है ! अर्थात् द्वीपके बाहर जैसे शेर और सिंह असंख्य हैं. यह मनुष्य क्षेत्र है (उसमें) ४५ लाख जोजनका अर्थात् द्वीप है. उसमें मनुष्य है. बादमें असंख्य द्वीप, समुद्रमें मनुष्य नहीं है और अंतमें आभीरके स्वयंभूरमण समुद्रमें तो असंख्य समकित्ती और पांचवें गुणस्थानवाले तिर्य्य (हैं). हजार योजनके लंबे नाग, मगरमच्छ पंचम गुणस्थानमें आत्म अनुभव सहित शांतिकी वृद्धि करते (हुआ) बिराजते हैं. आहाहा ! जैसे तिर्य्य हैं ! भगवानके आगममें पाठ है कि, स्वयंभूरमण समुद्रमें असंख्य मच्छ समकित्ती, आत्मज्ञानी, जातिस्मरण ज्ञानवाले, अवधिज्ञानवाले पंचम गुणस्थानवाले (बिराजते हैं). सम्यग्दर्शन उपरांत स्वका आश्रय लेकर शांति प्रगट की है. जैसे ही (बिना आत्म अनुभव) उसको बारह व्रतका विकल्प हो, वह कोई श्रावकपना नहीं है. श्रावकपना तो अंदर स्वरूपमें रमणताकी शांति बढ़ गयी वह श्रावकपना है. स्वयंभूरमण समुद्रमें जैसे असंख्य पशु-तिर्य्य पडे हैं. आहाहा ! और द्वीपमें शेर, रींछ, कौओं, पोपट, चिडीया, (सब) भगवान आत्मा है न ? शरीर कहां (आत्मा) है ? द्वीपमें जैसे असंख्य समकित्ती पडे हैं. द्वीपमें असंख्य स्थलयर हैं और पानीमें असंख्य जलयर हैं. क्या कदा समझमें आया ? असंख्य द्वीप हैं इसमें स्थलयर हैं, वहां जलयर तो स्थलमें रह सके नहीं. स्थलमें रहनेवाले नोणिया, सर्प वह भी समकित्ती हैं. भले थोडे हैं. एक समकित्ती और असंख्य मिथ्यादृष्टि (हैं) तो भी वहां असंख्य समकित्ती हैं. तिर्य्यकी संख्या बहुत है. पंचेन्द्रिय तिर्य्यकी संख्या बहुत है.

एक बार कदा था न ? (अनंतकालमें) सबसे थोडे मनुष्यके भव करे. अनंतकालमें एक मनुष्यभव हो तो भी अनंत हो गये. प्रत्येक प्राणीको मनुष्यकी संख्यासे नारकीका भव असंख्यगुना अनंता भगवानने कदा (है). क्या कदा ? मनुष्यकी अनंतभवकी संख्यासे नारकीके भवकी संख्या असंख्य गुनी अनंती है. तो मनुष्य घतने हैं तो (नारकी) असंख्यगुना अनंता कैसे आया ? पशुमें से (नरकमें) आते है. मन बिनाके पंचेन्द्रिय और मनवाले पंचेन्द्रिय पशुकी घतनी संख्या है कि, वह सब नारकीमें जाते हैं. मनुष्यका एक भव और असंख्य नारकी; अब मनुष्य मर जाये तो नारकी असंख्यगुना कहांसे आया ? शास्त्रमें भगवान असंख्यगुना अनंता भव कहते हैं. इस तिर्य्यकी घतनी संख्या है कि, वहांसे मरके जाते हैं, आहाहा ! और मनुष्यभवसे नारकीके जो असंख्यगुना अनंत भव, उससे स्वर्गका असंख्यगुना अनंत भव (किया). कहांसे आया ? नारकी मरकर स्वर्गमें तो जाते नहीं. मनुष्य तो अनंतवे भागमें हैं, तो वहां नारकीकी संख्या असंख्यगुनी अनंती है. अभी तक उससे असंख्यगुना अनंत जोव स्वर्गमें गये. कोई मनुष्य भी स्वर्गमें गये और तिर्य्यकी संख्या बहुत है, वह (भी) स्वर्गमें गये. कोई शुक्ललेश्या, पद्मलेश्या आदि भाव होकर (स्वर्गमें) गये, आहाहा !

देवके (भवकी) संख्या नारकीके भवसे असंख्यगुनी अनंत (हुई). ये कहांसे आया ? (तिर्य्यमें

से आये). समजमें आया ? आहाहा ! अरेरे..देखो न ! यह पशु दिखते हैं न ? बैलको देखते हैं न तो, औसा हो जाता है, आहाहा ! अरेरे..! यह प्राणी कहां जायेगा ? क्योंकि धर्म तो है नहीं, पुण्य है नहीं, आहाहा ! बेयारे पशु २५-५०-६० साल (जुकर) मरकर नरकमें जाये अथवा तो पशु मरकर पशु होते हैं. आहाहा ! पशुकी संख्या बहुत है.

अनंतकालमें प्रत्येक प्राणीने तिर्यगमें औसे अवतार किये हैं. समजमें आया ? यह तो प्रत्येक प्राणीने औसा किया है. मनुष्यके अनंत भव किये, उससे असंख्य गुना अनंत नारकीके किये, उससे असंख्यगुना अनंता स्वर्गके किये, और उससे असंख्यगुना अनंता निगोदके किये. वह तिर्यगमें आता है. अकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक सबको तिर्यग कलते हैं. आहाहा ! अेक आत्मज्ञान बिना मर गया, आहाहा !

यहां कलते हैं, भगवान ! तो अमूर्त है न ! तो मूर्त (द्रव्य) अंदरमें आता है ? अंदरमें मूर्तकी प्रतिछाया पडती है ? नीम दिखता है तो ज्ञानमें नीमका आकार आता है ? वह तो जडका आकार है. वर्ण, रस, गंध, छरा रंग है, वह यहां आता है ? परंतु उस संबंधी ज्ञेयाकारूप अपना ज्ञान अपनेसे परिष्मन करता है. यह ज्ञेयाकार (हुआ) तो जड है इसलिये (यहां) जडरूप परिष्मित हुआ, औसा नहीं और यह मूर्त है तो यहां मूर्तरूप परिष्मित होता है (औसा नहीं). आत्मा अमूर्त है तो मूर्त कहांसे आया ? यह तो पहले शब्दमें कहा, आहाहा !

भगवान आत्माका प्रदेश अमूर्त है. “अमूर्तिक आत्म प्रदेशोंमें प्रकाशमान लोकावोकके आकारसे..” आकार शब्दका अर्थ वह वस्तु (यहां) नहीं. परंतु उस संबंधीका विशेष ज्ञान है. स्वच्छतामें उस संबंधीका और अपने संबंधीका विशेष ज्ञान होता है. उस जडका आकार यहां आता है ? आकार तो वर्ण, रस, स्पर्श, गंध जड है. यह पत्थर है, उसका आकार अंदर आता है ? परंतु आकारका अर्थ – स्व-पर अर्थका ज्ञान उसका नाम आकार कलते हैं. स्व और पर पदार्थका ज्ञान हो उसका नाम आकार है, आहाहा ! बात-बातमें इर्क लगे. मार्ग औसा (है), भापू ! आहाहा !

श्रोता : प्रत्येक बात समजने जैसी लगे.

पूज्य गुरुदेवश्री : हां, समजने जैसी लगे. आहाहा ! “अमूर्तिक आत्मप्रदेशोंमें प्रकाशमान लोकावोकके आकारसे मेयक (अर्थात् अनेक-आकाररूप)..” स्वका और परका आकार माने ज्ञान. स्वका और परका ज्ञान उसका नाम यहां आकार कलते हैं. ज्ञानको साकार कलते हैं और दर्शनको निराकार कलते हैं. ज्ञानको साकार कलते हैं तो परका आकार आता है, इसलिये साकार कलते हैं ? (औसा नहीं है). परंतु वह स्व-पर प्रकाशक परिष्मित हुआ, उसका नाम आकार कलते हैं. विशेषरूपसे परिष्मन हुआ उसका नाम आकार है, आहाहा ! औसी बातें (हैं), भाई ! सुने तो सही !

અરેરે...! ચૌરાસીકે અવતાર કર-કરકે (મર ગયા). યહાં અબજોપતિ બડા સેઠિયા હો ઔર મરકર દૂસરી ક્ષણમેં ૩૩ સાગરકી સ્થિતિમેં નરકમેં જાયે. આહાહા ! વહ પીડા ! ઉસકી પીડાકો દેખનેવાલેકો રોના આયે, ઐસી પીડા હૈ, પ્રભુ ! તુને ઐસી પીડા સહન કી હૈ, ભાઈ ! આહાહા ! સમજમેં આયા ? યહાં શરીર થોડા ઠીક હો, નિરોગી હો, પૈસે હો ઔર સ્ત્રી, પુત્ર કુછ ઠીક મિલે (હો) તો ઐસે (અભિમાનમેં) ચલતા હૈ ! લેકિન ક્યા હૈ ? બાપૂ ! ભગવાન ! તુજે યહ પાગલપન કહાંસે આયા ? પાગલ હૈ, પાગલ તૂ ! આહાહા ! શરીર થોડા સુંદર દિખે, ચમડી સુંદર દિખે, સવેરે ઉઠકર તેલ લગાયે, સવેરે સ્નાન કરકે આયનેમેં (દેખે), પાગલ હૈઉ ! પાગલ જૈસે દેખતા હૈ (વૈસે દેખતા હૈ). બડા (આયના) હો તો પૂરા દિખે લેકિન છોટા આયના હો તો, ઐસે કરે ! ફિર બિંદિયા લગાયે ! કંગેસે ઐસે બાલ બનાયે ! અરે..! ક્યા કરતા હૈ ? બાપૂ ! ઐસે-ઐસે કરતા રહતા હૈ, આહાહા ! ‘હાડ બલે જો લકડી, કેશ બલે જો ઘાસ’ આહાહા ! લકડા જલતા હૈ વૈસે હડ્ડી જલેગી, બાપૂ ! યહ તો જડ હૈ ઔર તેલ લગાઈ હુઈ સબ ચમડી ઔર યહ લંબે બાલ, જૈસે ઘાસ જલતા હૈ વૈસે સ્મશાનમેં જલેગા, ભાઈ ! આહાહા ! સમજમેં આયા ?

યહાં કહતે હૈં, પ્રભુ ! તૂ અમૂર્તિક હૈ ન ? તો તેરે જ્ઞાનમેં યહ મૂર્ત આતા હૈ, તો ક્યા મૂર્તપનાકા આકાર આતા હૈ ? સમજમેં આયા ? એક તો અમૂર્તિક આત્મ પ્રદેશ ઉસમેં લોકાલોક પ્રકાશમાન (હોતા હૈ). લોક-અલોકમેં મૂર્ત ઔર જડ સબ આ ગયે. આહાહા ! ઔર આકાર માને વિશેષતા. ઉસકા સબ વિશેષાકાર જ્ઞાનમેં જ્ઞાનકી પરિણતિ હોતી હૈ. જ્ઞાનકી જ્ઞેયાકારરૂપ પરિણતિ. જ્ઞેયાકાર યાની જડકા આકાર, ઐસે નહીં. પરંતુ જ્ઞેયાકા જો સ્વરૂપ હૈ—ઉસ રૂપ જ્ઞાનકા પરિણમન હોના ઉસે યહાં આકાર કહનેમેં આતા હૈ. આહાહા ! ઔર વહ ભી મેચક; મેચક (અર્થાત્) અનેકરૂપ હુઆ. જ્ઞાનકી પર્યાયમેં એકરૂપ ન રહા. લોકાલોકકો જાનનેમેં જ્ઞાનકી પર્યાય અનેકરૂપ હુઈ, આહાહા !

“મેચક (અર્થાત્ અનેક આકારરૂપ)..” ઐસે કહા ન ? મેચક યાની અનેક. “ઐસા ઉપયોગ” અર્થાત્ જાનના. “.. ઐસા ઉપયોગ જિસકા લક્ષણ હૈ ઐસી સ્વચ્છત્વશક્તિ.” પહલી ચિતિ શક્તિ આયી થી. ઉસમેં બાદમેં ભેદ કરકે દર્શન-જ્ઞાન આયા. ઉસકો અલગ દેખકર દર્શનમેં સર્વદર્શિ ઔર જ્ઞાનમેં સર્વ જ્ઞાન આયા. અબ સ્વચ્છત્વ શક્તિ ભિન્ન લેતે હૈં. ઐસી અંદરમેં જ્ઞાનકી કોઈ નિર્મલતા હૈ, ઐસા કહતે હૈં. ઐસી સ્વચ્છતા—નિર્મલતા હૈ કિ લોકાલોક જિસમેં મૂર્ત ઔર અમૂર્ત પ્રકાશમાન (હોતા હૈ). આત્માકે અમૂર્ત પ્રદેશમેં જ્ઞાન હોતા હૈ. સમજમેં આયા ? દૃષ્ટાંતસે સમજમેં આયેગા.

“જૈસે દર્પણકી સ્વચ્છત્વશક્તિસે ઉસકી પર્યાયમેં ઘટપટાદિ પ્રકાશિત હોતે હૈં..” ઘટપટ વહાં નહીં જાતે. લેકિન ઘટપટ સંબંધીકી સ્વચ્છતા વહાં દેખનેમેં આતી હૈ. સમજમેં આયા ? યહાં અગ્નિ હૈ ઔર બર્ફ હૈ તો અગ્નિ ઐસે—ઐસે હોતી હૈ તો યહાં દર્પણમેં (ભી) ઐસે-

એસે હોતી હૈ. ઉસ (દર્પણમે) અગ્નિ નહીં હૈ. વહ દર્પણકા સ્વચ્છ શક્તિકા પરિણમન હૈ. અંદર અગ્નિ દિખતી હૈ પરંતુ (વાસ્તવિક) અગ્નિ નહીં હૈ. વહ તો દર્પણકી સ્વચ્છશક્તિ હૈ. સમજમે આયા ? વહ દર્પણકી પર્યાય હૈ. અગ્નિકી પર્યાય વહાં આયી નહીં હૈ. અગ્નિમે હાથ જલતા હૈ, (લેકિન) વહાં (દર્પણમે) શરીર રખે તો જલતા હૈ ? વહ તો દર્પણકી પર્યાય હૈ. એસે ભગવાન (આત્માકી) સ્વચ્છતાકી પર્યાયમે લોકાલોક (પ્રકાશિત હોતે હૈં). ઘટપટ જૈસે દર્પણમે દિખતે હૈં (તો) વહ ઘટપટ વહાં નહીં હૈ, વહ તો (દર્પણકી) સ્વચ્છતાકી પર્યાય હૈ. આહાહા ! એસે લોકાલોક જાનનેમે આતા હૈ વહ સ્વચ્છતાકી પર્યાય હૈ. આહાહા ! ઉસને દરકાર નહીં કી હૈ ઓર એસે હી જાંદગી ખત્મ કર દી. અરે ! મેરા ક્યા હોગા ? મેં કહાં જાઉંગા ? (ઉસકા વિચાર નહીં કરતા હૈ), આહાહા !

ભગવાન તો એસા કહતે હૈં, દેખો ! “ ઘટપટ આદિ પ્રકાશિત હોતે હૈં, “..ઉસી પ્રકાર આત્માકી સ્વચ્છત્વ શક્તિસે..” સ્વચ્છત્વ (અર્થાત્) વહ અપની નિર્મલતાકે કારણસે લોકાલોક દિખનેમે આતા હૈ. વહ લોકાલોક નહીં (દિખતા) લેકિન લોકાલોક સંબંધી અપની સ્વચ્છતાકી પર્યાય દેખનેમે આતી હૈ. સમજમે આયા ? વિશેષ કહૈંગે...



કમબદ્ધપર્યાયનો સિદ્ધાંત તો સર્વ આગમના મંથનનો સાર છે. આ વાત અહીંથી (પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રીથી) બહાર આવી છે. એ પહેલા આ વાત હિંદુસ્તાનમાં ક્યાંય ન હતી. કમબદ્ધ એ પરમ સત્ય છે. જે કાળે જે થવાનું છે તે જ થશે. તેને ઇન્દ્ર, નરેન્દ્ર કે જિનેન્દ્ર પણ ફેરવવા સમર્થ નથી. કમબદ્ધમાં (જ્ઞાયકપણું) અકર્તાપણું સિદ્ધ કરે છે. આના સંસ્કાર પાડ્યા હશે તે સ્વર્ગમાં જશે ને ત્યાંથી સમકિત પામશે. (પરમાગમસાર-૫૧૭)

प्रवचन नं. १३

शक्ति-११,१२ - ता. २३-०८-१९७७

नीरूपात्मप्रदेशप्रकाशमानलोकालोकारमेचकोपयोगलक्षणा

स्वच्छत्वशक्तिः ॥११॥

स्वयंप्रकाशमानविशदस्वसंवित्तिमयी प्रकाशशक्तिः ॥१२॥

समयसार शक्तिका अधिकार (यल रडा) है. यह आत्म पदार्थ है वह अनंत शक्तिका संग्रहालय है. इसमें अनंत शक्ति नाम स्वभाव नाम गुण (है) उसका संग्रह—आलय (माने) स्थान है. आहाहा ! आत्माकी अंतर अनंत शक्तिका ज्ञान करके, शक्तिवान पर दृष्टि देना उसका नाम सम्यग्दर्शन है. यह धर्मकी पहली शुद्धात है. यहां तो शक्तिका वर्णन है. समयसारमें द्रव्यदृष्टिका अधिकार है तो शक्तिका अधिकार लिया है. इन शक्तियोंका आधार आत्मा है. शक्ति आधेय है (और) आत्मा आधार है. ऐसा भेद भी जिसमें नहीं, जैसे आत्मा पर ज्ञानकी पर्यायको गुकानेसे, अपनी ज्ञानकी पर्यायमें भान हुआ उसमें प्रतीत कर लेना, उसका नाम सम्यक्ज्ञान और सम्यग्दर्शन है. कठिन बात है.

लोगोंको यह बात कठिन लगती है. व्यवहारसे नहीं होता है, तो अंकांत है, ऐसा कहते हैं. उपादानमें निमित्तसे होता है, निश्चयमें व्यवहारसे होता है. और (पर्याय) कमसर होती है इसमें कभी अकमपने (भी) हो, अनियतपने हो, ऐसा कहते हैं. अरे भगवान !

श्रोता : इन तीनों बातोंमें अंकांतवाद करते हैं कि तीनों बातें जूठी हैं ?

पू. गुरुदेवश्री : उसकी तीनों (बातें) जूठी हैं. वस्तु स्थिति ऐसी है, भाई ! कल तो उ७२ गाथामें आया था. कुंभार घडा करता है, ऐसा लभ तो देभते नहीं. मिट्टीसे घडा होता है. उपादान तो ध्रुव मिट्टी है और घडेकी पर्याय क्षणिक उपादान है. आहाहा ! इसमें निमित्त कुछ करता नहीं. निमित्त हो (भले लोकन) निमित्त परमें कुछ करता है, यह बात तीनकावमें (नहीं है). जैन दर्शनके स्वभावमें यह बात नहीं है. समजमें आया ? ऐसा व्यवहार हो वह भी निश्चयकी अपेक्षासे तो निमित्त है; परंतु यह शुभराग आत्माके स्वभावकी प्राप्तिमें सहाय(रूप) हो, ऐसा नहीं (है). आहाहा ! लोगोंको कठिन लगता है.

सवेरे कणशटीकामें आया था. कठिन तो है. अति ही कठिन तो है परंतु अशक्य नहीं, आडाडा ! कठिन है नाम अभ्यास नहीं (है). अनादिका अभ्यास शरीर मेरा, राग मेरा, पुण्य मेरा, पैसा मेरा, ऐसी दृष्टिमें उससे भेद करनेका तो अभ्यास नहीं और अभ्यास बिना वह प्राप्त होता नहीं. समझमें आया ?

यहां स्वच्छत्व शक्ति चलती है. जैसे दर्पणमें घट-पट आदि प्रकाशित होते हैं, वह घट-पट (उसमें) नहीं (बटिक) वह दर्पणकी पर्याय है. दर्पणमें सामने घटपट, अग्नि या बर्फ आदि हो (उसमें बर्फ) पीघलता हो, ऐसा दिभे तो बर्फ और घटपट (उस) दर्पणमें नहीं. वह तो दर्पणकी स्वच्छताकी अवस्था है. जैसे भगवान आत्मा अमूर्त असंभ्य प्रदेशी शीजमें लोकालोकका भास होता है. (तो) लोकालोक (आत्मामें) नहीं. यहां स्वच्छत्वकी शक्तिकी पर्यायमें लोकालोक भासित होता है – यह स्वच्छत्व शक्तिका ही परिणाम है. लोकालोकसे परिणामन है, ऐसा नहीं है. आडाडा ! समझमें आया ?

ऐसे तो सर्वविशुद्ध अधिकारमें आता है कि, लोकालोकमें केवलज्ञान निमित्त है. क्या कदा ? सारा लोकालोक अनंत सिद्धों, अनंत निगोदके जव उसमें केवलज्ञान निमित्त है. उसका अर्थ ऐसा नहीं है कि, केवलज्ञानने लोकालोक बनाया है. समझमें आया ? केवलज्ञानकी पर्याय लोकालोकमें निमित्त है. उसका अर्थ ऐसा नहीं कि, लोकालोकको ज्ञानकी पर्यायने बनाया है. दूसरी बात, यहां लोकालोकका ज्ञान हुआ तो (उसमें) लोकालोक निमित्त है. परंतु यहां स्वच्छताकी पर्यायमें जो प्रत्यक्ष अनुभव हुआ उसका लोकालोक कर्ता नहीं. आडाडा ! समझमें आया ?

वह आया न ? “अमूर्तिक आत्मप्रदेशोंमें प्रकाशमान लोकालोकके आकार....” आकार नाम विशेषता. जगतका – जडका आकार यहां आता नहीं परंतु जो उसका विशेष स्वभाव है, उसका ज्ञान यहां अपनेसे होता है. आडाडा ! “...भेद्यक (अर्थात्) अनेक आकाररूप...” ज्ञानकी स्वच्छताकी पर्यायमें जो अनेकरूपता आई, वह अपनी पर्यायका स्वभाव है. अनेक है तो अनेकरूप परिणामन हुआ, ऐसा नहीं. आडाडा ! ऐसी तारी बातें हैं !

“(अनेक आकाररूप) ऐसा उपयोग जिसका लक्षण है ऐसी स्वच्छत्व शक्ति.” यह स्वच्छत्व शक्ति अनंत शक्तिमें निमित्त है और अनंत शक्तिमें स्वच्छत्व शक्तिका रूप भी है. आडाडा ! ज्ञान स्वच्छ, दर्शन स्वच्छ, आनंद स्वच्छ, समकित स्वच्छ, त्रिकाली श्रद्धा स्वच्छ, शांति स्वच्छ, अस्तित्व स्वच्छ, वस्तुत्व स्वच्छ, कर्ता स्वच्छ, कर्म स्वच्छ, करण स्वच्छ, षटकारककी शक्तियां भी स्वच्छ. आडाडा ! यहांकी (बात) लोगोंको बेचारोंको अंकांत लगती है. परंतु क्या हो सकता है ?

श्रोता : व्यवहारसे कुछ लाभ होता है, धतना आपको कहना है ?

पू. गुरुदेवश्री : इससे लाभ होता है, ऐसा भगवान कहते हैं. तेरी अनंत शक्तियां स्वच्छपने परिणामन करे, ऐसा तेरा स्वभाव है. राग अस्वच्छ है, तो उसके कारणसे (शक्ति)

परिणामन करे, (ऐसा नहीं है). यह लोगोंको कठिन पड़ता है. समझमें आया ? व्यवहार छो, निमित्त छो, इसकी कौन ना कहता है ? परंतु निमित्तसे परमें कार्य होता है, (ऐसा नहीं है).

यह तो अभी एक बड़े विद्वानने कबूल किया कि, सोनगढवाले निमित्तको नहीं मानते हैं, ऐसा नहीं है. (बटिक) निमित्तसे परमें कुछ होता है, यह नहीं मानते. तो यह बात बराबर है. और कमबद्ध मानते हैं तो कमबद्ध (भी) यथार्थ है. समझमें आया ? द्रव्यकी व्यवस्थित कमसर पर्याय अपनेसे होती है. गुण अकमवर्ती (है) और पर्याय कमवर्ती (है). कमवर्तीका अर्थ कमसे वर्तन करनेवाला. समझमें आया ? ऐसी पर्याय कमे-कमे होती है यह निश्चय है. (बाहरमें) निमित्त छो परंतु यहां निमित्तने कोई पर्यायकी रचना की है, (ऐसा नहीं है). नयी पर्याय दुई वह होनेवाली थी तो दुई. निमित्त आया तो दूसरी (पर्याय) दुई, ऐसा नहीं है.

“आत्माकी स्वच्छत्व शक्तिसे उसके उपयोगमें लोकालोकके आकार प्रकाशित होते हैं.” आहाहा ! लोकालोक (ज्ञानमें) निमित्त तरीके छो परंतु स्वच्छताकी परिणामन शक्ति है उसमें निमित्त कुछ करता नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? अब १२ वीं शक्ति लेते हैं.

यह सूक्ष्म शक्ति बहुत अच्छी है. “स्वयं प्रकाशमान विशद् (-स्पष्ट) ऐसी स्वसंवेदनमयी (स्वानुभवमयी) प्रकाश शक्ति.” गजब काम किया है ! आहाहा ! प्रभु ! एकबार सुन तो सही. यहां तेरी स्वतंत्रताकी पुकार है. समझमें आया ? दुनिया माने न माने उसके साथ कोई संबंध नहीं. सत्यको संख्याकी जरूरत नहीं है कि, बहुत (लोग) माने तो यह सत्य (है) और थोड़े माने तो यह असत्य (है). ऐसा कुछ है नहीं. आहाहा !

क्या कहते हैं ? प्रभु ! तेरेमें ऐसी एक शक्ति है. “स्वयं अपनेसे प्रकाशमान स्पष्ट...” आहाहा ! आत्मामें प्रकाश शक्तिके कारणसे अपनेमें प्रत्यक्ष अपना ज्ञान – स्वसंवेदन होता है, यह प्रकाश शक्तिके कारणसे होता है. आत्मा अपनेसे स्वयं प्रत्यक्ष होता है. ‘स्व’ (अर्थात्) अपनेसे. ‘सं’ (माने) प्रत्यक्ष. ‘वेदन’ होता है. ऐसी यह शक्ति है. आहाहा ! रागकी अपेक्षासे यहां प्रत्यक्ष वेदन होता है, ऐसा नहीं. निमित्तकी अपेक्षासे प्रत्यक्ष वेदन होता है, ऐसा नहीं. सूक्ष्म बात है, भगवान ! प्रकाश शक्ति स्वयं अपनेसे स्वसंवेदनमयी – प्रत्यक्ष वेदनमयी शक्तिका (यह) कार्य है.

सम्यग्दर्शनमें मतिज्ञान और श्रुतज्ञान द्वारा प्रकाश शक्तिके कारण (स्वसंवेदन होता है). इस प्रकाश शक्तिका रूप अनंत शक्तिमें है. श्रुतज्ञान और मतिज्ञानमें भी प्रत्यक्ष होनेकी शक्ति है. सूक्ष्म बात है. परोक्ष रहना यह इसका स्वभाव ही नहीं, ऐसा कहते हैं. आहाहा ! क्या कहते हैं ? स्वयं अपनेसे प्रकाशमान. प्रत्यक्ष स्पष्ट नाम प्रत्यक्ष. स्पष्ट प्रत्यक्ष ऐसी स्वसंवेदनमयी – स्वानुभवमयी प्रकाश शक्ति. आहाहा !

अपने आत्माका, स्व आनंदका अनुभव होना, यह उसकी शक्तिका ही कार्य है. आहाहा ! व्यवहार है तो स्वानुभव शक्ति काम करती है, ऐसा है नहीं. सूक्ष्म बात है, बापू ! अनंतकाल संसारमें रभडते-रभडते... अरे...! यौरासीके अवतारमें कभी मनुष्यपना पाया, उसमें भी जैन धर्मका संप्रदाय-वाडा तो भिला. समजमें आया ? परंतु (यह सब मिलनेके बाद भी) यह बात समजमें न आवे, प्रभु ! (तो भवभ्रमण थालू रह जायेगा). आहाहा ! पहले श्रद्धामें भी यह बात न रुये, उसे अनुभव तो कहांसे हो ? समजमें आया ?

यहां तो परमात्मा पुकार करते हैं. यह परमात्माकी आवाज है. संतों आडतिया होकर परमात्माका माल जगतके पास जाहिर करते हैं. आहाहा ! समजमें आया ? प्रभु ! तेरेमें अेक शक्ति ऐसी है कि, तू तेरेसे प्रत्यक्ष हो, ऐसी तेरी अेक शक्ति है. समजमें आया ? यह तो ज़िंदगीमें कभी सुना भी नहीं. कमाई करना, पाना-पीना और भोगमें ज़िंदगी पूरी हो गई. अररर....! प्रभु ! तेरा कार्य क्या है ? आत्माका कार्य (तो) पडा रहा. राग, दया, दान, भक्ति और पुण्यकी किया करे तो वह समजे कि, हमे कोई धर्म हुआ. भगवान ! तेरेमें भगवानने अेक शक्ति देपी है, आहाहा ! “स्वयं प्रकाशमान...” (अर्थात्) आत्मा अपनेसे प्रकाशमान (है).

प्रवचनसारकी १७२ गाथा है. उसमें अखिगग्रहण आया है न ? अमृतयंद्रायार्यदेवने अेक अखिगग्रहणके २० अर्थ किये हैं. उसमें अेक छंडा बोल है वह ये है. पहले उसमें ऐसा आया कि, आत्मा इन्द्रियसे जाननेमें आता नहीं और इन्द्रियसे आत्मा जानता नहीं. इन्द्रिय प्रत्यक्षका यह विषय नहीं. यह तीसरा बोल है. मन और इन्द्रियसे आत्मा जाननेमें आता ही नहीं. आहाहा ! और आत्मा इन्द्रियसे जाननेका काम करता नहीं. आत्मा इन्द्रिय प्रत्यक्षका विषय नहीं. वह तो अणुइन्द्रिय भगवान है. आहाहा ! आत्मा इन्द्रिय प्रत्यक्षका विषय नहीं. इन्द्रियोंसे प्रत्यक्ष जाननेमें आवे, ऐसा नहीं. आहाहा ! यह तीन बोल हुआ.

(यहां तो) छंडा बोल कहना है. आत्मा दूसरे द्वारा अनुमानसे जाननेमें आता है, ऐसा नहीं. अेक अखिगग्रहणके पांच अक्षर हैं. उसके २० अर्थ किये हैं. सब छप गया है. आहाहा ! क्या कहा ? आत्मा दूसरे द्वारा अनुमानसे जाननेमें आता है, ऐसा नहीं है. आत्मा स्वयं अनुमानसे परको जानता है, ऐसा नहीं. आहाहा ! सूक्ष्म बात है. भगवान ! यह तो प्रत्यक्षकी बाह आयी न ? अरे..! ऐसा वीतराग मार्ग ! आहाहा ! परमेश्वरका विरह हुआ और सर्वज्ञकी पर्याय प्रगट होनेका विरह हो गया. आहाहा ! और यह बड़ी गडबड पडी हो गई.

यहां तो कहते हैं, पर (द्वारा) अनुमानसे जाननेमें आता है, यह आत्मा नहीं और आत्मा अपने अनुमानसे परको जाने, यह (बात) यहां नहीं. आहाहा ! छंडा बोल ऐसा है. भगवान आत्मा ! अपने स्वभावसे जाननेमें आता है, ऐसा प्रत्यक्ष ज्ञाता है. यह छंडा

बोल है. समझमें आया ? आहाहा !

यहां यह कहते हैं कि, (आत्मा) स्वयं अपनेसे प्रत्यक्ष होता है, ऐसा ही उसका स्वभाव – शक्ति है. आहाहा ! अरे...! बात सुननेमें कठिन लगता है वह कब विचारमें ले और कब अंतरमें प्रत्यक्ष अनुभव करे ? आहाहा ! समझमें आया ? वहां तो २० बोल है, यह तो (अद्विगग्रहणके) छठे बोलका उसके साथ मिलान है (छसलिये लिया). छठे बोलमें यह है कि, आत्मा अपना स्वभाव, शुद्ध स्वभाव (से जाननेमें आता है). पुण्य-पापसे (जाननेमें नहीं आता). छन्द्रीयसे नहीं (जाननेमें आता) शुद्ध स्वभावसे जाननेमें आता है, ऐसा प्रत्यक्ष ज्ञाता है. आहाहा !

श्रोता : आत्मा प्रत्यक्ष ज्ञाता है, यह प्रकाश शक्तिके कारणसे है ?

पू. गुरुदेवश्री : यह प्रकाश शक्तिका कारण है. समझमें आया ? बापू ! यह तो परमात्मा त्रिलोकनाथकी वाणी है. जैसे महापुरुष वीतरागके वचनोंका निषेध नहीं हो सकता, प्रभु ! आहाहा ! समझमें आता है कुछ ? लोकमें भी अपने लडकेके लिये कोई कन्या आती हो, अके ही लडका हो, पैसेवाला हो तो कहीं जगहसे उसके लिये रिश्ते आये (और कहे) हमारी कन्याके साथ सगाई (करो), उन सबमेंसे बड़े करोडपतिकी कन्या हो और दिभनेमें बहुतअच्छी न हो तो भी वह करोडपतिकी कन्याको पास करे. क्योंकि वह कन्या शादीमें प-२५ लाख लायेगी और उसका पिता मर जायेगा तो सारा वारसा भी मिलेगा. जैसे यह भगवान सर्वज्ञ परमात्माका न्योता (कहेण) है, उसका स्वीकार कर. उसे ना नहीं कर, प्रभु ! आहाहा ! समझमें आया ? तेरी सगाई करनेका वीतरागका न्योता है. 'समकित साथे सगाई कीधी, सपरिवारसो गाढी' – आनंदघनज्जमें ऐसा शब्द है. (आनंदघनज्ज) श्वेतांबरमें हुआ है. सब ग्रंथ देखे हैं. श्वेतांबरके करोडो श्लोक देखे हैं. यशोविजयज्जके देखे हैं परंतु यह यीज कोई दूसरी है. समझमें आया ? आहाहा ! क्या कहते हैं ? सर्वज्ञ त्रिलोकनाथ परमात्माकी दिव्यध्वनिमें तेरे उपर बडा न्योता आया कि, तेरी सगाई कब हो ? कि तुम आत्माको प्रत्यक्ष जाने तब आत्माकी सगाई हुई, आहाहा ! यह अलग तरहका दवाभाना है.

श्रोता : हमेशाका रोग भिट जाये (ऐसा है).

पू. गुरुदेवश्री : हां, भिट जाय. बापू !

यहां अद्विगग्रहणके सातवें बोलमें ऐसा भी लिखा है. आत्माके उपयोगमें परज्ञेयका आलंबन है ही नहीं. स्वच्छणत्वशक्ति आर्ण न ? क्या कडा ? अपना भगवान आत्मा ! उसका ज्ञानका जो उपयोग होता है, उस उपयोगमें परज्ञेयका आलंबन है ही नहीं. आहाहा ! सातवां बोल है. (वैसे तो) २० बोल है, सब कंडस्थ हैं. संप्रदायमें भी श्वेतांबरके शास्त्रके ६-७ हजार श्लोक कंडस्थ किये थे. पहले दिक्षा उसमें हुई न ? पिताज्जका धर्म स्थानकवासीका था. उसमें जन्म हो गया. पहले द्यो वर्षमें (यानी) ७० और ७१ की सालमें ६ से ७ हजार

श्लोक कंडस्थ किये थे. पानीके पुरकी त्मांति यले औसी भाषा थी. परंतु वल सभ सत्य भातें नही. आहाहा ! यह तो अक-अक शब्द देणो ! ओहोहो...!

(११ वी शक्तिमें) आया था न ? “**उपयोगमें लोकालोकके आकार प्रकाशित होते हैं.**” आत्माके जानन उपयोगमें, स्वच्छत्व शक्तिके उपयोगमें ज्ञेय-लोकालोकका आवंजन है ही नहीं. समजमें आया ? आहाहा ! यह अलग जातकी बात है, भगवान ! अरेरे...! क्या करता है ? आहाहा ! भगवान ! तेरा स्वभाव औसा है, परंतु तुजे औसा मानना है क्या (कि) राग करते-करते (धर्म) होगा ? तेरी शक्ति औसी है कि प्रत्यक्ष होगा, स्वयं सिद्ध प्रत्यक्ष होगा. औसा तेरा स्वभाव है. आहाहा !

श्रोता : उपयोगकी स्वच्छता औसी है कि ज्ञेयका आवंजन नहीं ?

पू. गुरुदेवश्री : नहीं, तेरे उपयोगमें लोकालोक ज्ञेयका अवंजन नहीं, नाथ ! तू औसा स्वतंत्र है. तेरा ज्ञानका उपयोग केवलज्ञानमयी है. स्वच्छशक्तिमें लोकालोक (प्रकाशित) है, औसे उपयोगमें ज्ञेयका आवंजन है ही नहीं. आहाहा दिगंबर संतोंकी अक-अक वाणी तो देणो ! अक-अक रामभाषा है ! आहाहा ! भगवानके पास सभ सुना है. समजमें आया ?

यहां कहते हैं, “**स्वयं प्रकाशमान...**” स्वयं कहते हैं उसमें परकी अपेक्षा है ही नहीं. समजमें आया ? अपना अनुभव करनेमें राग और व्यवहारकी अपेक्षा है ही नहीं, औसा कहते हैं. अपना आनंदका प्रत्यक्ष अनुभव करना औसी शक्ति स्वयं अपनी है. आहाहा ! समजमें आया ?

वल तो सवेरे कहा न ? कि थोडा कठिन तो है. सवेरे आया था, औसा अनुभव होना बहुत ही कठिन है. अनुभव करना बहुत ही कठिन है. उत्तर औसा है कि, सयमुय ही कठिन है. बात तो सखी है भगवान ! परंतु तेरा स्वभाव है तो यह अशक्य नहीं है. कठिन हो परंतु अशक्य नहीं (है). आहाहा ! समजमें आया ? वास्तवमें कठिन है. परंतु वस्तुके शुद्धस्वरूपका विचार करने पर भिन्नपनारूप स्वाद आता है. समजमें आया ? वस्तुका स्वरूप विचारने पर भिन्नपनेका स्वाद आता है. आहाहा ! समजमें आया ? वैसे यहां यह बात कठिन है, आहाहा ! कठिन है परंतु अशक्य नहीं है, शक्य है. उसकी शक्ति औसी है, इसलिये शक्य है, औसा कहते हैं. समजमें आया ? आहाहा ! भगवान आत्मा नहीं समज सके औसी यीज नहीं है, प्रभु ! यह अत्यास नहीं है और यह प्रथा ही पूरी लोप हो गई है. औसी बात है. औसा मार्ग (है) प्रभु ! आहाहा !

किसीने कहा था कि, शक्तिका वर्णन करना. भुजे भी विचार तो आया था कि, यलता विषय है वल थोडा साधारण हो जायेगा. समयसार यलता था न ? (तो) शक्ति लेना, औसा आया था. आहाहा ! थोडा लिखा बहुत करके जानना, नाथ ! आहाहा ! थोडे शब्दोंमें बहुत कहते हैं. आहाहा !

પ્રભુ ! તેરેમ્ એક શક્તિ નામ ગુણ નામ સ્વભાવ એસી પ્રકાશ શક્તિ પડી હૈ. ઉસ કારણસે સ્વસંવેદનમ્ આત્મા પ્રત્યક્ષ હો, યહ તેરા સ્વરૂપ ઓર કાર્ય હૈ. આહાહા ! સમજમ્ આયા ? એસા કામ હૈ. પ્રત્યક્ષ હોના યહ તો ઉસકી શક્તિકા કાર્ય ઓર શક્તિકા સ્વરૂપ હૈ. યહાં કહતે હૈં કિ, રાગસે હોતા હૈ ઓર નિમિત્તસે હોતા હૈ. વહ (બાત) તો હૈ (હી) નહીં. નિમિત્ત હો, વ્યવહાર હોતા હૈ, નિમિત્ત હોતા હૈ પરંતુ ઉસસે (કાર્ય) હોતા હૈ, (એસા નહીં હૈ). વહ તો પરોક્ષ હો ગયા. સમજમ્ આયા ?

યહાં તો પ્રત્યક્ષ ભગવાન આત્મા ! જ્ઞાન સ્વરૂપી પ્રભુ ! (ઉસમ્) પ્રત્યક્ષ હોનેકી શક્તિ (હૈ). પ્રત્યેક શક્તિમ્ ઉસકા રૂપ હૈ. પ્રત્યેક શક્તિ પ્રત્યક્ષ હો એસા હી ઉસકા સ્વરૂપ હૈ, એસા કહતે હૈં. આહાહા ! સમજમ્ આયા ? જ્ઞાન શક્તિમ્ ભી પ્રત્યક્ષ હોના વહી શક્તિ હૈ. પ્રભુ ! આહાહા ! ઓર દર્શન શક્તિમ્ ભી પ્રત્યક્ષ હોના વહી ઉસકા સ્વભાવ હૈ. આનંદ (શક્તિમ્) આનંદકા પ્રત્યક્ષ વેદન આના, યહ આનંદ શક્તિકા સ્વભાવ હૈ. આહાહા ! સમજમ્ આયા ? ભાષા તો સાદી હૈ, ભગવાન ! ભાષા એસી કોઈ કઠિન નહીં હૈ, આહાહા ! કહતે હૈં, થોડેમ્ બહુત ભરા હૈ. આહાહા !

“સહેજે સમુદ્ર ઉલ્લસીઓ, જેમાં રતન તણાણા જાય” ગુજરાતીમ્ હૈ. સહજપને સમુદ્ર ઉલ્લસીત હુઆ હૈ. ઇસમ્ રતન તણાણા જાય. “ભાગ્યવાન કર વાવરે, એની મોતીએ મુઠિઓ ભરાય, ભાગ્યહિન વાવણ વારે, તો ઉસકી શંખલે મુઠીઓ ભરાય” આહાહા ! સમજમ્ આયા ? ૧૨ વીં (શક્તિમ્) ગજબ બાત હૈ ! હૈ ન ? ભૈયા ! ભગવાન ! યહ કોઈ સંપ્રદાયકી બાત નહીં હૈ. યહ કોઈ સોનગઢકી બાત હૈ ? અરે..! યહ તો ભગવાનકે ઘરકી બાત હૈ.

ભગવાન ! તેરી શક્તિમ્ તો એસી લક્ષ્મી પડી હૈ કિ, તેરા આત્મા આનંદકા પ્રત્યક્ષ વેદન કરે એસી તેરેમ્ લક્ષ્મી પડી હૈ. આહાહા ! હાં તો ભર, નાથ ! એકબાર હાં ભર તો હાલત હોગી. હાં ભર તો હાલત (હોગી). સમજમ્ આયા ? આહાહા ! ૧૨ વીં શક્તિમ્ તો ગજબ બાત હૈ ! “સ્વયં પ્રકાશમાન...” આહાહા ! અપને આનંદકા, જ્ઞાન સ્વરૂપકા ઓર અનંત ગુણકા પ્રત્યક્ષ વેદન હો, એસી સ્વયં પ્રકાશમાન પ્રકાશ નામકી શક્તિમ્ તાકત હૈ. આહાહા ! પ્રત્યક્ષ આત્મા ‘સ્વ’ અપને ‘સં’ (અર્થાત્) પ્રત્યક્ષ વેદનમ્ આ જાય, એસી ઉસમ્ શક્તિ ઓર સ્વભાવ હૈ. આહાહા ! (લોગ) યહ માને નહીં (ઓર કહતે હૈં કિ) એકાંત હો જાતા હૈ. અરે.. પ્રભુ ! તૂ સુન તો સહી. અંદર હૈ કિ નહીં ? અંદર હૈ ઉસકા અર્થ હોતા હૈ કિ નહીં ? આહાહા !

દિવ્યધ્વનિમ્ આતા હૈ, (તો) ભગવાનકા જ્ઞાન હૈ તો દિવ્યધ્વનિમ્ આતા હૈ, એસા નહીં. શ્રોતા : નિમિત્ત-નૈમિત્તિક સંબંધ હૈ.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : (નિમિત્ત-નૈમિત્તિક) સંબંધકા અર્થ (યહ હૈ) કિ, જ્ઞાન નિમિત્ત હૈ, જોગ નિમિત્ત હૈ પરંતુ દિવ્યધ્વનિ ઉઠતી હૈ વહ અપને ઉપાદાન-ભાષા વર્ગણામ્સે ઉત્પન્ન હોતી

है. समजमें आया ? भाषा वर्गशा यार प्रकारकी हैं. सत्यभाषा, असत्यभाषा, मिश्रभाषा और व्यवहारभाषा. यार प्रकारकी भिन्न-भिन्न वचन वर्गशा हैं. अक ही वचन वर्गशा (है), असा नहीं. यार प्रकारकी भाषावर्गशा भिन्न-भिन्न हैं. आहाहा ! उसमेंसे भगवाके पास तो अकेला केवलज्ञान है. उसमेंसे तो निमित्तृपसे सत्यभाषा निकलनी याहिये. परंतु भाषामें तो सत्य और व्यवहार दो आता है. क्या कहा भाई, समजमें आया ? केवलज्ञान है वहां व्यवहार भाषा है और व्यवहार है ही नहीं. केवलज्ञान है तो इसमेंसे तो निमित्तपने अकेला सत्य निकलना याहिये. परंतु भाषाकी योग्यता ही असा है कि सत्यको व्यवहारपने बतलाते हैं. असा भाषाकी शक्ति-ताकत भाषामें है. आहाहा !

भाई ! क्या कहा समजमें आया ? क्या कहा ? यहां प्रत्यक्ष हुआ न ? वहां (दिव्यध्वनिमें) भाषाकी पर्याय स्वतंत्र अपनेसे होती है. केवलज्ञान निमित्त हो परंतु निमित्त उसका कर्ता नहीं. भाषा वर्गशाकी पर्यायका कर्ता आत्मा नहीं, केवली नहीं और केवलीका जोग भी भाषाकी वर्गशाका कर्ता नहि, आहाहा ! भाषाकी वर्गशा भी स्वयं अपनी पर्यायकी योग्यतासे – स्वकालमें उस कालमें जो भाषा होती है, उस कालमें भाषाकी पर्याय जडमें होती है. आत्मा उसका कर्ता नहीं और उस कालमें आत्माने प्रयोग करके भाषा बनाई नहीं. आहाहा ! भाषामें स्व-पर कलनेकी ताकत है और आत्माने स्व-पर जाननेकी ताकत है. दो बात हो गई.

आत्माने स्व-पर जाननेकी ताकत अपनेसे है. पर है तो (स्व-परको जानता है, असा) नहीं. अपनेमें ही अपनेसे स्व-पर जाननेकी ताकत है. स्व-पर कलनेकी ताकत नहीं. स्व-पर कलनेकी ताकत भाषामें है तो वहां स्व-पर जाननेकी शक्ति नहीं. समजमें आया ? आहाहा ! प्रभुका मार्ग तो देखो ! अक-अक पर्याय स्वतंत्र (है). आहाहा ! बाहरकी तेरी लक्ष्मी २-५ करोडकी धूल हो उसमें क्या आया ? वल तेरी लक्ष्मी है ? (पैसा) मेरा है, यह तो भ्रांति – मला मिथ्या भ्रम है, पापंड है.

श्रोता : जितने दिनों तक रही उतने दिन तक तो उसकी है न ?

पू. गुरुदेवश्री : अक समय भी उसकी नहीं. जितने दिन साथमें रहे, मरे नहीं वहां तक तो (उसकी) है न ? (असा पूछते हैं). जितने (दिन) रहे उतने दिन तो पुत्र (उसका) है कि नहीं ? असा कहते हैं. यहां तो भगवान ! राग भी जहां उसका नहीं, वहां पर यीज तो भिन्न (है). वल तो पर्यायके संबंधमें राग – अशुद्धता होती है. वल भी अपना नहीं तो भिन्न क्षेत्रमें और भिन्न प्रदेशमें रहनेवाली यीज है (वल कहांसे अपनी हो गई ?) आहाहा ! समजमें आया ? वल मेरी कहांसे हो, प्रभु ? आहाहा !

यहां तो कहते हैं कि, भावश्रुतज्ञानसे बात सुनी और लक्षमें आया कि, यह असा कहते है कि, तेरी शक्तिमें प्रत्यक्ष होना – यह तेरी शक्ति है. असे भगवानकी वाणी सुननेमें आयी और अपनेमें अपनेसे ज्ञान हुआ – भाषासे नहीं. वल ज्ञान भी परोक्ष है. परोक्ष

रहना यह उसका स्वभाव नहीं, ऐसा कहते हैं. आहाहा ! क्या कहा ? भगवानकी वाणी – दिव्यध्वनि सुननेमें आयी, अनंत बार समवसरणमें गया, (वाणी) सुनी, उस समय भी सुननेसे ज्ञानकी पर्याय हुई नहीं. तब परलक्षी ज्ञान है, उस परलक्षी ज्ञानमें भी सुननेसे परलक्षी ज्ञान हुआ, ऐसा नहीं. वह तो अपने उपादानसे हुआ है. परंतु वह पर्याय भी अपनी नहीं. क्योंकि उसमें आत्मा प्रत्यक्ष होता नहि तो वह पर्याय भी अपनी नहीं. आहाहा ! ऐसा है.

देजो न ! जिज्ञासु लोग कहांसे आये हैं ? सेंकडो कोस दूरसे आये हैं. आहाहा ! (यहां) कहते हैं कि, शास्त्रका ज्ञान हुआ (वह) ज्ञान अपनेसे हुआ. यह अक्षर है न ? तो यहां ज्ञान होता है वह अक्षरसे नहीं (होता). अपनी पर्यायसे (ज्ञान) हुआ परंतु वह पर्याय भी परोक्ष है. उससे आत्मा प्रत्यक्ष नहीं हुआ, आहाहा ! समजमें आया ? और परोक्ष रहना उसका स्वभाव नहीं. आहाहा ! शास्त्र सुना वह ज्ञानकी पर्याय अपनेसे हुई – अक्षरसे नहीं. ऐसे भगवानकी दिव्यध्वनि सुनी और यहां अपनेसे पर्याय हुई. परंतु वह पर्याय वस्तुकी यथार्थ पर्याय नहीं.

श्रोता : पराश्रित हुई इसलिअे यथार्थ नहीं ?

पू. गुरुदेवश्री : पराश्रित हुई है और जिसमें (आत्मा) प्रत्यक्ष नहीं हुआ, वह पर्याय अपनी नहीं. थोड़ी सूक्ष्म बात है, भाई ! समजमें आया ?

उसमें प्रत्यक्ष होनेकी शक्ति है. (यह शक्ति) भी द्रव्य-गुण-पर्याय तीनोंमें व्याप्त हुई है. पर के लक्षसे जो ज्ञानकी पर्याय हुई वह तो अकेली पर्यायमें ही है. समजमें आया ? यह स्वसंवेदनमयी प्रत्यक्ष होनेकी शक्ति जो है; ऐसे शक्तिवानकी जहां दृष्टि हुई, शक्तिवानका जहां अंतरमें स्वीकार हुआ (तो पर्यायमें स्वसंवेदन प्रत्यक्ष हो गया). अनादिसे द्रव्य-गुणमें तो शक्ति थी, परंतु जहां स्वीकार हुआ तो पर्यायमें स्वसंवेदन प्रत्यक्ष हो गया. यह तो सूक्ष्म बातें हैं, भाई ! आहाहा ! समजमें आया ?

यहां दो बात पर वजन है. स्वयं अपनेसे प्रकाशमान यह तो ठीक परंतु विशद् – स्पष्ट. अपनी शक्तिमें आत्माका स्पष्ट प्रत्यक्ष ज्ञान होना, ऐसी शक्ति है. आहाहा ! समजमें आया ? धीरे-धीरे समजना, यह कोई भाषण नहीं है. यह तो भगवानकी दिव्यध्वनि (है). आहाहा ! अमृतयंद्रायार्यने (गजब) काम किया है, देजो ! (समयसारमें) बीचमें मूल श्लोक कुंडकुंडायार्यदेवके हैं और बादमें यह टीका और शक्तियां अमृतयंद्रायार्यने बनाई. आहाहा ! अक हजर वर्ष पहले चलते-फिरते सिद्ध समान संत थे, आहाहा ! मुनिपना माने क्या ? आहाहा ! जानन शक्ति प्रगट हुई, जाननेकी शक्ति प्रगट हुई उन्हें मुनि (कहते हैं). 'मुन ते इति मुनि' आत्मा ज्ञायकभावसे जाने वह मुनि, आहाहा ! रागसे और निमित्तसे (जाने) वह (बात) नहीं, आत्माका वह स्वभाव नहीं. आहाहा ! भारी कठिन ! समजमें आया ?

પ્રવચનસાર ટીકામાં એક જગહ એસા આતા હૈ કિ, સમકિતીકો ગ્રહસ્થાશ્રમમાં એસા ઉપયોગ નહીં હોતા. સમ્યક્દૃષ્ટિકો શુદ્ધ ઉપયોગ નહીં હોતા, એસા પાઠ હૈ. (પરંતુ) વહ કૌનસા ઉપયોગ નહીં હોતા ? મુનિકો જો શુદ્ધ ઉપયોગ હૈ, એસા ઉપયોગ નહીં હોતા, યહ બાત હૈ. સમજમાં આયા ? ભાઈ ! આતા હૈ ન ? ટીકામાં હૈ. સમ્યક્દૃષ્ટિકો ગ્રહસ્થાશ્રમમાં શુદ્ધ ઉપયોગ નહીં હોતા. વહાંસે લોગ બાત પકડ લે કિ, દેખો ગૃહસ્થાશ્રમમાં (શુદ્ધઉપયોગ) નહીં હોતા. ઉસે તો શુભ ઉપયોગ હી હોતા હૈ. યહાં કહતે હૈં કિ, સમકિતીકો ગ્રહસ્થાશ્રમમાં ભી સ્વસંવેદન પ્રત્યક્ષ હોતા હૈ, એસી ઉસમાં શક્તિ હૈ ઓર ઉસકા પરિણમન ભી એસા હૈ. આહાહા ! સમજમાં આયા ? ન્યાયસે, લોજીક્સે, યુક્તિસે તો સમજમાં આવે એસી ચીજ તો હૈ. યહ કોઈ એસે હી માન લેના એસી ચીજ નહીં હૈ. આહાહા !

શ્રોતા : સ્વસંવેદન પ્રત્યક્ષ ઓર શુદ્ધ ઉપયોગ એક હી બાત હૈ ?

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : વહી શુદ્ધ ઉપયોગ હૈ. વહ તો મુનિકે યોગ્ય જો ત્રીન કષાયકે અભાવવાલા શુદ્ધ ઉપયોગ હૈ, વહ ઉપયોગ ગ્રહસ્થાશ્રમમાં નહીં. યહ બતલાના હૈ. યહાં તો યહ ક્યા કહા ? યહ શક્તિ તો સમકિતીકો હૈ કિ નહીં ? સમકિતીકો સ્વસંવેદન પ્રત્યક્ષ હુઆ કિ નહીં ? આહાહા ! સ્વસંવેદન પ્રત્યક્ષ હુઆ યહ શુદ્ધ ઉપયોગ હૈ કિ શુભ જોગ હૈ ? સમજમાં આયા ? શુદ્ધ ઉપયોગ હૈ. સમ્યક્દૃષ્ટિ ચૌથે ગુણસ્થાનમાં ભલે રાજમાં હો, છ ખંડકા રાજ ચક્રવર્તીકા દિખે, ઉસ પુણ્યકા વહ સ્વામી નહીં.

૪૭ શક્તિમાં આખિરકી સ્વસ્વામીસંબંધ શક્તિ હૈ. ચક્રવર્તી છ ખંડ ઓર ૮૬ હજાર સ્ત્રીકે વૃંદમાં દિખાઈ દે પરંતુ વહ અપને શુદ્ધ દ્રવ્ય, શુદ્ધ ગુણ ઓર વેદનકી શુદ્ધ પર્યાય હૈ, ઉસકા વહ સ્વામી હૈ. રાગકા સ્વામિ (ભી) નહીં તો પરકા, ઘણીકા, સ્ત્રીકા સ્વામી કહાંસે આયા ? સમજમાં આયા ? અનંત શક્તિમાં પ્રત્યક્ષ હોનેકા રૂપ હૈ. જ્ઞાન ભી પ્રત્યક્ષરૂપ હો, દર્શન ભી પ્રત્યક્ષરૂપ હો, આનંદ ભી પ્રત્યક્ષરૂપ હો (એસા પ્રત્યક્ષ હોનેકા રૂપ હૈ). આહાહા ! યહ તો ભંડાર હૈ ! કિતના નિકાલે ? પાર ન આવે એસી બાત હૈ, આહાહા ! એક ‘જગત’ શબ્દ પડા હો તો જગતકા વિસ્તાર કરે તો કિતના હોવે ? કિ છ દ્રવ્ય, ઉસકે ગુણ, ઉસકી પર્યાય, અનંત સિદ્ધ, અનંત નિગોદ (ઇતના બડા વિસ્તાર હૈ). વૈસે યહ એક શક્તિકા બડા વિસ્તાર હૈ. સમજમાં આયા ? આહાહા ! દુનિયા માનો ન માનો, દુનિયામાં બાહરમાં બાત પ્રસિદ્ધિમાં આવે ન આવે, પરંતુ વસ્તુ તો એસી હૈ. સમજમાં આયા ? આહાહા !

‘સ્વયં’ (અર્થાત્) અપનેસે. ‘પ્રકાશમાન’ એક બાત (હુઈ). ‘સ્પષ્ટ’ (અર્થાત્) પરકી અપેક્ષા બિના. ‘એસી સ્વસંવેદનમયી’ (અર્થાત્) ‘સ્વ’ – અપના ‘સં’ – પ્રત્યક્ષ વેદનમયી ‘સ્વાનુભવમયી’ દેખો ! સ્વસંવેદનકા અર્થ કિયા. સ્વાનુભવમયી પ્રકાશ શક્તિ હૈ. આહાહા ! ચૌથે ગુણસ્થાનમાં યહ હૈ કિ નહીં ? આહાહા !

જબ સમ્યગ્દર્શન હોતા હૈ તબ શુદ્ધ ઉપયોગમાં હોતા હૈ. સમજમાં આયા ? દ્રવ્યસંગ્રહમાં

४७ गाथामें कडा. तत्त्वानुशासनमें ३३ गाथा है. 'दुविहं पि भोक्खहेउं ज्ञाणे पाउणदि जं मुणी णियमा।' द्रव्यसंग्रहमें नेमियंद सिद्धांत यकवर्ती कहते हैं कि, निश्चय और व्यवहार भोक्षमार्ग ध्यानमें प्राप्त होता है. उसका अर्थ (क्या) ? 'दुविहं पि भोक्खहेउं ज्ञाणे पाउणदि जं मुणी णियमा।' ऐसा पाठ है, आहाहा ! ध्यान तो स्वरूपमें जब दृष्टि हो तब ध्यान हुआ. वह तो शुद्ध उपयोग हुआ, आहाहा ! ध्यान शुद्ध उपयोग है. ज्ञायक उपर ध्यान लगाया तो उस कारणसे अंदर (आत्मा) प्रत्यक्ष हुआ. मति-श्रुत ज्ञानमें आत्मा प्रत्यक्ष हुआ. तत्त्वार्थसूत्रमें मति-श्रुतको परोक्ष कहकर परका ज्ञाननेवाला कडा है. यह अपवादकी बात अंदर गंभीर पडी है. समजमें आया ? यह बात कोई छट्टे, सातवें या तेरहवें (गुणस्थानकी) बात नहीं है. समजमें आया ?

अेकबार ८३ की सालमें हमारे साथ यर्था लुई थी. (कि) यह मति-श्रुत ज्ञानको आप (प्रत्यक्ष कहते हो) तो तत्त्वार्थसूत्रमें मतिज्ञानको तो परोक्ष (कडा) है. (हमने कडा) भाई ! (वह तो) परकी अपेक्षासे परोक्ष कडा है. अपनी अपेक्षासे प्रत्यक्ष है, यह बात उसमें गर्भित है. समजमें आया ?

“स्वयं प्रकाशमान....” भगवान आत्मा ! अपनेसे प्रकाशमान है. निमित्तसे नहीं, संयोगसे नहीं, भगवानकी वाणीसे नहीं, शास्त्रसे नहीं, आहाहा ! “स्वयं प्रकाशमान विशद् (- स्पष्ट) ऐसी स्वसंवेदनमयी...” जैसे व्यवहार प्रत्यक्ष कहते हैं न ? कि मैंने इस आदमीको प्रत्यक्ष देखा है. जैसे भगवान आत्मा स्पष्ट प्रकाशमान - 'यह आत्मा' जैसे प्रत्यक्ष होता है, ऐसा कहते हैं. आहाहा ! समजमें आया ? आदमी कहते हैं कि, 'मैंने प्रत्यक्ष देखा है' (लेकिन वह) प्रत्यक्ष नहीं है. परंतु ऐसा व्यवहार प्रत्यक्षमें कहनेमें आता है. और यह राजा है, ठंडा पानी है, अग्नि उष्ण है, देव है, शास्त्र है ऐसा परका ज्ञान भी जिसको स्वरूप ज्ञान हुआ हो, उसे उसका सख्या ज्ञान होता है. निजस्वरूपका स्वरूपग्राही ज्ञान हो उसको परका ज्ञान व्यवहारसे कहनेमें आता है. आहाहा ! बाकी स्वका ज्ञान नहीं होवे वहां परका ज्ञान है, उसे ज्ञान ही नहीं कहते. (वह तो) अेकांत परप्रकाशक है, आहाहा ! समजमें आया ?

हम (अपना) अनुभव कहते हैं. ८० की सालमें ५३ वर्ष पहले संप्रदायमें थे तब बोटादमें बहुत आदमी आते थे. उसमें भी हमारी प्रतिष्ठा बहुत थी न ! हजर-हजर, पंद्रहसो आदमी (आते थे). अेकबार ऐसा कडा कि, भाई ! स्वानुभव होना याहिअे. तब अेक आदमीने कडा, (आप) अनुभव कहांसे कहते हो ? हमारे कोई महाराजने तो अनुभव कडा नहीं. यह तो ८० की सालकी बात है. यहां कहते है कि, आत्मा स्वानुभव प्रत्यक्ष है. परंतु उसमें (संप्रदायमें) ऐसी भाषा है ही नहीं. विभाव और अनुभव दो बात कही तो लोग भडक गये.

યહાં કહતે હૈ કિ, અનુભવ પ્રત્યક્ષ હોતા હૈ, ઐસી શક્તિ હૈ, આહાહા ! ‘સ્વાનુભવમયી’ સ્વ + અનુભવમયી અપના આનંદકા પ્રત્યક્ષ વેદન હો જાના ઓર મતિ-શ્રુત જ્ઞાનમેં આત્મા પ્રત્યક્ષ જાનનેમેં આતા હૈ, ઐસા ઉસકા સ્વભાવ હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? હૈ કિ નહીં અંદર ? દેખો ! શક્તિકા તો પાર નહીં, ભાઈ ! ઇતની અંદર ગંભીરતા પડી હૈ ! યહ પ્રકાશ શક્તિ હૈ ઉસકે દો રૂપ હૈં. એક ધ્રુવરૂપ હૈ વહ ધ્રુવ ઉપાદાન ઓર પરિણતિ હુઈ હૈ વહ ક્ષણિક ઉપાદાન. યહાં પરિણતિકી બાત ચલતી હૈ. સ્વાનુભવમેં આત્મા પ્રત્યક્ષ હોતા હૈ. ધ્રુવ ભી સ્વાનુભવમેં પ્રત્યક્ષ જાનનેમેં આતા હૈ, ઐસા કહતે હૈં. આહાહા ! સમજમેં આયા ? યહ સ્વાનુભવમયી પ્રત્યક્ષ વસ્તુ અનંત ગુણમેં વ્યાપક હૈ. જિતની શક્તિયાં હૈં ઇસમેં સારે અનુભવમેં યહ વ્યાપક હૈ તો સ્વાનુભવ પ્રત્યક્ષમેં અનંત શક્તિકા પીંડ પ્રત્યક્ષ હોતા હૈ. આહાહા ! ૧૨ વીં શક્તિ (સમાપ્ત) હુઈ. વિશેષ કહૈંગે.....



જે આત્મસન્મુખ થાય તે વિકારથી વિમુખ થયા વગર રહે નહિ. હું નિર્વિકાર છું એમ કહે પણ વિકારથી વિમુખ ન થાય તો તે માત્ર ધારણા છે. રાગથી, પુણ્યથી કે પરથી ચૈતન્યની એકતા નથી, એવી પૃથક્કારૂપ ભેદજ્ઞાન તો કરતો નથી અને કહે છે કે જ્ઞાનમય વસ્તુ ગ્રહણ કરી છે તો તે વાત ખોટી છે. સ્વભાવની દૃષ્ટિ કરે તેને વિભાવનો અભાવ થવો જોઈએ. છતાં વિભાવનો અભાવ ન થયો તો સ્વભાવદૃષ્ટિ જ થઈ નથી.

(પરમાગમસાર-૬૪૮)

प्रवचन नं. १४

शक्ति-१२, १३, १४ - ता. २४-०८-१९७७

स्वयंप्रकाशमानविशदस्वसंवित्तिमयी
क्षेत्रकालानवच्छिन्नचिद्विलासात्मिका

प्रकाशशक्तिः ॥१२॥

असंकुचितविकाशत्वशक्तिः

॥१३॥

अन्याक्रियमाणान्याकारकैकद्रव्यात्मिका

अकार्यकारणशक्तिः

॥१४॥

समयसार शक्तिका अधिकार है. १२ वीं शक्ति यही. १२ वीं शक्तिमें क्या यदा ? कि आत्मामें ऐसी ऐक (प्रकाश) शक्ति है, स्वभाव है, सत् वस्तुका सत्त्व उसमें कस भरा है. ऐसा कस है कि जो स्वसंवेदन प्रत्यक्ष होता है, आडाडा !

श्रोता : प्रत्यक्ष होता है उसका अर्थ क्या ?

पू. गुरुदेवश्री : प्रत्यक्ष होता है उसका अर्थ राग और निमित्तकी अपेक्षा छोडकर (प्रत्यक्ष होता है).

सवेरे आया था न ? शुद्ध स्वरूपका विचार करने पर, ऐसा आया था. उसमें गंभीरता है. कठिन है परंतु शुद्ध स्वरूपका विचार करने पर प्रत्यक्ष होता है. अर्थात् राग, पुण्य और पर्यायके विचारमें नहीं रुककर शुद्ध स्वरूपका विचार नाम ज्ञान करनेसे, ऐसा कहते हैं. राग और पुण्य-पापके विकल्पका ज्ञान तो अनंत बार किया. वह तो पर प्रकाशक मिथ्या भाव है. आडाडा ! अपनेमें शुद्ध स्वरूपका विचार करने पर अर्थात् शुद्ध स्वरूपका ज्ञान करने पर अर्थात् अनादिसे पर्यायमें रागकी ओरका जो विचार जुक रहा है, उस विचारको शुद्ध स्वरूपकी ओर जुकाना, उसमें आत्मा प्रत्यक्ष होता है. ऐसी बात है ! शुद्ध स्वरूपका विचार करने पर आनंदका स्वाद आता है, ऐसा आया था. बहुत गंभीर है ! आडाडा !

अपने यैतन्यस्वरूपमें अनंत शक्तियां हैं. उसमें ऐक शक्ति ऐसी है 'स्वयं प्रकाशमान...' है. अपनेसे प्रकाश करती है, स्पष्ट प्रकाश करती है, स्वसंवेदनसे प्रकाश करती है, आडाडा ! समझमें आया ? आत्म पदार्थमें ऐसी शक्ति है. उस शक्ति पर नजर नहीं करना. समझमें आया ? सवेरे कडा था न ? 'शुद्ध स्वरूपका विचार करने पर'. ऐसा था. शक्ति पर विचार

करने पर, औसा नहीं था. समजमें आया ? यह सर्वज्ञकी वाणी तो गंभीर है ! उसकी पात्रता प्राप्त करना, आहाहा !

यहां कहते हैं कि, उसमें स्वसंवेदनमयी शक्ति (है). अपना स्वरूप 'सं' (अर्थात्) प्रत्यक्ष आनंदका वेदन हो. मति-श्रुत ज्ञानकी पर्यायसे प्रत्यक्ष होता है. आहाहा ! औसी उसमें शक्ति भरी पड़ी है. (उसका उसे) भरोसा नहीं (है), विश्वास नहीं है. समजमें आया ? आहाहा ! (गुजरातीमें) लोग कहते हैं कि, 'विश्वासे वडाश तरे' (हिन्दीमें) 'विश्वाससे नाव तीरे' (कहते हैं). तो उसका अर्थ क्या ? अपने आत्मामें अनंत शक्तियां हैं. उसमें यह एक शक्ति है. औसा विश्वास करने पर आत्मा प्रत्यक्ष होता है. अंदरमें नाव तीर जाती है. आहाहा ! समजमें आया ? औसी यीज है. आहाहा !

यह तो जन्म-मरणका अभाव करनेकी यीज है, भगवान ! बाकी जिसमें भव हो (औसे) कदाचित् कोई दया, दानसे स्वर्गमें जायेगा. वहांसे निकलकर तिर्य्यममें पशु होकर नरकमें और निगोदमें (यवा जायेगा). निगोद...निगोद...निगोद...एक शरीरमें अनंत छव. उसमें जन्म लेना (औसा तो) अनंत बार जन्म दिया (है). स्वर्गके भी अनंत भव किये. उससे अनंत गुना निगोदमें — ऐकेन्द्रियमें ऐक श्वासमें १८ भव किये. आहाहा ! ऐक श्वास चलता है धतनेमें निगोदके १८ भव किये. औसे अनंत बार (ऐक श्वासमें) १८ भव हुआ. आहाहा ! औसे भवके दुःभसे निकलना हो तो उसे अपना शक्तिवान जो भगवान आत्मा ! (उस पर दृष्टि करनी पड़ेगी). शक्तिका तो वर्णन चलता है. परंतु शक्तिवान जो आत्मा (है), उस पर दृष्टि लगाना. शक्ति और शक्तिवानका भेद भी छोड़ देना. समजमें आया ?

यह यीज औसी है कि, गुप्त रह सके नहीं, औसा कहते हैं. समजमें आया ? इस यीजका स्वभाव-शक्ति ही औसी है. गुप्त रह सके नहीं—प्रगट हो. आहाहा ! परंतु इस यीजका विश्वास और अनुभव होने पर प्रगट होता है. औसी बातें हैं. लोगोंको बाहरमें सब जंजाल बढ गई, आहाहा ! शुभभाव होता है, स्वरूपमें रह सके नहीं तो अशुभसे भयनेका भाव आता है परंतु यह कोई जन्म-मरण मिटानेकी यीज नहीं है. वह तो भव प्राप्त करनेकी यीज है, आहाहा ! भैया ! (यह तो) भवके अभावकी बात है. बात तो औसी है, भगवान ! अरे.. प्रभु ! तू कौन है ?

प्रभु ! तेरेमें औसी शक्ति है. तेरेमें प्रभुता भी पड़ी है. स्वसंवेदनमयी शक्तिमें प्रभुता भी पड़ी है. प्रभुताकी शक्ति भिन्न है. परंतु स्वसंवेदन शक्तिमें प्रभुताका रूप है — स्वरूप है. आहाहा ! अपनी प्रभुतासे शक्तिमें प्रत्यक्ष होना यह गुण है. (स्वरूप) प्रत्यक्ष होता है, वह अपनी शक्तिसे (प्रत्यक्ष) होता है, कोई परकी अपेक्षा नहीं है. औसा उसका स्वभाव है, आहाहा ! आचार्यने ४७ शक्ति करके गजब बात कही है ! औसा वर्णन कहीं नहीं है. श्वेतांबरमें ४५ सूत्रमें कहीं है नहीं.

अेक (साधु) उसमें (श्वेतांबरमें) लुअे थे. उन लोगोंका वांचन उन्हें कुछ ज्यादा था. उन्होंने बादमें यह शक्ति पढी थी. पढकर (पुढ शक्ति) बनाने गये. आठ शक्तियां बनाई. परंतु ये (शक्ति) न बन सकी. यह (शक्ति) नहीं. अपनी कल्पनासे आठ बनाई. कुछ पढा तो होता है. यहां जवतर शक्तिसे बात शुरु की है, तो उन्होंने दूसरी शक्तिसे बात उठाई है. यहां तो मूल शक्तिका वर्णन है. समजमें आया ?

यहां कलते हैं, मति-श्रुत ज्ञानमें भी स्वसंवेदन शक्तिके कारणसे आत्मा प्रत्यक्ष वेदनमें आता है और आनंदका स्वाद अपनेसे लेता है. उसमें कोई परोक्षता नहीं. समजमें आया ? यह बात १२वीं शक्तिकी लुई. आज १३वीं (शक्ति) लेते हैं. यह तो अपार है, भंडार है. उसमेंसे निकाले उतना (कम है).

अब १३वीं असंकुचितविकासत्व शक्ति है. क्या कलते हैं ? “क्षेत्र और कालसे अमर्यादित ऐसी विद्विवास स्वरूप (—यैतन्यके विवासस्वरूप) असंकुचितविकासत्वशक्ति.” क्या कलते हैं ? उसमें ऐसी अेक शक्ति है कि, संकोच है ही नहीं. कोई भी शक्ति प्रगट करनेमें संकोच नहीं है. सारा द्रव्य, सारा क्षेत्र, सारा काल, सारा भाव. असंकोच (अर्थात्) संकोच बिना शक्ति विकास करती है. समजमें आया ?

कितने ही लोग कलते हैं कि, भगवान अेक समयवर्तीको जाने. अभी पेपरमें आया है. श्रीमदृज्जका दृष्टांत दिया है. (लेकिन) श्रीमद् तो दूसरी बात करते हैं. (ऐसा कलते हैं कि) तीनकालकी पर्याय जो है उसे वर्तमान वर्तती नहीं देजे. छतनी बात (है). अेक समयकी वर्तमान वर्तती है उसको देजे, वर्तती देजे. भूत और भविष्यकी (पर्याय) वर्तती नहीं देजे परंतु वह (हो गई), लुई और होगी, ऐसा प्रत्यक्ष देजते हैं. वर्तती (देजे) छसलिये अेक समयको ही देजे, ऐसा नहीं (है). समजमें आया ? अेक न्याय किरे तो सारी यीज किरे जाती है.

यहां तो कलते हैं कि, उस शक्तिके कारण ज्ञान शक्तिमें भी ऐसा असंकुचितविकासत्व (शक्तिका) रूप है. जो ज्ञान शक्तिका संकोच बिना विकास होता है. ज्ञानकी पर्याय तीनकाल, तीन लोकको जाने, ऐसा अेक समयकी पर्यायमें संकोच बिना विकास होता है. आहाहा ! समजमें आया ?

क्या कला ? देजो ! यहां क्षेत्रकी मर्यादा नहीं की, छतना ही जाने. क्षेत्र भी अमर्याद है. आहाहा ! और कालकी (भी) मर्यादा नहीं कि, कोई अेक कालको ही जाने. अेक समयमें सब काल, तीन लोक, तीन कालको (जाने). आहाहा ! ज्ञानमें भी असंकुचितविकासत्व शक्तिका रूप है. अेक समयमें ज्ञानकी पर्यायमें तीन काल, तीन लोकको संकोच बिना (जाने ऐसा) विकासत्व शक्तिसे विकास होता है. आहाहा !

तत्त्वार्थसूत्रमें आता है न ? कि यार घातिकर्मका नाश हो तो केवलज्ञान होता है. समजमें

આયા ? વહ તો નિમિત્તસે કથન હૈ. યહાં તો કહતે હૈં કિ, ચાર ઘાતી (કર્મકા) નાશ કરના વહ ભી ઇસમૈં નહીં હૈ. અપની અસંકુચિતવિકાસત્વ શક્તિકે કારણ કેવલજ્ઞાનકી પર્યાય પ્રાપ્ત કરતા હૈ. આહાહા ! પામરકો પ્રભુતા બૈઠની કઠિન હૈ. આહાહા !

જ્ઞાનમૈં અસંકુચ (અર્થાત્) સંકોચ નહીં ઔર વિકાસ (હો) ઐસા જ્ઞાનમૈં રૂપ હૈ. ઐસા અસંકુચિતવિકાસત્વકા રૂપ દર્શનમૈં (ભી) હૈ. સંકોચ બિના સર્વ દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ (ઔર) ભાવકો વિકાસરૂપસે દેખતે હૈં. સમજમૈં આયા ? આહાહા ! ઐસે આત્મામૈં અતીન્દ્રિય આનંદ હૈ. ઉસમૈં ભી અસંકોચવિકાસ નામકી (શક્તિકા) રૂપ હૈ. (અસંકુચિતવિકાસત્વ) શક્તિ ભિન્ન હૈ. આનંદ ભી સંકોચ બિના પૂર્ણ આનંદકા વિકાસ હો, (ઐસા) ઉસકા સ્વભાવ હૈ. આહાહા ! સમજમૈં આયા ? ઔર ઉસકી ત્રિકાલ શ્રદ્ધા શક્તિ હૈ. સમ્યગ્દર્શન પર્યાય હૈ પરંતુ અંદરમૈં શ્રદ્ધા શક્તિ હૈ. ઇસ શ્રદ્ધા શક્તિમૈં અસંકુચિતવિકાસત્વકા રૂપ હૈ. આહાહા ! સંકોચ બિના પૂર્ણ સ્વરૂપકી પ્રતીત કરે, ઐસા શ્રદ્ધા ગુણમૈં ભી અસંકુચિતવિકાસત્વકા રૂપ હૈ. યહ તો અલૌકિક બાતૈં હૈં ! ભાઈ ! સમજમૈં આયા ? ઐસે આત્મામૈં ચારિત્ર ગુણ હૈ. આત્મામૈં અકષાય સ્વભાવ ચારિત્ર ગુણ હૈ. સમજમૈં આયા ? ચારિત્ર ગુણ યાની રમણતા, સ્થિર હોના. અંદર ત્રિકાલ ચારિત્ર અકષાય ભાવ હૈ, વહ ચારિત્ર શક્તિ હૈ.

ઇસ ૪૭ શક્તિમૈં નહીં આયી હૈ. ઉસે તો સુખ શક્તિમૈં સમા દિયા હૈ. સમ્યગ્દર્શન ઔર ચારિત્રકો સુખ શક્તિમૈં ગર્ભિત કર દિયા હૈ. સમજમૈં આયા ? સિદ્ધકે ગુણમૈં ભી ચારિત્ર (ગુણ) નહીં આયા હૈ. સમકિત આયા હૈ ઔર સુખ આયા હૈ. સિદ્ધકે આઠ ગુણ હૈં ન ? એક બાર કહા થા. સુખમૈં ચારિત્ર શક્તિ પૂર્ણ હૈ. ચારિત્ર નામ પૂર્ણ રમણતા—સંકોચ બિના પૂર્ણ સ્થિરતા હો જાય, ઐસા ચારિત્ર શક્તિમૈં ભી અસંકુચિતવિકાસત્વકા રૂપ હૈ. આહાહા ! સમજમૈં આયા ?

પરમાત્મપ્રકાશમૈં એક દૃષ્ટાંત દિયા હૈ. મંડપ ઉપર વેલ (બેલ, લતા) ચડતી હૈ ન ? તો જહાં તક મંડપ હૈ વહાં તક વેલ જાતી હૈ. પરંતુ વેલમૈં આગે જાનેકી શક્તિ નહીં હૈ, ઐસા નહીં. સમજમૈં આયા ? બાંસકા મંડપ હોતા હૈ ન ? તો જહાં તક બાંસ હૈ વહાં તક વેલ જાતી હૈ. પરંતુ બાંસ હૈ વહાં તક હી જાનેકી શક્તિ હૈ, ઐસા નહીં. ઉસસે ભી આગે (બાંસ) હો તો (વેલ) જા સકે, ઐસી વેલકી શક્તિ હૈ. સમજમૈં આયા ? ઐસે ત્રીનકાલ-ત્રીનલોકકા મંડપ હૈ. આપ લોગ લડકેકા લગ્ન મંડપ કરતે હો ના ? વહ સબ પાપકે મંડપ હૈ. યહ લોકાલોકકા મંડપ હૈ, ઉસસે ભી અનંતગુના અગર લોક ઔર અલોકકા ક્ષેત્ર ઔર કાલ હો તો ભી અસંકુચિતવિકાસત્વ શક્તિ અપનેમૈં વિકાસ કરતી હૈ. સમજમૈં આયા ? આહાહા !

ભગવાન ! તેરેમૈં (ઐસી) એક શક્તિ (હૈ). ઐસી-ઐસી અનંત શક્તિમૈં એક શક્તિકા રૂપ હૈ. આહાહા ! અતીન્દ્રિય આનંદ ભી અસંકુચિતવિકાસત્વસે પરિણમન કરતા હૈ. પૂર્ણ અતીન્દ્રિય આનંદકી પર્યાય, પૂર્ણ શાંતિકી પર્યાય, પૂર્ણ સ્વચ્છતાકી પર્યાય, આહાહા ! પૂર્ણ દર્શનકી

पर्याय (उन सभी) शक्तिमें (परिणामनमें) असंकुच नाम बिलकुल संकोच नहीं. आहाहा ! श्रेतांबरमें त्रिधाके लिये जाते हैं न ? तो उसमें ऐसा रिवाज है. (ऐसा कहते हैं), 'बहने ! आहार-पानीका संकोच नहीं है न ? तो हमको दो, दो आदमी हो और (आहार) थोड़ा हो तो संकोच हो (जाय) और उसे दू तो अल्प हो जाय और नया बनाना पड़े. यह भाषा उसकी है. 'मा ! बहने ! आपको आहारका संकोच नहीं है न ? (आहार) ज्यादा हो, तेरे घरमें पूरा हो, इसके अलावा विशेष हो तो वीरवो (अर्थात् आहार) दो.' समझमें आया ? वैसे यहां तो परमात्मा कहते हैं. ये लोकालोक्षसे अनंत लोकालोक हो और ऐसे अनंत काल हो, तो भी तेरी अके-अके पर्याय संकोच बिना विकासको प्राप्त करे, ऐसी शक्ति है. ऐसी बात है !

यहां तो अके-अके शक्तिका तंजार असंकोचविकास स्वरूप है. आहाहा ! जिसमें कोई शक्ति संकोचरूप होकर विकास न हो, ऐसा नहीं है. ऐसा कहते हैं, आहाहा ! प्रभु ! तेरी महत्ता तो देख ! तेरे बडप्पनकी महत्ता परमात्मस्वरूप है, प्रभु ! आहाहा ! यहां कहते हैं कि, कोई द्रव्य, कोई क्षेत्र, कोई काल उसे संकोच होकर जाने, ऐसा नहीं है. सर्व क्षेत्र और सर्व कालको संकोच बिना—अपनी शक्तिसे विकास करके जानता है, ऐसा उसका स्वभाव है. (इस प्रकारसे जाननेमें) परकी अपेक्षा नहीं है. चार घाती(कर्मका) नाश हुआ तो (ज्ञान शक्तिका) विकास हुआ, ऐसा नहीं है. समझमें आया ? आहाहा !

(कोई सत्य) माने (तो लोग कहते हैं कि) यह तो सोनगढिया है. अरे..! प्रभु ! सत्य है वह बात करे न ? (दूसरा) तुझे क्या काम है ? यहां तो पहलेसे ही सत्य हमारा है. वस्तु स्थिति ऐसी है, भगवान ! हमने तो भगवानके पास साक्षात् सुना है. आहाहा ! समझमें आया ? अरे..! ऐसी सूक्ष्म बात है, भाई ! कठिन बात है, आहाहा ! समझमें आया ?

यहां कहते हैं कि, प्रभु ! तेरेमें जितनी अनंत शक्तियां हैं (उसमें) ज्वतर शक्तिमें भी ज्ञान, दर्शन, आनंदकी सत्ताका प्राण पर्यायमें संकोच बिना विकास हो, ऐसा ज्वतर शक्तिका स्वभाव है. समझमें आया ? दूसरे तरीकेसे कहें तो, उसमें कर्ता नामकी अके शक्ति है. आगे आयेगी. उस कर्ता शक्तिमें भी अनंत पर्यायको, पूर्ण पर्यायको विकास करके करे, ऐसा कर्ता (शक्तिमें) भी असंकुचितविकासत्वका रूप है. समझमें आया ? ऐसा है भगवान !

अरे प्रभु ! महाराज, मुनिओं तुझे प्रभु कहके बुलाते हैं. आहाहा ! द्विगंबर संतों ऐसा कहे, भगवान आत्मा ! आहाहा ! (समयसार) ७२ गाथाकी संस्कृत टीकामें है. भगवान आत्मा ! मुनिओं, द्विगंबर संतों — वीतरागी जूलेमें जूलेते हैं. अतीन्द्रिय आनंदके स्वादमें जूलेते थे. आहाहा !

श्रोता : आप कहां मुनिओंको मानते हो ?

पू. गुरुदेवश्री : हां, (वर्तमानके) मुनिओंको नहीं मानते. प्रभु ! (भाकी) (भावविंगी मुनिराजके) हम तो दासानुदास है. मुनि होने याहिये, प्रभु ! किसीको दुःख लगे (तो) क्या करे ? वह भी लेख आया है. (उसमें लिखते हैं) द्रव्यविंगी न हो तो सारा धर्म ठीक जायेगा. (ऐसा कहते हैं कि) आप लोग इनको द्रव्यविंगी अगर मानोगे तो धर्मका लोप हो जायेगा. अरे भगवान ! आगम अनुसार उसका व्यवहार हो तो वह व्यवहार भी कलनेमें आता है. परंतु आगमके अनुसार व्यवहार (भी नहीं है). हमेशा उसके लिये थोका बनाकर आहार लेते हैं तो आगम अनुसार २८ मूलगुणका व्यवहारका भी ठिकाना नहीं. अरे प्रभु ! (उसमें) तेरा कोई अनादर करनेकी बात नहीं है. नाथ ! तेरी थिज कैसी है ? उसे बतानेकी बात है, भाई ! आहाहा ! समजमें आया ?

यहां कहते हैं कि, जो ऐसा कहे कि, शुभ दया, दान, व्रत, भक्तिके परिणामसे निश्चय होता है; तो उसे द्रव्य और द्रव्यकी शक्तिकी प्रतीतिकी जबर नहीं. समजमें आया ? यहां तो ऐसी बात है. यहां तो भगवान आत्मामें रागकी मंदताकी अपेक्षा छोडकर (निश्चय धर्म प्रगट होता है). क्योंकि ऐसा राग करना कोई आत्माकी शक्ति नहीं. आहाहा ! परंतु आत्माकी शक्ति तो रागके अभावस्वरूप वीतरागताकी पूर्णताका विकास करे, ऐसी उसमें शक्ति है. आहाहा ! राग करना (ऐसी) कोई (आत्मामें) शक्ति नहीं है. परंतु रागका अभाव करना वह भी उसमें नहीं है. वह तो वीतरागपनाका विकास उत्पन्न होता है. जिस समय उसकी वीतरागताकी उत्पत्ति है वह अपरिमित उत्पत्ति है, भाई ! आहाहा ! समजमें आया ? यह तो भंडार (है). आहाहा !

मृतक कलेवरमें अमृत सागर मूर्च्छा गया है. ८६ गाथामें ऐसा कहा है. यह (शरीर) मृतक कलेवर (है). यह मुर्दा है, जड – अचेतन है. आहाहा ! भगवान अमृतका सागर (है). (समयसारकी) ८६ गाथामें आता है. अमृतका सागर मृतक कलेवरमें मूर्च्छा गया है. तीनोंमें 'म' है. मृतक, अमृत, और मूर्च्छा गया है. समजमें आया ? अरे..! अल्पज्ञ पर्याय(रूप) रहना वह भी तेरा स्वभाव नहीं, यहां तो ऐसा कहते हैं. आहाहा ! रागरूप रहना वह तो तेरा स्वभाव है ही नहीं, (बल्कि) अल्पज्ञ रहना वह (भी) तेरा स्वभाव नहीं, भगवान ! आहाहा !

यहां तो सर्वज्ञ शक्ति और सर्वदर्शि शक्ति संकुचित (हुआ) बिना सर्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावको विकास करके जानती है, ऐसा स्वभाव है, आहाहा ! भाई ! सर्वज्ञ किसे कहें ! उसमें बड़ी गंभीरता है. आहाहा ! अक समयमें अनंत केवलीको जाने. अनंत केवलीको अक समयमें जाने. केवलज्ञानकी पर्याय अनंते केवलीको जाने. आहाहा ! अरे...! तीन काल, तीन लोकका विकास विशेष होता तो भी जान लेता. ऐसी उसमें शक्ति है, आहाहा ! तेरी प्रभुताकी तुझे प्रतीत नहीं. अल्पज्ञ और राग जो कि पाभर है, उसकी तुझे प्रतीत (है). वह प्रतीत

तो मिथ्या है. समझमें आया ? आहाहा !

यह शरीरका आकार – स्त्रीका, पुरुषका और छिजडेका आकारको न देख, प्रभु ! वह तेरी यीज नहीं, तेरेमें नहीं और उसे राग है, उस रागको न देख. तेरेमें राग है ही नहीं और अल्पज्ञपना न देख. अल्पज्ञ रहना यह तेरा स्वभाव नहीं, आहाहा ! समझमें आया ?

श्वेतांबरमें अक अतिमुक्त कुमारकी (कथा) आती है. बात तो कल्पित है. (अक) बालक था, राजकुमार (था). बादमें दीक्षित हुआ. (अक दिन) दिशाके लिये साधुके साथमें जंगल जाते थे. जंगल गये तो वहां बारीश बहुत आया. पानी यलता था (बह रहा था). जल बहुत यल रहा था. बालक था तो वह तो पात्रा रभता था. ऐसा (सब) यलाया है न ? वह तो कल्पित है. बालक था (और) पानी यलता था (छसलिये) कीयडकी पाल बनाई और पानीमें पात्रा रभा (और गाने लगा). ‘नाव यले रे मेरी नाव यले, अम मुनिवर जल शुं भेल करे’ – उसमें आता है. सब देखा है न. पानीमें – ‘नाव तरे रे मेरी नाव तरे, अम मुनिवर जल शुं भेल करे, मोह कर्मना अरे ! याणा, मुनिवर दोरे नानकडा अरे बाणा’ अतिमुक्त वह छोटी उम्रके गजसुकुमार. गजसुकुमार आता है न ? बहुत छोटी उम्रमें दीक्षा ली. उसकी अक सज्जाय है.

यहां कहते हैं कि, ‘अमारी नाव तरे रे, मेरी नाव तरे’ आहाहा ! आनंदकी दशा और ज्ञान-दर्शनके विकासमें मेरी नाव तैरती है. वह सब तो कल्पित था. मुनिको पात्र नहीं होता, वस्त्र नहीं होता, वह तो कल्पित बनाया है. आहाहा ! यहां तो परमात्माकी – आत्माकी नाव असंकोयविकासत्व शक्तिके कारणसे अनंत गुणकी पर्याय संकोय बिना विकास होती है. मेरा आत्मा संसारसे उपर तैरता है. समझमें आया ? ऐसा मेरा स्वभाव है. आहाहा ! ऐसी दृष्टि करना और ऐसी यीजका सामर्थ्यका विश्वास करना, यह अलौकिक यीज है ! क्या कडा ? उसके जाननेमें क्षेत्रकी मर्यादा नहीं, उसके जाननेमें कालकी मर्यादा नहीं. “क्षेत्र और कालसे अमर्यादित...” जिसको मर्यादा नहीं है, ओहोहो ! परमात्म प्रकाशमें मंडपका दृष्टांत दिया (है) न ? (जहां तक मंडप है) वहां तक वेल यलती है. परंतु उस वेलमें आगे जानेकी शक्ति नहीं, ऐसा नहीं. बादमें उपरा-उपर यडती है. मंडप दूर हो तो उपर यले. वैसे (छस) लोका लोकसे ली (दूसरा) लोका लोक अनंत गुना हो तो ली ज्ञानकी पर्याय संकोय बिना विकाससे जानती है. समझमें आया ? यह अरिहंतका रूप देखो ! आहाहा !

“क्षेत्र और कालसे अमर्यादित ऐसी विद्विलास स्वरूप...” आहाहा ! ज्ञानका विलास (ऐसा है). कूल-जाडके भागमें विलास करने जाते हैं कि नहीं ? वह (भाग) नहीं, बापू ! यह तो आत्मभागका विद्विलास है. समझमें आया ? शामको भागमें घुमने जाते है न ? बंभईमें बडा भाग है. अकबार उम देखनेको गये थे. यारो बाजु जाड और हवा. सबेरे भागमें हवा पाने अक प्रहर पहले रात्रीको आदमी निकलते हैं. उस भागमें हवा (पाना)

वह तो पाप है. सुन तो सही. यह तो आत्मभागमें यैतन्यविलास (है). समझमें आया ? आहाहा ! 'यिद्धविलास' ऐसा शब्द लिया न ? यिद्ध यानी ज्ञान (और उसका) विलास. ज्ञानका ऐसा विलास है कि संकोय बिना सर्व क्षेत्र और सर्व कालको जाने, ऐसी उसकी शक्ति है. समझमें आया ?

“(—यैतन्यके विलासस्वरूप) असंकुचितविकासत्व शक्ति.” संकोय न होनेसे — संकोय नहीं करनेसे विकासरूपी शक्ति. ऐसी स्वरूपमें शक्ति (है). आहाहा ! ज्ञान, दर्शन, आनंद, अस्तित्व, वस्तुत्व, कर्ता, कर्म (ऐसी अनंत शक्तियां हैं). आहाहा ! (आत्मामें) कर्ता नामकी एक शक्ति है. वह भी अनंती पर्यायमें संकोय बिना पूर्ण पर्यायको करे, संकोय बिना अपनी पूर्ण पर्यायका विकास करे, ऐसा उसका स्वभाव है, आहाहा ! १३वीं शक्ति (हुई). प्रत्येक शक्तिमें यह असंकोयविकासत्व लेना, आहाहा !

एक पंडितके साथ बहुत बर्षा हुई थी. वे कहते थे कि, सर्वज्ञ यानी वर्तमानमें सर्व विशेषको जाने — वह सर्वज्ञ. यहां जब तिसरी विद्वद् परिषद भरी थी (तब) वे आये थे. ३० वर्ष हुए. उस वक्त भी कहा था, भैया ! परमाणुमें अनंतगुनी हरी (आदि रंगकी) पर्याय होती हैं, वह अपनेसे होती हैं. परके कारणसे नहीं. आहाहा ! कमबद्धमें परमाणुमें अनंतगुनी यिकाश, अनंतगुनी लुभाश, अनंतगुनी रंगकी पर्याय होनेवाली हैं तो होगी ही होगी. (यह पर्याय) अपनेसे होती हैं, परके कारणसे नहीं, समझमें आया ?

अैसे भगवान आत्मामें सर्वज्ञ पर्याय होती है. उसमें परका कोई कारण नहीं है. आहाहा ! सर्वज्ञ यानी एक समयमें तीनकाल (को प्रत्यक्ष जाने). भूतकाल वर्तमानमें नहीं कि भविष्य (काल) वर्तमानमें नहीं. (किर भी) जिसको वर्तमान प्रत्यक्षवत् देखे, उसका नाम सर्वज्ञ है. आहाहा ! समझमें आया ?

यहां तो कहते हैं कि, असंकुचितविकास — ज्ञानकी पर्याय संकोय बिना पूर्ण विकास(रूप) होती है, आहाहा ! उसकी मर्यादा क्या ? अमर्यादित है. अरे.. प्रभु ! तेरा गुण भी तुने सुना नहीं, आहाहा ! क्रियाकांडमें सब घुस गये. परंतु रागसे भिन्न भगवान (आत्मा है). अल्पज्ञ रहनेकी भी तेरी शक्ति नहीं, अल्प दर्शि रहना शक्ति नहीं, अल्प वीर्य रहना शक्ति नहीं, अल्प आनंदमें रहना भी उसकी शक्ति नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? अलौकिक बातें हैं. बापू ! यह तो धर्मकी बात (है). धर्म यह कोई अलौकिक चीज है, आहाहा !

सम्यक्दृष्टिमें ऐसी सर्वज्ञ, सर्वदर्शि आदि अनंत शक्तिका संकोय बिना विकास हो, ऐसी प्रतीत उसमें आती है. सम्यक्दृष्टिको ऐसी निःसंदेह प्रतीत आती है, आहाहा ! यैतन्य भगवान — शुद्ध यैतन्य स्वभाव स्वरूप उसकी अनंत शक्ति (है). प्रत्येक शक्तिमें विकास पूर्ण हो — संकोय न हो — मर्यादित न रहे. ऐसी उसमें शक्ति है. आहाहा ! समझमें आया ? एक बात यथार्थ समझे तो दूसरे भावको (बराबर यथार्थ) समझे. समयसारमें (ऐसी

अेक) गाथा है. जयसेन आचार्य देवकी (टीकामें आता है). अेक भाव भी यथार्थ समजे; सर्वज्ञ, सर्वदर्शि कोई भी अेक शक्तिका (भाव), पर्याय और शक्ति(का) अेक भाव यथार्थ समजे तो सर्व भाव यथार्थ (रूपसे समजमें) आ जाता है. समजमें आया ? यह १३वीं शक्ति (है).

यह असंकुचितविकासत्व शक्ति द्रव्य, गुणमें है परंतु जब उसका स्वीकार होता है तो पर्यायमें व्याप्त होती है. असंकुच्यपना और विकासपना अंदर पर्यायमें आ जाता है, आहाहा ! और अनंत गुणमें यह असंकोचविकास शक्ति व्यापक है. समजमें आया ? यह असंकुचितविकासत्व शक्ति ध्रुवपने उपादान है और क्षणिक पर्यायमें उत्पन्न हुई यह क्षणिक उपादान है. समजमें आया ? आहाहा ! और यह असंकुचितविकासत्व शक्ति(का) किसीके कारणसे कार्य हुआ, अैसा नहीं. और दूसरे लोकालोकको जाने अैसा कार्य, वह (भी) नहीं. उसकी तो पर्यायको जानता है. आहाहा ! समजमें आया ? वह लोकालोकका कारण नहीं और लोकालोकका कार्य नहीं अर्थात् जो ज्ञान, दर्शन और आनंदकी पूर्ण शक्तिका विकास हुआ – तो लोकालोक है तो कार्य हुआ, अैसा नहीं. और लोकालोकके कारणसे यह शक्ति नहीं. पर्यायमें जो विकास व्याप्त हुआ – वह लोकालोकका कारण नहीं, आहाहा ! समजमें आया ? अरे.. अैसी व्याख्या ! वह सब तो इतना आसान था कि, दया पावो, व्रत पावो, उपवास करो, रस छोडो, कपडा छोडो. (अपवास करना) यह लांघण (लंघन) है. आहाहा ! भगवानकी महत्ता और बडप्पन मर्यादा बिनाकी यीज है, अैसे भान बिना सब लांघन हैं. वह सब उपवास और दो-दो महिनेके संधारे सब लांघन है, तप नहीं-धर्म नहीं. आहाहा !

श्रोता : तप मत कडो, धर्म मत कडो, परंतु लांघन तो मत कडो.

पू. गुरुदेवश्री : लांघण (तो क्या) शास्त्र तो क्लेश कडते हैं. निर्जरा अधिकारमें अैसी क्रियाकांड करनेवालेको क्लेश कडते हैं, दुःख कडते हैं. क्लेश करो तो करो परंतु आत्मा उससे प्राप्त नहीं हुआ. आहाहा ! १३वीं शक्ति हुई.

(अब) १४वीं (शक्ति). “जो अन्यसे नहीं किया जाता...” इस श्लोकमें – शक्तिमें भी तकरार है. क्या (कडते हैं) ? कि यह तो द्रव्यकी बात है. द्रव्य किसीका कारण नहीं और द्रव्य किसीका कार्य नहीं, अैसा कडते हैं. यह १४वीं शक्ति जो है इसमें तो द्रव्यकी बात चलती है. द्रव्य किसीका कारण नहीं और द्रव्य किसीका कार्य नहीं. (परंतु) अैसा नहीं (है). यहां तो शक्ति जो है (उस) शक्तिवानका जहां अनुभव हुआ तो पर्यायमें भी अकार्यकारण पर्याय – दशा प्रगट हुई. यह पर्याय भी रागका कारण नहीं और रागका कार्य नहीं. समजमें आया ? अैसे द्रव्य और गुण किसीका कारण नहीं और किसीका कार्य नहीं. (वह) तो स्वतः यीज है. अैसे उसकी पर्याय जो होती है वह पर्याय भी कोई परका कारण नहीं और परका कार्य नहीं. यह अकारणकार्य शक्ति द्रव्य, गुण, पर्यायमें व्याप्त हो गई. आहाहा ! समजमें आया ? यह (शक्ति) ७२ गाथामेंसे निकाली है. यह शक्ति (समयसार) ७२ गाथा है उसमें

है. यह शक्ति समेदृशिपर यात्रामें गये थे तब यली थी. दो घंटे यली थी.

यहां कलते हैं कि, (यह) अकारणकार्य शक्ति गुण है, शक्ति है. द्रव्य और गुणमें व्यापक (है). और प्रत्येक गुणकी परिणतिमें परका कारण नहीं और परका कार्य नहीं, वैसे इस शक्तिका विकास होता है तो परके कारणसे नहीं. यार घाति (कर्मका) नाश हुआ तो केवलज्ञान हुआ, ऐसा नहीं. (अक विद्वानने ऐसा कहा है) यार घाति कर्मका नाश हुआ तो क्या (हुआ) ? वह तो अकर्म पर्याय हुआ. जो कर्म पर्याय थी वह अकर्म (पर्याय) हुआ. इसमें केवलज्ञान हुआ ये कहासे आया ? वह तो निमित्तसे कथन है. आहाहा ! जैन तत्त्व मिमांसामें है. उन्होंने बराबर कहा है. भाषिया यर्या बनाकर ऐतिहासिक सिद्धांत प्रसिद्ध किया है. ऐतिहासिक यर्या हुआ है. लोगोंको ऐसा रुये नहीं. भगवान ! वादविवादसे (पार) नहीं आवे, प्रभु ! वीतरागताकी यर्या और यथार्थ चीज क्या है ? ऐसी यर्या हो तो – तो वीतरागता सिद्ध हो. परंतु परको जूठा ठहराना और अपना सख्या (है), ऐसी बात नहीं. (ऐसे) सत् नहीं मिलेगा. आहाहा ! समजमें आया ? यहां तो ना कलते हैं, देओ !

आत्माकी जो निर्मल पर्याय होती है यह रागका कार्य नहीं. राग-व्यवहार था तो कार्य हुआ, ऐसा नहीं और अकार्यकारण शक्ति रागका कारण नहीं. (वह) रागका कार्य तो नहीं परंतु संसारकी उत्पत्तिका कारण नहीं. समजमें आया ? आहाहा ! अपनी निर्मल शक्ति उत्पन्न करनेवाली कर्ता और निर्मल शक्ति उसका कार्य है. यह बादमें कर्ता-कर्मके छ बोल आयेंगे. समजमें आया ? आहाहा ! अभी वस्तु स्थितिकी – सत्यकी मर्यादा कैसे है ? (उसकी जबर नहीं). द्रव्य सत्, गुण सत्, पर्याय सत् – तीनों सत् हैं. पर्याय सत् अपनेसे हुआ है. उस पर्यायको उत्पन्न कारण हुआ तो उत्पन्न हुआ है ऐसा नहीं है. निश्चयमें तो ऐसा है कि जब सम्यग्दर्शन आदि, केवलज्ञान आदि पर्याय उत्पन्न होती है – वह उत्पत्तिका जन्मक्षण था, वह उत्पत्तिका काल था, वह काललब्धि थी. उस समयमें त्वयत्वका भाव उत्पन्न होनेका था वह परसे नहीं हुआ. आहाहा ! समजमें आया ? अपने स्वरूपमें स्थिर होता है तो यारित्रमोहका नाश होता है. तो कलते हैं कि नाशका कार्य अपना नहीं और रागका कारण भी नहीं. समजमें आया ?

“जो अन्यसे नहीं किया जाता....” आहाहा ! यहां (कोई) द्रव्य लेते हैं. शब्द द्रव्य है परंतु द्रव्यकी शक्ति है तो पर्यायमें व्याप्त होती है. समजमें आया ? शक्ति है (वह) द्रव्यमें भी शक्ति है और गुणमें भी शक्ति है. परंतु उसका जहां ‘है’ (ऐसा) स्वीकार हुआ तो पर्यायमें भी अकार्यकारणता आ गई. आहाहा ! समजमें आया ? (समयसार) ७२ गाथामें है. भगवान आत्मा दुःखका कार्य नहीं अर्थात् रागका केवलज्ञान कार्य नहीं कि समकित आदिकी पर्याय वह भी रागका कार्य नहीं. वैसे समकित आदिकी पर्याय रागका कारण नहीं. समजमें आया ? “आस्रव आकुलताके उत्पन्न करनेवाले हैं.” आस्रव – पुण्य-पापके भाव

આકુલતાકે ઉત્પન્ન કરનેવાલે હૈં. આહાહા ! “ઇસલિએ દુઃખકે કારણ હૈ ઓર ભગવાન આત્મા તો સદા હી નિરાકુલતા સ્વભાવકે કારણ કિસીકા કાર્ય તથા કિસીકા કારણ ન હોનેસે...” આહાહા ! ઉસમેંસે (યહ) શક્તિ નિકાલી (હૈ). સમજમેં આયા ? ભગવાન આત્મા ! દ્રવ્ય ઓર ગુણ તો કિસીકા કારણ – કાર્ય હૈ હી નહીં. ઈશ્વરને દ્રવ્ય બનાયા ઓર ઈશ્વરને શક્તિ દી ઐસા તો તીનકાલમેં નહીં હૈ. પરંતુ ઉસકી પર્યાયકા ભી પર કારણ નહીં ઓર પરકે કારણસે પર્યાય ઉત્પન્ન હુઈ નહીં. આહાહા ! જૈસે દ્રવ્ય-ગુણકા કોઈ કારણ-કાર્ય નહીં ઐસે અપની જો નિર્મલ પર્યાય હોતી હૈ, ઉસ પર્યાયકા ભી કોઈ કારણ નહીં ઓર વહ પર્યાય કિસીકા કાર્ય નહીં. આહાહા ! ઐસી બાત હૈ !

(બાહર તત્વા) લેખમેં ઐસા લિખે કિ, શાસ્ત્રમેં દો કારણકા કાર્ય એક હૈ, તત્ત્વાર્થરાજવાર્તિકમેં ઐસા આતા હૈ. વહ તો નિમિત્તકા જ્ઞાન કરવાનેકો (કહા હૈ). નિશ્ચયસે યહ બાત સિદ્ધ રખકર કિ, પર્યાય કિસીકા કારણ નહીં ઓર કિસીકા કાર્ય નહીં. ઇસ નિશ્ચયકો લક્ષમેં-દૃષ્ટિમેં સિદ્ધ કરકે બાદમેં નિમિત્તકો મિલાયા તો પ્રમાણજ્ઞાન હુઆ. પરંતુ નિમિત્ત મિલાકર (પ્રમાણજ્ઞાન) હુઆ તો પહલે (નિશ્ચય) બાત થી ઉસકો સત્ય રખકર નિમિત્તકો મિલાયા હૈ. સમજમેં આયા ? પહલી બાત – નિશ્ચયસે પર્યાય અપનેસે હૈ. ઉસકા કોઈ કારણ-કાર્ય નહીં હૈ, ઇસ બાતકો રખકર પ્રમાણ(જ્ઞાન) નિમિત્તકો મિલાતા હૈ. નિશ્ચયકો જૂઠા કરકે નિમિત્ત મિલાયા તો પ્રમાણ હુઆ હી નહીં. વિશેષ કહૈંગે....



જે પોતામાં છે તેને પોતાનું ન માનવું ને જે પોતામાં નથી તેને પોતાનું માનવું તે દુઃખનું કારણ છે. (પરમાગમસાર-૬૨૭)

प्रवचन नं. १५

शक्ति-१४, १५ - ता. २५-०८-१९७७

अन्याक्रियमाणान्याकारकैकद्रव्यात्मिका

अकार्यकारणशक्तिः ॥१४॥

परात्मनिमित्तकज्ञेयज्ञानाकारग्रहणग्राहणस्वभावरूपा

परिणम्यपरिणामकत्वशक्तिः ॥१५॥

(समयसार) १४वीं शक्ति. “जो अन्यसे नहीं किया जाता और अन्यको नहीं करता जैसे एक द्रव्यस्वरूप...” यह द्रव्यस्वरूप शब्द पडा है न ? इसलिये लोग ऐसा कहते हैं कि, (यहां) द्रव्यकी बात (है). (यहां तो) द्रव्यमें शक्ति है, यह शक्ति पर्यायमें व्याप्त है, उसे यहां द्रव्य कहते हैं. समझमें आया ?

एक द्रव्य अन्यसे नहीं किया जाता है. अपनी सम्यग्दर्शनकी पर्याय कोई अन्यसे नहीं की जाती है और सम्यग्दर्शनकी पर्याय अन्यको करती नहीं. समझमें आया ? (सम्यग्दर्शनकी) पर्याय अन्यका कार्य नहीं. राग—व्यवहार है तो सम्यग्दर्शनकी पर्याय दुर्घ, ऐसा नहीं है.

ऐसे केवलज्ञान (बी) मनुष्य, संहनन और निमित्त ऐसा है तो केवलज्ञान उत्पन्न होती है, ऐसा नहीं है. केवलज्ञानकी पर्याय परका कार्य और परका कारण है ही नहीं. आहाहा !

दूसरी ओरसे कहें तो केवलज्ञान (होनेसे) पहले यार ज्ञान अथवा मोक्षमार्ग था; तो मोक्षमार्ग कारण और केवलज्ञान कार्य. ऐसा नहीं है. क्योंकि केवलज्ञान पर्याय अकार्यकारण (स्वरूप) है. उसमें अकार्यकारणशक्ति है; तो केवलज्ञानकी पर्याय पूर्वके मोक्षमार्गके कारणसे उत्पन्न दुर्घ, ऐसा भी नहीं. और रागको उत्पन्न करती है या निमित्तको उत्पन्न करती है, ऐसा भी नहीं. आहाहा ! ऐसी सूक्ष्म बात (है) ! (इसलिये) लोगोंको (कठिन लगता है, परंतु) सत्य तो यह है. समझमें आया ?

प्रत्येक शक्तिमें अकार्यकारण शक्तिका रूप है, तो कहते हैं कि, यारित्रकी पर्याय जब उत्पन्न होती है वह अपने द्रव्यके आश्रयसे उत्पन्न होती है, यह भी व्यवहार है. यारित्रकी पर्यायमें द्रव्य कारण है कि राग / व्यवहारके कारणसे (अथवा) व्यवहार रत्नत्रयके कारणसे

निश्चय यारित्रकी पर्याय (उत्पन्न) हुई, ऐसा नहीं है. आडाडा ! यहां तो समय-समयकी निर्मल पर्यायमें शक्ति कारण (है. ऐसा) कडना यह भी व्यवहार है, यहां तो ऐसा कडते हैं. समजमें आया ? आडाडा !

उसी समयमें केवलज्ञान या सम्यग्दर्शन या सम्यक्चारित्र (और) अपनी अनुभूतिमें आनंदकी दशा उत्पन्न होना, इस आनंदकी दशामें व्यवहार कारण और आनंदकी दशा कार्य, ऐसा नहीं (है). और उस आनंदकी दशा (होनेसे) पडले जो शुद्धताकी अपूर्णता अथवा शुभत्वाथ या उस कारणसे अनुभूति हुई, ऐसा भी नहीं. समजमें आया ? ऐसी बात है ! ज्ञानमें, दर्शनमें, आनंदमें, यारित्रमें, वीर्यमें प्रत्येकमें अकार्यकारण है. आडाडा !

अपना पुरुषार्थ – वीर्य, जो पुरुषार्थकी जागृति (उत्पन्न) होती है, उसमें कोई पर कारण है और पुरुषार्थ कार्य है, ऐसा भी नहीं. और यह पुरुषार्थ कोई परका कारण है; (जैसेकि) वीर्यके कारणसे शरीर यलता है, पुरुषार्थके कारणसे (शरीर यलता है), ऐसा नहीं है. आडाडा ! समजमें आया ? अकार्यकारणशक्तिका अनंत शक्तिओंमें रूप है. आडाडा !

अतीन्द्रिय आनंदका उत्पन्न होना यह द्रव्यके आश्रयसे (उत्पन्न होता है ऐसा) कडनेमें आता है. सम्यग्दर्शन ‘भूदत्थमस्सिदो खलु’ – भूतार्थके आश्रयसे (सम्यग्दर्शन) उत्पन्न होता है, ऐसा कडनेमें आता है. (लेकिन) वह भी व्यवहार है. सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न होनेमें कोई द्रव्य-गुण कारण नहीं और पर द्रव्य कारण नहीं. ऐसा ही पर्यायका स्वभाव है. आडाडा ! सूक्ष्म है, भाई ! सप्त तत्त्व बहुत सूक्ष्म (है) और यह अपूर्व बात है ! समजमें आया ? अकार्यकारण (शक्ति) हो गई है. तो आज तो १५वीं शक्ति (लेते हैं). (आज) शिक्षण शिबिरका पंद्रहवा दिन है न ? आडाडा ! १५वीं शक्ति थोड़ी सूक्ष्म है. ध्यान रचना ! आडाडा !

“पर और स्व...” है ? “पर और स्व जिनके निमित्त हैं ऐसे ज्ञेयाकारों...” अपनेमें ज्ञेयाकार ग्रहण करनेकी शक्ति है. पर ज्ञेयाकारोंको ग्रहण करनेकी शक्ति है तो यह प्रमाण हुआ. “तथा ज्ञानाकारोंको ग्रहण करनेके और ग्रहण करानेके स्वभाव...” समजमें आया ? ज्ञानाकार अपना जो स्वभाव है यह परको ग्रहण करानेका स्वभाव है. तो यह प्रमेय है. परिणाम्य शक्ति है यह प्रमाण है और परिणामकत्व शक्ति है यह प्रमेय है. दोनोंको एक शक्ति गिननेमें आयी है. परको ज्ञेयाकाररूप ग्रहण करना ऐसा अपना परिणाम्य (अर्थात्) प्रमाण शक्ति है और अपनी शक्तिका परको ग्रहण करानेका जो स्वभाव है, यह अपनेमें प्रमेय स्वभाव है. समजमें आया ?

(इससे) कडते हैं. आत्मामें प्रमाण नामकी एक शक्ति और प्रमेय नामकी (शक्ति जैसे) दो शक्ति मिलकर एक शक्ति (है). प्रमाण और प्रमेय (ऐसी शक्ति है). परिणाम्य यह प्रमाण (है). (और) परिणामकत्व यह प्रमेय (है). दो शब्द है न ? परिणाम्य (और) परिणामकत्व. परिणाम्य वह प्रमाण (और) परिणामकत्व वह प्रमेय (है). प्रमाण और प्रमेय दो होकर एक

शक्ति है. उसका अर्थ यह है कि, परका ज्ञेयाकार जो अनंत ज्ञेय वस्तु है उसे अपनेमें विशेषरूपसे ग्रहण करना, ऐसी प्रमाणा नामकी शक्ति है. अपने प्रमाणामें परवस्तु ज्ञेयाकारका ज्ञान हो, ज्ञेयाकारका कार्य (करे औसा) नहि. अपने स्वभावमें उस ज्ञेयाकारका ज्ञान हो, (ऐसी शक्ति है). आहाहा !

अनंत ज्ञेय है उसे यहां ग्रहण करनेका – जाननेका स्वभाव है. ग्रहण करनेका अर्थ जाननेका (स्वभाव है). और अपना जो अनंत स्वभाव है वह परके प्रमाणामें प्रमेय होनेकी शक्ति – परको ग्रहण करानेकी शक्ति है. आहाहा ! दो थिज सिद्ध की. अकेला आत्मा है, औसा नहीं और अकेला पर ज्ञेय ही है और आत्मा नहीं, औसा भी नहीं. ज्ञेय अनंत है और ज्ञानस्वभाव भी आत्मप्रमाणांरूप अनंत है. आहाहा ! सूक्ष्म बात है. शक्तिका वर्णन है न ?

आत्मामें अनंत सामर्थ्यता (है). परका कर्ता (होना) या अपनेमें परसे कार्य हो, यह तो अपनेमें है ही नहीं. परंतु अपने स्वभावमें – प्रमाणामें पर ज्ञेयाकारको ग्रहण करना यह अपना स्वभाव है. और पर ज्ञेयमें (अर्थात्) पर प्रमाणामें अपने प्रमेयत्वके कारण परको (अर्थात् परके ज्ञानमें) ग्रहण करानेका स्वभाव है. औसी वस्तु (है). आहाहा ! समजमें आया ? क्या कहा ?

श्रोता : सूक्ष्म पडता है.

पू. गुरुदेवश्री : ँसीदिये धीरेसे कहते हैं न ? और अकबार, दो बार, तीन बार, चार बार कहते हैं.

यह आत्मा जो है उसमें प्रमाणा और प्रमेय नामकी अक शक्ति है. यह प्रमाणा और प्रमेय नामकी शक्तिका कार्य क्या (है) ? कि, प्रमाणा है उसमें पर ज्ञेयाकारका ज्ञान करना यह प्रमाणाका कार्य है. यहां तो प्रमाणा है तो पर ज्ञेयका आकार ग्रहण करना, औसी बात है. प्रमाणामें पर ज्ञेयाकार विशेष जो है, उसका ज्ञान होना यह अपना स्वभाव है. प्रमाणा तो अपनी शक्ति है. समजमें आया ? सब ज्ञेयाकार (आये) तो उसमें आत्मा भी आया. परंतु सर्व ज्ञेयाकारको प्रमाणाज्ञानमें ज्ञान होना यह अपनी शक्ति है. परसे अपनेमें कार्य हो, औसी कोई थिज (शक्ति) नहीं (है). और परको ग्रहण कराना (औसी भी शक्ति है). अपनी अनंत शक्ति, अनंत गुण स्वभाव है उसमें अक प्रमेय नामकी शक्ति है. प्रमेय – कि जिस प्रमेयके कारण पर ज्ञानके प्रमाणामें (अपने) प्रमेयको ग्रहण कराना उसका स्वभाव है, आहाहा ! त्थ ! प्रमेय और प्रमाणा दो मिलाकर अक शक्ति है. उसका अर्थ औसा करते हैं ! – औसा कहना है कि, अनंत पर ज्ञेय हैं उसका ज्ञान होना यह आत्म स्वभाव है; परंतु परकी रचना (करना) या परको बनाना, यह उसका स्वभाव नहीं है. आहाहा ! समजमें आया ?

अपनेमें अनंत गुण आदि जो द्रव्यस्वभाव है उसमें प्रमेयत्व (शक्ति) है, तो उस कारणसे पर द्रव्यके प्रमाणमें प्रमेयत्वको ग्रहण करना, परज्ञानमें ग्रहण करना, यह उसका अपना स्वभाव है. आहाहा ! परिणाम्य यह प्रमाण हुआ. परिणामकत्व यह प्रमेय हुआ. समझमें आया ? ऐसी बातें (हैं). सेठ लोगोंने तो (यह) सब सुना भी न ही.

श्रोता : पहले यह नहीं था.

पू. गुरुदेवश्री : नहीं था, यह बात सखी (है). लोगोंको बेचारोंको (कहां सुनने मिले) ? अरेरे.. प्रभु ! इस कालमें ऐसी बात ! बाहरमें (लोगोंका विरोध ऐसा है कि) यहांके साहित्यको जलमें डाल देना है. आहाहा ! क्या हो (सकता है) ?

श्रोता : वह अपना ज्ञान पानीमें डालता है.

पू. गुरुदेवश्री : बात तो ऐसी है. भगवान ! प्रभु ! तुझे नुकसान है. यह तो सत् साहित्य है. उसका ज्ञान करना यह तेरा स्वभाव है. ज्ञेयको पानीमें डालना यह तेरा स्वभाव नहीं है. अरेरे...! क्या हो सकता है ? प्रभु ! सत् साहित्यमें तो यह खीज है. समझमें आया ?

तेरी खीजमें अनंत ज्ञेयोंको जानना ऐसा तेरा स्वभाव है. परंतु अनंत ज्ञेयोंकी रचना करना या उसका कार्य करना यह तेरे स्वभावमें नहीं है और यह ज्ञेयके स्वभावमें (भी) नहीं है. क्योंकि अपनेमें प्रमाण तरीके जो ज्ञेयका स्वभाव आता है, उसमें उस ज्ञेयका स्वभाव ऐसा नहीं है कि, परसे रचना हो. ज्ञेयका द्रव्य, गुण, पर्याय अपने ज्ञानके प्रमाणमें ग्रहण – जाननेका स्वभाव है. ऐसा स्वभाव है. अरिहंत, त्रिलोकनाथ, तीर्थंकर, सर्वज्ञ और पंच परमेशि (वे सब) ज्ञेय हैं. उन्हें जाननेका प्रमाणज्ञानमें अपना स्वभाव है, परंतु उनसे कुछ मिले, ऐसा कोई स्वभाव नहीं है. ऐसी बातें हैं, भाई ! आहाहा ! समझमें आया ?

पर जिसमें निमित्त है (अर्थात्) अपने ज्ञान प्रमाणमें पर निमित्त है. है न ? और “स्व जिनके निमित्त है...” अपना आत्मा परको ज्ञात होनेमें निमित्त है. परको ग्रहण करानेमें (निमित्त है). समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी शुद्ध शक्ति (है) ! इससे तो भक्ति और पूजा करे न ! (तो) लोगोंको ठीक पडता है. भापू ! भक्ति, पूजा होती है, अशुभरागसे भयनेको शुभभाव हो. और वास्तवमें तो सखी भक्ति समकित्तीको ही होती है. आहाहा ! आया न ? पंचास्तिकायमें टीकामें आया है. सम्यक्दृष्टिको ही यथार्थपने भक्तिका शुभभाव (है). उन्हें यथार्थ व्यवहार है. अज्ञानीको व्यवहार कहां आया ? आहाहा ! समझमें आया ?

हम तो संप्रदायमें थे न ? तो हमारे यहां यह यर्था बहुत चलती थी. ८३की सालमें बहुत यर्था हुई. एक सेठ थे. उन्होंने ऐसा कहा कि, ‘सम्यक्दृष्टि होनेके बाद मूर्तिपूजन है ही नहीं. जब तक मिथ्यादृष्टि है तबतक मूर्तिकी पूजा है.’ ऐसी बात बली. ५० वर्ष हुआ. आहाहा ! उन्होंने ऐसा कहा कि, ‘जब तक मिथ्यादृष्टि हो तब तक मूर्तिकी पूजा

डो. सम्यग्दृष्टि डोनेके बाद मूर्ति पूजा नहीं होती' तो हमने उसे ऐसा कहा, 'यथार्थमें तो सम्यग्दर्शन होता है तब श्रुतज्ञान होता है. श्रुतज्ञान होता है उसमें श्रुतज्ञान अवयवी है और निश्चय-व्यवहार उस अवयवीका अवयव है.' धतना अवयवी शब्द नहीं (कहा) था. परंतु धतना कहा था कि, 'श्रुतज्ञान डोनेके बाद दो नय होती है. निश्चय और व्यवहार. और यार निक्षेप हैं. नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव ये ज्ञेयके भेद हैं. निश्चय-व्यवहार नयके भेद हैं. वास्तवमें तो सम्यग्दर्शन डोनेके बाद व्यवहारनय होता है और व्यवहारनयमें यह पूजनिक वस्तु है, ये निमित्त पडती है.' तो समझिती डोनेके बाद वास्तवमें तो पूजनेका भाव - व्यवहार आता है. समझमें आया ? यह तो ५० वर्ष पहलेकी बात है. (हमने कहा) कि, भाई ! हम जैसे ही नहीं मानेंगे. इसमें (संप्रदायमें) आ गये इसदिये हम मान लें, ऐसा (नहीं है). हमें (बात) नहीं बैठे तो (हमे जैसे ही) बैठानी नहीं है.

वास्तवमें तो भगवानकी प्रतिमा ज्ञेयका भेद है. नाम निक्षेप, स्थापना निक्षेप, द्रव्य निक्षेप, भाव निक्षेप - यह ज्ञेयके भेद हैं. श्रुतज्ञानमें नय है यह श्रुतज्ञानका भेद है. श्रुतज्ञानके भेदमें निश्चय और व्यवहार आता है. उस व्यवहारसनयसे (स्थापना) निक्षेप (ऐसी) भगवानकी प्रतिमाका सख्या पूजनिक व्यवहार वास्तवमें तो समझितीकी ही आता है. आहाहा ! भले है शुभभाव. समझमें आया ? स्थानकवासीमें आ गये इसदिये हम जैसे ही माने ऐसी हमारी थीज नहि. हम तो हमारे आत्माका (कल्याण) करनेके दिये (आये हैं). (हमने) कहा, भाई ! मार्ग तो यह है. भाई ! हम जैसे नहीं माने. हमको तो (बात) अंदर बैठनी चाहिए. वास्तवमें तो व्यवहारनय समझितीकी ही होता है. मिथ्यादृष्टिको नय कहा आया ? (जब) नय नहीं है तो निक्षेपका विषय भी समझित बिना कहासे आया ? समझमें आया ? न्याय समझमें आया ? आहाहा ! यहां तो न्यायसे समझनेमें आता है तो बात उसके ज्ञानमें- अनुभवमें आनी चाहिए न ? आहाहा !

यहां कहते हैं कि, आत्मामें परिणाम्य-परिणामकत्व ऐसी ओक शक्ति दि. परिणाम्य (यानी) प्रमाण और परिणामकत्व (यानी) प्रमेय. प्रमाण और प्रमेयरूप ओक शक्ति है कि, जिस प्रमाणमें - ज्ञान करानेमें पर निमित्त है. और परको ज्ञान करानेमें अपना आत्मा निमित्त है. है ? "पर और स्व जिनके निमित्त है जैसे ज्ञेयाकारों..." (ज्ञेयाकारों) पर (हैं). पर ज्ञेयाकारोंको ग्रहण करनेकी अपनेमें प्रमाण ज्ञानकी शक्ति है. "तथा ज्ञानाकारोंको ग्रहण करनेके और ग्रहण करानेके स्वभावरूप...." आहाहा ! है ? "...ज्ञानाकारोंको ग्रहण करनेके और ग्रहण करानेके स्वभावरूप परिणाम्य-परिणामकत्व शक्ति." आहाहा ! बहनोंको तो यह सूक्ष्म पडे. (लेकिन) वस्तु तो ऐसी है. आहाहा !

पर जिसको निमित्त है. आत्माको पर निमित्त है. आत्मामें - ज्ञानमें ज्ञेयाकारका ग्रहण डोना (उसमें) पर निमित्त है और अपना स्वरूप परको ग्रहण करानेमें निमित्त है. उसके

(परके) प्रमाणाज्ञानमें अपना प्रमेय (अर्थात्) ज्ञान करानेका स्वभाव है. आहाहा ! समझमें आया ? इस शक्तिका भी अनंत शक्तिमें – अक-अक शक्तिमें रूप है. आहाहा ! केवलज्ञानमें भी पर ज्ञेयोंको ग्रहण करनेका स्वभाव है. और केवलज्ञानमें भी परको ग्रहण कराने या पर केवली आदिको ग्रहण करानेमें प्रमेय स्वभाव है. उसका ज्ञान स्वभाव परको जाननेमें प्रमाणांश है और ज्ञान आदि अनंत स्वभाव परको ज्ञेय बनानेमें – प्रमेय बनानेमें – परको ग्रहण करानेमें समर्थ है. आहाहा ! (परके) केवलज्ञानमें आत्माका अपना स्वभाव ग्रहण करानेका निमित्तपना है और (परके) केवलज्ञानको अपनी पर्यायमें ग्रहण करनेका स्वभाव है. केवलज्ञान ऐसा है, ऐसा जाननेका स्वभाव है. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसी बातें (हैं) !

श्रोता : समझमें नहीं आया.

पू. गुरुदेवश्री : अन्नी भी (समझमें) नहीं आया ? और स्पष्ट करते हैं, भगवान ! आहाहा ! तुम तो यैतन्यस्वरूप हो न नाथ ! आहाहा ! (समयसार) १७-१८ गाथामें आबाल-गोपाल आया है न ? आबाल-गोपाल अर्थात् बालकसे लेकर वृद्ध सब ज्वको अपनी ज्ञानकी पर्यायमें (स्व) ज्ञेय जानना यह उसका स्वभाव है. (स्व) ज्ञेय जानते ही है, ऐसा कहते हैं. आहाहा ! समझमें आया ? सर्व प्राणी (अर्थात्) बालक-वृद्ध आदि सर्व, अपनी ज्ञानकी पर्यायमें सारा ज्ञेय जानते ही है. ऐसा ज्ञानकी पर्यायका स्वभाव है. आहाहा !

पर्यायने अपनेको प्रमेय बनाया और अपनेको प्रमाणा बनाया. परको ग्रहण किया (अर्थात्) प्रमाणा बनाया. परको ग्रहण किया यह प्रमाणा बनाया. आहाहा ! सूक्ष्म बात है. यहां प्रमेय शक्ति और प्रमाणा शक्ति दो भिन्न नहीं दिया है. दो होकर अक (शक्ति) ही है. भगवान ! तेरेमें अक परिणाम्यपरिणामकत्व नामका गुण है. गुण कहां, शक्ति कहां, सत् भगवान उसका सत्त्व कस कहां, मात कहां (सब अकार्य है). आपके रूपके मातकी यहां बात नहीं है. इसमें है उसकी बात है.

(पैसा) ज्ञेयपने जानने लायक है, ऐसा तेरा स्वभाव है. पैसा मेरा है (ऐसा मानना) यह तेरा स्वभाव नहीं है. लक्ष्मी, मकान, स्त्री, कुटुंब, परिवार, लडका, उसकी स्त्री सब ज्ञेय तरीके तेरे ज्ञानमें जाननेके लायक स्वभाव है. वह मेरा है, ऐसा (मानना) ये कोई तेरे स्वभावमें है ही नहीं. आहाहा ! और तेरा स्वभाव भी परका पुत्र हो, कि परका पिता (हो), पर तेरा पिता हो (ऐसा नहीं है). समझमें आया ? परको प्रमेय होना (अर्थात्) परके प्रमाणामें प्रमेय होना, यह तेरा स्वभाव है. परंतु परका पुत्र हो और परका बाप हो, ऐसी वस्तु नहीं है. आहाहा ! लक्ष्मी आदि परज्ञेयको जाननेका तेरा स्वभाव है और ज्ञानीके ज्ञानमें प्रमेयत्व ग्रहण करानेका तेरा स्वभाव है. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसी बातें हैं ! आठ लडके हो, उसकी बहू (हो), मकान, बंगला (हो), आठोंके लिये भिन्न-भिन्न बंगले हो, उनके

लिये भिन्न-भिन्न कपडे ढो, सभी के लिये ढोता है न ? ५०-५० हजार और लाख-लाख रुपयेके कपडे ढो. तो कहते हैं कि, सुन तो सही प्रभु ! वह सब यीज ज्ञेय तरीके तेरे ज्ञानमें जाननेमें आये, ऐसी वह यीज है. आहाहा !

श्रोता : ज्ञेय तरीके जाननेमें आवे तो हमारी मालिकीकी ढो जाय कि नहीं ?

पू. गुरुदेवश्री : मालिक तो प्रमाणाज्ञानका मालिक है. परको ग्रहण किया (जाना) उस प्रमाणाज्ञानका मालिक है. प्रमेयका मालिक है ? वह प्रमेय है न ? (अपने) प्रमाणमें (वह) प्रमेय (के रुपमें) आया और अपना प्रमेय परके प्रमाणमें गया, तो क्या पर (अपना) आत्माका स्वामी है ? केवलज्ञानी आत्माका स्वामी है ? आहाहा ! मेरा भगवान ! मेरा गुरु ! तो कहते हैं कि सुन तो सही, प्रभु ! आहाहा ! वह तो ज्ञेय है. तेरे ज्ञानमें जानने लायक ज्ञेय है. परंतु मेरे भगवान और मेरे गुरु, ऐसी तो कोई यीज है नहीं. समझमें आया ? ऐसी बातें हैं !

कोई यीज है उसे जाननेका स्वभाव है और कोई ज्ञानानंद आदि स्वभाववाला प्राणी है. उसे (तुम) ज्ञेय ढोकर – प्रमेय ढोकर जाननेके लायक है. परंतु परका ढोना, इसके लायक तू नहीं. और वह पर तेरा ढो, ऐसी लायकात तेरेमें है नहीं. आहाहा !

श्रोता : भगवानको छतने शिष्य हुआ, (ऐसा आता है).

पू. गुरुदेवश्री : वह सब व्यवहारकी बात (है). समझमें आया ? भगवानको १४ हजार साधु थे, उद्द हजार आर्जिका थी, ऐसा आता है न ? यहां तो कहते हैं कि, प्रभु ! सुन तो सही ! तेरे ज्ञान स्वभावमें उस ज्ञेयको जाननेका – ग्रहण करनेका अर्थात् जाननेका (स्वभाव है). है न ? देओ !

“पर और स्व जिनके निमित्त है ऐसे ज्ञेयाकारों...” (ज्ञेयाकारों) पर और ज्ञानाकार स्व (है). ज्ञेयाकार ग्रहण करनेके (और) ज्ञानाकार ग्रहण करानेके (स्वभावरूप है). प्रत्येक शब्दमें झर्क है. आहाहा ! समझमें आया ? जगतमें कोई प्राणी विरोधी है ही नहीं. आहाहा ! प्राणी तो सब ज्ञेय (हैं). ज्ञानमें जानने लायक है. उसका विरोध करना कि, यह ऐसा है और वैसा है. अरे प्रभु ! क्या करता है ? समझमें आया ? जिसको दुनिया दुश्मन कहे, वह भी ज्ञेय (है). ज्ञानमें जानने लायक है, बस ! दुश्मन है ऐसी मान्यता (करना) इस आत्मामें है ही नहीं. लोखकसे तो (बात) चलती है, भगवान ! भगवानका मार्ग लोखकसे है – न्यायसे है. जैसे क्यर-ब्यर मानना, ऐसा नहीं (है). उसकी स्थिति – मर्यादा जैसी है जैसे प्रकारका ज्ञान करना, प्रतीत करना यह वस्तुका स्वरूप है. आहाहा ! समझमें आया?

(यहां) कहते हैं कि, पर ज्ञेयाकार अपने ज्ञानमें निमित्त है और अपना ज्ञानाकार पर ज्ञानमें निमित्त है. अंदरमें शब्द है न ? पर जिनके निमित्त हैं जैसे ज्ञेयाकारों (और) स्व जिनके निमित्त हैं जैसे ज्ञानाकारों. पर जिसके निमित्त हैं जैसे ज्ञेयाकारों उसे ग्रहण करनेके –

उन ज्ञेयाकारोंको ग्रहण करनेके और स्व जिसका निमित्त है, जैसे ज्ञानाकारोंको ग्रहण करानेके स्वभावरूप (परिणाम्यपरिणामकत्व शक्ति है). आहाहा ! अमृतयंद्रायार्यदेव द्विगंबर संत (जैसा) काम करते हैं ! आहाहा ! (पर) ज्ञेयाकारको ग्रहण करना और ज्ञानाकारको परमें ग्रहण कराना (जैसा स्वभाव है). आहाहा ! समझमें आया ? सूक्ष्म बात है. भगवान ! मार्ग जैसा सूक्ष्म है.

तीर्थंकर सर्वज्ञ परमेश्वर ! जैसा कहते हैं कि, मेरे ज्ञानमें तुम ज्ञेय तरीके जाननेके लायक हो और मैं भी (दूसरे) केवलज्ञानीके ज्ञानमें जाननेके – ग्रहण करानेके लायक हूँ. परंतु केवलज्ञानीको मैं उसका केवलज्ञानी हूँ, जैसा (मानना) मेरे स्वभावमें नहीं है. समझमें आया ? आहाहा ! जैसे स्त्री, पुत्र, लक्ष्मी, मकान (ये सब) प्रभु ! तेरे ज्ञानमें उस ज्ञेयाकारोंको ग्रहण करनेका – जाननेका स्वभाव है और सामने ज्ञान हो उसमें तेरा प्रमेयत्व उसे ग्रहण करानेकी – जाननेकी ताकत है. परंतु उसका पुत्र हो, उसकी स्त्री हो, जैसा कोई स्वभाव नहीं है. समझमें आया ? अरेरे...! जिसे यहां लोग जैसा कहते कि, यह मेरी अर्धांगना है. हमारी घरवाली है. अरे ! सुन तो सही प्रभु ! तेरी घरवाली तो ज्ञेयका ज्ञान करे, वह पर्याय तेरी घरवाली है. आहाहा ! समझमें आया ?

उन दरबारोंको दो-दो लाजकी कमाई हो (वे जैसा मानते हैं कि), हमारे धतने भेत है और धतनी कमाई है. (यहां) कहते हैं कि, वह (सब कुछ) तेरे स्वभावमें वह 'है', जैसा जाननेका स्वभाव है. सब ज्ञेय जानने लायक हैं. आहाहा ! वकीलकी जो भाषा निकलती है और उसमें पैसा मिलता है, वह सब ज्ञेयका ज्ञान करनेका तेरा स्वभाव है. आहाहा ! और सामने प्रमाणज्ञानवाले ज्ञानी हो तो तेरा स्वभाव ज्ञेय होकर – प्रमेय होकर परमें जाननेका तेरा स्वभाव है. परंतु परका करना और तेरा स्वभाव परका हो जाय और पर ज्ञेय तेरा हो जाय, जैसा कोई स्वभाव नहीं है. आहाहा ! लोगोंको यह सूक्ष्म पडता है (परंतु) मूल चीज यह है. समझमें आया ? ध्यान रखना ! जैसा कहा था.

भगवान आत्मा ! उसमें जैसी ओक शक्ति – सामर्थ्य – स्वभाव – गुण है कि, जिसका पर ज्ञेयोंको ग्रहण करनेका अर्थात् जाननेका स्वभाव है. और ज्ञानीके ज्ञानमें प्रमेय होनेका तेरा स्वभाव है. परंतु परका शिष्य होनेका और परका गुरु होनेका (स्वभाव नहीं). 'मैं परका गुरु हूँ' जैसा कोई स्वभाव नहीं है. आहाहा ! गजब बात है न ! पर्यायमें शक्तिका परिणामन है उसकी बात चलती है. अनादिसे शक्ति तो द्रव्य-गुणमें थी (परंतु जब) प्रतीत हुई तो पर्यायमें शक्तिका परिणामन आया. पर्यायस्वभाव उसका जैसा है. पर ज्ञेयका ज्ञान करनेका पर्यायमें स्वभाव है. ध्रुवमें तो कहां (परिणामन) है ? समझमें आया ? आहाहा !

२५-५०-६०-२०० बीघा (जमीन हो तो यहां) कहते हैं कि, किसका कैसा पैसा ? भाई ! तुझे खबर नहीं. पर चीजकी अनंतता और बहुलता तेरे ज्ञानमें जाननेके लायक है. परंतु

ઉસ પરકી બહુલતા ‘મેરી હૈ’ એસા માનનેકા સ્વભાવ તો તેરી વિપરીત દૃષ્ટિ હૈ. એસી બાત હૈ ! આહાહા ! ઓર પરકા જ્ઞાન યાહે કેવલજ્ઞાન હો (યા) મતિ-શ્રુત જ્ઞાન આદિ હો, ઉસમેં તેરી ચીજ પરકો જ્ઞેય હોનેકા – પરકો ગ્રહણ કરાનેકા – જ્ઞેય હોકર ગ્રહણ કરાનેકા સ્વભાવ હૈ. પરંતુ તુમ પરકે હો જાઓ, એસા કોઈ સ્વભાવ નહીં હૈ. આહાહા ! આત્મા કિસ પ્રકારસે જ્ઞાતા-દૃષ્ટા હૈ ? યહ કેસે સિદ્ધ કરતે હૈં ! સમજમેં આયા ?

આત્મા જ્ઞાતા-દૃષ્ટા હૈ ઉસે કિસ પ્રકારસે સિદ્ધ કરતે હૈં ! ભગવાન ! તુમ તો જ્ઞાતા-દૃષ્ટા હો ના ? તો જ્ઞેયકો જાનનેકા તેરા સ્વભાવ હૈ ન ! આહાહા ! ઓર દૂસરે જો જ્ઞાતા-દૃષ્ટા હૈ ઉસે તુમ પ્રમેય – જાનનેકા સ્વભાવ હૈ પરંતુ ઉસકા હોનેકા સ્વભાવ તેરેમેં નહીં હૈ. આહાહા !

શ્રોતા : યહ સચ્ચા લગતા હૈ પરંતુ વહાં (ઉદયમેં) જાતે હૈં તબ ફિર જાતા હૈ.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : બાજરા ઓર તિલ દિખે ન ? ઉસે પિસે તો જૈસે કિ ઉસમેં ઘુસ ગયા. અંદર (ખેતમેં) દેખને જાય ન ? લંબે બાજરે પકતે હૈં. હમ સંપ્રદાયમેં થે તબ અલિયાબારા ગયે થે. ગાંવમેં બાજરેકા બડા ડુડા (અનાજકી બાલ, ભટકા) લે આયે. બાજરા ઇતના બડા ઓર રાડા (બાજરેકા તના, ડંઠલ) ઇતના (છોટા). બાજરા ઇતના બડા ઓર ઉસકા ડુડા ઇતના (છોટા). જામનગરકે પાસ અલિયાબારા હૈ. ઉસકા રાડાકા ભાગ છોટા ઓર ઉસમેં બાજરા પકે ઇતના બડા લંબા. વહ બાજરા ૫૦-૫૦ બીઘા જમીનમેં ઇતના પકા હો ઓર દરબાર દેખને જાય (તો દેખકર એસા લગે કિ) આહાહા ! યે તો બાજરા પકા ! જવાર પકી ! તિલ પકે ! ખેતમેં અંદર દેખને જાતે હૈં તો ઓહોહો ! (હો જાતા હૈ). ક્યા હૈ પ્રભુ ! વહ ચીજ તો તેરી જ્ઞેય હૈ (ઓર) તેરે જ્ઞાનમેં જાનનેકે લીયે વહ હોતા હૈ. ઓર તેરી ચીજ પર જ્ઞેયકે જ્ઞાનમેં જાનનેકે (લાયક) સ્વભાવ હૈ. મેરી માનના એસા સ્વભાવ ત્રીનકાલમેં નહીં હૈ. એસી બાતેં હૈં ! પુત્ર આદિ સબ જ્ઞેય હૈં. જ્ઞાનમેં જાનને લાયક હૈ. ‘મેરા હૈ’ એસા નહીં હૈ.

શ્રોતા : વહ લડકે હૈં, એસા તો જાનને લાયક હૈ કિ નહીં ?

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : વહ લડકા હી નહીં હૈ. (બલ્કિ) જ્ઞેય હૈ. આહાહા !

“પર જિનકે કારણ હૈ...” અર્થાત્ જ્ઞેયો અપને જ્ઞાનમેં કારણ હૈ. “એસે જ્ઞેયાકારોંકો ગ્રહણ કરનેકે...” (અર્થાત્) ઉન પર જ્ઞેયોંકે આકારો યાની વિશેષ સ્વભાવકો જાનનેકા (સ્વભાવ હૈ). “... ઓર સ્વ જિનકા કારણ હૈ એસા જ્ઞાનાકાર...” અપના જ્ઞાનાકાર જો હૈ (વહ) પર જ્ઞાનમેં ગ્રહણ કરાનેકા સ્વભાવ હૈ – જાનનેકા સ્વભાવ હૈ. આહાહા ! સમ્યગ્દર્શનમેં એસી માન્યતામેં આતા હૈ કિ, “મેં તો પરિણમ્યપરિણામકત્વ શક્તિવાન હું.” જિતને જ્ઞેય હૈં ઉસે મેં જાનને લાયક હું. ઓર પર જ્ઞાનમેં પ્રમેય હોકર મેં જાનને લાયક હું. સમ્યક્દૃષ્ટિમેં એસી પ્રતીતિ હોતી હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? ઇસ શક્તિકી પ્રતીતિ હોતી હૈ (ઉસમેં) યહ આ ગયા. યહ પ્રમાણ ઓર પ્રમેય (આ ગયા). પરિણમ્ય યાની પ્રમાણ (ઓર) પરિણામકત્વ

यानी प्रमेय. यह शक्ति मेरी है. मैं शक्तिवान हूँ. ऐसी जब प्रतीति हुई तो समझितीको अपने सिवा शरीर, वाणी, मन, कर्म, राग आदि सब (जानने लायक हैं). आहाहा ! व्यवहार रत्नत्रयका विकल्प उठता है उसे भी ज्ञेय छोड़कर मैं जानने लायक हूँ. आहाहा ! व्यवहार रत्नत्रयका जो विकल्प – राग उठता है, वह ज्ञेय तरीके मेरे ज्ञानमें जानने लायक है. परंतु वह राग मेरा है, ऐसी यीज (स्वभाव) नहीं है. आहाहा !

यह बड़ी तकरार (यलती है). 'शुभजोग मोक्षका मार्ग है और शुभजोगसे आत्माका शुद्ध भाव होता है.' समझमें आया ? यहां तो प्रभु ! ना कहते हैं. समझमें आया ? शुभजोग भी ज्ञेय है. उस ज्ञेयको जाननेका – ग्रहण करनेका स्वभाव (है). १२वीं गाथामें यह आ गया. व्यवहार जाना हुआ प्रयोजनवान (है). यारों ओरसे देखो तो एक ही सिद्धांत पडा होता है. आहाहा ! १२वीं गाथामें आया न ? ११वीं (गाथामें) आया है कि अपना स्वभाव सत्यार्थ-भूतार्थ उसका जिसको आश्रय छोड़कर सम्यग्दर्शन हुआ तो साथमें (सम्यक्) ज्ञान भी हुआ. उसे जो राग होता है उस रागको, ज्ञेयके तरीके जाननेका स्वभाव है. परंतु राग मेरा स्वभाव है और रागसे ज्ञान होता है, ऐसा भी नहीं. रागका ज्ञान हुआ वह रागसे हुआ, ऐसा भी नहीं. रागका ज्ञान तो अपने प्रमाण स्वभावके कारणसे हुआ है. क्या कडा ?

श्रोता : यहां तो ऐसा लिखा है कि, व्यवहार द्वारा उपदेश कर देते हैं.

पू. गुरुदेवश्री : ऐसा है ही नहीं. बांधा वही है न ? वह तो पदकी रचना (ऐसी) हुई है. दिल्लीमें एक पंडितने कहा कि, 'देखो ! व्यवहारका उपदेश करना' (ऐसा लिखा है). अरे..! उपदेशकी बात नहीं है, प्रभु ! यहां तो पद्यमें ऐसा आया है. परंतु उसकी टीकामें तो अमृतचंद्रायार्यने कहा कि, उस-उस समयमें जो कोई राग आता है, उसे व्यवहारसे – उपचारसे जानने लायक है, ऐसा जानना. आहाहा ! १२वीं गाथामें संस्कृतमें 'तदात्वे' शब्द है. 'तदात्वे' (अर्थात्) उस-उस समयमें. माने क्या ? कि जिस समय रागकी तीव्रता आयी तो उस समयमें स्व और पर – रागका ज्ञान करनेकी ताकत (है). अपनेसे यह ज्ञान होता है. समझमें आया ? और दूसरे समयमें थोडा मंद राग हुआ तो उसी समय ज्ञानकी पर्याय अपनेसे स्वपर प्रकाशकरूपसे रागको ज्ञेय (जानती है) और मैं उसका जाननेवाला (हूँ) (ऐसा जो जानती है) वह भी व्यवहार है. आहाहा !

मेरी राग संबंधी जो ज्ञानकी स्वपरप्रकाशक पर्याय हुई उसको मैं जाननेवाला हूँ. और वह मेरा ज्ञेय है, यह भी व्यवहार है. आहाहा ! यह बात आ गई है. आहाहा ! बहुत सूक्ष्म, भाई ! है न ? कमवर्ती ज्ञान पर्याय परको जाने, वह भी व्यवहार है. वह तो दूसरा भोल है. आहाहा ! क्या कडा ?

अपनेमें – ज्ञानकी पर्यायमें रागादि ज्ञेय हैं उसे जाननेका स्वभाव है. परंतु वह राग और ज्ञेय है तो उसकी ज्ञानकी पर्याय प्रकाशनमें आयी, ऐसा भी नहीं. अपनी पर्यायकी

ताकतसे स्व और परको जाननेकी पर्याय उत्पन्न हुई. रागके कारणसे नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? सोनगढके नामसे यह बड़ी तकरार (यलती है). अरे...! भगवान ! प्रभु ! तेरी यीज ऐसी है कि, राग आया उसका उस समयमें और उस संबंधी और अपना संबंधी ज्ञान करना यह तेरा स्वभाव है. समझमें आया ? परंतु रागसे—व्यवहारसे निश्चय ज्ञानकी पर्याय प्रगट हुई, यह तो है नहीं. परंतु राग है तो उस संबंधी अपनी ज्ञान पर्याय हुई, ऐसा भी नहीं. अपनी ज्ञानकी स्व-पर प्रकाशक पर्याय हुई उसमें ज्ञेयका ज्ञान हुआ. समझमें आया ? यह भी व्यवहार है. आहाहा ! और ज्ञानकी पर्यायको मैं जाननेवाला — ऐसा भेद हुआ यह भी व्यवहार है. मैं तो ज्ञायक हूँ. बस ! ऐसा परिणामन हुआ उसका नाम ज्ञायक कहते हैं. सूक्ष्म बात तो है.

अेक शक्ति अेक घंटा थोड़ी यली. बाकी तो पार नहीं है, भैया ! अंदरमें उसकी जो गंभीरता भासित होती है धतनी तो कहनेकी ताकत नहीं है. आहाहा ! संतों और केवलीओं उसका स्पष्टीकरण करे. गजब करते हैं ! आहाहा ! अरेरे...! जैसे परमात्मा और संतोंके त्तरमें विरह हो गये. समझमें आया ? आहाहा !

“पर जिनके कारण हैं...” कौन ? अपने स्वभावके अलावा जो ज्ञेय (अर्थात्) राग आदि पर जिनके कारण हैं. (अर्थात्) अपने ज्ञानमें ज्ञेय तरीके जाननेमें आये जैसे कारण हैं. “जैसे ज्ञेयाकारोंको ग्रहण करनेके और स्व जिनका कारण है जैसे ज्ञानाकारोंको ग्रहण करानेके...” परके ज्ञानमें ग्रहण कराना, परके ज्ञानमें ‘मैं ज्ञेय हूँ’ बस ! आहाहा ! अपने ज्ञानमें वह परज्ञेय है. परके ज्ञानमें मैं ज्ञेय हूँ. बस ! धतनी बात है. आहाहा ! ऐसी शक्ति माननेवालेको शक्तिवान द्रव्यकी जो प्रतीति होती है तो पर्यायमें रागसे मुझे ज्ञान हुआ, वह तो नहीं, निश्चय पर्याय जो हुई वह रागसे हुई, वह तो नहीं परंतु राग है तो पर प्रकाशककी पर्याय हुई, ऐसा भी नहीं. आहाहा ! आया न ? क्या कहा ? “स्व जिनका कारण है जैसे ज्ञानाकारोंको ग्रहण करानेके स्वभावरूप परिणामपरिणामकत्व शक्ति.” परिणामनमें (परिणाम्यमें) प्रमाण लेना और परिणामकत्वमें प्रमेय लेना. परका ज्ञान करनेकी ताकत और परमें प्रमेय होनेकी ताकत. बस ! इस शक्तिमें तो बहुत त्तरा है. अनंत शक्तिमें इस शक्तिका रूप पडा है. उसकी विस्तारसे बात लेंगे. विशेष कहेंगे...



प्रवचन नं. १६

शक्ति-१५, १६, १७ - ता. २६-०८-१९७७

परात्मनिमित्तकज्ञेयज्ञानाकारग्रहणग्राहणस्वभावरूपा

परिणम्यपरिणामकत्वशक्तिः ॥१५॥

अन्यूनातिरिक्तस्वरूपनियतत्वरूपा त्यागोपादानशून्यत्वशक्तिः ॥१६॥

षट्स्थानपतितवृद्धिहानिपरिणतस्वरूपप्रतिष्ठत्वकारणविशिष्टगुणात्मिका

अगुरुलघुत्वशक्तिः ॥१७॥

समयसार, शक्तिका अधिकार यलता है. १५वीं शक्ति यली. इसमें क्या कडा ? अेक-अेक शक्तिमें बहुत भंडार भरा है. अैसा कहते हैं कि, आत्मामें परिणम्यपरिणामकत्व नामकी शक्ति है. उसका अर्थ (यह है) कि, अपने सिवा (जो) परज्ञेय (है) उसे ग्रहण करनेका — जाननेका जिसका स्वभाव (है), यह परिणम्य शक्ति. और अपना स्वभाव परके ज्ञानमें ग्रहण करानेका स्वभाव, उसका नाम प्रमेय (शक्ति). परिणम्य—परिणामकत्व (और) प्रमाण और प्रमेय. दोनोंका ये अर्थ है. इस शक्तिका स्वभाव (अैसा है कि), अपने स्वभावमें परज्ञेयोंको ग्रहण करना नाम जाननेका स्वभाव है. परंतु पर द्रव्यका कुछ करना, अैसा स्वभाव नहीं है. प्रमाणज्ञान—परिणम्यका अर्थ यलता है. वह रागादिका ज्ञान करे. समजमें आया ? (परंतु) रागका कर्ता (होना, अैसा) स्वरूपमें नहीं. आडाडा ! यह बडी तकरार, विरोध अभी यह है न ? जयसेन आचार्य कहते हैं कि, अेक भाव यथार्थ समजे तो उसका सब भाव यथार्थ हो जाय. समजमें आया ?

यहां कहते हैं कि, आत्मामें परिणम्य-परिणामकत्व नामकी अेक शक्ति है. अेक शक्ति अनंत गुणमें व्यापक है और अनंत गुणमें वह निमित्त है. और यह शक्ति ध्रुवरूप उपादान है. और क्षणिक पर्यायमें जो परिणति होती है वह क्षणिक उपादान है.

अैसा अपनी पर्यायमें परको जानना — ग्रहण करना अैसी परिणम्य शक्ति है. और अपना स्वभाव — सारा द्रव्य, गुण और पर्याय परके ज्ञानमें (जानना, यह परिणामकत्व शक्ति है). जाननेका स्वभाव — छतनी भात कही. परिणम्य कडा न ? वह तो पर ज्ञेयोंको

अपनेमें जाननेका स्वभाव है. आहाहा ! अनंत सिद्धों और अनंत पंच परमेष्ठी उसके ज्ञेय हैं. (उस) ज्ञेयको जाननेका स्वभाव है. परंतु पंच परमेष्ठी मेरे हैं और मैं उसका शिष्य हूँ, ऐसी कोई चीज (शक्ति) नहीं. आहाहा ! समझमें आया ?

प्रमाणमें पर्यायकी बात आयी. पर ज्ञेयमें अनंत निगोदके ज्व हैं, अनंत सिद्ध हैं, अनंत केवली हैं और त्रिकालके पंच परमेष्ठी (हैं). इमो लोअे सव्व त्रिकालवर्ती अरिहंताणं – त्रिकालवर्ती अरिहंतोंको ज्ञानकी पर्यायमें जाननेका स्वभाव है. आहाहा ! और अपना द्रव्य, गुण और पर्याय परके ज्ञानमें ग्रहण करानेका स्वभाव है. जउमें तो ग्रहण करनेका स्वभाव नहीं है. समझमें आया ? पर द्रव्यमें जो ज्ञाता (अर्थात्) प्रमाणज्ञानवाले हैं, उनको अपना द्रव्य, गुण, पर्याय ग्रहण कराना ऐसा प्रमेय स्वभाव है. आहाहा ! समझमें आया ? परको प्रमेय बनावे और पोते परका प्रमेय बने. आहाहा ! पोते अर्थात् स्वयं. थोड़े गुजराती शब्द आ जाते हैं. समझमें आया ? अेक परिणाम्यपरिणामकत्व शक्ति भी जो यथार्थपने समझे तो (सब यथार्थ हो जाय).

यहां मलिन परिणामका तो प्रश्न है ही नहीं. यहां शक्तिका वर्णन है न ? शक्ति शुद्ध है तो उसका परिणामन भी शुद्ध है. अशुद्ध परिणामनकी तो यहां बात है ही नहीं. द्रव्य शुद्ध, गुण शुद्ध और पर्याय शुद्ध. यहां उन तीनोंकी बात है. यहां शुद्ध कमवर्ती पर्याय है (उसकी बात है). राग कमवर्ती (है), वह बात यहां नहीं है. आहाहा ! व्यवहारनयसे – रागसे ज्ञानकी निश्चय पर्याय होती है, वह बात तो है ही नहीं. परंतु रागका ज्ञान करनेका – ग्रहण करनेका स्वभाव है कि, 'यह राग है' बस ! (घटना). उस रागको ग्रहण करनेके स्वभावमें भी अपना ज्ञान जो रागको जानता है. ऐसी जो ज्ञानकी स्वपरप्रकाशक पर्याय है; (तो) राग है तो स्वपर प्रकाशक ज्ञानका भाव हुआ, ऐसा नहीं है. ऐसा मार्ग है ! आहाहा ! समझमें आया ? भाई ! तेरी प्रतीतिमें यह तरोसा आया नहीं.

परिणाम्यपरिणामकत्व शक्ति स्वभाव (है). द्रव्यकी शक्ति, सत्का सत्व, उस शक्तिका संग्रह करनेवाला द्रव्य (है). आहाहा ! उसमें तो ऐसा आया कि, पर द्रव्यको अपना मानना, पंच परमेष्ठीको अपना मानना, ऐसा उसका स्वभाव नहीं है, ऐसा कहते हैं. यह तो अंदरके आनंदकी बात है. ज्ञेयको जाननेका स्वभाव है, यह भी व्यवहार कहनेमें आता है. आहाहा ! आत्मा अपनेको जाने यह भी व्यवहार है. भेद हुआ न ? (घसलिये ऐसा कहा). वह बात आ गई है. समझमें आया ? आत्मा तो ज्ञायक है, बस ! आत्मा ज्ञान द्वारा जाने, ऐसा भेद भी जिसमें नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? (ऐसी) चीज सम्यग्दर्शनका विषय है. समझमें आया ? यह तो अद्वैतिक बातें हैं ! प्रभु ! यह सर्वज्ञ वीतरागकी अमृतधारा है. आहाहा ! यह कोई साधारण चीज नहीं है. समझमें आया ?

परिणाम्यपरिणामकत्व शक्तिमें प्रमाण होनेका और परमें प्रमेय होनेका स्वभाव है. बस !

ઇતના સ્વભાવ (બતાના હૈ). પરકો અપના માનના યા પરસે અપનેકો માનના, પરસે અપનેમે કોઈ કાર્ય હો ઓર અપનેસે પરમે કાર્ય હો, ઐસી શક્તિ હૈ હી નહીં. સમજમે આયા ?

શ્રોતા : પરકે કામ તો સબ કરતે હૈં.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : કૌન કરતા હૈ ? વહ તો જડકી પર્યાય હૈ. ઉસ જડકી પર્યાયકો જાનનેકા આત્માકા સ્વભાવ હૈ. પરંતુ જડકી પર્યાયકો કરના, યહ આત્માકા સ્વભાવ નહીં હૈ. સમજમે આયા ? આહાહા ! ગજબ બાત કહી હૈ ન !

દૂસરી એક બાત. નિગોદકે અનંત જીવ હૈં. પ્યાજ ઓર લસુનકી એક રાઈ જિતને ટુકડેમે અસંખ્ય શરીર હૈં ઓર એક શરીરમે અભી તક સિદ્ધ હુએ (ઉસસે અનંતગુના જીવ હૈં). ૬ મહિને ઓર ૮ સમયમે ૬૦૮ સિદ્ધ હોતે હૈં તો અભી તક (જિતને) સિદ્ધ હુએ ઉસસે અનંતગુના એક શરીરમે જીવ (હૈં). ઉન જીવોંકી દયા પાલતે (હૈં), ઇસલિએ (વે ટિકતે હૈં) ઐસા નહીં હૈ, ઐસા કહતે હૈં. આહાહા ! સમજમે આયા ?

સ્થાનકવાસીમે થે તબ બડી ચર્ચા હુઈ થી. સ્થાનકવાસીમે ડર સૂત્ર હૈં. ઉસમે એક શબ્દ પડા હૈ કિ, ભગવાનને પ્રવચન ક્યોં કહા ? કિ, ‘સર્વ જીવ રક્ષણક્ષાયી’ અબ સંપ્રદાયવાલે ઐસા કહતે હૈં કિ, રક્ષાકે લિયે કહા હૈ. ઓર તેરાપંથીવાલે ઐસા નહીં માનતે. (યહાં તો કહતે હૈં કિ) રક્ષા કર સકતે નહીં. પરકી રક્ષા કરના યહ તો પાપ હૈ, ઐસા કહતે હૈં. ઉસ પાપકા અર્થ રક્ષા (નહીં) કર સકતે હૈં, ઉસકી તો ઉસે ખબર ભી નહીં હૈ. પરકી રક્ષાકા ભાવ હૈ યહ પાપ હૈ. ઐસા માનતે હૈં. સમજમે આયા ? દોનોંકે બીચમે એક મહિના ચર્ચા હુઈ. આહાહા !

યહાં કહતે હૈં કિ, ભગવાનને સર્વ જીવકી રક્ષાકે લિયે કહા, ઐસા ભી નહીં. સર્વ જીવકી દયા પાલનેકે લિયે કહા, ઐસા ભી નહીં. આહાહા ! વહ જ્ઞેય હૈં, જ્ઞાનમે જાનને લાયક હૈ, ઇસલિયે બતાયા હૈ. ઐસી બાતે હૈં, ભાઈ ! આહાહા ! લોગ અબ સત્કો સમજનેકે લિયે જિજ્ઞાસુ તો હુએ હૈં. લોગ વિરોધ કરે. અરેરે.. ભાઈ ! યે તકરાર ઓર યહ (સબ) ક્યા હૈ ? બાપૂ ! પ્રભુ ! તેરા સ્વભાવ ક્યા હૈ ? ઉસકી તુજે ખબર નહીં. યહ ક્યા કહતે હો ?

યહાં તો કહતે હૈં કિ, શુભ રાગસે ધર્મ તો નહીં પરંતુ શુભ રાગ હૈ તો જ્ઞાન ઉસે જાનતા હૈ, ઐસા ભી નહીં. અપની પર્યાયમે સ્વપર પ્રકાશક જાનનેકા સ્વભાવ હૈ, ઉસે જાનતે હૈં. યાની કિ પરકો જાનતે હૈં – ગ્રહણ કરતે હૈં ઓર પરકો – જ્ઞાનીકો ગ્રહણ કરાતે હૈં. સમજમે આયા ? ઐસા ઉસકા અનાદિ અનંત સ્વભાવ હૈ. આહાહા ! વહ બાત તો કલ બહુત ચલી થી. આજ તો અબ ઉસસે ભી થોડી સૂક્ષ્મ બાત હૈ. ધ્યાન રખના ભગવાન ! યહ તો ભગવાનકે પ્રવાહકે ઘરકી બાત હૈ. સમજમે આયા ?

(અબ) ૧૬વીં શક્તિ. આજ આપકી શિક્ષણ શિબિરકા ૧૬વાં દિન હૈ. આહાહા ! ઓર ૧૬ કિરણોંસે ભગવાન (આત્મા) પૂર્ણ હૈ, યહ શક્તિ યહાં બતાયેંગે. આહાહા ! ક્યા કહતે

હું ? “જો કમબઢ નહીં...” આહાહા ! જો જ્ઞાયક સ્વરૂપ, ધ્રુવ નિત્યાનંદ પ્રભુ ! ઇસમેં કભી કમ ઓર બઢ નહીં હોતા. ક્યા કહતે હું ? ભગવાન આત્મા ! ‘ભરિત અવસ્થ’ (સ્વરૂપ હૈ). પરિપૂર્ણ અવસ્થા સ્વરૂપ (હૈ). યહ બંધ અધિકારમેં લિયા હૈ. સર્વ જીવો ‘ભરિત અવસ્થ’ સ્વરૂપ હૈ. ભરિત અવસ્થા યાની અવસ્થા નહીં. પૂર્ણ સ્વભાવસે ભરા પડા ભગવાન આત્મા ! પરમાત્મસ્વરૂપ આત્મા હૈ ! આહાહા !

(યહાં) કહતે હું કિ, અપને પરમાત્મસ્વરૂપમેં અશુદ્ધતાકી તો બાત હૈ નહીં. યહાં તો શુદ્ધતાકી અપૂર્ણ પર્યાય હૈ તો અંદર શુદ્ધતામેં બહુત શુદ્ધતા હૈ (અર્થાત્ શુદ્ધતા બઢ ગઈ હૈ). એસા નહીં હૈ. ઓર કેવલજ્ઞાનમેં શુદ્ધતાકી પૂર્ણ પર્યાય હો તો વહાં શુદ્ધતામેં કમી હો ગઈ, એસા નહીં. સમજમેં આયા ?

સુનો ભાઈ ! એક બાર કહા થા. “ગગનમંડલમેં ગૌઆ વિહાણી વસુધા દૂધ જમાયા” વસુધા યાની શ્રોતા. શ્રોતાકે કાનમેં ગૌઆ – ગૌ યાની વાણી. “ગગનમંડલમેં ગૌઆ વિહાણી, વસુધા દૂધ જમાયા, સૌ રે સુનો રે ભાઈ, વલોશું વલોવે” મંથન નહીં કરતે ? “સૌ રે સુનો રે ભાઈ, વલોશું વલોવે કોઈ, તત્ત્વ અમૃત કોઈ પાયે, અબધુ જોગી રે ગુરુ મેરા, એમ પદકા કરે રે નિવેડા” આહાહા ! ભગવાનકે શ્રીમુખસે અમૃતકી વાણી (નિકલી). વહાં ‘ગૌ’ કા અર્થ ગાય લિયા હૈ. ‘ગૌ’ કા અર્થ વાણી હોતા હૈ. ભગવાનકી વાણી – ઓમ ધ્વનિ આકાશમેં નિકલી. આહાહા ! રેડિયોમેં આકાશવાણી નહીં કહતે હું ? આહાહા ! વહ તો સબ ઠીક હૈ. યહ તો ભગવાન ૫૦૦ ધનુષ ઉપર (બિરાજતે હું). સમવસરણમેં ઓમ ધ્વનિ નિકલી. ઓમ ધ્વનિ (માને) આવાજ. ગૌ નામ આવાજ. “ગગનમંડલમેં ગૌઆ વિહાણી, વસુધા દૂધ જમાયા, સુગુરા હોવે સો ભર-ભર પીએ પ્યારા, નુગુરા જાય રે પ્યાસા, અવધુ સો જોગી રે ગુરુ મેરા” આહાહા !

યહાં કહતે હું કિ, એકબાર સુન તો સહી નાથ ! તૂ કેસી ચીજ હૈ ? કિ તેરી ચીજમેં કભી કમ-બઢ નહીં હોતી. આહાહા ! સિદ્ધપદકી પર્યાય હો (ઓર) ઇતની પૂર્ણ શુદ્ધતા આઈ તો અંદર શુદ્ધતામેં કમી હુઈ, એસા નહીં (હૈ). આહાહા ! ઓર ચૌથે ગુણસ્થાનમેં સમ્યગ્દર્શનકી નિર્મલ પર્યાય આયી (ઓર) પૂર્ણ પર્યાય નહીં (આયી) તો શુદ્ધતામેં વિશેષ શુદ્ધતા હૈ, એસા નહીં હૈ. વહ તો હૈ સો હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? પ્રભુકા માર્ગ (અલૌકિક હૈ) ભાઈ ! અભી તો બાહરમેં પૂજા, ભક્તિ કરના (એસા હો ગયા હૈ). (એસે) ભાવ હોતે હું, પરંતુ વહ તો શુભ (ભાવ) હૈ. ઉસકી બાત તો યહાં હૈ હી નહીં. શક્તિમેં ઉસકા વર્ણન હી નહીં (હૈ). શક્તિમેં તો શક્તિ જો હૈ, વહ દ્રવ્ય-ગુણમેં તો અનાદિસે વ્યાપ્ત હૈ. પરંતુ શક્તિકી જબ પ્રતીતિ હોતી હૈ તબ પર્યાયમેં શક્તિકા કાર્ય આતા હૈ, આહાહા !

કહતે હું કિ, અંદર જો શક્તિકા નિર્મલ પર્યાય(રૂપી) કાર્ય આયા (વહ ભલે હી) અલ્પ નિર્મલ પર્યાય હૈ, તો વહાં શુદ્ધતા બહુત હૈ કિ નહીં ? (તો કહતે હું) નહીં. વહાં (સ્વરૂપમેં)

तो परिपूर्णा शुद्धता है. ऐसा है. आडाडा ! ऐसा प्रभुका मार्ग है ! भाई ! आडाडा ! 'कम' अर्थात् पर्यायमें शुद्धता बहुत बढ गयी तो अंदर (स्वभावमें) शुद्धता अल्प हो गयी, ऐसा नहीं. और 'बढ' अर्थात् पर्यायमें अल्प शुद्धता हुई तो वहां अंदरमें (स्वभावमें) शुद्धता बहुत है, ऐसा नहीं. आडाडा ! ऐसी भगवानकी बात है, भाई !

“**जो कमबढ नहि होता...**” (अर्थात्) कमी और वृद्धि कमी नहीं होती. आडाडा ! समझमें आया ? “... **ऐसे स्वरूपमें नियतस्वरूप (-निश्चितया यथावत् रहनेरूप...)**” आडाडा ! भगवान ध्रुव स्वरूपे, ज्ञायकभावरूपे यथास्थित रहता है. द्रव्य स्वभावमें कोई कम-बढ हो, ऐसा कमी नहीं होता. आडाडा ! अक बात. यह जो कमबढ रहित नियतस्वरूप शक्तिका उसकी पर्यायमें परिष्मन तो होता है, समझमें आया ? तो पर्यायमें भी कमबढ नहीं, ऐसा लागू पडे कि नहीं ? आडाडा ! यहां तो कहते हैं कि, पर्यायमें भी कमबढ नहीं. क्योंकि (पर्यायमें) भले अल्प शुद्धता हो परंतु वह त्रिकावीको सिद्ध करती है. अक पर्याय जो कम कर दो तो त्रिकावी सिद्ध नहीं होता. समझमें आया ? यहां अशुद्धताकी बात है ही नहीं. अपनी पर्यायमें अशुद्धताका ज्ञान अपनेसे होता है, ऐसी कमवर्ती पर्यायमें त्यागउपादान शक्तिका परिष्मन होता है. तो वहां कहते हैं कि, वस्तु जो है यह त्याग उपादान रहित है. परका त्याग करना और परका ग्रहण करना यह तो स्वरूपमें है ही नहीं. परंतु रागका त्याग करना कि ग्रहण करना वह (भी) स्वरूपमें नहीं है. आडाडा ! निर्मल पर्यायका प्रगट होना और उसका त्याग होना और नयी पर्यायका उत्पन्न होना यह (उसमें) है. परंतु यह जो निर्मल पर्याय हुई वह भी कमबढ बिनाकी पर्याय है. धीरेसे समझना, यह तो वीतरागका मार्ग है. आडाडा ! गणधरों और संतों उसका अर्थ करते होंगे (वह कैसा होगा) ! आडाडा ! यह बात सर्वज्ञके अलावा और कहीं नहीं है. कोई बात तो ऐसी करे कि, शुद्ध ऐसा है और वैसा है परंतु शुद्ध यीज क्या है ? (उसकी कुछ ખબर नहीं होती).

यह (वस्तु) पूर्ण शुद्ध है उसमेंसे शुद्धता आती है तो शुद्धता थोड़ी – अपूर्ण आयी इसलिये वहां अंदरमें (स्वभावमें) शुद्धता विशेष है और शुद्धता बहुत आयी तो वहां (स्वरूपमें) शुद्धता कम है, ऐसा है (क्या) ? आडाडा ! कमबढ रहित (स्वरूप है). है ? “**कमबढ नहीं होता...**” कमी और वृद्धि नहीं होती. अब तो यहां पर्यायमें लेना है. समझमें आया ? जो शक्ति – गुण है यह द्रव्यमें व्यापक है. अंदरमें शक्तिमें शक्ति है. अब जब उसका भान हुआ, उसकी यहां बात है. भान हुआ तो कमबढ बिनाकी शक्ति है उसका परिष्मन तो आया, तो जैसे गुणमें और द्रव्यमें कमबढ नहीं है वैसे परिष्मन – पर्यायमें कमबढ नहीं है, ऐसा (परिष्मन) आता है. आडाडा ! समझमें आया ?

अरे..! परमात्माका विरह हो गया और भगवानकी वाणी – समयसार रह गयी. आडाडा!

साक्षात् शब्दब्रह्म ! वाणी शब्दब्रह्म (है). आडाडा ! अरेरे..! (लोग) विरोध करे, प्रभु ! तुझे भबर नहीं. लोग ऐसा मानते हैं (और कइते हैं), ऐसा साहित्य हो और रागका कर्ता (न माने) और रागसे लाभ न माने (तो) वह साहित्य भराभ है. अरे प्रभु ! ऐसा जघडा है न ? अरेरे...! क्या करते हो ? भगवान !

तेरी यीज कमभठ बिनाकी है, नाथ ! वास्तवमें तो पर्यायका ग्रहण करना और पर्यायका छोडना यह भी द्रव्यमें नहीं है. परका त्याग करना और ग्रहण करना – ऐसे मानना यह मिथ्यात्व है. आडाडा ! क्योंकि आत्माने कहां उस वस्तुको पकडा है ? स्त्री-कुटुंबको पकडा है तो (उसे) छोडे ?

श्रोता : कथंयित् पकडा है.

पू. गुरुदेवश्री : धूलमें भी नहीं पकडा है. सर्वथा नहीं पकडा है, ऐसा कइते हैं. वह तो स्पष्ट करवाते हैं. समजमें आया ? आडाडा ! भगवान अनंत आनंदका नाथ, प्रभु ! उसकी शक्तिमें और स्वभावमें कमभठ होता नहीं. परंतु जब उसकी परिणति हो (तो उसमें भी कमभठ नहीं होता). क्योंकि यह (शक्ति) तो द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्याप्त हैं. समजे ? अनंत गुणमें भी यह (शक्ति) निमित्त है. और अनंत गुणमें भी इस शक्तिका रूप है. अनंत शक्तिका इस शक्तिकी पर्यायमें भी रूप है. आडाडा ! समजमें आया ? तब यहां कइते हैं कि, भले वस्तुमें तो कमभठ नहीं (हो) परंतु जब उसका पर्यायपने परिणमन होता है तो उसमें भी कमभठ नहीं (होता). ऐसा लागू पडता है. आडाडा ! अर्थात् वह (पर्याय) अपूर्ण शुद्ध है और पूर्ण शुद्ध है, ऐसा भेद भले हो परंतु वह अपूर्ण शुद्ध पर्याय है वह सारे द्रव्यको सिद्ध करती है (कि) (द्रव्यमें शुद्धता) भराभर पूरी है. अक पर्यायको निकाल दो तो अनंत पर्यायका पिंड पूर्ण शुद्ध द्रव्य सिद्ध नहीं होता. समजमें आया ? समजमें आये उतना समजे, भाई ! यह तो गजभ बात है ! आडाडा !

अक के बाद अक शक्तिका वर्णन अंदर सूक्ष्म होते जाता है. इसके बाद अगुरुलघु (शक्ति) लेंगे. आडाडा ! यह तो प्यालमें आवे ऐसी बात है. अगुरुलघुत्व (शक्ति) तो प्यालमें न आवे ऐसी बात तो बादमें कहेंगे. समजमें आया ? क्योंकि वह तो केवली जान सके. श्रुतज्ञानमें छतनी ताकत नहीं है कि, अगुरुलघुकी पर्याय और षट्गुणानिवृद्धिको जान सके. आडाडा ! प्रतीत कर सके. समजमें आया ? आडाडा !

वस्तु पूर्ण (शुद्ध है). 'भरित अवस्थ' शब्द पडा है न ? भाई ! भंघ अधिकारमें 'भंघ विनाशार्थम्' यह भावना करना. 'निर्विकल्पो अहं, भरितावस्थो अहं' में अभेद हुं और भरित अवस्थ (हुं). 'अवस्थ' यानी पर्याय नहीं. भरित अवस्थ – निश्चय शक्तिसे भरपूर भरा हुं. आडाडा ! ऐसी अनंत शक्तिसे पूर्ण भरा हुं. (भंघके) विनाशार्थ – नाश करनेको विशेष भावना – भास भावना कइनेमें आती है. कैसी भावना करना ? 'सहजशुद्धज्ञानन्दैक

स्वभावोडहंस्वाभाविक शुद्ध ज्ञानानंद स्वभावसे परिपूर्ण हुं. आहाहा ! समझमें आया ?

वह तो एक बार कहा था न ? संवत् ६४की सालमें १८ सालकी उम्रमें लड़क्य, वडोदरा, बंबई, अहमदाबाद माव लेने हम जाते थे. वडोदरा हम माव लेने गये थे. वहां सति अनसुयाका नाटक (यल रहा था). लड़क्यके किनारे नर्मदा (नदी) है. (वहां) दो बहने थी. उनके नाम परसे नर्मदा नाम पडा है. हम अनसुयाका नाटक देखनेको गये थे. अनसुयाबाईको पुत्र नहीं था. (और मृत्युके बाद) बाई स्वर्गमें जाती थी. वे लोग ऐसा कहते हैं न ? 'अपुत्र गति नास्ति'. पुत्र न हो उसे (स्वर्ग) गति नहीं मिलती. क्योंकि पुत्र हो तो श्राद्ध करे. वहां ऐसी सब बातें हैं. (बाईको कहते हैं), स्वर्ग नहीं मिलेगा, पुत्र होना चाहिए. (बाई कहती है), (तो) क्या करना ? (उसे कहते हैं), नीचे जाओ और जो मिले उससे शादी करो. नीचे एक अंधा ब्रह्मण था. (उस) अंधे ब्राह्मणके साथ शादी की. उसे पुत्र हुआ. बाई (पुत्रको) जूलाती थी (और गाती थी), 'बेटा ! तू शुद्धोसि, निर्विकल्पोसी, उदासीनोसी' ये तीन शब्द याद रह गये हैं. बाकी तो वह बहुत शब्द बोलती थी. वह बोलती थी, 'बेटा ! तुम शुद्ध हो, निर्विकल्प हो, उदासीन हो' आहाहा ! जो बात नाटकमें थी वह (बात) अभी संप्रदायमें रही नहीं. आहाहा ! वे तो रागका कर्ता है और रागसे ऐसा होता है, (ऐसा मानते हैं). अरे प्रभु ! तुम क्या करते हो ? आहाहा ! समझमें आया ?

यहां तो कहते हैं कि, सहज स्वाभाविक शुद्ध ज्ञानानंद एक स्वभाव (है). यहां (यलते विषयमें) एक कहा न ? कमबठ नहीं (ऐसा) एकदूप स्वभाव. उसमें कभी (वृद्धि) त्रिकाल स्वभावमें कभी होती नहीं. 'निर्विकल्पो अहं' मैं अवेद हुं, उदासीन हुं, मेरा आसन परसे भिन्न है. ज्ञेयसे मेरा आसन – मेरी स्थिति भिन्न है. – परसे मैं उदास हुं.

“निरञ्जननिजशुद्धात्म सम्यक्श्रद्धानज्ञानानुष्ठानरूप निश्चय रत्नत्रयात्मक निर्विकल्प समाधिसंजात-वीतरागसहजानन्दरूपसुखानुभूतिमात्रलक्षणेन” “निरंजन जो निज- शुद्धात्मा उसके समीचीन श्रद्धान, ज्ञान और अनुष्ठान-रूप जो निश्चय-रत्नत्रय-स्वरूप निर्विकल्प समाधिसे उत्पन्न हुआ जो वीतराग सहजानंदरूप-सुख उसकी अनुभूतिमात्र ही है लक्षण जिसका जैसे..)” सुखानुभूति लक्षणमें जाननेमें आता है. आहाहा ! व्यवहारसे, रागसे और निमित्तसे जाननेमें आता है, ऐसी चीज नहीं है. समझमें आया ? “स्वसंवेदनके द्वारा संवेद्य है...” “स्वसंवेदनज्ञानेन संवेद्यो गम्यः प्राप्यो भरितावस्थोऽहं...” यह शब्द है – ‘भरितअवस्थ’ पूर्ण...पूर्ण...पूर्ण...पूर्ण... ज्ञानरस, आनंदरस, श्रद्धारस, शांतरस, चारित्ररस, स्वच्छतारस, प्रभुतारस इन सब रससे भरित (अर्थात्) पूर्ण हुं. आहाहा ! समझमें आया ? धर्मीको यह भावना करनी है. ऐसा कहते हैं. आहाहा ! ऐसी बारह भावना करते हुं ये यह भावना (करनी). आहाहा ! “राग, द्वेष, मोह, क्रोध, मान, माया, लोभ, एवं पंचेन्द्रियोंके विषयोंमें होने वाला मन, वचन, और कर्माका व्यापार (से रहित हुं)”. द्रव्यकर्म, भावकर्म,

नोऽकर्मसे मैं रहित हूँ. ४७ कर्म, नोऽकर्म = शरीर, वाणी, भावकर्म = दया, दानके विकल्प आदिसे मैं शून्य हूँ. अपने स्वभावसे भरित अवस्थ हूँ. परसे मैं शून्य हूँ. समझमें आया ?

प्रवचनसारमें आता है. वहां सप्तभंगी ली है. अपनेसे अशून्य हूँ. परसे शून्य हूँ. अपनेसे अशून्य हूँ यानी पूर्ण हूँ. परसे शून्य हूँ. —राग आदिसे मैं त्रिकाल शून्य हूँ. आहाहा ! “ख्यातिपूजालाभदृष्टश्रुतानुभूतभोगाकाङ्क्षारूपनिदानमायामिथ्याशल्यत्रयादि सर्वविभाव परिणामरहितः। शून्योऽहं।” (प्याति लाभ, पूजा एवं देभे गये, सुने गये तथा अनुभवमें लाये गये जो भोग उनकी आकांक्षा-रूप निदान शल्य, माया-शल्य और मिथ्या-शल्य इन तीनों शल्योंसे रहित तथा और भी सब प्रकारके विभाव परिणामोंसे रहित हूँ, शून्य हूँ) (मैं) परसे त्रिकाल शून्य हूँ. आहाहा ! संसारका जो उदयभाव है उससे तो मैं शून्य हूँ. आहाहा ! दूसरे लोग कहते हैं कि, उदय भावसे कल्याण हो, ऐसी भावना कर. आहाहा ! “जगत्त्रये” — तीन लोकमें तीनोंकालमें सर्व जव संपूर्ण स्वभावसे भरा पडा है, ऐसी भावना कर. सर्व (जव) भगवंत स्वरूप है. आहाहा !

निगोदके जव भी संपूर्ण स्वभावसे भरा पडा पूर्ण है. भले एक शरीरमें अनंत जव (है). परंतु एक-एक जव पूर्ण स्वभावसे भरा पडा है, यह कौन माने ? आहाहा ! दया पावनेके लिये निगोद कडा है, ऐसा नहीं है. अनंत जव है — इसका ज्ञान ग्रहण करनेके लिये कडा है. आहाहा ! समझमें आया ?

यहां कहते हैं कि, “सर्वे जीवाः जगत्त्रये” (अर्थात्) तीन लोकमें. “कालत्रयेपिः” (अर्थात्) तीनों कालमें. “मनोवचनकायैः कृतकारितानुभूतैश्च शुद्धनिश्चयेन, तथा सर्वे जीवाः” आहाहा ! ‘इति निरन्तरं भावनाकर्तव्याः’ यह भावना निरंतर करनी, ऐसा कहते हैं. ऐसा मार्ग है.

यहां (शक्तिके चलते विषयमें) कहां लागू हुआ ? कमल नहीं (ऐसी) पूर्ण वस्तु (है). सब — सर्व आत्मा भगवान (है). आहाहा ! वेदांत कहते हैं कि, सर्व व्यापक एक आत्मा है, ऐसा नहीं है. परंतु सारे लोकमें भगवान ही बिराजते हैं. सब भगवान आत्मा भिन्न-भिन्न हैं. पर्यायमें अशुद्धता हो कि शुद्धता हो, उसका लक्ष छोड दे. स्वरूपसे तो भगवान निर्विकल्प शुद्ध चिदानंद भरित अवस्थ (है). आहाहा ! निगोदके एक शरीरमें अनंत जव है. एक जवके साथ कर्मण और तैजस दो शरीर है. फिर भी वह आत्मा तो परिपूर्ण ध्रुव स्वरूप भरित अवस्थ है. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसे यहां कहते हैं कि, पूर्ण वस्तु कमल बिनाकी चीज है. यह तो वीतरागकी वाणी है, भापू ! यह कोई कथा-वार्ता नहीं है. एक-एक शब्दमें कितना गूढ भरा है ! आहाहा !

“जो कमल नहीं होता ऐसे स्वरूपमें नियतस्वरूप (—निश्चितया यथावत् रहनेरूप)” जैसा है वैसा त्रिकालरूप भगवान आत्मा (रहता है). आहाहा ! वह “... त्यागउपादान

शून्यत्व शक्ति” यह शक्ति ऐसी है कि, रागका त्याग करे या रागका ग्रहण करे, उससे यह चीज शून्य है. आहाहा ! ऐसी बात है !

समयसार उ४ गाथामें आया न ? भाई ! कि, आत्मामें रागका त्याग करना यह नाममात्र है. परमार्थसे आत्मा रागका त्याग (कर्ता) भी नहीं. आहाहा ! वह तो स्वरूपकी स्थिरता हुई तो रागकी उत्पत्ति नहीं हुई तो रागका त्याग किया, ऐसा व्यवहारसे कलनेमें आया है. समझमें आया ? आहाहा ! पयभाषण-त्याग-चारित्र उसको कहते हैं कि, स्वरूप परिपूर्ण भरा है, उसकी प्रतीति सहित स्वरूपमें स्थिर होना. उस स्थिरतामें चारित्र गुण रागका त्याग कर्ता है, यह नाममात्र है. परमार्थसे रागका त्याग भी आत्माको लागू नहीं पड़ता, ऐसा कहते हैं. आहाहा ! अरे..! जैनमें जन्म हुआ उसे भी यह अभ्यास नहीं. घरमें मूड़ी क्या है ? (उसकी ખબર नहीं). पिताजीकी मूड़ी हो तो संभाले. कुंथीका दृष्टांत लिया था न ? यह कुंथी क्या है (यह मालूम नहीं है). आहाहा !

(यहां) कहते हैं कि, पर्यायमें भी त्यागउपादानशून्यत्व शक्तिका परिणामन होता है. कमबढ नहीं, ऐसा पर्यायमें लागू पड़ता है, भाई ! आहाहा ! धीरेसे समझना, नहीं समझमें आवे तो इस संबंधित रात्रिको प्रश्न करना. आहाहा ! यहां तो प्रभुमें पूर्ण...पूर्ण...पूर्ण... परके त्यागग्रहणसे शून्य ऐसी अेक शक्ति है, गुण है, स्वभाव है. इस स्वभावकी जहां प्रतीति हुई, स्वसन्भुज (होकर) स्वका आश्रय लेकर जहां ज्ञान हुआ तो पर्यायमें भी त्यागउपादानशून्यत्व शक्तिका परिणामन आया. यह पर्याय भी त्यागउपादानसे शून्य है. आहाहा ! क्योंकि वह अेक ही पर्याय याहे तो सम्यग्दर्शनकी शुद्ध पर्याय आयी, अगर उसे निकाल दो तो सारा द्रव्य सिद्ध नहीं होगा. समझमें आया ? यहां शुद्ध (पर्यायकी) बात है. अशुद्ध (पर्यायकी) बात तो यहां है ही नहीं. छोटी से छोटी सम्यग्दर्शनकी शुद्ध पर्याय हो तो भी वह पर्याय पूर्ण द्रव्यको सिद्ध करती है, साबित करती है. इसलिये पर्यायको पूर्ण कलनेमें आती है. ऐसी बातें हैं, भाई ! आहाहा !

अरेरे...! जैन परमेश्वरके संप्रदायमें जन्म हुआ और उसे जैन परमेश्वर क्या है ? और कौन जैन होंगे ? (उसकी ખબर नहीं). जैन कोई संप्रदाय नहीं है. जैन कोई कल्पनासे षडा किया (हो) ऐसा मार्ग नहीं है. यह तो वस्तुका (स्वरूप है). ‘जैन सो हि है आत्मा, अन्य सोहि है कर्म, अेही वचनसे समझ ले, जिन प्रवचनका मर्म’ आहाहा !

ज्ञायकभाव परिपूर्ण प्रभु ! उसमें अेक शक्ति ऐसी है कि, प्रत्येक गुणकी पर्याय(में) पूर्ण भरित अवस्थाका रूप उसमें आया कि नहीं ? क्या कहा समझमें आया ? ज्ञानगुणकी सम्यक् पर्याय हुई तो उसमें भी यह त्यागउपादान शक्तिका रूप तो पर्यायमें है ऐसा उसमें भी रूप है. आहाहा ! थोड़ी सूक्ष्म बात है. भाई ! समझमें आया ? थोड़ी सूक्ष्म ऐसा कहते हैं ! आहाहा ! संतों दिगंबर मुनिओं उसका स्पष्टीकरण करते हैं, ओहोहो ! आत्मा

अैसे हथेदीमें दिखलाते हैं. अैसे आत्मा बताया है. आहाहा !

प्रत्येक गुणकी पर्यायमें भी त्यागउपादानशून्यत्व शक्तिका रूप है. आहाहा ! ज्ञानकी पर्याय भी रागका त्याग करे कि रागका ग्रहण करे, अैसे पर्यायमें नहीं है. ज्ञानकी पर्यायमें नहीं है, अैसे श्रद्धाकी पर्यायमें मिथ्यात्वका त्याग करे, अैसे श्रद्धाकी पर्यायमें नहीं है. आहाहा ! अैसे यारित्रकी पर्यायमें रागका अभाव करे अैसे यारित्रकी पर्यायमें नहीं है. आनंदकी पर्याय प्रगट हुँ उसमें दुःखका त्याग करे, अैसे नहीं है. आहाहा ! अैसे मार्ग ! दिगंबर संतोंके अलावा कहीं यह जरना नहीं है. अमृतके जरने बहे हैं. आहाहा ! समजमें आया ? भगवान ! तुम परिपूर्णा हो न, नाथ ! और परिपूर्णासे पर्याय हुँ यह भी परिपूर्णा है, (अैसे) यहां तो कहते हैं. आहाहा ! (लेकिन पर्याय) अल्प है न ? भले अल्प हो, पूर्णा (केवल) ज्ञान हो, आहाहा ! क्षयोपशम समकितकी पर्याय हो, क्षायिक (समकित)की पर्याय हो, क्षयोपशमज्ञानकी पर्याय हो, क्षायिक केवलज्ञानकी पर्याय हो, यारित्रकी अल्प निर्मल पर्याय हो और यारित्रकी पूर्णा पर्याय १४वे (गुणस्थानमें) आभिरकी हो, वह भी अेक-अेक पर्याय पूर्णाको (स्वभावको) सिद्ध करती है.

वह आता है न ? नय उपनयका समुदाय द्रव्य है. धवलमें संस्कृतमें आता है. नय और उपनयका समुदाय वह भगवान आत्मा (है). वह थोड़ी सूक्ष्म बात है. आहाहा ! अैसी बात ! बापू ! तेरे घरकी बातें बड़ी हैं न, भाई ! तू कितना बडा है ! कि तेरी पर्यायमें शुद्धता हो तो भी तेरी महानतामें कोई कमी हो गई, अैसे नहीं है. आहाहा !

त्यागउपादानशून्यत्व शक्ति – ग्रहण यानी उपादान (और) त्याग यानी त्याग. आत्मा ग्रहण और त्यागसे शून्य है. आहाहा ! पर्यायमें त्यागउपादानशून्यत्व शक्तिका जो परिणामन आया तो यह शक्ति द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्यापक हो गई. और तीनोंमें व्यापक हो गई तो अनंत शक्तिकी पर्यायमें भी व्यापक हो गई. समजमें आया ? आहाहा ! गजबका दरिया है बडा ! यह दरिया स्वयंभूरमण समुद्र तो साधारण असंभ्य योजनका (है). यह तो अनंत भावोंसे भरा है. आहाहा !

‘अनंत भाव भरेली जिनवाणी’ श्रीमद्में आता है कि नहीं ? ‘अनंत अनंत भाव (भेदही) भरेली वाणी, ते जिनवाणी जाणी तेणे जाणी छे’ बापू ! समजमें आता है कुछ ? देओ ! कौनसी शक्ति हुँ ? १६वीं (शक्ति हुँ). आपकी शिक्षण शिबिरका १६वां दिन यह रहा है. इसमें बहुत (भरा) है. फिर भी थोडा-थोडा शक्ति अनुसार कहा. थोडा लिखा बहुत जानना और शोभा बढ़ानेको तुम आना अैसे आता है न ? वैसे यहां थोडा कहनेसे बहुत जानना और अपने आत्माकी शोभा बढ़ाना.

(अब) १७वीं (शक्ति). कमसर दिया है. (दोगोंको) यह बात बैठनी (कठिन पडे). यहां व्यवहारकी बात तो की ही नहीं है. व्यवहार – रागका ज्ञान करते हैं, यह भी व्यवहार

है. रागका ज्ञान तो अपनी पर्यायसे अपने कारणसे होता है. क्या करें ? लोगोंको लडकाते हैं (कि), अकेली निश्चयकी बात है, निश्चयात्मास है, अंकांत (है). अरे प्रभु ! सुन तो सही, भाई ! सम्यक् अंकांतकी बात यह है. सम्यक् अंकांतकी ही बात है और सम्यक् अंकांतका ज्ञान हो तो उसको ही पर्यायमें अपूर्णता आदिका ज्ञान होता है, उसे अनेकांत कहनेमें आता है. आहाहा ! समझमें आया ? अरे...! इसमें तकरार और जघडे ! अरेरे...! रागका त्याग भी स्वप्नमें नहीं है, प्रभु ! आहाहा ! यहां तो बाहरमें परका त्याग (किया), कुटुंब, दुकान छोडे उसने संसार छोडा. (ऐसा मानते हैं). अरे..! सुन तो सही, प्रभु ! मैंने उसे छोडा यह मान्यता ही मिथ्यात्व है. आहाहा ! यह तो सम्यग्दर्शन पानेकी थीज है. समझमें आया ?

अब १७वीं (शक्ति). “षट्स्थानपतित...” यह बहुत सूक्ष्म (है). (अभी यही) उससे भी (अधिक) सूक्ष्म (है). क्या कहते हैं ? कि आत्मामें जो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और केवलज्ञान आदि पर्याय है, उस पर्यायमें अगुरुलघुस्वभाव ऐसी कोई थीज है. वैसे तो अगुरुलघु स्वभाव तो अनंत गुणमें है. अगुरुलघुस्वभाव – शक्ति अनंत गुणमें नहीं है. परंतु अगुरुलघु स्वभावका रूप अनंत शक्तिमें है. ज्ञानकी पर्यायमें भी अगुरुलघुपना है. दर्शनकी पर्यायमें अगुरुलघुपना है. एक समयमें षट्गुणवृद्धि होती है और षट्गुण हानि (होती है), (दोनोंका) समय एक (है). एक समयमें षट्गुणहानि और षट्गुण वृद्धि – यह कोई केवली गम्य बात है. श्रुतज्ञानमें (सब) समा जाय तो केवलज्ञानकी महिमा क्या ? आहाहा !

केवलज्ञानकी पर्यायमें भी एक समयमें षट्गुणहानिवृद्धि होती है. केवलज्ञान तो है ऐसा है. तीनकाल-तीनलोकको जानता है, तो हानिके समय घट गया और वृद्धिके समय बढ़ गया, ऐसा नहीं है. कोई ऐसा पर्यायका स्वभाव है. जो सर्वज्ञने कडा, परमागमने कडा उस परमागमसे मानना चाहिए. पंथास्तिकायमें यह बात है. आगमसे मानना चाहिए, बापू ! आहाहा ! अभी तो त्यागउपादान शक्तिकी बातमें तो पर्यायमें पूर्णता मानना कठिन (पडता है). यहां तो एक समयकी पर्यायमें (याहे) क्षायिक समकितकी पर्याय हो तो भी अगुरुलघु (शक्तिके कारण) पर्यायमें षट्गुणहानि (वृद्धि होती है). षट्गुणहानि अर्थात् अनंतगुण हानि, असंख्यगुण हानि, संख्यगुणभाग हानि अनंतभाग हानि, असंख्यभाग हानि, संख्यभाग हानि – ऐसे छ बोले हैं न ? (यह लेना).

“षट्स्थान पतित...” षट्स्थानपतित (अर्थात्) छ स्थानके आश्रयसे. “वृद्धिहानिरूपसे परिणामित...” आहाहा ! पहलेमें तो द्रव्य, गुण, पर्यायमें कमबढ नहीं है, ऐसा कडा था. यहां कहते हैं कि, एक-एक गुणकी, एक-एक पर्यायमें ऐसी कोई गंभीर वस्तु है कि, एक समयमें ज्ञानकी पर्यायमें, दर्शनकी पर्यायमें, वीर्यकी पर्यायमें अनंत यतुष्टय प्रगट हुआ हो तो भी; अरे ! सिद्धकी पर्यायमें (भी) षट्गुणहानिवृद्धि (होती है). आहाहा ! भगवानने पर्यायमें ऐसा (ही) कोई स्वभाव देखा है ! तो आगमसे मानना. परसे कोई प्यालमें आ

जाय, ऐसी थीज नहीं है. आहाहा ! समजमें आया ? केवलज्ञानकी पर्यायमें षट्गुणहानि – हानि तो केवलज्ञान (कम हो जाता है ?) केवलज्ञानमें षट्गुण वृद्धि – तो केवलज्ञान विशेष स्वरूप होता है ? आहाहा !

द्रव्यकी पर्यायका ऐसा कोई स्वभाव है कि, षट्गुणहानि (होती है). अर्थात् अनंतभाग हानि, असंख्यभाग हानि, संख्यभाग हानि, समजमें आया ? जैसे अनंतगुण वृद्धि, असंख्यगुण वृद्धि, संख्यगुण वृद्धि (होती है). आहाहा ! षट्स्थान आश्रयसे “वृद्धिहानिरूपसे परिणामित...” वर्तमान परिणामित पर्यायकी (बात है). वर्तमान प्रत्येक गुणकी परिणामित पर्यायमें षट्गुणहानिवृद्धिरूप पर्याय होती है. (यह) भगवान गम्य है. आहाहा ! उपर त्यागउपादानशून्यत्व शक्तिमें तो थोड़ी भ्यालमें आये ऐसी बात थी. आहाहा !

यहां कलते हैं, “षट्स्थानपतित वृद्धिहानिरूपसे परिणामित स्वरूप-प्रतिष्ठत्वका कारणरूप...” देओ ! उसमें स्वरूपकी प्रतिष्ठा है. षट्गुणहानिवृद्धि हो, यह स्वरूपकी प्रतिष्ठा है. स्वरूपका स्वरूप ऐसा है. आहाहा ! छ बोल समजे ? अनंतगुण हानि, असंख्यगुण हानि (और) संख्यगुण हानि. जैसे अनंतभाग हानि, असंख्यभाग हानि (और) संख्यभाग हानि. ये छ बोल हुअे. अक समयमें अक साथ छ रूप (हैं).

श्रोता : छ मेंसे अक (समयमें) अक रूप हो, (ऐसा नहीं) ?

पू. गुरुदेवश्री : नहीं, छ रूप अक साथ हैं. अक समयमें छ रूप (है). अक समयमें छ रूप तो हानिका था. परंतु उसी समय अनंतगुण वृद्धि, असंख्यगुण वृद्धि, संख्यगुण वृद्धि, अनंतभाग वृद्धि, असंख्यभाग वृद्धि, (और) संख्यभाग वृद्धि, अक ही समयमें (है). १२ बोल अक समयमें (है). यह तो पहले (ही) कहा था अगम्य बात है. समजमें आया ?

प्रत्येक गुणकी अक समयकी पर्यायमें षट्गुणहानि और षट्गुणवृद्धि (होती है). समय अक (है). अक समयमें षट्गुणहानि और दूसरे समयमें षट्गुणवृद्धि, ऐसी बात नहीं है. अक समयमें भगवान सर्वज्ञ परमेश्वरने जैसा देआ है, ऐसा कहा है. यह सब श्रुतज्ञानमें भ्यालमें आ जाय तो तो केवलज्ञानकी महिमा क्या ? विशेष कहेंगे....



प्रवचन नं. १७

शक्ति-१६, १७, १८ - ता. २७-०८-१९७७

अन्यूनातिरिक्तस्वरूपनियतत्वरूपा त्यागोपादानशून्यत्वशक्तिः ॥१६॥
 षट्स्थानपतितवृद्धिहानिपरिणतस्वरूपप्रतिष्ठत्वकारणविशिष्टगुणात्मिका
 अगुरुलघुत्वशक्तिः ॥१७॥
 क्रमाक्रमवृत्तवृत्तित्वलक्षणा उत्पादव्ययध्रुवत्वशक्तिः ॥१८॥

समयसार शक्तिका अधिकार यत्नता है. शक्ति अर्थात् आत्मा जो सत् वस्तु त्रिकाली अविनाशी है उसके सत्का सत्त्व / शक्ति. द्रव्य है (यह) गुणी है और शक्ति है (यह) गुण है. उस गुणकी व्याख्या है. शक्ति कडो, गुण कडो, सत् उसका सत्त्व कडो, सत् उसका स्वभाव कडो - उस शक्तिका यह वर्णन है. सूक्ष्म है.

पहले १६वीं शक्ति आयी. “जो कमबढ नहीं होता...” यहां तो शक्तिकी बात है. परंतु उस शक्तिकी बातमें पहले - शुरुआतमें वह लिया है कि, कमरूप और अकमरूप अनंत धर्म समूह जो कुछ जितना लक्षित होता है, यह सब वास्तवमें एक आत्मा है. यह पहला बोध है.

क्या कडा ? कि जो अनंत शक्ति है, वह अकम(रूप) है और शक्तिका परिणामन जो है वह कम(रूप) है. समझमें आया ? यहां अशुद्धता कममें नहीं लेना. यहां तो अकेली शुद्धताकी ही बात है. अशुद्धताका ज्ञान होता है कि अपनी पर्यायमें अपने से राग है. (राग है तो उसका ज्ञान होता है, ऐसा नहीं परंतु) अपनी पर्यायमें उस समय स्वपर प्रकाशक सामर्थ्य है तो अपने से स्वपर प्रकाशक पर्याय होती है. वह १२ वीं गाथामें कडा कि व्यवहार जाननेमें आता हुआ प्रयोजनवान है. रागका जानना ऐसा कडना यह भी व्यवहार है. आहाहा ! समझमें आया ?

प्रथम ऐसा लिया है कि, कमवर्ती और अकमवर्तीरूप अनंत धर्म समूह, तो यहां है तो कमबढकी शक्ति, कमबढ नहीं ऐसी त्रिकाली शक्ति, परंतु होती तो अकम है. परंतु यहां

उसका कम भी लेना पड़ेगा. आहाहा ! समझमें आया ? तो कहते हैं कि “कमबढ नहीं होता जैसे स्वरूपमें नियतस्वरूप (-निश्चिततया यथावत रहनेरूप) त्यागोपादानशून्यत्वशक्ति” अर्थात् परका त्याग और परका ग्रहण तो उसकी पर्यायमें है नहीं और रागका ग्रहण और त्याग वह भी नहीं. समझमें आया ? क्योंकि रागका त्याग वह तो नाममात्र है. यह (समयसारकी) उ४ वीं गाथामें आया है.

यहां तो पर्यायमें शुद्धता अल्प हो और शुद्धता विशेष हो (किर भी) वह त्यागोपादान शून्यत्व शक्ति है. आहाहा ! शक्ति तो त्रिकाल है. परंतु शक्तिका परिणामन होता है उस पर्यायमें भी त्यागोपादान शून्यत्व(रूप) परिणामन होता है. समझमें आया ? यहां तो कहा कि, कमबढ नहीं होता जैसे स्वरूपमें नियतस्वरूप त्यागोपादान शून्यत्व शक्ति, आहाहा ! यहां से तो शक्तिवान और शक्तिका भेद भी निकालना है. समझमें आया ? वर्णन शक्तिका है परंतु शक्ति और शक्तिवान यह भेद भी व्यवहार है.

शक्तिवान जो चीज है (उसकी) शक्तिका ज्ञान करके शक्तिवानकी दृष्टि करने से (धर्म होता) है, समझमें आया ? सूक्ष्म विषय है. अलौकिक विषय है, आहाहा !

पर्यायमें रागका त्याग और रागका ग्रहण है ही नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? वह तो द्रव्य, गुण और पर्याय तीनोंमें यह त्यागोपादान (शून्यत्व) शक्ति व्यापक है, समझमें आया ?

त्यागोपादान शक्ति अनंत गुणमें व्यापक है, अनंत शक्तिमें व्यापक है - ओक बात. त्यागोपादान शक्ति अनंत गुणको निमित्त है. समझमें आया ? त्यागोपादान शक्ति (का) अनंत शक्तिमें रूप है. त्यागोपादान शक्ति (दूसरी शक्तिके) अंदरमें नहीं परंतु प्रत्येक गुणमें त्यागोपादानका रूप है. आहाहा ! मतलब क्या ? कि ज्ञान गुण जो है, उसकी जो पर्याय होती है - उसमें भी त्यागोपादान शून्यत्व पर्याय है, आहाहा ! अल्प ज्ञानका त्याग और विशेष ज्ञानकी उत्पत्ति उसमें ऐसा नहीं, ऐसा कहते हैं. सूक्ष्म है.

अनंत गुणमें त्यागोपादान शक्तिका रूप है. जैसे ज्ञानगुण है और अस्ति गुण है. अस्ति गुण है ये ज्ञान गुण से भिन्न है. किर भी अस्तिगुणका रूप ज्ञानगुणमें है अर्थात् ज्ञान ‘है’....‘है’ ऐसा अस्तित्व रूप ज्ञानमें भी है. यह अस्तित्व गुणके कारण से नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? सूक्ष्म बात (है). तत्त्वज्ञानका विषय बहुत सूक्ष्म है. प्रत्येक गुणकी पर्यायमें (त्यागोपादान शून्यत्वपना है). द्रव्य-गुणमें तो है ही (परंतु) पर्यायमें भी त्यागोपादान शून्यत्वपना है, आहाहा ! समझमें आया ? तो ये कमबढ नहीं होता जैसे स्वरूपमें नियतस्वरूप त्यागोपादान शून्यत्व शक्ति. यह तो शक्तिका वर्णन किया. परंतु यह शक्ति पर्यायमें भी आती है.

जो यह शक्ति है, ऐसा शक्तिवान और शक्तिका भेद निकालकर शक्तिवान उपर दृष्टि

પડતી હૈ તો પર્યાયમેં ભી ત્યાગઉપાદાન શૂન્યત્વકી ક્રમવર્તી પર્યાય ઉસમેં હોતી હૈ. અરે..! કઠિન શરતે. સમજમેં આયા ? ઇતની શરતે ! ઔર ત્યાગઉપાદાન શક્તિ હૈ - યહ શક્તિ હૈ યહ ધ્રુવ ઉપાદાન હૈ ઔર પર્યાયમેં જો પરિણતિ હોતી હૈ, યહ ક્ષણિક ઉપાદાન હૈ. પ્રત્યેક ગુણમેં ઐસા લેના, એક બાત. યે ત્યાગઉપાદાન શક્તિ હૈ, યહ ક્રમવર્તી પરિણમનમેં ક્રમ હોતા હૈ તો યહ શુદ્ધતાકા ક્રમ ત્યાગઉપાદાન શૂન્યત્વમેં આતા હૈ. તો ઉસમેં વ્યવહારકા અભાવ હૈ. ઉસકા નામ અનેકાંત હૈ. (ઉસમેં) રાગકા અભાવ હૈ. યહાં તો ક્રમવર્તી ઔર અક્રમવર્તી શુદ્ધકી વ્યાખ્યા હૈ.

શક્તિકા વર્ણન હૈ (ઇસમેં) દ્રવ્ય પ્રધાન કથન હૈ. યહ શક્તિકા વર્ણન દ્રવ્યદૃષ્ટિ પ્રધાન કથન હૈ. ઔર પ્રવચનસારમેં ૪૭ નય હૈ વહ જ્ઞાન પ્રધાન કથન હૈ. વહાં જ્ઞાન પ્રધાનમેં તો ઐસા લેના હૈ કિ રાગકા કર્તા ભી આત્મા હૈ, ઐસા જ્ઞાન કરતે હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ?

શ્રોતા : બેમાંથી સાચુ ક્યુ ?

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : દોનોં સચ્ચા હૈ. પરંતુ કૌનસી અપેક્ષાસે ? જહાં શક્તિ ઔર શક્તિકા સ્વભાવ ઔર સ્વભાવ (કા) ધરનેવાલા આત્મા ઉસકી દૃષ્ટિ જહાં કરાની હૈ વહાં અશુદ્ધતા હોતી નહીં. યહ શક્તિમેં અશુદ્ધ હોનેકી કોઈ શક્તિ નહીં. ઔર પરિણમનમેં જબ તક સાધકપના હૈ - તબ તક રાગ તો હૈ. તો યહ દૃષ્ટિકે સાથ જો જ્ઞાન હુઆ તો ઇસ જ્ઞાનમેં સ્વપર પ્રકાશક જાનનેકી શક્તિ હૈ. દૃષ્ટિ તો નિર્વિકલ્પ હૈ ઔર ઉસકા વિષય ભી નિર્વિકલ્પ હૈ. પરંતુ જ્ઞાનકા વિષય સ્વપર પ્રકાશક હૈ. જ્ઞાન સે જબ બાત યલે તો રાગકા પરિણમન અપનેમેં હૈ. પર્યાયમેં રાગકા કર્તા આત્મા હૈ. સમજમેં આયા ? ઔર રાગકા ભોક્તા ભી આત્મા હૈ. યહાં યે બાત નહીં લેના, આહાહા ! યહાં તો શક્તિકા વર્ણન હૈ તો શક્તિકા પરિણમન હોતા હૈ, વહ ક્રમસર શુદ્ધ હોતા હૈ. ક્રમસર-ક્રમવર્તી પરંતુ શુદ્ધ હોતા હૈ - અશુદ્ધ નહીં. અશુદ્ધ તો પરજ્ઞેયમેં જાતા હૈ. આહાહા !

શ્રોતા : શુદ્ધ હોતા હૈ તબ પરિપૂર્ણ શુદ્ધ હોતા હૈ.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : યહ શુદ્ધતાકી પર્યાય હૈ, વહ ભી પરિપૂર્ણ હોનેકી ત્યાગઉપાદાન શૂન્યત્વસે પરિપૂર્ણ કલનેમેં આયી હૈ. ક્યોંકિ એક સમયકી ભલે સમ્યગ્દર્શન આદિકી શુદ્ધ પર્યાય હો, યહ પર્યાય સારે દ્રવ્યકો સિદ્ધ કરતી હૈ - સાબિત કરતી (હૈ). યહાં વિકારી લેના નહીં. વહાં તો વિકાર ભી હૈ. જહાં અંશ લિયા હૈ (વહ) રાગકા અંશ ભી અપના હૈ. અગર અપને (ઇસ અંશકો) નિકાલ દે તો ત્રિકાલ પર્યાયકા સમૂહ (વહ દ્રવ્ય) યે સિદ્ધ નહીં હોતા. યહાં યે લેના નહીં. યહાં તો શુદ્ધતા લેની હૈ. શુદ્ધ પર્યાય લેની હૈ.

યહ શુદ્ધ પર્યાય ભી ભલે અલ્પ હુયી પરંતુ પરિપૂર્ણ દ્રવ્યકો સિદ્ધ કરતી હૈ - સાબિત કરતી હૈ. યહ અંશ ભી, અંશી પૂર્ણ હૈ ઉસકો સિદ્ધ કરતી હૈ. અગર યહ અંશ નિકાલ દે

तो पूर्ण द्रव्य सिद्ध नहीं होता. समझमें आया ? बात सूक्ष्म (है) बापू ! यह तो तत्त्वज्ञान (है).

आप्त भिमांसामें तो ऐसा लिया है कि याहे तो शुद्ध पर्याय हो कि अशुद्ध हो ये पर्याय अेक अंश सारे द्रव्यको सिद्ध करती है. क्योंकि नय-उपनयका समूह वह द्रव्य है. पूरा श्लोक है. समझमें आया ? नय-उपनयका समूह पूरा द्रव्य है. तो वहां अशुद्धनय उसमें लिया है. परंतु यहां तो ये लेना नहीं है. यहां तो अशुद्ध राग जो होता है उसका कमबद्ध पर्यायमें उसकी पर्यायमें रागका ज्ञान होता है. ये ज्ञान भी राग है तो (होता है ऐसा) नहीं. राग है तो ज्ञान होता है, ऐसा नहीं. वह कमवर्ती पर्यायमें अपनी स्वपर प्रकाशककी पर्याय - कमवर्तीमें अपनेसे होती है. वहां राग परज्ञेय है, ऐसा व्यवहार कलनेमें आता है, आडाडा ! निश्चयसे पर्याय अपनी है, अस छतनी (बात है). रागका जानना यह भी नहीं. आडाडा !

वह अपने आ गया है. आत्मज्ञानमयी सर्वज्ञ शक्ति. क्या कहते हैं ? सर्वज्ञ शक्ति है ये सर्व नाम परकी अपेक्षा है, छसलिये सर्वज्ञ है, ऐसा नहीं. अपने त्रिकावी द्रव्य-गुण-पर्यायका भी ज्ञान करती है और परका भी ज्ञान करती है. परंतु ये सर्वज्ञ पर्याय आत्मज्ञमयी है, निश्चय आत्मज्ञानमयी है. सर्व आया तो परका उपचार हुआ, ऐसा यहां नहीं. ऐसी बातें हैं. क्या कहा ? कि केवलज्ञान अेक समयमें स्वपरप्रकाशक होनेसे परको प्रकाशते हैं छसलिये यहां सर्व है, ऐसा नहीं. ये आत्मज्ञान ही सर्व स्वरूपे परिणामन करना-जानना यह उसका स्वभाव है. परको जानना ऐसा कहना वह तो असद्भुत व्यवहार है. लोकालोक को जानते हैं. लोकालोक तो पर है. सर्वज्ञ किस अपेक्षासे ? सर्वको जानना यह आत्मज्ञानमयी पर्यायका ही स्वभाव है. यह लोकालोक है तो आत्मज्ञ पर्याय सर्वज्ञ है, ऐसा है ही नहीं. समझमें आया ?

वह बात तो कही थी न ? ५० वर्ष पहले दामनगरमें यातुर्भास था. वहां अेक (मुमुक्षु) वकील (थे) और अेक दामोदर शैठ थे. उन दोनों के बीच यर्था यली. शैठने कहा 'लोकालोक है तो केवलज्ञानकी पर्याय लुई'. (तो) वकीलने कहा, 'केवलज्ञानकी पर्याय अपने से लुई (है). लोकालोक है छसलीये लुई, ऐसा नहीं.' बात कहां भिन्न पडती है ?

श्रोता : लोकालोक है तो (पर्याय लुयी है) तो लोकालोक तो अनादिका है.

पू. गुरुदेवश्री : दो बात है. सर्वविशुद्धज्ञान अधिकारमें आया है. सूक्ष्म बात (है). ध्यान रचना. यह तो अंतरकी बातें हैं. केवलज्ञान लोकालोकको निमित्त है और लोकालोक केवलज्ञानमें निमित्त है. ऐसा पाठ है परंतु निमित्त है उसका अर्थ (क्या) ? लोकालोक है तो केवलज्ञान है, ऐसा नहीं और केवलज्ञान है तो लोकालोक है, ऐसा नहीं. यह तो ८३ की सालमें बहुत यर्था लुई. यर्था करके नीचे उतरे (और) हमको पूछा 'महाराज ! यह कैसे है ?'

(હમને કહા) લોકાલોક હૈ તો કેવલજ્ઞાનકી પર્યાય હૈ, ઐસી બાત હૈ નહીં. સર્વકો જાનનેકી અપની પર્યાયકી તાકાત યહ અપને સે હૈ. નિમિત્ત હૈ તો નિમિત્તકો જાનતે હૈ, ઐસા હૈ નહીં. આહાહા ! (ઐસા) પર્યાયકા ધર્મ હૈ.

‘વસ્તુ સહાવો ધમ્મો’ વસ્તુ જો ભગવાન આત્મા હૈ ઉસકી જો શક્તિયાં હૈ વહ સ્વભાવ (હૈ). વહ ઉસકા ધર્મ (હૈ). વહ પ્રગટ ધર્મ નહીં. યહ ધર્મ (તો) ધર્મીકા ધર્મ (હૈ). ધર્મી આત્મા ઉસકી શક્તિરૂપ ધર્મ (હૈ) ઉસકી પ્રતીતિ કરતે હૈ તો પર્યાયમેં ધર્મ હોતા હૈ. ધર્મીકા ધર્મ ઔર ધર્મ ઔર ધર્મીકા ભેદ નિકાલ કર અકેલે ધર્મી પર દૃષ્ટિ દેને સે પર્યાયમેં વીતરાગતા (અર્થાત્) ધર્મ પર્યાય હોતી હૈ. આહાહા ! ભાઈ ! આવો માર્ગ છે. તપ તો ઉસકો કહે કિ અમૃતકા સાગર પર્યાયમેં ઉછલે, આહાહા ! સમુદ્રકે કિનારે જૈસે પાનીકી બાઢ આતી હૈ ઐસે ભગવાન આત્મામેં શક્તિરૂપ આનંદ જો હૈ, વહ આનંદ ઔર આનંદકા દાતાર દોનોંકા ભેદ દૃષ્ટિમેં સે નિકાલકર આનંદ સ્વરૂપ ભગવાન ત્રિકાળી ઉસકી દૃષ્ટિ કરનેસે પર્યાયમેં આનંદકી છોળ (બાઢ) આતી હૈ, આનંદકી બાઢ આતી હૈ, આહાહા ! યહ ધર્મ હૈ, આહાહા ! ભારી બાત ભાઈ ! સમજમેં આયા ?

પદાર્થકી (પર્યાય) ક્રમબદ્ધ હૈ. પ્રત્યેક વસ્તુકી ક્રમસર વ્યવસ્થિત પર્યાય હોતી હૈ - આગે પીછે નહીં. સમજમેં આયા ? તો એક બડે વિદ્વાનને ઐસા કહા કિ અગર ક્રમબદ્ધ ન હો તો વિશેષ હી લોપ હો જાતા હૈ, ઐસા કહતે થે. ૧૩ કી સાલ (મેં) કાશીમેં ગયે થે. (વહાં બાત હુઈ) અરે ભાઈ ! યહાં પ્રવચનમંડપમેં યહ ક્રમબદ્ધકી વ્યાખ્યા ૩૦ વર્ષ પહલે હુઈ થી. ક્રમબદ્ધ હૈ. ક્રમબદ્ધ બરાબર હૈ. (દૂસરે વિદ્વાન ના કહતે થે). ક્યોંકિ ઉસ સમય બાત થી નહીં ના. (ઔર) ક્રમબદ્ધકો કબૂલ કરને જાયે તો સોનગઢકા હો જાતા હૈ. યહ સોનગઢસે ઉદ્ઘાટન હુઆ હૈ. સમજમેં આયા ? અંદર ભાવકા ઉદ્ઘાટન તો હમને કિયા, આહાહા ! તો કહતે હૈં કિ અગર હમ ક્રમબદ્ધ નામ લગાયેંગે તો લોગ કહેંગે, યહ માન્યતા સત્ય હૈ. સોનગઢકી બાત સિદ્ધ હો જાયેગી તો લોગ સોનગઢ ચલે જાયેંગે. અરેરે...! ભગવાન ! સત્ય હૈ ઐસા લેના હૈ કિ તેરે કો પક્ષ કરના હૈ ? (યહ કોઈ) નયા હૈ નહીં. અનાદિસે સર્વજ્ઞ પરમાત્મા કહતે હૈં, યહ બાત હૈ. સમજમેં આયા ?

શ્રોતા : વહ ભૂલ હો ગયી થી તો બાહર આ ગયી.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : વહ તો હમને કહા થા ના ? ૭૨ કી સાલ. કિતને વર્ષ હુએ ? ૬૧ (વર્ષ હુએ). ૭૨ (કી સાલમેં) ચર્યા ચલી. (હમને) દો સાલ સુના કિ ‘કેવલજ્ઞાનીને દેખા ઐસા હોગા. અપને પુરુષાર્થ ક્યા કરે ?’ ઐસી બાત દો વર્ષ સુની. નવ દિક્ષીત થે ના ? ૨૫ વર્ષકી ઉમ્મ થી. ઇસ દેહકો તો ૮૮ હુઆ. કિતને વર્ષ હુએ ? ૬૧ (વર્ષ હુએ). આહાહા ! હમારે ગુરુભાઈ હૈ ન ! વહ બાર-બાર કહતે થે કિ, ‘કેવલજ્ઞાનીને દેખા ઐસા હોગા. અપને પુરુષાર્થ ક્યા કરે ?’ તો દો વર્ષ તો સુના. ફિર એક બાર કહા ‘કેવલજ્ઞાન હૈ યે દેખા !

बादमें कडा -' केवलज्ञान है ऐसी सत्ताका स्वीकार है ? यह तो ७२ (की सालकी बात है). केवलज्ञान एक समयमें प्रभु ! ज्ञान गुणकी एक समयकी पर्याय अनंत केवलीको जाने. वह भी केवलीको जाने (ऐसा) कलना वह भी व्यवहार है. उस पर्यायका सामर्थ्य ही घतना है. आहाहा ! एक गुणकी एक समयकी पर्याय इसमें घतनी ताकत है कि अपनी पर्याय से अनंता केवलीको जाने. केवली है तो (जानते है, ऐसा) नहीं. केवली है तो केवलीको जानते हैं, ऐसा नहीं, आहाहा ! तो ऐसी एक समयकी केवलज्ञानकी पर्यायकी सत्ता जगतमें है, उसका जिसको स्वीकार है, उसकी दृष्टि ज्ञानमें घुस जाती है. समझमें आया ?

घतना उस समयमें आया था. ७२की साल थी न ? द्रव्यका आश्रय (और ये सब बातका) उस समयमें घतना नहीं था. समझमें आया ? आहाहा ! सर्वज्ञकी पर्याय - एक गुणकी एक समयकी पर्याय घतनी ताकतवाली वह पर्याय द्रव्य-गुणको जाने, अपना त्रिकाली द्रव्य-गुणको जाने, छ द्रव्यको जाने, अनंत सिद्धोंको जाने. एक ही पर्याय अस्तित्व (३५) है, बाकी सब उसमें नास्तित्व है. समझमें आया ? ऐसी एक समयकी पर्याय वह (भी) द्रव्य-गुण के कारण से भी नहीं. घतना तो उस वक्त नहीं था. परंतु केवलज्ञान है (ऐसी) एक समयकी सत्ता जगतमें है. ये सत्ता जिसको स्वीकार करनेमें आती है (और) निश्चयसे यह सर्वज्ञकी सत्ताका स्वीकार, सर्वज्ञ शक्तिवान भगवान है उसकी दृष्टि करनेसे सर्वज्ञकी सत्ताका यथार्थ श्रद्धान होता है. समझमें आया ? आहाहा !

श्रोता : सब जवमें सर्वज्ञ शक्ति है ?

पू. गुरुदेवश्री : सब भगवान सर्वज्ञसे परिपूर्ण भरित अवस्थ (है). कडा था न ? बंध अधिकारमें, सर्वविशुद्धमें और परमात्मप्रकाश तीन जगह (यह बात है). सर्व जव निर्विकल्पो - निरंजनो - भरित अवस्थ (है). अवस्थ माने पर्याय नहीं. भरित अवस्थ शक्तिसे पूर्ण भरा है. भगवान ! सब भगवान आत्मा परमात्मा है. पर्यायकी बात छोड दो. वस्तु है यह परमात्मा ही है.

सर्व जव ऐसे हैं. जवा (ऐसी) भावना करना. ऐसा पाठ है कि नहीं ? बंध विनाशनार्थम् अथवा ज्ञायकको सिद्ध करनेको, ऐसी भावना करना. उस दिन तो कडां पढा था ? समझमें आया ? यह सब तो ७८ (की सालमें) आया. समयसार, प्रवचनसार, नियमसार ७८ (में मिले). (और) यह बात ७२ (की सालमें की). मैंने तो दृष्टांत दिया था.

श्रीकृष्णके छोटे भाई गजसुकुमार (थे). वे भुद भोणामें बैठकर, भोणा समजते हो न ? गोदमें बैठकर हाथीके छोटे पर - भगवानके दर्शन करनेको जाते थे. तो ऐसी एक कन्या थी. सामेवासंग करके एक कन्या थी. वह सामने के घरमें - उसके घरमें भेलती थी. स्वयं श्रीकृष्ण भगवानके दर्शन करनेके लिये जाते थे. (वह) कन्या बहुत सुंदर दिखती थी. उनको ऐसी छछा लुयी, आदमीको कडा कि उस कन्याको अंतेपुरमें ले आवो. गजसुकुमार की शादीके

लिये (ले आवो). गजसुकुमार छोटे भाई थे न ? (यहां) कन्याको ले गये और यहां गजसुकुमार भगवानके पास गये. गजसुकुमार - गज नाम हाथीका गवा, सुकुमार ऐसा तो शरीर. भगवानकी वाणी सुनी (और) भगवानकी वाणी सुनकर अकदम जोरसे पुरुषार्थ आया (और कडा) कि प्रभु 'भुजे तो आया छोड़कर अज्ञात लेनेका मेरा भाव है'. आहाहा ! जशोदाको देवकी आराधनाके करनेके बाद पुत्र आया था. समझमें आया ? लंबी बात है. तो ये गजसुकुमार यहां भगवानकी वाणी सुनते हैं वहां अकदम अंदरसे जोरसे पुरुषार्थ (गिठा). प्रभु ! मैं अब अज्ञात-मुनि होना चाहता हूं. तो उन (श्वेतांबर) लोगोंमें तो ऐसी भाषा है न ? उन लोगोंमें अपने जैसे 'ओम' नहीं है. 'आहा सोहं' ऐसा शब्द है. श्वेतांबरमें तो 'आहा सोहं देवानुप्रिया मा प्रतिबंधक' ऐसा शब्द है. भगवान कहते हैं, 'हे देवानुप्रिय !' (भगवानकी ऐसी वाणी कहां (होती है) ? वह तो ओमकार है. श्वेतांबरमें तो ऐसी सब गडबड है. 'हे मुनि ! गजसुकुमार ! आपको जैसे सुख उत्पन्न हो वैसे करो. प्रतिबंध नहीं करना. प्रतिबंध - कहीं रोकना नहीं'. ऐसा कडा.

(गजसुकुमार) माताके पास गये. (और कडा) 'माता ! मैं मुनिपना लेना चाहता हूं. मां ! अकबार छोड़ी दो. मैं भगवानके पास जाऊँ'. देवकीने कडा, 'हे पुत्र ! देवका आराधन करके तुम आये हो. मैंने तुजे कितना धार दिया है'. श्री कृष्ण तो ग्वालके यहां बडे हुअे थे. उन्हें पहले ६ लडके थे. दूसरी औरतका नाम सुलषा (था). उसके घर ६ (पुत्र) बडे हुअे थे. श्री कृष्णके पहले ६ पुत्र थे. देवकीको ६ पुत्र थे. परंतु उसका अपहरण करके सुलषाके घर चले गये थे. जैसे सात (पुत्र) थे. बालकके रूपमें तो देवकीने कभी देखा नहीं था. (देवकीने कडा) 'बेटा ! तुजे मैंने बालकके रूपमें देखा नहीं और तुम (जैसे ही) चले जाते हो'. गजसुकुमारने कडा 'माता ! मेरा आनंद स्वरूप भगवान है. उसके पास मैं जाता हूं. मेरी माता तो अंदर आनंद है. माता अकबार छोड़ी दे. जनेता ! अक बार रोना है तो रो ले, माता ! परंतु मैं कोलकरार - (वादा) करता हूं (कि) फिर से माता नहीं करुंगा. फिर से माता नहीं करुंगा, माता ! ऐसा कोलकरार करता हूं, माता !' आहाहा ! कितना पुरुषार्थ है !!

केवलज्ञानी जिसको बैठा है, उसका पुरुषार्थ स्वभाव पर जुक जाता है. समझमें आया ? आहाहा ! दूसरी तरहसे कहे तो, केवलज्ञान है - ऐसी बात यारो अनुयोगमें आयी. तो यारो अनुयोगका तात्पर्य तो वीतरागता है. तो केवलज्ञान है - ऐसा जव सुने तो उसका तात्पर्य तो वीतरागता आना चाहिये. तो वीतरागता कब आती है ? आहाहा ! केवलज्ञानकी पर्यायकी सत्ताका स्वीकार करनेमें वीतरागता आनी चाहिये. तो वीतरागता कब आती है ? कि ज्ञानस्वरूप भगवान आत्मा (है) उस ओर जुकने से वीतरागता आती है. न्याय समझमें आया ? आहाहा ! ऐसा मार्ग है, भाई ! (हमने) कडा, उस सत्ताका स्वीकार करनेमें उसको

भव नहीं है. हम कहते हैं कि जिसे केवलज्ञानकी सत्ताका स्वीकार हुआ, केवलज्ञानी उसे भव नहीं है, ऐसा देखते हैं.

७२ छां ७२. ६१ वर्ष हुआ. (ये सब बातें) अंतरसे आती थी. पढा नहीं था. परंतु अंदरमें वह संस्कार था न ? (उसमें से आता था).

‘माता ! कोलकरार करता हूँ. हम जिस रास्ते पर जाते हैं उसमें अब भव नहीं मिलेगा. आहाहा ! (हमने) कहा ‘यह पुरुषार्थ तो देओ !!’ यह केवलज्ञानकी सत्ताका स्वीकार करनेमें तो पुरुषार्थ है. ‘देओ है वह पीछे छोडा, देओ है वह छोडा, देओ है वह छोडा’ वह (भात) तो है. परंतु केवलज्ञान है कि नहीं जगतमें ? पर्यायमें इसका माहात्म्य और इसका समर्थ - शक्ति कितनी है, इसकी सत्ताका स्वीकार करनेसे अल्पज्ञमें रहकर सर्वज्ञकी शक्ति पर जुकने से अल्पज्ञमें (सर्वज्ञ) सत्ताका स्वीकार होता है. समझमें आया ? आहाहा !

यहां कहते हैं कि सर्वज्ञकी शक्ति जो अंदर है, वह सर्वज्ञपना वही आत्मज्ञपना है. वह पहले शक्तिमें आगे आ गया है. यह सर्वज्ञपना, वह आत्मज्ञ कडो या सर्वज्ञपना कडो, वह (मात्र) विविक्षा भेद है. कथन भेद है. भाव भेद नहीं. क्या कहा वह ? कि सर्वज्ञपना है और आत्मज्ञपना वह तो कथनकी शैली से भात है. आत्मज्ञ है यह स्व से है और सर्वज्ञपना (है) यह पर से है, ऐसा नहीं. समझमें आया ? आहाहा !

ऐसा सर्वदर्शी - दोनोंमें लिया है ना ? सर्वदर्शी वह आत्मदर्शीपना है. सर्वको देखते (हैं) वह नहीं (लेना). सर्वमें परको लेना वह तो असद्भुत व्यवहार है. क्योंकि जिसमें तन्मय छोकर देखते नहीं उसको असद्भुत कहते हैं और जिसको तन्मय छोकर देखते हैं - तो पर्यायमें तन्मय छोकर देखते हैं वह अपनेको देखते हैं. आहाहा !

यहां यह कहते हैं कि, सर्वज्ञ शक्ति सत् है और कमबड नहीं है ऐसी त्यागउपादान शून्यत्व शक्ति है, ऐसा स्वीकार करनेसे परिणतीमें भी कमबड नहीं (है), ऐसी पर्याय उत्पन्न होती है. अर्थात् पर्याय भले अल्प हो तो भी पूर्ण द्रव्यको सिद्ध करती है, अंक अंश सारे अंशीको सिद्ध करता है. उस कारणसे पर्यायको भी पूर्ण कहनेमें आता है. आहाहा !

अब १७ वी शक्ति. यह थोडी सूक्ष्म भात है. “षट्स्थानपतित....” पहला शब्द है ? षट्स्थान आशय. पतित माने आशय. षट्स्थान माने ? अर्थात् कि आत्मामें प्रत्येक गुणमें, पर्यायमें षट्स्थानपतित अर्थात् पर्यायमें अनंतगुण वृद्धि, असंख्यगुण वृद्धि, संख्यगुण वृद्धि, अनंतभाग वृद्धि, असंख्यभाग वृद्धि, संख्यभाग वृद्धि, यह (वृद्धि के) ६ बोल हुआ. और अब छानि के (६ बोल). अनंतगुण छानि, असंख्यगुण छानि, संख्यगुण छानि, अनंतभाग छानि, असंख्यभाग छानि, संख्यभाग छानि, ऐसे ६ (बोल) हुआ. समझमें आया ? ऐसी भात (है).

अगुरुलघु शक्तिका वर्णन करते हैं. तो प्रत्येक गुणकी पर्यायमें (अगुरुलघुपना आता है).

प्रत्येक गुणमें अगुरुलघुत्व गुणका रूप है, आडाडा ! और उसकी पर्यायमें भी अगुरुलघुपना आता है. यह बहुत सूक्ष्म विषय है. क्योंकि केवलज्ञानकी पर्याय है तो भी एक समयमें षट्गुणहानिवृद्धि उसमें है. इसका मतलब यह नहीं है कि पहले समयमें हानि और दूसरे समयमें वृद्धि, ऐसा नहीं (है). उसी समयमें हानि और उसी समयमें वृद्धि, यह कोई अगम्य बात है. ये क्यों कहते हैं ? कि श्रुतज्ञानी सब जान सके तो केवलज्ञानकी महिमा कहाँ रही ? आडाडा ! श्रुतज्ञानमें भी षट्गुणहानिवृद्धि (होती है). एक समयमें हानि और दूसरे समयमें वृद्धि, ऐसा भी नहीं. एक समयमें अनंतगुण वृद्धि उसी समयमें अनंतगुणहानि (होती है). एक समयमें असंप्यगुण वृद्धि उसी समयमें असंप्यगुणहानि और संप्यगुणवृद्धि और संप्यगुणहानि. एक ही समयमें द्रव्यका-पर्यायका ऐसा स्वभाव भगवानने देखा (है).

क्या कहा समझमें आया ? “षट्स्थानपतित...” ६ प्रकारसे - आश्रयसे हानि-वृद्धि होती है. षट् वृद्धि-हानि दोनों (होती है). दोनों है न ? विद्विवासमें द्विपयंदञ्जने जरा उतारा है. परंतु वह तो समझने के लिये उतारा है. उन्होंने उतारा है कि अनंतवे भागमें आठ गुण. अनंतवे भागमें आठ गुण परंतु वह तो एक के बाद एक उतारा है. समझमें आया ? परंतु वह तो समझने के लिये (कहा). वास्तवमें तो एक समयमें षट्गुणहानिवृद्धि (है). एक समयमें (है). आडाडा ! सूक्ष्म है भगवान ! तेरी मतिज्ञानकी पर्याय हो तो भी उसमें षट्गुणहानिवृद्धि पर्यायमें होती है. केवलज्ञानकी पर्याय हो तो भी षट्गुणहानिवृद्धि केवलज्ञानकी पर्यायमें होती है. क्षायिक समकित हो उस पर्यायमें भी षट्गुणहानिवृद्धि होती है. यथाभ्यात यारित्र हो, वीतरागता हो, वीतरागताकी पर्यायमें भी षट्गुणहानिवृद्धि है. यह बात तो सर्वज्ञ के अलावा (कहीं नहीं है).

श्रोता : निगोदके जवमें (भी होती है) ?

पू. गुरुदेवश्री : निगोदके जवके अक्षरके अनंतवे भागमें षट्गुणहानिवृद्धि उसमें भी है, आडाडा !

देखो ! सर्वज्ञ स्वभाव !! भगवान आत्माका और उसकी पर्यायका धर्म !! आडाडा ! भगवानने देखा. समझमें आया ? भगवानने देखा ऐसा कहा, आडाडा ! यहां पंचास्तिकायमें तो ऐसा थोड़ा कहते हैं (कि) षट्गुणहानिवृद्धि यह श्रुतगम्य नहीं. आगम गम्य है. आगम कहते हैं उतना स्वीकार करना उसमें तर्क नहीं करना. तर्कसे तुझे नहीं बैठेगा. समझमें आया ? आडाडा ! एक मति पर्यायक निगोदके जवको अनंतवे भागमें, अक्षरके अनंतवे भागका विकास और वीर्य(में) भी अनंतवे भागका विकास. फिर भी उस पर्यायमें भी षट्गुणहानिवृद्धि है. आडाडा ! (एक समयमें १२ भाव). एक समय(में) ६ हानिके और ६ वृद्धिके (भाव है). आडाडा ! कभी यह सुना नहीं होगा.

श्रोता : (ये बात) कभी सुननेमें नहीं आती.

पू. गुरुदेवश्री : बात सय है. यह तो तीन लोकके नाथ सर्वज्ञ परमेश्वर ! जिनयंद्र ! वीतराग यंद्र ! शीतलताका भगवान पूर्णानंद उपशम रस(से) भरा (है). इस परमात्मने यह बात कही है. समजमें आया ?

“षट्स्थानपतित वृद्धिदानिसे परिणामित....” परिणामित कडा, देखा ? पर्यायमें परिणामित है. शक्ति तो है परंतु पर्यायमें परिणामित है. “...स्वरूप-प्रतिष्ठत्वका कारणरूप, (-वस्तुके स्वरूपमें रहनेके कारणरूप) ऐसा जो विशिष्ट (-भास) गुण है, उस स्वरूप अगुरुलघुत्वशक्ति” आगे थोडा विशेष कहते हैं. “(इस षट्स्थानपतित वृद्धिदानिका स्वरूप ‘गोमट्टसार’ ग्रंथसे जानना चाहिये. अविभागप्रतिच्छेदों की संख्यारूप षट्स्थानों.....)” क्या कहते हैं ? एक समयकी पर्याय मति(ज्ञान) हो या केवलज्ञान हो परंतु उसमें षट्गुणदानिवृद्धि (होती है). है ना ? आडाडा ! अविभागप्रतिच्छेद. क्या कहते हैं यह ? देखा ! एक मतिज्ञान है. परंतु उस पर्यायमें तो अनंत लोकालोक भी जाननेमें आता है. और स्वद्रव्य भी जाननेमें आता है. लोकालोक जाननेमें आता है तो एक पर्यायके भागमें अविभागप्रतिच्छेद कितने हुअे ? अंश (को) छेदते-छेदते अविभाग—जिसका भाग न हो, ऐसा प्रतिच्छेद करते-करते अंतिम अंश हो उसे अविभाग कहते हैं. ऐसा अनंता अविभाग प्रतिच्छेद निगोदके अक्षरके अनंतवे भागकी पर्यायमें भी अनंत अविभाग प्रतिच्छेद है. अरे...! ऐसी बात ! ऐसा वीतरागका मार्ग ! आडाडा !

श्रोता : पर्याय तो स्वयं अंश है तो उसमें भी अविभाग प्रतिच्छेद होते हैं ?

पू. गुरुदेवश्री : हां, (होते हैं). कडा न ? अंदर केवलज्ञानकी पर्याय है, उस पर्यायमें अनंता केवली जानते हैं, अनंता लोकालोक, अनंता निगोद (के जवको) जानते हैं, अनंता जवसे अनंत गुना परमाणु जानते हैं, तो एक पर्यायमें इतना जाननेका अंश छेदो तो अनंत हो य. समजमें आये उतना समजो, बापू ! यह तो भगवानका (कडा मार्ग है). आडाडा ! “सहेजे समुद्र उल्लस्यो, जेमां रतन तषांषां जाय, भाग्यवान कर वावरे, अनी मोतीअे मुठीयुं भराय” ‘भाग्यहिन वावरे, अनी शंपले मुठीयुं भराय’ आस्थासे, श्रद्धासे, उत्साहसे, उल्लासित वीर्यसे (कबूल करना). आडाडा ! परमात्माकी अगम-निगमकी बातें है. तेरी पर्यायमें अनंत अविभाग प्रतिच्छेद !! आडाडा ! वह कडा न ? “(...वस्तुस्वभावकी वृद्धिदानि जिससे (- जिस गुणसे) होती है और जो (गुण) वस्तुको स्वरूपमें स्थिर होनेका कारण है. ऐसा कोई गुण आत्मामें है; उसे अगुरुलघुत्व गुण कडा जाता है. ऐसी अगुरुलघुत्व शक्ति भी आत्मामें है)” प्रत्येक गुणमें यह है. द्रव्यमें भी अगुरुलघु, गुणमें भी अगुरुलघु और पर्यायमें (भी) अगुरुलघु. शक्ति है न ? आडाडा ! प्रत्येक गुणमें अगुरुलघु (का रूप है). आडाडा ! सूक्ष्म बात (है).

अब ज्यादा समजने जैसी बात है. १८ वीं शक्ति. “कमवृत्तिरूप और अकमवृत्तिरूप

वर्तन जिसका लक्षण है...” भाषा देओ ! पर्याय कमसे वर्तती है - औसा वर्तन जिसका लक्षण है. कमवर्ती नाम पर्यायका कमसे वर्तनेवाली औसा वर्तन उसका लक्षण है. आहाहा ! इस प्रकार पर्याय कमवर्ती (और) गुण अकमवर्ती (है). उसका अर्थ यह हुआ कि गुण जैसे अेक साथ अंतरमें है और पर्याय अेक साथ जैसे आयत समुदाय है. पर्याय कमवर्ती कलनेमें आयी - गुण अकमवर्ती (कलनेमें आये). इसलिये कमवर्ती कलनेमें आयी (उसमें) यह कमबद्ध आ गया. वह आया न ? कमवृत्ति और अकमवृत्ति रूप वर्तन जिसका लक्षण (है). कमसे वर्तन करना जिसका लक्षण (है), आहाहा ! उन्हें (कुछ विद्वानोंको) औसा लगा कि अगर हम कमबद्धका सख्या निर्णय करने जायेंगे तो उन लोगोंकी बात है तो सख्यी. (और) अगर सख्या निर्णय है औसा कलने जाये तो लोग उस ओर ढल जायेंगे कि उनकी बात सय है और हमारी बात खूठ है, औसा हो जायेगा. अरे..! भगवान ! आहाहा ! बापू ! औसा नहीं होता, भाई ! तू भगवान है ना ! अेक समयकी भूल है उसे निकलनेमें कितना काल लगे ? अेक समय लगे. आहाहा !

श्रोता : (हम अपनी भूल) अपने आप निकालेंगे, आपके कलने से नहीं (निकालेंगे). (औसा वह लोग कहेंगे).

पू. गुरुदेवश्री : (अपने आप) निकालनेमें भी अेक ही समय लगता है न ? उसे निकालनेमें कितना समय लगता है ? कमवर्ती पर्याय है तो कमसे वर्तना जिसका लक्षण है अर्थात् कमसे वर्तना जिसका स्वरूप है, आहाहा ! औसी बातें (है) ! इसके बढे तो व्रत करना, उपवास करना, भक्ति करना, पूजा करने लग जाये तो सीधा सरल हो जाये.

प्रत्येक गुणमें उत्पाद्-व्यय-ध्रुव नामकी शक्तिका रूप है. कमवर्ती पर्याय और अकमवर्ती गुणका समुदाय वह आत्मा है, समजमें आया ? वह बोल लिया है. वहां लिया है कि, कमवर्तीमें ज्ञानकी पर्याय उत्पन्न होती है तो उसमें अनंत गुणकी पर्याय (साथमें) उछलती है. वह पढले आ गया है. उछलती अर्थात् ज्ञानकी सम्यक् पर्याय उत्पन्न हुयी तो उसके साथ अनंत गुणकी पर्याय साथमें उछलती है. उछलती नाम उत्पन्न होती है, आहाहा ! औसी बात है. वह दूसरा बोल है. अेक-अेक शक्तिमें छतने बोल लागू पडते हैं. पढले कडा ना ? कम-अकमरूप अनंत धर्म समूह वह आत्मा. अब ज्ञानमात्र अेक भावकी अंतःपातिनी अनंत शक्तियां, यह दूसरा बोल है. यह प्रत्येक शक्तिमें लागू होता है. कमवृत्तिरूप और अकमवृत्तिरूप वर्तन जिसका लक्षण है. प्रत्येक शक्तिका (पर्यायका) कमरूप प्रवर्तन होना (और) अकमरूप गुणका रहना वह उसका लक्षण-स्वरूप है. अेक-अेक शक्ति अनंतमें व्यापक है. अेक शक्ति अनंतमें व्यापक है. अेक शक्ति अनंतमें निमित्त है. अेक शक्ति द्रव्य-गुण-पर्यायमें व्याप्य है. अेक शक्तिमें ध्रुव उपादान-क्षणिक उपादान दोनों हैं. आहाहा ! ध्रुव (है) यह ध्रुव उपादान है (और) पर्याय है यह क्षणिक उपादान है. आहाहा ! कमसे वर्तन करनेवाली

क्षणिक उपादान है और अक्रमसे रहनेवाला ध्रुव उपादान है, आडाडा ! अक-अक शक्तिमें व्यवहारका अभाव है. यह अनेकांत है. व्यवहारसे छोटा है और निश्चयसे (भी) छोटा है, असा शक्तिके वर्णनमें है ही नहीं. समजमें आया ?

अपनी अक-अक शक्ति (पर्याय) क्रमसे प्रवर्त और (गुण) अक्रमसे प्रवर्त. तो उसमें निर्मण परिणति क्रमसे प्रवर्तती (है). निर्मण परिणति क्रमसे प्रवर्तती है और निर्मण गुण अक साथ रहते हैं तो उसमें व्यवहारका अभाव है. राग आदि निमित्त आदिका अभाव है, यह अनेकांत है. समजमें आया ?

यहां तो व्यवहारकी बात ही नहीं कहते. उसका ज्ञान होता है, वह अपनी पर्यायमें अपनी ताकत से होता है. तो उसमें व्यवहारका अभाव (है) और निश्चय अपने से हुआ है. ज्ञानकी पर्याय, समकितकी पर्याय, यारित्रकी पर्याय, आनंदकी पर्याय अपनेसे परकी अपेक्षा रभे बिना होती है, आडाडा ! समजमें आया ? यह उत्पाद्-व्यय-ध्रुव शक्ति है तो इस शक्तिके कारणसे प्रत्येक गुणमें वह जिस समयमें (पर्याय) उत्पन्न होनेका समय है वहां उत्पन्न होगी. प्रत्येक गुणकी पर्याय (उस समयमें उत्पन्न होगी). आडाडा ! जिस समयमें उत्पाद् है उसी समयमें पूर्वकी पर्यायका व्यय (है). असा उसकी शक्तिका स्वभाव है, आडाडा !

दूसरी तरहसे कहे तो, उत्पाद्-व्यय-ध्रुव, यह शक्ति है वह परके कारणसे उत्पन्न हो, असा वहां रहा नहीं. कि भाई ! रागकी मंदता लुयी, दया, दान और पंय मडाव्रतके (मंद परिणाम) लुअे, इसलिये वह निर्मण पर्याय लुयी, असा वस्तुमें है ही नहीं, समजमें आया ? आडाडा ! अहुत सूक्ष्म भातें, आपू ! (लोग) नहीं कहते ? 'लोहा काटे छेनी' वह बात है जीणी - लोहा काटे छेनी. लोहेकी छेनी होती है वह (लोहे को) काटे. यह लकडी काटे क्या ? लकडी मारे तो तूट जाये परंतु लोहेकी भारीक छेनी होवे (वह लोहेको काटे). वैसे यह भेदज्ञानकी सूक्ष्म भातें हैं. आडाडा ! कहते हैं कि अक-अक शक्तिमें व्यवहारका अभाव है, यह स्याद्वाद् है. यह शक्ति है वह पारिणामिकभाव(रूप) है.

अकबार कोई पूछ रहे थे. मोक्षमार्ग क्या है ? मोक्षमार्ग है वह उपशम, क्षयोपशम, क्षायिकभाव है. और शक्ति जो गुणरूप है वह पारिणामिकभाव है. समजमें आया ? यह सब असा क्या होगा ? यह तो तत्त्वकी बात है, भाई ! आडाडा ! भगवान आत्मा उसमें उत्पाद्, व्यय, ध्रुव नामकी शक्ति है. यह शक्ति है वह पारिणामिकभाव(रूप) है. परंतु शक्तिकी प्रतीत लुयी (तो निर्मण पर्याय उत्पन्न लुयी). ध्रुव है वह तो शक्ति है. परंतु उसके कारणसे उत्पाद् - व्यय होता है. ये पर्यायमें यहां उदयका भाव लेना ही नहीं. शक्तिमें उत्पाद् होता है. सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र, उपशमभाव, क्षयोपशमभाव या क्षायिकभाव उत्पन्न होता है. वह क्रमवर्ती पर्याय है. आडाडा ! इसमें कितना याद रहे ?

यह मार्ग असा (है), भाई ! अरे..! मनुष्यपनेमें यह नहीं समजेगा तो कब समजेगा,

ભાઈ ! આહાહા ! એસા સર્વજ્ઞ સ્વભાવકા સમુદ્ર ભરા હૈ. આહાહા ! કેવલજ્ઞાનકી પર્યાય (હૈ) એસી તો અનંતી પર્યાય ગુણમેં પડી હૈં. જ્ઞાન ગુણમેં તો અનંતી કેવલજ્ઞાનકી પર્યાય કમસે (પડી હૈં). પર્યાયકી અવસ્થા તો એક સમયકી હૈ. કેવલજ્ઞાન ભી એક સમયકી અવસ્થા હૈ. દૂસરે સમય દૂસરી પર્યાય એસી હી (હૈ). પરંતુ વહ નહીં. એસી-એસી સાદિ અનંત કેવલજ્ઞાનકી પર્યાય (જ્ઞાન ગુણમેં હૈં). અનંત નામ કહીં આદિ નહીં, કહીં અંત નહીં. એસી પર્યાયકા સમુદાય વહ જ્ઞાન ગુણ હૈ. આહાહા ! ઓર એસે-એસે શ્રદ્ધા ગુણકી અનંતી પર્યાય, ચારિત્ર ગુણકી અનંતી પર્યાય, આનંદકી અનંતી પર્યાય. અનંતી પર્યાયકા પીંડ વહ આનંદ-શ્રદ્ધા ઓર વીર્ય હૈ. અનંત ગુણકા પીંડ વહ દ્રવ્ય હૈ. સમજમેં આયા ? એસા અભ્યાસ કહાં ક્રિયા હો ? ઉપવાસ કર લો તો કુછ હો જાય કલ્યાણ, તો કર ડાલો લાંઘણ (ઉપવાસ).

શ્રોતા : આપે રસ્તો બતાવી દીધો છે.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : લોગોંકો કઠિન પડતા (હૈ). (કહતે હૈં) યહ તો એકાંત નિશ્ચય હૈ. અરે..! ભગવાન ! માર્ગ તો યહ હૈ, ભાઈ ! આહાહા ! બાદમેં એક-એક શક્તિમેં ઉત્પાદ્-વ્યય-ધ્રુવ જો પર્યાય હોતી હૈ, વહ ઉત્પાદ્ ષટ્કારકસે હોતા હૈ, આહાહા ! વિશેષ આયેગા....



જ્ઞાન અને રાગ વચ્ચે ભેદજ્ઞાન થવાનું એ લક્ષણ છે કે જ્ઞાનમાં રાગ પ્રત્યે તીવ્ર અનાદર ભાવ જાગે છે, તે જ્ઞાન અને રાગ વચ્ચે ભેદજ્ઞાન થવાનું લક્ષણ છે. આત્મામાં રાગની ગંધ નથી, રાગના જેટલા વિકલ્પો ઊઠે છે તેમાં બળું છું તેમ દુઃખ દુઃખ ને દુઃખ છે—ઝેર છે તેમ પહેલા જ્ઞાનમાં નિર્ણય કરે તો ભેદજ્ઞાન પ્રગટે છે.

(પરમાગમસાર-૩૦૭)

प्रवचन नं. १८

शक्ति-१८, १८ - ता. २८-०८-१९७७

क्रमाक्रमवृत्तवृत्तित्वलक्षणा उत्पाद्व्ययध्रुवत्वशक्तिः ॥१८॥
द्रव्यस्वभावभूतध्रौव्यव्ययोत्पादालिङ्गतसद्दशविसद्दशरूपैकास्तित्वमात्रमयी
परिणामशक्तिः ॥१९॥

(समयसार). यह शक्ति कितने नंबरकी होगी ? १८वीं (यलेगी). तुम्हारे शिक्षण शिबिरका १८ वां दिन है. क्या कहते हैं ? आत्मा सत् / शाश्वत वस्तु (है) इसमें शक्तियां भी शाश्वत हैं. आत्मा / स्वभावभाव पारिणामिकभाव रूप है (और) उसकी शक्ति भी पारिणामिकभावरूप है. सलज स्वभाव है. अक शक्ति दूसरी शक्तिको निमित्त है. परंतु अक शक्ति दूसरी शक्तिको उत्पन्न करे, ऐसा नहि.

यहां तो उत्पाद् - व्यय - ध्रुव शक्ति ऐसी कही कि प्रत्येक ज्ञानमें भी उत्पाद् - व्यय - ध्रुव का रूप है. इसमें उत्पाद् - व्यय - ध्रुव शक्ति नहीं. परंतु उत्पाद् - व्यय - ध्रुवका रूप है. क्या ? कि ज्ञान शक्ति जो त्रिकाल है, इसमें से जिस समय ज्ञानकी पर्याय (उत्पन्न होगी, वह उत्पाद् - व्यय - ध्रुव शक्तिके कारणसे होगी). यहां निर्मण (पर्याय) की बात है, यहां भविनताकी बात नहीं है. जिस समय ज्ञानकी पर्याय उत्पन्न होगी वह उत्पाद्, उत्पाद् - व्यय - ध्रुव शक्तिके कारण से है. आहाहा ! क्या कहा ? कि जो ज्ञानमें निर्मण पर्यायका उत्पाद् होता है - मति(ज्ञान), श्रुतज्ञान, केवलज्ञान उस पर्यायकी उत्पत्ति उत्पाद् - व्यय - ध्रुवके कारण वह पर्याय उत्पन्न होती है. आहाहा ! समजमें आया ?

आशिया यर्थांमें यर्थां लुई थी कि 'चार घातिकर्म नाश होता है तो केवलज्ञान होता है', ऐसा कहा. तत्त्वार्थसूत्रमें लिखा है न ? परंतु वह तो निमित्तका कथन है. वस्तुस्थिति ऐसी है (कि) ज्ञान गुणमें उत्पाद् - व्यय - ध्रुवका रूप है तो यह केवलज्ञानकी पर्याय उत्पन्न होती है, वह अपने से होती है; परके कारणकी कोई अपेक्षा नहीं. आहाहा ! समजमें आया ?

सत् यिदानंद ध्रुव प्रभु ! (उसकी) शक्ति भी ध्रुव है. जैसे वस्तु ध्रुव है वैसे शक्ति

भी ध्रुव है. तो शक्ति और शक्तिवानका भेद लक्षमें नहीं करके अन्धे दृष्टि करने से पर्यायका ज्ञान करानेको वह बात की है. तत्त्वार्थराजवार्तिक आदिमें यह सब है ना ? यह दृष्टांत बहुत देते हैं कि पूर्व पर्याय युक्त द्रव्य वह कारण और उत्तर पर्याय युक्त द्रव्य वह कार्य. यहां यह भी निकाल दिया. स्वामीकार्तिकेयमें ऐसा दिया है. और जैनतत्त्वमिमांसामें - भाषिया यर्थांमें यह आधार बहुत दिया है कि द्रव्य जो है वस्तु - उसकी पर्याय सहित द्रव्य उपादान कारण है और पीछेकी पर्याय सहित द्रव्य वह कार्य है, यह भी व्यवहार है.

यहां कहते हैं कि उत्पाद् - व्यय - ध्रुव - उस समयमें जो पर्याय उत्पन्न होती है (वह) पूर्वके कारण से नहीं. आहाहा ! सूक्ष्म बात है. शास्त्रमें ऐसा बहुत आता है और वह आधार भी बहुत दिया है. परंतु वह तो पूर्व पर्याय क्या थी ? और पीछे पर्याय क्या है ? ऐसा द्रव्य सहितका कारण-कार्य बताया. यहां तो कहते हैं कि प्रभु ! अकबार सुन तो सही. आहाहा ! तेरे अक-अक गुणमें ध्रुवता और पर्यायमें उत्पन्न होना, वह पर्याय स्वतंत्र उत्पन्न होती है. ज्ञानमें हो, दर्शनमें हो, यारित्रमें हो, आनंदमें हो (सभी गुणमें स्वतंत्र पर्याय उत्पन्न होती है). आहाहा ! आनंद शक्ति है, उसमें भी उत्पाद् - व्यय - ध्रुवका रूप है. आहाहा ! वह पांचवी सुभ (शक्तिमें) पहले आ गया है. ज्वतर, यिति, दशि, ज्ञान, सुभ और छड़ी वीर्य. वीर्यमें भी उत्पाद् - व्यय - ध्रुवका रूप है. आहाहा ! गंभीर !! वीर्य भी अपनी पर्यायमें उत्पन्न होनेकी उसमें शक्ति है. अपने से वीर्यकी पर्याय स्वरूप की रचनामें उत्पन्न होती है. सूक्ष्म बात है, समझमें आया ?

वीर्य भी शक्ति है. उसमें उत्पाद् - व्यय - ध्रुवका रूप है तो वीर्य भी अपनी पर्यायमें पुरुषार्थ जो उत्पन्न होता है, वह अपनी शक्तिके कारण से (उत्पन्न होता है). पूर्वकी पर्यायके कारण से नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? निमित्त से तो नहीं परंतु पूर्व (पर्यायके) कारण से भी नहीं. वह तो नहीं परंतु वर्तमानमें जो अनंती पर्याय है तो उस पर्यायके कारण से दूसरी पर्याय है, ऐसा भी नहीं. क्योंकि प्रत्येक द्रव्य के प्रत्येक गुणमें उत्पाद् - व्यय - ध्रुवका रूप है, तो उस गुणमें ज्ञानका, दर्शनका उत्पाद् अपने से उत्पन्न होता है. यह सम्यग्दर्शन उत्पन्न हुआ तो सम्यक्ज्ञानकी पर्याय उसके कारण से उत्पन्न हुई, ऐसा नहीं. आहाहा !

श्रोता : व्यवहारसे शास्त्रमें कहा है.

पू. गुरुदेवश्री : पहले तो कहा था कि व्यवहारका कथन है.

श्रोता : व्यवहारको तो आप लेय मानते हैं.

पू. गुरुदेवश्री : लेय ही है. (ऐसा ही) मानते हैं. (और) है ही ऐसा. यिदानंद भगवान ध्रुव आनंदका कंद प्रभु ! अतीन्द्रिय आनंदका तलस्पर्शी करने से उसका तलवा - तलवा माने ध्रुवतामें स्पर्श करने से (धर्म होता है). (तो) पर्याय स्पर्श करती है, उसकी तो ना कही. समझमें आया ? परंतु ध्रुवकी ओरका लक्ष करने से जो शक्ति उत्पाद् - व्यय - ध्रुव है, तो

प्रत्येक गुणकी पर्याय आत्मामें उत्पन्न, पूर्व से व्यय और ध्रुवता धारण करती है. आडाडा !
ऐसी बात है.

इस वक्त तो व्यवहारकी तकरार (यलती है). अरे..! प्रभु ! सुन तो सही. व्यवहार
हो, परंतु अंतर निर्मण पर्याय उत्पन्न करनेमें वह कारण नहीं. समझमें आया ? सोनगढके
सामने यही तकरार है ना ? उपादानमें निमित्त से होता है, निश्चयमें व्यवहार से निश्चय
होता है और पर्यायमें कमवर्ती अंकांत है, नियत है (ऐसा नहीं) (ऐसा लोग कहते हैं).
नियत (और) अनियत दोनों हैं. अरे..! ऐसा नहीं है, भाई ! समझमें आया ?

नियत-अनियत पंचास्तिकाय संग्रहकी १५५ गाथामें आता है. नियत-अनियत - उसका
दृष्टांत देते हैं. वहां नियत-अनियतकी व्याख्या दूसरी है. नियत नाम उसके स्वभावको नियत
कहते हैं और विभावको अनियत कहते हैं, ऐसा अर्थ है. यह सब यथा बाहरमें विरोधमें
यली है ना ! (कहते हैं) देओ ! अनियत भी है. परंतु अनियतका अर्थ आगे-पीछे (हो)
वह प्रश्न वहां नहीं है. व्यवहार है वह अनियत है. स्वभावकी जात नहीं ना ! अनियतका
अर्थ आगे-पीछे है, ऐसा नहीं. समझमें आया ? स्वभाव जो है वह नियत है. इसलिये
उसकी पर्याय नाम आत्मा निज स्वभाव है और विभाव है वह अनियत है. निश्चयकी
पर्याय है इसलिये व्यवहारकी पर्याय से विभाव अनियत है. अनियत नाम आगे-पीछे होती
है, ऐसा प्रश्न है नहीं. समझमें आया ?

४७ नयमें भी नियत-अनियत नय आया है और काल और अकालनय आया है.
यह सब नय एक समयमें ४७ धर्म साथमें है. ४७ नयमें ऐसा भी कहा है कि काल पर
भोक्ष डोगा और अकालमें भी (भोक्ष) डोगा, ऐसा लिया है. तो उसका अर्थ ऐसा करते
हैं कि देओ ! अकालनयसे (भी होता है). ऐसा अर्थ है ही नहीं. काल(नयमें) तो जिस
समयमें केवलज्ञान और मुक्ति होनी है, वह उस समय डोगी. परंतु अकालका अर्थ - काल
सिवाय स्वभाव और पुरुषार्थ (को) लेकर अकाल कहा है. समझमें आया ? काल आगे-पीछे
(हो जाय, ऐसा अर्थ नहीं है). काल और अकाल, नियत और अनियत एक समयमें ४७
धर्म साथमें है. (कोई धर्म) आगे-पीछे है नहीं - एक साथमें धर्म है. किसीको काल और
किसीको अकाल, ऐसा है नहीं. स्वभाव और पुरुषार्थकी अपेक्षा से इसको ही अकाल कहते
हैं. समझमें आया ? अरे..! सत्यकी जबर नहीं है, आडाडा !

अकाल उम गजपंथा गये थे. वहां (एक श्वेतांबर साधु रहते थे और सोनगढके साहित्यका
वांचन करते थे). तो नीचे उतरके आये (और) आ कर वंदन करके ढोक दिया. रात्रिका समय
था तो भोल सके नहीं. दूसरे दिन शामको उमे जाना था, वहां से निकल जाना था. (वे)
आये नहीं थे तो कुछ बात नहीं हुई. इसलिये उम उपर गये. शामको पांच बजे निकलना
था. तो अढाई-तीन बजे बैठे थे. दरवाजा बंध था. उम गये तो दरवाजा भोल दिया. (भुद)

नीचे उतर गये (और) हमको पाट पर बिठाया (और) वंदन किया. मुझे तो यह कलना था कि, ये कोई बात करते-करते कलते हैं कि कोई चीज उन्हें ज्वालमें है ? यहाँका वांचन करके कलते हैं कि उसे कोई यथार्थताका ज्वाल है ? यार-पांच जन बैठे थे. (हमने) प्रश्न किया कि 'शास्त्रमें कालसे भी मोक्ष (होता है) और अकालमें (भी होता है) दोनों हैं. पर्यायमें कमबद्धमें मोक्ष होता है. तो शास्त्रमें काल और अकाल दोनों हैं' वे समज गये थे (कि) मुझे अभी पकड़ेंगे. तो ऐसा बोल दिया कि 'मैंने विचार किया नहीं'. समजमें आया ?

यहाँ शास्त्रमें तो ऐसा कलते हैं कि, जिस समय उत्पाद् होना है (वह) उस समयमें होता है. समजमें आया ? अकालनयमें भी जिस समय उत्पन्न होता है उसका अर्थ पुरुषार्थ और स्वभावकी अपेक्षा से अकालनय कला है. आगे-पीछे होता है, वह अकालका अर्थ है ही नहीं. समजमें आया ? सूक्ष्म बात है यह. आलाहा ! परमात्मा ! पूर्णकाल स्वरूप (है). अकाल यह भी कला था कि, जो पूर्णकाल स्वरूप है वह स्वकाल है और उसकी पर्यायका उत्पन्न होना वह परकाल है. क्या कला ? समजमें आया ? २२२ कलशमें लिया था ना ? कलशटीकामें २२२ कलश है. सवेरे चलता है ना ? उसमें ऐसा लिया है कि जो स्वद्रव्य है वह अत्मेद (है) और द्रव्यमें विकल्प करना (कि) यह द्रव्य और यह गुण है, वह पर द्रव्य (कला है). और क्षेत्रमें असंख्य प्रदेशी अकरूप है वह स्वक्षेत्र और क्षेत्रमें भेद करना कि 'ये प्रदेश और ये प्रदेश' वह परक्षेत्र (है). और कालमें त्रिकाली चीज वह स्वकाल (है) और पर्यायान्तर - अवस्थांतर (में) अक समयकी अवस्थाका भिन्न लक्ष करना वह परकाल (है). समजमें आया ? सूक्ष्म बात (है), बापू ! मार्ग सूक्ष्म है, सूक्ष्म बहुत सूक्ष्म है. आलाहा ! विकल्पसे भी चीज जाननेमें नहीं आती. भले विकल्प से धारणा कर ले. समजमें आया ? कि ऐसा है और ऐसा है, परंतु वह विकल्पसे जाननेमें आये ऐसी (चीज) है ही नहीं. वह तो निर्विकल्पसे जाननेमें आती है, आलाहा ! समजमें आया ?

यहाँ तो ऐसे कला कि त्रिकाली द्रव्यको स्वकाल कला और अक समयकी अवस्था को परकाल कला और परका कार्य और अवस्था तो भिन्न रह गयी. आलाहा ! क्योंकि भेद पर से भी दृष्टि उठाना है. भाई ! भेद (अर्थात्) द्रव्यका भेद, क्षेत्रका भेद, कालका भेद और भावका भेद. निश्चयसे तो जो द्रव्य है वही क्षेत्र है, वही काल है, वही भाव है. क्या कला वह ? निश्चयमें जो पर्यायके सिवाका द्रव्य कला वही क्षेत्र है. वही द्रव्य है, वही क्षेत्र है, वही त्रिकाली काल है और वह त्रिकाल भाव है. ऐसे यार के भेद भी नहीं (है). पर्यायका भेद तो नहीं लेकिन यार के भेद भी नहीं. आलाहा ! ऐसी वस्तुमें उत्पाद् - व्यय - ध्रुव शक्ति पडी है, आलाहा ! सूक्ष्म बातें बहुत, बापू ! मार्ग ऐसा है.

(यहाँ) कलते हैं कि प्रत्येक गुणमें उत्पाद् - व्यय - ध्रुवपना है, आलाहा ! समजमें आये उतना समजो, वस्तु तो ऐसी गंभीर है. निर्विकल्प अनुभव (के) बिना उसका अनुभव

होता नहीं. आहाहा ! क्योंकि वस्तु भेद रहित है, राग रहित है, पर्याय रहित है. फिर भी उत्पाद् - व्यय - ध्रुव नामकी शक्ति प्रत्येक गुणमें है. प्रत्येक गुण अपनी पर्यायमें उत्पाद् होता है और पूर्वकी पर्यायका व्यय होता है तो इस गुणके कारण से (होता है). अथवा इस शक्तिके रूपाके कारण से (होता है). परकी शक्ति के कारण से नहीं (होता). आहाहा ! परके व्यवहारके कारण से तो नहीं परंतु पूर्वकी पर्याय है उसके कारण से नहीं. और अेक शक्ति है वह दूसरी शक्तिके कारण से भी नहीं. ऐसी बातें हैं, भाई ! अरे..! लोगोंको समझमें नहीं आये (और) बाहरकी क्रियाकांडमें जोड दिया. ये करो और ये करो. अरे...! वह तो आपू, अनंत बार किया है न प्रभु ! (ऐसे) शुभभाव अनंत बैर किये हैं. 'मुनिव्रतधार अनंतबैर त्रैवेयक उपजायो, पण आत्मज्ञान बिन लेश सुभ न पायो' भगवान ! आनंद के तलवेमें पडे हैं भगवान ! आहाहा ! जिसके तलवेमें आनंद है. जैसे समुद्रके तलवेमें मोती आदि पडा है. समुद्रमें कितने मोती तूट गये हैं. सोना, यांटी गुम गया हो, वह सब नीचे समुद्रमें पडा है. समझमें आया ? समुद्रमें अनंतकाल हुआ न ? तो अंदर कोई यांटीका डूब गया हो, ऐसी यांटी भी अंदर पडी है, सोना नीचे पडा है, मोती नीचे पडा है. बहुत पडा है. समझमें आया ? परंतु अंदर डूबकी मारकर (निकालना पडे). (डूबकी मारनेवाले) सांस (लेने के लिये) नली रखते हैं. (मोती) लेने के लिये अंदर डूबकी मारे. सांस लेने की नलीमें हवा आये ऐसी नली रखते हैं, तो ही हवा आ सकती है. (नहीं तो) वहां तो हवा आनेकी कोई जगह नहीं है. उपर से हवा और अंधेरा हो तो दिग्भनेमें आये नहीं; तो वहां अंदरमें प्रकाश भी रखते हैं. तो (जैसे) देखते हैं कि, 'ये रहा मोती' तो मोती उठा लेते हैं. वैसे भगवान के तलवेमें तो अनंत आनंद आदि मोती पडे हैं, समझमें आया ? आहाहा ! अनंत ज्ञान है, अनंत आनंद है, अनंत शांति है, अनंत प्रभुता है, अनंत स्वच्छता है, आहाहा ! प्रत्येक शक्ति उत्पाद् - व्यय - ध्रुव से कार्य करती है. उस उत्पाद् के लिये दूसरे कारण तो नहीं परंतु दूसरी शक्ति और दूसरी पर्याय भी कारण नहीं. बहुत साल से तो सुनते हैं. ४३ वर्ष तो यहां हुआ ४३ योमासा - यहां हुआ है प्रभु ! अेकबार सुन नाथ ! तेरा आनंदका और सम्यग्दर्शनकी पर्यायका उत्पाद् उस-उस गुणमें वह-वह उत्पाद्का काल है तो उत्पन्न होता है. आहाहा ! और वह भी उत्पाद् होता है (वह) द्रव्यकी दृष्टिवंतको ही निर्मल उत्पाद् होता है. समझमें आया ? पर्यायके लक्षसे पर्याय उत्पन्न होती है, ऐसा है नहीं. आहाहा !

श्रोता : भोक्षमार्ग प्रकाशकमें तो ऐसा लिखा है कि पुरुषार्थ से उत्पन्न होता है.

पू. गुरुदेवश्री : पुरुषार्थ (है) परंतु प्रत्येकमें वीर्य शक्ति भी है ना ? कहां न ? वीर्य शक्ति भी है तो अपने से पुरुषार्थ चलता है. इसमें यह पुरुषार्थ है. अरे..! इसमें तो है परंतु परमाणुमें भी वीर्य शक्ति है. इसकी शक्ति है. परमाणुमें वीर्य नाम(की) शक्ति

है. वल वरुण, गंध, रस, स्पर्शपणु १-२-३ आदल त्रलकालपने परलणुमतुु हँ, वल अपनी शकुतल से परलणुमतुु हँ, परकुुे करणु से नहँ, आललल ! समणुमें आलल ?

वल प्रश्न लुआ थल नल ? वल स्कुंध हँ न ? (उसमें) तलनन परमलणु हँ वल सूकुषु रलल. वलं आलल तुुु स्थूल लुु गलल. तुुु देणुु ! नलतुत से लुआ (असुल कुलते हँ). उस ओर से असुल प्रश्न आलल थल. (लेकुन) असुल हँ नहँ. उस परमलणुमें तुुु अपनी शकुतल से स्थूलरुप लुुने कुु लुुगुतलसे उत्पन्न लुु हँ. नलतुतकुुे करणुसे नहँ. परमलणु अकुु हँ वल सकुषु हँ. वलं सूकुषु नहँ रलल. परंतु सूकुषु न रलल, वल स्थूलरुप उत्पन्न लुुनेकुु शकुतल से स्थूल लुुआ हँ, आललल !

वल प्रश्न तुुु उस दलन तुुुसरुु सललमें ललल थल. ततुु ललदुवलन आलुुे थुु. (कुलते थुु) कुु परमलणुमें तुुु लुुु दुु गुणु ललकलश और दुूसरल परमलणु(में) ललर गुणुकुु परुललकुु ललकलश हँ तुुु दुुनुुं तललकुुे ललर गुणु लुु ललतल हँ. ललर गुणु लुु ललतल हँ, परंतु वल अपनी परुललकुु लुुगुतल से उस समयकुु उत्पलदुु कुु लुुगुतल से लल लुु ललतल हँ. नलतुत आलल तुुु ललर गुणु ललकलश लुु हँ, असुल वस्तु हँ नहँ, तलल ! आललल ! देणुु ! गणुल कुुल हँ नल !!

प्रतुुेक शकुतलमें उत्पलदुु - वुल - ध्रुव शकुतलकुु रुप हँ. और उस समय लुु उत्पलदुु लुुनेवलल हँ, वल उत्पलदुु लुुगुल. उस समय ललसकुु वुल हँ उसकुु वुल लुुगुल और उस समय सदृश ध्रुव तुुु कुुलत हँ. आललल ! लल शकुतलकुु वरुणन सरुवल कुुे सलवल कुुल हँ नहँ. ओधुु-ओधुु ललत कुुे कुु आतुल नलरुतल हँ, शुदुध हँ, सरुवल वुलपकुु हँ उसमें कुुल ?

शुरुुतल : ओधुु-ओधुु तलने (कुुल) ?

डुु. गुुरुदुुवशुरुुल : ओधुु-ओधुु नहँ समणु ? ओधुु-ओधुु तलने ललनल हँ वलं ओर दुुषुतल रल गलुु दुूसरुु ओर (ओर ललुु) ललते हँ. उसुु ओधुु-ओधुु गलुु असुल कुलते हँ. तलनल तलनर ललते हँ, तलनर नहँ. आदतुु ललतल हँ न असुु ? ललनल लुु परुषुतल परंतु धुनमें लुु धुनमें ललल ललतल दुुकुषुणुमें. (ललदुुमें तलल ललुु) अरुु..! लुु कुुल ? तुुु लस ओर ललनल थल नल ? लस तुरकलर ओधुु-ओधुु तलन तलनल (ललते हँ). वुसुुे लल तलन तलनल आतुलकुु ललतुुे कुुे, लुुे सतल लुुु हँ.

वल 'उत्पलदुु - वुल - ध्रुव युकुतं सतुु' ततुवलरुु सुुतुरमें आलल न ? उस शकुतलकुु लल वरुणन हँ. 'उत्पलदुु - वुल - ध्रुव युकुतं सतुु' लुु ततुवलरुु सुुतुरमें आलल हँ. उस उत्पलदुु - वुल - ध्रुवकुु ललं ललतल हँ. प्रतुुेक गुणुमें, प्रतुुेक दुरवुतुुमें - परमलणुमें तुुु असुल शकुतल हँ. आललल ! ललं तुुु आतुलकुु ललतल ललतल हँ. कुुुुलकुु आतुल(कुु) ललने तुुु परमलणुकुु ललथलरुु ललनल. समणुमें आलल ? वल अपने आ गलल हँ. कुुलशदुुलकुुमें दुु ललतल आ गलुु थुु कुु, तलनल शुुतल हँ और उषुणुतल अणुनलकुु हँ. कुुसकुु उसकुु ललन लुुतल हँ ? नलल सुवलरुुतललल ललनवललकुु (असुल) ललन लुुतल हँ. कुुल कुुल ? तुुु ललललरुु तुरकलशकुुमें तुुु तलन लुुल आलल न ?

कारण विपर्यास, स्वरूप विपर्यास और भेद विपर्यास. भूलवालेको तीनमें से एक बोल तो होता ही है. आहाहा !

यहां कहते हैं कि (पर्याय) अपने से उत्पन्न हुई, पर से नहीं, आहाहा ! और अपना निज स्वरूपका ज्ञान करे तो परका ज्ञान - परप्रकाशक ज्ञान यथार्थ होता है, आहाहा ! दो बात ली थी ना ? कि एक तो जल ठंडा है और अग्निके निमित्त से उष्ण हुआ, औसा ज्ञान किसको होता है ? कि जिसको निज स्वरूपका ज्ञान होता है, उसको व्यवहारका ज्ञान यथार्थ होता है, आहाहा ! और वहां एक बात औसी ली है कि तरकारी है न ? तरकारी - सब्जी. तो सब्जीमें पारापना यह नमक है और सब्जी पारापना से भिन्न है. इसका ज्ञान किसको होता है ? आहाहा ! निज स्वरूपग्राही (ज्ञान) वालेको ज्ञान होता है. जिसको अपना स्वप्रकाशक भगवान आत्मा ! उसका ज्ञानका ज्ञान किया उसको यह सब्जी पारी नहीं (लेकिन) नमक पारा है, पारा (है वह) नमक है (औसा) उसका भेद का ज्ञान निज स्वरूपग्राही (ज्ञानवाले को) ही होता है. जिसको निज स्वरूपका ज्ञान नहीं है उसको व्यवहारका ज्ञान सभ्या नहीं होता (है). कुछ-कुछ भी कारण विपर्यास, भेद विपर्यास, स्वरूप विपर्यास तीनमें से कोई भूल तो रह जाती है. समझमें आया ?

यहां कहते हैं कि “**कमवृत्तिरूप और अकमवृत्तिरूप वर्तन जिसका लक्षण है औसी उत्पाद् - व्यय - ध्रुवत्वशक्ति**” कमवृत्तिरूप पर्याय उत्पाद्-व्यय रूप (है) (और) अकमवृत्तिरूप गुण ध्रुव रूप (है). यह अकम माने पर्याय अकम नहीं बल्कि गुण अकम है. समझमें आया ? वैसे तो (समयसार) कर्ता-कर्म (अधिकारमें) आता है. कम-अकम पर्याय दोनों आती हैं. कौनसी गाथा ? उट (गाथामें में आता है). कम-अकम दो पर्याय चलती हैं. उसका अर्थ क्या ? कि गति एक के बाद एक होती है तो उसे कम कहते हैं और राग-कषाय-योग एक साथमें होता है तो (उसे) अकम कहते हैं. एक साथमें हैं. जोग है, राग है, देश्या है. एक साथमें हैं ना ? यहां तो इसमें तीन बोल लेना है. जोग है उसी समय देश्या है, उसी समय कषाय है, उसी समय भक्तिज्ञान है. एक साथमें है तो अकम कहनेमें आया. अकम यानी आगे-पीछे है वो प्रश्न वहां है नहीं. एक साथे है तो अकम कहा और गति है तो एक के बाद एक होती है. नरक के बाद पशु (वैसे). तो वह कमवर्ती गति कहनेमें आयी. समझमें आया ? आहाहा ! अकम शब्द जाणिया यर्थामें आया है. (और कहते हैं) कि ‘दृषो ! यहां अकम कहा है’. वहां अकम किसको कहा ?

श्रोता : गुणस्थान कमसे होते हैं और मार्गशांओं अकमसे होती हैं.

पू. गुरुदेवश्री : एक-एक समयकी पर्याय गति है, ज्ञान है, दर्शन है, एक साथमें है. औसे (कहना है). बस ! समझमें आया ? यह तो हमें संक्षिप्तमें लेना है कि जोग है उसी समय देश्या है, देश्या है उसी समय कषाय है, तो उसे अकम कहनेमें आता है. वहां मार्गशांमें

तो फिर जैसे लिया है त्वय-अत्वयका भी निषेध कर दिया है. आत्मा त्वय-अत्वय नहीं है. १४ बोल है ना ? आभिरका बोल - अहारक-अनअहारक, समकितका त्मेद, दर्शनका त्मेद, ज्ञानका त्मेद, गतिका त्मेद. बादमें कडा है कि त्ववि-अत्ववि भी नहीं (है). आत्मामें त्ववि-अत्ववि मार्गज्ञा है ही नहीं. अकम होता है उसका वहां निषेध कर दिया है. समजमें आया ? आडाडा ! ऐसी बातें (हैं). वह १८ वीं शक्ति हुई.

अब १९वीं शक्तिका नाम परिणाम शक्ति है. उसका नाम अस्तित्वमयी परिणाम शक्ति है. आडाडा ! निश्चयसे तो जैसे उत्पाद् - व्यय - ध्रुव कडा वैसे 'सत् द्रव्य लक्षणं' तत्त्वार्थ सूत्रमें आया ना ? 'उत्पाद् - व्यय - ध्रुव युक्तं सत्' अक बात (हुई). 'सत् द्रव्य लक्षणं' दूसरी (बात हुई). तो सत्के परिणामकी व्याख्या करके अस्तित्वमयी परिणाम शक्तिका वर्णन है, आडाडा ! क्या कडा देओ ?

(अब) १९वीं शक्ति. "द्रव्यके स्वभावभूत...." आत्माके द्रव्यसे उसका स्वभावभूत. "...द्रौव्य-व्यय-उत्पाद्से...." पडलेमें उत्पाद्-व्यय और ध्रुव कडा था. पडले उत्पाद् - व्यय - लिया था बादमें ध्रुव लिया. इसमें पडले ध्रुव लिया. समजमें आया ? स्वभाव है न उसका तो ध्रुव लिया. ध्रुव और व्यय - अभाव होता है न ? इसलिये व्यय पडले लिया. उसमें तो उत्पाद् पडले लिया और उत्पाद् - व्यय और ध्रुव ऐसा लिया. उत्पन्न होता है, व्यय होता है और ध्रुव (रहता है). यहां तो ध्रुव, व्यय और उत्पाद् ऐसा लिया. आडाडा ! अक शब्द ईर्क है उसमें हेतु है कि स्वभावभूत ध्रुव पडले सिद्ध करना है. तीनको आखिगन करते हैं. यहां ऐसा लेते हैं. समजमें आया ? थोडा सूक्ष्म तो है भाई ! क्या कडा ? कि "द्रव्यके स्वभावभूत द्रौव्य - व्यय - उत्पाद्से..." द्रौव्य - कायम रहनेवाली थीज. व्यय - पूर्वकी पर्यायका अभाव और नयी पर्यायका उत्पाद्. उसको "...आखिगित (स्पर्शित)" द्रव्य तीनको आखिगन करते हैं. यह परिणाम शक्ति तीनको आखिगन करती है. क्या कडा ?

श्रोता : उत्पाद् - व्यय - ध्रुव तीनोंको आखिगन करती है ?

पू. गुरुदेवश्री : तीनोंको (आखिगन करती है). वही कडा न ? आखिगनका अर्थ पर्याय द्रव्यको स्पर्श करती है, ऐसा नहीं. तीनको आखिगन करती है. तीनमें अस्तित्वपना है. तीनों छोकर अस्तित्व है, जैसे (कडना है). आगे अस्तित्व लिया है.

देओ ! "द्रव्यके स्वभावभूत..." यह तो वीतरागका मार्ग, प्रभु ! बहुत सूक्ष्म (है). बहुत ध्यान रहे तो उसको पकडे. ऐसी-ऐसी (बात है). परकी दया पाओ और व्रत करना और त्मकित करना, पूजा करना, वह धर्म है (ऐसा लोग मानते हैं). अरे..! वह तो अधर्म है. पूरी दुनिया अनादिसे (ऐसा मानती है). आडाडा ! अंदर शुद्ध यैतन्यमूर्ति त्मगवान आत्मा ! यहां यह तीनों उत्पाद् - व्यय - और ध्रुव पवित्र है. यह पवित्रकी बात है, रागकी बात (नहीं). ध्रुव, व्यय और उत्पाद् ऐसा शब्द लिया है. पडलेमें उत्पाद् - व्यय

और ध्रुव अैसा ललया था. क्यौंकल पर्याय(की) उत्पत्तल (लुछ) व्यय लुआ और ध्रुव (अैसे ली रलल). यलं तो पलले स्वलवललूत ध्रुव ललया. आलूकले स्वलवललूत - (अैसे ललया है).

अैसा यल सल सूकूष्म कलंतनल ! कलंतनल सलजले ? यल धलगल नलकलतल है नल ? सुतर. कोछ २० नंलरकल, कोछ ४० नंलरकल, कोछ ६० नंलरकल.

श्रोतल : आज तो १२० नंलर (कल) है.

पू. गुरुदेवलश्री : (छसकी) जललदल कीमत है. उंथी थीजके धलगेकी कीमत ली जललदल लोती है नल ? १२० नंलरकल धलगल लललूत पतलल (लोलल है). सलजले आयल ? आलललल ! और यलंदीकल ली धलगल नलकलतल है. यलंदी है नल ? यलंदी. उसको लोलुकेकल छलद्र (लोलल है) उसले ढींयते है. लोलुकेके छलद्रले ढींयकर पतलल बनलते है. सल देषल है न ! यलं ढींयकर नलई (नलकललते है). यलं तो यथलरथ (जले) है, अैसल लतलते है.

श्रोतल : आज तो आप ढींयकर नलकललते है.

पू. गुरुदेवलश्री : छसललये तो कलल, ढींयकर नलई, छसले यथलरथ है अैसल नलकललते है. आलललल ! पंडलतज्ज अैसल कललते है कल लल तो छसले से सूकूष्म ललत नलकललते है. ललत तो सथ्यी है, परंतु ढींय करके नलई.

श्रोतल : जले है अैसल कललते है, न लो वल क्यल कल्ले ?

पू. गुरुदेवलश्री : अंदर थीज अैसी है, आलललल !

ललगवलन आलूकल द्रव्य ! दुरीव्य-व्यय और उत्पादू तीनलंको आललंगन करते है. सललयसलर तीसरी गलथलले ललया न ? कल प्रत्येक द्रव्य अपने धरूकले युंलते है. युंलते है कलले कल स्पर्श करते (है) कलले, (अेक ली ललत है). पर द्रव्यको तो छूते ली नलई, आलललल ! सलजले आयल ? लोग यलल्ललते है नल ? करूके कलरलल से लोलल है. परंतु करूके उदयको तो आलूकल कलूी छूते ली नलई. सलजले आयल ?

वल टीकल लललूत यली थी. अेक वलदलन यलं आये थे. वैसे नरल थे, परंतु पुरलनी रूढलकी लललूत पकड थी, तो यलं तो कलूल करते थे. देषो ! 'परसंग अेव' शलूद है. 'परसंग अेव' - (परंतु) 'पर अेव' अैसे नलई. वल तो परकल संग करता है तो रलग लोलल है. 'पर अेव' (ललने) पर से रलग लोलल है, अैसल है नलई. सलजले आयल ? अपने असंग तत्वको छोलडकर परकल संग करता है - संबंध करता है तो वलकलर लोलल है. पर से वलकलर लोलल है, अैसल है नलई. आलललल ! सलजले आयल ? वलकलर जले लोलल है वल अपने से, अपने कलरलल से (लोलल है).

छश्वरनय ललया है नल ? ४७ नयले छश्वरनय है. छश्वरनयकल अरथ अैसल ललया है कल, जैसे धलवलतल के पलस लललकको परलधीन लोकर (दूध पीनल पडतल है), वल (स्वयं) परलधीन लोलल है. धलवलतल के पलस दूध पलललते है नल ? वल परलधीन (लोलल है). वैसे आलूकले

अैसी योग्यता है कि निमित्तके अधीन होनेकी शक्ति है. निमित्त अधीन कराते हैं, अैसा नहीं.

श्रोता : अधीन होनेकी भी शक्ति है ?

पू. गुरुदेवश्री : हां, (अैसी भी शक्ति है). अपनी योग्यता रूप अैसा ईश्वरनय है. ४७ नयमें ईश्वरनय-अनीश्वरनय (आया है). समजमें आया ? आडाडा ! यहां तो अेक-अेक नयका वर्णन हो गया है. व्याख्यान हो गये हैं. ज्ञेय-ज्ञायक स्वभाव ज्यादा स्पष्ट किया था न ? विरोध बहुत आया न !

श्रोता : पर्याय नयी-नयी है तो (भुलासा भी अधिक आये ना) ?

पू. गुरुदेवश्री : पर्याय नयी है और विरोध बहुत आया तो उसका भुलासा - स्पष्टीकरण (भी) बहुत आता है.

(कोई विद्वान आये थे) उन्होंने कहा था कि मेरा नाम कहीं देना नहीं. (परंतु) वह तो अपना काम नहीं है. यह तो अेक जाननेकी बात (है). कोई व्यक्ति के प्रति (द्वेष करना) वह अपना काम नहीं है. योग्यता हो (और) सुनने आये तो समजे ना.

श्रोता : आप भुलाते नहीं हो ना.

पू. गुरुदेवश्री : बात तो सय कहते हो. भुलानेकी क्या जरूरत है ? आपकी बात जूठी है, उस कारण से तो (आप) यहां आते हो. हमारा सय्या है और आपका जूठा है, इस कारणसे तो आते हैं. समजनेको (थोड़ी) कोई आता है ?

श्रोता : वह तो नक्की कर लिया है (कि) हम सय्ये हैं और आप जूठे हैं.

पू. गुरुदेवश्री : वह तो नक्की करके आते हैं. (वह अैसा कहे कि) हमें वीतराग भाव से स्पष्टीकरण समजना है, अैसा कहे तो तो (बात बराबर है). (लेकिन) यह रीत अनादि से है, कोई नविन नहीं है.

यहां तो प्रभु कहते हैं कि, तेरी चीजमें अेक अस्तित्वमात्रमयी परिणाम शक्ति है. सिद्धविलासमें परिणामका बहुत वर्णन किया है. परिणाम शक्तिका सिद्धविलासमें बहुत वर्णन (किया) है. उसमें परिणाम शक्तिका बहुत वर्णन किया है कि प्रत्येक गुणका परिणाम होनेकी उत्तर अस्तित्वमयी शक्ति है. बहुत वर्णन किया है. दो पन्नेमें किया है. यहां तो सब देखा है ना ! हजारों शास्त्रों (देखे हैं). श्वेतांबरके करोडो श्लोक (देखे हैं). यहां तो पूरी जिंदगी (इसमें गयी है). सिद्धविलासमें वह है. परिणाम शक्तिका वर्णन बहुत है. इस शक्तिका वर्णन (बहुत है).

प्रत्येक पदार्थकी - आत्माकी प्रत्येक पर्याय अस्तित्वमयी परिणाम है. अस्तित्वमयी परिणाम है. शक्तिका अस्तित्व ध्रुव है और पर्यायमें व्यय-उत्पादरूपी परिणामन है, वह परिणाम शक्तिके कारण से है. आडाडा ! समजमें आया ? १८ और १९ (शक्तिमें) ईर्क क्या है? यहां पहले

ध्रुव दिया है और उसमें पहले उत्पाद् दिया है. उतनी पर्यायकी प्रधानता से कथन करते हैं. 'उत्पाद् - व्यय - ध्रुव युक्तं सत्' यह तत्त्वार्थ सूत्र की व्याख्या (है). यहाँ तो ध्रुव, व्यय और उत्पाद्. इस प्रकार से (दिया है). उसमें उत्पाद् पहले, बादमें व्यय, (और उसके) बाद ध्रुव (दिया है). व्यय के बाद उत्पाद् ऐसा (है). देओ ! है ना ? ध्रौव्य-व्यय और उत्पाद् (ऐसे है). आहाहा ! परिणामन करनेमें उसकी ध्रुव शक्ति और परिणाम व्यय और उत्पाद् से परिणामित होता है. ऐसी एक शक्ति है. पर्यायमें ऐसी परिणामनकी शक्ति है, उस कारण से परिणामन करती है. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसी सब सूक्ष्म बातें (हैं) !

“द्रव्यके स्वभावभूत ध्रौव्य-व्यय-उत्पाद् से आदिगीत (-स्पर्शित) सदृश्य और विसदृश...”
ध्रुव को सदृश्य कडा. उत्पाद् - व्ययको विसदृश कडा. क्या कडा ? जो ध्रुव है वह सदृश्य है, हमेशा अकरूप रहनेवाला (है) और उत्पाद् - व्यय विसदृश्य है. क्यों ? कि उत्पाद् - भाव, व्यय-अभाव - भाव-अभाव इसका नाम विसदृश्य है. उत्पाद् - व्यय (उसमें) अकका अभाव, अकका भाव - वह विसदृश्य हुआ न ? और ध्रुव है वह सदृश्य है. त्रिकाल सदृश्य है. अकरूप रहनेवाले को सदृश्य कहते हैं और व्यय और उत्पाद् दोनोंका भाव विसदृश्य है. अकका अभाव होना और अकका भाव होना. व्ययका अभाव होना उत्पाद्का भाव होना - वह विसदृश्य है. आहाहा ! ऐसी बात है.

धवलमें भी आया है. धवलमें सदृश-विसदृश आया था. अपनी बात लुई थी. उत्पाद् - व्यय (और) व्यय - उत्पाद् अक सरीपा नहीं. विसदृश है. क्योंकि पूर्वकी पर्यायका अभाव है और उसी समय उत्पाद् है तो अक अस्ति स्वरूप है और अक अभाव स्वरूप है. इस प्रकार उत्पाद् - व्ययको विसदृश कहनेमें आता है. (दोनोंमें) अकरूपता नहीं - विरूपता (है). समझमें आया ? ध्रुवको सदृश कहते हैं. सामान्य कडो, ध्रुव कडो, अमेद कडो, अक कडो, त्रिकाली कडो वह सब सदृश है. और पर्यायमें - अक समयकी अवस्थामें व्यय - उत्पाद् है (वह) विसदृश है. आहाहा ! धवलमें आया है. वहाँ विरुद्ध-अविरुद्ध है. धवलमें उत्पाद् - व्ययको विरुद्ध कडा है और ध्रुवको अविरुद्ध कडा है. ऐसी बात है. यहाँ सदृश-विसदृश कडा. वहाँ विरुद्ध-अविरुद्ध कडा. आत्मामें ध्रुवता (है) यह अविरुद्ध है और उत्पाद् - व्यय विरुद्ध है. क्योंकि अक उत्पाद् और अक व्यय (यह) विरुद्ध है.

समयसारकी तीसरी गाथामें भी आया है ना ? वहाँ तीसरी गाथामें विरुद्ध-अविरुद्ध शब्द पडा है. विरुद्ध-अविरुद्ध से सारा जगत टिक रहा है. उत्पाद् - व्यय से और ध्रुव से सारा जगत अपने से टिक रहा है. आहाहा ! समझमें आया ? भाई ! तीसरी गाथामें है. वहाँ विरुद्ध - अविरुद्ध शब्द है, धवलमें विरुद्ध - अविरुद्ध शब्द है. यहाँ सदृश-विसदृश शब्द है. आहाहा ! आचार्योंने तो गजब काम किये हैं !! द्विगंवर संतोंने अक-अक बातको कितनी छेद-भेद कर भिन्न करके बताया है !! आहाहा !

(यहां) कहते हैं कि द्रव्यके स्वभावभूत “ध्रौव्य - व्यय - उत्पाद्...” स्वभावभूत. देखा ? तीनों उसका स्वभाव है. ‘सत् द्रव्य लक्षणं’ में आया न ? ‘उत्पाद् - व्यय - ध्रुव युक्तं सत्’ वह पहली (१८ वीं शक्तिमें) गया. और ‘सत् द्रव्य लक्षणं’ वह दूसरी (१८ वीं) शक्तिमें आया. ‘सत् द्रव्य लक्षणं’ तो सत्में तीन आया. ध्रुव-व्यय और उत्पाद्. उससे “...आदिंगीत (-स्पर्शित) सदृश और विसदृश जिसका रूप है...” आहाहा ! व्यय और उत्पाद् यह विसदृश है. विसदृश नाम अकरूप नहीं (है) और ध्रुव सदृश है, अकरूप है, आहाहा ! ऐसा मार्ग है. यह अकदम समझे बिना, तत्त्वकी दृष्टि बिना उसको धर्म छो जाय (यह बात कभी बननेवाली नहीं). आहाहा !

भाई ! यह तो जन्म-मरण रहित होनेकी चीज है. जन्म-मरण और जन्म-मरणका कारण वह तो यहां लिया ही नहीं. क्योंकि शक्ति कोई ऐसी नहीं कि विकार करे. शक्ति कोई ऐसी नहीं कि भवभ्रमण करावे. समझमें आया ? आहाहा ! शक्ति और शक्तिवान तो पवित्र परमात्मस्वरूप भगवान (स्वरूप) बिराजमान है. आहाहा ! इस परमात्मस्वरूपमें दृष्टि देने से जो विसदृश व्यय और उत्पाद् होता है वह भी निर्मल होता है. यहां उत्पाद् - व्यय जो होता है वह निर्मलकी बात है, मलिनताकी बात नहीं. विसदृश और सदृश (उसमें) विसदृशमें कमवर्ती कडा, विसदृशमें विरुद्ध कडा (और) ध्रुवको सदृश कडा, ध्रुवको अविरुद्ध कडा. यह सब कमवर्ती पर्याय और अकमवर्तीका समुदाय वह आत्मा है, ऐसा कडा. यहां तो पर्याय सहित आत्मा लेना है. अकेला द्रव्य नहीं (लेना है), समझमें आया ?

ध्यान रचना ! यह बात कोई सूक्ष्म है. दूसरा क्या छो सकता है ? बापू ! यहां पर्याय सहितका द्रव्य लेना है. नियमसार शुद्धभाव अधिकारकी उट गाथामें तो त्रिकालीको ही आत्मा कडा. पर्याय बिनाकी त्रिकाली चीज वह निश्चय आत्मा है. पर्याय भले निर्मल छो तो भी वह व्यवहार आत्मा है.

श्रोता : आप तो बहुत बार कहते छो कि वास्तविक आत्मा वही है.

पू. गुरुदेवश्री : निश्चय से वही वास्तविक आत्मा है. यहां तो निश्चय है उसका भान सहित की यहां बात करना है. अकेला निश्चय-निश्चय (करे) ऐसा नहीं. (निश्चयका) भान हुआ उस (भान) सहितकी यहां बात करना है. समझमें आया ? कारण जो है, कारण परमात्मा है - (यह) है तो सही. परंतु वह प्रतीत और ज्ञानमें आया उस सहितकी यहां बात करनी है. समझमें आया ? प्रतीत और ज्ञानमें न आया उसको ध्रुवका कहां है ? आहाहा ! विशेष कहेंगे



प्रवचन नं. १८

शक्ति-१८,२०,२१ ता. २८-०८-१९७७

द्रव्यस्वभावभूतध्रौव्यव्ययोत्पादालिंगितसदृशविसदृशरूपैकास्तित्वमात्रमयी
परिणामशक्तिः ॥१९॥
कर्मबन्धव्यपगमव्यंजितसहजस्पर्शादिशून्यात्मप्रदेशात्मिका
अमूर्तत्वशक्तिः ॥२०॥
सकलकर्मकृतज्ञातृत्वमात्रातिरिक्तपरिणामकरणोपरमात्मिका
अकर्तृत्वशक्तिः ॥२१॥

समयसार, शक्तिका अधिकार यलता है. १८ वीं शक्ति यली न ? १८ वीं शक्ति यलती है. शक्ति अर्थात् आत्मामें स्वभावरूप भाव (है), उसको यहाँ शक्ति कहते हैं. आत्मा गुणी है और यह शक्ति है वह गुण है. यहाँ अस्तित्वमयी परिणाम शक्तिका वर्णन है. किसीको ऐसा लगे कि, पहले १८ वीं (शक्ति) आँ, वैसी (ही) १८ (वीं शक्ति है). (लेकिन) ऐसा नहीं है. (दोनोंमें) फर्क है.

“द्रव्यके स्वभावभूत...” (अर्थात्) वस्तुका स्वभाव “...ध्रौव्य, उत्पाद्, व्यय, उत्पाद्से आलिंगित (—स्पर्शित) सदृश और विसदृश..” (१८ वीं शक्तिमें) उत्पाद्-व्ययमें सदृश और विसदृश (शब्द) नहीं आया था. जो गुण है वह सदृश है और पर्याय है यह विसदृश है. गुण है यह अविद्ध (स्वभावी) है और पर्याय विद्ध (स्वभावी) है. माने क्या ? गुण है यह अविद्ध नाम त्रिकाल अकरूप भाव है और पर्यायमें उत्पाद्-व्यय, उत्पाद्-व्यय दो है. अक भाव और अभाव (ऐसे) दोनों विद्ध (स्वभावी) है. फिर भी यह उसका स्वभाव है.

यहाँ अस्तित्वमयी परिणामन शक्ति (यलती है). शिष्यका प्रश्न था कि, यह परिणामन शक्ति जो है तो उसका जो पर्यायमें अस्तित्वमयी परिणाम आता है, यह परिणामन शक्तिसे परिणामन आता है ? या द्रव्यके परिणामनसे आता है ? क्या कदा ? समझे ? क्या कहते

हैं सुनो !

श्रोता : थिद्विवासमें कलते हैं कि, द्रव्य परिणामन करता है.

पूज्य गुरुदेवश्री : द्रव्य ही परिणामता है, यहां ये लेना है. वस्तुस्थिति ऐसी है. गुण परिणामता है इसलिये (गुणके) आश्रयसे पर्याय परिणामति है, ऐसा नहीं. द्रव्य परिणामता है इसलिये पर्याय ठीकती है. समझमें आया ? क्योंकि गुणके आश्रयसे गुण नहीं. परंतु गुण द्रव्यके आश्रयसे हैं. जो अस्तित्वमयी परिणामन ठीकता है—वह द्रव्यमें से ठीकता है. शक्तिका वर्णन किया कि, ध्रुव्य, व्यय, उत्पाद् तीनों से आदिगीत सदश—विसदश (जिसका रूप) है. उत्पाद्-व्यय यह विसदश है. उत्पाद्-व्यय (है, यह) भाव-अभाव है, तो इस अपेक्षासे विरुद्ध भी कडा. समयसारकी तीसरी गाथामें विरुद्ध कडा. विरुद्ध—अविरुद्धसे सारा जगत टिक रहा है. तीसरी गाथामें ऐसा लिखा है. सारा जगत विरुद्ध—अविरुद्धसे (टिक रहा है) अर्थात् सर्व जगत अपने गुण और उत्पाद्-व्ययरूप विरुद्ध (भावसे) सारा जगत टिक रहा है. यह तीसरी गाथामें है. और धवलमें भी ऐसा है कि, पर्याय (है, यह) विरुद्ध है और गुण है यह अविरुद्ध है, आडाडा ! समझमें आया ?

(यहां) कलते हैं कि, तीनों से “.. आदिगीत (—स्पर्शित), सदश और विसदश जिसका रूप है ऐसे एक अस्तित्वमात्रमयी परिणामशक्ति.” तो यह परिणामन जो ठीकता है, वह गुणसे ठीकता है कि द्रव्यसे ठीकता है ? प्रश्न ऐसा है. समझमें आया ? गुणकी परिणामति (ऐसा) कलते हैं. पर्याय उत्पाद्-व्यय (रूप) है. वह ध्रुव-गुणकी उत्पाद्-व्यय (रूप) पर्याय है, तो यह गुणकी परिणामति गुणसे ठीकती है ? कि यह परिणामति द्रव्यसे ठीकती है ? तो कलते हैं कि, (परिणामति) गुणसे नहीं (ठीकती). गुण-द्रव्यकी परिणामति होनेमें गुणकी परिणामति साथमें ठीकती है. परंतु द्रव्यसे गुण परिणामति ठीकती है, आडाडा ! समझमें आया ? सूक्ष्म है, भाई ! यह तो तत्त्वज्ञानका विषय है. समझमें आया ?

यह द्रव्य जो वस्तु अनंत शक्तिका पींड है, (वह) द्रव्य स्वतः ही परिणामता है. उसमें गुण परिणामति होती है. तत्त्वार्थसूत्र शास्त्रमें भी ऐसा लिखा है कि, “गुण पर्यायवत् द्रव्यम्” लिया है. ‘पर्यायवत् गुण’ ऐसा नहीं लिया है. ‘गुण पर्यायवत् द्रव्यम्’ अनंत शक्ति और उसकी पर्याय—यह (भात) पडले इसमें आ गयी (है). कमवर्ती पर्याय और अकमवर्ती गुण (दो) का समुदाय छोकर सारा आत्मा है. अरे..! ऐसी बातें (हैं). समझमें आया ? कमवर्ती पर्याय और अकमवर्ती गुण इन दोनोंका समुदाय यह आत्मा है; तो इसका अर्थ यह हुआ कि, “गुणपर्यायवत् द्रव्यम्” कडा. लेकिन ‘पर्यायवत् गुण’ ऐसा नहीं कडा. समझमें आया ? तत्त्वार्थसूत्रमें ‘गुणपर्यायवत् द्रव्यम्’ ऐसा शब्द है, आडाडा ! गुण और पर्याय, कम और अकम यह ओल पडले आया था. आडाडा ! वस्तुका स्वरूप तो देओ ! वस्तुके स्वरूपकी ખબर नहीं और उसको धर्म छो जाये, (यह भात कभी छो नहीं सकती). समझमें आया ?

यहां संतों कइते हैं वही परमात्मा भी कइते हैं. समजमें आया ? कइते हैं कि, तीनको (ध्रौव्य-व्यय-उत्पाद् से आदिंगीत-स्पर्शित कइा है). पहलेमें (१८ वीं शक्तिमें) उत्पाद्-व्यय और ध्रुव आया था. आदिंगीत और सदश-विसदश नहीं आया था. और १८ (वीं शक्तिमें) ध्रुव-व्यय-उत्पाद् (ऐसे दिया है). उसमें (१८ वीं शक्तिमें) उत्पाद्-व्यय और ध्रुव ऐसा आया था. यहां ध्रुवसे दिया है. त्रिकावी अस्तित्व है न ? (इसदिये ऐसे दिया है). ध्रुव-व्यय और उत्पाद् (ऐसे दिया). क्योंकि (पहले) अभाव होता है न ? अभाव होता है तो पहले दिया और बादमें भावको पीछे दिया. ध्रुव-व्यय-उत्पाद् तीनोंको आदिंगीत करती है, — ऐसी परिणाम शक्ति है. परंतु इस परिणाम शक्तिमें उत्पाद्-व्ययका परिणामन जो ठीकता है, यह शक्तिमें से नहीं ठीकता है. इसदिये ऐसा कइा कि, शक्ति और शक्तिवानका भेद दृष्टिमें से छोड दे ! समजमें आया ?

भेदसे अभेदको दिभाते हैं, लेकिन भेद और अभेद ऐसा दो का लक्ष छोड दे. अभेद अकरूप यीज है, आहाहा ! अबद्धस्पृष्ट, सामान्य वस्तु जो ध्रुव है उस पर दृष्टि देनेसे, अभेद पर दृष्टि देनेसे सम्यग्दर्शन होता है. शक्ति पर दृष्टि देनेसे (सम्यग्दर्शन) नहीं (होता). क्योंकि शक्तिका परिणामन द्रव्यके परिणामनमें ठीकता है. समजमें आया ? इसमें लाटीके (व्यापारमें) कुछ सूजे ऐसा नहीं है.

श्रोता : लाटीमें भी परिणामन तो होता है.

पूज्य गुरुदेवश्री : लेकिन वह परिणामन क्यों होता है ? यह परिणामन शक्ति है इसदिये परिणामन होता है, ऐसा नहीं. द्रव्यका परिणामन होनेसे गुणका परिणामन साथमें अविनाभीरूपसे होता है, आहाहा ! समजमें आया ? ऐसा करके द्रव्य पर दृष्टि करानी है. समजमें आया ? द्रव्य पर दृष्टि होने से सारा द्रव्य अनंत शक्तिका गुणरूप द्रव्य स्वयं परिणामता है तो उसमें गुणकी परिणति आ गई. परंतु यह गुणकी परिणति गुणसे नहीं (ठीकती). (बदिक) द्रव्यसे ठीकती है. समजमें आया ? आहाहा ! लो, ऐसी बातें (हैं) ! इसमें क्या समजना ?

धर्म करना इसमें (ऐसा सब समजना) ? भाई ! धर्म करना हो तो ऐसी यीज है कि, जो शक्ति है वह धर्म है और वस्तु है यह धर्मा है. वस्तु धर्मा है और शक्ति-गुण कइो कि धर्म कइो (अक ही बात है). धर्म यानी त्रिकाल स्वभाव. (यहां कइा न) ? “द्रव्यके स्वभावभूत...” है ? “द्रव्यके स्वभावभूत ध्रौव्य-व्यय-उत्पाद्से आदिंगीत स्पर्शित (सदश और विसदश)..” सदश (यानी) ध्रुव, विसदश वह उत्पाद्-व्यय(रूप) पर्याय. सदश वह अविद्ध. विसदश यह विद्ध (है). उत्पाद्-व्यय, उत्पाद्-व्यय दो (हुआ न ?) अक भाव और अक अभाव ऐसा विद्धभाव (है) और सदश है यह अविद्ध-अकरूपभाव (है). इसमें उत्पन्न होना और व्यय होना, ऐसा भेद नहीं है, आहाहा ! समजमें आया ? ऐसा है. लोगोंको

ऐसा लगे कि सोनगठने यह नया निकाला. नया तो नहीं है, बापू ! लोग भुदके लिये आते हैं न ? भाषा तो सरल है. भाव लगे उंचे हो ! आहाहा !

श्रोता : गंभीर भाव सुननेके लिये आते हैं.

पूज्य गुरुदेवश्री : (गंभीर भाव) सुननेको आते हैं. बात सखी है. मार्ग तो ऐसा है, भाई ! कि शक्तिका वर्णन किया लेकिन शक्तिसे परिणामन नहीं उठता. कहा तो सही. क्या कहा ? कि, “सदश और विसदश जिसका रूप है जैसे एक अस्तित्वमात्रमयी परिणामशक्ति.” देखा ? एक सत्तारूप परिणाम है. है तो शक्ति लेकिन उसका परिणामन भी परिणाममें आता है. आहाहा !

परिणामना-परिणाम होना, यह अस्तित्वमात्र शक्तिका कार्य है. तो भी अस्तित्वमात्र शक्तिका कार्य है तो अस्तित्वशक्तिसे परिणाम उठता है, ऐसा नहीं. यहां तो शक्तिका वर्णन किया है. समझमें आया ? परंतु परिणाम द्रव्यसे उठता है. ‘द्रव्य-द्रवती’ (परंतु) ‘गुण-द्रवती’, ऐसा नहीं. द्रव्यत्वके कारणसे गुणको द्रवती, ऐसा भी कहनेमें आता है. द्रव्यत्व गुण है न इसमें ? तो इसमें गुण-द्रव्य है, पर्याय-द्रव्य है, द्रव्य-द्रव्य है, ऐसा कहनेमें आता है. परंतु वास्तवमें तो ‘द्रव्य द्रवति गच्छति एति’ ऐसा शब्द है. पंचास्तिकायकी ८ वीं गाथामें मूल पाठमें ऐसा है कि, ‘द्रवती एति द्रव्यम्’ ‘द्रवती गच्छति’ (जैसे) दो शब्द वहां लिये हैं. क्योंकि एक तो द्रवति यानी स्वभावरूप द्रव्य है और गच्छति यह विभावरूप भी एक द्रव्य है. वहां ऐसा लेना है. यहां वह नहीं लेना है. समझमें आया ?

यहां तो स्वभावरूप शुद्ध परिणामन करे ऐसी शक्तिका वर्णन है, आहाहा ! एक जगह कुछ कहे और दूसरी जगह कुछ कहे. परंतु क्या अपेक्षा है, यह न समझे (तो विरोधाभास लगे). पंचास्तिकायकी ८ वीं गाथामें तो ऐसा लिया है, ‘द्रव्यम्-गच्छति’ जैसे दो शब्द हैं. तो द्रव्य भुद द्रवित होता है. जैसे पानी तरंग उठाता है, वैसे वस्तु तरंग उठाती है. पर्यायका तरंग (उठता है). द्रवति (यानी) द्रवित होता है. आहाहा ! द्रव्य स्वयं ‘द्रवति’ (द्रवित होता है). गुण-द्रवति कहनेमें आता है, वह भेदका कथन है. बादमें कहनेमें आता है कि, ‘यह परिणति गुणकी है’. ज्ञानकी है, दर्शनकी है, चारित्रकी है, आनंदकी है. परंतु यह आनंदकी सब परिणति उठती है, यह (सब) आनंद गुणसे नहीं (उठती). सम्यग्दर्शनकी पर्याय भी श्रद्धागुणसे उठती है, ऐसा नहीं.

आत्मा (एक) वस्तु है और एक श्रद्धा नामकी (उसमें) शक्ति है. सम्यग्दर्शन जो है यह तो पर्याय है. लेकिन अंदर एक श्रद्धा नामकी शक्ति त्रिकावी ध्रुव (है). श्रद्धाशक्तिका परिणामन समकित पर्याय है (यह श्रद्धा गुणके कारणसे) परिणामता है, ऐसा नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? त्रिकावी द्रव्य जो भगवान आत्मा ! देखा न ! कैसे कहा ? आहाहा ! बात ये (कहनी है) कि, गुणभेदकी दृष्टि भी छोड़ दे. कोई गुण (अकेला, स्वतंत्र) परिणामता

नहीं (लेकिन) द्रव्य परिणामता है (तो) गुणका परिणामन हो जाता है. गुण परिणामता है, ऐसा भेद करनेसे तो गुण स्वयं अके-अके त्रिभूत द्रव्य हो जाये. समझमें आया ? आहाहा ! सूक्ष्म बात है, भाई ! यह तो वीतराग मार्ग (है), बापू ! आहाहा ! तदन वीतरागता बताते हैं. यह शक्ति बताकर भी वीतरागता बताते हैं और वीतरागता इसका फल आता है. कैसे ? कि द्रव्यका आश्रय करे तो वीतरागताका फल आता है. गुणका आश्रय करे तो गुण परिणामति ऐसी नहीं है. द्रव्य परिणामता है, आहाहा ! समझमें आया ? तो द्रव्य भुद यीज अभंडरूप (है). द्रव्य शब्द ही ऐसा कहता है कि, 'द्रवति द्रव्यम्' द्रव्य शब्द ऐसा नहीं कहता है कि, 'गुण द्रवति वह द्रव्यम्' समझमें आया ? थोडा सूक्ष्म है, लेकिन उसे जानना तो पड़ेगा न ? आहाहा !

पानीमें से जो तरंग उठते हैं, वह समुद्रमें से उठते हैं. अकेले पानीसे (तरंग) नहीं (उठते). समुद्रमें से तरंग उठते हैं. ऐसे दरिया भगवान आत्मा ! अके समयमें अनंत शक्तिका समुदाय अथवा अनंत स्वभावका सागर अथवा अनंत शक्तिका संग्रहालय, अनंत शक्तिका संग्रहका आलय-स्थान अथवा अनंत गुणका गोदाम द्रव्य (है). गुण गोदाम नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! अनंत गुणका गोदाम (आत्मा) है, आहाहा ! समझमें आया ?

श्रोता : ऐसा समझे बिना धर्म नहीं हो सकता ?

पूज्य गुरुदेवश्री : परंतु तत्त्व समझे बिना (धर्म कैसे हो) ? तत्त्व कैसा है ? और कैसा परिणामन (होता है) ? कैसी शक्ति ? (ये समझे) बिना कैसे धर्म (होगा) ?

श्रोता : लेकिन तिर्यक कहां समझते हैं ?

पूज्य गुरुदेवश्री : तिर्यक अंदर समझते हैं. शब्दोंका ज्वाल नहीं है परंतु वस्तु यह परिणामति है. यह (शुद्ध) परिणामति है, यह संवर-निर्जरा है और पूर्ण (पुरुषार्थ) करुं तो भोक्ष होगा. और यह आनंदस्वरूप द्रव्य है और पर्यायमें विकल्प होता है यह दुःख है. ऐसा ज्ञान तो (है). भाषा भले न हो. भाषाका ज्वाल न हो लेकिन भावका तो भासन होता है. समझमें आया ? भोक्षमार्ग प्रकाशकमें दिया न ? बहुत दिया है. भावभासन का अर्थ कि, भावका ज्ञान तो है (भले ही) नाम याद न हो, नाम न (आते) हो इससे क्या है ?

तिर्यक समकिति है. जुगलियामें क्षायिक समकिति तिर्यक भी है. क्या कदा ? पड़ले तिर्यकका आयुष्य बंध गया हो और बादमें क्षायिक समकित हुआ तो वह क्षायिक समकित लेकर जुगलियामें जाते हैं. समझमें आया ? वह समकित लेकर मनुष्यमें (भी) जाते हैं. मनुष्यका आयुष्य बंध गया हो तो वह मनुष्यमें ही जाते हैं. पड़ले आयुष्य बंध गया हो तो क्षायिक समकित लेकर वहां तिर्यकमें भी जाना पड़े. मनुष्यमें भी (जाना पड़े). परंतु वह मनुष्य जुगलियामें (जाते हैं). महाविदेहमें मनुष्य मरके मनुष्य होता है वह तो मिथ्यादृष्टि (भी) होता है.

आहाडा ! समजमें आया ? आहाडा ! ये सब नियम हैं ! सिद्धांतके – वस्तुस्वरूपके ये सब नियम हैं. ये नियम किसीने किये नहीं लेकिन ये नियम अइसा है ही. भगवानने नहीं बनाये. भगवानने तो जाना अइसा कडा.

(यहां) ये कडा कि, “**अेक अस्तित्वममात्रयी..**” (अैसी) भाषा है न ? भले तीन भेद हुअे लेकिन तीनका अेक अस्तित्वमयी परिणाम शक्ति (है). तीनों मिलकर अेक अस्तित्व है, आहाडा ! द्रव्यका सत्, गुणका सत्, पर्यायका सत्, अैसा आता है. लेकिन तीन द्रव्य नहीं (हैं). द्रव्य, गुण और पर्याय मिलकर अेक सत्ता है. तीनों मिलकर अेक सत्ता है. यह १८ वीं शक्ति हुंई.

यिद्विवासमें तो बहुत दिया है. दो बात ली हैं. अेक तो द्रव्यमें परिणामन शक्ति, अैसा दिया है. और अेक वस्तुमें परिणाम शक्तिका क्या स्वरूप ? यह दिया है. दो (बात) ली है. समजमें आया ? इसमें है न ? परिणामन शक्ति द्रव्यमें है. पहले अैसा बोल दिया है. परिणामन शक्ति द्रव्यमें है. द्रव्य परिणामता है तो गुण परिणामते हैं. गुण परिणामते हैं तो द्रव्य परिणामता है, अैसा नहीं. अेक बात यह (ली है). और दूसरी बात अैसे (ली है कि), वस्तु विषे परिणाम शक्तिका वर्णन. ये दो अधिकार यला है. वस्तु विषे परिणाम शक्तिका वर्णन और उसमें परिणामन शक्ति द्रव्यमें है, उसका वर्णन (है). अेक शक्तिका दो प्रकारसे वर्णन दिया है. समजमें आया ? यह बात सर्वज्ञके सिवा कहीं नहीं है. और द्रव्य, गुण, पर्याय तीनों यीज और कहां है ? यहां ओघे—ओघे आत्मा निर्मल है और शुद्ध है और अनुभव करो (अैसा कहे, लेकिन) उसमें क्या हुआ ? ओघे—ओघे समजे ? नहीं समजे ? अेक बार कडा था न ? समजे बिना यलना उसे ओघे—ओघे कडते हैं. आहाडा !

यिद्विवासमें तो दो बात ली हैं. द्रव्यमें परिणामन शक्ति है. उसका वर्णन दिया बादमें वस्तु विषे परिणाम शक्तिका वर्णन है. समजमें आया ? उसमें पहलेमें यह दिया कि, गुण परिणामते हैं, अैसा नहीं. (परंतु) द्रव्य परिणामता है तो गुण परिणामता है. यह परिणामन शक्ति द्रव्यमें है. अैसा वहां दिया है. और पीछेमें तो वस्तुमें परिणाम शक्ति है, उसका स्वरूप क्या (है) ? तो उसमें तो बहुत छिस्सा दिया है कि, (वस्तु) परिणामति है तो त्यागउपादानशक्ति परिणामति है, साधारण परिणामता है, असाधारण परिणामता है. उसमें अनेक शक्तिका वर्णन है. १५-२० शक्तिका वर्णन है. समजमें आया ?

अपना द्रव्य (अपनेमें है). दूसरेका द्रव्य दूसरेमें रडा. यहां तो अपना द्रव्य जो वस्तु है, उसमें ‘**स्वभावभूत..**’ स्वभावभूत क्यों कडा ? यह स्वभाव ही उसका है, स्वभाव ही अैसा है कि, ध्रुव, व्यय, उत्पादको आदिगन करना अथवा उसको युंभना, अपने गुण—पर्यायको युंभे, यह द्रव्य स्वभाव है. अपने गुण—पर्याय सिवा दूसरेको युंभे या छुअे, अैसा स्वभाव नहीं है. समजमें आया ? यह (समयसारकी) तीसरी गाथामें आया है.

प्रत्येक पदार्थ अपने गुण और पर्यायरूपी धर्मको चुंभते हैं. चुंभते हैं नाम छूते हैं. परके द्रव्य, गुण, पर्यायको कभी (कोई) द्रव्य छूता नहीं. कर्मके उदयको आत्माकी विकारी पर्याय कभी छूती नहीं और कर्मका उदय रागको कभी छूता नहीं, आहाहा ! समजमें आया ? (लोग) थिक्काते हैं न ? कर्मके कारण हैरान हो गया, हैरान हो गया. लेकिन कर्मको छूता भी नहीं तो हैरान कहांसे हो गया ? समजमें आया ? तेरी उलटी परिणामन शक्तिसे तुझे रभउना पडता है. अशुद्धता भी तेरी बडी (और) शुद्धता भी तेरी बडी.

अनुभव प्रकाशमें आया है. तेरी अशुद्धता भी बडी. (वह) तेरे कारण से (है), कर्मके कारण नहीं. अनंत तीर्थकरोंका श्रवण किया, व्याख्यान सुना, छन्दो सुनते थे वहां गया परंतु तेरी अशुद्धता बडी कि तू पलटा नहीं किया. समजमें आया ? आहाहा ! तेरे परिणाममें पलटा नहीं हुआ. भगवानके उपदेशमें तो पर्यायकी दृष्टि छोडकर द्रव्यस्वभावकी दृष्टि कराते हैं. गुणका वर्णन करे लेकिन गुणका वर्णन गुणीको बताने के लिये करते हैं.

त्रिद्विवासमें तो ऐसा भी लिया है कि, जैसे-जैसे गुणका, पर्यायका स्पष्ट कथन आता है, वैसे-वैसे सम्यक्दृष्टिको आनंदके तरंग उठते हैं. उसमें है. परिणामन शक्ति कडा था न ? परिणामनशक्ति द्रव्यमें है. उसमें वर्णन है. 'विशेषता शिष्यको प्रतिबोध कीजिये. तब ज्यों-ज्यों शिष्य गुरुके प्रतिबोधका, गुणका स्वरूप जाणी विशेष भेद होता जाये तैसे-तैसे शिष्यके आनंदकी तरंग उठे' सम्यक्की दृष्टि लेना है न ?

श्रोता : भेदसे तरंग कैसे उठे ?

पूज्य गुरुदेवश्री : तरंग उठते हैं. भेदसे अभेद को दिखाना है तो अभेद पर दृष्टि पडती है तो तरंग उठते हैं, ऐसा कहते हैं. भेद बताना है परंतु भेदसे अभेद बताना है. जैसे-जैसे गुण बताते हैं, वैसे-वैसे गुण अभेद द्रव्यको बताते हैं. इसलिये पहले कडा था न ? समजे ? इसमें आया है. इसमें ही आया है. 'यह परिणामन शक्ति द्रव्यते उठे हैं, गुणते नहीं' समजमें आया ? क्यों ? 'द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणा' द्रव्यके आश्रयसे गुण है. गुणके आश्रयसे गुण नहीं. 'गुण, पर्यायवत् द्रव्यम्' कडा. यह भी कडा है. 'पर्यायवत् द्रव्यम्' कडा. गुण नहीं कडा. पर्यायवन्त द्रव्य कडा. पर्यायवन्त गुण नहीं कडा, आहाहा ! समजमें आया ? पर्यायवन्त गुणको नहीं कडा, पर्यायवन्त द्रव्यको कडा. क्योंकि दृष्टि द्रव्य पर करानी है न ? आहाहा ! थोडा सूक्ष्म है. तत्त्वज्ञान बहुत सूक्ष्म है. बापू !

अभी तो स्थूलता ऐसी हो गई, बस ! व्रत करो, अपवास करो, दान करो, शील, तप (करो). सवेरे आया था न ? मिथ्यादृष्टिका व्रत, तप, दान, शील सब बंधका कारण है. यहां तो कहते हैं कि, व्रत और तप हमारे निश्चयके साधन हैं. अब इन दोनों बातोंका कहां मेल करना ?

श्रोता : लोग सब छोड देंगे.

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : કૌન છોડે ? એસે ભાવ આયે બિના રહે નહીં. જિસ સમય જો ભાવ આતા હૈ વહ તો આતા હી હૈ. દૃષ્ટિમેં ક્યા હૈ ? ઇતની બાત હૈ. દૃષ્ટિ ઉસસે ધર્મ માનતી હૈ ? યા દૃષ્ટિ રાગકો જ્ઞાતાકે રૂપમેં જાનતી હૈ ? (શુભભાવ) તો હોંગે. જ્ઞાનીકો ભી શુભકે કાલમેં અશુભસે બચનેકો એસા કહનેમેં આતા હૈ, એસા પાઠ હૈ. સમજમેં આયા ? ‘અન્ય સ્થાનસે બચનેકો..’ એસા પંચાસ્તિકાયકી ટીકામેં (આયા) હૈ. પરંતુ વહ ભી વ્યવહાર હૈ. વાસ્તવમેં તો ઉસ સમયમેં શુભ હોનેકા હૈ તો આતા હી આતા હૈ. ઉસકે ક્રમમેં શુભ આના હૈ તો આતા હી હૈ. પરંતુ અજ્ઞાની ઉસે ઉપાદેય માનતા હૈ. ધર્મી ઉસકો હેય માનતે હૈ, ઇતના ફર્ક હૈ. સમજમેં આયા ? આહાહા ! યે ૧૯ વીં શક્તિ કહી.

ઇસ શક્તિકા ભી અનંત શક્તિમેં રૂપ હૈ. પ્રત્યેક શક્તિ અપને ધ્રુવ-વ્યય-ઉત્પાદકો સ્પર્શતી હૈ ઓર ઉસમેં ભી અસ્તિત્વમયી પરિણામ શક્તિકા પ્રત્યેક શક્તિમેં રૂપ હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ? એસી સૂક્ષ્મ બાત (હૈ). ઉસમેં તો સીધી પરિમા લે લો, દો-ચાર પરિમા, દસ પરિમા, ગ્યારહ પરિમા (લે લો). (ઇસસે) જ્યાદા હો તો (ભી) કોઈ હર્જા નહીં. ૨૫ હો તો ૨૫ લે લો. અંદર ભાન કહાં હૈ ?

એક બાર હમ કુરાવલીમેં ગયે થે. વહાં એક (વ્યક્તિકો) મિલે થે. વે કહતે થે, ફિરોજાબાદમેં સબ ઇકઠ્ટે હુએ થે તો ઉસમેં એસા આયા કિ, પરિમા લો, પરિમા લો. તો ઉસને કહા કિ, મૈને પરિમા લી, લેકિન મેરે પાસ (પરિમા) આયી યા નહીં આયી, વહ માલૂમ નહીં પડતા. પ્રતિ સમેંલનમેં મુજે સાત પરિમા દી સહી, પરંતુ મેરે પાસ પરિમા આયી (ઇસકી) મુજે ખબર નહીં. અરે..! યહ માર્ગ તો વીતરાગકા હૈ, ભાઈ ! આહાહા ! પરિમા તો કિસકો (હોતી હૈ) ? જિસકો સમ્યગ્દર્શન હૈ, આત્માકે આનંદકા અનુભવ હૈ. ઉસકો જબ આનંદકી વિશેષ ધારા હોતી હૈ (તો) ઉસમેં યે પરિમાકા વિકલ્પ ઊઠતા હૈ. સમજમેં આયા ?

સમાધિશતકમેં એસા કહા હૈ કિ, ‘ધૂપમેં ખડે રહનેસે છાંવમેં ખડા રહના અચ્છા (હૈ)’. અવ્રતમેં ખડે રહને સે વ્રતમેં (રહના) અચ્છા હૈ. એસા વહાં કહા. પરંતુ વ્રત કિસકો હોતા હૈ ? અજ્ઞાનીકો વ્રત હોતા હૈ ? જિસકો વ્રતકા વિકલ્પ ઊઠતા હૈ ઉસકો તો સમ્યગ્દર્શન ઉપરાંત અંદર શાંતિકી વૃદ્ધિ હુઈ (હોતી) હૈ. સમજમેં આયા ? ઉસકો (વ્રત હૈ વહ) છાયા હૈ. ઉન લોગોંને યહ લે લિયા કિ, ‘દેખો ! વ્રતકો છાયા કહા હૈ ઓર અવ્રતકો (ધૂપ કહા હૈ)’ પરંતુ કિસકો ? સમ્યક્દૃષ્ટિમેં અવ્રતપને રહના ઉસકે બજાય વ્રતકા વિકલ્પ (ઊઠતા હૈ), ઇસકી અંદરકી સ્થિતિમેં શાંતિકી વૃદ્ધિ હોતી હૈ. સર્વાર્થસિદ્ધિકા દેવ ચૌથે ગુણસ્થાનમેં એક ભવતારી હૈ. ઉસસે વ્રતકા જિસકો વિકલ્પ ઉત્પન્ન હુઆ, પંચમ ગુણસ્થાનમેં ઉસકી શાંતિ સર્વાર્થસિદ્ધિકે દેવ સે ભી વિશેષ હૈ, આહાહા ! ઇસ શાંતિકે સ્થલમેં—સ્થાનમેં જો પરિમાકા વિકલ્પ ઊઠતા હૈ, ઉસકો (વહાં) છાયા કહા હૈ. વાસ્તવિક છાયા તો એસી શાંતિ ઉત્પન્ન હુઈ હૈ, વહ છાયા હૈ. પંચમ ગુણસ્થાનકી શાંતિ ઉત્પન્ન હુઈ ન ? કિ, ચૌથે ગુણસ્થાનમેં વિકલ્પ આયા ઓર વ્રત હો ગયા ?

समजमें आया ? आहाहा ! यह १८ वीं शक्ति (पूरी) हुई.

अब २० वीं शक्ति. “**कर्मबंधके अभावसे व्यक्त किये गये, सलज स्पर्शाद्विशून्य ऐसे आत्मप्रदेशस्वरूप अमूर्तत्वशक्ति.**” क्या कहते हैं ? आत्मामें अमूर्त नामकी शक्ति है. कर्म बंधनके अभावसे यह अमूर्त शक्तिका परिणामन होता है. यहां यौथे गुणस्थानमें भी जितना कर्मका अभाव हुआ, उतना अमूर्त शक्तिका परिणामन भी हुआ, आहाहा ! क्योंकि अनंत शक्ति साथमें है न ? तो अनंत शक्तिका समुदाय द्रव्य है और जिसको द्रव्यदृष्टि हुई तो अनंत शक्तिका अंश व्यक्तपने प्रगट परिणामनमें आता है; तो अमूर्त शक्तिका भी परिणामन यौथे गुणस्थानमें अमूर्त (अर्थात्) रागके अवलंबन बिना अमूर्तपना, अंदर शुद्ध परिणामन—अमूर्तता अनंत शक्तिकी व्यक्तताके साथमें अमूर्त शक्तिकी व्यक्तता—अमूर्तपना प्रगट होता है. समजमें आया ? आहाहा ! ऐसी व्याख्या (है) !

अभ्यास (डोना) याहिये, भाई ! यह मार्ग तो ऐसा (है). क्योंकि तिर्यक्यका दृष्टान्त तो (उसलिये आता है कि), तिर्यक्यको दूसरे शल्य बहुत छोते ही नहीं, तो उसको उस (स्वरूपकी) ओरकी दृष्टि हुई तो सब निकल गया. यहां तो बहुत शल्य रहे हैं, पूर्वके आग्रह (रहे हैं) तो बहुत शल्य है, उसे निकालनेके लिये अनेक प्रकारका सत्यका ज्ञान करना पड़ेगा. समजमें आया ? यह (दोनों के बीच) अंतर है. तिर्यक्यको तो ऐसा कोई शल्य नहीं (है). अकत्वबुद्धिका अक ही शल्य था, आहाहा ! यहां तो पंडिताई और वांचनमें बहुत आगे छो गया. भाई ! तो जितने विरुद्ध आग्रह है उतनी सखी समजन करके विरुद्ध आग्रहको छोडने के लिये विशेष ज्ञान करना पड़े. समजमें आया ? आहाहा !

यहां कहते हैं कि, “**कर्मबंधके अभावसे व्यक्त किये गये..**” भाषा देखो ! अमूर्तपना प्रगट किया. पर्यायमें तदन रागके संबंध बिना अपने पुरुषार्थसे जितना कर्मका अभाव हुआ, उतनी अमूर्तता, अनंत गुणोंकी अमूर्तता व्यक्तरूपसे अंशमें प्रगट हुई. समजमें आया ? “**ऐसे आत्मप्रदेशस्वरूप...**” क्या कहा ? आत्म प्रदेशरूप उसमें आत्म प्रदेशका अरूपी परिणामन छो गया. आहाहा ! है तो अरूपी परंतु कर्मके संबंधसे उसको रूपी भी कहनेमें आता है. समजमें आया ? और समकितिकी पुण्य-पापका विकार होता है उसको भी रूपी कहा है. पुद्गलका परिणामन कहा न ? तो रूपी कहा है. समजमें आया ? तो यहां जितना द्रव्य स्वभावकी दृष्टिसे अमूर्त शक्तिका (परिणामन हुआ) उतना रागका अभावरूप अमूर्तपना — व्यक्तरूपसे शुद्धका परिणामन होता है. समजमें आया ?

सर्वविशुद्ध अधिकारमें भावार्थमें लिया है कि, यौथे गुणस्थानमें भी अज्ञोगपना (अर्थात्) जोगके अंश(का) अभावका भी परिणामन होता है. समजमें आया ? अक्रियमें कहा है. बादमें अक्रिय आयेगा कि, (यह) अक्रियपना जो है वह जोगके अभावका अक्रियपना है तो अक्रिय शक्ति जो है वह कंपन बिनाकी अज्ञोग शक्ति है. इस अज्ञोग शक्तिके साथ अमूर्तपना

भी साथमें है, आहाहा ! तो जब अपने द्रव्यस्वभावका आश्रय हुआ तो पर्यायमें यह अक्रिय शक्ति—अज्ञेयगुणकी शक्तिका व्यक्त अंश प्रगट हुआ. तबले पूर्ण (प्रगट) नहीं (हुआ) हो. समझमें आया ? आहाहा ! आंशिक अक्रिय व्यक्तपने हो गया, आहाहा ! समझमें आया ? ‘समजाय छे ?’ आहाहा ! ‘कांई-कांई’ समजाय छे ? ‘कांई’ का अर्थ वास्तविक समजनका परिणामन तो अवलौकिक है परंतु किस पद्धतिसे कलनेमें आता है ? उस पद्धतिकी गंध भी आती है ? ‘कांई’ का अर्थ यह है. समझमें आया ? किस ज्यालसे, किस पद्धतिसे, इसकी रीत क्या है ? जो कलनेमें आती है उसकी गंध आती है ? कि यह रीत है. अनुभव हो जाये तो वह तो प्रत्यक्ष समजन हो गई. आहाहा ! परंतु अनुभव पहले भी क्या स्थिति है ? द्रव्यकी, गुणकी, पर्यायकी स्वतंत्रता आदिकी (क्या स्थिति है) ? उसके लक्षमें उसको पहले आना चाहिए. समझमें आया ?

कर्मसे विकार होता है और विकारसे दुःख है, तो-तो कर्मसे दुःख हुआ. कर्मसे विकार और विकारसे संसार तो कर्मसे संसार हुआ. संसार तो अपनी विकारी पर्याय है. समझमें आया ? आहाहा !

प्रवचनसारमें तो वहां तक कहा है — जैन साधु है, द्विगंबर है, २८ मूलगुणका पालन करता है, पंच महाव्रत पालता है, तो भी संसारी है. यह संसार तत्व है, जैसे दिया है. प्रवचनसारकी आभीरकी पांच गाथा है. पांच रत्नकी यह गाथा है. एक गाथामें जैसे दिया है. जैसे-जैसे पंच महाव्रत पावे, २८ मूलगुण पावे, हजारों रानीयांको छोड़े, फिर भी वह संसारी है. संसार तत्व है. क्यों ? राग और पुण्यको अपना मानते हैं, यह संसार तत्व है. (यह) मोक्षका मार्ग भी नहीं और मोक्ष भी नहीं, आहाहा ! समझमें आया ?

यहां कहा, “कर्मबंधके अभावसे व्यक्त किये गये...” भाषा (तो देजो) ! कोई कहे कि कर्मबंधका अभाव तो १४ (वे गुणस्थानमें) होता है. तो (यहां) ऐसा क्यों कहा ? यहां तो अंतरमें द्रव्यदृष्टि होकर जितनी शक्तिकी व्यक्तता उत्पन्न हुई, उतनेमें तो कर्मबंधका अभाव ही है, आहाहा ! समझमें आया ?

“कर्मबंधके अभावसे व्यक्त किये गये सलज..” देजा ? (सलज) स्वभावी. “...स्पर्शादि शून्य (—स्पर्श, रस, गंध और वर्णसे रहित) जैसे आत्मप्रदेशस्वरूप (अमूर्ततत्त्वशक्ति)” आत्माके प्रदेश अरूपी—अमूर्त शक्तिकी व्यक्तता हो गई, आहाहा ! आनंदकी धारा बहे, यह अमूर्त स्वभाव है, ऐसा कहते हैं. समझमें आया ? यह २० (वीं शक्ति) हुई. अब अपने यहां विशेष लेना है.

(अब) २१ (शक्ति). “समस्त कर्मोंके द्वारा किये गये...” ‘कर्मोंके द्वारा किये गये’ ऐसा शब्द है. निमित्तके आश्रयसे हुआ वह कर्मों द्वारा किया गया, ऐसा कलनेमें आता है. निमित्तके वशसे जो हुआ—वह कर्म द्वारा हुआ, ऐसा कलनेमें आता है. आहाहा ! ऐसा ईर्क पडता

है. समजमें आया ? “समस्त कर्मोंके द्वारा...” देजो ! आठों कर्म हैं न ? “..किये गये, ज्ञातृत्वमात्रसे भिन्न...” जानने-देजनेके परिणामसे (भिन्न है). कर्मके निमित्तसे—वशसे हुअे रागादि, उसका अकर्ता आत्माका स्वभाव है. समजमें आया ? “...ज्ञातृत्वमात्रसे भिन्न जो परिणाम...” ज्ञातृत्वमात्रसे भिन्न परिणाम. कौनसे (परिणाम) ? परिणाम लिये हैं. शुभ-अशुभ राग ज्ञातापनेसे भिन्न परिणाम हैं. उसको परिणाम लिया (है). कर्मके निमित्तके वशसे जो राग-द्वेष परिणाम समकित्तिको भी उत्पन्न हुआ वल परिणाम है. कर्मके निमित्तके वश लोकर वल परिणाम (हुअे) हैं. समजमें आया ? उस परिणामका कर्ता आत्मा नहीं (है). आत्मामें अकर्तृत्व नामका गुण है, आलाहा ! रागको करना ऐसी कोठ त्रिकावी शक्ति नहीं. पर्यायमें योग्यता है. रागका परिणामन करना, ऐसी पर्यायमें योग्यता है. परंतु गुणमें ऐसी कोठ यीज नहीं कि, राग-विकाररूप परिणामे. सब शक्ति निर्मल आनंदकंद है, आलाहा !

यहां तो कलते हैं कि, आत्मामें अकर्तृत्व नामकी शक्ति है. अकर्तृत्व शक्तिका कार्य क्या ? कि जो दया, दान, राग आदिके परिणाम उत्पन्न लोते हैं, उसका कर्ता न लोना, ऐसी अकर्तृत्व शक्ति है. (राग) न करनेकी (शक्ति है). राग नहीं करना. राग है परंतु कर्तृत्व नहीं है, ऐसी अक शक्ति है. सूक्ष्म है, आलाहा !

वैसे तो कलते हैं न ? श्वेतांबरमें अनाथीमुनिके अधिकारमें आता है. एसे (पढकर) लोग लहुत कलते हैं, ‘वैतरणी नदीकी त्मांति आत्मा कर्मको करे और आत्मा कर्मको लोगवे’ नदी लोती है न ? नरकमें वैतरणी (नदी है). (उसमें) लहुत कीडे (हैं). जलर जैसे अंदर उष्ष पानी (है). नरकमें अग्निकी ज्वाला जैसे पानीकी नदी यलती है. परमाधामी (नारकीको) वहां डालते हैं. आलाहा ! समजमें आया ?

यहां राजकुमार लो, २५-३०-४० सालकी उम्र लो और मरके नरकमें जाये, आलाहा ! (उसे) वैतरणी नदीमें (डाले). पलले तो पुद उपर जन्म लेता है फिर नीये गिरता है. जैसे लमरीका दर लोता है न ? लमरी (लंवरा). नरकमें ज्वको उत्पन्न लोनेके ऐसे भील लोते हैं. पलले वहां उत्पन्न लोते हैं फिर नीये गिरते हैं. समजमें आया ? नीये आताप, शीतकी पीडा (लहुत) है. तो कलते हैं कि, श्रेणिक राजा क्षायिक समकित्तिकी—यौथे गुणस्थानमें (हैं). (वे) वहां गये हैं लेकिन वे दुःभके कर्ता नहीं. आलाहा ! कला न ? ज्ञातापनासे भिन्न. ज्ञानीको जानने-देजनेके परिणाम लोते हैं. सम्यक्दृष्टिको-धर्मीको तो ज्ञायक स्वरूपकी दृष्टि लोने से, पर्यायमें जानने-देजनेका परिणाम लोता है. यल परिणाम उसका कार्य और (उस) परिणामके वे कर्ता (हैं). परंतु एस ज्ञाता-दृष्टाके परिणामसे भिन्न राग आदिके परिणाम उसका आत्मा कर्ता नहीं, आलाहा !

व्यवहार श्रद्धाका कर्ता आत्मा नहीं, ऐसा कलते हैं, आलाहा ! व्यवहार श्रद्धा यल राग है. वल प्रश्न ठीठा था न ? यहां से ऐसा कलनेमें आया था कि, लार्थ ! देव, गुरु,

शास्त्रकी श्रद्धा करे यह मिथ्यात्व नहीं (बल्कि) राग है. परंतु रागको धर्म माने तो मिथ्यात्व है.

भाषिया यर्थांमें ये प्रश्न ठीका है. क्या देव, गुरु, शास्त्रकी श्रद्धा यह मिथ्यात्व है ?
 ऐसा प्रश्न ठीकाया. यहां कोई देव, गुरु, शास्त्रकी श्रद्धा करना यह मिथ्यात्व नहीं. इस पर
 द्रव्यकी श्रद्धा करना यह शुभराग है परंतु रागको धर्म मानना, ये मिथ्यात्व है. देव, गुरु,
 शास्त्रको मानना अलग बात है और माननेकी पर्यायको धर्म माने, वह अलग चीज है,
 आलाहा ! समझमें आया ? देव, गुरु, शास्त्रकी श्रद्धा(का) भाव तो होता है (यह) व्यवहार
 श्रद्धा (है). जहां तक निश्चय श्रद्धा पूर्ण न हो, वहां तक व्यवहार श्रद्धा आती है.

द्रव्य संग्रहमें ४७ वे श्लोकमें कहा न ? 'दुविहं पि भोक्खहेत्तं ज्ञाणे पाउणदि जं मुणी
 णियमा' अंदरमें ज्ञायकभावका जहां ध्यान लगा तो निर्विकल्प ज्ञान, दर्शन, यारित्रकी पर्याय
 प्रगट हुई कि, यह तो निश्चय मोक्षमार्ग है और जितना राग बाकी रहा उसको आरोपसे
 व्यवहार (मोक्ष) मार्ग कहा—(मोक्षमार्ग) है नहीं. है नहीं उसको (मोक्षमार्ग) कहा, (इसका)
 नाम व्यवहार (है). (व्यवहार) है सही लेकिन कर्ता नहीं, आलाहा !

आत्मामें शुभभावका कर्तापना (हो) ऐसी कोई शक्ति ही नहीं. रागका अकर्तापना और
 ज्ञातापनाका परिणाम (हो), यह उसकी शक्ति है, आलाहा ! ऐसा (सुननेको) कहां (हो)
 घडीकी इरसद है ? अक तो स्त्री, पुत्रमें मशगुल पडा हो, आलाहा ! १०-२० घंटे उसमें
 जाये. नींदमें, जाने-पीनेमें, कुटुंब-कबीलेको राख रबनेमें (जाये), अरेरे...! उसका काल कहां
 जाता है ? ऐसा सुननेको वक्त मिले नहीं उसे निर्णय करनेका समय कब मिले ?

श्रोता : यहां आये तो (समय) मिले.

पूज्य गुरुदेवश्री : यहां आये तो भी अंदरमें निवृत्ति करे तब (समय) मिले. समझमें
 आया ? आलाहा ! दरबारको तो बहुत काम होते हैं. बाजरा हो, जुवार हो, गेहूं हो,
 तिल और शींग (होती है).

श्रोता : त्वालके गेहूं बहुत ठींये (होते हैं).

पूज्य गुरुदेवश्री : त्वालके गेहूं ठींयी धूलके (होते हैं). वह धूल है, आलाहा ! वह
 पुद्गलकी पर्याय है. यहां तो रागकी पर्याय भी पुद्गलकी है (और) आत्माकी नहीं. आत्मा
 तो ज्ञाता-दृष्टा है, आलाहा !

जानेकी क्रियाका कर्ता आत्मा नहीं, पानी पीनेका कर्ता आत्मा नहीं. दवाई दे उस क्रियाका
 कर्ता आत्मा नहीं, आलाहा ! परंतु उस संबंधी राग होता है, वह भी (आत्माकी) क्रिया
 नहीं.

श्रोता : पुस्तक पढ़नेकी क्रिया तो आत्माकी (है या नहीं) ?

पूज्य गुरुदेवश्री : वह राग है, विकल्प है.

श्रोता : (तो पुस्तक) नहीं पढ़ने ना ?

पूज्य गुरुदेवश्री : स्वभावके लक्षसे आगमका अभ्यास करना, ऐसा आया है. प्रवचनसारमें स्वभावको लक्षमें (रखकर अभ्यास करना, ऐसा आया है). अथवा कुंडकुंडआचार्यने कहा कि, अनंता सिद्धोंको पर्यायमें रखकर सुन ! 'वोच्छामि समयपाहुडमिणमो सुदकेवलीभणितं, वंदित्तु सव्वसिद्धे...' तेरी पर्यायमें अनंत सिद्धोंको (स्थापित करके सुन), ओहोहो !

अभी तो पढ़ले सुनने आया तो कहते हैं कि, अनंत सिद्ध जो केवली परमात्मा (हैं) उनको मैं तेरी पर्यायमें स्थापित करता हूँ. आहाहा ! अनंत केवलज्ञानीकी पर्याय, अनंत केवलीको मैं तेरी पर्यायमें स्थापन करता हूँ. उस 'वंदित्तु' का ऐसा अर्थ है. आहाहा ! ऐसी स्थापना की तो तेरी पर्याय अल्पज्ञपनेसे (ठिठ जायेगी). जैसे अनंत सर्वज्ञको स्थापन किये तो तेरी दृष्टि गुलांट भा जायेगी. द्रव्य पर लग जायेगी और द्रव्य पर लक्ष करके तू सुन ! समझमें आया ? उसका तात्पर्य यह है, 'सुन' ऐसा कहा न ? 'सुणो' – ऐसी बड़ी व्याख्या है. धवलमें यह गाथा है. 'सुणो' की व्याख्या बहुत लंबी की है. बहुत पन्ने हैं. 'सुनो' की गाथा है. आहाहा ! 'सुनो' का अर्थ तो यह है कि, अंदरमें तेरी चीज है यह तो अनंत सिद्धोंकी पर्यायसे भी अनंत गुण – शक्ति (वान) है. क्योंकि सिद्धकी एक समयकी पर्याय (है), ऐसी तो अनंती पर्यायका पींड तेरे पास है, आहाहा ! समझमें आया ? अनंत सिद्धोंको स्थापन करके तो समयसार (शूरे किया है). 'वंदित्तु सव्वसिद्धे ध्रुवमचलमणोवमं गदिं पत्ते। वोच्छामि समयपाहुडमिणमो...' मैं समयप्राप्त कहुंगा. 'मिणमो' (अर्थात्) यह प्रत्यक्ष श्रुतकेवलीने कहा हुआ-साक्षात् केवली और श्रुतकेवलीओंने कहा हुआ, यह (समयप्राप्त) कहुंगा. तो कहुंगाका अर्थ यह है कि, तू सुन ! उसका अर्थ हुआ कि नहीं ? आहाहा ! परंतु 'सुन' किस प्रकारसे ? कि अनंत सिद्धोंको पर्यायमें स्थापन करके सुन, आहाहा ! मैंने तो स्थापन किया ही है, आचार्य ऐसा कहते हैं, आहाहा ! परंतु तुझे सिद्ध होना है और सिद्धकी बात तुझे सुननी हो तो पर्यायमें सिद्धको स्थापन करके (सुन). सिद्ध होनेमें थोड़ा काल लगेगा. लेकिन स्थापन कर (और) बादमें सुन ! आहाहा ! (तो) तेरा स्वभाव पर दृष्टिका घोलन जायेगा और उससे तुझे सम्यग्दर्शन और सिद्धपद प्राप्त होगा, आहाहा !

यहां तो कहते हैं कि, राग आदिका परिणाम, ज्ञाता-दृष्टाके परिणामसे (भिन्न हैं). परिणाम तो दिया है. भाषा देओ ! क्या कहा ? "ज्ञातृत्वमात्रसे भिन्न जो परिणाम..." याहे तो तीर्थकर गोत्र बांधनेका भाव (हो, लेकिन वह) ज्ञाता-दृष्टासे भिन्न परिणाम है. 'सोलश कारण भावना (भाये) तीर्थकर पद पाय' आता है कि नहीं ? ये भाव है, यह राग है. वह ज्ञातृ परिणामसे भिन्न जातका है. उसका कर्ता आत्मा नहीं है, आहाहा !

(राग) आता है. वह तो कहा न ? "... समस्त कर्मोंके द्वारा..." 'कर्मोंके द्वारा' ऐसा शब्द है. "... किये गये ज्ञातृत्वमात्रसे भिन्न जो परिणाम..." 'समस्त कर्मोंके द्वारा किये गये...'

देओ ! आठ कर्मोंके द्वारा किये गये, उसे वश होकर हुआ – ऐसा उसका अर्थ है. कर्म क्या करे ? ‘कर्म बियारे कौन ? भूल मेरी अधिकाँ’ यह स्तुतिमें आता है. यहां तो भाषा ऐसी ली है. देओ ! (लोग) इसमें तकरार करे.

गोम्मटसारमें ऐसा पाठ (आता है). ‘ज्ञानावरणीय (कर्म) ज्ञानको रोके’ उसमें व्याख्या ऐसी (ली). स्वभावकी दृष्टिवंतको विकार पर्याय व्याप्य है और कर्म व्यापक है. यहां यह कडा कि, ‘आठ कर्मोंसे किये गिये’ अरे ! जैसे लिखा हुआ आये (तो लोग पकड लेते हैं).

श्रोता : (इसमें) क्या सही मानना ?

पूज्य गुरुदेवश्री : दोनों सही मानना. किस अपेक्षासे है (यह समझना) ? कर्मके द्वारा नाम आत्माके द्वारा विकार नहीं होता है, ऐसा कहते हैं. क्योंकि आत्मा और आत्माकी शक्ति तो शुद्ध पवित्र है. आहाहा ! उसके आश्रयसे पवित्रता उत्पन्न होती है, उसके आश्रयसे विकार नहीं उत्पन्न होता. कर्मके आश्रयसे विकार उत्पन्न होता है, तो यह शब्द कडा. समझमें आया ?

‘समस्त कर्मों’ भाषा ऐसी ली है. आठों कर्मोंके द्वारा किये गये, आहाहा ! ऐसा लिखा है तो ऐसा नहीं मान लेना कि, ‘कर्मसे हुआ है, कर्मसे हुआ है’ वह कर्मसे नहीं हुआ, बापू ! तेरी कमजोरीसे विकार परिणाम हुआ है. सम्यक्दृष्टिको भी कमजोरीसे विकारी परिणाम (होता है). परंतु ज्ञाता परिणामसे भिन्न परिणामका कर्ता नहीं, ऐसी आत्मामें अकर्तृत्व (नामकी) शक्ति है.

अकर्तृत्व शक्ति है तो यह अकर्तृत्वका परिणामन कब हुआ ? (कि) द्रव्य पर दृष्टि जानेसे (हुआ). अकर्तृत्वका सीधा गुण-गुणपने अकर्तृत्वरूपसे परिणामे, ऐसा नहीं. क्या कडा ? अकर्तृत्व गुण सीधा अकर्तापने परिणामे, ऐसा नहीं. गुणी जो अकर्तृत्व आदि शक्तिका पींड द्रव्य है, यह परिणामता (है तो) अकर्तृत्व शक्तिका परिणामन, ज्ञाता-दृष्टापने हो और रागका कर्ता न हो, (ऐसा परिणामन सहज होता है). थोडा ईर्कमें (बडा) ईर्क (पड जाता है). देओ ! वकालत की लेकिन यह कभी सुना नहीं होगा. ऐसा मार्ग है. आहाहा !

संस्कृतमें ऐसा है ‘सकलकर्मकृत ज्ञातृत्वमात्रा तिरिक्तपरिणामकरणो-परमात्मिका अकर्तृत्वशक्तिः’ भगवान आत्मामें ऐसी एक अकर्तृत्व शक्ति है कि, समस्त कर्मोंके निमित्तके वश जो विकार हुआ, वह ज्ञातृमात्रसे भिन्न है. ज्ञाता-दृष्टा-ज्ञायकभावसे तो ज्ञातापना होता है. ज्ञातापनाका कार्य अपना (और) यहां आत्मा कर्ता. “उन परिणामोंके करणके उपरमस्वरूप..” देओ ! विकारके परिणामसे उपरम स्वरूप (है). “.. (उन परिणामोंको करनेकी निवृत्तस्वरूप..)” अभावस्वरूप, “अकर्तृत्वशक्ति” है. विशेष वेंगे....



प्रवचन नं. २०

शक्ति-२१, २२ ता. ३०-०८-१९७७

सकलकर्मकृतज्ञातृत्वमात्रातिरिक्तपरिणामकरणोपरमात्मिका
अकर्तृत्वशक्तिः ॥२१॥
सकलकर्मकृतज्ञातृत्वमात्रातिरिक्तपरिणामानुभवोपरमात्मिका
अभोक्तृत्वशक्तिः ॥२२॥

समयसार, शक्तिका अधिकार यलता है. शक्ति अर्थात् क्या ? जो आत्मा है वह अनंत गुण रत्नाकर स्वरूप है. गुण कछो कि शक्ति कछो (अेक ही बात है). आत्मा अनंत शक्ति रत्नाकर – रत्नोंका समुद्र है. समजमें आया ? उसमें अनंत रत्न (अर्थात्) शक्ति (है). द्रव्य और शक्तिका भेद भी छोडकर, जिसने शक्ति और शक्तिवान अैसा विकल्प भी जिसने छोड दिया और शक्तिवानको जिसने अनुभवमें लिया, उसका नाम सम्यग्दर्शन, ज्ञान और स्वरूप आयरण यारित्र कछनेमें आता है. समजमें आया ? अेक शक्तिके व्यक्त परिणामनमें अनंत शक्तिका व्यक्त परिणामन अेक साथ उछलता है. यानी उछय डोता है. क्या समजना छसमें ? छसमें रुपयोंकी बात कहीं नहीं आयी.

यहां प्रतापगढसे कोछ आये थे. पहले पत्र आया था कि, छम तीर्थकर है. यार घाति कर्मका नाश हुआ है. यार अघाति (कर्म) बाकी है. मैं केवलज्ञानी हुं. मैं सोनगढ आनेवाला हुं तो मेरे लिये (कुछ) व्यवस्था करना. बाढमें यहां आये. गरीब आढमी था. सामने बैठकर कछा कि, 'मैं तीर्थकर हुं, सत्य कछता हुं. भगवानको जैसे यार घाति कर्मका नाश हुआ है वैसे मुजे (भी) हुआ है. परंतु भगवानको यार घाति कर्म बाकी था तो उनके पास पैसा नहीं था' अैसे आढमी भी सामने आते हैं. आछाछा ! वैसे अंढर कुछ (मालूम नहीं पडे). अंढर मिथ्यात्वका जोर (यलता छो). आछाछा ! पत्रमें तो अैसा लिखा था. यार घाति (कर्मका) नाश कैसे हुआ ? यह मैं वहां (आकर) कछुंगा. यहां आकर छतना कछा कि, 'यार घाति (कर्मका) नाश (हुआ) है और यार अघाति (कर्म बाकी) है. भगवानको यार घाति (कर्मका)

नाश हुआ (और उनके पास) पैसे नहीं थे (और) मेरे पास भी पैसे नहीं हैं'. आहाहा ! फिर उठकर पैर धुओ. हमने कहा, 'भैया ! मिथ्यादृष्टि है' जगतकी दशा देखो न ! आहाहा ! अरे..! क्या करता है आत्मा ? आहाहा ! भगवान ! मिथ्यादृष्टि हो, भाई ! ये दृष्टि ? अरेरे..! कपडे हो वहां मुनिपना भी नहीं होता तो केवलज्ञान हो जाय (यह कैसे हो सकता है ?) आहाहा ! यह दृष्टि बहुत विपरीत दृष्टि (है). आहाहा !

यहां तो (निज) परमात्मा अनंत शक्तिका पींड रत्नाकर ! उसका अनुभव होते ही उसमें आनंदकी दशा आती है. तब तो अभी यौथा गुणस्थान कलनेमें आता है. मुनि तो (किसको कहें ?) शास्त्रमें ऐसा लिखा है, 'यारितं भलु धम्मो' – यारित्र धर्म है और सम्यग्दर्शन यह तो यारित्रका मूल (है). 'दंसण मूलो धम्मो' क्या कहा ? धर्मका मूल यारित्र. परंतु उस धर्मका मूल क्या ? तो (कहते हैं) दंसण – सम्यग्दर्शन यारित्रका मूल है. यारित्र धर्म है और यारित्रका मूल सम्यग्दर्शन है. सम्यग्दर्शन हुआ बिना यारित्र कभी होता नहीं है.

बंध अधिकारमें व्यवहारसे कारण-कार्य लिया है कि, यारित्रका कारण जो सम्यग्दर्शन, ज्ञान यह तो है नहीं, उसे व्रत, नियम कहांसे आये ? समजमें आया ? स्वरूपकी रमणता (रूप) जो यारित्र – जिसमें यरना, आनंदमें रमना, आनंदका भोजन करना, निरंतर जिसका अतीन्द्रिय आनंदका भोजन है, आहाहा ! समजमें आया ? ऐसा यारित्र ! ओहो ! धन्य अवतार !! यह यारित्र तो समकितिको भी पूज्य है. समजमें आया ? यह यारित्र धर्म है तो उसका मूल कारण दर्शन है. 'दंसण मूलो धम्मो' धर्मका मूल दर्शन (और) यारित्रका मूल दर्शन और दर्शनका मूल अमेद रत्नत्रय स्वरूप भगवान अनंत गुण स्वरूप आत्मा ! उसकी दृष्टि (और) अनुभव होता है तो सम्यग्दर्शन होता है. आहाहा ! समजमें आया ? सम्यग्दर्शनके कालमें ज्ञान सम्यक् (होता है).

अकबार कहा था कि, अभाविको ज्ञान है परंतु ज्ञानकी परिणति नहीं है. समजमें आया ? यह अध्यात्मपंथ संग्रहमें है. अध्यात्मपंथसंग्रह दीपयंदलने किया है. दीपयंदल परमात्मपुराणमें (कहते हैं) अभाविको ज्ञान है परंतु ज्ञानकी परिणति नहीं. आहाहा ! क्या कहा ? ज्ञानकी परिणति उसे कहें कि, जो ज्ञानस्वरूपी भगवान आत्मा उसका ज्ञान हो (अर्थात्) स्वसंवेदन (हो) तब ज्ञानकी परिणति (कही जाती है). वैसे तो अभाविको ११ अंग और ८ पूर्वकी लब्धि प्रगट होती है. फिर भी वह ज्ञान परिणति नहीं. आहाहा ! ११ अंगमें एक आचारांगके १८ हजार पद (होते हैं) और एक पदमें ५१ कोड श्लोक (होते हैं) जैसे-जैसे १८ हजार पदका एक आचार (अंग है). सुयगांगके ३६ हजार, षाण्णांगके ७२ हजार, जैसे उभल करते-करते ११ अंग तक ले जाना. आहाहा ! एतना तो जिसे कंठस्थ ज्ञान था और इसके अलावा ८ पूर्वका (ज्ञान हो). यह (सब) अभ्यास (करनेसे) नहीं होता. (लेकिन) अंदरमें ऐसी लब्धि होती है. अभाविको भी (ऐसी लब्धि) होती है. विभंग (ज्ञानमें) सात द्विप

सात समुद्रको देखे. समझमें आया ? फिर भी वह ज्ञानकी परिणति नहीं. आहाहा ! वह ज्ञानकी पर्याय नहीं. आहाहा !

ज्ञानस्वरूप भगवान (आत्माको) जिसने अपनी ज्ञान पर्यायमें ज्ञेय (बनाया), पर्यायमें ज्ञायक स्वभावका ज्ञान हुआ और श्रद्धाकी पर्यायमें सारा ज्ञेय अनंत शक्तिका रत्नाकर भगवान (आया तब उसे ज्ञानकी परिणति कहनेमें आती है). यहां तो शक्तिका वर्णन है. परंतु शक्ति उपर (भेद उपर) लक्ष करना, जैसे (कहनेका आशय) नहीं है. समझमें आया ? शक्ति और शक्तिवान जैसे दो भेद भी नहीं. आहाहा ! तेरा नाथ अत्मेद विद्वानंद स्वरूप निर्विकल्परूपसे (बिराजमान हैं). प्रत्येक शक्तियां भी निर्विकल्प नाम रागके अभावस्वरूप बिराजती हैं. जैसे शक्तिवानका अंतरमें ज्ञेय बनाकर ज्ञान हो, तब वह ज्ञान परिणति – पर्याय कहनेमें आती है. आहाहा !

यहां कहते हैं कि, वह ज्ञानकी परिणति जब हुई तो साथमें अनंत शक्तियां उछलती हैं. पहले शुरुआतमें (यह) आ गया है. अनंत शक्तिकी व्यक्तता (होती है). ज्ञानका ज्ञान, आत्माका ज्ञान, आत्मज्ञान ऐसा लिया है न ? जैसे नहीं लिया है कि शास्त्रका ज्ञान या रागका ज्ञान या निमित्तका ज्ञान या पर्यायका ज्ञान जैसे शब्द नहीं है. आत्मज्ञान (लिया है). आहाहा ! समझमें आया ? आत्मा अेकरूप अण्ड आनंदका कंद प्रभु ! उसका ज्ञान वह आत्मज्ञान कहनेमें आता है. आहाहा ! आत्मज्ञानमें ऐसा नहीं लिया है कि, शास्त्रका ज्ञान या निमित्तका ज्ञान और पर्यायका ज्ञान या रागका ज्ञान ऐसा नहीं लिया. आहाहा ! ऐसी बात है, भगवान ! आत्मज्ञान आहाहा ! शब्द तो देखो ! आत्मा जो अनंत शक्तिका भंडार ! अेकरूप वस्तु ! उसका ज्ञान (वह आत्मज्ञान है). आहाहा ! उसका ज्ञान कब होता है ? कि पर्याय उस ओर जुकनेसे (आत्मज्ञान होता है). तन्मय होनेसे ऐसी भाषा है न ? परंतु वह जुकनेसे बात है. आहाहा ! समझमें आया ?

स्वयंभूरमण समुद्र तो असंख्य योजनमें है और नीचे रत्न भरे हैं. रेतीकी जगह रत्न है. स्वयंभूरमण समुद्र आभीरका समुद्र है. इसके नीचे रत्न है, रेती नहीं है. आहाहा ! जैसे यहां 'स्वयंभू' भगवान आत्मा ! (है). (प्रवचनसारकी) १६वीं गाथामें स्वयंभू कहा न ? भाई ! आहाहा ! उसके तलमें तो अनंती शक्तिका रत्न भरा है. आहाहा ! जैसे शक्तिवानकी दृष्टि करनेसे जो सम्यग्दर्शनकी पर्याय शक्तिरूप थी (वह) उत्पादरूपसे, व्यक्तरूपसे आयी. आहाहा ! उसके साथ अनंत शक्तिका उदय / उछलते नाम उत्पन्न होता है. यह पर्याय जो उछलती है वह कमसर है और गुण-शक्ति है वह अकम है. कमवर्ती पर्याय उछलती है (उस कमवर्ती पर्याय) और अकमवर्ती (गुणके) समुदायको आत्मा कहते हैं. यहां विकार नहीं लेना. यहां तो शक्तिका वर्णन है. शक्ति तो शुद्ध है तो उसका परिणमन भी शुद्ध है. इस शुद्ध परिणमनमें अनंत शक्तियां निर्मलरूपसे कमसर-कमवर्ती उत्पन्न होती हैं.

उस कमवर्ती (पर्याय) और अकमवर्ती गुण दोनोंके समुदायको आत्मा कहते हैं. आहाहा ! यहाँ तो आत्मा पर्याय सहित लेना है न ? समझमें आया ?

नियमसारकी उटवीं गाथामें जो आत्मा दिया (है) वह तो पर्याय बिनाका त्रिकावी ज्ञायकभाव वह आत्मा है, भाई ! वहाँ पर्याय नहीं दि. यहाँ तो जो वस्तु है, शक्ति है उसकी ज्ञानमें प्रतीत हुई तो 'है' ऐसा प्रतीतमें आया. ऐसा परिणामन हुआ तो प्रतीतमें आया. ऐसा कमवर्ती पर्यायमें अव्यक्तको जानकर निर्मल पर्यायका व्यक्तपना (हुआ). आहाहा ! ऐसी बातें हैं. अव्यक्तको व्यक्त ही जाना. आहाहा !

यहाँ तो अब दूसरा कहना है. (अनंत) शक्तिमें एक अकर्ता नामकी शक्ति है. २१वीं शक्ति है. वर्णन तो कमसे होता है (परंतु) वस्तुमें कम नहीं है. शक्तियां कम(सर) नहीं, पर्याय कम(सर) है. (सभी शक्तियां) एक साथ हैं. एक समयमें (एक साथ) शक्तियां हैं. प्रवचनसारमें जो ४७ नय दिये हैं वह भी एक समयमें (एक साथ) ४७ नयरूप धर्म है. समझमें आया ? वहाँ एक नयका धर्म ऐसा भी दिया है कि, कालसे भी मोक्ष है और अकालसे भी मोक्ष है. एक समयमें दोनों धर्म हैं, ऐसे वहाँ लेना है. (ऐसी) पर्यायमें योग्यता (की बात है). आहाहा ! समझमें आया ? यह शक्तियां एक समयमें गुणरूप है और वहाँ जो पर्याय ली, वह तो नियत नाम स्वभावरूपी पर्याय और अनियत नाम विभावरूपी पर्याय, दोनों धर्म एक समयमें हैं.

(प्रवचनसार नय अधिकारमें) वहाँ तक दिया है कि, क्रियासे भी मुक्त होता है और ज्ञानसे भी मुक्त होता है. आहाहा ! क्रियासे मुक्त होता है (और) ज्ञानसे मोक्ष होता है (उसमें) कोई-कोई क्रियासे (मुक्त) होता है और कोई-कोई ज्ञानसे (मुक्त) होता है, ऐसा नहीं है. उस जवको भी कोई बार क्रियासे होता है और कोई बार ज्ञानसे होता है, ऐसा भी नहीं है. उसी समयमें रागके अभावरूपी योग्यता गिनकर क्रियानयसे मुक्ति है, ऐसे कहा; परंतु उसी समयमें ज्ञानसे (भी) मुक्ति है. समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बातें हैं. वह धर्मका विवक्षा भेद है. धर्म तो एक ही है. एक धर्मका विवक्षा भेद है. क्रियासे मुक्ति और ज्ञानसे मुक्ति, ऐसा कहनेमें आया. धर्म तो अंदरमें एक साथमें है. आहाहा ! ऐसी बात ! ऐसा भगवानका मार्ग है, भाई !

अब यहाँ तो अपनी अकर्तृत्वशक्ति खलती है. २० (शक्ति) तो खल गई. एक साथ ४७ शक्ति हैं. जैसे ४७ नयके धर्म एक साथ हैं (वैसे) वहाँ धर्म है—वह शक्ति नहीं. समझमें आया ? ज्ञानसे मोक्ष होता है वह पर्यायकी बात है. ज्ञानसे मोक्ष होता है (ऐसा कहा) तो ज्ञानकी पर्यायकी कोई दूसरी पर्याय है, ऐसा नहीं.

यहाँ तो शक्तिका वर्णन है तो शक्तिकी पर्यायका वर्णन साथमें है. आत्मा नित्य है वह धर्म है. परंतु नित्य (धर्म)की कोई पर्याय है, ऐसा नहीं. आत्मा अनित्य है, ऐसी एक

योग्यता-धर्म है. परंतु अनित्य धर्मकी कोई दूसरी पर्याय है, ऐसा नहीं और शक्तिकी तो पर्याय – विशेष है. समझमें आया ? यह शक्ति है उसकी तो प्रत्येक शक्तिकी वर्तमान व्यक्त पर्याय होती है और उन धर्ममें पर्याय नहीं (है). वह तो अके अपेक्षित धर्म गिननेमें आया (है).

यहां कहते हैं कि, “समस्त कर्मोंके द्वारा....” भाषा यह है. लोग तकरार करते हैं कि, देखो ! ‘समस्त कर्मोंके द्वारा किये गये’ (ऐसा स्पष्ट लिखा है). स्पष्ट ही लिखा है (लेकिन) किस अपेक्षासे (लिखा है) ? किस नयका वह कथन है ? कि अपने स्वभावसे विकार उत्पन्न होनेवाला नहीं. क्योंकि कोई शक्ति विकार उत्पन्न करे, ऐसी अनंत शक्तिमें कोई शक्ति नहीं. उस कारणसे पर्यायमें जो विकार होता है – वह शक्तिका कार्य नहीं. तब उसे शक्तिके स्वभावकी दृष्टि करानेको कर्मके निमित्तके वश होकर विकार हुआ (ऐसा कहते हैं). निमित्तसे (विकार) हुआ, ऐसा नहीं. निमित्तके वश होकर (विकार हुआ है). ‘कर्मोंके द्वारा किये गये’ भाषा ऐसी है. वह कहा था न ?

पंचास्तिकायसंग्रहकी दूर गाथामें ऐसा कहा, कोई बड़े विद्वानके साथ चर्चा हुई थी कि, अपनी पर्यायमें विकार (अपने) षट्कारक परिणामनसे होता है. द्रव्य, गुणसे नहीं (और) पर कारकसे नहीं. २० वर्ष पहले बहुत बड़ी चर्चा हुई थी. १३की सालमें शीपरजमें यात्रामें निकले थे तब कहा था. सब (बड़े विद्वान) बैठे थे. (उस समय कहा) अके समयकी पर्यायमें जो मिथ्यात्व या राग-द्वेष (रूप) विकृतभाव होता है, वह पर्यायमें (अपने षट्कारकसे होता है). अके समयकी पर्यायमें षट्कारक है, जो षट्कारक शक्तिरूपसे द्रव्य-गुणमें है. उसी पर्यायमें षट्कारकरूपसे विकार अपने कारणसे होता है. परके कारणसे बिलकुल नहीं. अके (बात) यह कही.

समयसार ७५-७६-७७ (गाथामें) ऐसा कहा कि, अपने आत्माका स्वभाव उसकी पर्यायमें व्याप्य और द्रव्य स्वभाव उसका व्यापक – ऐसा जब धर्मको दृष्टिमें आत्माका पूर्ण स्वभाव आया तो स्वभाव व्यापक और स्वभावकी निर्मल पर्याय व्याप्य. अब उनको जो विकार रहा (उसमें) विकार व्याप्य और कर्म व्यापक (है). यहां ऐसे लिया. यहां यह लिया. द्रव्य स्वभाव सिद्ध करना है न ? द्रव्य स्वभावकी दृष्टि करानेको जो चीज निकल जाती है तो (विकार) निमित्तसे हुआ है, ऐसा कहनेमें आया. समझमें आया ? यहां ऐसा कहा कि, कर्म व्यापक और विकारी पर्याय व्याप्य. और सबेरे अपने दृष्ट कलशमें अधिकार वह था कि, अपनेमें अशुद्ध परिणामन अपना व्याप्य है और आत्मा व्यापक है. और पुद्गलकी पर्याय जो कर्मरूप होती है, वह कर्म (रूप) होती है, वह व्याप्य है और पुद्गल उसका व्यापक है. आत्मा उसका व्याप्य-व्यापक है, ऐसा नहीं है. ऐसे कर्मकी पर्यायमें आत्मा व्याप्य-व्यापक है, ऐसा नहीं. और अपनी व्याप्य-व्यापक (पर्यायमें) कर्म व्याप्य-व्यापक है, ऐसा नहीं. आहाहा ! समझमें

આયા ? કિસ અપેક્ષાસે હૈ યહ સમજના ચાહિએ. લિખા હૈ, પરંતુ કિસ નયસે, કિસ અપેક્ષાસે કૌનસી વિવક્ષા હૈ ? કિસ પ્રકારકી વિવક્ષા ચલતી હૈ ? ઉસ પર ધ્યાન રખકર ઉસકા અર્થ કરના ચાહિયે. સમજમેં આયા ?

યહાં કહતે હૈ કિ, “સમસ્ત કર્મોકે દ્વારા...” સમસ્ત નામ આઠોં કર્મ. “કર્મોકે દ્વારા કિયે ગયે...” ભાષા દેખો ! સ્વભાવકા વર્ણન હૈ ન ? તો વિભાવ હૈ યહ કર્મોકે નિમિત્તકે અધીન હોકર હુઆ હૈ, તો કર્મોકે દ્વારા હુઆ હૈ, એસા કહનેમેં આયા હૈ. સમજમેં આયા ? યહ તો સમજના...સમજના...સમજના... જ્ઞાન સ્વરૂપ ભગવાન હૈ તો પ્રત્યેક અપેક્ષાકા જ્ઞાન સમજના, યહ વસ્તુકા સ્વરૂપ હૈ. સમજમેં આયા ? કૌનસી અપેક્ષાસે કથન (હૈ, યહ સમજના ચાહિએ). નયકા, આગમકા, અન્ય આગમકા તાત્પર્ય ક્યા હૈ ? એક-એક ગાથામેં પાંચ અર્થ ચલતા હૈ ન ? શબ્દાર્થ, આગમાર્થ (અર્થાત્) દૂસરેકા આગમાર્થ, નયાર્થ ઓર તાત્પર્ય. એક ગાથામેં પાંચ અર્થ ચલતા હૈ. યહાં ભી કર્મો દ્વારા કહા, યહ કૌનસી અપેક્ષાસે હૈ ? કિ નિમિત્તકી પ્રધાનતાસે વિકૃત (ભાવ) હોતા હૈ, અપને સ્વભાવકે કારણ વિકૃત હોતા નહીં. યહ સિદ્ધ કરનેકો યહ (બાત) કહી હૈ. આહાહા !

“સમસ્ત કર્મોકે દ્વારા કિયે ગયે, જ્ઞાતૃત્વમાત્રસે ભિન્ન...” આહાહા ! ભગવાન તો જ્ઞાયકસ્વરૂપ હૈ ન, પ્રભુ ! ઓર જ્ઞાયકકા જહાં અનુભવ હુઆ તો પર્યાયમેં જ્ઞાન ઓર આનંદકી પર્યાય ઉત્પન્ન હોતી હૈ. ઉસકો વિકાર ઉત્પન્ન હોતા હૈ, એસા હૈ નહીં. આહાહા ! એક બાત. ઓર યહ જો જ્ઞાયકમાત્ર પર્યાય હૈ વહ કમવર્તી (હૈ) ઓર શક્તિ અકમવર્તી (હૈ). ઇન દોનોંકા પીંડ યહ આત્મા હૈ. યહાં યે લેના હૈ. સમજમેં આયા ?

“...જ્ઞાતૃત્વમાત્રસે ભિન્ન જો પરિણામ...” પરિણામ યાની વિકાર. જ્ઞાતૃત્વમાત્રસે ભિન્ન વિકાર – પુણ્ય-પાપ, દયા, દાન આદિ (પરિણામ). આહાહા ! વ્યાપારીકો વહી કા વહી ધંધા ઇસલિયે કોઈ નયે તર્ક યા એસા કુછ કરનેકા હોતા નહીં. ઇસ ભાવકા સોના હૈ, ઇસ ભાવકા ચાંદી હૈ. હરરોજ વહી જાત.

શ્રોતા : ધન રળે તો ઢગલા થાય. (એસા ગુજરાતીમેં કહતે હૈં).

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : ધૂલમેં ભી ધન નહીં હૈ. વહ તો પુણ્ય હો તો (મિલે). (બાકી તો) બહુત લોગ પુરુષાર્થ કરતે હૈં બેચારે. ફિર ભી પુણ્ય હો તો મિલતા હૈ. પુણ્ય બિના પૈસા મિલતા નહીં, પરંતુ પૈસા મિલે તો ભી ઉસે ક્યા મિલતા હૈ ? ઉસકે પાસ તો ‘યહ મેરા હૈ’ એસી મમતા આ જાતી હૈ. પૈસા તો પૈસામેં રહા. વહ તો જડ-પર દ્રવ્ય હૈ. આહાહા ! યે સબ પૈસેવાલે કરોડપતિ બેઠે હૈં. ધૂલમેં ભી કરોડપતિ નહીં હૈ. જડકા પતિ ભગવાન ! આહાહા ! નિર્જરા અધિકારમેં કહા હૈ કિ, ‘ભેંસાકા પતિ પાડા હોતા હૈ’ વૈસે વિકારકા પતિ જડ હોતા હૈ. વિકાર અપના માને વહ તો જડ હૈ. આહાહા ! (તો) પૈસા (અપના) માને વહ તો કહાં (દૂર) રહ ગયા.

विकारकी पर्याय द्रव्यमें नहीं है, शक्तिमें है नहीं और जहां द्रव्यशक्तिका त्मान हुआ तो पर्यायमें भी विकार नहीं है. यह यहां लेना है. समझमें आया ? “... उन परिणामोंके करणके...” उन विकारी परिणामको करनेमें, पुण्य और पापके विकारी (परिणाम) करनेमें, “... उपरमस्वरूप...” (अर्थात्) भगवान तो निवृत्तस्वरूप है. आहाहा !

सम्यग्दर्शन हुआ, यैतन्यधर्मका ज्ञान हुआ तो कहते हैं कि, (स्वभाव तो) विकारी परिणामोंसे अंत लानेवाला है – अभावस्वरूप है. उपरम – निवृत्त(स्वरूप) है. आहाहा ! धर्मी श्रव, सम्यक्दृष्टि श्रव, विकारके परिणामसे निवृत्तस्वरूप है. आहाहा ! है ? उपरमकी तीन व्याख्या कही. उपरम नाम निवृत्त, उपरम नाम अंत – वहां विकारका अंत है. विकार सहित नहीं, विकारका अंत नाम दूर है – अभाव है. आहाहा !

सम्यग्दर्शनमें – अनंत शक्तिका धरनेवाला भगवान आत्मा उसका जहां आश्रय लिया, तब जो विकारके परिणाम होते हैं, उससे वह आश्रय लेनेवाला सम्यक्दृष्टि आत्मा विकारसे निवृत्तस्वरूप है. विकारमें प्रवृत्तस्वरूप कर्ता नहीं. विकारमें प्रवृत्त स्वरूप हो तो कर्ता हो जाता. आहाहा ! समझमें आया ? बहुत (सूक्ष्म) मार्ग, त्माई ! मार्ग ऐसा है. आहाहा ! जिसका इल अनंत आनंद और अनंत शांति और जो प्रगट हो वह अनंतकाल रहे, उसका उपाय भी कुछ अलौकिक हो न ! आहाहा ! जिसके कार्यके इलमें अनंत आनंद, अनंत ज्ञान, अनंत वीर्य, अनंत शक्तिकी अनंतताकी अनंत पर्याय प्रगट हो और वह समय-समयमें भिन्न-भिन्न (हो) (बले) वही जात होती है परंतु (वही की वही) पर्याय नहीं. ऐसा सादि अनंत... अनंत... समाधि सुभमें (रहनेका) उपाय तो अलौकिक हो कि न हो ? जिसका इल अलौकिक लोकोत्तर (है) उसका उपाय भी अलौकिक है. समझमें आया ?

आत्मज्ञान – आत्माका ज्ञान हुआ तो उस ज्ञानमें ज्ञातापना-दृष्टापनाका परिणाम आया. कर्मके निमित्तसे उत्पन्न हुआ (उसे कर्मके द्वारा) कला. निमित्त द्वारा यह कथनशैली है. कहीं उपादानसे (कहनेमें आता है), कहीं निमित्त द्वारा (कहनेमें आता है). समझमें आया ?

(समयसार) दूट गाथामें कला न ? जव से जव होता है. पुद्गलसे (हुआ) विकारी परिणाम पुद्गलका है, वहां जैसे कला. आहाहा ! ये कुंवारी कन्या होती है न ? वह जुवारा बोती है. यह तो सब सुना हुआ है. शादीके लायक कन्या हो वह जैसे बोले ‘भारा जवना जुवारा रे’ उसमें बात तो यह है कि, हम जब शादी करेंगे तब इस प्रकारका इल आयेगा और वह टिकेगा या नहीं टिकेगा ? जैसा बोया होगा वैसा इल आयेगा. बोया हो तो इल आये तो सही न ? शादीके बाद (पति) छ महिनेमें मर जाय और दूसरे-तीसरे दिन (भी) मर जाय, उसमें क्या है ? ‘जवना जुवारा’ (ऐसा हमारे गुजरातीमें) कहते हैं. वह अनंतकाय (श्रव) हैं. (वह) उत्पन्न हो और कांटे निकले वह अनंतकाय है.

यहां तो कहते हैं कि, भगवान (आत्माको) रागका कर्तापना नहीं है. आहाहा ! कर्म

દ્વારા હુએ વિકલ્પસે નિવૃત્તસ્વરૂપ છે. આહાહા ! સમજમેં આયા ? ધર્મી ઉસે કહે, સમ્યક્દૃષ્ટિ ઉસે કહે, આત્મજ્ઞાની ઉસે કહે (કિ) વિકારસે નિવૃત્તસ્વરૂપ છે. આહાહા ! પ્રવૃત્ત સ્વરૂપ છે વહ તો કર્તા હુઆ, વહ મિથ્યાદૃષ્ટિ છે. ઐસા માર્ગ છે ! લોગોંકો ઠીક ન લગે ફિર વિરોધ કરે, બાપૂ ! વિરોધ કરને જૈસી ચીજ નહીં છે, પ્રભુ ! યહ તો ભગવાનકે શ્રીમુખસે આયી હુઈ બાત છે. આહાહા ! વસ્તુ ઐસી છે. સમજમેં આયા ?

ભગવાન આત્મા ! કોઈ તો કહતે હૈં ન ? કિ, વ્યવહારસે હોતા છે (ઔર) યહાં તો કહતે હૈં કિ, સમકિતી તો વ્યવહારસે નિવૃત્ત સ્વરૂપ છે. ક્યા કહા ? લોગોંકી યહ તકરાર છે ન ? યહાં તો કહના છે કિ, (આત્મા) પરકી ક્રિયાકા કર્તા નહીં છે. ક્યોંકિ કોઈ દ્રવ્ય નિકમ્મા નહીં છે. નિકમ્માકા અર્થ પર્યાય બિનાકા નહીં છે તો પરકા કાર્ય કરના વહ બાત રહી નહીં. સમજમેં આયા ? પ્રત્યેક દ્રવ્ય નિકમ્મા અર્થાત્ પર્યાયકા કાર્ય બિના નહીં છે.

યહાં તો દૃષ્ટિ ઔર દૃષ્ટિકે વિષયકી અપેક્ષા યલતી છે. સમજમેં આયા ? પરંતુ સાથમેં જ્ઞાનકો લેના. પર્યાયમેં જીતના રાગ હોતા છે ઉસકા (ઉતના) પરિણમનરૂપ છે તો (ઉસકા) કર્તા કહનેમેં આતા છે. યહાં તો પ્રવૃત્તિમેં કરને લાયક છે, ઐસી પ્રવૃત્તિ ઉસકી નહીં. સમજમેં આયા ? રાગ કરને લાયક છે, હિતકર છે ઐસી પ્રવૃત્તિ જ્ઞાનીકો હોતી નહીં. પરંતુ પરિણમનરૂપ છે તો કર્તા ભી કહનેમેં આતા છે. આહાહા ! સમજમેં આયા ? બાદમેં અભોક્તા (શક્તિ) ભી આયેગી. વહાં તો ભોક્તા હી કહા છે. જીતને પ્રમાણમેં મુનિકો યા સમકિતીકો રાગ હોતા છે (ઉતના) ઉન્હેં દુઃખકા વેદન છે.

શ્રેણિક રાજા ક્ષાયિક સમકિતી નર્કમેં પડા છે. શ્રેણિકરાજા ભવિષ્યમેં તીર્થકર હોનેવાલે હૈં. આહાહા ! અભી નરકમેં હૈં. નરકસે નિકલકર માતાકે પેટમેં આયેંગે તબ ઇન્દ્રો આયેંગે. આહાહા ! સમજમેં આયા ? આહાહા ! (ઇન્દ્ર) માતાકો કહતે હૈં, ‘માતા ! પુત્ર તમારો ઘણી અમારો, તરણ તારણ જહાજ રે, માતા જતન કરીને રાખજે રે..’ દેખો ! યહ સમકિતી કહતે હૈં. સૌધર્મ ઇન્દ્ર એકાવતારી સમકિતી (હૈ). વ્યવહારસે બોલનેમેં તો ઐસા આતા છે કિ, ‘માતા જતન કરીને રાખજે એને, તમ પુત્ર હમ આધાર રે...’ નિમિત્તકે કથન (ઐસે) યલે. સમજમેં આયા ? ઔર (જબ) આતે હૈં તબ ઐસા (કહતે હૈં) કિ, ‘હે રત્નકુંભધારિણિ ! ત્રિલોકકે તીર્થકરકા તુમ્હારેમેં ગર્ભ હુઆ ઔર કેવલજ્ઞાન પાયેંગે તો અનેક જીવોંકા મોક્ષ હોગા’ ભલે ઉપાદાન ઉસકા છે. સમજમેં આયા ? ‘હે માતા ! જનેતા ! પહલે તુજે નમસ્કાર !’ બાદમેં તીર્થકરકો નમસ્કાર કરતે હૈં. (એક ઔર) યહ વિકલ્પ છે (ઔર) કહતે હૈં કિ, ‘જતન કરકે રખના’ (ઔર) યહાં ના કહતે હૈં. કૌનસી અપેક્ષાસે કથન છે ? (યહ સમજના યાહિએ). ભક્તિકા વર્ણન છે (ઉસમેં) ઐસા આયે બિના રહે નહીં. ફિર ભી ઉસ વિકલ્પસે તો (સ્વરૂપ) નિવૃત્તસ્વરૂપ છે. આહાહા ! સમજમેં આયા ?

“...કરણકે...” (અર્થાત્) ઉન પરિણામોંકા કરના. ઉસકે “...ઉપરમસ્વરૂપ.. (ઉન

परिणामोंको करनेकी निवृत्ति स्वरूप) आलाहा ! धंधा-पानीका तो कर्ता नहीं परंतु दया, दानका विकल्प उत्पन्न होता है उसका भी अकर्ता (अर्थात्) निवृत्तस्वरूप है. आलाहा ! समझमें आया ? यह भाषा तो सादी है. यह तो मूल तत्त्वकी बात है. यह तत्त्व समझे बिना सब थोथा है. याहे जैसे व्रत करे, तप करे, मुनिपना ले (सब थोथा है). आलाहा !

यहां कहते हैं कि, अकर्तृत्व स्वभाव उसका धर्म है. आलाहा ! अक बात – यह अकर्तृत्व स्वभाव रागके अभाव स्वरूप है. (कुटनोटमें) नीचे आया न ? निवृत्ति, अंत और अभाव. (स्वभाव) रागके अभावस्वरूप है. वही अनेकांत हुआ. यैतन्यका शुद्ध स्वभाव अकर्तृत्व (स्वरूप) है. अकर्तृत्वमें ज्ञाता-दृष्टाका परिणाम होता है. उसमें रागका अभाव है – यह अनेकांत है. रागसे भी (धर्म) होता है और ज्ञाता-दृष्टा परिणामसे भी धर्म होता है, यह तो झूठीवाद् है – अनेकांत नहीं.

श्रोता : झूठीवाद् क्या होता है ?

पू. गुरुदेवश्री : यह झूठी फिरते हैं न ? यक्कर फिरते हैं न ? (हिन्दीमें) फिरकणी (कहते हैं). यह तो यथार्थ स्याद्वाद्का विषय है. अनेकांत है, आलाहा ! अक-अक शक्तिके वर्णनमें निर्मल परिणतिका वह कर्ता है और रागसे तो निवृत्तस्वरूप है. उसका अर्थ कि उससे वह निवृत्त हुआ ही नहीं. उससे वह निवृत्ति जो सम्यग्दर्शन, ज्ञान (रूप पर्याय) रागसे हुई ही नहीं. क्योंकि उससे तो वह निवृत्तस्वरूप है. आलाहा !

अब यहां तकरार यह लेते हैं कि, 'व्यवहार करते-करते (व्यवहार) साधन है तो निश्चय होगा. पंचास्तिकायमें त्मेद साध्य-साधन कहा है' भाई ! वह तो त्मिन्न साधनका ज्ञान करवाया है. साधन दो प्रकारके नहीं. साधन तो अक ही है. जैसे मोक्षमार्ग दो प्रकारका नहीं, मोक्षमार्गका निरूपण दो प्रकारसे हैं. मोक्षमार्गकी कथन शैली दो प्रकारसे हैं. निश्चय है वहां रागकी मंदतामें आरोप देकर सम्यग्दर्शन आदि कहनेमें आता है. मोक्षमार्ग दो नहीं, मोक्षमार्ग तो अक ही है. ऐसे साधन दो नहीं. साधन तो अक ही है. साधन कडो, उपाय कडो कि मार्ग कडो. (सब अकार्य है). साधनका निरूपण दो प्रकारका हैं. कथन दो प्रकारके हैं. समझमें आया ?

अकर्तृत्व शक्तिमें कर्तृत्वपनाका – रागका अभाव है, वही अनेकांत और वही स्याद्वाद् है. आलाहा ! समझमें आया ? अकर्तृत्व शक्तिमें अकारणकार्य शक्ति साथमें है. वह पहले आ गई है. अकर्तृत्व शक्तिका धरनेवाला भगवान, उसका जहां अनुभव हुआ तब कहते हैं कि, अनुभवमें रागकी मंदता कारण और अनुभव कार्य, ऐसा नहीं है. वैसे अनुभव कारण और राग उसका कार्य (ऐसा भी नहीं). (ऐसी) अंदर अकारणकार्य शक्ति है. समझमें आया ? अकारणकार्य शक्ति पहले आ गई है. शुभभाव कारण और निश्चय सम्यग्दर्शन कार्य, ऐसा नहीं है. वैसे निश्चय सम्यग्दर्शन कारण और राग कार्य (ऐसा भी नहीं). यही तो कहा (कि रागसे) निवृत्त स्वरूप है. आलाहा !

शास्त्रका पठन करना (आये नहीं), कलनेवालेकी कौनसी पद्धति है ? इसकी जबर नहीं और धर्म हो जाय (ऐसा कैसे हो सकता है) ? आहाहा ! समझमें आया ?

श्रोता : शास्त्रकी पद्धति शास्त्रमें है, हमको तो धर्म करना है.

पू. गुरुदेवश्री : (धर्म) करना है परंतु पद्धति क्या (है) यह जाने तो करे, नहीं जाने तो कैसे करेगा ? उसमें लिखा है कुछ और अर्थ करे कुछ तो (वह तो) ठीकी (विपरीत) दृष्टि हो गई. समझमें आया ?

इस शक्तिमें अकारणकार्य शक्ति भी पड़ी है और यह शक्ति अनंत गुणमें है. आहाहा ! ज्ञानकी पर्यायके साथ (अनंत शक्ति) उत्पन्न हुई, उसके साथ अकर्तृत्व शक्तिकी पर्याय उत्पन्न हुई, तो ज्ञानकी हीन दशाका कर्ता ज्ञान नहीं. आहाहा ! ऐसे रागसे निवृत्तस्वरूप है. आहाहा ! समझमें आया ? अनंत गुणमें यह अकर्तृत्व शक्ति व्यापी है. प्रत्येक गुणकी पर्यायमें अकर्तृत्वपना है. ज्ञानकी पर्याय परसे हुई है, शास्त्र सुननेसे हुई है, शास्त्रसे हुई है, देव-गुरुकी भक्तिसे ज्ञानकी पर्याय हुई है, ऐसा नहीं है. उसमें ऐसा कारणकार्य है ही नहीं. आहाहा !

अकारणकार्य शक्ति (समयसार) उर गाथामेंसे निकाली है. जवत् शक्ति दूसरी गाथाके पहले शब्दमेंसे निकाली है. ऐसे प्रत्येक शक्ति निकाली है. शास्त्रमेंसे निकाली है – टीकामेंसे निकाली है. अंदरमेंसे निकाली है. आहाहा !

यहां अकर्तृत्व शक्तिके साथ दूसरी अलोकर्तृत्व शक्ति (है). आहाहा ! यहां तो कहते हैं कि आहार-पानी, दाल, भात, शाक तो भोग सकते नहीं, स्त्रीका शरीर भोग सकते नहीं परंतु विकारको भी भोगता नहीं है. ऐसी इसकी यीज है. समझमें आया ? आहाहा ! यह शरीर, मांस, हड्डी, यमडा इसका आत्मा भोग ले, ऐसा तो अज्ञानीको भी नहीं. परंतु ज्ञानीको जो भोगकी, आसक्तिकी वृत्ति उठती है उससे वह निवृत्तस्वरूप है. बराबर है ? सूक्ष्म बात है. आहाहा ! भोगकी क्रिया तो है नहीं (अर्थात् कर सकते नहीं) वह तो अज्ञानी भी शरीरको भोग सकता नहीं. ये यमडा, हड्डी, मांस, पुन है उसे भोगे कौन ? आत्मा अरुपी है और यह तो वर्षा, स्पर्श, गंध, रसवाली यीज है और दाल, भात, सल्लि, भोसंभी, रसगुल्ला यह सब तो जड, मिट्टी, धूल है, रूपी है. रूपीको आत्मा भोगे ? अज्ञानी रूपी (पदार्थका) लक्ष करके 'यह ठीक है' ऐसा राग उत्पन्न करके रागको भोगता है (और) मानता है कि, 'मैं इस शरीरको भोगता हूँ' दृष्टि विपरीत है. आहाहा ! समझमें आया ? यहां तो अब धर्मीकी बात चलती है. आहाहा ! क्या कहते हैं ? देओ !

“समस्त कर्मोंसे किये गये, ज्ञातृत्वमात्रसे भिन्न परिणामोंके अनुभवकी (—लोकर्तृत्वकी) उपरमस्वरूप अलोकर्तृत्व शक्ति” आहाहा ! परका लोक्ता तो अज्ञानी भी नहीं और ज्ञानीको स्वरूपकी दृष्टि, आत्मज्ञान हुआ (है) तो वह आत्माका आनंदका लोक्ता है. राग भोगनेके कालमें उसे राग होता है परंतु रागसे निवृत्त स्वरूप ही है. उसका लोक्ता नहीं.

श्रोता : (तो फिर) रागको कौन भोगता है ?

पू. गुरुदेवश्री :- रागको राग भोगता है. भोक्ताकी पर्यायमें षट्कारक परिणामन विकारका है. अपनी अमोक्तृत्व शक्तिकी पर्यायमें षट्कारकरूप निर्मल परिणतिके षट्कारक हैं.

फिरसे, “समस्त कर्मोंसे किये गये ज्ञातृत्वमात्रसे भिन्न परिणामोंके अनुभव...” रागका अनुभव, द्वेषका अनुभव, विकल्पका अनुभव उससे उपरम स्वरूप है. आहाहा ! औसा मार्ग है.

दो-तीन वर्ष पहले ५० पंडित लोग एकठे हुए थे. रात्रिको प्रश्न यर्या की थी. उसमें यह यर्या रही थी (कि) ‘कोई भी परद्रव्यका कर्ता नहीं माने तो वह दिगंबर नहीं’ औसा उनको निश्चित करना है. अरे...! भगवान ! औसा मार्ग है न प्रभु ! दीपता, शोभित मार्ग है.

ज्ञानीको रागकी आसक्ति होती है. समझमें आया ? (उसकी) रुचि नहीं (है). रागकी रुचि नहीं, रागमें सुखबुद्धि नहीं. आसक्ति होती है परंतु उस आसक्तिसे वे तो निवृत्त स्वरूप है. आहाहा ! समझमें आया ? औसी बातें हैं. आहाहा ! औसा मार्ग ! जिनमार्ग – यह जैनमार्ग है न ? तो जैनमें रागका अभावस्वभावस्वरूप आत्माका अमोक्ता गुण है. रागका भोक्ता गुण आत्मामें है नहीं. आहाहा ! कितनी धीरज याहिअे. अंदर द्रव्यस्वभावमें घुसकर, यैतन ज्ञायकका तल स्पर्श करके (अनुभव करना, उसमें कितनी धीरज याहिअे !)

ज्ञातापनाका परिणाम कदा न ? क्या कदा ? ज्ञाता, “ज्ञातृत्वमात्रसे भिन्न...” आहाहा ! जानना-देखना परिणाम जो है... यहां परिणामकी (बात है). द्रव्य, गुण तो (विकारसे) भिन्न है ही परंतु धर्मीका ज्ञाता-दृष्टाका परिणाम विकारके परिणामसे निवृत्तस्वरूप है. आहाहा ! समझमें आया ? पाठ है न ?

अरेरे...! शास्त्रका अर्थ करनेमें भी अपनी दृष्टि रभकर अर्थ करे. शास्त्रको क्या दृष्टिसे कटना (है) ? दृष्टि उस ओर नहीं ले जानी है और अपनी दृष्टिकी ओर (अपनी दृष्टि रभकर) शास्त्रका अर्थ करना (है). (यह पद्धति बराबर नहीं है).

श्रोता : दृष्टि थी कहां ? दृष्टि तो आपने दी है.

पू. गुरुदेवश्री : “समस्त कर्मोंसे किये गये...” यहां भी ‘किये गये’ आया. “ज्ञातृत्वमात्रसे भिन्न परिणाम....” यानी विकारीभाव. उसके “... अनुभवकी (–मोक्तृत्वकी) उपरम...” (अर्थात्) निवृत्तस्वरूप. विकारीभावके भोक्तापनेसे निवृत्तस्वरूप अमोक्तृत्व शक्ति है. आहाहा !

भरत (यकवर्ती) जैसे सम्यक्दृष्टि धर्मी जव, आत्मज्ञानी जवको छ पंडका राज, ८६ उजार स्त्री (थी). (उन्हें) भोगकी आसक्तिके परिणाम थे परंतु स्वभावकी दृष्टिके कारण, ज्ञाता-दृष्टा परिणामके कारण विकारी परिणामसे निवृत्त स्वरूप, अमोक्ता आत्मा है. क्या कदा

કિ, જૈસે અભોક્તૃત્વ શક્તિ દ્રવ્યમેં હૈ, ગુણમેં હૈ ઐસા જહાં પરિણમન હુઆ તો પર્યાયમેં અભોક્તાપના આયા. સમજમેં આયા ? અભોક્તૃત્વ શક્તિ દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાય તીનોંમેં વ્યાપતી હૈ. દ્રવ્ય, ગુણમેં તો અનાદિ હૈ પરંતુ જબ (ઉસકા) ભાન હુઆ તબ પર્યાયમેં અભોક્તાપનાકી પર્યાય આયી. જ્ઞાતા-દૃષ્ટાપનાકી (પર્યાય) કહો કિ રાગકા ભોક્તા નહીં (અર્થાત્) અભોક્તાપનાકી પર્યાય કહો (એક હી બાત હૈ). આહાહા ! ઐસા માર્ગ !

કુરસદ મિલે નહીં (વહ) નિવૃત્તિ કબ લે ? ઔર કબ નિર્ણય કરે ? યહ ધૂલ ઔર ધમાલ ! સારા દિન પાપ...પાપ... યે કિયા, વહ કિયા... અરેરે...! બાહરકા (કુછ) કરના વહ તો ઉસકી પર્યાયમેં ભી નહીં. ઔર ઉસકે દ્રવ્ય, ગુણમેં જો અભોક્તાપના હૈ, ઉસકા સ્વીકાર હોતે હી અભોક્તાપના પર્યાયમેં આતા હૈ. ઐસા કહતે હૈં. સમજમેં આયા ? આહાહા ! દ્રવ્ય-ગુણમેં તો અભોક્તાપના ત્રિકાલ હૈ (પરંતુ) પર્યાયમેં અજ્ઞાનીને ભોક્તાપના માના હૈ. દ્રવ્યકા જહાં અનુભવ હોતા હૈ તો પર્યાયમેં ભી રાગકા ભોક્તા છૂટ જાતા હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? અરે ! અનંત ગુણકી – શક્તિકી પર્યાયમેં અભોક્તૃત્વકી પર્યાય નિમિત્ત હૈ અથવા અભોક્તૃત્વકા ઉસમેં રૂપ હૈ. તો જ્ઞાનકી હીન દશાકા ઔર વિપરીત દશાકા ભોક્તા જીવ નહીં હૈ. ઐસી બાત ! આહાહા ! સમજમેં આયા ? ભાષા તો સાદી હૈ, ભાઈ ! બહુત (કઠિન) ભાષા (નહીં હૈ). સંસ્કૃત યા વ્યાકરણ ઐસા કુછ નહીં હૈ. વહ (સબ) પંડિત જાને.

યહાં તો અભોક્તા શક્તિ દ્રવ્ય, ગુણમેં તો ત્રિકાલ પડી હૈ પરંતુ ઉસકા ભાન હુઆ, જહાં સમ્યગ્દર્શન હુઆ તો અભોક્તા શક્તિકા પર્યાયમેં અભોક્તાપના આ ગયા. પર્યાયમેં અભોક્તાપના આયા તો રાગકા ભોક્તાસે વહાં નિવૃત્ત (સ્વરૂપ) હૈ. વિશેષ કહેંગે....



જ્ઞાનનું વીર્ય જ્ઞાનમાં કામ કરી જ્ઞાનમાં રમે તે મારું સ્વરૂપ છે. આત્માનું લક્ષણ જ્ઞાન છે. તેને છોડી રાગાદિમાં રોકાય તો તે બંધનું લક્ષણ છે.

(પરમાગમસાર-૬૬૦)

प्रवचन नं. २१

शक्ति-२३ ता. ३१-०८-१९७७

सकलकर्मोपरमप्रवृत्तात्मप्रदेशनैष्णन्द्यरूपा निष्क्रियत्वशक्तिः ॥२३॥

समयसार, शक्तिका अधिकार (यलता है). आत्म वस्तु ऐसी अनंत शक्तिका, रत्नका भंडार है. अक-अक शक्तिमें अनंत शक्ति है. अनंत शक्ति संख्यासे तो है. आकाशका जितना अनंत प्रदेश है उससे अनंत गुणी अक द्रव्यमें शक्ति है. अक-अक शक्तिमें अनंत-अनंत सामर्थ्य है और अक-अक शक्तिमें अनंत पर्याय है. यह अनंत शक्तियां आत्मामें अकमसे बिराजमान हैं. आहाहा ! उसकी प्रतीत और अनुभव होने पर अंतरमें द्रव्यस्वभावका स्व आश्रय करके ज्ञानकी पर्यायमें सारा द्रव्य और गुणका ज्ञान होता है, तो पर्यायमें सब गुणकी — शक्तिका अक अंश व्यक्त होता है. समजमें आया ?

यहां तो अपने निष्क्रिय शक्ति यलती है. थोडा सूक्ष्म है. सत्ता स्वरूप भगवान बिराजमान है. आहाहा ! उसका अस्तित्व अनंत गुणसे है. आहाहा ! गुण और पर्यायका (समुदाय) आत्मा है. यहां विकारी पर्याय नहीं ली है. शक्ति और शक्तिवान ऐसा भगवान आत्मा ! उसके सामान्य ध्रुव पर दृष्टि होनेसे, ध्रुवको ध्येय बनानेसे जितनी संख्या गुणोंकी है उतनी संख्यामें शक्तिकी आंशिक व्यक्तता सम्यग्दर्शनमें होती है. आहाहा ! समजमें आया ? यहां अपने लोक्ता शक्ति हो गई. अब आज २३वीं (शक्ति लेते हैं).

“समस्त कर्मोंके उपरमसे...” ल्पाषा ऐसी है, “समस्त कर्मोंके उपरमसे...” (२१ और २२ शक्तिमें) ऐसा (कहा) था “समस्त कर्मोंके द्वारा किये गये परिणाम...” अकर्ता-अलोक्ता (शक्तिमें) ऐसा (कहा) था. यहां तो कहते हैं, “समस्त कर्मोंके उपरमसे प्रवृत्त आत्मप्रदेशोंकी निरुपेक्षास्वरूप (—अकंपतास्वरूप) निष्क्रियत्व शक्ति” है. आहाहा ! निष्क्रियत्व शक्ति (ऐसा कहा) तो तदन अकंपपना तो अज्बमें होता है. परंतु आस्रव (अधिकार १७६ गाथाके भावार्थमें) अर्थका अर्थ क्षायिक समकित्तीको ऐसा किया है. परंतु समकित्तीको ही निष्क्रियत्व शक्तिका अंश व्यक्तरूपसे है. समजमें आया ? उसमें ऐसा लिया है कि, क्षायिक समकित्तीको उस संबंधी

अविरति, जोगका नाश होता है. इस संबंधी छतना (कथन है). वास्तवमें तो सम्यग्दर्शनमें सत्यस्वरूप पूर्णानंद जहां अंतरमें प्रतीतमें आया, अनुभवमें आया, अनुभूतिमें द्रव्यका स्वभावका अनुभव हुआ तो सम्यक्दृष्टिको भी निष्क्रियत्व शक्तिका एक अंश प्रगट है. यहां समस्त कर्मका अभाव लिया है.

निश्चयमें तो आत्मामें अनंत आनंद, अनंत ज्ञान, अनंत स्वच्छता, प्रभुता (है) वैसे निष्क्रियत्व शक्ति भी अनंत पडी है. उस स्वभाव सन्भुषकी प्रतीति होनेसे निष्क्रियत्व शक्तिका भी अंश यौथे गुणस्थानसे व्यक्त – प्रगट होता है. आडाडा !

श्रोता : सर्व गुणांश ते सम्यक्त्व.

पू. गुरुदेवश्री : सर्व गुणांश ते समकित – यह (कथन) इस संबंधमें है. (और) रहस्यपूर्ण थिहीमें “ज्ञानादि एक देश व्यक्त” ऐसा पाठ है. समजमें आया ? “ज्ञानादि एकदेश व्यक्त...” ऐसा आया है. और केवलज्ञानीको ज्ञानादि सर्वदेश व्यक्त है. उसका अर्थ क्या ? वहां ऐसा नहीं कडा कि, ज्ञान, दर्शन, आनंदका ही एक अंश व्यक्त होता है. ज्ञानादि सर्व गुणोंकी एकदेश व्यक्तता – उसका नाम सम्यग्दर्शन है. आडाडा ! श्रीमद्गुरुने सर्वगुण कडा. (और) रहस्यपूर्ण थिहीमें ऐसा (कडा). समजमें आया ?

(आत्मा) ज्ञानादि अनंत गुणका (भंडार है). आडाडा ! यैतन्य रत्नाकर भगवान आत्मा ! अनंत-अनंत गुणकी भाषा-भजना है. और एक-एक शक्तिमें भी अनंत ताकत ! और एक-एक शक्तिमें अनंत शक्तिका रूप ! एक-एक शक्ति अनंत गुणमें व्यापक और एक-एक शक्तिका भान हुआ तब तो एक शक्ति द्रव्य, गुण और पर्यायमें व्यापक हो गई. समजमें आया ? तो निष्क्रियशक्ति भी पर्यायमें व्यापक हुई. आडाडा ! निष्क्रिय अजोगपनाका अंश यौथे गुणस्थानमें प्रगट हुआ. आडाडा ! अरे ! प्रतिष्ठीवी गुण जो यार अघाति (कर्मका) नाश होकर (प्रगट) होते हैं उसका भी अंश प्रगट हुआ है, ऐसा कडते हैं. ‘ज्ञानादि सर्व गुणका एक देश व्यक्त’का अर्थ क्या ? समजमें आया ?

भोक्षमार्ग प्रकाशकमें रहस्यपूर्ण थिही है न ? श्रीमद्गुरुमें भी (आता) है. परंतु इसमें (भोक्षमार्ग प्रकाशकमें) द्विगंवरोंको थोडा भ्यालमें रहे. यहां तो थोडा आगमका आधार देना है न ? “भाईज, तुमने तीन दृष्टांत लिखे व दृष्टांतमें प्रश्न लिखा, सो दृष्टांत सर्वांग मिलता नहीं है. दृष्टांत है वह एक प्रयोजनको बतलाता है.” क्योंकि ज्ञानादि गुण एक देश प्रगट हुआ, ऐसा कडते हैं. जैसे यंद्रमा एकदेश अंशे बाह्यमें प्रगट हुआ और दूसरा आवरणमें है, ऐसा (यहां) नहीं है. यहां तो सर्व असंभ्य प्रदेशे असंभ्य गुण एकदेश प्रगट हुआ है. (यहां) यंद्रका दृष्टांत लागू नहीं पडता. यंद्रके बीजका एक भाग मात्र छतनेमें है और बाकी दूसरा (भाग) आवरणमें है. भले भ्यालमें सारा आता है. वैसे सम्यग्दर्शनमें पूर्ण (स्वरूप) भ्यालमें आता है. परंतु सम्यक्दृष्टिकी व्यक्त (पर्यायमें) अनंत गुणका एक अंश

प्रगट है. समजमें आया ? आडाडा ! दृष्टांतमें जैसे यंद्रका नीयेका भाग व्यक्त है और दूसरा भाग सारा आवरणमें है, ऐसा दृष्टांत यहाँ लागू नहीं पडता. तबले दृष्टांत आपने लिखा परंतु यह दृष्टांत यहाँ लागू नहीं पडता. यहाँ तो सारा असंभ्य प्रदेशमें एक अंश व्यक्त पूर्ण (प्रदेशमें) एकदेश व्यक्त है. यंद्रमा तो अमुक भागमें व्यक्त है और बाकी आवरणमें है. इसलिये यहाँ इस दृष्टांतका सिद्धांत लागू नहीं पडता. समजमें आया ?

भगवान आत्मा ! असंभ्य प्रदेशमें अनंत गुणके निधानसे (भरा है). एक-एक प्रदेशमें अनंत गुण है. सर्व (प्रदेशमें) व्यापक जैसे अनंत गुण (हैं). यंद्रकी भांति इसका एक नीयेका हिस्सा व्यक्त है, यहाँ ऐसा दृष्टांत लागू नहीं होता. यहाँ तो सारे असंभ्य प्रदेशमें अनंत गुणका एक व्यक्त अंश प्रगट है. समजमें आया ? देओ ! यौथे गुणस्थानवर्ती आत्मामें ज्ञानादि गुण (लिये). उसमें कोई गुण बाकी नहीं रहे. प्रतिष्ठवी गुण या निष्क्रिय गुण (ऐसा कुछ बाकी नहीं रहा). सब आ गया. आडाडा !

गंभीर यैतन्यरत्नसे भरा भगवान आत्मा उसका आश्रय लेकर जहाँ सम्यग्दर्शन प्रगट हुआ (तो पर्यायमें असंभ्य प्रदेशमें अनंत गुणका एक अंश व्यक्त – प्रगट हुआ). “भूदत्थमस्सिदो खलु सम्मादिट्ठी हवदि जीवो ।” ११वीं गाथा जैन दर्शनका प्राण (है). ऐसा जैन संदेशमें लिखा था. “भूदत्थमस्सिदो खलु” – सारा भूतार्थ, सत्यार्थ, त्रिकालवर्ती उसका आश्रय करनेसे सम्यग्दर्शन (होता है). उसमें अनंत शक्ति है. अनंत शक्तिरूप द्रव्यका जहाँ आश्रय लिया – उस पर्यायमें असंभ्य प्रदेशमें एक अंश व्यक्त प्रगट है जैसे यंद्रमा है (वैसे मात्र) नीयेके प्रदेशमें व्यक्त है, ऐसा नहीं है. आडाडा !

आसव अधिकारकी १७६ गाथाके भावार्थमें लिखा है, “सम्यक्दृष्टिके मिथ्यात्वका और अनंतानुबंधी कषायका उदय न होनेसे उसे उस प्रकारके भावासव तो होते ही नहीं. और मिथ्यात्व और अनंतानुबंधी कषाय संबंधी बंध भी नहीं होता...” बादमें कौसमें लिखा है. “क्षायिक सम्यक्दृष्टिके सत्तामेंसे मिथ्यात्वका क्षय होते समय ही अनंतानुबंधी कषायका तथा तत्संबंधी अविरति और योगभावका भी क्षय हो गया होता है” है ? परंतु उन्होंने क्षायिक डावा है. और यह रहस्यपूर्ण चिह्नोंमें तो सर्व समकितदृष्टि कडा. समजमें आया ? आडाडा !

यहाँ क्षायिक क्यों कडा ? कि (मिथ्यात्वका) क्षय हुआ है वह वैसा का वैसा ही रहेगा. इस अपेक्षासे उसे क्षायिक कडा. यौथे गुणस्थानमें योगके अंशका भी क्षय है. कंपनके एक अंशका क्षय है. आडाडा ! निष्क्रिय शक्ति है उसका अकंपस्वरूप स्वभाव है. सम्यग्दर्शनमें इस अकंपस्वभावका – शक्तिका एक अंश व्यक्त – प्रगट (हुआ है). अज्ञोगपनाकी पर्यायका प्रगटपना व्यक्त हुआ है. आडाडा ! समजमें आया ? अद्भुत गंभीर है ! आडाडा !

एक दूसरा न्याय इस (रहस्यपूर्ण चिह्नोंमें) आया न ? एक देश कडा न ? और पीछे क्या है ? देओ ! “ज्ञानादिगुण एकदेश प्रगट हुआ है” गुण शब्दका (अर्थ) पर्याय. “तेरहवे

गुणस्थानमें आत्माके ज्ञानादिक गुण सर्वथा प्रगट होते हैं” अर्थात् सर्वदेश प्रगट (होते हैं). (यहां आस्रव अधिकारमें) “क्षायिक सम्यक्दृष्टिके सत्तामेंसे मिथ्यात्वका क्षय होते समय ही अनंतानुबंधी कषायका तथा तत्संबंधी अविरति....” – ‘तत् संबंधी अविरति’ अभी है तो यौथा (गुणस्थान). परंतु उस संबंधी अनंतानुबंधी आदि कषायभाव था उसका अभाव हुआ. आहाहा ! सूक्ष्म बात है, भाई ! यह तो भगवान सारा पूर्ण अनंत-अनंत येतन शक्तिका रत्नाकर, अनुभवमें जहां आया तो जितनी शक्ति है उसका (अेक अंश प्रगट हो गया). अकंप हो, अज्ञेयपना हो, ज्ञान हो, आनंद हो, ईश्वरता – प्रभुता हो, स्वच्छता हो, कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान शक्ति हो – सबका अेक अंश – देश व्यक्त – प्रगट यौथे गुणस्थानमें होता है. आहाहा ! थोडा सूक्ष्म है. समजमें आया ? ज्ञानयंत्रकी बात है. आहाहा ! यहां जो निष्क्रिय शक्ति कहते हैं, सम्यग्दर्शनमें इस (शक्तिका) भान हुआ तो पर्यायमें (यह शक्ति) पर्यायमें व्यापती है. इसमें तो बहुत गंभीरता है.

पुण्यके कारण जैसे भिन्न गये तो वहां कोई उदापण काम नहीं करता. उदापण (माने) समजे ? हॉशियारी. धूलमें भी हॉशियार नहीं है. आहाहा ! अनंत गुणका पिंड प्रभु इसका जहां स्वीकार हुआ, सत्कार हुआ, आश्रय हुआ, सन्मुख हुआ तो जितनी शक्तियां हैं उसका अेक अंश व्यक्त – प्रगट (होता है). द्रव्य, गुणमें तो (शक्ति) है ही. (परंतु) पर्यायमें (भी) व्याप्त होती है. यह पहले आ गया है. प्रत्येक शक्ति द्रव्य, गुण और पर्यायमें व्याप्त होती है. समजमें आया ? आहाहा ! जैन दर्शन और उसमें द्रव्यानुयोग तत्त्व बहुत सूक्ष्म है. भगवानका यश ऐसा है कि अनंत गुणका पालन करे. आहाहा ! क्या कहते हैं ?

निष्क्रियता प्रगट हो गई ? हां, यौथे गुणस्थानमें आंशिक निष्क्रियता प्रगट हो गई. आहाहा ! भाई ! यहां तो जितने गुण हैं (उसमें) प्रतिज्वी गुण भी गुण है कि नहीं ? तो सत्य स्वरूप भगवान जो अनंत गुणका पिंड उसकी सत्य, पूर्ण सत्की सत् प्रतीति, सत् दर्शन – सत्का दर्शन, सत्की प्रतीति, सत्का देवना ऐसी प्रतीति जहां आत्मामें हुई, तो जितनी शक्तियां हैं उसका अेक अंश पर्यायमें व्याप्त होता है. आहाहा ! यह द्रव्य, गुण पर्यायकी व्याख्या. कोई कहता था कि, (लोग) द्रव्य, गुण, पर्यायकी व्याख्या ही नहीं समजते. कितने लोगोंको (तो) द्रव्य, गुण, पर्यायकी जबर नहीं. आहाहा !

श्रोता : द्रव्य यानी पैसा.

पू. गुरुदेवश्री : वह यहां कहा था. यहां लिखा है न ? ‘द्रव्यदृष्टि ते सम्यक्दृष्टि’ – तो अेक श्रेतांजर आये. उन्होंने देखा ओहोहो ! यहां जैसेवाले बहुत आते हैं. द्रव्यदृष्टि ते सम्यक्दृष्टि ? जिसके पास बहुत द्रव्य (पैसा) है वह सम्यक्दृष्टि ? ऐसा प्रश्न किया. आहाहा ! अरेरे...! ५०-५०, ६०-६० वर्षसे जैनमें जन्म लिया (उसे) कुछ जबर नहीं. बापू ! यहां द्रव्य – पैसाकी बात कहा है ? यहां तो पैसा धूलमें कहकर तिरस्कार हो जाता है. वह

अज्जवमें जाता है और पैसाका स्वामी हो तो वह जड है. 'भैंसका स्वामी पाडा' होता है. (ऐसी गुजरातीमें कडावत है). ऐसा अज्जवका स्वामी (बनकर) 'यह मेरा है' (ऐसा माननेवाला) तो जड है. वह चैतन्य नहीं. आडाडा !

निर्जरा अधिकारमें टीकामें (ऐसा आया है कि) मैं अगर रागका स्वामी होऊँ तो मैं अज्जव हो जाऊँ. अपने शुद्ध स्वरूपकी प्रतीति अनुभवमें हुई तो सम्यक्दृष्टि कलते हैं कि, मैं राग हूँ, ऐसा मानूँ तो मैं अज्जव – जड हो जाऊँ. आडाडा ! लोग व्यवहार रत्नत्रयसे निश्चय होगा, ऐसा मानते हैं. जडसे चैतन्यका विकास होता है. बहुत विपरीत (मान्यता). आडाडा ! उस विपरीतताका ढंढेरा पिटें. (सोनगढकी बात) अंकांत है.... अंकांत है.

यहां तो कलते हैं अंकांत ही है. ठीक कलते हैं. वह अंकांत कलते हैं (परंतु उसे अंकांत स्वरूपकी) दृष्टि नहीं. अंक अपने स्वरूपकी अंकाग्रतामें अंकांत है. अंकांतमें आनंद आता है. शांति आती है. अनंत गुण – शक्ति आंशिक व्यक्त होती है. आडाडा ! आनंद गुणका भी अंश आया, वीर्य गुणका भी अंश (आया). वीर्य गुण (का कार्य) क्या ? स्वरूपकी रचना करे यह वीर्य. शुभभावकी रचना करे यह वीर्य नहीं. (उसे वीर्य कहा नहीं). आडाडा ! और अपनी पर्यायमें प्रभुताका गुण भी (प्रगट होता है). (पर्यायमें) प्रभुता आती है. शक्तिके धरनेवालेकी दृष्टि होनेसे, प्रभुता शक्तिके कारण पर्यायमें प्रभुताका परिणामन होता है. द्रव्य, गुण, पर्यायमें प्रभुता व्यापती है. आडाडा ! समझमें आया ? मार्ग तो सूक्ष्म है, बापू ! बहुत सूक्ष्म (है). क्या हो सकता है ? आडाडा !

बाहरके साथ क्या संबंध है ? शुभ भाव भी दुःखदायक है. भाई ! तुझे खबर नहीं. तेरा स्वभाव तो आनंद है न ! तो आनंदकी पर्याय होनी चाखिये. उसके बढले शुभभावमें तू रुक गया, दुःखमें रुक गया तो दुःखके अभाव स्वरूप आनंद स्वरूपके समीप गया नहीं और दुःखके समीप रहा. आडाडा ! जिसका संग करना नहीं उसके संगमें पडा. शुभभाव दुःख है उसका संग करना नहीं और भगवान आनंद स्वरूप, असंग स्वरूपका संग करना है. आडाडा ! समझमें आया ? असंगका संग किया नहीं और रागका संग किया तो वह तो दुःख लिया. दुःखको अपने पर ले लिया, दुःखको भोगा. आडाडा ! आदमीको कठिन लगे. शुभजोग साधन है, (ऐसे) चिल्लाते हैं न ? (कोई विद्वान ऐसा कलते हैं). 'शुभ जोग भोक्षका मार्ग है, जो शुभको हरे माने वह मिथ्यादृष्टि है' अरेरेरे...! प्रभु ! ये क्या सिखा ? बापू ! तुझे दुनिया मानेगी परंतु वस्तु स्थितिमें विरोध होगा, भाई ! आडाडा !

यहां कलते हैं, "समस्त कर्मोंके उपरमसे..." २१, २२ शक्तिमें क्या आया था ? "समस्त कर्मोंके द्वारा किये गये..." अकर्तृत्व - अत्मोक्तृत्वमें आया था न ? समस्त कर्मोंके द्वारा किये गये विकार आदि (परिणामके निवृत्तस्वरूप अकर्तृत्व शक्ति है). अकंप शक्तिकी विकृत अवस्था कर्मके द्वारा हुई है. समझमें आया ? भगवानका निष्क्रिय अकंप स्वभाव है. उसकी पर्यायमें

कर्मके द्वारा कंपन होता है, ऐसा आया न ? भाई ! आहाहा ! (यहां) समस्त कर्मोंके उपरमसे – (ऐसा लिया है). (और) पहले तो ऐसा कड़ा था, कर्म द्वारा हुआ विकारके उपरमसे अकर्ता और अभोक्ता है. अब यहां तो कर्मका अभाव (लिया है). आहाहा ! समझमें आया ? टीका तो टीका है !! शक्तिका तंडार तारा है. आहा ! चैतनरत्न है. चैतन रत्नाकर है.

यहां कहते हैं, प्रभु ! तुम सम्यक्दृष्टिको भी ऐसा बताते हो ? सर्व शक्ति निष्कंप है – अकंप है, उसमें भी अकंपका रूप सर्व गुणोंमें है. सर्व गुणोंमें पर्यायमें निर्मलता होती है वहां कंपना है ही नहीं. कंपना नहीं वही वस्तुकी पर्याय है. कंपना है उसका यहां अभाव बताया है. क्या कड़ा समझमें आया ? स्वरूपकी अनंत शक्तिमें निष्किय – निष्कंप शक्ति है. निष्किय शक्तिके परिणामनमें – पर्यायमें निष्कियता आयी, यह द्रव्यकी पर्याय (है). और कर्मके निमित्तसे जितना कंपन है उसका निष्किय पर्यायमें अभाव है. व्यवहारका अभाव है, यह अनेकांत और स्याद्वाद् है. समझमें आया ? यह तो गंभीर है. अक-अक शक्तिका वर्णन ओहोहो !

भाई ! द्विपयंदञ्जने (शक्तिका वर्णन) बहुत किया है. सवैयामें – परमात्मपुराणमें भी है. थोड़ा समयसार नाटकमें भी है. परंतु छन्दोंने जो किया है ऐसा विस्तार कहीं है नहीं. बहुत विस्तार (किया है). ओहोहो ! अक-अक पर्यायमें अनंत नट, अनंत थट, अनंत रूप, अनंत भाव जैसे-जैसे कितने ही बोल लिये हैं. अक-अक पर्यायमें हां !

यहां कहते हैं कि, “समस्त कर्मोंके उपरमसे...” (अकर्तृत्व – अभोक्तृत्वमें) परिणामके उपरमसे, ऐसा कड़ा. अकर्तृत्व और अभोक्तृत्वमें कर्म द्वारा जो विकार परिणाम हुआ उसके उपरमसे अकर्तृत्व – अभोक्तृत्व था. उससे निवृत्त होकर अकर्ता और अभोक्ता कड़ा. यहां सर्व कर्मसे निवृत्त है. आहाहा ! क्योंकि कर्म तो तेरेमें अभावरूप है और यह शक्तिका परिणामन तो भावरूप है. आहाहा ! सूक्ष्म मार्ग, भाई ! लोगोंको इसका अभ्यास नहिं और यह सब (संसारमें) रचनेका अभ्यास (करते हैं). सारा दिन ये किया और वो किया.

यहां कहते हैं, “समस्त कर्मोंके उपरमसे...” आहाहा ! सभी कर्मोंका उपरम ? (तो कहते हैं) कर्मोंका अभाव है तो उपरम ही है. द्रव्य जो भगवान् आत्मा ! उसका द्रव्य, उसका गुण और उसकी पर्याय – समस्त कर्मके उपरमसे बात है. कर्मके संबंधसे (बात) नहीं है. आहाहा ! यह शक्ति सूक्ष्म है. अकंपना चौथे गुणस्थानसे सिद्ध करना (गजब बात है !). आहाहा ! भाई ! यह तो सर्वज्ञ परमेश्वरकी ज्ञानधारा है. इसकी दिव्यध्वनि – प्रवचन अभूतधारा, उसे समझनेमें तो बहुत प्रयत्न चाहिए. समझमें आया ? अक M.A. और L.L.B. के लिये (कितने वर्ष अभ्यास करते हैं ?).

छोटी उम्रमें अक मेरा मित्र था. हम पावेज १३ वर्षकी उम्रमें गये. बादमें बहुत सालके बाद भावनगर आये. तब वह मिला था. हमे देखकर कड़ा, “अरे ! आप यहां कहांसे ?”

(મૈને) કહા, ‘પાલેજસે આયા હું.’ (ઔર પૂછા) કિતને સાલસે પઢતે હો ? (ઉસને કહા), ‘૨૨ સાલસે પઢતા હું’ મૈને તો સાત કક્ષા પઢકર છોડ દિયા થા. સાતવીં કક્ષાકી પરીક્ષાકી નહીં દી થી. પરીક્ષામેં છઠ્ઠી કક્ષાકી પરીક્ષા દી થી. સાતવીં છોડકર પાલેજ ગયે થે. (તબ) પઢાઈ છોડ દી. એક છ મહિના તો યહ અભ્યાસ કર ! અમૃતચંદ્રાચાર્ય (કહતે હૈં), એક છ માસ તો અભ્યાસ કર, પ્રભુ ! ‘લાગી લગન હમારી, લગન લગા દે પરમાત્મામેં’ આહાહા ! તુમ હી પરમાત્મા હો ! દૂસરે પરમાત્માકી લગની તો રાગ હૈ. આહાહા !

નિષ્ક્રિય (શક્તિકી) બાત (ચલતી હૈ). આહાહા ! ચૌથે ગુણસ્થાનમેં નિષ્ક્રિય શક્તિકી વ્યક્તતા – પ્રગટતા પર્યાયમેં પ્રગટી હૈ. આહાહા ! જો ચૌદહવે ગુણસ્થાનમેં અજોગપના પ્રગટ હોગા ઉસકા એક અંશ ચૌથે (ગુણસ્થાનમેં) પ્રગટ હો ગયા હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? દૂસરા એક ન્યાય આયા હૈ ન ? શુભભાવ હૈ ઉસમેં શુદ્ધતાકા અંશ જો ન હો તો જ્ઞાન બઢકે કેવલજ્ઞાન હોતા હૈ (એસે હી) શુભ બઢકર યથાપ્યાત ચારિત્ર હોતા હૈ ? ક્યા કહા સમજે ? મતિ-શ્રુતજ્ઞાનકી પર્યાય વ્યક્ત હુઈ વહ તો જ્ઞાનકી ધારા બઢકર કેવલજ્ઞાનમેં જાતી હૈ. પરંતુ શુભભાવમેં જો શુદ્ધતાકા અંશ ન હો તો, (ક્યા) શુભભાવ બઢકર યથાપ્યાત ચારિત્ર હોતા હૈ ? તો શુભભાવમેં ભી શુદ્ધતાકા અંશ હૈ, યહ બઢકર યથાપ્યાત ચારિત્ર હોતા હૈ. મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશકમેં ઉપાદાન-નિમિત્તકી ચિઠ્ઠીમેં લિયા હૈ, આહાહા ! ક્યા કહા ? કિ, આત્મામેં શુભ જોગકે કાલમેં ભી સ્થિરતાકા – શુદ્ધતાકા જો અંશ ન હો તો વહ અંશ બઢકર યથાપ્યાત (ચારિત્ર) કહાંસે હોગા ? શુભ જોગ બઢકર યથાપ્યાત ચારિત્ર હોગા ? ઔર જ્ઞાન બઢા હૈ તો ક્યા ચારિત્રકી શુદ્ધિ બઢ જાયેગી ? એક ગુણકી પર્યાય (બઢતી હૈ ઉસમેં) દૂસરે ગુણકી પર્યાય બઢતી હૈ, એસા હોતા હી નહીં હૈ, એસા કહતે હૈં. આહાહા ! સમજમેં આયા ? વહાં સિદ્ધ કિયા હૈ, શુભ જોગ વર્તે (છે, તે સમયે) શુદ્ધતાકા અંશ હૈ. પરંતુ શુદ્ધ અંશકા કિસકો લાભ હોગા ? (કિ જિસે) ગ્રંથિભેદ હુઆ હૈ, ઉસકો (લાભ હોગા). જિસકો રાગકી એકતા તૂટ ગઈ હૈ, ઉસકા વહ શુદ્ધ અંશ બઢકર યથાપ્યાત (ચારિત્ર) હોગા. જ્ઞાનકી શુદ્ધિ જ્ઞાનકો બઢાતી હૈ. જ્ઞાનકી શુદ્ધિ બઢ ગઈ ઇસલિયે ચારિત્રકી શુદ્ધિ બઢ જાય (એસા નહીં હૈ). એક ગુણકી શુદ્ધિમેં દૂસરે ગુણકી (શુદ્ધિ બઢે) એસા નહીં હૈ. આહાહા ! મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશકમેં પીછે હૈ. આહાહા !

બનારસીદાસને પરમાર્થ વચનિકામેં કહા હૈ કિ, મૈં યથાર્થ સુમતિ પ્રમાણ કેવલજ્ઞાન અનુસાર યહ કહતા હું. આયા હૈ ? આહાહા ! પ્રભુ ! તુમ ચૌથે ગુણસ્થાનવર્તી સમ્યક્દૃષ્ટિ (હો ફિર ભી) કેવલજ્ઞાન અનુસાર તુમ યહ ચિઠ્ઠી કહતે હો, તો ઇતના જોર !! સમજમેં આયા ? “વચનાતીત, ઇન્દ્રિયાતીત, જ્ઞાનાતીત” (યહાં) જ્ઞાનાતીત કહા. (ઇસકા મતલબ) વિકલ્પવાલા જ્ઞાન. “ઇસલિયે યહ વિચાર બહુત ક્યા લિખેં ? જો જ્ઞાતા હોગા વહ થોડા હી લિખા બહુત કરકે સમજેગા” થોડા લિખા બહુત કરકે જાનના. “જો અજ્ઞાની હોગા વહ યહ ચિઠ્ઠી સુનેગા

सही परंतु समझेगा नहीं. यह वयनिका ज्यों की त्यों सुमतिप्रमाण केवली वयनानुसारी है.” यह वयनिका यथायोग्य मेरी योग्यता प्रमाण, सुमति प्रमाण (विभी है). परंतु केवली भगवानके अनुसार है. “जो इसे सुनेगा, समझेगा, श्रद्धेगा उसे कल्याणकारी है – भाग्य प्रमाण” आहाहा ! यौथे गुणस्थानवाले ऐसा कहते हैं कि, मेरी यह बात केवलज्ञान वयनानुसार है.

(उस समयमें) यहां केवलज्ञान तो था नहीं. केवलज्ञानीके पास तो कुंदकुंदाचार्य गये थे, बनारसीदास तो गये नहीं थे. वे भगवान आत्माके पास गये थे न ! तो हम जो कहते हैं वह केवली वयन अनुसार कहते हैं. आहाहा ! (भावविगी) संतोंकी तो बलिहारी (है ही) परंतु द्विगंबर समकित्ती – गृहस्थकी (भी) बलिहारी (है) !! आहाहा ! (कोई) ऐसा कहते हैं कि, ‘आचार्यके सिवा किसीका (आधार) नहीं (यलेगा). विद्वानोंकी बात नहीं, आचार्यका कथन होना चाहिए’ भगवान ! सम्यक्दृष्टि हो कि पंचम गुणस्थानवाले हो कि छठे (गुणस्थानवाले) हो, सब केवली अनुसार ही कहते हैं. आहाहा ! उसमें कोई फेरफार नहीं है.

यहां कहते हैं, “समस्त कर्मोंके उपरमसे प्रवृत्त...” देओ ! परिणामनमें प्रवृत्त. परिस्पंद रहित किया. परिणाममें प्रवृत्त. इस शब्दमें गूढता है. शक्तिमें तो (गूढता) है परंतु “आत्म प्रदेशोंकी निस्पंदता...” असंख्य प्रदेशकी अकंपता. आहाहा ! मेरु पर्वत हिले तो प्रदेश हिले – कंपे. ऐसी (अथवा) निस्पंदता है. आहाहा ! समझमें आया ? “निस्पंदतास्वरूप (अकंपतास्वरूप)” निष्कियका अर्थ अकंपस्वरूप. यौथे गुणस्थानमें भी अकंप स्वरूप जो शक्ति है, उसका एक अंश – सर्व गुणोंमें (उसका) भी एक अंश प्रगट हुआ, ऐसा कहनेमें आया है, ऐसा है. आहाहा ! समझमें आया ?

जोगके अंशकी बात तो ली नहीं और जितना कंप है उसका अभाव दिया. द्रव्य, गुण, पर्यायमें निष्कंपताकी व्यापती यह आत्मा (है). जो अकंप – निष्कंप पर्याय हुई, यह कमवर्ती निष्कंपताकी पर्याय और अकंप गुण अकम, दोनोंका समुदाय यह आत्मा (है). कंपका समुदाय यह आत्मा, ऐसा नहीं दिया. कंप है, परंतु उस कंपका अकंपकी पर्यायमें अभाव है, आहाहा ! भाई ! ऐसी बात है ! शक्तिका वर्णन (गजब है) !

उसके दृष्टिके विषयमें सारी शक्तियां आती हैं. शक्तिका पर्यायमें अकंपपना हुआ. आहाहा ! प्रभु ! शास्त्रमें तो १४वे गुणस्थानमें अजोग कहा, १३वे (गुणस्थानमें भी) अभी संयोग कंपन कहा है. आंशिक कंपन कहा परंतु यहां तो सम्यग्दर्शनमें समस्त कर्मका अभाव है. उस कारणसे निस्पंदताकी पर्यायमें कर्मका अभाव है और कर्मके निमित्तसे कंपन हुआ उसका भी अभाव है, भाई ! आहाहा ! ऐसी गंभीर (बात है). आहाहा ! ओहोहो ! द्विगंबर संतोंके सिवा ऐसी बात कहीं है (नहीं). कर्मके निमित्तसे कंपन है (वह) अपनी

योग्यतासे है. परंतु निमित्तके संबंधसे कंपन है, उसका यहाँ अकंप पर्यायमें अभाव (है). द्रव्य, गुणमें तो अभाव है. (परंतु पर्यायमें भी अभाव है, ऐसा कहते हैं). ऐसी बातें हैं !
ऐसा मार्ग कहां है, बापू ? आडाडा !

श्रोता : गुरुदेव (आपने) सबको निष्कंप बना दिया.

पू. गुरुदेवश्री : उसका निष्कंप स्वरूप ही है. शक्ति निष्कंप है. शक्ति – उसका सामर्थ्य (उसमें) अक्रियपनाका सामर्थ्य है. सक्रियपना – कंपनका उसका सामर्थ्य है ही नहीं. आडाडा !
अकंप शक्तिमें ५० मिनट तो हो गई. उसकी गंभीरताका पार नहीं है.

अकंपशक्तिमें जो उसका द्रव्यका अनुभव हुआ तो अकंपपनाका परिणामन हुआ, वह अकंप(पना) कारण और कंप कार्य, ऐसा नहीं और कंप कारण और अकंप(पना) कार्य, ऐसा भी नहीं. आडाडा ! इसमें तो बहुत भ्रम है. कंप है, शुभ उपयोग तो है परंतु यहाँ शुभ उपयोगका अभाव है. ऐसी बात है, भाई ! कितने ही लोगोंको तो पहली बार सुननेको मिलता होगा. भगवान ! तेरे अनंत गुणमें अकंप नामका गुण है, तो सर्व गुण अकंप है. कोई गुण जैसे कंपते नहीं. समझमें आया ? अकंप जगह तो ऐसा दिया है कि, योगका कंपन है उसमें धर्मास्तिकायका निमित्त नहीं. कंप तो पर्यायमें है तो धर्मास्तिकाय निमित्त कब आयेगा ? कंपनको धर्मास्तिकायका निमित्त कबो तो स्थिरतामें-अकंपमें अधर्मास्तिकाय निमित्त कब आयेगा ? स्थिरतामें कभी निमित्त है ही नहीं. क्या कदा समझमें आया ? आडाडा !

‘प्रभुनो मारग छे शूरानो’ ‘हरिनो मारग छे शूरानो, ओ कायरना नहि काम जो ने’ श्रीमद्भूमि आता है न ? ‘वचनामृत वीतरागना परम शांतरस भूष, औषध जे भवरोगना कायरने प्रतिकूल रे.. गुणवंता रे... ज्ञानी, ओ अमृत वरस्या रे पंथमकाणमां’ आडाडा ! मुनिओंने पंथमकालमें अमृतकी वर्षा की है. दिगंबर संतोंने अमृतकी धारा बरसाई है. आडाडा ! अकंप अकंप गुणमें अंदर कितना भ्रम है ! आडाडा ! यह तो यथाशक्ति और क्षयोपशम शक्तिके प्रमाणमें अर्थ होता है. मुनिओंके क्षयोपशम और केवलज्ञानी उसकी बात करे ! आडाडा ! अपार... अपार... नाथ ! तेरी शक्तिका वर्णन (अपार है). सर्वज्ञ भगवानकी दिव्यध्वनिमें जब आता हो और जब तीन ज्ञानके धनी अकंप भवतारी ईन्द्र सुनते हो, वह यीज कैसी हो !! समझमें आया ? यह अनेकांत सिद्ध किया. अकंपशक्तिके परिणामनमें अकंपपना आया. कंपपना है परंतु (उसका) अभाव है. इसका भाव है तो उसका अभाव है, यह अनेकांत है. व्यवहारका अभाव – कंपनका अभाव यह स्याद्वाद् और अनेकांत है, समझमें आया ? आत्मामें कंपपना भी है और अकंपपना भी है. ऐसी यहाँ ना कहते हैं. आत्मामें कंपपना है ही नहीं. आडाडा ! क्योंकि ऐसा कदा न ? कमवर्ती और अकमवर्तीका समुदाय (वह) आत्मा. ऐसा कदा भाई ! पहले ही कदा. कमवर्ती और अकमवर्तीका समुदाय आत्मा कदा. यह निर्मल कमवर्ती पर्यायकी बात है. आडाडा ! समझमें आया ? और अकमवर्ती (गुण)

હૈ વહ તો નિર્મલ હૈ હી. કમવર્તી પર્યાયકા ઓર અકમવર્તી ગુણકા સમુદાય આત્મા હૈ. કંપના આત્માકા હૈ ઓર આત્મામેં હૈ, ઐસા યહાં લિયા હી નહીં. આહાહા ! ઐસા સૂક્ષ્મ હૈ.

અર્થમેં ઐસા લિયા, “જબ સમસ્ત કર્મોંકા અભાવ હો જાતા હૈ તબ પ્રદેશોંકા કંપન મિટ જાતા હૈ ઇસલિયે નિષ્ક્રિયત્વ શક્તિ ભી આત્મામેં હૈ.” યહ ભી અજોગપનાકી સિદ્ધી કી હૈ. ‘સર્વ ગુણાંશ તે સમકિત’ કબ આયેગા ? કોઈ ગુણ બાકી રહેગા ? નિષ્ક્રિય ગુણ બાકી રહેગા કિ ઉસકા અંશ ન આયે ? આહાહા ! “ઇસલિયે નિષ્ક્રિયત્વ શક્તિ ભી આત્મામેં હૈ” દેખા ? નિષ્ક્રિયત્વ શક્તિ ભી આત્મામેં હૈ. નિષ્ક્રિયત્વ શક્તિકા પરિણમન ભી આત્મામેં હૈ. નિષ્ક્રિયત્વ શક્તિકા પરિણમન ભી આત્મામેં હૈ. સમજમેં આયા ? કંપન આત્મામેં હૈ નહીં. આહાહા ! ગજબ બાત હૈ ! યહ બાત કહાં હૈ ભાઈ ? સર્વજકે અલાવા વસ્તુ સ્થિતિકી મર્યાદા કિસીને જાની નહીં હૈ, આહાહા ! અર્થાત્ તુમ સર્વજ સ્વભાવી ભગવાન ! સર્વજ શક્તિ સંપન્ન હૈ ! તુમ સર્વજ સ્વભાવી આત્મા હો, આહાહા ! સર્વજ સ્વભાવકે અલાવા ઐસી શક્તિકા વર્ણન (કહીં નહીં હૈ). સર્વજ સ્વભાવી જાનતે હૈં. આત્મા જાનતા હૈ. સર્વજ સ્વભાવી આત્મા હૈ. વિશેષ કહેંગે...



ગુણોને આવરણ નથી વળી તેનામાં ઊણપ નથી તેવી દરેક ગુણની શક્તિ છે. અસ્તિત્વ, વસ્તુત્વ, કર્તા, કર્મ, કરણ આદિ ગુણોનું સામર્થ્ય એવું છે કે તેને આવરણ ન હોય ને અધૂરા ન હોય—એમ નક્કી કરે તો ગુણની જાતિ નક્કી કરી કહેવાય. આવી તાકાત દરેક ગુણની છે. આવો સમ્યક્ભાવ સાધક છે. ને વસ્તુની જાતિ સિદ્ધ થવી તે સાધ્ય છે. (પરમાગમસાર—૬૯૪)

प्रवचन नं. २२

शक्ति-२४ ता. ०१-०९-१९७७

आसंसारसंहरणविस्तरणलक्षितकिञ्चिदूनचरमशरीरपरिमाणावस्थित-
लोकाकाशसम्मितात्मावयवत्वलक्षणाः ।।२४।।

समयसार, शक्तिका अधिकार यलता है. शक्तिका अर्थ क्या ? भगवान आत्मा जो वस्तु है, यह स्वभाववान है, शक्तिवान है. इसमें गुण कछो कि शक्ति कछो, अेक ही बात है. अेक आत्मा वस्तु – द्रव्य तरीके अेक है और उसकी शक्ति तरीके अनंत है. गुणकी संख्या अनंत है. अनंतका विस्तार करना (यह तो शक्य नहीं). तो आचार्यने ४७ शक्तिका वर्णन किया. बाकी तो प्रत्येक आत्मामें सामान्य गुण भी अनंत है और विशेष गुण भी अनंत है. गुण कछो कि शक्ति कछो (अेक ही बात है). एतना सभ अगर विस्तार करने जाये तो तो अनंत काल हो जाय. एतना तो काल है नहीं, आडाडा ! (एसदिये) संक्षेपमें ४७ शक्तिका वर्णन करके, आत्मामें अनंत शक्ति जो शुद्ध और पवित्र है उसका आश्रय करनेसे, शक्ति और शक्तिवानका भेदका लक्ष भी छोडकर (अभेद स्वरूपका आश्रय करनेसे अनंत शक्तिका स्वाद पर्यायमें आता है). शक्ति और शक्तिवानका भेद भी दृष्टिका विषय नहीं है. अेक-अेक शक्ति पर २२ ओल लिखे हैं, उसमें १८ नंबरमें आया है. पार नहीं शक्तिका (एतनी शक्ति है) !

आत्मा तो अनंत-अनंत गुण रत्नाकरका भंडार है, शुद्ध चैतन्य स्वभावका सागर, पवित्र भगवान ! (उसका) क्षेत्र भले शरीर प्रमाण हो परंतु उसके स्वभावकी तो परिमितता नहीं है. मर्यादा नहीं है. अेक-अेक शक्ति अनंत मर्यादावाली शक्ति है, ऐसी अनंत शक्तिका (अेक) रूप, उसे द्रव्य कछनेमें आता है. शक्ति और शक्तिवान (का भेद लक्षमें नहीं लेना). शक्ति समजनेमें समजना परंतु शक्ति और शक्तिवानका भेद दृष्टिमें नहीं लेना. आडाडा ! (जब) अभेद दृष्टि हो, तब अनंत रत्नका स्वाद, अनंत चैतन्यकी शक्ति और स्वभाव, उस अनंत शक्तिका पर्यायमें स्वाद आता है. सुषका स्वाद, ज्ञान शक्तिका स्वाद, दर्शनका स्वाद, ज्वतर शक्तिका स्वाद, नियत प्रदेशत्व शक्तिका स्वाद (ऐसे) पर्यायमें अनंत शक्तिका स्वाद आता

है. आज तो २४ वीं शक्ति चलती है. आहाहा !

श्रोता : स्वाद माने क्या ?

पू. गुरुदेवश्री : अनुभव – वेदन. लसुनका, दाल-भात, सब्जिका स्वाद आता है; वह जडका स्वाद नहीं आता. उसमें तो (उसका) लक्ष करके 'यह ठीक है' ऐसी वृत्ति उठती है, (उस) रागका स्वाद (आता) है. और बिखु काटे तो उसका दुःख नहीं है. इसमें अज्ञानमा उत्पन्न करता है, यह दुःख है. वह दुःखका वेदन है. बिखुके उंपका वेदन नहीं. समझमें आया ? क्योंकि वह तो जड है. जडका वेदन कहांसे (आया) ? भगवान तो अज्ञानी है. मात्र अपने स्वभावका लक्ष छोड़कर अनुकूल चीजमें प्रेम उठाना और प्रतिकूलतामें द्वेष उठाना, उसको जैसे राग-द्वेषका स्वाद (आता) है. आहाहा ! भगवान वीतरागी आनंद स्वरूप ! इसका एक समय भी कभी स्वाद लिया नहीं. आहाहा ! समझमें आया ?

(आत्मामें) अनंत-अनंत शक्ति है. (उसमें) अक-अक शक्तिका सुष है. सुष शक्ति भिन्न है परंतु अनंत शक्तिमें सुषका रूप है. आहाहा ! ऐसा शरीर प्रमाण क्षेत्र है (तो शरीरके) प्रमाणसे उसकी शक्तिकी लक्ष और माप है, ऐसा नहीं है. आहाहा ! उसकी शक्ति अमाप है, अनंत है, अपरिमित है और अक-अक शक्तिका माप भी अनंत है. शक्तिकी संख्या भी अनंत और अमाप है. वह तो कहां था न ? आकाशका (अनंत) प्रदेश है. लोकमें असंख्य प्रदेश (है) और अलोकमें अनंत... अनंत... अनंत... अनंत... कहीं अंत नहीं (घतने अनंत प्रदेश है). जैसे आकाशका एक परमाणु जितने क्षेत्रको रोके इसका नाम प्रदेश कहनेमें आता है. ऐसा आकाशका अनंत अमाप प्रदेशसे भी अनंत गुणा गुण एक जवमें है. आहाहा ! स्वभाव है न ? स्वभावमें क्षेत्रकी महत्ताकी जरूरत नहीं. उसका स्वभाव और शक्तिकी महत्ता है.

यहां कहते हैं कि, अक-अक चीजमें अनंत शक्तियां हैं. उसमें यह ४७ शक्तिका वर्णन (है). २३ शक्ति चल गई. कल २३ (वीं शक्ति) यही न ? कल एक घंटा यथा था. आहाहा ! प्रत्येक शक्ति अपने द्रव्य, गुण और पर्यायमें व्यापति है. कब (व्यापति है) ? (कि) जब द्रव्यकी दृष्टि होती है, द्रव्यका स्वीकार (होता है), विद्वानंद भगवानका जहां स्वीकार हुआ, सत्कार हुआ, सत्कार हुआ कि, तुम सत् हो, ऐसी प्रतीत हुई तो सत्कार (है). (तब प्रत्येक शक्ति द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्यापति है). समझमें आया ?

भगवान आत्मा ! अनंत-अनंत शक्तिका सागर (है). अक-अक शक्तिमें भी अनंत-अनंत सामर्थ्यता और अक-अक शक्तिमें अनंती-अनंती पर्याय (है). आहाहा ! अनंत शक्तिकी कमवर्ती उत्पाद-व्ययकी पर्याय और अकम (रूप) अनंत गुण – जैसे कमवर्ती पर्याय और अकम गुण उसके समुदायको यहां आत्मा कहनेमें आता है. आहाहा ! यहां विकारकी बात नहीं. समझमें आया ? शक्तिका वर्णन है न ? तो कोई शक्ति विकार करे ऐसी बात नहीं

है. कमवर्ती पर्यायमें भी यहाँ विकारकी बातका अभाव है. आहाहा ! बहुत सूक्ष्म भातें, बापू ! भाई !

यहाँ २४वीं शक्ति कहते हैं. कमवर्ती (पर्याय) और अकमवर्ती (गुणका) समुदाय आत्मा (है). अक-अक शक्ति अनंत शक्तिमें व्यापक (है). अनंत शक्तिमें अक-अक शक्तिका रूप (है). अक-अक शक्ति पारिणामिकभावरूप है. उसमें उदय, उपशम, क्षयोपशम (भाव) नहीं. (प्रत्येक) शक्ति सहज पारिणामिकभावरूप है. उसका भान छोकर कमवर्ती पर्याय होती है. यहाँ उपशम, क्षयोपशम और क्षायिक (पर्यायिकी) बात है. यहाँ उदयकी (औद्ययिकभावकी) बात नहीं है. आहाहा ! समझमें आया ? शक्तिकी पर्याय जो होती है उसमें षट्कारकका परिणामन होता है. क्योंकि द्रव्यमें और गुणमें षट्कारक शक्तिरूप वस्तु है. शक्तिका संग्रहालय ऐसा भगवान (आत्मा) ! उसका सत्कार किया; सत्कार किया (माने) 'यह है' ऐसा अनुभवमें आया (तो पर्यायमें निर्मलता प्रगट होती है). लोग (बाहरमें) सत्कार करते हैं न ? आहाहा ! समझमें आया ? पर्यायमें निर्मलता प्रगट होती है वह पर्यायमें व्यापक होगी. आहाहा !

अनंतकालसे शक्ति और शक्तिका स्वरूप त्रिकाल है. परंतु पर्यायमें व्यापक नहीं (है). जैसे आत्मामें सुष नामकी शक्ति पूर्ण पडी है. परंतु अनादिसे पर्यायमें सुष शक्तिका व्याप्यपना, अवस्थापना नहीं है. क्योंकि (ऐसी स्व) यीजका ज्ञान नहीं, यीजका भान नहीं, यीजका स्वीकार नहीं, यीजका सत्कार नहीं, इस यीजकी ओरकी सन्मुखता नहीं (है), ऐसी भातें हैं ! इसलिये पर्यायमें जब द्रव्य वस्तु है इसकी जहाँ दृष्टि होती है, तो पर्यायमें सुषकी पर्याय व्याप्य होती है. समझमें आया ?

कल कला था. 'सर्व गुणांश ते समकित' जितनी शक्तिकी संख्या है, इतनी संख्यामें व्यक्त अंश – अनेक शक्तिका, अनंत (शक्तिका) व्यक्त अंश प्रगट होता है. यह प्रगट होती है (ऐसी) आनंदकी पर्याय, अस्तित्वकी पर्याय, शांतिकी पर्याय, स्वच्छताकी पर्याय, प्रभुताकी पर्याय – इन पर्यायोंको यहाँ पवित्र कमवर्ती (पर्याय) कहनेमें आता है. समझमें आया ? यह तो ध्यान रभे तो पकड़में आये ऐसी बात है.

अब यहाँ अपने २४वीं शक्ति लेते हैं. अक शक्ति कैसी है ? (कि) नियतप्रदेशत्व शक्ति. क्या नाम है ? नियत प्रदेशत्वशक्ति. २४वीं (शक्ति) ऐसा कहते हैं तो) कथनमें कम पडता है. (परंतु) अंतर वस्तुमें (कोई) कम नहीं. वस्तुमें तो अक साथ अनंत शक्तियां हैं. कथनमें कैसे लाये ? कथनमें कम पडता है. वस्तुमें अकम – अक साथ सब अनंत शक्ति है. आहाहा ! तो कहते हैं कि, नियत प्रदेशत्व (माने) क्या ? अपना देश, अपना क्षेत्र. जिस क्षेत्रमें अनंत गुणका प्रकाश उठता है (वह अपना क्षेत्र है). अपना नियत प्रदेशत्व (उसमें) नियत क्यों कला ? वैसे तो असंख्य प्रदेश है. उसको व्यवहार कहनेमें आता है.

पंचास्तिकायमें उर गाथाकी टीकामें ऐसा लिया है कि, असंख्य प्रदेश नहीं है, अक

प्रदेश है, ऐसा पाठ लिया है. देखो ! “**जुवो भरेभर अविभागी – अक द्रव्यपणाने लीधे लोकप्रमाणा अक प्रदेशवाणा छे**” अक प्रदेशवाला कलनेमें आया है. किस अपेक्षासे (कहा) समझमें आया ? वह तो संस्कृतमें है. यहां निश्चयसे असंख्य प्रदेशको अकरूप लेना है. निश्चयसे अक प्रदेशरूप है, ऐसा कहते हैं. यहां (शक्तिमें) निश्चयसे असंख्य प्रदेश कहेंगे. किस अपेक्षासे (कहा है) ? वह तो निश्चय संख्या असंख्य प्रदेशी है. समझमें आया ? असंख्य प्रदेश निश्चयसे है. संख्याकी अपेक्षासे नियत कहा है. और यहां (पंथास्तिकायमें) भेदको निकालकर सर्व असंख्य प्रदेश अक प्रदेशरूप है. आहाहा ! ऐसी सूक्ष्म बातें हैं, बापू ! यह तो भगवानके घरकी बात है.

अक ओर यहां (पंथास्तिकायमें) अक प्रदेशी कहा और यहां नियत असंख्य प्रदेश कहेंगे. तो दोनोंमें विरोध है ? कि नहीं, (विरोध नहीं है). यहां अकरूप असंख्य प्रदेशमें (असंख्य प्रदेशका) भेद करना, यह व्यवहार हो गया. समझमें आया ? वह याद आ गया.

यार बोल रपर कलशमें है न ? वह बात अपने यल गयी है. द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव. (उसमें) अपना द्रव्य जो है – अकरूप वस्तु है, उसे द्रव्य कहते हैं – स्वद्रव्य कहते हैं. और (उसमें) यह द्रव्य है और यह गुण है, ऐसा भेद उठाना यह पर द्रव्य है. क्या कहा ? यह वस्तु – यह यीज सर्वज्ञके सिवा कहीं नहीं है. श्वेतांबरमें भी ऐसी बात नहीं है. अन्यमतमें वेदांत आदि सर्व व्यापक कहते हैं, वह बात है ही नहीं. आहाहा ! क्या करें ?

भगवान आत्मा ! असंख्य प्रदेशीको पंथास्तिकायकी उर गाथाकी टीकामें अक प्रदेशी कहा. भेद किये बिना अक प्रदेशी कहा और यहां असंख्य प्रदेशरूप संख्या नियत है, इस अपेक्षासे निश्चयसे असंख्य प्रदेशी कहा. समझमें आया ? समझमें आये उतना समजो, भाई ! यह तो भगवानका मार्ग है. आहाहा ! यहां (पंथास्तिकायमें) अकरूप प्रदेश कहा – असंख्य भेद हैं. यह व्यवहार हो जाता है.

रपर कलशमें ऐसा कहा कि, आत्म द्रव्य अकरूप द्रव्य है – वह स्वद्रव्य है. और इस द्रव्यमें भेदसे विकल्प उठाना – यह परद्रव्य है, अक बात. और भगवान आत्मा असंख्य प्रदेशी अकरूप क्षेत्र है—यह स्वक्षेत्र है. असंख्य प्रदेशी अकरूप अपना स्वरूप उसको स्वक्षेत्र कहा है और असंख्य प्रदेशमें भेद करके विचार करना कि, यह प्रदेश, यह प्रदेश... वह परक्षेत्र है. आहाहा ! समझमें आया ? यहां असंख्य (प्रदेशी) कहेंगे. इस असंख्यमें भेदसे लक्ष करना, वह परक्षेत्र है. समझमें आया ?

तीसरी बात. आत्मा त्रिकाल है – यह स्वकाल है. भगवान आत्मा ! त्रिकाली यीज, भूतार्थ, सत्यार्थ, अभेद, अकार, यह स्वकाल है. और उसमें अक वर्तमान पर्यायका लक्ष भिन्न करना वह परकाल है. आहाहा ! समझमें आया ? यह तो वीतराग मार्ग है, भाई !

समजमें आया ? वीतरागका संदेश है. आहाहा ! त्रिकावी यीजको स्वकाल कलना और अेक समयकी पर्याय अवस्थांतर लोती है – उसे परकाल कलना. पर द्रव्यकी अवस्था तो परकाल है ही परंतु अपना अेकरूपमें भिन्न वर्तमान पर्यायके भेदका लक्ष करना उसे परकाल कलते हैं, आहाहा !

यौथा बोल. अपना अनंत शक्तिका पिंड, स्वभावरूप अनंत शक्ति, अनंत भाव यह शक्ति है न ? (अैसी) अनंत शक्तिकी अेकरूपता यह स्वभाव है और अनंत शक्तिमें अेक-अेक शक्तिका भिन्न लक्ष करना, यह परभाव है. आहाहा ! अैसी बात (है). लोग अगर शांतिसे सुने तो उनका आग्रह भिट जाय. यह कोर कल्पित बात नहीं है. प्रभु ! प्रभुके प्रवालसे (बात) आरु है, भारु ! आहाहा ! अभेदको पकड (और) भेदको छोड दे !

वह लिया है न ? शक्ति और शक्तिवानका भेद भी दृष्टिका विषय नहीं. अर्थात् भगवान ! प्रभु ! अनंत रत्नाकर – अनंत शक्तिका रत्नसे भरा हुआ स्वयंभू भगवान आत्मा (है). जैसे स्वयंभू समुद्र है वह तो असंख्य योजनमें (है) और (उसके) तलवेमें रत्न भरे हैं. परंतु वह तो क्षेत्रसे असंख्य योजनमें है. यह (आत्मा) तो क्षेत्रसे असंख्य प्रदेश है परंतु असंख्य प्रदेशमें अेक-अेक प्रदेशमें अनंत गुणरूप रत्न भरा है. आहाहा ! समजमें आया ? अनंत भावरूपी शक्ति यह स्वभाव – परंतु उसमें अेक लक्ष भिन्न करना कि, 'यह ज्ञान शक्ति है' 'यह सुषु शक्ति है' अैसा भेद करना उसे परभाव कलते हैं. दूसरी बात. और जो स्वद्रव्य है वही स्वक्षेत्र है, वही स्वकाल है और वही स्वभाव है.

यह यार भेद कहे उसमेंसे जो स्वद्रव्य कला, भगवान आनंदकंद प्रभु ! अकेला अकषाय स्वभावसे भरा पडा, प्रभु ! वीतराग स्वरूप ! अमृतका पिंड प्रभु ! यह स्वद्रव्य. उसीको जो असंख्य प्रदेशी जो स्वक्षेत्र है, उसीको क्षेत्र कलते हैं. द्रव्य भी वही और असंख्य प्रदेशी क्षेत्र भी वही. द्रव्यसे भिन्न क्षेत्र है और क्षेत्रसे भिन्न द्रव्य है, अैसा नहीं. समजमें आया ? और काल – त्रिकाल. वह भी जो क्षेत्र है, वही द्रव्य है, वही त्रिकाल वस्तु है. समजमें आये उतना समजो, भापू ! यह तो भगवानका मार्ग है, आहाहा ! और अनंत शक्तिका भाव कला वही अनंत शक्तिरूप भाव, वही द्रव्य, वही क्षेत्र, वही काल और वही भाव (है). भेददृष्टि छोडकर (अभेदकी दृष्टि करना). स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल (और) स्वभाव (अैसे यार भेद कहे) परंतु वह यारों अेक ही यीज है. समजमें आया ? आहाहा !

जैसे आम है (उसमें) वरुणरूप भी वह, गंधरूप भी वह, रसरूप भी वह और स्पर्शरूप भी वही है. उसमें छिलका और गोटली यह बात (-भेद) यहां नहीं लेना. सारी यीज रंगरूप भी वह है, गंधरूप भी वह है, रसरूप भी वह है, स्पर्शरूप भी वह है, अैसे भगवान आत्मा ! अभेद द्रवरूप भी वह, क्षेत्ररूप भी वह, कालरूप भी वह और भावरूप भी वही (है). समजमें आया ? आहाहा !

यहां कलते हैं, “जो अनादि संसारसे लेकर संकोयविस्तारसे...” असंकुचितविकासत्व शक्ति गल वल दूसरी यीज (है). यल दूसरी यीज है. असंकोयविकास शक्तिमें तो वल शक्ति अैसी है कि, जिसमें संकोयताका अभाव है और विस्तारताका सदृभाव अपरिमित है. अपने असंकोयविस्तार नामकी शक्ति यली थी. असंकोयविस्तार (का कार्य) पूर्ण द्रव्य, पूर्ण क्षेत्र, पूर्ण काल, पूर्ण भाव ँन सबको संकोय किये बिना विकास शक्तिसे जानता है. आलाला ! अैसी बात ! समजमें आया ? भगवान आत्मामें अैसी अेक शक्ति है कि, जिसमें संकोय नहीं, परिमितता नहीं, लद नहीं और विकसित (अर्थात्) अनंत... अनंत... ज्ञानका विकसित. ज्ञानमें भी संकोय नहीं, (यल) ज्ञान विकसित. दर्शनमें संकोय नहीं (यल) दर्शन विकसित. पूर्ण.... पूर्ण... विकसित. समजमें आया ? आलाला ! अैसी बातें आदमीको सुनने नहीं भिले ँसलिये बाहरमें रुक जाते हैं ! आलाला !

वल तो अपने सभेरे यलता है कि नहीं ? (यहां आकर भी) पर्यायमें रुक जाय, विकल्पमें रुक जाय तलतक अनुभव नहीं. आलाला ! समजमें आया ? सभेरे भूँढ-भूँढ आया न ? भूँढ है, यल तो व्यवहारनयसे कलनेमें आता है. ँसका तो निषेध करते आये हैं. भगवान (भूल स्वरूप) भूँढ नहीं. आलाला ! ज्ञान, आनंद आदि अमूढ है. ँसकी शक्तिका पार नहीं. प्रभु ! स्वभावका पार नहीं, अैसी अमूढ शक्ति (है). आलाला ! ‘भैं अमूढ हुं’ अैसा भी विकल्प करना ँससे तुंजे क्या लाभ है ? आलाला ! भैं अपरिमित अनंत आनंदका कंद हुं, अनंत यैतन्य रत्नसे भरा हुआ (हुं), मेरी यीज तीन लोक और तीन कालको अेक समयमें जाने अैसी पर्याय – अैसी अनंती पर्यायका पिंड ज्ञान रत्न पडा है. अैसे क्षायिक समकितकी सादि अनंत पर्याय. ँन सब पर्यायका पिंड श्रद्धा गुणमें पडा है. अैसे अेक समयका अनंत आनंद जो भगवानको उत्पन्न हुआ, ‘सादि अनंत समाधि सुभमें’ (अैसा आनंद गुण भी पडा है). आलाला ! अनादिकालसे आकुलताके वेदनमें पीस गया है. ँसको भगवान आत्माका पत्ता जहां लिया, सम्यग्दर्शन और सम्यक्ज्ञानमें जहां ँसको स्वीकार और सत्कार किया तो पर्यायमें – वर्तमानमें भी आनंद आया और यल पर्याय पूर्ण आनंदका कारण है, अैसा व्यवहार कलनेमें आता है. यल भी व्यवहार है. बाकी तो अनंत आनंद जो प्रगट ँगा वल अेक समयमें षट्कारकी परिणतिसे प्रगट ँगा. पूर्वमें भोक्षमार्ग था ँसका व्यय हुआ और केवलज्ञान (प्रगट) हुआ, वल तो व्यवहारकी यीज है. उत्पाद्-व्ययकी अपेक्षा रभता नहीं. आलाला ! केवलज्ञानकी पर्यायका उत्पाद् पूर्वके यार ज्ञानकी व्ययकी अपेक्षा रभता नहीं. अैसा अेक समयमें केवलज्ञानकी पर्यायका कर्ता वल पर्याय, कार्य वल पर्याय, करण नाम साधन वल पर्याय (है). यार ज्ञानका कारण दिया वल साधन, यहां तो अैसे नहीं. आलाला ! समजमें आया ? – वल पर्याय करके अपनेमें रभी यल संप्रदान, अपनी पर्यायसे पर्याय हुं यल अपादान और पर्यायका आधार पर्याय यल अधिकरण. कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान

और अधिकरण यह षट्कारके परिणामनसे केवलज्ञान उत्पन्न होता है. आहाहा ! पहले संछनन है, मनुष्यपना है उसे केवलज्ञान उत्पन्न होता है, ऐसा नहीं है. यार ज्ञान पहले था (उसका) व्यय हुआ और केवलज्ञान हुआ, यह भी व्यवहार है. अभाव होकर भाव हुआ, यह भाव कहांसे आया ? अभावमेंसे भाव आया ? द्रव्यकी शक्ति जो सर्वज्ञ, सर्वदर्शी है वह स्वनियत प्रदेशमें पडी है. यह शक्ति चलती है न ?

असंख्य प्रदेश जो नियत है, यहां प्रदेशको संख्यामें नियत – निश्चय करना है और यहां (पंचास्तिकायमें) इस संख्याको छोड़कर अकेला प्रदेशरूप अकेरूप (कहा) है. पंचास्तिकायमें अपनी अस्तिकाय सिद्ध करना है, अपना अस्तिकाय सिद्ध करना है. समझमें आया ? तो उसकी पर्यायमें अकेरूप प्रदेश दिया, आहाहा ! यहां तो उसकी शक्तिमें नियत प्रदेश जो असंख्य प्रदेश है उसको निश्चय कहा और २पर (कलशमें) अकेरूप असंख्य प्रदेशको स्वक्षेत्र कहा. उसमें संख्या (का भेद करना कि) यह है, यह है, यह है उसे परक्षेत्र कहा. ऐसी बहुत सूक्ष्म बातें हैं ! बापू ! आहाहा ! भगवानका भेटा जिसे करना हो (उसको कितनी तैयारी होनी चाहिए ?) अके साधारण अके यकवर्तीके पास जाना हो तो भी कितनी तैयारी होनी चाहिए ? आहाहा !

हमारे यहां गरासीया – गरासदार होते हैं. उसकी रानीके पास जाना हो तो आदमी जैसे ही भुल्ला नहीं जा सके. कपडे भुल्ले पडे हो और पीछेसे शरीरका भाग टिपता हो, जैसे नहीं जा सकता. यहां ऐसा रिवाज है. भले ही १० हजार, २५ हजारकी ही कमाई हो. नाई जाये तो (भी) भेट बांधकर जाय. कपडेका भेट बांधकर जाना. शरीरका कोई भाग टिपे नहीं जैसे कपडे बांधके जाय. रानीके पास जाना हो तो (जैसे जाते हैं). आहाहा ! यहां तो भगवानका भेटा करना है तो इसके लिये बहुत कमर कसनी चाहिए. आहाहा ! अनंत-अनंत पुरुषार्थकी भेट बांधकर भगवानका भेटा होता है. भगवानके दरबारमें जाना है, दरबार ! यह (बाहरके) दरबार तो ठीक बेयारे साधारण (हैं). यह तो अनंत-अनंत शक्तिका भंडार भगवान ! बादशाह, परमात्मा, बादशाह तीन लोक और तीन कालको अके समयमें जाने (ऐसा भगवानका दरबार है). आहाहा ! उसमें भी तीन लोक और तीन कालको (जाने ऐसा) नहीं (परंतु) अपनी पर्यायमें आत्मज्ञमें ही सब सर्वज्ञपनाका भास होता है. आहाहा ! जैसे भगवानकी अके समयकी पर्यायकी छतनी ताकत ! ऐसी अनंती पर्यायका पिंड ज्ञान, अनंती पर्यायका पिंड आनंद, जैसे अनंत आनंद और अनंत ज्ञान आदि अनंत शक्तिओंका (पिंड) प्रभु ! बादशाह ! इस बादशाहके पास जाना (उसके लिये कितनी तैयारी चाहिए ?) (भेट बांधकर जाये) तब दर्शन दे. आहाहा !

यहां आपके पैसेकी बात नहीं है. (गुरुके) आशीर्वाहसे धूल (पैसा) नहीं मिलती. उसका भाव हो, पुण्यका भाव किया हो उससे पुण्यबंध हो गया हो और पूर्वके पुण्यके साथ वर्तमान

सुननेसे पुण्य आता है, उस पुण्यको मिलाकर पुण्यका उदय आ गया तो (पैसा) मिल जाता है. परंतु (पैसा) मिले इसमें क्या आया ?

श्रोता : कितना बढ़ गया !

पू. गुरुदेवश्री : धूलमें ली बढ़ा नहीं. आहाहा ! लक्ष्मी कहां शरणा(रूप) है ? यहां तो राग शरणा (रूप) नहीं और अक समयकी पर्याय शरणा (रूप) नहीं. आहाहा ! भगवान ! पूर्णानंदका नाथ ! अत्मेद यैतन्य स्वरूप शरणा (रूप) है. वह मांगलिक है, वह उत्तम है, वह शरणा है. आहाहा ! समझमें आया ?

यहां कहते हैं कि, “**जो अनादि संसारसे लेकर संकोयविस्तारसे...**” किसका (संकोय विस्तार) ? आत्म प्रदेशका (संकोय विस्तार). निगोदमें प्रदेशका संकोय होता है, प्रदेश कम नहीं होते (बल्कि) संकोय होता है. और हजार योजनाका मध्य हो तब विस्तार होता है. प्रदेश तो घतने ही घतने (रहते हैं). प्रदेशका संकोय हो तब (प्रदेश) कम हो जाय और विस्तार हो तो (प्रदेश) बढ़ जाय, ऐसा नहीं है. आहाहा ! ऐसे “**संकोय विस्तारसे लक्षित...**” (अर्थात्) संकोय विस्तारसे जानने लायक. संसारमें (आत्म प्रदेशोंका) असंख्य प्रदेशमें संकोय विस्तार होता है, वह जानने लायक है. है ? “**... और जो यरम शरीरके परिमाणसे कुछ न्यून परिणामसे...**” आभीरका यरम शरीर हो, उसके अनुसार उसकी अवगाहना – यौडाई रहती है. “**... परिमाणसे अवस्थित...**” वहां अवस्थित है. वहां वह यरम शरीर छूट गया तो वैसे के वैसे (आत्म प्रदेश) अवस्थित रहेंगे. सादि अनंत (वैसे का वैसा अवस्थित रहेगा.) यरम शरीरमें लक्षित – जानने लायक, ऐसा कहा. संसारमें असंख्य प्रदेशमें संकोय विस्तार है, यह जानने लायक है. क्योंकि (आत्म प्रदेश) अकरूप नहीं रहेगा. आहाहा ! समझमें आया ?

जैसे यह कपडा है न ? यह कपडा ऐसा संकोय करे (तो) कपडेमें प्रदेश घट जाता है, और ऐसा करे तो प्रदेश बढ़ जाता है, ऐसा नहीं. प्रदेश तो जितना है घतनी ही है. ऐसे संकोयमें निगोदके अक शरीरमें अनंत जव और अंगुलके असंख्य भागमें अक शरीर. आहाहा ! (तो) निगोदमें अक शरीरका कद कितना ? (हिन्दीमें) कद कहते हैं न ? उस (शरीरका) कद कितना ? तो (कहते हैं) अंगुलका असंख्यवा भाग. आहाहा ! और जव कितना ? तो (कहते हैं) अनंत (हैं). कितने अनंत ? (तो कहते हैं) अभी (तक जितने) सिद्ध दुओ (उससे अनंत गुना जव हैं). छ मास और आठ समयमें ६०८ (जव) मुक्ति पाते हैं. तो (ऐसे) अनंत पुद्गल परावर्तन हो गये. अक शरीरमें सिद्धकी संख्यासे अनंत गुना जव हैं. आहाहा ! समझमें आया ? तो वहां प्रदेशका संकोय हो गया.

संकोय नाम जितने यौडे प्रदेश है वह संकोय नहीं होता. क्या कहा ? जो (मूल) प्रदेश जितनी यौडाईमें है, उसमें संकोय नहीं होता. परंतु जो बहुत प्रदेश है, वह संकोय होते

हैं. क्या कदा समजमें आया ? जतने यौडे प्रदेश हैं वह संकोय नहीं होते परंतु असंभ्य प्रदेश जैसे यौडे है, वह जैसे संकोय होते हैं. बस एतना ! अक प्रदेशके साथ असंभ्य प्रदेश है. प्रदेश भुद संकोय विस्तारको प्राप्त नहीं होते. परंतु प्रदेशकी संभ्या जैसे संकोय हो जाती है और विस्तार हो जाती है. आहाहा ! यह स्वरूप वीतरागके सिवा और कहीं नहीं है. (आत्माका) असंभ्य प्रदेश (है), यह बात सर्वज्ञके अलावा कहीं नहीं है. समजमें आया ? कोई शास्त्रमें (यह बात नहीं है.) आत्मा असंभ्य प्रदेशी क्षेत्रकी बात ही नहीं है. जाना नहीं तो यहां बात कहांसे हो ? आहाहा ! बात करे कि आत्मा शुद्ध है, यैतन्य है, ऐसा है और ऐसा है, परंतु इसका क्षेत्र कितना ? (तो उसकी कुछ भबर नहीं). आहाहा !

अक वेदांती थे. निश्चयका बहुत जानपना था. (श्रीमद्भक्तो) उसके साथ बहुत प्रेम था. श्रीमद्ने अक बार पत्र लिखा कि, “हम पदार्थकी व्याख्या यार प्रकारसे कर सकते हैं. कोई भी पदार्थ (की व्याख्या) द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे कर सकते हैं. तो आत्मामें भी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव उतारना याहिअे.’ क्योंकि वे (ऐसा) मानते हैं कि (आत्मा) सर्व व्यापक है और आत्माकी निश्चयकी बात करे कि शुद्ध है, ऐसा पवित्र और ऐसा निर्लेप है. उसकी द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव यारसे व्याख्या होती है.’ (श्रीमद्भक्तने लिखा), ‘आपकी यारकी व्याख्या कहां’ परंतु वह (व्याख्या) करने जाय तो वेदांत रहता नहीं. समजमें आया ? द्रव्यसे अक, क्षेत्रसे असंभ्य प्रदेश, कालसे त्रिकाली अथवा अक समयकी अवस्था और भावसे अनंत गुण, ऐसा यार भेद तो उसमें है नहीं. समजमें आया ? ‘सर्व व्यापक अक आत्मा शुद्ध यैतन है, अभेद है’ ऐसा (मानते हैं). वह तो कथनकी भाषा (हुई). वस्तुकी स्थिति कैसी है ? उसकी भबर नहीं. समजमें आया ?

यहां कहते हैं, प्रदेश अक नहीं परंतु असंभ्य (प्रदेश) जो है (उसमें) ऐसा (संकोय) होता है और विकास होता है. बस ! “... संकोय विस्तारसे लक्षित है और यरम शरीरके परिमाणसे कुछ न्यून परिमाणसे अवस्थित...” यहां अवस्थित रहा. संसारमें तो अवस्थित नहीं रहा. निगोदमें जाये, अक हजर योजनका मध्य (बने), इस शरीरमें बयपनमें असंभ्य प्रदेशी एतनेमें था, बडा होनेसे प्रदेशमें एतना विस्तार हुआ. समजमें आया ? बयपनमें एतना था, युवा अवस्था और वृद्धावस्थामें एतने प्रदेश यौडे हुआ. अक प्रदेश यौडा हुआ, ऐसा नहीं. प्रदेश विस्तार पाया. समजमें आया ? आहाहा ! आदमीको ऐसा कहां (सुनने मिले) ? कुरसद कहां है ? भगवान क्या कहते हैं ? (वह) यीज (कहां) अलग पडती है और अपनेसे पर यीज (कैसे) अलग पडती है ? (ऐसा) भेदज्ञान नहीं (और) पीयडा कर दे कि, ‘उसमें भी आत्माकी बात है, कल्याणकी बात है.’ धूलमें भी (कल्याणकी बात) नहीं. आहाहा !

(यहां) कहते हैं कि, “यरम शरीरके...” (अर्थात्) आभीरका शरीर. “... परिमाणसे

कुछ न्यून...” (अर्थात्) थोडा न्यून. यह बाव जितना है उससे (भी) छोटा. परिमाणसे यानी मापसे अवस्थित होता है. वहां अवस्थित रहता है. “.... **ऐसा लोकाकाशके माप जितना...**” संख्यासे कितना है ? कि लोकाकाशमें जो असंख्य प्रदेश है एतना एक जवका प्रदेश है. लोकाकाशमें आकाशके असंख्य प्रदेशकी जितनी संख्या है, धर्मास्तिकायका भी जितना असंख्य प्रदेश है, अधर्मास्तिकायकी भी जितनी संख्या है, एतनी संख्या एक जवकी लोकाकाशके अनुसार असंख्य प्रदेश है. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसी बात सर्वज्ञके सिवा कहीं हो सकती नहीं. (अन्य मतमें) तबे ही बातें कुछ भी करी हो, श्वेतांबरमें भी ईर्क है. यह जो प्रदेश कहते हैं जैसे प्रदेशकी संख्याका माप उसमें भी नहीं है.

(श्वेतांबरमें किसीने पुस्तक लिखा है) उसमें कबूल किया है कि, ‘हम लोग लोकको ३४३ राजु प्रमाण कहते हैं, तो एतने प्रदेशमें अगर माप करने जाते हैं तो हम लोग जो ३०० राजु कहते हैं, उसके अनुसार उसका मिलाव नहीं होता’ यहां एक श्वेतांबर पुस्तक है. (सब) देखा है. ३४३ राजु कहते हैं न ? तो इसमें जितना है वह हम कहते हैं, एतना मेल नहीं पाता. और दिगंबर लोग कहते हैं उसके अनुसार मिलाव पाता है. एक जवके असंख्य प्रदेशमें भी (इस विषयमें भी) उसके कथनमें ईर्क है. श्वेतांबरमें भी ईर्क है तो अन्यमतिकी तो बात क्या करना ? आहाहा ! बहुत सूक्ष्म, भाई !

यहां ये कहा, “... **ऐसा लोकाकाशके माप जितना...**” प्रमाण. माप (यानी) प्रमाण. लोकाकाश जितना होना, ऐसा नहीं. वह तो कोई बार केवलज्ञान समुद्घातमें हो और किसीको न भी हो. परंतु उसकी संख्या कितनी ? (तो कहते हैं) लोकाकाश प्रमाण माप – बस, एतना (कहना है). लोकाकाश प्रमाणे व्याप्त हो, ऐसा नहीं. समझमें आया ? “... **लोकाकाशके माप जितना मापवाला आत्म-अवयवत्व...**” आहाहा ! आत्मा अवयवी और प्रदेश अवयव. जैसे यह शरीर अवयवी (और) हाथ-पैर-अंगुठा अवयव. जैसे भगवान आत्मा अर्धं अकरुप अवयवी और प्रदेश उसका अवयव. आहाहा ! जैसे श्रुतज्ञान प्रमाण अवयवी और निश्चयनय और व्यवहार(नय) अवयव. समझमें आया ? श्रुतज्ञान प्रमाणमें जो आत्माका अनुभव हुआ तो उस शुद्धज्ञानकी पर्यायको प्रमाण कहते हैं और प्रमाणमें दो त्पेद करना यह अवयवीका अवयव है. (भावश्रुत) अवयवी (भी) है तो पर्याय – भावश्रुतकी पर्याय भी है तो पर्याय परंतु उस पर्यायको अर्धं कहकर अवयवी कहना और निश्चयनय और व्यवहार (नय) दो भाग होते हैं, उसे अवयव कहना. समझमें आया ? जैसे भगवान आत्मा एक है उसका असंख्य प्रदेश अवयव है. आहाहा ! यह अंगुली और हाथ है, यह (आत्माका) अवयव नहीं, वह तो जडका (अवयव) है. आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! बहुत डाला है.

(लोग ऐसा मानते हैं कि) शरीरके आंभके, पैरके, कानके अवयव हमारे हैं. धूलमें भी (तेरा अवयव) नहीं, वह तो पर है. तेरा अवयव तो असंख्य प्रदेश है, यह तेरा अवयव

है और असंख्य प्रदेशके धाममें अनंत गुणका धामका प्रकाश उठता है. यह असंख्य प्रदेश (रूप) देश तेरा ऐसा है कि प्रदेश-प्रदेशमें अनंत गुण व्यापक (है). एक प्रदेशमें दूसरे प्रदेशका अभाव, उसे तिर्यक प्रयय कलना. परंतु एक प्रदेशमें जो गुण है एतना दूसरे (प्रदेशमें) वही सर्व गुणमें व्यापक है. आलाहा ! क्या कला समजमें आया ? प्रवचनसार ८८ गाथामें तिर्यक प्रयय है. एक प्रदेश है उसमें दूसरे प्रदेशका अभाव (है) तो असंख्य प्रदेश सिद्ध होता है. नहीं तो सिद्ध नहीं होगा. परंतु एक प्रदेशमें जो अनंत गुण है वह एक ही प्रदेशमें है, ऐसा नहीं. अनंत गुण असंख्य प्रदेशमें व्यापक है. समजमें आया ? प्रदेश सिद्ध करना हो तब एक प्रदेशका दूसरे प्रदेशमें अभाव है तो असंख्य (प्रदेश) सिद्ध होगा. एक प्रदेशमें दूसरा (प्रदेश) हो तो असंख्य (प्रदेश) सिद्ध कहांसे होगा ? न्याय समजमें आता है ? एक प्रदेशमें जो अनंत गुण है वही गुण दूसरेमें है, वही गुण तिसरेमें है और वही गुण असंख्य प्रदेशमें है.

अरे...! जिसे मावूम नहीं कि आत्मा असंख्य प्रदेशी अवयव है. भगवान (आत्मा) अवयवी और (उसका) अवयव यह (प्रदेश) है. जैसे शरीर अवयवी है और अंगुली, हाथ-पैर ये सब अवयव कलनेमें आता है. इसका भाग है. अकरूप वस्तुका वह भाग है. जैसे भगवान आत्मा द्रव्यरूपी एक (और) असंख्य प्रदेश यह उसका अवयव है. यह अंगुली और हाथ-पैर उसका अवयव नहीं. यह तो जडका (अवयव) है. आलाहा ! (आत्माके) अवयव – अवयवमें (प्रदेश-प्रदेशमें) अनंत गुण व्यापक है. असंख्य प्रदेश है, तो असंख्यमें भागमें एक प्रदेश आया तो अनंत गुणका अनंतवा भाग एक प्रदेशमें है, ऐसा नहीं. समजमें आया ? आलाहा ! यह तो गुणका बडा पाटला (है). पाटला समजते हो ? सोनेका लहू होता है न लहू ? वैसे अनंत गुणका लहू एक समयमें है. आलाहा ! अरे... ! (पुढके) घरका कभी विचार किया नहीं (और) पर घर शुरु कर दिया. आलाहा ! मेरा घर क्या ? मेरा घरका क्षेत्र क्या ? मेरे क्षेत्रमें गुण क्या और गुणकी पर्याय क्या ? (उसकी कुछुणुण नहीं). आलाहा ! समजमें आया ?

यहां निर्मल पर्यायकी बात है, मलिन (पर्याय)की बात नहीं. यह संकोचविकासमें भी शक्ति है. मलिनपनाका तो इसमें अभाव है. आलाहा ! क्या कला ? “असंख्य प्रदेश नियत-” जैसे कला न ? नियत कला न ? “...अवयव जिसका लक्षण है ऐसी नियत प्रदेशत्वशक्ति” (अर्थात्) निश्चय प्रदेशत्व शक्ति. नियत नाम निश्चय प्रदेशत्व शक्ति. इसका अर्थ कि जो प्रदेश है वह निश्चयसे असंख्य ही है. जैसे सिद्ध करना है. और पंथास्तिकायमें जो दिया है (वहां) अकरूप प्रदेश है – त्मेद नहीं. वहां उसकी अस्तिकाय सिद्ध करना है. अस्ति अकरूप है. समजमें आया ? असंख्य प्रदेशकी अस्ति अकरूप है. यहां शक्तिके वर्णनमें असंख्य प्रदेश नियत (अर्थात्) प्रदेशकी संख्या नियत है. समजमें आया ?

ऐसा निज घर द्रव्य, निज घरका क्षेत्र, निज घरका काल और निज घरका भाव – यह चार अकेले ही वस्तु है। निज घरका द्रव्य भिन्न और निज घरका क्षेत्र भिन्न, ऐसा नहीं है। जितनेमें द्रव्य है, इतनेमें क्षेत्र है, इतनेमें काल है और इतनेमें भाव है। आहाहा ! ये भेदकी दृष्टि छोड़कर (अभेद स्वरूपकी दृष्टि करना)। २पर कलशमें आया न ? द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावका भेद (कहा)। (उसमें) अपनी पर्यायको भी जहां परकाल कहा आहाहा ! और अपने असंख्य प्रदेशमें भी यह क्षेत्र है और यह है, ऐसा विकल्प उठाना – यह परक्षेत्र है। त्रिकाही भगवान स्वकालमें है उसकी अकेले समयकी पर्यायका लक्ष करना यह परकाल है और परकालकी स्वकालमें नास्ति है। आहाहा ! अनेकांत है। जैसे पर द्रव्यके द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी अस्ति उसमें है परंतु उस पर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी नास्ति आत्मामें है। (आत्मामें) उसका अभाव है। समझमें आया ? यह तो स्थूल दिया। परंतु यहां तो त्रिकाही भगवान ! – त्रिकाही वस्तु त्रिकाव... त्रिकाव.... त्रिकाव... त्रिकाव.... यह स्वकाल (है)। अकेले समयकी निर्मल पर्याय परभाव (है)।

नियमसारमें ५० गाथामें तो अकेले समयकी निर्मल पर्यायको पर द्रव्य कहा है। समझमें आया ? आहाहा ! तत्त्वज्ञान बहुत सूक्ष्म भाई ! कौनसी अपेक्षासे (जात है) यह समझना चाहिये। समझमें आया ?

यहां कहते हैं, नियत प्रदेशत्व शक्ति ली न ? निज क्षेत्र है। इस क्षेत्रमेंसे तो आनंद पकता है। ऐसा नियत प्रदेश है। समझमें आया ? कुलथी (अकेले प्रकारका अनाज) पके ऐसा क्षेत्र भिन्न होता है और यावत् पके उसका क्षेत्र भिन्न होता है। जिस क्षेत्रमें कुलथी पके उस क्षेत्रमें यावत् नहीं पके। ऐसे भगवान (आत्माके) असंख्य प्रदेशी नियत क्षेत्रमें पवित्रता पकती है, ऐसा यह क्षेत्र है। उसमें अपवित्रता पके, ऐसा यह क्षेत्र नहीं है। आहाहा !

कौंसमे कहते हैं, “आत्माके लोकपरिभाषा असंख्य प्रदेश नियत ही है” नियत (कहा है)। देखा ? ‘नियत ही है’ संख्याकी अपेक्षासे (नियत ही है)। “वे प्रदेश संसार अवस्थामें संकोच विस्तारको प्राप्त होते हैं और मोक्ष अवस्थामें यरभ शरीरसे कुछ कम परिभाषासे स्थित रहते हैं”। इस प्रकार वस्तुका स्वरूप है। लो, आज अकेले घंटा चला। विशेष कहेंगे....



प्रवचन नं. २३

शक्ति-२४, २५, २६ ता. ०२-०८-१९७७

आसंसारसंहरणविस्तरणलक्षितकिञ्चिदूनचरमशरीरपरिमाणावस्थित-
लोकाकाशसम्मितात्मावयवत्वलक्षणा नियतप्रदेशत्वशक्तिः ॥२४॥
सर्वशरीरैकस्वरूपात्मिका स्वधर्मव्यापकत्वशक्तिः ॥२५॥
स्वपरसमानासमानसमानासमानत्रिविधभावधारणात्मिका
साधारणासाधारणसाधारणासाधारणधर्मत्वशक्तिः ॥२६॥

यह समयसार. शक्तिका अधिकार (यलता) है. शक्ति नाम आत्माका गुण. गुणी भगवान् आत्मा और उसमें शक्ति - रत्न, अनंत शक्तिका रत्नसे भरा रत्नाकर भगवान् आत्मा (है). इस शक्तिके वर्णनमें शक्तिका ज्ञान करना. जाननेमें यह शक्तिवान्, (यह) शक्ति, औसा ज्ञान करना परंतु श्रद्धामें तो शक्ति और शक्तिवानका भेद छोडकर अभेद शक्तिकी दृष्टि (अर्थात्) शक्तिवानकी दृष्टि (करना). उससे उसमें सम्यग्दर्शन रूपी रत्न (प्रगट होता है). त्रिरत्न कहते हैं कि नहीं ? रत्नत्रय - मोक्षका मार्गको रत्नत्रय कहते हैं न ? यह रत्नत्रय कैसे प्रगट हो ? जो आत्मा वस्तु है इसमें अनंत शक्ति (रूप) रत्न (है). अनंत शक्तिरूप रत्नसे भरा भंडार है. आहाहा ! जैसे शक्तिवान पर दृष्टि करनेसे सम्यग्दर्शन रूपी रत्न प्रगट होता है. द्रव्य रत्न, गुण रत्न और पर्यायमें (भी) रत्न प्रगट होता है. आहाहा ! समझमें आया ?

याहें जितना जानपना हो, कम-अधिक (जानपना) हो उसके साथ कोई संबंध नहीं और वर्तनमें कदाचित् स्वरूपकी रमणता (रूप) यारित्र न हो परंतु वस्तुकी दृष्टिमें अकरूप दृष्टि करनेसे, उसमें यह सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र (रूप) रत्नत्रय प्रगट होता है. इस रत्नत्रयका इल अनंत ज्ञान, दर्शन (प्रगट होता है). रत्नत्रयका इल तो महारत्न है. जब पर्याय रत्न है और (उसका) इल रत्न है तो उसका कारण द्रव्य, गुण तो महारत्न है. समझमें आया ? आहाहा ! यह साधारण बात नहीं है. शक्तिका वर्णन, अवलौकिक वर्णन है.

यह २४ वीं शक्ति फिर से लेते हैं. २३ (शक्ति) तो यही. २४वीं शक्ति है तो नित्य-ध्रुव परंतु है कैसी ? “जो अनादि संसारसे लेकर....” ओहोहो ! अनादि संसार (अर्थात्) निगोदसे लेकर. “.. संकोयविस्तारसे लक्षित...” (आत्माका) असंख्य प्रदेश है, यह संकोय होता है और विस्तार होता है. संख्या घतनीकी घतनी (रहती है) और यह अेक-अेक प्रदेश(का) संकोय-विस्तार होता है, अैसा नहीं. समजमें आया ? संकोय विकासका अर्थ मात्र घतना (है कि), परमाणु (जितनी जगह रोकें उतना अेक प्रदेश है) उसमें दूसरा प्रदेश आ जाता है, उसका नाम संकोय. और विकास (का अर्थ घतना है कि), जितना असंख्य प्रदेशसे विकास होता है (याहें) लोक प्रमाणों को कि १ हजार योजनाका मख्य (हो), उस रूप असंख्य प्रदेश व्यापक हो (जाय) परंतु है असंख्य (प्रदेश ही). इसमें कम या बढ (वृद्धि) नहीं होती. (यह) अेक बात (होई).

(दूसरी बात यह है कि), इस असंख्य प्रदेशको पंथास्तिकायमें तो अेक प्रदेश ही कहा है. उर गाथाकी टीकामें है. कल बतलाया था. (आत्माके) असंख्य प्रदेश (हैं), यह त्मेदसे कथन है और असंख्य प्रदेशका अेकरूप, यह अत्मेदसे कथन है. आहाहा ! अैसे अेक प्रदेशरूप यह असंख्य प्रदेशको अेक प्रदेश कहा. यहां (शक्तिमें) असंख्य प्रदेशको नियत – निश्चय कहा. नियत प्रदेश कहा न ? क्यों ? संख्यासे असंख्य (प्रदेश है) यह निश्चय है. असंख्य प्रदेशको अेकरूप करके अेक प्रदेश कलना और असंख्य प्रदेशके त्मेद करके व्यवहार कलना, यह बात अभी नहीं (करनी है). समजमें आया ? अभी तो असंख्य प्रदेश है यह निश्चयसे है, (घतना कलना है). समजमें आया ?

यह प्रश्न तो बहुत काल पहलें उठा था. (हम) अमरेली जाते थे वहां अेक आदमीने प्रश्न किया था. करीब ७८की साल होगी. वे स्वागतमें आये थे. उन्होंने रास्तेमें प्रश्न पूछा, ‘ये प्रदेश है यह तो कल्पनासे है. आकाशके अनंत प्रदेश जव, जवका असंख्य (प्रदेश) यह तो कल्पना है’. हमने कहा, ‘कल्पना नहीं है.’ (हम) अमरेली जाते थे (वहां) अेक वरसडा गांव है. (हम) चलकर जाते थे. (तो वहां) रास्तेमें लोग लेनेको आते थे. वहां ये प्रश्न उठा कि, ‘यह प्रदेश जो कलनेमें आता है – यह कल्पना है. प्रदेश (जैसा कुण्ड) नहीं है.’ अैसे नहीं (है). यह (बात) यहां सिद्ध करते हैं.

असंख्य प्रदेश नियत है, निश्चयसे है. समजमें आया ? इस संख्याके निश्चयको नियत लागू पडता है. बादमें उसे अेकरूप कलना. और त्मेदसे (असंख्य प्रदेशका), विचार करना यह तो फिर व्यवहार नय हो गया. परंतु यहां तो असंख्य प्रदेश संख्यासे नियत है. व्याजभी रीतसे, यथार्थ रीतसे है. आकाशका (जैसे) अनंत प्रदेश है, वैसे जवका असंख्य प्रदेश है, यह यथार्थ है.

यहां कलते हैं कि, “जो अनादि संसारसे लेकर संकोयविस्तारसे लक्षित...” (अर्थात्)

संकोचविस्तारसे जाननेमें आनेवाला है. है न ? “और जो यरम शरीरके परिमाणसे कुछ न्यून...” (जो) मुक्त होनेका आभीरका शरीर है. (उस) शरीर प्रमाणसे आत्म प्रदेश रहते हैं. सिद्धमें भी शरीर प्रमाण आत्म प्रदेश है. शरीरके कारणसे नहीं. अपनी योग्यतासे आभीरका शरीर प्रमाण आत्म प्रदेशका रहना, यह अपना स्वभाव है.

(यहां) कहते हैं कि, “... यरम शरीरके परिमाणसे...” परिमाण यानी माप. “... यरम शरीरके परिमाणसे कुछ न्यून...” यरम शरीरका जो माप है, उससे थोड़ा न्यून. समझमें आया ? “कुछ न्यून परिमाणसे...” (अर्थात्) न्यून मापसे. “... अवस्थित होता है.” बादमें यरम शरीरका आभीरका असंख्य प्रदेश सादि अनंत (काल) वैसा का वैसा अवस्थित रहता है. सिद्धमें आभीरका शरीरसे थोड़ा न्यून सादि अनंत (काल) रहता है तो उसे अवस्थित कहा (और) संकोच-विस्तारको लक्षित कहा. आहाहा ! संकोच विस्तार होता है, यह जानने लायक है. बादमें सादि अनंत (काल) असंख्य प्रदेश अवस्थित होता है. (उसमें कोई) इंरंजार नहीं होता तो उसे वहां अवस्थित कहा.

“... अवस्थित होता है. ऐसा लोकाकाशके माप (जितना)...” आहाहा ! लोकके आकाश प्रमाण जिसका माप है. “... जितना मापवाला आत्म - अवयवत्व...” भगवान आत्मा ! अवयवी (है) (और) प्रदेश उसका अवयव है. जैसे शरीर अवयवी (है) तो हाथ-पैर, अंगुली, हाथ-पैर अवयव है. समझमें आया ? ऐसे वस्तु अवयवी है. असंख्य प्रदेश उसका अवयव है. यह अंगके अवयव (हैं) यह आत्माके अवयव नहीं. समझमें आया ? यह तो मिट्टीका – धूलका अवयव है. उसका अवयव तो असंख्य प्रदेश है, यह उसका अवयव है और अक-अक प्रदेशमें अनंत गुण व्यापक है.

श्रोता : अक-अक प्रदेशमें पूरा गुण नहीं ?

पू. गुरुदेवश्री : पूरा (गुण) जैसे नहीं. व्यापक कहा. अक-अक गुण असंख्य प्रदेशमें व्यापक है. अक प्रदेशमें पूरा गुण, ऐसा नहीं है.

श्रोता : असंख्य प्रदेशमें पूरा गुण है.

पू. गुरुदेवश्री : असंख्य प्रदेशमें पूरा गुण है. और अक प्रदेशमें प्रदेश तो पूरा है. (जैसे) अक प्रदेशमें दूसरे प्रदेशका अभाव (है). वैसे अक प्रदेशमें जो गुण है (उसमें) दूसरे गुणका अभाव है, ऐसा नहीं. क्या कहा ?

श्रोता : अक गुणमें दूसरे गुणका अभाव नहीं.

पू. गुरुदेवश्री : ऐसा नहीं. (अक प्रदेशका दूसरे) प्रदेशमें अभाव है. ८८ गाथामें ऐसा लिया है. उसका असंख्य प्रदेश स्वरूप है. परंतु (सर्व प्रदेश) तिरछा है. (उसमें) अक प्रदेश दूसरे प्रदेशरूप है, दूसरा (प्रदेश) तीसरा (स्वरूप है), ऐसा नहीं. अक प्रदेशमें दूसरे प्रदेशका अभाव है. तब असंख्य (प्रदेश) सिद्ध होगा. परंतु अक प्रदेशमें जो ज्ञान आदि अनंत गुण

हैं, वह एक ही प्रदेशमें है, ऐसा नहीं. (अनंत गुण) असंख्य प्रदेशमें तिरछा व्यापक है.

प्रवचनसारमें सामान्य समुदाय आता है. गुणकी आकृतिकी पर्याय – जो व्यंजन पर्याय है. व्यंजन पर्यायकी बात नहीं आयी. आकृतिकी व्यंजन पर्याय (जो) है, (यह) संसारमें संकोच विस्ताररूप व्यंजन पर्याय है. और (सिद्ध दशामें) आभीरमें यरम शरीर प्रमाणा व्यंजन पर्याय है. द्रव्यके प्रदेशकी पर्यायको व्यंजन पर्याय कहते हैं और उसमें दूसरे अनंत गुण हैं, उस (गुणकी) पर्यायको अर्थ पर्याय कहते हैं. ऐसी बात (है). समझमें आया ?

श्रोता : स्वभावमें व्यंजन पर्यायका रूप तो है न ?

पू. गुरुदेवश्री : हां है, परंतु द्रव्यके प्रदेशको ही व्यंजन पर्याय कहते हैं. और प्रदेशमें जो अनंत गुण है उसकी पर्यायको अर्थ पर्याय कहते हैं. अब यहां, दूसरी बात कहनी है कि, वह व्यंजन पर्यायका आयत जो कमसर होता है और अकम जो गुण है; यह व्यंजन पर्याय और अर्थ पर्यायकी कमवर्ती पर्याय और अकमवर्ती गुण, इन दोनोंके समुदायको यहां आत्मा कहनेमें आया है. एक बात.

दूसरी बात. (आत्म) प्रदेशमें जितना कंपन आदि है, इस कंपनका यहां अभाव लेना है. वह निष्क्रिय (शक्तिमें) आ गया है. यह निष्क्रिय शक्ति अनंत गुणमें व्यापक है. आहाहा ! यहां जो असंख्य प्रदेशकी व्यंजन पर्याय है, इसमें भी निष्क्रियता है. (उतने) प्रदेश स्थिर हो गये. समझमें आया ? और उसमें जितनी अस्थिरता है उसका उसमें (उस निर्मल पर्यायमें) अभाव है. यहां व्यंजन पर्यायकी मलिनता नहीं लेनी है, निर्मल पर्याय लेनी है. आहाहा ! ऐसा मार्ग ! समझमें आया ?

(यहां) कहते हैं कि, आत्माकी नियत प्रदेशत्व शक्ति (अर्थात् आत्माकी) निश्चय प्रदेशत्व शक्ति. आहाहा ! इस शक्तिका रूप तो असंख्य (अनंत) गुणमें भी है. समझमें आया ? आहाहा ! द्विपयंदेजने सवैयामें बहुत विस्तार किया है. अध्यात्म पंथसंग्रहमें पांच बोल (अधिकार) है. ज्ञान दर्पण, स्वरूप आनंद, उपदेश सिद्धांत रत्न, सवैया. (इस) सवैयामें उसका बहुत विस्तार किया है, बहुत किया है. साधारण सत्तामें समझमें न आवे. नट, थट, रूप, भाव (ऐसा) बहुत लिया है.

सवैया है न ? देजो ! “गुण एक एक जाके परजे अनंत करे, परजेमें नंत नृत्य नाना विस्तरयो है” एक पर्यायमें ज्ञानकी पर्याय द्रव्यको जाने, गुणको जाने, पर्यायको जाने. ऐसी एक समयमें अनंता गुणकी पर्याय द्रव्यको जाने, ऐसा ज्ञानकी पर्यायका नृत्य होता है. समझमें आया ? “नृत्यमें अनंत थट...” एक पर्यायमें अनंत नृत्य और उसमें अनंत सामान्य-विशेष वस्तुका भी ज्ञान, संकोच विकासका ज्ञान, अवस्थित है उसका ज्ञान, अनंत गुणका ज्ञान, अनंत पर्यायका ज्ञान (ऐसे) एक पर्यायके नृत्यमें थट है. वहां लंबी बात है. उसमें अनंत कला है. उसमें भी एक-एक पर्यायके अनंत भागमें नृत्य, उसके अनंत भागमें

थट, उसके अनंत भागमें – थटमें अनंती कला है. कलाके अंदर भाग होता है. विस्तार किया है. लेकिन बहुत सूक्ष्म है. यह तो छतने थोड़े शब्दोंमें (दिया). “कलामें अभंडित अनंत रूप धर्यो है,” पर्यायमें – ज्ञानकी पर्याय सबको जाने, यह नृत्य (है) और इस नृत्यमें एक समयकी पर्यायमें अनंता... अनंता... गुण और अनंती पर्यायका थट जान्या है. और इस थटमें उसकी अक-अक पर्यायकी कला है. और कलामें अभंडित अनंत रूप है. “रूपमें अनंत सत्, सत्तामें अनंत भाव, भावको लभावहु अनंत रस भर्यो है; रसके स्वभावमें प्रभाव है अनंत दीप, सडज अनंत यो अनंत लागि कर्यो है” बादमें व्याख्या की है. पहले सब पढा है न !

दीपयंदज्जका सम्यग्दर्शन सहित क्षयोपशम बहुत था. समजमें आया ? स्वसंवेदन सहित क्षयोपशम बहुत था. लिपत हैं कि, ‘दीपयंदज्ज साधर्मा...’ ऐसा लिपे. परंतु उनकी क्षयोपशम शक्ति बहुत थी. लगभग २०० वर्ष पहले हो गये. श्रीमद्ज्ज हुअे तो श्रीमद्ज्जका (बी) क्षयोपशम उस समय बहुत था. परंतु उन्होंने बाहरमें इसका बहुत स्पष्टीकरण नहीं किया. बाकी उनका क्षयोपशम बहुत था और उन्होंने (दीपयंदज्जने) तो बाहरमें सब स्पष्टीकरण किया. अक-अक गुण, अक-अक पर्याय, अक-अक पर्यायमें अनंत नृत्य और थठ, रूप, भाव और प्रभाव (ऐसा बहुत वर्णन किया है). दरबार भरा है. समजमें आया ? दरबारके निधानमें बडा तंडार होता है न ? छिरा-भाषेकका बडा तंडार होता है. बडे यक्वती राजके तंडारमें जैसे ८ निधान (होते हैं). उस अक-अक निधानकी अक-अक देव सेवा (करे). निधानमें तो बहुत खीज भरी है. जैसे भगवान आत्मा ! अनंत रत्नाकरसे भरा समुद्र – दरिया है. आडाडा ! उससे कोई खीज खीज जगतमें नहीं है. समजमें आया ?

ऐसा आत्माका प्रदेश, है ? “(आत्माके लोक परिभाषा असंख्य प्रदेश नियत ही हैं)” निश्चयसे असंख्य (प्रदेश) है. कल्पनासे है, ऐसा नहीं. आडाडा ! “वे प्रदेश संसार अवस्थामें संकोचविस्तारको प्राप्त होते हैं और मोक्ष-अवस्थामें यरम शरीरसे कुछ कम परिभाषासे स्थित रहते हैं.” यह २४वीं शक्ति कही. समजमें आया ? कल तो अक घंटा खली थी. वह तो आये सो आये न ? आडाडा !

अक-अक प्रदेशमें अनंत गुण भरा है. (और अनंत गुण) असंख्य प्रदेशमें व्यापक (हैं). आडाडा ! अक-अक गुणमें अनंता सामर्थ्य भरा है. अक-अक शक्तिमें अनंती प्रभुता पडी है. नियतप्रदेशत्व शक्तिमें भी अनंती प्रभुता है. और दूसरी अक बात आ गई. भगवानके असंख्य नियत प्रदेश है, उसमें सर्वज्ञ और सर्वदर्शि (शक्तिका) निधान पडा है. अपने देशमें निधान है. आडाडा ! ऐसा है.

असंख्य प्रदेश स्वदेश है. उसमें सर्वज्ञ और सर्वदर्शि (शक्ति) परिपूर्ण भरी है. आडाडा ! सर्वज्ञ और सर्वदर्शि – ऐसी परिपूर्ण शक्ति स्वदेशमें – असंख्य प्रदेशमें व्यापक है. आडाडा !

सर्वज्ञ स्वरूप ही भगवान है और सर्वदर्शि स्वरूप ही भगवान है. आहाहा ! यह सर्वज्ञ और सर्वदर्शि (शक्ति) एक समयकी पर्यायमें जब प्रगट होती है तो सर्वदर्शि शक्ति एक समयकी पर्यायमें सब (पदार्थोंको) सामान्यरूपसे देपती है. भेद किये बिना – विशेष किये बिना, सामान्य जो सत् है उसे देपती है और उसी समयमें केवलज्ञानकी पर्याय एक-एक द्रव्यका भिन्न गुण, गुणकी भिन्न पर्याय, पर्यायका भिन्न अविभाग प्रतिच्छेद, उसमें नट, थठ, सब कुछ हैं, (धन) सबको ज्ञानकी (पर्याय) – केवलज्ञानकी पर्याय एक समयमें देपती है. उसी समयमें दर्शन भेद किये बिना देपता है. (और) उसी समयमें ज्ञानकी पर्याय सबको भेद करके देपती है. उसे यहां (अध्यात्म पंथ संग्रहमें) पुराण (अधिकारमें) अद्भुतरसमें लिया है. समझमें आया ? अद्भुतरसकी व्याख्या करते हैं. (उसमें) यह लिया है. अद्भुत तो देपो ! आहाहा ! भगवान आत्मा(के) असंख्य प्रदेशमें सर्वदर्शि, सर्वज्ञ शक्ति जब प्रगट होती है, शक्तिमेंसे व्यक्ति (जब प्रगट होती है) तो (दर्शन) एक समयमें सर्वको भेद किये बिना देपो और (ज्ञान) सबको भेद करके जाने. एक समयमें दो शक्ति (और) दोनोंके लक्षण भिन्न. आहाहा ! समझमें आया ?

उसमें (अध्यात्म पंथ संग्रहमें है). (भातें तो) निकले तब निकले, (ऐसे) सर्वथा थोड़ी निकले ? उसमें (नव रसमें एक) अद्भुत रस है. “आगे अद्भुत रस कडिये है. अद्भुतता सत्तामें ऐसी है.” – अद्भुतता सत्तामें ऐसी है, भगवान आत्माकी सत्ता, उसकी सत्तामें अद्भुतता ऐसी है, “... साकार ज्ञान है, निराकार दर्शन है. दोउकी सत्ता एक है” एक समयमें है. “यह अद्भुत (भाव) रस है.” यह अद्भुतभाव रस है. अद्भुत की यह व्याख्या है. है अद्भुत रस ? ज्ञान साकार है. एक समयमें साकार (अर्थात्) सबका भेद कर-करके (जाने). साकारका अर्थ आकार नहीं. साकारका अर्थ – स्व-पर अर्थका भेद करके – जितने भेद है इतने प्रमाणसे जाने उसे साकार (कहते हैं). ज्ञानको साकार (अर्थात्) परका आकार होता है तो साकार कहनेमें आता है, ऐसा है नहीं.

यह (भात) तत्त्वार्थसारमें है. अमृतचंद्र आचार्यका तत्त्वार्थसारमें है न ? इसमें यह बोल है कि ज्ञानको साकार इस कारणसे नहीं कहा कि, परका उसमें आकार पडा, जलक पडे तो आकार (है), ऐसी बात नहीं है. परंतु ज्ञानका स्वपर अर्थका प्रकाशक स्वभाव है, स्वपरको जानना यही साकार है. साकारमें विकल्प है परंतु ज्ञानका विकल्प है, स्वपरका विकल्प (है). परंतु राग नहीं. आहाहा ! ऐसा सूक्ष्म तत्त्व ! यहां यह कहते हैं. उसमें नियत प्रदेशत्व शक्ति है. देपो ! २४ (शक्ति समाप्त) हुई.

(अब) २५वीं (शक्ति). “सर्व शरीरोंमें एकस्वरूपात्मक..” आहाहा ! क्या कहते हैं ? निगोदसे लेकर आभीरका यरम शरीर उसमें, “सर्व शरीरोंमें...” सर्व शरीर आया न ? (उसका अर्थ) निगोदसे लेकर यरम शरीर, (ऐसे) जितने शरीर हैं, इसमें ‘... एकस्वरूपात्मक...’

(अर्थात्) उसमें स्वरूप तो अेकस्वरूप ही है. (आत्मा) शरीरमें व्याप्त होता है, रागमें व्याप्त होता है, अैसा नहीं है. आडाडा ! क्या कडते हैं ?

अनंत शरीरमें शरीरकी पर्याय अनुसार आकार आडि डो. डिर भी शरीरमें यड पर्याय व्यापक नहीं. शरीरकी अवस्था व्याप्य और आत्मा व्यापक, अैसा है नहीं. आडाडा ! समजमें आया ? अपने अनंत गुण जो व्यापक डोकर (निर्मल) पर्याय व्याप्य (डोती है). यडं निर्मल पर्यायकी डात है. मलिन पर्यायकी डात नहीं. (आत्मा) शरीरमें तो व्यापक नहीं है, व्याप्य नहीं है, परंतु रागमें भी व्याप्य नहीं है, आडाडा ! क्योंकि राग तो अनेक प्रकारका – विविध (प्रकारका) डोता है. असंभ्य प्रकारके शुभ और अशुभ (राग डोते हैं). यडं ये नहीं लेना है. यडं तो “अेकस्वरूपात्मक...” (लेना है). है ? “सर्व शरीरोंमें...” सर्व शरीरमें. आडाडा ! जैसे रप कडरे डो और अेक डीपक डो (और डीपक) अेक कडरेसे डूसरे कडरेमें (ले जाओ) तो (भी) डीपक तो डीपक स्वरूप ही है. (वड) कडरे स्वरूप कभी डुआ नहीं. समजमें आया ? अैसे सर्व - अनंत शरीरोंमें (जाने पर भी) डैतन्य स्वरूप डीपक प्रभु ! उसका अेक सरीभा स्वरूप है. जैसे डीपक कडरेमें व्याप्त नहीं डोता वैसे ञवस्वरूप आत्मा शरीरमें व्याप्त नहीं और अंदर डया, डानका विकल्प है डसमें भी व्यापक नहीं. आडाडा ! यडं कहीं भी मलिन पर्यायकी डात लेनी ही नहीं. समजमें आया ? यडं शक्तिके वर्णनमें तो कड (रूप पर्याय) और अकड (रूप गुण) डोनों निर्मल लेना है.

यडं डोग अैसा कडते हैं कि, व्यवडारसे निश्चयसे डोता है. अरे...! व्यवडार – राग तो निर्मल पर्यायमें है ही नहीं. समजमें आया ? आत्मा व्यापक और राग व्याप्य यड वस्तुका स्वरूप ही नहीं है. आडाडा ! भगवान आत्मा ड्रव्य व्यापक नाम कर्ता डोकर निर्मल पर्यायरूपी व्याप्यकी अवस्था करनेवाला है. यड भी व्यवडार है. आडाडा ! निर्मल पर्याय अपनेसे डुई है. कर्ता-कर्म-करण (आडि षट्कारकसे) अपनेसे डुई है. परंतु यडं तो परसे भिन्न करके डात डतलानी है न ?

(यडं) “अेक स्वरूपात्मक...” आडाडा ! अनंत शरीर (मिले उसमें) डजार डोजनका शरीर मिला या अेक अक्षरके अंगुलके असंभ्य भागमें अेक शरीर मिला, तो भी स्वयं तो अपने स्वरूपमें ही व्यापक है. शरीरमें व्यापक नहीं और रागमें कभी व्यापक डुआ ही नहीं. आडाडा ! अैसा डैतन्य भगवान परमात्मस्वरूप डिराजते हैं. तेरी निधि तेरी है, तेरी है यड तेरे पास है, अैसा कडना यड भी व्यवडार है. तेरी निधि तुड (स्वयं) डो. आडाडा ! (यड) स्वरूप ही निधि है. आडाडा ! अनंत ड्ञान, अनंत डर्शन (स्वरूप उसकी निधि है). कडते हैं कि, शरीर डोटा-डडा डुआ परंतु शरीरमें उसका डर्म व्यापक है ही नहीं. वड तो अपने स्वरूपमें ही व्यापक है. आडाडा ! शरीरको कभी डुआ ही नहीं और शरीरको तो नहीं (डुआ) परंतु रागको भी निर्मल पर्याय कभी स्पर्श नहीं करती. अैसा “अेक

स्वर्पात्मक...” ऐसा लिया न ? आडाडा ! बहुत सूक्ष्म बातें ! बापू ! यह शक्तिका वर्षान् कवास शुरु किया तबसे शक्ति शुरु की है. आज २३ दिन हुआ. शक्तिके वर्षान्में आज २३वां दिन है. आडाडा ! क्या कडा ?

“सर्व शरीरोंमें....” सर्व शब्द(का अर्थ) क्या है ? निगोदसे लेकर यरम शरीर तक – सर्व शरीरोंमें. अनंत... अनंत... छोटे-बड़े ऐसे शरीरोंमें – अंगुलके असंख्य भागके शरीरमें और हजार योजनके शरीरोंमें “... अकस्वर्पात्मक...” अक स्वरूपी यिदानंद प्रभु है. उसमें कोई कमी या वृद्धि कुछ नहीं है. ऐसी यीज भगवान् पूर्णानंदका नाथ, परमात्मस्वरूप, (बिराजमान है). सर्व आत्मा परमात्मप्रकाश ही है. शरीरका नाम है यह कोई आत्मामें नहीं है. आडाडा !

असंख्य प्रदेशी अनंत गुणका धाम ! और यह आत्मा अनंत छोटे-बड़े शरीरोंमें रहने पर भी शरीरको छूआ ही नहीं. आडाडा ! तो लक्ष्मी, स्त्री, कुटुंब, मकान और व्यापार उसको तो कभी छूता ही नहीं. तीनकालमें छूआ ही नहीं. आडाडा ! आत्मा शरीरकी पर्यायको छूआ ही नहीं. अनादिके अक स्वरूप ही रहा है, ऐसा कहते हैं. आडाडा ! ऐसी यीज पर दृष्टि करना. आडाडा ! अक स्वरूपी प्रभु भगवान् ! अनंत गुण होने पर भी, अनंत शरीरमें कमसर पलटते रहने पर भी वह तो अक स्वरूप ही है. उसमें अनेक स्वरूप कभी आया नहीं. आडाडा ! समझमें आया ? सूक्ष्म बात है.

अक स्वरूप शक्ति, अक स्वभाव ऐसे लिया न ? सर्व शरीरोंमें अक स्वरूप... अकस्वर्पात्मक, यानी अक स्वरूप लक्षण – आत्मकका अर्थ ही स्वरूप होता है. आत्मक है न ? ‘स्वर्पात्मक’ उस लक्षण स्वरूप है. उसका अक स्वरूप लक्षण स्वरूपी भगवान् है. आडाडा ! ऐसा सूक्ष्म ! कहने जाय (तो लोगोंको सूक्ष्म पडता है). आडाडा ! अरे...! ऐसे मनुष्यदेहमें ऐसी यीज नहीं मिले, समझमें नहीं आवे तो दृष्टि न हो तो उसने क्या किया ? आडाडा ! याहे जितने व्रत, तप, भक्ति, शास्त्रका जानपना करे, उसमें क्या आया ? आडाडा !

अक स्वरूपी भगवान् आत्मा ! अनंत भिन्न-भिन्न शरीरमें रहने पर भी अपना अक स्वरूपपना छूटा नहीं. आडाडा ! और पर्यायमें भी शुभ-अशुभ राग हुआ तो भी भगवान् अक स्वरूप है. वह पर्याय या रागरूप कभी हुआ नहीं. आडाडा ! समझमें आया ?

वह तो छोटी गाथामें कडा न ? ज्ञायक – “ण वि होदि अप्पमत्तो ण पमत्तो जाणगो दु जो भावो !” भगवान् ज्ञायकभाव ! यहां (ज्ञायक) शब्दकी बात नहीं. ज्ञायकभाव वाय्य जो है (वह लक्ष्यमें आना याहिये). ज्ञायक शब्द है (और ज्ञायक भाव वाय्य है). (जैसे) यीनी शब्द वाय्य है और यीनी वाय्य है. ऐसे यहां ज्ञायकभाव शब्द वाय्य है. उसका वाय्य त्रिकादी ज्ञायकभाव है. (वह) अक स्वरूप ही रहा है. आडाडा ! पर्यायमें कम-बेसी आदि भले हो (लेकिन) वस्तु तो अनादि-अनंत अक स्वरूप पडी है. आडाडा ! समझमें

आया ? और ऐसी दृष्टि होनेसे पर्यायमें भी एक स्वरूपताका परिणामन होता है.

द्रव्य और गुण एक स्वरूपात्मक है. परंतु उसका स्वीकार करनेसे (सम्यग्दर्शन होता है). कल तो कला था न ? सत्कार (करना). पूर्ण सत्स्वरूप भगवान् आत्मा उसका सत्कार (करना). 'है' ऐसा आदर करना, 'है' ऐसा आदर करना, यह सम्यग्दर्शनकी पर्याय है. उसमें सारे आत्माका सत्कार हुआ. 'है' ऐसा प्रतीतमें आया. और उसे पर्याय जितना मानना, राग जितना मानना वह तो आत्माका मृत्यु है. सारी वस्तु है उसका वह अनादर करता है. पूर्णानंदका नाथ एक स्वरूपे बिराजमान है. (है उसे) रागवाला कलना, स्वरूपकी जो त्रिकाली शक्ति-सत्त्व है, उसकी वह हिंसा करता है. हिंसा नाम निषेध करता है, निषेध करता है वही हिंसा है. आहाहा ! और अंदरमें अनंत गुणका ज्वन जिसका है, ऐसा स्वीकार करनेसे पर्यायमें भी निर्मल परिणति (परिणामित होती है). (जैसी) एकस्वरूपात्मक वस्तु है, ऐसा ही एकस्वरूपात्मक परिणामन पर्यायमें भी होता है. आहाहा ! समझमें आया ?

“सर्व शरीरोंमें एकस्वरूपात्मक ऐसी स्वधर्मव्यापक...” (आत्मा) अपने धर्ममें व्यापक है. आहाहा ! अपने गुण और अपनी निर्मल पर्यायमें व्यापक है. आहाहा ! मलिन पर्यायमें भी व्यापक नहीं (है).

(लोग) शुभ जोगसे धर्म होता है, (ऐसा मानते हैं.) अररर... गजब करते हैं ! (इस बातकी) बड़ी तकरार (यदी) है. (कोई विद्वान् ऐसा कहते हैं) शुभ जोग मोक्षका मार्ग है. वे कहते हैं कि, 'शुभ जोग डेय माने (वह मिथ्यादृष्टि है).’ (लेकिन) कुंडकुंडाचार्यदेवने (शुभ जोगको डेय) कहा है. कुंडकुंडाचार्य (शुभजोगको) डेय मानते हैं तो तुम कहते हो कि, (शुभ जोगको) डेय माने (वह) मिथ्यादृष्टि है. तो कुंडकुंडाचार्य (शुभ जोगको) डेय मानते हैं तो वे भी मिथ्यादृष्टि हो गये ! आहाहा !

परमात्मप्रकाशमें उद्-उ७ गाथामें तो ऐसा कहा है कि, जो रागको उपादेय मानता है उसने आत्माको डेय माना. जिसने रागको-विकल्पको उपादेय माना उसने आत्माके स्वभावको डेय माना, आहाहा ! व्यवहार रत्नत्रयका शुभ जोग है, वह व्यवहार रत्नत्रय उपादेय है, आदरणीय है, ऐसा जिसने माना उसने शुद्ध विद्वानंद स्वरूपको, अण्डानंद (स्वरूपको) डेय माना. (अज्ञानी ज्वने) आत्माको डेय माना (और) रागको उपादेय माना. धर्मी ज्व रागको डेय मानकर त्रिकालीको उपादेय मानते है. इसमें कहां सब मेल करना ?

अरे प्रभु ! तेरी यीज जितने प्रकारसे है, इतने प्रकारसे स्वीकार न हो तो - तो (उसका) अनादर हो गया. सत् परिपूर्ण भगवान् एक स्वरूपात्मक धर्म है, वह स्वधर्ममें व्यापक है. अपने गुण और पर्यायमें ही व्यापक है. यहां निर्मल पर्याय लेना. समझमें आया ? आहाहा ! शब्द थोड़े हैं परंतु भाव बहुत गंभीर है. अमृतयंद्राचार्यने गजब काम किया है ! पंचम आरामें कुंडकुंडाचार्यने तीर्थकर जैसा काम किया है (और) अमृतयंद्राचार्यने

(ઉનકે) ગણધર જૈસા કામ ક્રિયા હૈ. આહાહા ! શબ્દ થોડે હૈં ઇસલિયે (ભાવ કમ હૈ એસા) નહીં સમજના. (એક) જગત (શબ્દ) કહતે હૈં (ઉસમેં) સબ આ ગયા. જગત ત્રીન અક્ષરકા (શબ્દ હૈ). તો જગતમેં તો અનંત સિદ્ધ આયે, અનંત નિગોદ આયા, અનંત દ્રવ્ય આયે. (જગત કહનેમેં) સબ આ ગયા. આહાહા ! ત્રીન નિરક્ષર હૈં. કાનો-માત્રા બિનાકા (હૈ). જ...ગ...ત... જા, જી, જો... એસા કુછ નહીં. એકાક્ષરી (હૈ). ભગવાનકી વાણી એકાક્ષરી નિકલતી હૈ ન ? ‘ઓમ’ આહાહા ! જગત ત્રીન અક્ષર (કા શબ્દ હૈ). જગતમેં તો અનંત સિદ્ધ આ ગયે, અનંત નિગોદ આ ગયે, ઇ: દ્રવ્ય (આ ગયે), ઇ: દ્રવ્યકે ગુણ-પર્યાય સબ આ ગયા. એસે એક-એક શક્તિમેં ઇતની ગંભીરતા હૈ. આહાહા !

શ્રોતા : આપને ફરમાયા ન કિ અમૃતચંદ્રઆચાર્યને ગજબ કામ ક્રિયા તો ગજબ કિસને ક્રિયા ?

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : અમૃતચંદ્રઆચાર્યને (ગજબ) ક્રિયા.

શ્રોતા : અબ તો ગજબ આપ કરે રહે હૈં.

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : હમ તો વે કહતે હૈં ઉસકા સ્પષ્ટીકરણ કરતે હૈં. ઇસમેં (અંદર ટીકામેં ભરા) હૈ. સમજમેં આયા ? વહ દૃષ્ટાંત નહીં દિયા ? કિ ગાયકે – ભૈંસકે આળમેં દૂધ હૈ. (દૂધ નિકાલનેવાલી) બાઈ જોરદાર એસી હોની ચાહિએ કિ, (દૂધ બાહર નિકાલે). (ગાયકા) આંચલ હૈ ન ? (ઉસમેંસે દૂધ) એસે નહીં નિકલતા. (એસે હી નિકાલને જાયે તો) ફોડે હો જાય. આંચલ કહતે હૈં ક્યા કહતે હૈં ? ભૂલ જાતે હૈં. આત્માકા જિતના યાદ રહે ઉતના બાહરકા યાદ નહીં રહતા. આંચલ એસે નહીં દોહતે. દેખા હૈ કભી ? હમારી બહેનકે યહાં ગાય થી. છોટી ઉમ્રમેં લાયે થે. વહ દોહતી થી તો હમ દેખતે થે. ઇસ ઉંગલીમેં અંગુઠા એસે કરતી થી તો દૂધ નિકલતા થા. વૈસે ઇન શાસ્ત્રોંકે શબ્દોંમે અમૃતચંદ્રઆચાર્ય તર્ક લગાકર ઉસમેં દૂધ હૈ ઉસે નિકાલતે હૈં. ભાવમેં હૈ ઉસકો નિકાલતે હૈં. સમજમેં આયા ? આહાહા !

યહાં કહતે હૈં, “સર્વ શરીરોંમે...” (અર્થાત્) અનંત શરીરોંમે. (યાની) ભિન્ન-ભિન્ન આકારવાલે છોટે ઔર મહા શરીરોંમે. ભગવાન (આત્મા) તો સર્વ શરીરોંમે એકસ્વરૂપ, એકસ્વરૂપ ચિદાનંદકંદ, આનંદકંદ રહા હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? નિગોદકી પર્યાયમેં અક્ષરકે અનંતવે ભાગમેં (જ્ઞાન) હો તો (ભી) વસ્તુ તો એકસ્વરૂપ ત્રિકાલ આનંદકંદ રહી હૈ. એસી દૃષ્ટિ કભી કી નહીં. સબ ક્રિયા, જાનપના ક્રિયા, ૧૧ અંગ પઢા. ‘પઢ ડાલા’ (અર્થાત્) પઢકર છોડ દિયા ! આહાહા ! જો કરના હૈ વહ તો ચીજ યહ હૈ. અપની જ્ઞાનકી પર્યાયમેં પૂર્ણાનંદ એકસ્વરૂપ હૈ ઉસકી દૃષ્ટિ કરના, – તો પર્યાયમેં ભી શક્તિકી વ્યક્તતા (હોતી હૈ). શ્રદ્ધાકી, વીર્યકી, આનંદકી, ઈશ્વરતાકી, પ્રભુત્વ શક્તિ હૈ ન ? સબકા વેદન પર્યાયમેં આના. ઉસકા નામ ધર્મ ઔર ઉસકા નામ મોક્ષકા માર્ગ હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ?

શ્રોતા : ધર્મ તો વીતરાગતાકો કહતે હૈં. ઇસમેં કહાં વીતરાગતા આયી ?

પૂ. ગુરુદેવશ્રી : વીતરાગતા હી આથી. વીતરાગતા કબ આથી ? વીતરાગ સ્વરૂપ હી ભગવાન હૈ. ઉસકા આશ્રય લેનેસે પર્યાયમેં વીતરાગતા પ્રગટ હોતી હૈ. વીતરાગ સ્વરૂપ હૈ ઉસ તરફ ઝુકનેસે પર્યાયમેં વીતરાગતા હોતી હૈ.

આજ એક (પત્રિકામેં) બડા લેખ આયા હૈ. ‘સબકો પ્રેમ કહો કિ વીતરાગતા કહો (એક હી બાત હૈ)’ ઐસા લિયા હૈ. બડા લેખ હૈ. પ્રેમ શબ્દકા (અર્થ) ઐસા નહીં. પ્રેમકા અર્થ ઐસા લેના કિ, સ્વરૂપ જો હૈ ઉસમેં એકાગ્રતા હોના વહ પ્રેમ હૈ. સર્વ વિશ્વકે પ્રતિ પ્રેમ, ઐસા (ઉસકા અર્થ) નહીં હૈ. પરંતુ બડા લેખ આયા હૈ. સ્થાનકવાસીમેં એક હૈ. વે ઐસા કહતે હૈ, ‘વિશ્વપ્રેમ – સર્વ વિશ્વ પર પ્રેમ કરો’ – ક્યા વિશ્વ પર પ્રેમ કરે ? (કોઈ) સ્થાનકવાસી સાધુ હૈ. ઉસકા પત્ર નિકલતા હૈ ઉસમેં લિખતે હૈ – વિશ્વવાત્સલ્ય. સર્વ વિશ્વ પર પ્રેમ કરના. પરંતુ પ્રેમકી વ્યાખ્યા ક્યા ? ક્યા સબકો અપના માનના ? (સબસે) એકત્વ માનના યહ પ્રેમ હૈ ? વિશ્વકા જ્ઞાન કરકે અપને સ્વભાવમેં એકતા હોના યહ પ્રેમ હૈ. દૂસરે દ્રવ્યસે પ્રેમ (કરના, યહ તો રાગ હૈ). તીર્થંકર ગુરુકે પાસ ગયે ઇનકા ભી પ્રેમ કરના કિ, ‘યહ મેરે હૈ’ યહ તો રાગ હૈ. યહ તો એકસ્વરૂપાત્મક હૈ નહીં.

“સર્વ શરીરોમેં એકસ્વરૂપાત્મક ઐસી સ્વધર્મવ્યાપકત્વ...” હૈ ? સ્વધર્મવ્યાપકત્વશક્તિ. (આગે કોંસમેં) — “(શરીરકે ધર્મરૂપ ન હોકર, અપને અપને ધર્મોમેં વ્યાપનેરૂપ શક્તિ સો સ્વધર્મવ્યાપકત્વશક્તિ હૈ.)” આહાહા ! પરમાર્થસે તો અપના ભગવાન (આત્મા) નિર્મલ ગુણ ઔર નિર્મલ પર્યાયમેં વ્યાપક હૈ, ઉસકો છૂતા હૈ. રાગકો ઔર શરીરકો કભી છૂતા નહીં— યહ દ્રવ્યસ્વભાવ હૈ. સમજમેં આયા ?

અભી તો ચીજ ક્યા હૈ ? ઉસકી ખબર નહીં ઔર ઉસે ધર્મ હો જાય ! (યહ કેસે હો સકતા હૈ ?) અરેરે...! (ઐસા) કરતે... કરતે... કરતે.... અનંત કાલ ચલા ગયા. એક તો સંસારકે વ્યાપારકે આડે નિવૃત્તિ નહીં (મિલતી). ૨૪ ઘંટે પાપકે ધંધે. એક-દો ઘંટે કદાચિત્ દેવદર્શનકે લિયે જાયે કિ વાંચન કરે (તો) બાકી ૨૨ ઘંટે પાપમેં (જાય). (પૈસે) કમાના, ઐસા (કરના) ઔર વૈસા (કરના). લડકેકી શાદી કરના, કોઈ કન્યા ન દે તો ઉસકે પાસ માંગકર લેના ઔર કુટુંબકે સ્ત્રી, પુત્રકો રાજી રખના, ઇસમેં તેરા આત્મા અરાજી હોતા હૈ. ઇસકી ખબર નહીં. (ખુદ) દુઃખી હોતા હૈ. પરકે સાથ સંબંધ ક્યા ? ઉસકે સંબંધી જો અપના જ્ઞાન હૈ ઉસ જ્ઞાનકી પર્યાયમેં સમસ્ત વિશ્વ જાનનેમેં આતા હૈ, યહ અપની પર્યાય (હૈ). પર્યાયમેં અપને (સ્વરૂપમેં) પ્રેમમેં એકાગ્ર હોના (યહ પ્રેમ હૈ). આહાહા ! ૨૫વીં શક્તિ હુઈ ન ?

અબ ૨૬વીં (શક્તિ). “સ્વ-પરકે સમાન...” અબ ક્યા કહતે હૈ ? સ્વ ઔર પરમેં સમાન અસ્તિત્વ, વસ્તુત્વ, પ્રમેયત્વ આદિ (ગુણ) સ્વ-પરમેં સમાન હૈ. સમજમેં આયા ? ‘સ્વ-પરકે સમાન, અસમાન...’ આત્મામેં જ્ઞાન હૈ (ઔર) પરમેં નહીં, યહ અસમાન (હુઆ). “સ્વ-પરકે સમાન...” સ્વ-પરકે સમાનકા અર્થ સમજે ? સાધારણ. સાધારણ યાની જૈસે અપનેમેં અસ્તિત્વ,

वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व है, जैसे अनंत द्रव्योंमें अस्तित्व है, प्रमेयत्व है, तो उसे समान कलनेमें आता है. साधारणको समान कलनेमें आता है. “स्व-परके समान, असमान...” असाधारणको असमान कलनेमें आता है. आत्मामें ज्ञान, दर्शन, आनंद (आदि गुण हैं) यह अपना विशेष है. यानी असमान है. समान नाम अपनेमें है ऐसा परमें (बी) है, ऐसी समान शक्ति बी अनंत है. (परंतु) छः नामसे कला – द्रव्यत्व, अस्तित्व, वस्तुत्व, प्रमेयत्व आदि (बाकी तो) अनंत हैं. आलाहा !

अगुरुलघुमें कला न ? भाई ! केवलज्ञानकी एक समयकी पर्याय है. उसमें बी एक समयमें षट्गुणहानिवृद्धि होती है. क्या ? तर्कसे प्याल आता है ? केवलज्ञानकी पर्याय (हो) अरे...! (याह) क्षायिक समकितकी एक समयकी पर्याय (हो) उसमें (बी) षट्गुणहानिवृद्धि (होती है). एक ही समयमें षट्गुणहानि और एक ही समयमें षट्गुणवृद्धि (होती है). यह स्वभाव अगर श्रुतज्ञानमें जाननेमें आ जाय तो केवलज्ञानमें क्या रहा ? केवलज्ञान (माने क्या !!) आलाहा !

एक समयमें ज्ञानकी पर्यायका परिणामन लोकालोक है उसे तो जाने, ऐसा कलना व्यवहार (है). परंतु उससे अनंत गुना काल और अनंत गुना क्षेत्र हो तो बी जाननेकी जिसकी ताकत है. ऐसी केवलज्ञानकी एक समयकी पर्याय (है). वह अपनेमें असमान गुण है. केवलज्ञानकी पर्याय असमान है. (ऐसा) दूसरे द्रव्यमें नहीं है.

प्रवचनसारकी ८३ गाथामें एक अपेक्षासे तो ऐसा लिया है कि, आत्मामें जो येतन गुण है, यह बी असमान और समान दोनों हैं. समझमें आया ? एक के अलावा दूसरे (द्रव्यमें) है तो उसे समान कलनेमें आया. नहीं तो जो ज्ञान है वह तो असमान-विशेष है. समझमें आया ? फिर बी ८३ गाथामें ऐसा लिया है कि, ज्ञान, दर्शन, आनंद यह बी दूसरे आत्मामें है; इस अपेक्षासे उसे साधारण कलनेमें आया. सब आत्माओंमें (है). समझमें आया ?

“स्व-परके समान, असमान...” अब दोनों एक साथ लेते हैं. “समानासमान...” अस्तित्व आदि समान और ज्ञान आदि असमान (हैं). “ऐसे तीन प्रकारके भाव....” उसके तीन प्रकारके भावस्वरूप एक शक्ति है. आलाहा ! ऐसा बहुत सूक्ष्म (है) ! लोगोंने तो अती बाहरके क्रियाकांडमें, शुभजोगमें संतोष करके (धर्म) मान बैठे. अरे प्रभु ! ऐसा तो अनंत कालमें हुआ. आलाहा !

यहां तो अपना जो गुण है, यह अपनेमें है और दूसरेमें (बी) है यह समान है. और अपनेमें है और दूसरेमें नहीं है, यह असमान (है). और एक अपेक्षासे तो एक जोवके अलावा दूसरे (जोवमें ज्ञानगुण) है, उसको बी वहां (प्रवचनसार-८३ गाथामें) समान कलनेमें आया है. (ज्ञान) परमें बी है न ? ज्ञान एक आत्माके अलावा अनंत आत्मामें

હૈ ઇસ અપેક્ષાસે સમાન કહા. સમજમેં આયા ? એક અપેક્ષાસે જ્ઞાનકો અસમાન કહા, દૂસરી અપેક્ષાસે જ્ઞાનકો સમાન ભી કહા. ક્યા અપેક્ષા હૈ, સમજમેં આયા ? કિ જ્ઞાન વિશેષ હૈ – સામાન્ય ગુણકે બજાય વિશેષ (ગુણ) હૈ, ઇસ અપેક્ષાસે ઉસે અસાધારણ-અસમાન કહા. પરંતુ જ્ઞાન અપનેમેં ભી હૈ ઓર અનંત આત્મામેં (ભી) હૈ, ઇસ અપેક્ષાસે સાધારણ ભી કહા, આહાહા ! પ્રવચનસાર ૯૩ ગાથામેં હૈ. સમજમેં આયા ? ઓર વહાં ૯૪ ગાથામેં તો ઐસા કહા કિ, આત્માકા વ્યવહાર ક્યા ? કિ આત્મા શુદ્ધ આનંદરૂપ પરિણમન કરે, યહ આત્મવ્યવહાર હૈ. રાગરૂપ પરિણમન કરે યહ મનુષ્યવ્યવહાર હૈ, આત્મવ્યવહાર નહીં. આહાહા !

પ્રવચનસાર (અર્થાત્) ભગવાનકી દિવ્યધ્વનિકા સાર. ભગવાન આત્મા ! અપના શુદ્ધ ચૈતન્ય સ્વરૂપને પરિણમના – દ્રવ્ય-ગુણ તો ત્રિકાલ (શુદ્ધ) હૈ હી પરંતુ (શુદ્ધપને) પરિણમના યહ વ્યવહાર હૈ. આહાહા ! યહ (શુદ્ધ) પર્યાય હૈ, યહ વ્યવહાર હૈ. સમજમેં આયા ? તો ઉસે આત્મવ્યવહાર કહા ઓર રાગરૂપ હોના યહ મનુષ્યવ્યવહાર હૈ. ભવકા કારણ (હૈ) ઇસલિયે મનુષ્યવ્યવહાર હૈ. આહાહા ! ઐસી બાત હૈ !

યહાં કહતે હૈ, “...ઐસે ત્રીન પ્રકારકે ભાવૌકી ધારણ-સ્વરૂપ...” હૈ ન ? “...ધારણ-સ્વરૂપ સાધારણ...” સમાનમેં સાધારણ આયા. “અસાધારણ...” (યાની) “અસમાન...” અસમાન અપનેમેં હૈ ઇતના (લેના). “... સાધારણસાધારણ...” અબ દોનોં સાથમેં (લિયા). વહ આ ગયા ન ? સમાનાસમાન. ઐસી એક શક્તિ હૈ. શક્તિ એક હૈ. સાધારણ-અસાધારણ, સાધારણસાધારણ મિલકર એક શક્તિ હૈ. વહ ભી અપને સ્વભાવમેં અપને કારણસે હૈ. પરકે કારણસે નહીં હૈ. વિશેષ કહેંગે....



તત્ત્વજ્ઞાનનું મૂળ સર્વજ્ઞ છે. સર્વજ્ઞદેવે જે સાધનથી તત્ત્વજ્ઞાન સાધ્યું અને વાણીમાં જે સાધન કહ્યું તેને ઓળખે, તેવા દેવ, ગુરુ, શાસ્ત્રને ઓળખે, તેને જ યથાર્થ તત્ત્વની ભાવના હોય છે, બીજાને નહિ. (પરમાગમસાર-૭૯૯)

प्रवचन नं. २४

शक्ति-२७, २८ ता. ०३-०८-१९७७

विलक्षणानन्तस्वभावभावितैकभावलक्षणा अनन्तधर्मत्वशक्तिः ॥२७॥
तदतद्रूपमयत्वलक्षणा विरुद्धधर्मत्वशक्तिः ॥२८॥

समयसार, शक्तिका अधिकार है. २६ शक्ति यली. कल २६ (वीं शक्ति) यली न ? आज २७ अनंतधर्मत्व शक्ति (लेते हैं). यह शक्ति अेक है, परंतु यहां अनंतधर्मत्व शब्द लिया है. (यह) है तो गुण, परंतु धर्म क्यों लिया है ? 'धारिति इति धर्म' द्रव्य स्वभाव अनंत धर्मको धारण करता है. समजमें आया ? 'धारिति इति धर्म' द्रव्य स्वभाव अनंत धर्म-गुणको धारण करता है. यह धर्म माने अपेक्षित नित्य-अनित्य धर्म, जैसे नहीं. उसमें अलापपद्धतिमें आता है न ? नित्य, अनित्य ये धर्म (है). परंतु इसमें गुणके (जैसे) पर्याय नहीं. यह तो गुण है. अंदर अनंत धर्म – गुण है. उन अनंत गुणको धारण करनेवाली अेक शक्ति अनंतधर्मत्वशक्ति है. आहाहा !

वस्तु अेक (है) उसमें अनंत गुण (है). उन अनंत गुणको धारण करके रभे ऐसी अनंतधर्मत्व नामकी अेक शक्ति है. आहाहा ! समजमें आया ? शक्तिका परिणामन तो कमसे होता है. समजमें आया ? अनंतधर्मत्व शक्ति है, यह ध्रुव है परंतु इस अनंतधर्मत्व शक्तिको दृष्टिमें लेनेसे – शक्तिवान और शक्तिका भेद निकालकर (अभेद स्वरूपको दृष्टिमें लेनेसे धर्म होता है). आहाहा ! अेकरूप अनंत धर्मको धारण करनेवाली शक्ति और शक्तिको धारण करनेवाला द्रव्य, ऐसी दृष्टिमें जो आनंदकी अवस्थाका परिणामन होता है तो आनंदकी अवस्थासे आनंद स्वरूपका ज्ञान और भान होता है. वह सवेरे कहा था न ? अनित्यसे नित्यका ज्ञान होता है. आहाहा ! समजमें आया ?

आनंदकी पर्याय, निर्विकल्प आनंदकी दशा अनंतधर्म शक्ति संपन्न भगवान (आत्माको दृष्टिमें लेनेसे प्रगट होती है). अनंतधर्मत्व शक्ति अेक है. फिर भी अेक-अेक (शक्तिमें) ज्ञान आदिमें अनंत धर्मका रूप है, आहाहा ! समजमें आया ? ज्ञान है तो उसमें अस्तित्व

भी है. वह अस्तित्व गुणके कारण नहीं. (परंतु) अस्तित्वका रूप है, उस धर्मका-गुणका रूप है. आहाहा ! जैसे दर्शन अस्तित्व, आनंद अस्तित्व, पर्यायका अस्तित्व (है). यहाँ तो परिणामनवाली शक्तिका वर्णन दिया है. अकेली ध्रुव शक्ति, ऐसा नहीं. शक्ति जो है, उसका ज्ञानमें लान हुआ तो यह शक्ति है, ऐसी प्रतीति हुई. ऐसी शक्ति है और अनंत शक्तिको धारण करनेवाला द्रव्य है. ज्ञानमें इस द्रव्यकी दृष्टि हुई (तो) पर्यायमें सारे द्रव्यका ज्ञान आया. समझमें आया ? तब उस शक्तिका परिणामन हुआ तो शक्ति और शक्तिवान है, ऐसी प्रतीति हुई. सूक्ष्म बात है, बहुत सूक्ष्म बात है.

शक्ति है यह तो त्रिकाल है परंतु यहाँ तो शक्तिकी कमवर्ती पर्याय और अकमवर्ती गुण दोनों मिलाकर, कमवर्ती (पर्याय) और अकमवर्ती (गुण दोनों) मिलाकर आत्मा है. दोनों मिलाकर आत्मा है. उसमें विकार नहीं (लेना). आहाहा ! समझमें आया ? क्योंकि शक्ति है यह निर्मल है और शक्तिवान यह भी निर्मल है; तो भगवान निर्मलका जहाँ लान हुआ तो पर्यायमें निर्मलता ही प्रगट होती है, विकार नहीं. आहाहा ! विकारका तो उसमें अभाव (है). उसका नाम स्याद्वाद है. (लोग) अंकांत-अंकांत कहते हैं न ?

आज ही बहुत विरोध आया है. वे कहते हैं कि, 'मिट्टीमें घडा करनेका कर्तव्य नहीं है. कुंभार कर्तव्य करता है तब घडा होता है. उपादानमें योग्यता हो परंतु जैसा निमित्त मिले ऐसी पर्याय होती है' (लेकिन) ऐसा नहीं है. बहुत विरोध आया (है). मिट्टीमें घडा होनेका कर्तव्य – शक्ति नहीं, ऐसा कहते हैं. वह कर्तव्य तो कुंभार करता है, उसमें कर्तव्य शक्ति है, तो उससे घडा होता है.

समयसारमें २७२ गाथामें तो आया कि, कुंदकुंदआचार्य कहते हैं कि, घडा कुंभारसे होता है, ऐसा तो हम देखते नहीं. मिट्टीसे घडा होता है, ऐसा हम तो देखते हैं. कुंभारसे (घडा) होता है, ऐसा तो हम देखते ही नहीं, ऐसा पाठ है. समझमें आया ? आहाहा !

श्रोता : जैनदर्शनकी बात तो आप बताते हैं.

पूज्य गुरुदेवश्री : वस्तुका स्वरूप (ऐसा है). आहाहा ! जैन दर्शन कोई संप्रदाय नहीं. निमित्तसे होता है, यह मान्यता जैन दर्शनकी नहीं. क्योंकि निमित्त पर द्रव्य है और उपादान स्व द्रव्य है.

यहाँ कहते हैं कि, (आत्मामें) अनंतधर्मत्व शक्ति त्वरी है, उसका परिणामन होता है वह अपनेसे (होता है). इसमें कर्ता नामका गुण है और रागका अकर्ता नामका गुण (है). अनंत धर्म आया न ? अकर्ता गुण है. रागका अकर्ता गुण है और आनंद आदिकी पर्यायका कर्ता गुण है. आहाहा ! ऐसा अनंत धर्मका परिणामन करना उसका अर्थ कि, उसमें कर्ता नामकी शक्ति है, वह शक्ति अनंत गुणमें व्याप्त है. (इसलिये) अनंत धर्म शक्तिमें अकर्ता शक्ति आ गई. समझमें आया ? यहाँ तो अनंत धर्म जो है उसके परिणामनमें अनंत धर्म

कारण और धर्मी कारण है. क्या कदा ? समझमें आया ? अनंत धर्म जो है उसकी एक अनंतधर्मत्व नामकी शक्ति है कि जो अनंत धर्मको धारण करती है. और यह अनंत धर्म और अनंत धर्मको धारण करनेवाला धर्मी उसके उपादानमें जो परिणामन होता है, (वह) उस कालमें (ऐसा परिणामन करनेकी) जन्मक्षण होती है. प्रवचनसार १०२ गाथामें (आता है). जन्मक्षण (अर्थात् उस पर्यायकी) उत्पत्तिका काल होता है, तब उत्पन्न होती है – निमित्तसे नहीं.

दूसरी एक बात है. शिद्धविलासमें लिया है, भाई ! निश्चय और व्यवहारका अधिकार लिया है न ? निश्चय (अधिकारमें) ऐसा लिया है कि, होनहार जिस समयमें जो (पर्याय) होनेवाली है – वह निश्चय. उसे निश्चयमें डाला है. समझमें आया ? जिस समय जो पर्याय होनेवाली है वही होगी. आहाहा ! परंतु उसका निर्णय करनेवाला निर्णय कैसे करे ? कि त्रिकाल ज्ञायक स्वभाव (पर दृष्टि करे तब निर्णय होता है). होनहार है परंतु उद्यमसे उसकी प्रतीति आती है. होनहार तो है. जिस समय जो द्रव्यकी पर्यायकी उत्पत्तिका क्षण है, उसी समय उत्पन्न होगी. नियत ही है. होनहार है परंतु उद्यमसे (अर्थात्) पुरुषार्थसे उसका निर्णय होता है. समझमें आया ?

पहले कदा था न ? भगवानने देखा है कैसे होगा, वह तो बराबर है परंतु भगवानने देखा है तो भगवान है कौन ? जिनकी ज्ञान गुणकी एक समयकी पर्याय तीनकाल तीन लोकको प्रत्यक्ष जाने... प्रत्यक्ष जाने, ऐसी एक समयकी पर्यायकी छतनी सत्ता कि, सादी अनंत भूत-भविष्यकी पर्याय अभी हुई नहीं उसे भी ज्ञानकी पर्याय प्रत्यक्ष जाने. ऐसी एक समयकी पर्यायका सामर्थ्य – सत्ता जगतमें है, ऐसा निर्णय कब होता है ? वह (निर्णय) पुरुषार्थसे होता है. क्यों ? कि सर्वज्ञकी पर्यायका अस्तित्व सिद्ध करने जाते हैं, तब अपना स्वभाव (भी) सर्वज्ञ है उस पर दृष्टि जाती है, तब सर्वज्ञकी पर्यायका सत्ताका स्वीकार हुआ. क्योंकि अपना ही सर्वज्ञ स्वभाव है, आहाहा ! (एक समयमें सबको जाननेका स्वभाव) तो पर्यायका हुआ. परंतु (यह) पर्याय हुई कैसे ? सर्वज्ञ स्वभावमेंसे हुई है; तो मैं मेरी सर्वज्ञ पर्यायकी श्रद्धा करने जाऊँ तो मेरा सर्वज्ञ स्वभाव है, उसकी प्रतीति होती है तो सर्वज्ञ पर्यायकी प्रतीति होती है. द्रव्यकी प्रतीति हो, गुणकी प्रतीति हो तो पर्यायकी प्रतीति होती है. सूक्ष्म बात है. समझमें आया ? ७२की सालमें संप्रदायमें बहुत बात यही थी. कितने वर्ष हुआ ? ६१ वर्ष हुआ. ६० और १. संप्रदायमें बड़ी यथा हुई थी.

कोई कहे कि, भगवानने देखा ऐसा होगा. हम क्या पुरुषार्थ कर सके ? ऐसा दो साल तो सुना. यह बात पहलेसे हमको भटकती थी. यहां कलते हैं ऐसी बात नहीं है. उसमें (ऐसा माननेसे) पुरुषार्थका लोप होता है. सर्वज्ञ है, भाई ! यहां तो अनंतधर्म कलते हैं न ? अनंत धर्मकी जिस समय जो सर्वज्ञकी पर्याय उत्पन्न होनेवाली है, वह होगी. परंतु

होगी इसका निर्णय किसे (होता है) ? मेरा सर्वज्ञ स्वभाव है और उनका भी सर्वज्ञ स्वभाव था, इसमेंसे सर्वज्ञ पर्याय आयी है. मेरा (भी) सर्वज्ञ स्वभाव है.

प्रवयनसारमें आया न ? भाई ! प्रवयनसारमें एक शब्द आया है, ज्ञानरूपी असाधारण त्रिकाल स्वभाव उसे कारण(रूपसे) ग्रहण करके पर्यायमें कार्य होता है, ऐसा पाठ है. प्रवयनसार संस्कृत टीका (में है). त्रिकाली ज्ञायकभाव, ज्ञानभाव कारणरूपसे ग्रहण करके (ऐसा) शब्द है न, भाई ? अमृतयंद्रआचार्यकी संस्कृत टीका है. आहाहा ! जिस समय सर्वज्ञकी पर्यायकी प्रतीति करने जाते है तो अपना त्रिकाल सर्वज्ञ ज्ञायक स्वभावको कारणरूपसे ग्रहण करनेसे पर्यायमें प्रतीति और ज्ञान होता है. उसका (यह ज्ञान) पुरुषार्थसे हुआ है. डोनडार (का निर्णय) भी पुरुषार्थसे हुआ है. समझमें आया ? थोड़ी सूक्ष्म बात है. मार्ग बहुत सूक्ष्म है.

लोग बेयारे निमित्तसे होता है (और) बस कुंभारसे घडा होता है, (ऐसी मान्यतामें पडे हैं). पेपरमें भी आया था. उपादानमें अनेक प्रकारकी योग्यता है, परंतु जैसा निमित्त मिले ऐसा कार्य होता है.

श्रोता : कार्यका नियामक निमित्त होता है (ऐसा कहते हैं).

पूज्य गुरुदेवश्री : अरे भगवान ! तेरी यह अनंतधर्मत्व शक्ति है तो तेरी शक्तिमें अनंत धर्म पडे हैं. अनंत धर्म पडे हैं. उसकी एक शक्ति अनंतधर्म है तो उसका परिणामन कैसे होता है ? जैसे अनादिसे तो विकाररूप परिणामन है. अनादिसे तो पर्यायमें विकारका परिणामन है. आहाहा ! उसका अभाव कैसे हो ? और पुरुषार्थ कैसे हो ? कि अनंत धर्मको धरनेवाला भगवान ! (उसकी) निर्विकल्प दृष्टि होकर, इन अनंत गुणको धारण करनेवाले द्रव्यकी जहां श्रद्धा होती है, वहां पुरुषार्थ करते ही पर्यायमें वीर्य भी आ गया. वीर्यने निर्मल पर्यायकी रचना की. यह वीर्य शक्तिका गुण है. अंदरमें वीर्य गुण – स्वभाव है. इस (शरीरका) वीर्यसे पुत्रका जन्म होता है, वह तो धूल है. यहां तो आत्मामें एक बल – वीर्य नामकी शक्ति है कि जो अनंत गुणकी निर्मल पर्यायको रचती है. वीर्य (निर्मल पर्यायको) रचता है. आहाहा ! कब रचना करे ? कि वीर्यमें अनंत गुणका धरनेवाला द्रव्य है उस द्रव्य पर दृष्टि होते (ही) पर्यायमें निर्मलताकी रचना होती है). सूक्ष्म बात है, भाई ! आहाहा !

निमित्त पर दृष्टि हो, राग पर हो और पर्याय पर (दृष्टि) हो तब तक सर्वज्ञ स्वभावका निर्णय नहीं होता. समझमें आया ? सर्वज्ञके ज्ञानमें तो अनंत गुणों भी आये. एक ज्ञानकी पर्यायमें अनंत गुणका ज्ञान आया. अनंत गुणका ज्ञान आया और एक पर्यायमें तबे घटने हुअे कि अनंत, अनंत केवलीको जाने, ऐसी यह पर्याय है. उस पर्यायको धरनेवाला ज्ञानगुण है और उस ज्ञानगुणको धरनेवाला द्रव्य है, आहाहा !

पहले एकबार कहा था कि, गुणसे परिणति नहीं उठती. सारा द्रव्य है इसका जहां

स्वीकार होता है तो सारे द्रव्यमेंसे परिणति उठती है. क्योंकि तत्त्वार्थसूत्रमें 'गुणपर्यायवत् द्रव्य' कहा है. 'पर्यायवत् गुण' ऐसा नहीं कहा. समझमें आया ? पर्यायवत् गुण – ऐसा नहीं कहा. 'गुणपर्यायवत् द्रव्य' कहा है. सूक्ष्म बात है, भाई ! उमास्वामीने तत्त्वार्थसूत्रमें यह बहुत लिया है. (उसमें) है तो व्यवहारप्रधान कथन परंतु उसमें निश्चयकी बात समा दी है. आहाहा ! अंतरमें गुणकी परिणति भिन्न होती है और द्रव्यकी (परिणति) भिन्न (होती है), ऐसा नहीं. आहाहा ! ऐसा कलकर द्रव्य पर दृष्टि देते हैं. यह शक्ति भले हो परंतु शक्ति और शक्तिवान हो का भेद छोडकर, अनंत धर्मको धारण करनेवाली शक्ति (अेक) द्रव्यने धारण की है. इस द्रव्य पर दृष्टि देनेसे अनंत धर्मका शुद्ध परिणामन व्यक्त – प्रगट होता है. सूक्ष्म बात है, भाई ! आहाहा !

दूसरे तरीके से (कहे तो) अनंत धर्म है, ऐसी अेक शक्ति है. अनंत धर्म है, ऐसी अेक शक्ति (है). वेदांत आदि अन्य मतमें ऐसा नहीं है. समझमें आया ? वहां तो अनंत धर्म गिनना, यह भी व्यवहार है और वह जूठ है, ऐसा कहते हैं. अेक ही चीज है. (वेदांत ऐसा) कहते है कि, 'आत्माका अनुभव ? आत्मा अनुभव करे – ये क्या ? यह तो हो बात हो गई. अेकमें हो आया कहांसे ? आत्माका अनुभव – तो (उसमें) अनुभव और आत्मा हो चीज हो गई'. वे हो को मानते नहीं, अेक मानते हैं. अेक ही स्वरूप है, (ऐसा मानते हैं). समझमें आया ?

यहां तो कहते हैं कि, (आत्मा) अेक स्वरूप है. वह अपने पल्ले आ गया. अेक स्वरूपात्मक – "सर्व शरीरोंमें अेकस्वरूपात्मक..." वह रूप वीं शक्तिमें आ गया. सर्व शरीरोंमें अेकस्वरूपात्मक परंतु यह अेकस्वरूपात्मक यह अनंत शक्तिका (अेक) स्वरूपात्मक है. शक्तिवान उपर दृष्टि देनेसे अनंत शक्तिका परिणामन (होता है). द्रव्य स्वभाव भगवान आत्मा ! जिसने अनंत शक्तिको धारण कर रभी है, यैतन्यपना (जिसने) धारण कर रभा है, आहाहा ! जिसने अनंत आनंद धारण कर रभा है, जिसने अनंती ईश्वरता – प्रभुता धारण कर रभी है, जिसने अनंत वीर्य, भेद अपरिमित वीर्य धारण कर रभा है, ऐसा 'धारीति इति धर्म' को धरनेवाला धर्मी, धर्मी माने द्रव्य – (उस पर दृष्टि देनेसे) पर्यायमें धर्म होता है. आहाहा ! सूक्ष्म बात है, भाई !

लोगोंको बाहरसे (धर्म) मानना है. ये व्रत, तप, भक्ति (आदिसे धर्म मानते हैं). वह सब तो शुभभाव है. वह तो वस्तुमें है ही नहीं. उससे अपना कल्याण मानना, वह तो मडा भ्रम और पापंड है. क्योंकि शुभ राग आदि अनंत धर्ममें है नहीं. यह जो अनंतधर्म शक्ति कही, उसमें शुभ राग है नहीं. शुभराग तो पर्यायमें नया उत्पन्न होता है. परके लक्षसे उत्पन्न होता है. द्रव्य-गुणमें विकार करनेकी कोई शक्ति नहीं. द्रव्यकी शक्ति नहीं कि विकार करे और शक्तिकी शक्ति (भी) नहीं कि विकार करे. आहाहा !

श्रोता : (विकार) कहांसे आया ?

पूज्य गुरुदेवश्री : पर्यायमेंसे अद्धरसे (पर्यायकी योग्यतासे) आया. पर्यायकी योग्यतासे षट्कारक परिणामनसे उत्पन्न हुआ. पंचास्तिकाय दूर गाथामें कहां न ? वहां अस्तिकाय सिद्ध करना है तो अस्तिकायमें – पर्यायमें षट्कारक परिणामन करके विकार होता है, ऐसी अस्तिकाय सिद्ध करनी है. अस्तिकाय है न ? परंतु जब अपना त्रिकाल स्वभाव सिद्ध करना है, तब तो वह विकारकी पर्यायका षट्कारकका परिणामन उसमें होता ही नहीं, आटाटा !

अपना त्रिकाली ज्ञायक आनंद स्वरूप प्रभु ! अनंतधर्मत्व शक्तिको धरनेवाला, (उसमें) यह एक शक्ति ऐसी है कि जो अनंत.... अनंत.... गुणोंमें (यह) अनंतधर्मत्व शक्ति व्याप्त है, आटाटा ! बहुत सूक्ष्म, भाई !

(अध्यात्म पंच संग्रह) सवैयामें तो बहुत दिया है. एक गुणमें अनंती पर्याय, अनंती पर्यायमें एक ज्ञानका थट और एक ज्ञानकी पर्यायमें अनंत ज्ञान और उसमें ठठ (ऐसा बहुत दिया है). आटाटा ! समयसार नाटकमें (शक्तिका वर्णन) है परंतु शब्द थोड़े हैं. अध्यात्मपंचसंग्रहमें बहुत है, आटाटा !

यहां तो कहते हैं कि, “विलक्षण...” यहां क्या कहां है ? एक गुणमें दूसरा गुण विलक्षण है. ज्ञानका लक्षण जानना, दर्शनका (लक्षण) देखना, वीर्यका (लक्षण) (स्वरूपकी) रचना करना, अस्तित्वका सत्तारूप रहना, ऐसा प्रत्येक गुण विलक्षण है. कोई गुणका कोई दूसरे गुणमें लक्षण एक होता नहीं. पहला शब्द पडा है. “विलक्षण (–परस्पर भिन्न लक्षण युक्त)” आटाटा ! ऐसी बातें ! अंदर अनंत ज्ञान, दर्शन, आनंद आदि अनंत गुण हैं. परंतु प्रत्येक गुण विलक्षण है. कोई गुणका लक्षण कोई गुणमें जाता नहीं. आटाटा ! प्रत्येक (गुण) भिन्न-भिन्न है और उसका लक्षण भी भिन्न-भिन्न है. आटाटा ! समझमें आया ?

“विलक्षण (–परस्पर भिन्न लक्षणयुक्त) अनंत स्वभावोंसे...” आटाटा ! परस्पर भिन्न लक्षण (अर्थात्) परस्पर प्रत्येकका भिन्न-भिन्न लक्षण, जैसे अनंत स्वभावोंमें – देखो ! (अनंत) धर्म शक्ति लेनी है न ? ऐसा अनंत स्वभाव है.

“...अनंत स्वभावोंसे भावित...” अनंत स्वभावोंसे भावित... आटाटा ! परस्पर गुणका विलक्षण (अर्थात्) एक लक्षण दूसरेमें (लक्षणमें) मिलता नहीं. ऐसा (है) तो अनंत गुण सिद्ध होता है. एक लक्षण दूसरेमें मिश्र हो जाये तो अनंत (गुण) सिद्ध नहीं होते. यहां अनंत धर्मात्मक सिद्ध करना है न ? तो प्रत्येक गुणका लक्षण भिन्न-भिन्न है. ज्ञानका जानना, दर्शनका देखना, आनंदका आल्लाहका, वीर्यका स्वरूपकी रचनाका, जैसे प्रत्येक (शक्तिका) लक्षण भिन्न-भिन्न है. अनंत गुणका लक्षण भिन्न-भिन्न है. क्योंकि भिन्न (भिन्न) अनंत गुण है. तबले द्रव्य एक है परंतु भिन्न-भिन्न लक्षणवाले गुण तो अनंत हैं.

“विलक्षण (–परस्पर भिन्न लक्षणयुक्त अनंत स्वभावोंसे...)” आटाटा ! भगवान

ऐसे विलक्षण गुणसे अनंत स्वभावोंसे (भावित है). गुण कडो कि स्वभाव कडो (अेक ही बात है). “... अनंत स्वभावोंसे भावित...” (अर्थात्) रहनेवाला “... ऐसा अेक भाव जिसका लक्षण है...” अनंत स्वभावका भाव उसका अेक लक्षण अनंतधर्मत्व (है). कडों ऐसा (सुनने मिले) ! (सब ऐसा कहे) दया पावो, व्रत करो, भक्ति करो (तो कल्याण हो जायेगा). आहाहा ! भाई ! तेरी यीज कोई अलौकिक है, नाथ ! मडा रत्नाकर, यैतन रत्नाकर अंदर अनंत गुणका भंडार है. उसकी रागकी अेकताबुद्धिने उस भंडारका तावा बंध कर दिया है. समजमें आया ? राग और विभावकी अेकताबुद्धिमें भजना बंध हो गया है. इस भजनेको भोल ! (यह भजना) कब भुलता है ? कि राग उपरका भी लक्ष छोड दे और पर्याय उपरका भी लक्ष छोड दे ! और स्वभाव और स्वभाववान अेकपने है (उस पर दृष्टि दे). “तं यत्तविहत्तं दाएहं अप्पणो सविहवेण” समयसार पांयवीं गाथामें (आया है). ‘एयत्त’ (अर्थात्) अपने स्वभावसे अेकत्व है और पुण्य-पापके विकल्पसे विभक्त है – भिन्न है. आहाहा !

ऐसा अपना स्वभाव, “... अनंत स्वभावोंसे भावित...” अनंत स्वभावसे रहनेवाला. भावित माने अनंत स्वभावसे रहनेवाला. अेक-अेक शब्दमें (गंभीर भाव भरा है). “...अनंत स्वभावोंसे भावित ऐसा अेक भाव...” आहाहा ! “... ऐसा अेक भाव जिसका लक्षण है...” पहले विलक्षण कडा था – (भिन्न-भिन्न) गुणका लक्षण. परंतु यह शक्तिका तो अेक ही लक्षण है. क्या (कडा) ? कि, ऐसी अनंतधर्म शक्तिका लक्षण अेक है, आहाहा !

(आत्मा) ज्ञान स्वरूप है तो यह समजसे – ज्ञानसे ही प्राप्त होता है. आनंद स्वरूप है तो वह आनंदकी पर्यायसे ही प्राप्त होता है. यह प्रभुत्व शक्तिसे भरा है तो प्रभुत्व शक्तिकी पर्यायसे प्रभुत्वका भान होता है. समजमें आया ? आहाहा ! यह अकर्तृत्व शक्तिसे भरा है तो पर्यायमें रागके अकर्तृत्वकी पर्यायसे अकर्तृत्व धर्मका भान होता है. अत्मोक्ता गुण है तो रागका अत्मोक्ता और अपने आनंदका त्मोक्तासे सारा आनंद स्वरूप है, ऐसा भान होता है. आहाहा ! बहुत सूक्ष्म, बापू ! क्या हो ? लोगोंने मार्गको बिभेर दिया और सत्य बाहर आया तो उसे तोड देते हैं, (कहते हैं) अेकांत है... अेकांत है..., निमित्तसे कुछ होता नहीं और व्यवहारसे निश्चय होता नहीं (यह सब अेकांत है). २० साल पहले तो (कोई) कमबद्ध मानते नहीं थे. अत्मी तो नक्की किया है कि, कमबद्ध है ऐसा अेक पत्रिकामें आया है. कमबद्ध है, ऐसा निर्णय करे तो ऐसा व्यवहारसे निश्चय होता है और निमित्तसे उपादानमें कार्य होता है, यह बात छूट जाती है. बराबर है ? दूसरे लेखमें बहुत विरोध (आया) है. बडा लेख है. (लिखते हैं) ‘अेकांत है, अेकांत है’ कोई दूसरेने लिखा है, ‘ये बडे-बडे सेठ लोग एकट्टे होते नहीं, एकट्टे होकर (कुछ) करो कि, यह धर्म पंथका नाश हो जाता है’ अरे.. भगवान ! (कोई) साधु है (उन्होंने लिखा है). साधु नाम धारण करे और ऐसा विरोध करे ! आहाहा !

यहां शक्तिके वर्णनमें बात यह है कि, शक्तिको धरनेवाला पवित्र और शक्ति पवित्र (है) तो उसकी परिणति भी पवित्र है. उसको यहां गिननेमें आया है. शुभराग आदिका उसमें अभाव है, यह अनेकांत है. निश्चयसे (भी) शुद्धता आती है और व्यवहारसे – शुभसे भी शुद्धता होती है, वह तो मिथ्या अनेकांत है. क्या कदा ? अनेकांत है सही (लेकिन) मिथ्या अनेकांत है.

भोक्षमार्ग प्रकाशकमें सातवें अध्यायमें आया न ? निश्चयाभास और व्यवहाराभास (की बात यही है). वह अधिकार आ गया. अनेकांत भी दो प्रकारके हैं. अेकांत भी दो प्रकारके हैं. अेक सम्यक् अेकांत (और) अेक मिथ्या अेकांत. इस प्रकार अनेकांतके दो प्रकार (हैं). अेक मिथ्या अनेकांत और अेक सम्यक् अनेकांत. आहाहा ! समझमें आया ? निश्चयसे अपनी परिणति अपनेसे होती है. यह निश्चय है और यहां तो व्यवहारको गिननेमें आया ही नहीं. व्यवहारका अभाव है, वही अनेकांत और वही स्याद्वाद् है. समझमें आया ?

पहले २२ बोलमें लिखा है. उसमें देओ ! (८ नंबरका मुद्दा) अेक-अेक शक्तिमें व्यवहारका अभाव है. यही अनेकांत है और यही स्याद्वाद् है. प्रचार करना है न ? यह तो सत्य बात है. छिपानेकी कोई चीज नहीं (है).

श्रोता : गांव-गांव तक पहुंचाना है.

पूज्य गुरुदेवश्री : (मात्र) गांव-गांव (तक पहुंचाना ऐसा नहीं) व्यक्तिगत-व्यक्तिगत पहुंचाना है. आहाहा !

यहां कहते हैं, आहाहा ! “अेक भाव जिसका लक्षण है...” आया न ? “... अनंत स्वभावोंसे भावित ऐसा अेक भाव जिसका लक्षण है ऐसी अनंतधर्मत्वशक्ति” लो ! आहाहा ! यह २७ वीं शक्ति (समाप्त) हुई. इस अेक शक्तिकी पर्याय जब उत्पन्न होती है तो इसमें अनंत शक्तिकी पर्याय साथमें उत्पन्न होती है, आगे-पीछे नहीं. अंदर गुण भी आगे-पीछे नहीं है. अेक साथमें है. पहले ज्ञान है, बादमें दर्शन है, बादमें आनंद है और उसके बाद चारित्र है, ऐसा नहीं है. अेक साथ अनंत (गुण) है तो पर्यायमें भी अेक साथ अनंतकी पर्याय परिणति (उत्पन्न) होती है. इससे यहां अनेकांत कहनेमें आया है. रागका अभाव—व्यवहारका अभाव है, यह स्याद्वाद् (और) अनेकांत है और निश्चयका सद्भाव है, यह सम्यक् अनेकांत है. समझमें आया ? आहाहा ! २७ वीं (शक्ति समाप्त हुई).

(अब) २८ (शक्ति लेते हैं). “तद्द्रूपमयता और अतद्द्रूपमयता जिसका लक्षण है ऐसी विद्द्रुधर्मत्वशक्ति.” आहाहा ! क्या कहते हैं ? पहले १४ बोलमें तत्-अतत् लिया है न ? यहां तो ऐसे लिया है कि, तत् (अर्थात्) आत्मा ज्ञायक स्वभाव वह तत् है और अतत् (अर्थात्) उसमें ज्ञेय स्वभाव नहीं है, वह अतत् है. १४ बोलमें ऐसा लिया. समझमें आया ? तत् (अर्थात्) अपनेमें जो भाव है वह तत्. ज्ञायक – ज्ञायकरूप है, ज्ञान – ज्ञानरूप

है, यह तत्. और ज्ञान रागरूप नहीं, कोई ज्ञेयरूप नहीं (यह अतत्). ज्ञेयमें राग भी आ गया. परज्ञेयरूप नहीं वह अतत्. १४ बोलमें ऐसा लिया.

पंचाध्यायीमें ऐसा लिया है कि, तत्-अतत् वस्तुपने है और परवस्तुपने नहीं, ऐसा भी अर्थ लिया है. यहां १४ बोलमें ज्ञायक और ज्ञेयके बीचमें तत्-अतत् लिया है. यह क्या (कहा) समझे ? अपना ज्ञानस्वरूप अपनेसे है और ज्ञेयसे नहीं, छतना (लेना है). यह ज्ञेय-ज्ञायकके बीचमें तत्-अतत्का वर्णन लिया है. परंतु दूसरी जगह पंचाध्यायीमें ऐसा लिया है कि, जैसे अस्ति है वह तत् (अर्थात्) अपनेसे है – सब गुण अपनेसे हैं. अकेले ज्ञानगुणकी बात नहीं. यहां समयसारके १४ बोलमें ज्ञान और ज्ञेयके बीचमें तत्-अतत् मिलाया है. और एक तत् नाम अपनेसे है. सब गुण अपनेसे है, सारा द्रव्य अपनेसे है और पर द्रव्यसे नहीं, ऐसी विरुद्ध शक्ति उसमें है. समझमें आया ?

(यहां) विरुद्ध शक्ति ली है. देओ ! अन्य मतिको तो कभी यह बात बैठे नहीं. आहाहा ! क्योंकि अनंत द्रव्य है, तो एक द्रव्य अपनेसे है और परसे नहीं, तो उसमें अनंत पर आ गया. अनंत परसे नहीं (है). संक्षेप भाषामें ऐसे लिया है कि, ज्ञान-ज्ञानसे है (और) ज्ञेयसे नहीं. समझमें आया ? बस ! छतना लिया और ऐसे लेना हो तो तत् है (अर्थात्) सारा द्रव्य अपनेसे है (और) सारे पर द्रव्यसे नहीं. यह अतत् (हुआ). दोनों अर्थ छोटे हैं. ज्ञान और ज्ञेयका (भेद) तत्-अतत् में लेते हैं. भगवान ज्ञानस्वरूपी है. वह ज्ञेयका ज्ञान करता है परंतु ज्ञेय उसमें है नहीं. ज्ञेयका ज्ञान होता है, परंतु ज्ञेय उसमें नहीं है. समझमें आया ? ज्ञान – ज्ञानसे है यह तत् और ज्ञेयसे नहीं यह अतत्. ऐसा अर्थ १४ बोलमें लिये है.

पंचाध्यायी आदिमें तत्-अतत्में ऐसा लिया है. परंतु यह नित्य-अनित्य और तत्-अतत्में इर्क क्या ? पंचाध्यायीमें ऐसा लिया है कि, तत् नाम वही का वही है. नित्यमें तो 'यह है' बस छतना (लेना है). परंतु 'वही का वही' है वह तत् (है). यहां पंचाध्यायीमें शक्तिको भिन्न कहा है. नित्य-अनित्यमें नित्य तो कायम है और पर्याय अनित्य है. छतना (उसका अर्थ है). परंतु बादमें तत्-अतत् क्या ? कि कायम है परंतु वही का वही है, वही का वही है – यह तत् (है). समझमें आया ? ऐसी बात है. आहाहा ! यह तो भगवानका – प्रभुका पंथ है. समझमें आया ?

(यहां) कहते हैं कि आत्मामें दो (विरुद्ध) शक्तियां एक साथ हैं, यह है विरुद्ध (शक्ति), विरुद्ध भी एक शक्ति है. अपनेसे है (और) ज्ञेयसे नहीं, यह तो विरुद्ध हुआ. जो है, वह नहीं. वह अपनेसे है (और) परसे नहीं. यह तो विरुद्ध हुआ परंतु ऐसी विरुद्ध शक्ति उसमें है. विरुद्ध उसका एक गुण है. विरुद्ध नामका गुण है, आहाहा ! इस गुणकी पर्याय है, विरुद्ध गुणकी पर्याय है. नित्य-अनित्य जैसे अपेक्षित धर्म है (और) उसकी पर्याय

नहीं (है), ऐसा यह नहीं है. क्या कदा समझमें आया ?

नित्य एक धर्म है. धर्म तो अपेक्षित हुआ. कायम रहनेकी अपेक्षासे नित्य (कदा) परंतु नित्य कोई गुण है और नित्यकी कोई पर्याय है, ऐसा नहीं. जैसे अनित्य एक धर्म है. अनित्य धर्म एक अपेक्षित धर्म है. पलटता है, इस अपेक्षासे अपेक्षित कदा. परंतु अनित्य कोई गुण है और उसकी कोई पर्याय है, ऐसा नहीं. और यह तो गुण है.

विद्वद्ध शक्ति नामका एक गुण है, आडाडा ! वर्तमानमें विद्वद्ध शक्ति तत्पु है और अतत्पु नहीं, ऐसी विद्वद्ध शक्तिका परिणामन है. समझमें आया ? अपने ज्ञानपु ज्ञान रहता है (और) अज्ञानपु नहीं होता. वीतरागता वीतरागपु रहती है और रागपु नहीं होती. आनंदकी पर्याय आनंदपु रहती है – वह दुःखपु नहीं होती. समझमें आया ? आडाडा ! ऐसी बात है. बापू ! वह तत्-अतत् (कदा). अपनेसे (अपनेमें) निश्चयसे परिणामन होता है और व्यवहारसे परिणामन नहीं होता है, वह तत्-अतत् है, आडाडा !

१४ बोलमें तो तत्-अतत् के साथ स्वद्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे अस्ति है और परद्रव्यसे नास्ति (जैसे) ८ बोल लिये न ? उस कारणसे पहले तत्-अतत्में ज्ञान और ज्ञेय संबंधित बात कही. दूसरे गुणके साथ (बात) नहीं कही. एक ज्ञानगुणके साथ (बात कही). क्या कदा, समझमें आया ?

तत्-अतत्में अकेला ज्ञानगुण (अपनेसे) है – ज्ञेयसे नहीं, एतना सिद्ध किया है. बाढमें ८ बोल आते हैं. १४ बोल हैं न ? (उसमें) तत्-अतत्, एक-अनेक, स्वद्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे है (और) परसे नहीं, यह आठ हुआ और नित्य-अनित्य. समझमें आया ? और वहां १४ बोल लिये हैं. स्वद्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे है और परद्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे नहीं है, यह आठ और तत्-अतत् दो, एक-अनेक दो, बारह और नित्य-अनित्य दो. (इस प्रकार) १४ (बोल लिये हैं). आडाडा ! ऐसी सब लंबी बातें हैं. मूलमें अनेक प्रकारके विपरीत शक्य हैं न ? तो उसका निषेध करनेको, शक्यका नाश करनेका अनेक प्रकारका ज्ञान करना पडता है. समझमें आया ? कोई कुछ मानता है, कोई कुछ मानता है, (अंदरमें) विरोध है उसका नाश करनेका स्वभाव है, आडाडा !

श्रोता : एतनी (सब बातें) कहां तक याद रहेंगे ?

पूज्य गुरुदेवश्री : यहां (याद) रहनेकी बात नहीं है, अंदर भावमें उतार देना. आडाडा ! अपना स्वभाव अपनेसे है (और) परसे नहीं. प्रवचनसारमें वहां तक कदा कि, अपने ज्ञानमें अनंत ज्ञेय कोतराई गये हैं, घुस गये हैं, ऐसा आता है. अंदर भिन्नित हो गये हैं. वह तो उसका निमित्तसे कथन है. वह ज्ञेय संबंधीका ज्ञान ही हो गया है. समझमें आया ? आडाडा ! ऐसी बातें (हैं). यारों ओर से सत्य समझमें नहीं आये तो अकांत हो जाता है. और यहां (बाहरमें लोग) अकांत ऐसा कहते हैं कि, आप व्यवहारसे भी मानो निमित्तसे

भी मानो, नहीं तो अंकांत है, असा कलते हैं, आलाल ! और असा कले कल, यह व्रत, तप और लकलत करते हैं, उससे भी धर्म (लोलत) है, असा मानो, नहीं तो अंकांत लो लतल है, असा कलते हैं. आलाल ! शुलरलग तो अधर्म है.

श्रोलत : आलुलकल ललत करनेके ललये अंकदम अंकांत है.

डूक्य गुरुदेवश्री : अंकांत है – सम्यक् अंकांत है. समलमें आया ? आलाल !

ॡड की सालमें डूष डलस थल. कलतने वर्ष लुअे ? ४ॡ (वर्ष लुअे). डयासमें दे कड. लड संडुरदलयमें थे न ? डूडलदडें ३०० धर १ड०० आदडी थे. लडलरी डुरतलषुडल डलदुत थी न ? लडलरे डुरवचनमें तो आदडी.... आदडी.... आदडी.... डकुडेकी लुलतल उलडरते थे. (वलडं) ततुवकी डलत नलकलती थी. अूसी (डलत) कहीं थी नलई. इसललये लूग डलदुत आते थे. (लूग अूसल कलते थे कल), ओलडूडू ! डलडलरलकूे आसडलस केवलकूलन धुड रडल है. संडुरदलयमें भी डुरतलषुडल डलदुत थी न ? यलडं तो दूसरल कलनल है. संडुरदलयमें ॡड (की सालमें) डूष डलसमें अूसल कडल. डडी सलडल (लररी थी). ललडूडूडलतलओ – अेक सालकी ड०-ड० लकलरकी कडलईवलडे डडे सेठ लूग अडलसरलमें डूडे थे. अडलसरलमें सडलते नलई थे तो डूछे गलीमें लूग (डूठते थे). अेक-दे शषुद कले कल, 'कलस ललवसे तीरुथकर गूतुर डंधे वल धरुड नलई. धरुडसे (कलडू) डंधन नलई लूतल. इसललये कलस ललवसे तीरुथकर गूतुर डंधे वल धरुड नलई.' धीरेस कडल, 'शलंतलसे कलें तो वल अधरुड है.' लडलरे अेक गुरुलडलई सलधु थे, उनुहें ठीक नलई लगल. वे थलडल अूसे डूवल गये, लेकलन उनकी कुई सुने नलई. लडलरी डुरतलषुडल अूसी थी (तू) कुई उनकी सुने नलई. वे अूसल डूवले 'लूसरे.... लूसरे...' लूसरे सडलके ? यह श्रुदल नलई यले. अूसल डूवले. लेकलन लूग कुछ सुने नलई. (लडने) कडल 'कलस ललवसे तीरुथकर गूतुर डंधे वल ललव धरुड नलई, अधरुड है.' अेक डलत. और डंयडलडलव्रतके डुरलललड वल आसुव है, धरुड नलई. ४ॡ साल डलदले संडुरदलयमें सलडलमें कडल थल. वसुतू तो यह है, डलडू ! डलरुग यह है. कलस ललवसे डंध लू वल ललव धरुड नलई. धरुड डुरलललड तो अडंध सुवलडलवी है, कुऑंकल लडगवलन आलुल अडंध सुवडूडूी है, उसकल डुरलललड (अरुथलतु) डूकुषकल डलरुग वल अडंध डुरलललड है. वल अडंध डुरलललड डंधकल कलरलल है, अूसल नलई लू सकतल. (अूर) लू डंधकल कलरलल है, वल अधरुड है, वल धरुड नलई. लड दलकलंडर शलसुतुरू डढते थे तो लू लूग लडलरे डुर शंकल नलई करते थे. (लूग अूसल डलने कल) 'डलडलरलकूे लू ठीक लगतल लूगल वल करते लूंगे'. संडुरदलयमें सड देडल थल. आदलडुरललल, ततुवलरुथ रलकलवलरुथक, सडयसलर आदल सड देडल थल. संडुरदलयमें सड देडल थल, आलाल ! लडने कडल, 'डैं यलडं आ गयल लुं इसललये डैं यलडं रलुं, अूसल डैं नलई यलललुंगल. अगर कुई कुछ डुरतलकूलतल करेगल तो डैं तो कललडें लूड दूंगल.' तो लूग डरते थे और अूसल डूवलते थे कल, 'इनुहें कुछ नलई कलनल, नलई तो ये डूडडतल लूड देंगे'.

यहां तो यह कडा कि, महाप्रतके परिणाम यह आसव और बंधका कारण है. और तीर्थंकर गोत्र जिस भावसे बंधे वह भाव अधर्म है.

श्रोता : (वह भाव) धर्म नहीं है, ऐसा कडो लेकिन अधर्म मत कडो !

पूज्य गुरुदेवश्री : पहले ऐसा कडा था कि, वह धर्म नहीं है. बादमें दूसरी भाषामें कडें तो वह धर्म नहीं है यानी अधर्म है, ऐसा कडा था.

यहां कडते हैं कि, अपना स्वरूप जो तत्त्वरूप, ज्ञायकरूप, आनंदरूप है उसकी परिणति आनंदरूप होती है. और अतत् (अर्थात्) परद्रव्यरूप नहीं, परज्ञेयरूप नहीं, परके अभावरूप परिणति होती है, (यह अतत् है). अपने स्वभावकी अस्तिरूप परिणति होती है (और) परके अभावरूप परिणति होती है. यह विरुद्ध शक्ति नामका एक धर्म है.

व्यवहारसे भी (धर्म) डो और निश्चयसे भी धर्म डो तो विरुद्ध शक्ति न रही. इस विरुद्ध शक्तिका अभाव हुआ. क्या कडा समझमें आया ? (ऐसा कडें) तो विरुद्ध शक्ति नहीं रहती. (लेकिन) विरुद्ध शक्ति है, आडाडा ! ज्ञान आनंद स्वरूप भगवान आत्मा अपनेसे है और (पर) ज्ञेय स्वरूप और व्यवहार स्वरूप नहीं है. अतत् (अर्थात्) व्यवहारसे नहीं है. इसदिये विरुद्ध शक्ति नामका एक गुण है. यह गुण है, इस गुणकी परिणति—पर्याय है. नित्य—अनित्य धर्म है उसकी परिणति—पर्याय नहीं है. यह तो गुण है. आत्मामें विरुद्ध नामका गुण है. आडाडा ! यह विरुद्ध (गुण आत्मामें है ऐसी मान्यता) किसको डो ? कि (जो) अनेक (गुण) हैं, ऐसा मानता डो, उसे डो. एक ही है, (ऐसी मान्यतामें) विरुद्ध कहां आया ? समझमें आया ? वेदांत — एक ही आत्मा (मानते) हैं. सर्व व्यापक एक शुद्ध निर्मल आत्मा (मानते हैं). उसमें विरुद्ध कहां आया ? यह तो विरुद्ध है, ऐसा सिद्ध करना है. अपना स्वभाव अपनेसे है और व्यवहारसे और पर द्रव्यसे नहीं, ऐसा विरुद्ध शक्ति नामका गुण है. गुण है (और) गुणकी परिणति भी है. यह विरुद्ध शक्तिकी परिणति, अपने अविरुद्ध स्वभावका परिणामन इसमें राग और परका परिणामन नहीं — यह विरुद्ध शक्तिका परिणामन है. समझमें आया ? आडाडा ! उसमें तो व्यवहारसे नहीं है, ऐसा परिणामन है—ऐसा आया. पर्यायमें व्यवहारका परिणामन नहीं. अपने स्वभावका परिणामन है और व्यवहारका परिणामन नहीं, उसका नाम विरुद्ध शक्ति गिननेमें आया है. तो व्यवहारसे डोता है, यह बात ठीक जाती है. समझमें आया ? व्यवहारका तो अभाव है. यहां व्यवहारकी बात है ही नहीं. यहां तो द्रव्य-गुण-पर्याय तीनों (में) निर्मलकी बात है. शक्तिका वर्णन है न ? शक्ति तो निर्मल है, तो इसका परिणामन भी निर्मल है. यहां विकारका परिणामन गिननेमें आया ही नहीं. इसका अभाव गिननेमें आया है, आडाडा ! समझमें आया ?

“तद्गुणमयता...” भाषा देओ ! तद्गुणमयता. अपने स्वभाव (से) तद्गुणमयता. तद्गुणमयता ऐसा भी नहीं. तद्गुणमयता, तद्गुणमय, है ? आडाडा ! “तद्गुणमयता और

अतद्गुरुपमयता...” अतद्गुरुपमय (अर्थात्) आत्मा व्यवहारसे और पर द्रव्यसे अतद्गुरुपमय है. अतद्गुरुपमय है. (अपनेसे) तद्गुरुपमय है और परसे अतद्गुरुपमय है. अतद्गुरुपमय है (अर्थात्) रागसे बिलकुल परिणामन (नहीं है). और परके सद्भावसे यहां परिणामन (होता है), ऐसा है नहीं, आडाडा ! ओक शक्ति कलकर इसमेंसे बहुत निकाला है.

तद्गुरुपमय अपना निर्मल अनंत धर्म, अनंत गुण उसमें तद्गुरुपमय परिणामन है और ज्ञेय और व्यवहारका अतद्गुरुपमय (परिणामन) है. व्यवहार उसमें बिलकुल तन्मय नहीं है.

श्रोता : फिर बेयारे कर्मका क्या होगा ?

पूज्य गुरुदेवश्री : कर्म तो बहुत दूर रह गये. कर्मके घरमें रह गये. कर्मका तो अभाव है. अतत्त्वमय है. कर्मसे तो अतद्गुरुप आत्माका स्वभाव है. लोग तो कहे कि, कर्मके उदयसे विकार होता है. यहां तो विकार और उदय दोनोंका अतत्त्वमय है. दोनोंका अतत्त्वमय है. आडाडा !

श्रोता : उनका (दोनोंका) क्या होगा ?

पूज्य गुरुदेवश्री : होगा क्या ? (विकार) इसमें रहेगा. (अर्थात्) विकार – विकारमें रहेगा. निविकार परिणामितमें वह आता नहीं. निश्चयमें तो उसको वस्तु ही गिननेमें नहीं आयी. समझमें आया ?

परमार्थसे तो अपनेमें विकारको तो वस्तु ही गिननेमें नहीं आयी है. पर वस्तु तरीके है. क्या कला समझमें आया ? व्यवहार रत्नत्रयका विकल्प – शुभराग वह अपनेमें गिननेमें आया ही नहीं. यह तन्मयमें है ही नहीं. अतन्मयमें है. उसका अभाव है.

यह विरुद्ध शक्ति नामका गुण है. प्रत्येक गुणमें यह लागू होता है. प्रत्येक गुणमें विरुद्ध शक्ति है. समझमें आया ? यारित्र गुण है, यह वीतरागरूप परिणामता है और रागरूप नहीं (परिणामता). आनंद गुण है वह आनंदरूप परिणामता है और दुःखरूप नहीं (परिणामता). ऐसी उसमें विरुद्ध शक्ति है.

“... अतद्गुरुपमयता जिसका लक्षण...” किसका लक्षण ? जिसका लक्षण (माने) किसका ? “... ऐसी विरुद्धधर्मत्व शक्ति.” विरुद्धधर्मत्व (यानी) विरुद्ध धर्मपना. विरुद्ध धर्मपना ऐसी शक्ति है. आडाडा ! इसका बहुत लंबा अर्थ है. अपने भगवान आत्मामें पवित्र अनंत धर्म – गुण है, उससे परिणामित तन्मय है और रागादिका और पर आदिका अतन्मयरूपभाव है. आडाडा ! वस्तु और वस्तुकी पर्यायमें भी (विकार) नहीं. यहां तो पर्यायमें भी (दिया है). अपने अनंत गुणका तन्मय परिणामन होता है और विकार और परका अतन्मयरूप परिणामन होता है. विकार – व्यवहारका परिणामन उसमें अस्तित्वमें है, ऐसा गिननेमें आया ही नहीं. समझमें आया ? बहुत सूक्ष्म बातें, बापू !

यह तो आभीरकी बात है. यहां ४३ वर्ष हुए. यादीस और तीन तो यहां हुए.

જો ચીજ હૈ ઉસકા સ્પષ્ટીકરણ તો બરાબર આના ચાહિયે ન ! બહુત વિરોધ કરતે હૈ તો વિરોધકે સામને બહુત સ્પષ્ટ હોતા હૈ, આહાહા !

વિરુદ્ધ શક્તિકા તત્વ, અપને અનંત ગુણ જો આનંદ આદિ શક્તિ હૈ, ઉસ રૂપ પરિણમન હૈ વહ તન્મય શક્તિ હૈ ઓર રાગ ઓર પરસે નહીં હૈ, ઐસી અતદ્વરૂપ શક્તિ હૈ. રાગરૂપ પરિણમન અપનેમૈં હૈ હી નહીં. ઇસે આત્મા કહતે હી નહીં, આહાહા ! સમજમૈં આયા ? રાગકા પરિણમન અપનેમૈં હૈ, વહ આત્મા હી નહીં. આહાહા ! વહ અનાત્મામૈં જાતા હૈ. પર દ્રવ્યમૈં જાતા હૈ.

(યહ ધર્મ તો) અનાદિ કાલકા હૈ. બિલ્લી હોતી હૈ ન ? (ઉસે) બચ્ચા હોતા હૈ તો (વહ) એક સ્થાનમૈં (ઉસે) સાત દિન રખે. (બાદમૈં) ઉસે સાત દિન ઘુમાયે. ઐસે ઘુમતે-ઘુમતે સાત બાર ઘુમાયે. બાદમૈં (બચ્ચેકી) આંખ ખુલે તબ જગતકો દેખે. (ઉસે ઐસા લગે) ‘આહો ! જગત તો હૈ !’ પરંતુ તેરી આંખે નહીં થી તબ ભી જગત તો થા. તેરી આંખે ખુલી ઓર દેખનેમૈં આયા તો જગત હૈ, ઐસા નહીં હૈ. વૈસે યહ નયા પંથ નહીં, યહ તો અનાદિકા (પંથ) હૈ. વિશેષ કહૈંગે....



અહો ! સમ્યગ્દર્શન મહારત્ન છે. શુદ્ધ આત્માની નિર્વિકલ્પ પ્રતીતિ તે જ સર્વ રત્નોમાં મહારત્ન છે. લૌકિક રત્નો તો જડ છે. પણ દેહ તિન્ન કેવળ શુદ્ધ ચૈતન્યનું ભાન કરીને સમ્યગ્દર્શન પ્રગટે તે જ મહારત્ન છે.

(પરમાગમસાર-૭૯૧)

प्रवचन नं. २५

शक्ति-२८ ता. ०४-०८-१९७७

तद्रूपभवनरूपा तत्त्वशक्तिः ॥२९॥

समयसार, शक्तिका अधिकार है. आत्मामें अनंत शक्तियां हैं. अनंत शक्तिका वर्णन तो कर सकते नहीं तो उसमेंसे ४० और ७ (४७), ऐसी शक्तिका वर्णन किया है. नयमें भी ४७ नय दिये हैं. भैया भगवतीदासज्जने उपादान-निमित्तमें भी ४७ श्लोक दिये हैं. यार घाती कर्मकी प्रकृति भी ४७ हैं. उसका नाश करनेका (यह) उपाय है. समझमें आया ?

यार घाती कर्म है न ? उसकी प्रकृति भी ४७ हैं. भैया भगवतीदासके उपादान-निमित्तके दोहरे भी ४७ हैं. प्रवचनसारमें नय भी ४७ हैं और ये शक्तियां भी ४७ हैं. द्रव्यसंग्रहमें यह बात जैसे उतारी है कि, 'दुविहं पि भोक्खहेउं' द्रव्यसंग्रहमें ४७वीं गाथा है. वहां भी यह वर्णन है. 'दुविहंपि भोक्खहेउं ज्ञाणे पाउणदि जं मुणी णियमा' क्या कहते हैं ? कि, अपना आत्माका अनुभव – निश्चय भोक्षमार्ग ध्यानमें प्राप्त होता है. उपरसे कोई धारणा कर ली हो, वह कोई चीज नहीं है. अपने आत्माको ध्येय बनाकर, विकल्पसे रहित अपनी ध्यान पर्यायमें द्रव्यको ध्येय बनाकर (अभेद दृष्टि करनेसे निश्चय भोक्षमार्ग प्रगट होता है).

रात्रियर्थांमें ध्याता-ध्यान और ध्येयका प्रश्न था. परंतु श्लोकमें ऐसा आया है कि, ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान. उसका अर्थ ऐसा है कि, ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान तीनों आत्मा है. ज्ञेय भी आत्मा, ज्ञान भी आत्मा और ज्ञाता भी आत्मा, आहाहा ! समझमें आया ? कलशटीकांमें ऐसा दिया है कि, ज्ञेय एक शक्ति है, ज्ञान एक शक्ति है और ज्ञाता अनंत शक्ति संपन्न है. भगवान् आत्मा ज्ञाता अनंत शक्ति संपन्न है. ज्ञेय एक शक्ति है और ज्ञान एक शक्ति है. समझमें आया ? सूक्ष्म बात है, भाई !

अंतर भगवान् आत्मा पूर्णानंदका नाथ (भिराजमान) है. यहां तो शक्तिका वर्णन चलता है. परंतु शक्ति और शक्तिवान् ऐसा जिसमें भेद नहीं, ऐसी अभेद दृष्टि करके अंदरमें ध्यानकी अकाग्रता होना, 'मैं ऐसा हूँ - ऐसा नहीं', जैसे विकल्पका भी जिसमें अभाव

है – ऐसा अपना स्वरूप उसके ध्यानमें निश्चय मोक्षमार्ग होता है. ध्यानमें निश्चय स्वआश्रय सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र होता है और ध्यानमें ही व्यवहार मोक्षमार्ग होता है अर्थात् स्वरूप तरङ्क का ध्यान होनेसे जितना स्वआश्रय लिया, उतना दर्शन, ज्ञान, यारित्र निर्मल है. अभी तत्त्व शक्तिमें आयेगा. समझमें आया ? और राग बाकी रहा उसको व्यवहार मोक्षमार्गका उपचार करनेमें आया. ध्यानमें दोनों मार्ग (निश्चय और व्यवहार) प्राप्त होते हैं, समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बात है.

यहां अपने शक्ति चलती है. २८ तो चल गई न ? (अब) २८ वीं (शक्ति लेते हैं). इसमें शब्द थोड़े (हैं) परंतु बड़ा तंडार है. क्या कहते हैं ? सुनो ! “तद्रूप भवनरूप...” आत्मामें ऐसी एक शक्ति है, गुण है, सत्का सत्त्व है, स्वभाव है, तत्त्व शक्ति नामका स्वभाव है. तो उसका स्वरूप क्या ? कि, “तद्रूप भवनरूप...” अपना आत्मा सलज्ज्मस्वरूप, अपना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावमें तद्रूप (है). यहां ये लेना है. अपना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव (लेना है) विकार भी नहीं. अपना द्रव्य-ज्ञायक भाव, क्षेत्र – असंख्य प्रदेशी, काल – त्रिकाल और भाव भी त्रिकाल. ऐसी यीज पर तद्रूप होना, उस रूप परिणामन करना. सूक्ष्म है, भाई ! धर्म कोई अलौकिक बात है. लोगोंने बाहरसे कल्पना कर ली है, वह धर्म नहीं है. वह दान, दया और द्रो-पांय लाभ भयं करे, तो धर्म हो जाये (लेकिन उसमें) धूलमें भी धर्म नहीं. तेरे लाभ तो क्या कोड भयं कर न ! वह तो जड यीज है और ‘जड मेरा है’ ऐसा मानकर देते हैं तो मिथ्यात्वका सेवन करता है.

यहां तो तत्त्वमें तो क्या कहना है ? ‘तद्रूप भवनरूप...’ (अर्थात्) जैसा ज्ञायकभाव स्वद्रव्य है, क्षेत्र असंख्य प्रदेशी (उसे) द्रव्य कडो या असंख्यप्रदेशी क्षेत्रसे कडो (एक ही बात है) और कालसे अपना त्रिकाली सत्त्व काल कडो और उस त्रिकाली भावको भाव कडो. समझमें आया ? तद्रूप भवनरूप – उस रूप परिणामन होना. ‘भवन’ शब्द पडा है न ? आहाहा ! तत्त्व शक्तिका अर्थ ऐसा है कि भगवान आनंद स्वरूप, ज्ञायक स्वरूप, शुद्ध स्वरूप, परम पवित्र, प्रभुत्व शक्ति स्वरूप, ऐसा तत्त्व – वह तद्रूप होना, उस रूप भवन होना, ये तत्त्व शक्तिका स्वरूप है और अपना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे तद्रूप होना उसमें रागका भी अभाव है. थोडा सूक्ष्म है. तद्रूपमें राग नहीं आता. समझमें आया ?

ज्ञायक यैतन्यदल प्रभु ! असंख्य प्रदेश जिसका देश है और उसके देशमें अनंत... अनंत... गुण (रूपी) गांव है और एक-एक गांवमें अनंत बस्ती है वैसे एक-एक शक्तिकी अनंती पर्याय (रूपी) प्रजा है. ऐसे अपना स्वरूप द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव स्वरूप (शुद्ध है). यहां शुद्ध लेना. पर्यायमें राग है वह अपना काल नहीं, आहाहा ! व्यवहार रत्नत्रयरूप होना वह स्वकाल नहीं. वह अपनी स्थिति नहीं. इसमें तद्रूप नहीं आता है. वस्तु स्वरूप बहुत (सूक्ष्म है), भाई ! अभी तो लोग बाहरमें (धर्म मान बैठे हैं). अभी तो निवृत्ति (लेकर)

निर्णय करनेका भी ठिकाना नहीं है. सारा दिन संसार... संसार.... संसार... आहाहा ! अरे.. भगवान ! तुझे कहां जाना है ? आहाहा ! अपने स्वरूपमें तद्रूप होना (है) वहां जाना है.

द्विपयंद्वज्जने ऐसा दिया है, भाई ! द्विपयंद्वज्जने अतत्त्व शक्तिमें परद्रव्य, क्षेत्र, काल, भावका अभाव है, ऐसा दिभा है. तो उसका अर्थ तत्त्वशक्तिमें स्वद्रव्य, क्षेत्र, काल, भावका सदृभा (है). द्विपयंद्वज्जने ज्ञान दर्पणमें (ऐसा दिया है). क्या कहते हैं ? सुनो ! अरे.. ! सर्वज्ञ त्रिलोकनाथ (की वाणी उसमें) जो धर्म (आता है उसे) सुनने अेक भवतारी छन्द और छन्द्राणी – अेक भवमें मोक्ष जानेवाले हैं (वे सुनने जाते हैं). सुधर्म देवलोक, उर लाभ विमान, अेक-अेक विमानमें असंख्य देव हैं. कोई विमान छोटा है (उसमें) असंख्यात देव (हैं). बाकी उर लाभ विमानमें अेक-अेक विमानमें असंख्य देव और जिसको हजरो तो छन्द्राणी हैं, उसमें से अेक छन्द्राणी जो है वह अेक भवतारी है. क्या कहा ? वहांसे मनुष्य होकर मोक्ष जानेवाले हैं. अभी सुधर्म देवलोकमें है. छतनी बाहरकी समृद्धि, छतनी संपदा-ऋद्धि, परंतु अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावमें नहीं, ऐसा सम्यक्दृष्टि मानते हैं और अनुभव करते हैं. समजमें आया ? आहाहा ! सम्यग्दर्शन क्या चीज है !! और सम्यग्दर्शनका विषय (कोई) अलौकिक अद्भुत बात है, भाई ! साधारण छन्सानको पता लग जाये, ऐसी बात नहीं है.

यहां तो कहते हैं, “तद्रूप भवनरूप...” जो आनंदस्वरूप, ज्ञायकस्वरूप, शुद्ध स्वरूप, पवित्र स्वरूप (है उसका) द्रव्यसे, क्षेत्रसे, कालसे, भावसे – उस रूप परिणामन होना. भवन (शब्द) है न ? अकेली शक्ति है, उस शक्तिका स्वरूप ही ऐसा है कि, तद्रूप भवन होना. शुद्ध आनंदरूप, शुद्ध ज्ञानरूप, शुद्ध समकितरूप, शुद्ध चारित्ररूप, शुद्ध प्रभुत्व – ईश्वररूप तद्रूप परिणामन होना – यह तत्त्व शक्तिका स्वरूप है. अरेरे...! ऐसी बातें छन्सानने सुनी भी न हो (और) बाहरकी माथापथी (करते रहते हैं). भगवानके दर्शन किये, मंदिर बनाया और दो-पांच-पचास लाभका भय किया (तो माने कि धर्म हो गया). समजमें आया ?

श्रोता : अभी (धर्म) नहीं होगा (लेकिन) बादमें इसके इलमें हो जायेगा.

पूज्य गुरुदेवश्री : उसमेंसे धूलमें भी (धर्म) नहीं होगा. उसमें दृष्टि मिथ्यात्व है वहां पुण्यानुबंधी पुण्य भी नहीं बंधेगा, आहाहा ! जिसकी दृष्टि शुद्ध चैतन्य स्वरूप, तद्रूप परिणामनकी दृष्टि हुई, और (ऐसा) परिणामन है (वह धर्म है). तत्त्व शक्तिका स्वरूप तद्रूप परिणामनेका है. उसमें जो शुभ राग है उसका तो यहां अभाव गिननेमें आया है. फिर भी शुभराग हो उसमें पुण्य बंध जायेगा. समजमें आया ? भविष्यमें उस पुण्य बंध (का उदय) आयेगा (तो) उस पुण्यको भी छोडकर स्वरूपमें स्थिर हो जायेगा, आहाहा !

अज्ञानीकी दृष्टिमें तो अभी रागकी रुचि है और परवस्तु लक्ष्मी (आदि पर पदार्थ)

पर (प्रेम हैं). अपनी चीजको भूलकर पर के प्रति अधिक प्रेम है, वह तो मिथ्यादृष्टि मूढ जव है. याहे तो वह मंदिरके नाम पर कोउ रूपये पर्च करे (तो भी मिथ्यादृष्टि है). आहाहा ! यहां तो ऐसी बात है, बापू !

श्रोता : (मंदिर बांधवामां) बे उदेश छे. आपना प्रवचन सांभलवा मणे अने मंदिर पण बंधाय जाय.

पूज्य गुरुदेवश्री : (सुनने मिले) तो क्या हुआ ? यहां तो भगवान ऐसा कहते हैं कि, हमारी वाणी सुनने आये तो उसे राग होगा.

कर्ता-कर्म (अधिकारमें) ७४ गाथामें कहा है. आसव कैसा है ? वर्तमान दुःखरूप है. पुण्यके भाव – दया, दान, व्रत, भक्तिके भाव यह वर्तमान दुःखरूप है, और भविष्यमें दुःखका कारण है, आहाहा ! सूक्ष्म बात, बापू ! यह तत्व बहुत सूक्ष्म (है), आहाहा ! ये क्या कहा ? शुभभाव वह वर्तमान दुःखरूप है और उससे पुण्य बंध जायेगा. और उससे वीतरागी वाणी आदिका कदाचित् संयोग मिलेगा तो भी वाणी सुननेमें लक्ष है तो वह राग है.

श्रोता : करना क्या ?

पूज्य गुरुदेवश्री : ये तो कहते हैं, रागसे भिन्न होकर अपना अनुभव करना – यह करना है. आहाहा ! ७४ गाथामें छः बोल हैं न ? उसमें छह बोल ऐसा है, आहाहा ! भगवान आत्मा ! पुण्य और पापके दोनों भाव अशुचि है, जड है. तद्रूप परिणामनमें वह नहीं आता है, ऐसा कहते हैं. समझमें आया ?

तद्रूप शक्तिका स्वरूप है उसमें रागरूप परिणामन आता ही नहीं. आहाहा ! सूक्ष्म है. सूक्ष्म बात है, भगवान ! आहाहा ! यहां कहते हैं कि, शुभभाव अशुचि है (और) भगवान (आत्मा) तो पवित्र परमात्मस्वरूप है. दोनोंका वेदज्ञान करना उसका नाम धर्म है. वह अशुचि है और जड है. शुभ भाव – दया, दान, भक्ति, व्रत, पूजाका शुभभाव जड है. यहां कहना यह है कि, तद्रूप परिणामनमें वह नहीं आता. आहाहा ! भगवान आत्मामें तत्व शक्ति पडी है. तत्व शक्ति है तो इस शक्तिका कार्य क्या ? तत्व शक्ति तो ध्रुव है परंतु उसके परिणामन बिना शक्तिकी प्रतीति कैसे आये ? उसका परिणामन तद्रूप भवनमय (है), ऐसा शब्द है. परिणामनमें आनंदरूप होना, ज्ञातरूप परिणामनमें होना, शान्तिरूप, अकषायरूप, वीतरागभावरूप परिणामन होना, उसे तत्वशक्तिका तद्रूप भवन कहनेमें आता है. रागरूप होना उसका तो यहां अभाव है. आहाहा ! समझमें आया ? वह जड है. वह चेतन नहीं. रागमें चैतन्यके प्रकाशका अंश नहीं है. यह शक्ति है न त्रैया ? यह शब्द है (लेकिन) शब्दमें बहुत गंभीरता है, आहाहा !

परसों कहा था न ? जगत (शब्दमें) कानो-मात्रा बिनाके तीन अक्षर है. ज..ग..त.. जगतकी

व्याख्या क्या हुई ? जगतमें छः द्रव्य हैं, अनंत सिद्ध हैं, अनंत निगोद हैं, जगतमें सब आया. जैसे इस तत्त्व शक्तिमें कितना आया है ? समझमें आया ? थोड़े शब्द हैं, भाई ! (लेकिन भाव बहुत गंभीर है). आहाहा ! तद्रूप भवन – तद्रूप (अर्थात्) अपने स्वरूप पर परिणामन. आहाहा ! शरीररूप तो है ही नहीं, ये तो पर-जड है, मिट्टी-धूल है, आहाहा !

कल जैसा आया है कि, मिट्टीमें कर्तृत्व शक्ति नहीं है कि, घडा बनाये. कर्तृत्व शक्ति कुंभारमें है तो घडा बनाता है. अरे...! भगवान ! तुझे भबर नहीं, प्रभु ! अक-अक परमाणुमें कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण जैसी छः शक्तियां पडी हैं. अक-अक परमाणुमें (जैसी शक्तियां पडी हैं). अक बात तो जैसी ली कि, नरकमें जैसे स्वर्गका सुभ नहीं, नरकमें स्वर्गका सुभ नहीं, स्वर्गमें नारकीका दुःख नहीं, परमाणुमें पीडा नहीं, जैसे भगवानमें विकार नहीं. समझमें आया ? दीपयंदजने जैसा शब्द लिया है. सिद्धांत सिद्ध करनेको जैसा लिया है.

श्रोता : भगवान माने क्या ?

पूज्य गुरुदेवश्री : भगवान आत्मा (की बात है). वे भगवान तो दूर रहे. समझमें आया ? सात नरकमें कहीं स्वर्गके सुभकी गंध नहीं – अभाव है. जैसे स्वर्गमें नरकके दुःखका अभाव है, आहाहा ! जैसे अक परमाणुमें पीडाका अभाव है. जडमें पीडा क्या ? समझमें आया ? जैसे भगवान त्रिलोकनाथ आत्मा उसमें विकार और शरीरका अभाव है. समझमें आया ? आहाहा ! जैसी बातें कहां (हैं) ? कहां पडी है कि मेरा क्या होगा ? कहां जाऊंगा ? भाई ! इस देहकी स्थिति तो २५-५०-६०-७० वर्षकी है. बादमें जाना कहां ? रहना है कि नहीं ? आत्मा तो अनंतकाल रहेगा, तो अनंतकाल कहां रहेगा ? जिसने राग पर रुचि करी है तो भविष्यमें रागरूपी रुचिमें – मिथ्यात्वमें रहेगा. आहाहा ! समझमें आया ? यहां कहते हैं कि, जैसे नरकमें स्वर्गका सुभ (नहीं है). (स्वर्गके सुभकी बात है). आत्माके सुभकी बात है ही नहीं. जैसे सातवी नरकमें, सातवी नरकके कोई नारकीको स्वर्गके सुभका अभाव है, वैसे स्वर्गके देवको नारकीके दुःखका अभाव है, आहाहा ! जैसे अक परमाणुमें पीडाका (अभाव है). जडमें पीडा क्या ? आहाहा ! जैसे भगवान आत्मामें विकारका अभाव है. प्रभुमें – आत्मामें पुण्य और पापके विकारका अभाव है. जैसी बातें हैं, बापू ! क्या हो सकता है ? हन्सान बाहरमें मर गये हैं. ये जैसे, ये शरीर, स्त्री, पुत्र आहाहा ! बडे मकान किये (उसीमें रुक गये).

श्रोता : मरकर कहां जायेगा ?

पूज्य गुरुदेवश्री : कहां जायेगा ? बहुत आदमी मरकर पशुमें जानेवाले हैं. समझमें आया ?

हमारे भागीदार थे. संवत् १९६६ की सालकी बात है. कितने वर्ष हुए ? ६७ (वर्ष

हुआ). दो दुकान थी. (भागीदार) मेरी दुकानमें काम करते थे परंतु मैं तो पहलेसे भगत कहलाता था. छोटी उम्रसे भगत कहलाता था. दुकान पर काम करते थे परंतु (कोई) साधु आये तो हम दुकान छोड़ देते थे. वहीं रहते थे. (एक दिन) शामको आहार करने गये. हमारे (वहाँ) बड़े भाईके भागीदार (और) उनके बड़े भाई मेरे भागीदार थे. दो दुकान थी. हमारे (साथ) कुंवरजीभाई थे. मेरेसे ४ साल बड़े थे. उस वक्त तो सालकी (लगभग) पांच हजारकी कमाई होगी. परंतु बादमें उनकी लोलुपता मैंने देपी कि, ये क्या ? साधु आये (तो कुछ) सुनना, विचार करना (ऐसा कुछ नहीं). रातको आठ बजे दुकान बंद करे. बादमें जाये. साधु गांवमें आये तो रातको आठ बजे जाये. पूरा दिन सामने नहीं देखे. छतनी लोलुपता (कि), 'मैं कमाता हूँ...', 'मैं कमाता हूँ...' 'मैं कमाता हूँ...' उस समय मेरी उम्र २० सालकी थी. उसके पहलेकी बात है. मेरा नाम भगत था तो मेरे सामने कोई बोले नहीं. मेरेसे चार साल बड़े थे (परंतु) बोले नहीं. (हमने कहा), 'भाई ! कुंवरजीभाई ! मुझे ऐसा लगता है कि, हम तो वाशिया-बनिये हैं. दारू-मांस तो खाते नहीं (छसलिये) तुम नरकमें तो नहीं जाओगे. और मुझे तो ऐसा लगता है भाई ! देवलोकमें जानेके तुम्हारे लक्षण नहीं हैं और तुम मनुष्य मरकर मनुष्य बनोगे, ये मुझे दिखता नहीं'. दुकान पर बैठे थे. सुनते थे. मेरे सामने कोई बोले नहीं. (लोग ऐसा कहे) 'भगत है, सुनो'. उसके सामने कुछ बोला नहीं जाता. हमने (आगे कहा), 'देखो ! याद रखो ! मुझे ऐसा भासित होता है कि, तुम नरकमें (तो) नहीं जाओगे, देवलोकमें नहीं (जाओगे), मनुष्यमें नहीं (जाओगे), तुम्हारे लिये पशुका अवतार है'. बादमें मरते समय तो सालकी दो लाखकी कमाई (हो गई थी). बादमें अभिमान बहुत किया था न ! मैंने किया, मैं करूँ, मैं करूँ, ! मरते समय दिमागमें पागलपन हो गया. पागल हो गये और देह छूट गया. आहाहा !

ये बनिये जो हैं, उनमेंसे तो कई पशुमें जानेवाले हैं. क्योंकि धर्म नहीं है और पुण्यके ठिकाने नहीं है. धर्म तो रागसे भिन्न करनेका (ऐसा) सम्यग्दर्शन (रूपी) धर्म तो है नहीं और सख्या संग करना, सख्या श्रवण करना, वांचन करना यह तो पुण्य है. उसके लिये भी समय नहीं. उसे जगतके पापके आडे सारा दिन (हुरसद नहीं मिलती). आहाहा ! मैंने तो मेरे घरका दृष्टांत दिया. (वे तो) हमारे भाई थे - भागीदार थे. अरे..! प्रभु ! भाई ! वह बाहरकी लक्ष्मी - धूल और आबड़ (कीर्ति) साथमें कुछ नहीं आयेंगे. आहाहा ! समझमें आया ?

अरे प्रभु ! उसमें एक बात ऐसी है, तिर्य्य संज्ञी और असंज्ञीकी संख्या बहुत है. समझमें आया ? संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्य्य - पशु और असंज्ञी - मन बिनाके - उनकी संख्या बहुत है. क्यों बहुत है ? कि शास्त्रमें ऐसा लिखा है कि, मनुष्यका भव अनंतकालमें मिले तो भी अनंत बार मिल गया है. और अभी तक उससे असंख्यगुना अनंत बार जब

નરકમાં ગયા છે. અનંત મનુષ્યકા જો ભવ હુઆ ઉસકી સંખ્યાસે અસંખ્યગુના અનંત (બાર) નરકમાં ગયા. મનુષ્ય તો ઉસસે અસંખ્યવે ભાગમાં હૈં. વહાંસે પશુમાંસે નરકમાં જાતે હૈં. સમજમાં આતા હૈ ? ભગવાન સર્વજ્ઞદેવ પરમેશ્વરને ઐસા ફરમાયા હૈ કિ, અનંતકાલમાં અનંત પરિભ્રમણ કરતે હુએ, અનંત કાલમાં મનુષ્ય ભવ મિલે તો ભી અનંત બાર મિલ ગયા. સમજમાં આયા ? મનુષ્ય કે જિતને ભવ કિયે – (અભી તક) અનંત (ભવ) કિયે. એક મનુષ્ય (કા ભવ ઔર) અસંખ્ય નરક (કે ભવ). નરક સમજે ? નારકી. ઐસે મનુષ્યકી સંખ્યાસે અનંત ગુને અનંતે નરકકે ભવ કિયે, તો નરકમાં કહાંસે ગયા ? મનુષ્ય તો બહુત થોડે હૈં. પશુકી સંખ્યા ઇતની (અધિક) હૈ ઔર ઉસમાં ઇતને મનુષ્ય જાતે હૈં. સમજમાં આયા ? આહાહા ! કોઈ બાર એક-એક સમયમાં અસંખ્ય પંચેન્દ્રિય (તિર્યચમાંસે) નારકી ઉત્પન્ન હોતે હૈં. (સભીકી) એક સરીખી સ્થિતિ નહીં હોતી. પરંતુ ઉસી સમય એક સે સાત નરક તક, તિર્યચ મરકર જાતે હૈં. એક સમયમાં અસંખ્ય (તિર્યચ) મરકર નરકમાં જાતે હૈં. ઇતની (તિર્યચકી) સંખ્યા હૈ. તિર્યચકી ઇતની સંખ્યા હૈ. ઇસમાં અનંત બાર આયા તો વહાંસે મરકર પહલી નરકસે સાતવીં નરક પર્યંત તિર્યચ જાતે હૈં. સાતવીં નરક તક જાતે હૈં. આહાહા !

મનુષ્યસે અસંખ્ય ગુના અનંતા ભવ (નરકકા) કિયા (તો) અસંખ્ય ગુના અનંતા કહાંસે આયા ? તિર્યચ-પશુકી ઇતની સંખ્યા હૈ, વહાં ઇતને જીવ જાતે હૈં. પરંતુ ઇસમાંસે ઇતને (બાહર) નિકલતે હૈં (ઔર) નરકમાં ભી જાતે હૈં. એક સમયમાં એક સાથ અસંખ્ય જાયે. (સભીકી) એક સરખી સ્થિતિ નહીં. સમજમાં આયા ? ઐસા સ્વર્ગમાં ભી (હુઆ). નરકમાં અનંત બાર ગયા ઔર અનંત ભવ કિયે, મનુષ્યસે અસંખ્ય ગુના અનંતા (ભવ નરકકે કિયે). ઉસસે અસંખ્ય ગુના અનંતા સ્વર્ગકે ભવ કિયે. પ્રત્યેક પ્રાણીકા અભી તક (ઐસા હુઆ હૈ). એક ભવ નરકકા ઔર અસંખ્ય (ભવ) સ્વર્ગકા. એક નરક (કા ભવ ઔર) અસંખ્ય સ્વર્ગકા (ભવ). ઐસે નારકીકે ભવસે સ્વર્ગકે ભવ અનંત ગુને કિયે. વહાં સ્વર્ગમાં કૌન ગયા ? નારકી તો જાતે નહીં. મનુષ્ય થોડે હૈં. સમજમાં આયા ? ઢાઈ દ્વિપકે બાહર જાનવર-પશુ પંચેન્દ્રિય ઇતને હૈં (વે જાતે હૈં). આહાહા ! કોઈ શુભભાવ હો (તો) સ્વર્ગમાં જાતે હૈં. એક સમયમાં અસંખ્ય (તિર્યચ, સ્વર્ગમાં) ઉત્પન્ન હોતે હૈં. ઇતને તિર્યચ હૈ, (લેકિન કિસીકી ભી) સરખી સ્થિતિ નહીં. સમજમાં આયા ?

યહ ઘબરાને કે લિયે નહીં હૈ. પરિભ્રમણકા ડર હોના, ભવકા ભવ-ભય હોના. ચારોં ગતિમાં દુઃખ હૈ. નરકમાં દુઃખ, મનુષ્યમાં દુઃખ ઔર સ્વર્ગમાં અકેલા દુઃખ હૈ. યહાં તો દૂસરા કહના થા કિ, પ્રત્યેક પ્રાણીને નરકસે અસંખ્યગુના અનંતા ભવ સ્વર્ગમાં કિયે હૈં, ઐસા ભગવાન કહતે હૈં. તો કહાંસે ગયા ? પશુમાં સે (ગયે). સ્વર્ગસે અનંતે નિગોદકે ભવ કિયે. આહાહા ! સ્વર્ગકે જો અનંતે (ભવ) કિયે ઉસસે અનંત ગુના તિર્યચમાં (ભવ કિયે). ઉસમાં નિગોદ વિશેષ લેના. આહાહા ! નિગોદમાં એક શ્વાસમાં ૧૮ ભવ કરતે હૈં. ધ્યાજ, લસુનકી એક કણીમાં અસંખ્ય શરીર ઔર એક શરીરમાં અનંત જીવ (હૈં). એક શ્વાસમાં ૧૮ ભવ કરતે હૈં. જન્મે ઔર મરે,

भरे और जन्मे. स्वर्गके अनंत (भवकी) संप्र्यासे अनंतगुना (भव) वहां किये. आहाहा ! समजमें आया ?

(यहां) कहते हैं, प्रभु ! अकबार भवका अभाव करनेकी बात सुन तो सही ! आहाहा ! प्रभु ! तेरेमें एक तत्व शक्ति पडी है, ऐसा परमात्मा कहते हैं. त्रिलोकनाथ तीर्थकरदेव सर्वज्ञ प्रभु ! केवली महाराज, जिनेन्द्र यंद्र प्रभु ! आहाहा ! ऐसा कहते हैं, नाथ ! तेरेमें एक तत्व शक्ति है न प्रभु ! उस तत्व शक्तिका परिशमन तद्रूप होना. उससे भवका अभाव होता है. आहाहा ! शब्द तो थोड़े हैं परंतु (भाव) बहुत गंभीर है.

“तद्रूप भवन...” यह शब्द पडा है. यहां तद्रूपमें विकार नहीं लेना. यहां शक्तिरूप परिशमनमें विकार है ही नहीं. क्योंकि शक्ति निर्मल है तो उसका परिशमन भी निर्मल ही है. निर्मल शक्तिकी कमवर्ती पर्याय और अकमवर्ती गुण – उसका समुदाय आत्मा है. आत्मा विकारके साथका समुदाय है, (ऐसा नहीं है). उसे यहां गिननेमें आया नहीं, आहाहा !

पहले आया न ? कमरूप-अकमरूप अनंत धर्म समूह जो कुछ जितना लक्षित होता है वह वास्तवमें एक आत्मा है, आहाहा ! इसमें बोल है. एक शक्ति पर २२ बोल लिखे हैं. आहाहा !

यहां कहते हैं कि, प्रभु ! अकबार सुन न ! तेरेमें एक तत्वरूप शक्ति ऐसी है कि, अपना द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप निर्मलरूपसे परिशमन करना, यह तत्व शक्तिका कार्य है. तद्रूप है न ? आत्माका स्वरूप तो ज्ञायक और आनंद है. समजमें आया ? आहाहा ! एक कांटा लगता है तो यीज निकल जाती है, आहाहा ! अरेरे...! ऐसा कहेगा, ‘दुःखता है, दुःखाओ मत’. ऐसा दुःख प्रभु ! कांटेके दुःखसे पहली नरकमें १०,००० वर्षकी स्थितिमें उत्पन्न होता है, उसमें इस कांटेके दुःखसे अनंतगुना दुःख है. उस दुःखको निवृत्त करनेका उपाय यह एक है. भगवान अंदर आनंद स्वरूप, ज्ञान स्वरूप, विद्वान, प्रभुत्व स्वरूप, उस रूप भवन (अर्थात्) उस रूप परिशमन करना, (ऐसा उसका स्वरूप है). आहाहा ! समजमें आया ? बापू ! सूक्ष्म बातें हैं. अभी तो बाहरमें सब धर्मके नाम पर शुभभाव – दया, दान, व्रत और तपकी धर्म मान लेते हैं. (उसमें धर्म मानना) वह तो मिथ्यात्व है.

यहां कहते हैं कि, सम्यग्दर्शनका स्वरूप (विषय) जो अण्ड वस्तु है और (स्वरूप) जिसके ध्येयमें है, उसमें एक तद्रूप नामकी शक्ति पडी है, आहाहा ! “तद्रूप भवन...” आनंदरूप परिशमन होना, ज्ञातापनेका परिशमन होना, सम्यग्दर्शनपनेका परिशमन होना, स्वरूपमें वीतरागताका परिशमन होना, पर्यायमें प्रभुत्व शक्तिका परिशमन आना. आहाहा ! जितनी शक्तियां हैं (उसका) पर्यायमें तद्रूप परिशमन आना, यह तत्व शक्तिका स्वरूप है. ऐसा उपदेश है. अनजाने आदमीने तो कुछ सुना (भी) नहीं हो, कुछ जबर भी नहीं हो, बेचारे मूढपने जिंदगी निकालते हैं. बाहरमें डाह्या – होशियार गिना जाये. डाह्या समजे ?

समजदार और ढोशियार. धूलमें ली (ढोशियार) नहीं है. आडाडा ! प्रभु ! हाथका हथियार अपना गला काटे, वह ढोशियारी किस कामकी ? वैसे जो समजकी ढोशियारी अपने भव बढाये, वह ढोशियारी किस कामकी ? आडाडा ! हमारे तो कुछ गुजराती भाषा आ जाती है. भाषा थोडी समज लेना, आडाडा ! क्या कडा ?

“तद्रूप भवनरूप ऐसी तत्त्व शक्ति”. तत्त्व स्वरूपरूप ढोनेरूप (अर्थात्) अपना तत्त्व जो ज्ञायक और आनंदस्वरूप है, उसका तद्रूप – ढोनेरूप अथवा तत् स्वरूप परिणामन रूप. ‘भवन’ है न ? भवन, आडाडा ! तत्त्व शक्तिका वस्तु स्वरूप ही यह है. तत्त्व शक्ति है यह ध्रुव है. परंतु उसके परिणामनमें उसकी प्रतीति आती है. परिणामन बिना तत्त्व शक्तिकी प्रतीति किसे आये ? समजमें आया ?

आत्मा अतीन्द्रिय आनंदस्वरूप है. परंतु पर्यायमें अतीन्द्रिय आनंदका वेदन आये बिना, ‘यह अतीन्द्रिय आनंद है’ ऐसी प्रतीति कहां आयी ? आडाडा ! ऐसा मार्ग है.

श्रोता : आधी पंक्तिमें तो कुछ समजमें नहीं आया.

पूज्य गुरुदेवश्री : (ये) कहते हैं कि, आधी पंक्तिमें छतना सारा भरा है कि ब्यालमें नहीं आता. बात तो सखी है.

छसमे छस तरह दिया है. क्योंकि शक्तिमें कोई स्वद्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे अस्ति और (परद्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे नास्ति) ऐसा कोई बोल नहीं है. नयमें (ऐसे बोल) है. ४७ नय हैं न ? उसमें स्वद्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव वह अस्ति, परद्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव वह नास्ति, अस्ति-नास्ति, अवक्तव्य, अस्ति अवक्तव्य, नास्ति अवक्तव्य, अस्ति-नास्ति अवक्तव्य ऐसे सात भंग ४७ नयमें हैं. वह ज्ञानप्रधान कथन है. यहां तो दृष्टिप्रधान कथन है. आडाडा ! क्या ढोगा यह ?

यहां तो तद्रूप परिणामन – तत्स्वरूपसे परिणामन (अर्थात्) भगवान आनंद और ज्ञान स्वरूप है, उस रूप पर्यायमें परिणामन ढोना, उस कारणका कार्य आना, कार्यमें कारणकी प्रतीति आना, उसका नाम तत्त्वस्वरूप शक्ति कहनेमें आता है. कार्यसे कारणकी प्रतीति ढोना. कारणमें प्रतीति कहां है ? वह तो ध्रुव है. आडाडा ! आंभे बंध करके यला जायेगा, बापू ! जिसे तत्त्वकी दृष्टिकी ञबर नहीं है, वह मरकर कहां यला जायेगा, बापू ! छस देहका अंक कण साथमें नहीं आयेगा. जाओ ! यौरासीमें रभउनेके लिये ! आडाडा ! परित्रमण और परित्रमणका कारण आत्मामें है ही नहीं, यहां तो ऐसा कहते हैं. आडाडा ! समजनेमें बहुत पुरुषार्थ करना पड़ेगा.

पहले अपने कलशटीकामें आया था. वस्तु कठिन है, अति कठिन है (ऐसा) आया था. मार्ग अति कठिन है. परंतु शुद्ध स्वरूपका विचार करने पर आनंद आता है. विचार करने परका अर्थ ? शुद्ध स्वरूपका ज्ञान करनेसे (अर्थात्) यह शुद्ध यैतन्य है, उसे ज्ञेय बनाकर

ज्ञान करनेसे, (ऐसा अर्थ है). कठिन है, दुर्लभ है, (लेकिन) अशक्य नहीं (है), आडाडा ! परंतु पुरुषार्थ क्या है ? उसकी जबर ही नहीं. “अंधो अंध पलाय” अंधे यले और अंधे दिखवानेवाले भिले (बादमें) गिर जाये कुअमें, आडाडा ! भाई ! प्रभुका मार्ग (कोई भिन्न ही है).

जिनेन्द्र देव परमेश्वर (की वाणी) छन्द और छन्द्राणी जैसे अकावतारी – अक भवतारी सुनने आते हैं, तो वह चीज कैसी होगी ? छन्द और छन्द्राणी (बाहरमें) असंख्य देवके स्वामी (हैं) फिर भी अंतरमें इसका स्वामी (हुं) ऐसा नहीं मानते. आडाडा ! मैं तो तत्त्वस्वरूप पूर्ण आनंदकी पर्याय, गुण और द्रव्यका स्वामी हुं (ऐसा मानते हैं), आडाडा !

किसीने ऐसा विषा है, ये देव छतने-छतने काम-भोग करते हैं. समकित्ती हैं फिर भी ऐसा सब करते हैं कि नहीं ? क्या करें बापू ? तुजे भावूम नहीं, भाई ! सम्यक्दृष्टि धर्मीको राग आता है. लडाईका भी राग आता है, परंतु उस रागका मेरी पर्यायमें (अभाव) है, ऐसी नास्ति मानते हैं. तत्त्वस्वरूपमें वह नहीं है, (ऐसा मानते हैं), आडाडा ! परज्ञेय तरीके उसका ज्ञान करते हैं, आडाडा ! समजमें आये उतना समजना, प्रभु ! यह तो तीन लोकके नाथ जिनेन्द्रदेवका पंथ है. यह कोई पामर प्राणीका पंथ नहीं, आडाडा !

(यहां) कहते हैं, कौंसमें “तत्त्वस्वरूप छोनेरूप...” है न ? भवन शब्द है न ? “तत्त्वस्वरूप छोनेरूप अथवा तत्त्वस्वरूप परिणामरूप...” भवनरूप कछो, छोनेरूप कछो कि परिणामरूप कछो (सब अकार्थ है). भगवान आनंद और ज्ञान स्वरूप है. तत्त्व शक्तिके कारण ज्ञान और आनंदरूप परिणामरूप छोनेसे, द्रव्य, गुण और पर्याय तीनोंमें तत्त्व शक्ति व्याप्ति है. समजमें आया ? ये क्या कछा ? अक (भात) मुश्किलसे समजमें आती है वहां दूसरी कठिन (भात आती है). आडाडा !

भगवान आत्मा ! वस्तु, पदार्थ उसमें तत्त्व शक्ति पडी है. यह गुण है. शक्ति – शक्तिमें (है). यह (शक्ति) पर्यायमें कब व्यापक छोती है ? तत्त्व स्वरूपका पर्यायमें कब परिणामरूप छोता है ? तत्त्व स्वरूप पर दृष्टि पडनेसे परिणामरूपमें तत्त्वरूपी परिणामरूपकी दशा आती है. सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रकी निर्मल दशा (आती है). तब यह तत्त्व स्वरूपकी शक्ति पर्यायमें व्याप्त छुई. आडाडा ! द्रव्य, गुण और पर्यायके नाम नहीं आते छो और छम जैन हैं और छम दिगंबर हैं, (ऐसा मानते हैं). कुछ जबर नहीं है. आडाडा !

प्रभु ! तेरा रूप क्या है ? तेरा स्वरूप क्या है ? यह तो पहले आ गया न ? स्वधर्ममें व्यापक स्वरूप है. राग और परमें व्यापक, ये तेरा स्वरूप है ही नहीं, आडाडा ! समजमें आया ?

(यहां) कहते हैं कि, “तद्रूप भवन...” छतना शब्द है. तद्रूप छोनेरूप (अर्थात्) आनंद और ज्ञायकरूप छोनेरूप. तद्रूप परिणामरूप (अर्थात्) अपना अतीन्द्रिय ज्ञान और आनंद

સ્વરૂપ હૈ, ઉસ રૂપ પરિણમન રૂપ (હોના), યહ તત્ત્વ શક્તિ હૈ. આહાહા ! સમજમ્ આયા ? અરે પ્રભુ ! તૂ સુન તો સહી, નાથ ! તેરી ઋદ્ધિ તો દેખ ! તેરી સંપદા તો દેખ ! તેરેમ્ ક્યા હૈ ! યે (બાહરકી) ધૂલકી સંપદામ્ મોહ કરકે મૂઢ હો ગયા હૈ. સમજમ્ આયા ? તેરી સંપદામ્ ઇતના તદ્દૂપ સ્વરૂપ હૈ - અનંત આનંદ, અનંત જ્ઞાન, અનંત શાંતિ, અનંત પ્રભુતા, અનંત ચૈતન્ય રત્નાકર ભગવાન હૈ, ઉસમ્ એક તત્ત્વ શક્તિ નામકા રતન પડા હૈ. આહાહા ! યહ શક્તિ પડી હૈ તો યહાં તો પરિણમનરૂપ લિયા. ક્યોંકિ 'હૈ', કારણ આત્મા હૈ.

રાજકોટમ્ પ્રશ્ન હુઆ થા ન ? (કિસીને પૂછા થા), 'મહારાજ ! ત્રિકાલી ભગવાનકો આપ કારણ પરમાત્મા કહતે હો, તો કારણ હૈ તો કાર્ય તો આના હી ચાહિયે' એસા પ્રશ્ન કિયા થા. વસ્તુ કારણ પરમાત્મા હૈ ન ? વસ્તુ દ્રવ્ય જો હૈ વહ કારણ પરમાત્મા હૈ. કારણ જીવ કહો, કારણ પરમાત્મા કહો, કારણસ્વરૂપ કહો, કારણ ઈશ્વર કહો (એક હી બાત હૈ). તો કાર્ય તો આતા નહીં. હમને કહા કિ, ભૈયા ! કારણ પરમાત્મા હૈ (વહ) કિસકો (હૈ) ? જિસે પ્રતીતિમ્ આયા ઇસે (કારણ પરમાત્મા હૈ). (કારણ પરમાત્મા) હૈ પરંતુ જિસે પ્રતીતિમ્ આયા નહીં, જ્ઞાનકી પર્યાયમ્ જ્ઞેય અકારણ દ્રવ્ય હૈ, એસા પર્યાયમ્ તો આયા નહીં, તો પર્યાયમ્ આયે બિના 'હૈ' એસા કિસે માનતે હો ? આહાહા ! સૂક્ષ્મ બાત હૈ, ભાઈ ! કારણ પરમાત્મા તો તદ્દૂપ ત્રિકાલ હૈ. યહાં તો પરિણમનમ્ બાત લેની હૈ. તદ્દૂપ હૈ પરંતુ ઉસકી પ્રતીતિ હૈ, ઉસકે જ્ઞાનમ્ હૈ. ઉસકી પ્રતીતિ કિસે હૈ ? જિસે સ્વરૂપકી ઓરકી દૃષ્ટિ કરકે જ્ઞેય બનાકર જ્ઞાન હુઆ ઓર પ્રતીતિ હુઈ, ઇસે કારણ પરમાત્મા હૈ. એસા કારણ પરમાત્મા જિસને માના ઉસે સમ્યગ્દર્શન - કાર્ય હુએ બિના રહે નહીં. સમજમ્ આયા ? એસી બાતે હૈં.

અરે..! કહાં નિવૃત્તિ હૈ ? સારા દિન સ્ત્રી, પુત્ર, કુટુંબ (મ્ જાતા હૈ). જીવકો તો માર ડાલા હૈ. પરકે પ્રેમમ્ સ્વકા દ્વેષ હૈ, ક્યા કહા ? આહાહા ! 'દ્વેષ અરોચક ભાવ' આનંદધનજી શ્વેતાંબર સાધુ કહતે હૈં કિ, (નિજ) સ્વરૂપ રુચતા નહીં ઓર રાગ રુચતા હૈ, (તો) તેરે સ્વરૂપ પર તુજે દ્વેષ હૈ, આહાહા ! સ્વરૂપમ્ નહીં એસા જો રાગ - દયા, દાન, વિકલ્પ આદિ યા હિંસા, જૂઠ આદિ. ઉસ રાગકા રસ હૈ ઓર રાગકા પ્રેમ હૈ ઓર રાગકો જ્ઞેય બનાકર રાગી હોતા હૈ (તો) તુજે જ્ઞાન પર દ્વેષ હૈ. તુજે સ્વરૂપ પર દ્વેષ હૈ, આહાહા ! સમજમ્ આયા ? 'દ્વેષ અરોચક ભાવ' એસા લિયા હૈ. 'સંભવદેવ તે ધુર સેવો સેવે રે, લહી પ્રભુ સેવન ભેદ, સેવન કારણ પ્રથમ ભૂમિકા રે, અભય અદ્વેષ અખેદ' લંબી બાત હૈ. સબ દેખા હૈ. 'ભય ચંચળતા રે પરિણામની..' ભગવાનમ્ પરિણામ જાતે હૈં ઓર ભયભીત હોકર ચંચળતા કરતે હૈં, યે તુજે ભગવાનકા ભય હૈ. 'ભય ચંચળતા રે પરિણામની..' જો પરિણામ અંદરમ્ જાતે નહીં તો તેરે પરિણામમ્ ડર હૈ - તેરે સ્વરૂપકા તુજે ભય હૈ. ભય પરિણામ અંદર નહીં જાકર બાહરમ્ ભટકતે હૈં. એસી બાત હૈ, ભગવાન ! આહાહા !

'ભય ચંચળતા હો જે પરિણામની રે, દ્વેષ અરોચક ભાવ' આહાહા ! અંદરમ્ પ્રવૃત્તિ

કરતે થક જાયે ઉસે ખેદ આ જાયે. અંદરમેં થકાન લગ જાયે. યહ તેરા સ્વરૂપકે પ્રતિ ખેદ હૈ. આહાહા !

તદ્રૂપ ભવન (શબ્દમેં સે) યહ સબ નીકલતા હૈ, સમજમેં આયા ? એક ઘંટા એક (શક્તિમેં) ગયા. ઉસકા ભાવ હૈ ન ? યહ શાસ્ત્ર બોલતે નહીં પરંતુ ઉસમેં ભાવ હૈ કિ નહીં ? આહાહા ! એક શબ્દકે અંદર ઇતના હૈ. આહાહા ! અરે.. ભગવાન ! તેરી એક શક્તિકા ભી (તુજે) ખયાલ નહીં. એક શક્તિકા ખયાલ હો તો અનંત શક્તિકા ખયાલ સાથમેં આયે બિના રહે હી નહીં.

જયસેન આચાર્ય કહતે હૈં કિ, એક ભાવ ભી યથાર્થ જાને તો અનંત ભાવ જાને બિના રહે નહીં. વૈસે એક શક્તિ ભી યથાર્થ જાને તો અનંત શક્તિકા જ્ઞાન હુએ બિના રહે નહીં. વિશેષ કહુંગે...



જેમ રાગની મંદતા તે મોક્ષમાર્ગ નથી. જેમ વ્યવહાર સમ્યગ્દર્શન તે મોક્ષમાર્ગ નથી કે મોક્ષનું કારણ નથી તેમ તેની સાથે રહેલું પરસત્તાવલંબી જ્ઞાન પણ મોક્ષમાર્ગ નથી કે મોક્ષનું કારણ નથી. સ્વસત્તાને પકડવાની લાયકાતવાળું જ્ઞાન જ મોક્ષનું કારણ છે. જ્ઞાનાનુભૂતિ – આત્માનુભૂતિ એ જ મોક્ષનું કારણ છે.

(પરમાગમસાર-૩૨૭)

પ્રવચન નં. ૨૬

શક્તિ-૨૯, ૩૦ તા. ૦૫-૦૯-૧૯૭૭

તદ્રૂપભવનરૂપા તત્ત્વશક્તિ: ॥૨૯॥
અતદ્રૂપભવનરૂપા અતત્ત્વશક્તિ: ॥૩૦॥

સમયસાર શક્તિકા અધિકાર હૈ. આત્મામેં (એક) તદ્રૂપ શક્તિ (હૈ). યહ ચલતી હૈ ન ? કલ ચલા થા. કલ તો એક ઘંટા ચલા થા. ક્યા કહતે હૈં ? કિ યહ ભગવાન આત્મા ધ્રુવસ્વરૂપ ચિદાનંદ ઉસમેં એક તત્ત્વ શક્તિ હૈ. તદ્રૂપ હોના યહ તત્ત્વ શક્તિ (હૈ). ઇસકા અર્થ (ક્યા ? કિ) ચૈતન, આનંદ, જ્ઞાન શુદ્ધ સ્વરૂપ હૈ, ઉસમેં ઇસ ચૈતન્યસ્વરૂપકા તદ્રૂપ ભવન – પરિણમન હોના. તદ્રૂપ સ્વરૂપ – ચૈતન્યકા ચિદાનંદ, આનંદ, શાંતિ, વીતરાગતા સ્વરૂપ (હૈ) ઉસ સ્વરૂપકા ભવન, ઉસ સ્વરૂપકા હોના, પરિણમન હોના, ઉસકા નામ તત્ત્વ શક્તિ હૈ, આહાહા !

પાઠ હૈ ન ? “તદ્રૂપ ભવન...” તત્ત્વરૂપ – જો સ્વરૂપ ભગવાન આત્મા ! ચૈતન્ય ઔર આનંદ જિસકા સ્વરૂપ હૈ, રૂપ હૈ, સ્વ..રૂપ હૈ, અપના રૂપ હૈ, આહાહા ! ઉસ ચૈતન્યરૂપકે પરિણમનમેં રાગરૂપ નહીં હોના, યહ અતત્ત્વ શક્તિમેં આયેગા. યહાં તો ચૈતનરૂપકા આનંદરૂપ પરિણમન હોના, આહાહા ! ભગવાન સર્વજ્ઞ પરમાત્મા(મેં) જો અપની તત્ત્વશક્તિ થી, ઉસ કારણસે ઉસ રૂપ પૂર્ણ પરિણમિત હો ગયે ઔર પૂર્ણ પરિણમન હોકર સર્વજ્ઞ, સર્વદર્શીપના આ ગયા. ઉન ભગવાનકે શ્રીમુખસે જિનેન્દ્રવાણી ઐસી નિકલી કિ, તુમ ભી ક્યા હો ? સમજમેં આયા ? કિ, તત્ત્વશક્તિરૂપ તેરી ચીજ હૈ, આહાહા !

શરીર(રૂપ) હોના, વહ તો હૈ નહીં. વહ તો જડ, મિટ્ટી, ધૂલ હૈ ઔર ઉસ શરીરકી ચલને-ફિરનેકી ક્રિયા હોતી હૈ, વહ જડકી ક્રિયા હૈ – આત્માકી નહીં, આહાહા ! ઉસમેં દયા, દાન, વ્રત, ભક્તિ આદિકા પરિણામ હોતા હૈ, વહ ચૈતન્યરૂપ નહીં. વહ તો જડરૂપ હૈ. આહાહા ! કઠિન બાત હૈ, સમજમેં આયા ?

જિસે સમ્યગ્દર્શન પ્રાપ્ત કરના હો તો વહ કેસે પ્રાપ્ત હોતા હૈ ? કિ આત્મા તત્ત્વરૂપ-તદ્રૂપ જો અનંત આનંદકંદ સ્વરૂપ પ્રભુ હૈ, ઉસમેં “તદ્રૂપ ભવન...” (ઐસી તત્ત્વ શક્તિ હૈ).

आनंदरूप परिणामना, ज्ञानरूप होना, शांतिरूप वेदन होना, सुभका वेदन होना, ईश्वर शक्ति जो है उसका भी ईश्वरपनाका परिणामन होना, उसे तद्रूप भवन (रूप) तत्त्व शक्ति कलनेमें आती है. ऐसी बातें कभी सुनी न हो उसे मुश्किल पडता है. आहाहा !

अक तो अनादिसे बाह्य क्रियाकांडमे रूक गया. इसमें (से) भी निकलकर पुण्य और पापके भावमें रूक गया. आहाहा ! यह उसका स्वरूप नहीं. दया, दान, व्रत, भक्ति, तपस्या, अपवास आदि तप करते हैं न ? वह सब विकल्प हैं, राग है. भगवान ! तुझे भबर नहीं. आहाहा ! इस रागरूप होना यह तद्रूप नहीं, आहाहा ! ऐसा मार्ग सुनना (समजना) भी कठिन पडे. (ऐसी बातें) यत्ने नहीं. बाहरमें यह बडी तकरार चलती है कि, ये दया, दान, व्रत, तप करते हैं, ये शुभ (भाव) शुद्धताका कारण है. शुद्धताका कारण है.

यहां तो कहते हैं कि, प्रभु ! तेरे घरकी यीज अक बार सुन तो सही. आहाहा ! तेरा स्वरूप नाथ ! भगवत् स्वरूप तेरा है. भग नाम ज्ञान और आनंदकी लक्ष्मीसे भरी पडी तेरी यीज है. इसमें अक तत्त्व शक्ति नामका गुण है कि, जो गुण – गुणीकी (द्रव्यकी) दृष्टि करनेसे – गुण और गुणीका भेद भी लक्षमेंसे छोडनेसे (उसका परिणामन होता है). यह सब (सुनने) बाहरके कामके आडे कुरसद नहीं निकालता. अपने लिये कुरसद ली नहीं. (भुदको) मार डाला.

सभेरे आया था न ? २८ श्लोक यला था. बहुत अश्रुण यला था. किसीने कहा कि, अहो ! यह तो दिव्यध्वनि निकली ! क्या कहते हैं ? प्रभु ! अक बार सुन तो सही, नाथ ! तेरी यीज अतीन्द्रिय आनंद और अतीन्द्रिय ज्ञानसे भरी है, नाथ ! उसे दया, दान, व्रत आदिके परिणाम जो हैं, उसके प्रेममें तेरी यीजको तुने मृत्यु तुल्य कर दी है, आहाहा ! अरेरे...! ये सुनने भिले नहीं, वह कब प्रयोग करे ? आहाहा ! यह मनुष्य देह भवाब्धिमें – यौरासीके अवतारमें यला जायेगा, आहाहा !

(यहां) कहते हैं, नाथ ! अक बार तेरी ऋद्धि, तेरी संपदा (की ओर नजर तो कर !) आहाहा ! (कि) तेरी यीजमें छतनी संपदा पडी है ! उसमें तत्त्व शक्ति नामकी अक संपदा है, आहाहा ! और अक शक्तिमें भी अनंती संपदा – ताकत है, आहाहा ! ऐसी-ऐसी, अंदर अनंती शक्तिकी संपदासे भरपूर भगवान तू पडा है, आहाहा ! कहां नजर करे ? कुछ सुने नहीं (और) वैसे के वैसे धर्मके बहाने ये व्रत किया, अपवास किये और (माना कि) धर्म हो गया. धूलमें भी धर्म नहीं. सुन तो सही, आहाहा !

परमात्मा जिनेन्द्रदेव ऐसा कहते हैं कि, तद्रूप भवन यह तेरी शक्ति है. तेरा सामर्थ्य ही ये है. तेरे पुरुषार्थमें सामर्थ्य यह है. क्योंकि तत्वरूप होना उस पुरुषार्थकी शक्तिमें भी तत्त्व शक्तिका रूप है. यह तत्त्व शक्ति कही (उसमें) कल अक पंक्तिमें अक घंटा यला था. अपार भाव भरे हैं, आहाहा ! भगवान ! तेरे अंदर जो वीर्य नामका गुण है, उसमें

तत्त्व शक्तिका रूप है. आहाहा ! अर्थात् अपना पुरुषार्थ शुद्धरूप परिष्कृत करना, ऐसा उसमें रूप है. दया, दान, व्रतरूप परिष्कृत करना यह तेरा रूप नहीं, यह तेरा स्वरूप नहीं, आहाहा ! ऐसी बातें ! भगवान ! एक बार सुन तो सही, आहाहा ! अरे..! आचार्य तो 'भगवान' कहकर बुलाते हैं !

(समयसार) ७२ गाथा में 'भगवान आत्मा' (कहा है). आहाहा ! (बालककी) मां जूले में जूलाते समय उसकी प्रशंसा करती है (ताकी बालक) सो जाये. (मां कहती है कि) बेटा ! 'तू ऐसा है, तू ऐसा है' कहते हैं न ? गीत गाते हैं न ? 'पाटले बेसीने नाघो' ऐसा हमारे गुजराती में (है). आहाहा ! (ऐसे) प्रशंसा करते हैं तो वह सो जाता है. अव्यक्तरूपसे भी उसकी प्रशंसा (उसे) प्रिय है. अगर गाड़ी दोगे तो नहीं सोयेगा, ऐसा देख लेना. एकबार (ऐसा कहोगे) कि, 'भारा रोया सूँठ जा' तो नहीं सोयेगा. समझ में आया ? क्योंकि उसे अव्यक्तरूपसे भी प्रशंसा प्रिय है तो इन गुणोंकी बात प्रिय न हो ! अरे भगवान ! (ये क्या है) ? आहाहा ! तुम आनंद स्वरूप हो नाथ ! प्रभु ! तुम चैतन्यकी यमत्कारी शक्तिसे भरा पडा है न ! आहाहा ! तत्त्व शक्तिके शरणा बिना तू राग, दया, दान और व्रत (आदि) परिष्कृतके प्रेम में पडा है (तो) तेरी चीजको तुने मरणा तुल्य कर दिया. आहाहा ! 'मैं ऐसा हूँ ही नहीं, मैं तो दया पालनेवाला, व्रत करनेवाला,' (ऐसा माना है). (परंतु) वह तो सब विकल्प और राग है, आहाहा ! रागके प्रेम में प्रभु तेरी लक्ष्मी छूट गई. तेरी चैतन्य शक्ति तद्रूप होना, आनंद और ज्ञानरूप (भवन) – तद्रूप भवन (होना, वह तत्त्व शक्तिका स्वरूप है). (अपना) स्वरूप जो शुद्ध चैतन्यघन, आनंदकंद (स्वरूप है), उस आनंदरूप भवन (अर्थात्) होना (परिष्कृतना) यह तेरी शक्ति है. अरे..! ऐसी बातें !

(लोग) कहे, व्रत करो, अपवास करो, योवीयार करो, रात्रिको आहार नहीं करो, (ये जाना और) ये नहीं जाना (तो) हो गया धर्म ! धूल भी नहीं है, सुन न ! समझ में आया ? राग यह तेरा स्वरूप नहीं परंतु (लोग उसे) राग नहीं मानते. धंधा करना, स्त्रीके समागम में आना, इसे राग (मानते हैं). परंतु इस रागकी उसे ખબर नहीं है. समझ में आया ? आहाहा ! व्रत करना, अपवास करना, भक्ति करना यह सब राग भाव हैं. भाई ! तुझे ખबर नहीं, आहाहा ! प्रभु ! तेरे स्वरूप में यह चीज नहीं. आहाहा !

श्रोता : तो क्या करना ?

पूज्य गुरुदेवश्री : करना ये. (शुभ राग) भीय में आ जाये परंतु हेयबुद्धिसे आ जाये. समझ में आया ? उपादेयबुद्धि करनेसे आत्मा हेय हो जाता है. क्या कहा ? यह शुभ क्रिया – शुभ रागको उपादेय माननेसे—आदरणीय माननेसे भगवान चिदानंदरूपका अनादर हो जाता है – हेय हो जाता है, आहाहा ! राग हेय है उसको उपादेय माननेसे सारा चिद्रूप – तद्रूप भगवान आत्मा उसका तेरी दृष्टि में अभाव हो जाता है. समझ में आया ?

सबेरे आया था न ? मरझको प्राप्त होता है. आहाहा ! अमृतयंद्रआचार्यका कलश और राजमल्लजकी टीका (में आया था). भगवान ! तेरा जवन तो अंदर आनंद और ज्ञानमय है. जवन शक्तिसे शुरु किया है न ? इस जवन शक्तिमें तत्त्वरूप शक्तिका रूप है और तत्त्व शक्तिमें जवन शक्तिका रूप है. इस अेक-अेक शक्तिमें अपार बात है, आहाहा !

यह तत्त्वशक्ति तद्रूप भवन (स्वरूप है). इसमें जवन शक्तिका रूप है. इसलिये तत्त्व जो ज्ञानानंद स्वभाव उस रूप परिष्कामन करना और उस तरह जिना, यह तेरा जवन है. शरीरसे जिना और रागसे जिना, यह तेरा जवन – तेरा रूप ही नहीं, आहाहा ! भाषा तो देओ ! ओहोहो ! अमृतयंद्र आचार्य द्विगंबर संत (है). (उनके) अेक-अेक शब्दमें (गंभीरता है). ‘तद्रूप भवन’ बस ! धतनेमें (कितना भरा है !) “तद्रूप भवनरूप...” है ? आपके हिसाबकी किताबमें यह नजरमें आये औसा नहीं है. कुछ हाथमें आये औसा नहीं है. आहाहा !

यहां तो कहते हैं कि, प्रभु ! तद्रूप-तेरा रूप क्या ? रूप कहां कि स्वरूप कहां (अेकार्थ है). तेरा अपना रूप क्या ? क्या राग तेरा रूप है ? दया, दान, व्रत, विकल्प यह तेरा स्वरूप-रूप है ? शरीर – धूल, मिट्टी यह तेरा स्वरूप है ? आहाहा ! भगवान ! तेरा स्वरूप तो अनाकुल आनंदकी रचना करे औसा वीर्य और अनाकुल (आनंदकी) रचना करे, औसी तत्त्व शक्ति, तेरा तत्त्वरूपका भान होना – यह तेरी शक्ति है (स्वरूप है), आहाहा !

लोगोंको यह समझमें नहीं आये इसलिये बेयारे भुदका विरोध करे. परका (विरोध) कौन करे ? भाई ! समझमें आया ? हमने तो कभी मंदिर बनाओ, यह भी नहीं कडा. अभी कडा कि शास्त्र और पुस्तकें करो कि, जिससे लोगोंके पास जाये तो (कुछ) समझे. समझमें आया ? आहाहा ! अरे...! ये श्रीष्टी लोग अेक रूपयेका पुस्तक हो तो यार पैसेमें देते हैं. श्रीष्टी लोग यार पैसे – अेक आनेमें देते हैं. अेक रूपयेकी थीज यार पैसेमें (देते हैं). प्रयार करनेके लिये (देते हैं). तो अभी तो यह सत् शास्त्रोंका प्रयार करनेका काल है, भगवान ! आहाहा !

भगवान आत्मा ! यहां “तद्रूप..” शब्द पडा है न ? तत् रूप – तो उसका तत् नाम उसका रूप (क्या) ? उसका रूप तो अतीन्द्रिय आनंद, अतीन्द्रिय ज्ञान, अतीन्द्रिय श्रद्धा, अतीन्द्रिय शांति, अतीन्द्रिय स्वच्छता, अतीन्द्रिय प्रभुता आदि अनंत शक्तियां जो हैं – यह तद्रूप आत्मा है. आहाहा ! समझमें आया ?

संप्रदायकी दृष्टिमें तो यह बात कहीं है नहीं. इसलिये लोगोंको (यह बात) सुनने पर औसा लगे कि, ये कहां नया धर्म निकाला ? ये कोई नया धर्म निकाला होगा ? नया धर्म निकाला है ? अरे प्रभु ! नया नहीं है, प्रभु ! अनादिका वीतराग जिनेन्द्र प्रभुका यह मार्ग है. यह लुप्त प्रायः हो गया है. आहाहा ! मार्ग तो मार्ग है. परंतु दृष्टिकी विपरीततासे

मार्ग लुप्त हो गया, आहाहा ! जिसमें अनंत आनंदका नाथ दृष्टिमें न आये, जिसमें अनंत अतीन्द्रिय ज्ञान-आनंदका स्वरूप ज्ञानकी पर्यायमें न आये, वह क्या किया है ? (अर्थात् वह किस कामका ?) समझमें आया ? बाकी तो बाहरकी यह धूल पांय-पयीस करोड वह सब शून्य है. आहाहा ! लजपति, कोडपति और अबजपति (सब धूल हैं). तेरी यीज क्या है ? यह तेरा स्वरूप है ? आहाहा ! दया, दानका राग करता है, ये तेरा स्वरूप है ? आहाहा !

आहाहा ! यैतन्य प्रकाशका नुर ! यमत्कारी यैतन्य जिसकी अेक समयकी पर्यायमें तीन काल-तीन लोक जाननेमें आये, ऐसी पर्यायका पींड ज्ञान यमत्कार (स्वरूप) वस्तु, यह उसका रूप है. अतीन्द्रिय सुभ और आनंद उसका रूप है और अतीन्द्रिय शांति, यारित्र यानी अतीन्द्रिय वीतरागता, यह उसका रूप है. आहाहा !

प्रभु ! “तद्रूप भवन...” छतने शब्दमें तो कितना भर दिया है ! द्विगंबर संतोंकी वाणी – रामबाण वाणी है. कभी प्रेमसे सुना नहीं. यह वाणी मिली नहीं और मिली तो प्रेमसे सुनी नहीं, आहाहा ! यह तो सूक्ष्म बात है, सूक्ष्म है... ऐसा है और वैसा है, ऐसा करके निकाल दिया. आहाहा ! यहां कहते हैं, तद्रूप भवन अर्थात् कौंसमें दिया है. येतनका येतनरूप होना. “...येतन येतनरूपसे रहता है, परिष्कामित होता है.” क्या ? ज्ञान स्वरूपी भगवान, ज्ञानका समुद्र भर है. जैसे समुद्रके किनारे बाढ आती है, तो वह समुद्रके पानीकी बाढ आती है. ऐसे भगवान आत्मामें अतीन्द्रिय ज्ञान और आनंद पडा है, तो इस पर दृष्टि करनेसे पर्यायमें आनंद और ज्ञानकी बाढ आती है, समझमें आया ? यहां तो ऐसी बातें हैं, भाई ! आहाहा !

अरे...! दृष्टियामें ऐसा लगे, ‘वाडा बांधी बेठा रे, पोतानो पंथ करवा ने’ यह मार्ग ऐसा नहीं. संप्रदायका नाम धराये, ‘हम ऐसे है और ऐसे है’ अरेरे...! प्रभु ! तेरा रूप तो आनंद कंड है नाथ ! तुजे भबर नहीं. तेरी दृष्टिमें यह आनंदरूप आया नहीं. तेरी ज्ञानकी पर्यायमें द्रव्य स्वभावका ज्ञान हुआ नहीं, आहाहा ! अनादिसे लौकिक ज्ञान करके तो भर गया. अरे...! शास्त्र ज्ञानसे भी आत्मा जाननेमें आता नहीं, आहाहा !

तद्रूप भगवान आत्मा ! आत्मा और तद्रूप यानी उसका स्वरूप. ज्ञान, आनंद, शांति, स्वच्छता, अनंत शक्तियां वही उसका स्वरूप (है). उस स्वरूपरूप भवन, भवन नाम होना. आहाहा ! यैतनका स्वभाव यैतन्यके स्वभावरूप परिष्कामनमें होना, यह तत्त्व शक्तिका स्वरूप है, आहाहा !

डया ताड़ उडापण त्यारे कहीअे, ऐसा आया था न ? अेक बार कडा था, आहाहा ! बहुत साल पहलेकी बात है. संवत १८६४ की सालकी बात है. हम दुकान पर (बैठते थे). हमारी दुकान तो बहुत प्रसिद्ध थी. दो दुकानें थी (और) स्थानकवासीमें हम मुष्य थे. इसदिये स्थानकवासीके कोई साधु आये तो हमारे यहां ठहरते थे. उस वक्त हमारी १८

वर्षकी उम्र थी. लड़क्यके स्टेशनके सामने धर्मशाळा है. वहां साधु उतरें थे. (हमको) जबर नहीं कि, कहां उतरें थे ? तो गांवमें दूँढा. समय तो बहुत था तो हम भीराबाईका नाटक देखने गये. (अक) डायलाग धोणशा वांकानेरवाले थे. वे नाटक करते थे और उसका पैसा लेते थे. वे मरते (समय) असा बोले. 'डाह्या तारुं उहापण त्यारे अमे कहीये के अत्यारे शांतिथी देह छोड तो' वह नाटक किया और उसका पैसा लिया (वह कोई उहापण (होशियारी) नहीं है). आहाहा !

असे यहां परमात्मा कहते हैं कि, तेरा उहापण—होशियारी तो तब कही जाये कि, निर्विकल्प आनंदको प्रगट करे तो तेरी होशियारी कहनेमें आती है, आहाहा ! समजमें आया ? बाकी तेरी होशियारी संसार बढायेगी. पैसा साथमें नहीं आयेगा. दानमें पैसे भर्य किये हो तो साथमें कुछ आयेगा कि नहीं ? पुण्यके परमाणु बंध जाये तो परमाणु साथमें आयेंगे. उसमें आत्मामें क्या (आया) ? समजमें आया ? कोई दान किया हो, २-५-१० लाभ भर्या करके राग मंद किया हो तो पुण्य – शुभभाव (बंधे). अशुभभाव तो यला गया. वहां परमाणु पडा रहा तो साथमें परमाणु आयेंगे. परिणाम तो नहीं आयेगा, आहाहा ! तो कहते हैं कि, भगवंत ! अक बार सुन तो सही, नाथ ! आहाहा ! अरे...! तेरी लक्ष्मीकी, तेरे स्वरूपकी तुझे जबर नहीं, आहाहा !

यहां तो कहा कि, "तद्रूप भवनरूप असी तत्त्व शक्ति. (तत्स्वरूप होनेरूप अथवा तत्स्वरूप परिणामरूप...)" यह भवनकी व्याख्या कही. "(...असी तत्त्व शक्ति आत्मामें है. इस शक्तिसे येतन येतनरूपसे रहता है – परिणामित होता है.)" आहाहा ! तत्स्वरूप रूप परिणामन नाम येतन येतनरूपसे परिणामन करे. पर्यायमें येतन, आनंद और ज्ञानरूपी दशा, यह येतन्यकी दशा (है). रागरूप होना यह येतनकी दशा ही नहीं, यह येतनका रूप भी नहीं, आहाहा ! समजमें आया ? यह शक्ति कल भी यली थी और आज आधा घंटा यली. कल तो अक घंटा यली थी.

अब, अतत्त्व (शक्ति लेते हैं). क्या कहते हैं ? "अतद्रूप भवनरूप..." अर्थात् राग रूप न होना, पुण्यके परिणामरूप न होना, पर द्रव्य, क्षेत्र, भाव रूप न होना समजमें आया ? तत्त्व शक्तिमें अपना निर्मल द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे होना और अतत्त्वमें पर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे न होना (और) राग भावसे भी न होना, यह अतत्त्व शक्ति है, आहाहा ! यहां तो (असा कहे) व्यवहार करो तो निश्चय होगे. यहां तो कहते हैं कि, व्यवहार रूप न होना यह अतत्त्व शक्तिका स्वरूप है, आहाहा !

अनंत-अनंत शक्तिका भंडार, प्रभु ! तेरे भंडारमें निधान पडा है. यह निधान छतना है कि, इसमें से केवलज्ञान निकालते हैं तो भी निधान जतम नहीं होता. केवलज्ञान हो जाये तो भी निधानमें कभी नहीं आती, आहाहा ! और निगोदमें अक्षरके अनंतवे भागमें

पर्याय रही है (तो निधानमें कुछ बढ़ता नहीं). निगोद समझे ? आहाहा ! यह लील-कुंग, वनस्पति और ये लसुन, प्याज इन सबकी एक कणमें असंख्य शरीर हैं और एक शरीरमें अनंत जव हैं. परंतु उस जवका स्वरूप तो तद्रूप भवन स्वरूप है, आहाहा !

कल थोडा कडा था कि, जैसे नरकमें स्वर्गका सुभ नहीं. यह लौकिक (सुभकी बात) है. (आत्मिक) सुभ (तो वहां) धूलमें कहां था ? परंतु नारकीमें भी, कोई (भी) नारकीका जव (हो), दस हजारकी स्थितिसे उउ सागर (पर्यंत) किसीको स्वर्गका सुभ बिलकुल नहीं. स्वर्गके देवको नारकीका दुःख बिलकुल नहीं और परमाणुमें रागकी पीडा नहीं. (यहां) एक परमाणु (कडा), वैसे तो सारा स्कंध विभावरूपसे परिणामित है, इसलिये परमाणुका दृष्टांत दिया है. यह स्कंध है न ? यह तो विभाविक पर्याय है. विभाविक समझे ? कर्मरूप पर्याय है यह विभाविक पर्याय है. (परमाणुमें) कोई ऐसा गुण नहीं कि कर्मरूप परिणामे ? ऐसा गुण नहीं (है). क्या कडा ? गुण हो तो उसकी पर्याय होनी चाहिए. परंतु कर्मरूप विभाविक पर्याय है तो कोई (ऐसा) गुण नहीं कि, विभावरूप पर्याय होती है. ये विभाविक पर्याय गुण बिना स्वतंत्र होती है. क्या कडा ? समझमें आया ? (ऐसा) कोई गुण नहीं है. परमाणुमें कर्मकी पर्यायरूप परिणामन हो, ऐसा परमाणुमें कोई गुण नहीं. वह पर्यायमें स्वतंत्र विभाव रूप परिणामित होता है. आहाहा ! यह शरीर, वाणी, लक्ष्मी, पैसा ये स्कंध आदि धूल यह तो विभाव पर्याय है. आहाहा ! परंतु अनंत शक्ति संपन्न एक भिन्न परमाणु उसको कोई पीडा नहीं. जडको पीडा है ? जैसे भगवान आत्मा ! आनंदके कंदमें दुःख नहीं, राग नहीं, विकार नहीं, आहाहा ! समझमें आया ?

कल बहेनका (पूज्य बहेनश्री यंपाबहेन) दृष्टांत दिया था न ? (बहेनश्रीके वचनामृतमें) बहेन कहती है, अग्निको उधई नहीं होती, उधई समझते हो ? लकड़ेमें छोटे जव होते हैं. बहुत मुलायम, सफेद (होती है). धूप लगे तो जलकर मर जाये. उपकी सालमें हमने नजरोंसे देखा है. हम जंगल गये थे. बाहर जाते थे वहां जंगल बैठे थे. वहां धूलमेंसे बाहर निकली तो घतनेमें सूर्यका ताप लगा तो जलकर मर गई. उसे उधई कहते हैं. लकड़ेमें उधई होती है. आहाहा ! अग्निको उधई होती है ? उधईका तो नाश कर दे, (ऐसा) अग्निका स्वभाव है. आहाहा ! जैसे भगवान आत्मामें आवरण होता है ? बहेनने तीन शब्द छस्तमात्र किये हैं. जैसे अग्निको उधई नहीं होती, कनकको काट नहीं – सोनेमें काट नहीं, वैसे भगवान (आत्माको) आवरण नहीं, उषाप नहीं और अशुद्धता नहीं.

यहां क्या यलता है ? अतत्त्व शक्ति (यलती है). भगवान पूर्णानंदका नाथ ! उसमें अतत्त्वशक्ति पडी है तो उसका रागरूप होना, यह उसमें है ही नहीं. रागरूप नहीं होना, ऐसी उसकी शक्ति है. आहाहा ! समझमें आया ? भाग्यशालीओंको सुनने मिले ऐसी बात है. ये सब धूलके (पैसेके) भाग्यशाली तो भांगशाली है. भांग (अर्थात्) तमाकु, उसे भांग

कहते हैं न ? (ये) सब पैसेके भाग्यशाली – वे भांगशाली हैं. यह तो ऐसी बात (है). प्रभु ऐसा कहते हैं, 'तुम्ही भागन जोग' भगवानकी वाणी निकलती है, आहाहा ! यह वीतरागकी वाणी (है). बापू ! यह तो प्रभु तीन लोकके नाथ (की वाणी है). आहाहा ! महावीर प्रभु तो मोक्ष पधारें. वे तो एमो सिद्धांशमें गये. सीमंधर भगवान बिराजते हैं – वे एमो अरिहंतांशमें हैं तो उनको वाणी है. सिद्धको वाणी नहीं (है) वे तो अशरीरी हैं, समजमें आया ? भगवान कुंडकुंड आचार्य संवत् ४८में वहां (महाविदेहमें) गये थे. आठ दिन रहे थे. आठ दिन साक्षात् वाणी सुनी है. (वहांसे) आकर बादमें यह शास्त्र बनाया है. समजमें आया ? तो (यहां) अतद्रूप शक्ति कहते हैं कि, आहाहा ! रागरूप नहीं होना, विकाररूप नहीं होना, ऐसी इसमें अतत्त्व शक्ति है. आहाहा ! कहते हैं न ? व्यवहार श्रद्धा – देव-गुरु-शास्त्रकी श्रद्धा यह तो राग है. शास्त्रका पढना विकल्प है—राग है. नव तत्त्वकी श्रद्धा और पंच महाव्रतके परिणाम, यह राग है. यहां तो कहते हैं कि, व्यवहार रत्नत्रयरूप नहीं होना, यह अतत्त्व शक्ति है, आहाहा ! तो फिर यह कुटुंबरूप, स्त्रीरूप, पुत्ररूप होना, मकान हमारा है, (ऐसा माने लेकिन) धूलमें (तुम्ही तेरा) नहीं है. आहाहा ! अनादिका हैरान हो गया है. अपनेको आप भूलके हैरान हो गया. तेरी यीज क्या है और स्वरूप क्या है ? प्रभु ! तुने कभी सुना नहीं. प्रेमसे सुना नहीं, आहाहा ! आता है न ? 'तत्प्रतिप्रीतिचित्तेन येन वार्तापि हि श्रुता' रागसे त्मिन्न यह भगवान त्रिलोकनाथ (आत्मा) रागरूप परिणामन करे (ऐसी) उसमें शक्ति नहीं. अपना आनंद और येतनरूप परिणामन करनेकी शक्ति है और रागरूप परिणामन करनेकी शक्ति नहीं है. (ऐसी) अतत्त्वशक्ति है. आहाहा ! समजमें आया ? आहाहा !

यहां तो अभी ये यलता है कि, तुम दया, दान, व्रत, भक्ति करो तो उससे कल्याण होगा. अरे.. प्रभु ! पररूप परिणामन करना (और उससे) स्वरूप परिणामन होगा (ऐसा मानना यह तो मिथ्यात्व है). आहाहा ! ऐसा कहते हैं कि नहीं ? व्यवहार करो, व्यवहार करते-करते निश्चय होगा, ऐसी सब प्ररूपणा यलती है. साधु ऐसा प्ररूपण करते हैं. पंडित लोग ये प्ररूपणा करते हैं. यहां के सिवाके पंडित लोग (ऐसी प्ररूपणा करते हैं). आहाहा !

“अतद्रूप...” है ? अतद्रूप यानी अपने स्वरूपके सिवा, अतद्रूप (अर्थात्) रागादिरूप नहीं होना, आहाहा ! शरीर, मिट्टी और जडरूप तो नहीं होना, वह तो साधारण बात है. वह तो कभी तीन कालमें होता नहीं. परंतु रागरूप (तो) परिणामन है. पर्यायमें राग – मिथ्यात्वरूप परिणामन है परंतु वह शक्तिका परिणामन नहीं. स्वरूपका परिणामन नहीं. आहाहा ! समजमें आया ? नये आदमीको तो ऐसा लगे कि, ये क्या कहते हैं ? बापू ! मार्ग तो यह है, भाई ! आहाहा ! अतद्रूप (अर्थात्) रागरूप नहीं होना, यह अतद्रूप है, आहाहा ! येतनरूप परिणामना यह तद्रूप है. रागरूप यानी अतद्रूप नहीं होना, यह इसका

स्वभाव है. आहाहा ! तो यह पैसा करना (कमाना), स्त्री-पुत्रका पोषण करना, उनको राख रचना, सारा दिन पाप..पाप.. और पापमें पडा (है). सारा दिन प्रपंचमें (पडा है). अतत्त्वशक्ति यानी उसरूप (जड और रागरूप) नहीं होना, ऐसी तेरेमें शक्ति है, समझमें आया ?

“अतद्रूप भवनरूप...” यानी कि रागरूप नहीं होना, ऐसी तेरेमें शक्ति है, आहाहा ! यहां तो कहते हैं कि, राग करो तो तेरा कल्याण होगा, गजब है, भाई ! तेरी मिथ्यादृष्टिका बडा जोर है. जो स्वरूपमें नहीं (है) ऐसी दृष्टिरूप तेरा परिणामन हो गया है, आहाहा ! समझमें आया ? कहते हैं, अतद्रूप भवन (अर्थात्) अतद् – जो उसमें नहीं (है) उस रूप भवन नहीं (होना) – पररूप नहीं होना, ऐसी अतत्त्व शक्ति है, आहाहा ! अक-अक शक्तिमें तो भंडार पडा है. यकवर्तीके नव निधान होते हैं तो उसमें (आत्मामें) क्या आया ? नव निधान होते हैं न ? यह निधान जडका-धूलका है. आहाहा ! यह तो यैतन्यका निधान (है). अंदर अनंत-अनंत यैतन्य शक्तिका रत्नाकर, रतनका आकर – दरिया भरा है, आहाहा ! समझमें आया ?

(उसका) माहात्म्य सुना नहीं. सुना तो रुचिमें लिया ही नहीं, आहाहा ! शास्त्रका ज्ञान हुआ तो उसमें भुश हो गया, राख हो गया कि, हमको (ज्ञान हो गया – समझमें आ गया). परंतु वह ज्ञान, ज्ञान ही नहीं है, आहाहा ! शरीरसे ब्रह्मचर्य पालना, सत्य बोलना, यह सब तो राग है, आस्रव है, समझमें आया ?

“अतद्रूप भवन...” (अर्थात्) पररूप नहीं होना, आहाहा ! “... ऐसी अतत्त्व शक्ति” है. (“तत्स्वरूप नहीं होनेरूप अथवा तत्स्वरूप नहीं परिणामनेरूप...”) क्या कडा समझे ? “(तत्स्वरूप नहीं होनेरूप...)” (यानी) पररूप नहीं होनेरूप “(..अथवा तत्स्वरूप नहीं परिणामनेरूप...)” राग आदिरूप नहीं परिणामनेरूप “(...अतत्त्वशक्ति आत्मामें है.)” आहाहा ! भगवान (आत्मामें) यह शक्ति है कि, रागरूप नहीं होना, ऐसी शक्ति है. रागरूप होना ऐसी उसमें कोई शक्ति नहीं है. क्या कडा समझे ?

जैसे परमाणुमें कर्मकी पर्याय (रूप) होनेका कोई गुण नहीं कि, कर्मकी पर्याय होती है. (परमाणुकी) पर्यायमें अद्वरसे गुण बिना विभाव पर्याय होती है. जैसे आत्मामें ऐसी कोई शक्ति नहीं कि, रागरूप, विकाररूप, मिथ्यात्वरूप (परिणामन) हो. पर्यायमें अद्वरसे मिथ्यात्व आदिका परिणामन करता है. समझमें आया ? अक परमाणुमें भी पीडाका जहां अभाव है तो तीन लोकके नाथमें विकारका त्रिकाल अभाव है, आहाहा !

श्रोता : (आत्मामें) विभाविक शक्ति है.

पूज्य गुरुदेवश्री : है, (लेकिन) वह विभाव करे, ऐसा उसका अर्थ नहीं. विभाविक शक्तिका अर्थ – चार द्रव्यमें नहीं है, ऐसी विशेष शक्ति उसका नाम विभाविक शक्ति (है). विशेष शक्तिका नाम विभाविक शक्ति. विभाविक शक्ति नाम विभावरूप परिणामना, ऐसा

હૈ નહીં. ઉસકા અર્થ એસા નહીં હૈ.

શ્રીમદ્ને એસા કહા હૈ. શ્રીમદ્ને લિખા હૈ કિ, વિભાવ શક્તિકા અર્થ એસા નહીં હૈ કિ, વિભાવરૂપ પરિણમના. પરંતુ ચાર દ્રવ્યમેં નહીં હૈ એસી શક્તિકો વિભાવશક્તિ – વિશેષપને કહનેમેં આતા હૈ. પરમાણુ (અર્થાત્) પુદ્ગલ ઔર જીવમેં યહ ખાસ વિભાવિક શક્તિ હૈ. બાકીકે ચાર (દ્રવ્યમેં યહ શક્તિ) નહીં હૈ. (બાકીકે) ચાર જો હૈ ન ? ધર્માસ્તિ, અધર્માસ્તિ, આકાશ, કાલ, યહ તો શુદ્ધ પરિણમન (સ્વરૂપ) ત્રિકાલ પારિણામિક ભાવ હૈ. ઉસકા દ્રવ્ય ભી પારિણામિક ભાવ, ગુણ પારિણામિક ભાવ (ઔર) પર્યાય (ભી) પારિણામિક ભાવ (સ્વરૂપ હૈ).

૧૯૯૯ કી સાલમેં સ્પષ્ટ કિયા થા કિ, આત્મામેં કારણ પર્યાય હૈ કિ નહીં ? નિયમસારકી ૧૯ ગાથાકે વ્યાખ્યાનમેં આ ગયા હૈ. એક કારણ ધ્રુવ, કારણપર્યાય આત્મામેં હૈ. (યહ પર્યાય) કેસી (હૈ) ? કિ જેસે ધર્માસ્તિ, અધર્માસ્તિ, આકાશ ઔર કાલ (હૈ), ઉનકે દ્રવ્ય, ગુણ તો પારિણામિક એકરૂપ હૈ પરંતુ ઉત્પાદ્ - વ્યયરૂપ પરિણામ ભી એકરૂપ હૈ. ચાર દ્રવ્યમેં (એસા હૈ). સમજમેં આતા હૈ ? ઉત્પાદ્-વ્યય (એક) સરીખા – એકરૂપ ધારા ચલતી હૈ, તો આત્મામેં એકરૂપ ઉત્પાદ્-વ્યય તો હૈ નહીં. સંસાર દશામેં વિકારકા ઉત્પાદ્ હૈ ઔર મોક્ષમાર્ગમેં કુછ શુદ્ધ પર્યાય ઔર કુછ અશુદ્ધ (પર્યાયકા) ઉત્પાદ્-વ્યય હૈ. સિદ્ધમેં પૂર્ણ શુદ્ધ (પર્યાયકા) ઉત્પાદ્-વ્યય હૈ, તો (ઇસ અપેક્ષાસે) એકરૂપ ન રહા. ચાર દ્રવ્યમેં જેસે ઉત્પાદ્-વ્યય એકરૂપ હૈ, વૈસે યહાં એકરૂપ ઉત્પાદ્-વ્યય ન રહા. થોડી સૂક્ષ્મ બાત હૈ. નિયમસારકી ૧૯ ગાથા પર વ્યાખ્યાન હુઆ હૈ. પુસ્તક આ ગયા હૈ. ક્યા કહના હૈ ? કિ ચાર દ્રવ્યમેં ઉત્પાદ્-વ્યય (હૈ), (ઉસમેં) ધ્રુવ તો ધ્રુવ હૈ હી. પરંતુ ઉત્પાદ્-વ્યય ભી એક (રૂપ) ધારાવાહી (હૈ). ચાર દ્રવ્યમેં કમ, વિપરીત, પૂર્ણ એસા ભેદ નહીં હૈ. સમજમેં આયા ? એસા વ્યાખ્યાન ! એસે ભગવાન આત્મામેં સંસાર દશામેં મલિનતાકા ઉત્પાદ્-વ્યય હૈ, મોક્ષમાર્ગમેં થોડા શુદ્ધ હૈ ઔર થોડા અશુદ્ધકા ઉત્પાદ્-વ્યય હૈ તો (ઇસ અપેક્ષાસે) એકધારા ન રહી. ઉત્પાદ્-વ્યયકી ધારા એકરૂપ ન રહી. વહાં અંદર એકરૂપ ધારાવાહી કારણ ધ્રુવ પર્યાય હૈ. નિયમસારમેં કારણશુદ્ધપર્યાય આ ગયા હૈ. ૩૩-૩૪ વર્ષ હુએ.

આત્મામેં (એક) કારણશુદ્ધપર્યાય હૈ. કેસે ? ઉસ ચાર (દ્રવ્યમેં) એકધારા હૈ. યહાં ઉત્પાદ્-વ્યયમેં એકધારા નહીં. ભગવાન આત્માકા ધારાવાહિ સામાન્ય જો સ્વરૂપ હૈ ઉસકી એક વિશેષ ધ્રુવપર્યાય હૈ. ઉસમેં ધ્રુવમેં ઉત્પાદ્-વ્યય નહીં. (ઇસે સમજાનેકે લિયે એક નકશા) બનાયા થા.

યહાં તો ક્યા કહતે હૈ ? કિ, આત્મામેં ઉત્પાદ્-વ્યયકી ધારાવાહિ પર્યાય નહીં હૈ. ચાર (દ્રવ્યમેં) પરમપારિણામિક તો દ્રવ્ય ઔર ગુણ (હૈ). ઔર જો પર્યાય હૈ વહ પારિણામિક ભાવકી પર્યાય હૈ. આત્મામેં ઉત્પાદ્-વ્યયમેં એસી પારિણામિક ભાવકી પર્યાય એક સરીખી નહીં. અંદર જો સામાન્ય વસ્તુ હૈ, ઇસમેં - ઉત્પાદ્-વ્યયમેં એક વિશેષ દશા, એકધારી અનાદિ અનંત ધ્રુવ કારણ પર્યાય હૈ. ઉસકો ભગવાન કારણ પર્યાય કહતે હૈ, આહાહા ! યહ નિયમસારકી ૧૫

ગાથામાં આતા હૈ. અભી બાહરમાં બાત બૈઠે નહીં, ઉસમાં યહ (બાત કહાં બૈઠેગી ?) ધારણામાં મંથન કરે નહીં, શ્રવણ કરકે ઉસકા વિચાર કરકે મંથનસે નિર્ણય કરના, આહાહા ! સમજમાં આયા ?

યહ કારણ પર્યાય પવિત્ર હૈ. જૈસે સમુદ્રમાં ઉપર સપાટી હૈ વહ સમુદ્રકી સપાટી હૈ. વૈસે ભગવાન આત્મા અનંત ગુણ (સ્વરૂપ) ધ્રુવરૂપ જો હૈ, ઉસમાં કારણ પર્યાય સપાટી જો હૈ વહ ત્રિકાલ અનાદિ એકરૂપ હૈ. યહ એકદમ નથી બાત હૈ. પહલે ૧૯૯૯કી સાલમાં વ્યાખ્યાન તો આ ગયા હૈ. સમજમાં આયા ? યહ બાત ગુજરાતી હૈ, હિન્દી નહીં હૈ. ગુજરાતીમાં (સમજનેવાલે) મુશ્કિલસે નિકલે. ક્યોંકિ બાહરમાં અન્ય વિદ્વાનોંકો (યહ બાત) નહીં બૈઠી થી. (વે ઐસા કહતે થે), 'યે તો એક પર્યાય હૈ, પર્યાય હૈ...' પરંતુ પર્યાય કેસી ? એક કારણ પર્યાય ધ્રુવ હૈ (ઉસકા) નકશા બનાયા થા. યે નકશા નિયમસારકી ૧૯ ગાથાકે વ્યાખ્યાનમાં ડાલના થા. પરંતુ બડે પંડિતોંકો (બાત) નહીં બૈઠી, ઇસલિયે (ઐસા લગા કિ) સાધારણ (આદમીકો) નહીં બૈઠેગી. ઇસલિયે નકશા બાહર રખા. નિયમસારકે પ્રવચનમાં નહીં રખા.

પ્રત્યેક ગુણકી કારણપર્યાય હૈ. ગુણ ત્રિકાલી હૈ. વૈસે અંદર એક ધ્રુવ પર્યાય ભી કાયમકી અનાદિ અનંત ઉત્પાદ્-વ્યય બિનાકી પર્યાય હૈ, આહાહા ! બાહરમાં સમુદ્રકી જો સપાટી હૈ ઐસી આત્મામાં બાહરમાં યહ ઉત્પાદ્ - વ્યય સિવાકી કારણ પર્યાય અનાદિ અનંત હૈ. (ઐસા) કભી સુના નહીં હોગા. ઇસમાં અતત્ત્વ શક્તિ પડી હૈ તો યહ પર્યાયકા સ્વભાવ, વિકારરૂપ નહીં હોના, ઐસા સ્વભાવ હૈ. સમજમાં આયા ? આહાહા ! દ્રવ્ય-ગુણકા તો સ્વભાવ ઐસા હૈ કિ વિકારરૂપ નહીં હોના પરંતુ યહ કારણ પર્યાય હૈ, વહ ભી વિકારરૂપ નહીં હો, ઐસી ઉસકી શક્તિ હૈ. ક્યોં ? (ક્યોંકિ), અતત્ત્વશક્તિ નામકી જો શક્તિ હૈ, યહ દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાય તીનોંમાં વ્યાપ્તી હૈ. યહાં તો કારણ પર્યાયમાં તો (શુદ્ધતા) હૈ. પરંતુ અતત્ત્વશક્તિકા ધરનેવાલે ભગવાન પર દૃષ્ટિ પડતે હી પર્યાયમાં ભી રાગરૂપ નહીં હોના, ઐસા અતત્ત્વ (શક્તિકા) પરિણમન હો જાતા હૈ. સૂક્ષ્મ બાતે (હૈં), બાપૂ ! આહાહા !

યહ તો ત્રીન લોકકે નાથ જિનેન્દ્રદેવ (કી વાણી હૈ). અભી તો બાહરમાં દયા પાલો, સામાયિક કરો, પોસા કરો, પ્રતિક્રમણ કરો (ઇસલિયે સબ) હો ગયા, જાઓ ! (પરંતુ) કરના હૈ વહાં મરના હૈ. આહાહા ! નિહાલભાઈને (સોગાનીજીને) ડાલા હૈ ન ? 'કરના સો મરના હૈ' યહ કરો, યહ કરો, (યહ સબ) વિકલ્પ હૈ. ઉસમાં ચૈતન્ય જીવતરકા મૃત્યુ હોગા, આહાહા !

યહાં તો પરમાત્મા ઐસા કહતે હૈં, ચૈતન્ય – ચૈતન્યરૂપ પરિણમન કરતે હૈં પરંતુ ‘(- ઇસ શક્તિસે ચેતન જડરૂપ નહીં હોતા.)’ કોંસમાં હૈ અંદર ? આત્મામાં અતત્ત્વ શક્તિ હૈ, ઉસ શક્તિસે ચેતન જડરૂપ નહીં હોતા, ઉસકા અર્થ ક્યા ? કિ ભગવાન આત્મા અતત્ત્વ શક્તિકે કારણ વિકારરૂપ નહીં હોતા, આહાહા !

(જ્ઞાયક) જડરૂપ નહીં હોતા હૈ, ઐસા અર્થ લિયા હૈ. (ઐસા) કહીં આયા હૈ ? (સમયસાર)

છઠ્ઠી ગાથામાં આયા છે. જ્ઞાયક ! જ્ઞાયક ભગવાન આત્મા ! ત્રિકાલ જ્ઞાયક છે. વહ શુભ-અશુભ ભાવરૂપ હુઆ હી નહીં. ક્યોંકિ શુભાશુભ ભાવ જડ છે, ઐસા લિયા છે. જયચંદ્રજી પંડિતને કોંસમેં ડાલા છે, શુભાશુભ ભાવ જડ છે. જ્ઞાયક, જડરૂપ કભી હુઆ હી નહીં. આહાહા ! સમજમેં આયા ? ઔર શુભાશુભ (ભાવરૂપ) હો જાય તો જડ હો જાયે. આહાહા ! શુભ ઔર અશુભ રાગ અચેતન છે. આત્માકી શક્તિસે ખાલી છે. ચેતન્યકે નૂરકે – તેજકે પુરકા પુણ્ય ઔર પાપ ભાવમેં અભાવ છે, આહાહા !

અબ સ્પષ્ટીકરણ જ્યાદા આતા છે, આહાહા ! લોગ વિરોધ કરતે હેં ન ? જિતના વિરોધ કરતે હેં ઉતના સ્પષ્ટીકરણ બઢતા જાતા છે. બાપૂ ! યહ માર્ગ છે, ભાઈ ! તેરે હિતકી ખાત છે, આહાહા ! તેરે દ્રવ્યમેં, ગુણમેં, કારણપર્યાયમેં ભી (અતત્ત્વ નામકી એક) શક્તિ છે. અતત્ત્વ (અર્થાત્) રાગરૂપ ન હોના, વ્યવહાર રત્નત્રયરૂપ ન હોના, ઐસી તેરી એક શક્તિ છે. આહાહા ! જેસે કહા ન ? (પરમાણુમેં) કર્મરૂપી પર્યાય હોતી છે (તો) પરમાણુમેં કોઈ ગુણ નહીં છે કિ, ગુણકે કારણ (કર્મરૂપી) પર્યાય હોતી છે. નથી પર્યાય અદ્ધરસે હોતી છે. ઐસે આત્મામેં કોઈ શક્તિ નહીં છે કિ, વિકારરૂપ હો. પર્યાયમેંસે વિકાર ઉત્પન્ન હોતા છે. પર્યાય દૃષ્ટિવાલેકો પર્યાય દૃષ્ટિમેં, સ્વભાવદૃષ્ટિકો છોડકર વિકાર હોતા છે, આહાહા ! બહુત સૂક્ષ્મ બાપૂ ! આહાહા ! ઐસા માર્ગ વીતરાગકે અલાવા કહીં નહીં છે ઔર ઉસમેં ભી દિગંબર સંતોંકે સિવા, ઐસી ખાતેં કિસીને કહી નહીં હેં, આહાહા !

“...ઇસ શક્તિસે ચેતન જડરૂપ નહીં હોતા.” ઉસકા અર્થ ક્યા ? રાગરૂપ હોના વહ જડરૂપ હોના છે, આહાહા ! ક્યોંકિ દયા, દાન, વ્રત, ભક્તિકા જો રાગ છે, ઉસે તો જીવ અધિકારમેં અજીવ કહા ઔર કર્તા-કર્મ અધિકારમેં ઉસે સંયોગી ભાવ કહા. (વહ) સ્વરૂપ ભાવ નહીં. સંયોગી ભાવ (માને) સંયોગકે કારણસે ઉત્પન્ન હુઈ (ઐસી) સંયોગી ચીજ છે. ઉસકા સ્વભાવ નહીં. કર્તા-કર્મ (અધિકારકી) ૬૯-૭૦ ગાથા (મેં આયા છે). સમજમેં આયા ? સૂક્ષ્મ પડે, લેકિન બાપૂ ! યહ સમજને જેસા છે, ભાઈ ! અનાદિકાલસે દુઃખી હોકર મર ગયા છે, આહાહા !

બ્રહ્મદત્ત ચક્રવર્તીકા ૭૦૦ વર્ષકા જીવન રહા. ઉસકે એક શ્વાસોશ્વાસકા ફલ ઇતના મિલા કિ, ઇસ વક્ત સાતવીં નરકમેં ૩૩ સાગર (કી આયુ સ્થિતિમેં) છે. ઐસે હીરોંકે ઢોલિયે (હો), ઢોલિયે કહતે હેં ન ? (ઢોલિયા માને પલંગ). હીરાકે પલંગ પર સોતા થા. ૧૬ હજાર દેવ સેવા કરતે થે. પરંતુ મિથ્યાદૃષ્ટિપનેમેં આત્માકો ભૂલકર ઇતને પાપ કિયે કિ, જિસકે એક શ્વાસકે ફલમેં ૧૧ લાખ, ૫૬ હજાર, ૮૭૫ પલ્યોપમકા (દુઃખ ભોગ રહા છે). એક શ્વાસકા ફલ ઇતના (આયા) ! ક્યા કહા ? ૭૦૦ વર્ષમેં જો શ્વાસ હોતે હેં, (તો ઉસકા ફલ કિતના ?) એક શ્વાસકે ફલમેં ૧૧ લાખ, ૫૬ હજાર, ૮૭૫ પલ્યોપમકા દુઃખ (ભોગતા છે). એક શ્વાસકે ફલમેં ૧૧ લાખ પલ્યોપમકા (દુઃખ ભોગતા છે). એક પલ્યકે અસંખ્ય ભાગમેં અસંખ્ય અબજ

વર્ષ (જાતે હૈં), બાપૂ ! તૂ કિતના દુઃખી હુઆ ઇસકી તુજે ખબર નહીં, ભાઈ ! સમજમેં આયા ? ૭૦૦ વર્ષ ચક્રવર્તી નહીં થે. આયુષ્ય ૭૦૦ (વર્ષકા) થા. બાદમેં બડી ઉમ્મરમેં ચક્રવર્તી હુએ. સમજમેં આયા ? પરંતુ સારે ૭૦૦ વર્ષકે શ્વાસ ગિને તો ભી ઉસકે ફલમેં ઇતને પલ્યોપમકે દુઃખ (ભોગતા હૈ). બાપૂ ! ઔર યહાં આત્મજ્ઞાન હો તો અનંતકાલમેં અનંત આનંદ રહે ઉતના ઉસમેં ફલ હૈ. વિશેષ કહેંગે....



આ આત્મા એ જ જિનવર છે, એ જ તીર્થંકર છે. અનાદિકાળથી જિનવર છે. આહાહા ! અનંતા કેવળજ્ઞાનની વેલડી છે. પોતાનો આત્મા જ અમૃતનો કુંભ છે, અમૃતની વેલડી છે. એના પર એકાગ્ર થવાથી પર્યાયમાં જિનવરના દર્શન થાય છે. પરમાત્મા પ્રગટ થાય છે તેને સમ્યગ્દર્શન કહે છે.

(પરમાગમસાર-૩૩૦)

प्रवचन नं. २७

शक्ति-३१, ३२, ३३ ता. ०६-०८-१९७७

अनेकपर्यायव्यापकैकद्रव्यमयत्वरूपा एकत्वशक्तिः ॥३१॥
 एकद्रव्यव्याप्यानेकपर्यायमयत्वरूपा अनेकत्वशक्तिः ॥३२॥
 भूतावस्थत्वरूपा भावशक्तिः ॥३३॥

समयसार, शक्तिका अधिकार (यलता है). ३० वीं शक्ति यली. अतत्त्व शक्ति आ गई न ? कल उसका अर्थ आ गया. पर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव है – वल आत्मामें अतत्त्व है. यल शक्ति परके अभाव स्वरूप है. तत्त्व शक्ति अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे अस्ति है. यल तत्त्व शक्ति (हुई). और परद्रव्य, क्षेत्र, काल, भावकी नास्ति है. यल अतत्त्व शक्ति (है). रात्रिको प्रश्न हुआ था. समजमें आया ?

भात यल है कि, अतत्त्व शक्ति और तत्त्व शक्ति दोनों शक्ति परस्पर विरुद्ध हैं. वल तो पहले आ गया कि, (आत्मामें) विरुद्ध धर्मात्मक शक्ति है. अक विरुद्धधर्मात्मक (नामकी) शक्ति है कि, स्वरूपसे रहे और पररूपसे नहीं, असी विरुद्धधर्मत्व शक्ति है. परंतु यल शक्ति गुण है. विरुद्ध शक्ति यल गुण है, तो इस गुणकी दृष्टि करनेसे, गुण-गुणीका भेद छोडकर गुण और गुणीका भेद-लक्ष छोडकर, गुणी परकी अभेद दृष्टि (छोनेसे) यल तत्त्व, अतत्त्व, विरुद्ध शक्तिका पर्यायमें परिणामन आता है. अपनेसे है और परसे नहीं, असी पर्यायमें परिणति आती है, आहाहा ! समजमें आया ?

अनुभवमें असा कहते हैं कि, इस अनुभवमें ध्याता, ध्यान या ध्येयका विकल्प नहीं है, आहाहा ! वहां शास्त्रज्ञान भी नहीं है. वहां तो भगवान आत्मा अपने स्वरूप है और परस्वरूप नहीं, असी विरुद्ध शक्तिका परिणामन अस्तिरूपसे है और परसे नास्ति (है), असी पर्यायमें परिणति है. समजमें आया ? असी तत्त्वशक्तिके परिणामनमें भी अपनेरूपसे अपने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावसे (परिणामन) है. यहां 'है' असा विकल्प, यहां (अनुभवमें) नहीं. (असा निर्विकल्प) परिणामन (है). समजमें आया ? और अतत्त्व शक्तिका परिणामन

(ઐસા હૈ કિ) પર્યાયમે વીતરાગતાકા વેદન હોના. પર રાગાદિકા અભાવરૂપ પરિણમન ઔર વીતરાગભાવકા સદ્ભાવરૂપ પરિણમન (હોના, યહ અતત્ત્વ શક્તિકા સ્વરૂપ હૈ). આહાહા ! યે સમજે બિના પંચમહાવ્રત, વ્રત ઔર તપ સબ (બેકાર હૈ).

અધ્યાત્મ પંચ સંગ્રહમે ઐસે લિયા હૈ કિ, ઘેંટા (ભેડ) ભી મુંડન કરવાતે હૈ. ઘેંટા સમજે ? જિસમેંસે ઉન હોતા હૈ ન (ઉસે ઘેંટા કહતે હૈ). ઔર નગ્ન તો પશુ ભી રહતે હૈ ઔર પરિષહ ભી સહન કરતે હૈ તો ઇસમેં ક્યા આયા ? સમજમેં આયા ? અપના ભગવાન પૂર્ણાનંદકા અસ્તિત્વ, મૌજૂદ થીજ પરકે અભાવ સ્વભાવ (સ્વરૂપ હૈ). ભાવ-અભાવ બાદમે આયેગા. યહાં તો અભી પરદ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ ભાવ (રૂપ) તત્ત્વકા અતત્ત્વ, ઉસ તત્ત્વકા અતત્ત્વ (સ્વરૂપ નિજ સ્વભાવ) હૈ, પરરૂપ નહીં હોના, ઇતની બાત હૈ. ભાવ-અભાવ શક્તિ અલગ આયેગી. સમજમેં આયા ? ઇસકે અનુભવકે પહલે જબ વિકલ્પ આયા, તો ઇસ નયપક્ષકો ભી છોડકર, ચૈતન્ય નિર્વિકલ્પકા આનંદકા વેદન હોના, યહ થીજ હૈ. ઐસી બાતે હૈ. બાહરકે દાન, દયા, શરીરકા બ્રહ્મચર્ય, અપવાસ, તપસ્યા આદિ યે સબ વ્યર્થ કલેશ હૈ, આહાહા !

ભગવાન ચિદાનંદ પ્રભુ ! (બિરાજમાન હૈ). વર્તમાનમેં પર્યાયકા અંતરમેં (ઉસ ઓર) ઝૂકના ઔર ઉસમેં એકાગ્ર હોનેસે આનંદકા સ્વાદ આના, ઉસકા નામ સમ્યગ્દર્શન ઔર સમ્યક્જ્ઞાન હૈ, સમજમેં આયા ? ઔર ઇસકે બિના ભવકા છેદ નહીં હોગા. લાખ દાન કરે, અપવાસ કરે, તપસ્યા કરે (ઉસસે) ભવ છેદ નહીં હોગા, આહાહા ! સમ્યગ્દર્શનકે બિના ભવ છેદન હોગા નહીં, આહાહા !

અબ આત્મામેં એક એકત્વ નામકા ગુણ હૈ. હૈ ? “અનેક પર્યાયોમેં વ્યાપક...” ગુણ ઔર પર્યાયોકે ભેદમેં દ્રવ્યકા વ્યાપકપના, ઐસા એકપના યહ ઉસકા ગુણ હૈ. સમજમેં આયા ? કલશટીકામેં આયા થા “મેં એક હું. સર્વ વ્યાપક દ્રવ્યમેં મેં એક હું.” યહ બરાબર હૈ. પરંતુ વહાં એક હું ઐસે વિકલ્પકા પક્ષ છુડાયા હૈ. સમજમેં આયા ? યહાં તો એકત્વ ગુણકા (ધારક) ગુણીકા આશ્રય લેનેકો એકત્વ શક્તિ કહનેમેં આયી હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ?

૪૭ નયમેં ભી એક-અનેક આયા હૈ. એક-અનેક ત્રીન પ્રકારસે હૈ. યહાં એક-અનેક, કલશટીકામેં એક-અનેક ઔર ૪૭ નયમેં એક-અનેક (હૈ). વહ દૂસરી થીજ (હૈ). વહ ધર્મ અપેક્ષાસે હૈ. જૈસે અગ્નિકા બડા ઢેર હો તો ઇસમેં સબ અકેલા અગ્નિપના હૈ. વૈસે અદ્વૈત (અર્થાત્) આત્માકા જ્ઞાન ઔર લોકાલોકકા જ્ઞાન (ઐસા) એકરૂપ જ્ઞાન (યહ) અદ્વૈત હૈ. અદ્વૈત નય લિયા હૈ. અદ્વૈત યાની એક, અદ્વૈત યાની દો નહીં. આહાહા ! દો નહીં યાની એક (લેના. ત્રીન, ચાર, પાંચ નહીં). વેદાંત અદ્વૈત કહતે હૈ ન ? વેદાંતિ (એક) અદ્વૈત હૈ, ઐસા કહતે હૈ. ઉસકા અર્થ કિ, દ્વૈત નહીં – એક હૈ. પરંતુ એક (કહતે) હૈ. (ઉસકી) બાત જૂઠી હૈ. યહાં તો અદ્વૈતકા અર્થ જૈસે અગ્નિ ઇંધનસે એકરૂપ હોતા હૈ (વૈસે). ૨૪ વાં નય હૈ. “આત્મ દ્રવ્ય જ્ઞાનજેય - અદ્વૈતનયસે...” જ્ઞાન-જેય અદ્વૈત નયસે (અર્થાત્) જ્ઞાન-જેય અદ્વૈતરૂપ નયસે, દો કા એકત્વ હો

जाना. ज्ञेयका ज्ञान और ज्ञानका ज्ञान (इस तरह दोनोंका एक हो जाना). ज्ञेय तो ज्ञेयमें रह गया. परंतु ज्ञेयका ज्ञान और आत्माका ज्ञान, यह अद्वैत हुआ. अरे...! ऐसी बातें. “..महान् **एंधनसमूहरूप परिणत अग्निकी भांति.**” बड़ा अग्निका ढेर हो (तो अग्नि) सबको जलाकर अग्निमय कर देता है. यानी एक है. यह एक (जो कडा) वह दूसरी चीज है, यह अपेक्षित धर्म है. जैसे अग्नि एकरूप हो जाती है, वैसे (ज्ञानका) ज्ञान और ज्ञेयका ज्ञान (दोनों) एकरूप होता है, आहाहा ! समझमें आया ? यह अद्वैत नय (है).

और द्वैत नय, “**आत्मद्रव्य ज्ञानज्ञेयद्वैतनयसे, परके प्रतिबिंबोंसे संपृक्त...**” (दर्पण यानी आयना, शीशा-शीशा कहते हैं न ? जो पर चीज है उससे “...संपृक्त दर्पणकी भांति अनेक है (अर्थात् आत्मा ज्ञान और ज्ञेयके द्वैतरूपनयसे अनेक है, जैसे पर – प्रतिबिंबोंके संगवाला दर्पण अनेकरूप है.)” वैसे भगवान् आत्मा ज्ञानमें ज्ञेयके संगसे, (उसमें) ज्ञान तो अपना हुआ परंतु ज्ञेयका निमित्त है तो संग हुआ, (ऐसा कडा). (अद्वैतनयमें) एंधनकी भांति एकरूप हुआ और इस (द्वैतनयमें) अनेकरूप हुआ. ज्ञान और ज्ञेय (ऐसे हो हो गया). दर्पणमें जैसे प्रतिबिंब होता है (उसमें) प्रतिबिंब और दर्पण (ऐसे हो) द्वैत हो गया, आहाहा ! वैसे भगवान् आत्मा सर्वगत (है). सर्वगत कडा न ? आत्मा सर्वगत है. यह नय भी उसमें आया है. पंचाध्यायीमें इस सर्वगत (नयको) नयाभास कडा है. समझमें आया ?

यहां एक अपेक्षासे कुंडकुंड आचार्यने सर्वगत कडा. सर्वगत (अर्थात्) सर्व चीजोंका पूर्ण ज्ञान हो जाता है, इस अपेक्षासे (आत्मा) सर्वगत है. समझमें आया ? सर्वगत नाम परमें व्यापक हो जाता है, ऐसा सर्वगतका (अर्थ) नहीं. समझमें आया ?

यहां कहते हैं, “**आत्मद्रव्य ज्ञानज्ञेयद्वैतनयसे, परके प्रतिबिंबोंसे संपृक्त...**” (बाहर जल और अग्नि है तो) दर्पणमें अग्नि और जल दिखते हैं. बाहर बर्फ और अग्नि है तो इसका प्रतिबिंब दिखता है. अंदर कोई बर्फ और अग्नि नहीं है. वह तो दर्पणकी अवस्था है. समझमें आया ? जैसे ज्ञान-ज्ञेय द्वैत नयसे (अर्थात्) दो रूपसे (यानी) एक ज्ञेयका ज्ञान और (दूसरा) अपना ज्ञान, जैसे दो रूप हो गये. इस अपेक्षासे अनेक है. आहाहा ! कलशटीकामें एक-अनेक आया, नयमें एक-अनेक आया, इस चलते अधिकारमें एक-अनेक आया. (यह) तत्त्व विशाल है, बापू ! आहाहा !

यहां कहते हैं कि, “**अनेक पर्यायोंमें व्यापक....**” भगवान् आत्मा ! अनेक गुण और पर्यायोंमें व्यापकरूपसे, एक द्रव्यमयता रूप (है). है ? “... व्यापक ऐसी एकद्रव्यमयतरूप..” एक द्रव्यस्वरूप है. ऐसी एकत्व शक्ति है. आहाहा ! यह गुण है. यह एकत्व शक्ति गुण है. उसकी पर्याय होती है और द्वैत और अद्वैत (नय) ये गुण नहीं, यह धर्म है. उसकी पर्याय होती है, ऐसा नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! अपेक्षित ज्ञान यारों ओरसे वस्तु स्थिति सिद्ध करता है. और सम्यक् वेदनके बिना जितना (भी) काय क्लेश करे, व्रत

करे, शास्त्र पढ़े, सब संसार है, आहाहा ! समझमें आया ? भगवान ! अपनी अेकत्व शक्ति सर्व पर्यायोंमें व्यापकता, प्रसरना, फैलना उस रूप अेक द्रव्यमय (शक्ति है). अेक द्रव्यमय (कहा), अेक द्रव्यवाला अैसा नहीं (कहा). अेक द्रव्यमय (अेकत्व शक्ति है). आहाहा ! अपने सर्व गुण-पर्यायोंमें व्यापक, “... अैसी अेकद्रव्यमयतारूप अेकत्व शक्ति.” यह अेकत्व शक्ति अनंत गुणोंमें व्यापक है. क्या कहा ? समझमें आया ? ज्ञानगुणमें भी अेकत्वका रूप है, तो ज्ञान अपनेमें अेकरूप होता है. समझमें आया ? आहाहा ! उसको यहां अेकत्व शक्ति कहते हैं. आहाहा !

अब दूसरा बोल. ३१ शक्तिमें अेकपना (कहा). वेदांत कहते हैं, वह अेकपना नहीं. यहां तो अपने गुण-पर्यायमें व्यापकपना अैसा, अेक(द्रव्य)मय (कहना है). समझमें आया ? आहाहा ! आचार्योंने शक्तिका (वर्णन करके) गजब काम किया है !

श्रोता : अनेकपना रभकर अेकत्व है.

पूज्य गुरुदेवश्री : (हां), अनेकपना रभकर अेकत्व है. अनेकपना अत्मी (आगे) आयेगा. समझमें आया ? पहले लिया न ? कि “अनेक पर्यायोंमें व्यापक...” अैसे लिया. सर्व द्रव्योंमें व्यापक होकर अेक, अैसा नहीं लिया है, आहाहा ! अपनी अनेक पर्यायों, अपने भेद, अनंत गुणकी (निर्मल) पर्यायों (में व्यापक अैसी अेकत्व शक्ति है). यहां निर्मल (पर्यायकी) बात है. यहां मलिनताकी बात नहीं है. अपनी अनंत पर्यायोंमें व्यापक – प्रसरना, अैसी अेक द्रव्यमय अेकत्वता, अेकत्व (अर्थात्) अेकपनाकी शक्ति है. समझमें आया ?

शक्तिका ज्ञान करना परंतु बादमें अनुभवमें तो शक्ति और शक्तिवानका भेद भी नहीं, आहाहा ! अभेदकी दृष्टि होनेसे पर्यायमें आनंदका स्वाद आना, उसका नाम सम्यग्दर्शन और (सम्यक्) ज्ञान है. आहाहा ! शास्त्रज्ञान कितना भी हो, अभाविको नव पूर्वकी लब्धि हो जाती है (लेकिन वह सम्यक्ज्ञान नहीं है). समझमें आया ? अेक बार कहा था कि, अभाविको (अंग-पूर्वका) ज्ञान है परंतु ज्ञान परिणति नहीं. ११ अंग और ८ पूर्व पढ़े तो भी ज्ञान परिणति नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? ज्ञान परिणति तो उसे कहते हैं कि, ज्ञायक स्वभाव पर दृष्टि (करनेसे) अभेदरूपसे ज्ञानकी पर्याय ज्ञानको स्पर्श करके प्रगट होती है, उसका नाम ज्ञान परिणति – सम्यक्ज्ञान दशा, धर्मज्ञान, धर्मीका ज्ञान कहते हैं. अरे..! अैसा सब कहां सीधने जाये ?

श्रोता : यह समझे बिना धर्म नहीं होता ?

पूज्य गुरुदेवश्री : नहीं होता. यह समझे बिना (नहीं होता).

श्रोता : पशुको तो होता है, उसे कहां कुछ आता है ?

पूज्य गुरुदेवश्री : वह पशु है, परंतु उसके भावमें सब है. ‘भैं आनंद हुं और राग उत्पन्न होता है वह दुःख है’ यहां दुःख और आनंदका भेदज्ञान है. तिर्य्यको (तत्त्वके) नाम

ભલે નહીં આતે હો (લેકિન ઉસે ભાન હૈ). મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશકમ્ વહ તો લિખા હૈ – તિર્યચકો જીવ, અજીવ, પુણ્ય, પાપ આદિ (તત્વકે) નામ નહીં આતે હૈ. પરંતુ યહ આત્મા આનંદ સ્વરૂપ (હૈ), સ્વભાવરૂપ આનંદ (હૈ). પર્યાયમ્ આનંદ પ્રગટ હુઆ વહ સંવર ઔર નિર્જરા હુઈ. સંવર, નિર્જરાકા નામ નહીં આતા હો (લેકિન) ભાવભાસન (હૈ). અતીન્દ્રિય આનંદ સ્વરૂપ ભગવાનકે સન્મુખ હોકર, નિમિત્ત, રાગ ઔર પર્યાયકા ભી આશ્રય છોડકર, ત્રિકાલી જ્ઞાયક ભાવકા આશ્રય કરનેસે આનંદકા સ્વાદ આતા હૈ, ઉસકા નામ સમ્યગ્દર્શન ઔર ધર્મ હૈ, આહાહા ! ઐસી બાત હૈ.

આનંદઘનજી કહતે હૈ, ‘આતમ અનુભવ રસ કથા પ્યાલા પીયા ન જાય, મતવાલા તો ઢળી પડે, નીમતા પડે પચાય’. આહાહા ! ‘આતમ અનુભવ રસ કથા’ (અર્થાત્) રાગ સે ભિન્ન નિર્વિકલ્પ વેદન ઉસકી બાત. ‘આતમ અનુભવ રસ કથા, પ્યાલા પીયા ન જાય’ અતીન્દ્રિય આનંદકા પ્યાલા વહ સાધારણ (મનુષ્યસે) પીયા ન જાયે. આહાહા ! શાસ્ત્ર જ્ઞાનકા અભિમાન, દયા, દાન, વ્રતકા અભિમાન કરકે (ઐસા માનતે હૈ કિ) યહ મેરી ક્રિયા હૈ. ઉસે અનુભવ નહીં હોતા, આહાહા ! ‘મતવાલા તો ઢળી પડે’ હમ રાગ કરતે હૈ, વ્રત પાલતે હૈ, અપવાસ કરતે હૈ, ઐસા મતવાલા તો ઢલ જાતા હૈ. અનુભવસે બાહર નિકલ જાતા હૈ. ‘નીમતા પડે પચાય’ પરકી મમતા રહિત અપને સ્વરૂપકા આશ્રય કરતા હૈ. ઐસી બાત હૈ, સમજમ્ આયા ?

પશુ હોતા હૈ ન ? ઉસકો ખીલેસે બાંધતે હૈ. ખીલા સમજે ? ખૂંટા (કહતે હૈ). (ઉસસે બાંધતે હૈ તો) ઘુમ નહીં સકતા. ખૂંટા છોડ દેતે હૈ તો ઘુમતા હૈ. યહાં આત્મામ્ અંદર આનંદકા ખૂંટા લગા દિયા, વહ અબ પરિભ્રમણ નહીં કરેગા, આહાહા ! ખૂંટેસે બાંધ દિયા. સમજમ્ આયા ? અંદર ભગવાન આત્મા ધ્રુવ... ધ્રુવ... અતીન્દ્રિય આનંદકા ખૂંટા હૈ, આહાહા !

ધ્રુવકો ધ્યેય બનાકર આહાહા ! ઇસકા અર્થ ક્યા હૈ ? કિ, ‘મૈ યહ ધ્રુવ હું’ ઐસા ભેદ કરના, ઐસા ભી નહીં હૈ. ફક્ત વર્તમાન પર્યાય પર સન્મુખ હૈ, ઉસે છોડકર, નયી પર્યાય સ્વસન્મુખ હોતી હૈ, તો ઉસકા અર્થ યહ હૈ કિ, સામાન્ય ધ્રુવ પર પર્યાય ગઈ. લક્ષ (ગયા). ઐસા કહનેમ્ આતા હૈ. બાકી ‘યહ ધ્રુવ હૈ, ઇસલિયે ધ્યાન કરતા હું’ ઐસા વિકલ્પ હૈ, વહ તો ભેદ હૈ. સમજમ્ આયા ? આહાહા ! પશુકો બાંધા નહીં હોવે તો ઘુમતા હૈ ઔર બાંધા હો તો એકરૂપ (એક સ્થાન પર) રહે. ઘુમતા નહીં.

યહાં કહતે હૈ કિ, છૂટા (અર્થાત્) આત્માસે રાગ ભિન્ન (હૈ). ઉસકી એકત્વબુદ્ધિવાલા ચાર ગતિમ્ ઘુમતા હૈ, આહાહા ! સમજમ્ આયા ? રાગસે ભિન્ન અપના નિજ આનંદકંદ, પ્રભુ ! ઉસમ્ જહાં દૃષ્ટિ લગાઈ (ઉસને) આત્માકો ખૂંટેસે બાંધ દિયા. યહાં (ગુજરાતીમ્) ખૂંટેકો ખીલા કહતે હૈ ઔર દૂસરા (ખૂંટેકા અર્થ) ખૂંટે નહીં (ખત્મ ન હોના). ઐસી ચીજ પ્રભુ ! ભગવાન આત્મા હૈ. આહાહા ! યહાં તો ઐસી બાતે હૈ, ભાઈ ! આહાહા !

(યહાં) કહતે હૈ કિ, “અનેક પર્યાયોમ્ વ્યાપક...” (અનેક પર્યાય કહકર) પર્યાય સિદ્ધ

तो करी. अनेकपना है तो सही. समझमें आया ? द्रव्य अेक, गुण अनंत (और) पर्याय अनंत, अैसा (भेद) है. (भेद) नहीं है, अैसा नहीं. आहाहा ! अनेक पर्यायोंमें प्रसरना, व्याप्त होना, विस्तार होना. “.. अैसी अेकद्रव्यभयतरूप अेकत्व शक्ति.” परंतु वस्तु अेक द्रव्यभय है. आहाहा ! शक्तिका वर्णन बहुत सूक्ष्म है. यहां तो आत्मा निर्विकल्प आनंदकंद प्रभु है, अैसा वेदन करना यह थीज है, आहाहा ! बाकी तो सब झोगट (व्यर्थ) है. पुण्य-पापसे रक्षित भगवान (है), यह पूरी भगवानकी वाणीका सार है. ये क्रियाकांड, व्रत, ये सब पुण्य-पापसे मेरा भगवान भिन्न है, समझमें आया ? भगवान तो आनंदका नाथ (है और) अैसे भिषारीके जैसे (धूमता है). मुझे पैसे याहिये, स्त्री याहिये, कुटुंब याहिये, ये याहिये, वह याहिये, भिषारी (है).

उसमें (अध्यात्म पंथ संग्रहमें) दृष्टांत दिया है कि, नग्न तो पशु भी धूमते हैं और बाल तो घेंटा भी (उतारते हैं). समझमें आया ? तो उससे आत्माको क्या लाभ है ?

अेकत्व शक्ति यह गुण है और (प्रवचनसारमें) जो अद्वैतपना कहा, वह अेक अपेक्षित धर्म है. (४७) नयमें ँधनका दृष्टांत देकर ज्ञान-ज्ञेय अद्वैत (कहा). वह तो अेक अपेक्षित धर्म है. समझमें आया ? और अेक-अनेक कलशटीकामें २० (नंबरके) कलशमें आया. अपने २० (कलश) यलता है न ? यह अेक-अनेकपना उसका स्वभाव है. पर्याय अपेक्षासे अनेकपना भी स्वभाव है और अेकपना (भी) द्रव्यकी अपेक्षासे स्वभाव है. परंतु विकल्पका पक्ष है, वह छुडाते हैं. समझमें आया ? यहां अेकत्वके अर्थमें विकल्पकी अपेक्षासे (अर्थ) नहीं है. यह तो भगवानमें अेकत्व नामका गुण है तो द्रव्यदृष्टि करनेसे अेकत्व धर्ममें अेकत्वपनाका परिणामन होता है. सारा अनंत गुणमें—अनंती शुद्ध, शुद्ध पर्याय परिणामनमें आती हैं, आहाहा !

यह अनेक शक्ति प्रत्येक (गुणमें) व्यापक है. इस शक्तिमें ध्रुव उपादान और क्षणिक उपादान दोनों हैं. अेकत्व शक्ति कायम है. उसका नाम ध्रुव उपादान परंतु क्षणिकमें (पर्यायमें) उसका परिणामन होता है, (उसका) नाम क्षणिक उपादान (है). परिणामन बिना ध्रुव शक्तिकी यथार्थ प्रतीति होती नहीं. समझमें आया ? अेकत्व शक्तिका भी परिणामन (हुअे) बिना, यह अेकत्व शक्ति (और यह) अेकत्व शक्तिका धरनेवाला भगवान आत्मा है, अैसा परिणामन बिना प्याल नहीं आता. सत्ताका जब परिणामनमें स्वीकार आता है तो ‘सत्ता है’ अैसी कबूलात आती है, आहाहा ! अैसा सूक्ष्म मार्ग (है).

अब अनेक शक्ति. “अेक द्रव्यसे व्याप्य जो अनेक पर्याय...” क्या कहते हैं ? भगवान आत्मा ! अेक द्रव्य उसमें व्याप्त - अेक द्रव्यसे व्याप्त अनेक पर्यायों, भाषा देणो ! अपने अेक द्रव्यमें व्याप्त अनेक पर्यायों. है अनेक शक्ति ? अनेक शक्ति उसका गुण है, आहाहा ! क्योंकि गुण और पर्यायरूप परिणामना है तो अनेक नामकी उसकी शक्ति - गुण है. अनेकपना उसका गुण है.

વેદાંત તો વહાં તક કહતા હૈ કિ, આત્મા અનુભવ કરે ? આત્મા ઓર અનુભવ (ઐસી) દો ચીજ હો ગઈ. લોગ ઉસકા ભી નિષેધ કરતે હૈં. સમજમેં આયા ? વેદાંતકા સાધુ મિલા થા તબ બહુત બાર ચર્ચા હુઈ હૈ. બહુત સાલ પહલેકી બાત હૈ. એક ભાઈને પ્રશ્ન કિયા થા. ભક્તામરમેં ૨૪ નંબરકા શ્લોક આતા હૈ. અવ્યય હૈ, અક્ષય હૈ, વિભુ હૈ. વિભુકા અર્થ સમજે ? (ભક્તામરમેં ઐસા આતા હૈ કિ) ‘તું આદ્ય, અવ્યય, અચિત્ય, અસંખ્ય વિભુ’ ગુજરાતીમેં હૈ. હે નાથ ! તું આદ્ય, અવ્યય (અર્થાત્) નાશ બિનાકા (હૈ). અચિત્ય (અર્થાત્) ચિંતવન નહીં હો, (ઐસે હો), અસંખ્ય વિભુ (હો). ‘છે બ્રહ્મ ઈશ્વર, અનંત અનંગકેતુ’ આપ બ્રહ્મા હો, આપ વિષ્ણુ હો (ઇસ પ્રકાર) પરમાત્માકી સ્તુતિ કરતે હૈં. લોગ જો બ્રહ્મા-વિષ્ણુ કહતે હૈં (વહ બાત નહીં હૈ). પરંતુ જો કેવલજ્ઞાનકો પ્રાપ્ત હોકર, (જિન્હોને) જળહળ (ચૈતન્ય) જ્યોતિ પ્રગટ કરી, (તો) પ્રભુ ! આપ હી બ્રહ્મા, આપ હી વિષ્ણુ (ઔર) આપ હી શંકર હો. સમજમેં આયા ? અનંગ કેતુ ! આહાહા ! પહલે મૂલ શ્લોક કંઠસ્થ કિયે થે. ‘યોગીશ્વર વિદિત યોગ અનેક એક’ પ્રભુ ! આપ અનેક ભી હો ઔર એક ભી હો. ઇસમેં કુદરતી આ ગયા. ‘કહે છે તને વિમલ જ્ઞાનસ્વરૂપ સંત’ આપ વિમલ જ્ઞાનકે પીંડ હો, ઐસા સંતો કહતે હૈં. પ્રભુ ! અકેલે જ્ઞાનકા પુંજ (હૈ).

‘ચિદ્રુપો અહં’ (ઐસા) આતા હૈ ? ચિદ્રુપો અહં તત્ત્વજ્ઞાન તરંગિણીમેં આતા હૈ. સમજે ? ‘ચિદ્રુપો અહં’ વહાં (યહ) એક શબ્દ વારંવાર આતા હૈ. ચિદ્રુપો અહં (અર્થાત્) મૈં તો જ્ઞાન સ્વરૂપી હું. રાગ, પુણ્ય ઔર સંસાર સ્વરૂપ મેરેમેં હૈ હી નહીં. ચિદ્રુપો અહં – ઐસા પાઠ હૈ.

(અધ્યાત્મ પંચ સંગ્રહ-જ્ઞાનદર્પણ-૧૮૨) ‘આગ તૈ પતંગ યહ જલ સેતી જલચર, જટાકે બઢાયે સિદ્ધિ હૈ તો બટ ધરે હૈં’ (બટ = વટ વૃક્ષ) જટા બઢાકર સિદ્ધિ હોતી હો તો વડ (વટ વૃક્ષ) કો જટા બહુત હોતી હૈ ‘આગ તૈ પતંગ યહ જલ સેતી જલચર, મુંડન તૈં ઉરણિયે નગન રહે તૈં પશુ,’ ઉરણિયે અર્થાત્ વેંટા. પેડ ભી કષ્ટકો સહન કરતે હૈં. ઠંડી, ગરમી (સબ સહન કરતે હૈં). આહાહા ! ઉસસે ક્યા હુઆ ? ‘કષ્ટ કો સહે તે તરુ, કહું નહીં તરેં હૈં,’ ઉસસે કોઈ તિરતે નહીં. આહાહા ! ‘પઠન તૈં શુક’ (અર્થાત્ બહુત) શાસ્ત્ર પઢે; તો શુક (પોપટ) ભી પઢતે હૈં આહાહા ! ‘બક ધ્યાન’ (અર્થાત્) બગુલા ધ્યાન કરતા હૈ ન ? ઐસે વિકલ્પકા ધ્યાન કરનેસે કલ્યાણ હોતા હો તો બગુલાકા (ભી કલ્યાણ હો જાયે). યહ દીપચંદ્રજીને લિખા હૈ.

યહ તો શાંતિકા માર્ગ બતલાતે હૈં, ભાઈ ! શાંતિ તો યહ હૈ. તેરે ભવ ભ્રમણ (સે મુક્ત હોનેકા) ઉપાય તો યહ હૈ. શાંતિકી બાત હૈ. અભી યહ બહેનકા (બહેનશ્રી ચંપાબહેનકા) પુસ્તક નિકલા હૈ. મુજે તો ઐસા વિકલ્પ આયા કિ, યહ ચીજ (કા) તો હિન્દુસ્તાનમેં, ગુજરાતમેં સબ જગહ પ્રચાર કરના ચાહિયે. ઐસી ચીજ બાહર આપી હૈ કિ, અભી જરૂરતકી ઐસી

शीज बाहर आयी है.

(अब यहाँ भाव दीपिकामें) “पठनते शुक, एक ध्यानके किये कहुं, सिजे नाहिं सुने यातें भवदुःख भरे हैं” उससे कोई मुक्ति नहीं, बापू ! आहाहा ! ‘अवल, अबाधित, अनुपम, अमंड मडा, आतमीक ज्ञानके लभैया सुभ करे हैं’ अवल—यले नहीं, अबाधित—बाधा रहित, अनुपम अमंड मडा प्रभु आत्मिक ज्ञानके लभैया. आत्मिक ज्ञानको जाननेवाले सुभकर है. उसे सुभ होता है, आनंद होता है. बाकी सब क्लेश है. आहाहा ! समजमें आया ?

यहाँ अनेक शक्ति. “अेक द्रव्यसे व्याप्य जे अनेक पर्याय...” भाषा देजो ! अनेक पर्याय सिद्ध कि. “...उसमयपनारूप...” (अर्थात्) अनेकपनारूप—अनेक पर्यायपनारूप अनेकत्व शक्ति है. जैसे अेक शक्ति है उसके साथ अनेक शक्ति भी हैं. अेक साथ है.

प्रवचनसारमें ४७ नयमें आता है न, भाई ! कियानयसे मोक्ष और ज्ञान नयसे मोक्ष. ऐसा पाठ आता है. वहाँ कियानयसे मोक्ष कहते हैं. (लेकिन) किस अपेक्षासे (कहते हैं) ? वहाँ नय तो अेक-अेक लिये हैं. पडला शब्द ऐसा लिया कि, श्रुतज्ञान प्रमाशमें अेक साथ धर्म दिभते हैं. कियानयका धर्म और ज्ञाननयका धर्म भिन्न-भिन्न है. (उसलिये) भिन्न कडा है, ऐसा है नहीं. वड तो रागके अभावरूप अपेक्षित (धर्म) गिनकर कियानयको लिया. उसी समयमें ज्ञान (नय) साथमें है और जैसे अनंत-अनंत गुण श्रुतप्रमाशसे जाननेमें आते हैं. ऐसा वहाँ पाठ है. श्रुतप्रमाश तो अेक साथ सत्मी धर्मको देभता है. पडले कियानय (है) और बादमें ज्ञाननय (है), ऐसा कुछ नहीं है. समजमें आया ? थोड़ी सूक्ष्म बात है, आहाहा !

(लोग कहते हैं) वहाँ कियानय कडा है न ? परंतु किस अपेक्षासे (कडा है) ? मुक्ति तो ज्ञाननयसे है. परंतु रागका अभावरूप गिनकर वहाँ अेक धर्म ऐसा गिननेमें आया है. परंतु उसी समयमें (है). दूसरे समयमें (है), ऐसा नहीं. जिस समयमें ज्ञानसे मोक्ष है, उसी समयमें निश्चयसे मोक्ष है, उसी समयमें व्यवहारसे — कियानयसे (मोक्ष है). जैसे कथन शैलीसे अेक प्रकारका धर्म बताया कि, जे श्रुतप्रमाश अेक साथ सबका ज्ञान करता है, वहाँ पडला शब्द श्रुतप्रमाश आया है, भाई ! बादमें नय लिये हैं. पडले श्रुतप्रमाश आया, आहाहा ! अरे...! अर्थ करनेमें बांधे.

श्रोता : ज्ञाननय और कियानय दो तो आये.

पूज्य गुरुदेवश्री : आया न ? परंतु कब ? अेक ही समयमें (दोनों है). समजमें आया ?

श्रोता : ज्ञानकियात्ब्याम मोक्ष, (ऐसा आता है).

पूज्य गुरुदेवश्री : वड दूसरी किया (की बात है). वड तो वीतरागी किया (है). वड वीतरागी कियाकी बात है. यहाँ (नयमें तो) रागकी कियासे कियानयसे मुक्ति, ऐसा अेक धर्म गिननेमें आया (है). समजमें आया ?

‘यड आत्मा कौन है (कैसा है) और कैसे प्राप्त किया जाता है’ ऐसा प्रश्न किया जाय

तो इसका उत्तर (पहले ही) कहा जा चुका है और (यहां) पुनः कहते हैं. प्रथम तो, आत्मा वास्तवमें यैतन्यसामान्यसे व्याप्त अनंत धर्मोंका अधिष्ठाता (स्वामी) अंक द्रव्य है' अंकसाथ सब धर्म है. किसीको क्रियानयसे (मुक्ति) होती है और किसीको ज्ञाननयसे मुक्ति होती है), ऐसा नहीं. वह तो अंक अपेक्षित धर्म साथमें गिननेमें आया.

'आत्मा वास्तवमें यैतन्यसामान्यसे व्याप्त अनंत धर्मोंका अधिष्ठाता (है)' (अधिष्ठाता यानी) आधार. (अनंत धर्मोंका) अधिष्ठाता. "...अंक द्रव्य है, क्योंकि अनंत धर्मोंमें व्याप्त होनेवाले जो अनंत नय हैं उनमें व्याप्त होनेवाला जो अंक श्रुतज्ञानस्वरूप प्रमाण है." अब यहां कहा है. प्रमाणज्ञान तो अंक समयमें सब धर्मको जानता है. अंक समयमें है, उसे जानता है. किसीको क्रियानय और किसीको ज्ञाननय, ऐसा है नहीं, समझमें आया ? आहाहा ! इसलिये पहला शब्द यह दिया है कि, '...अंक श्रुतज्ञानस्वरूप प्रमाण है, उस प्रमाणपूर्वक स्वानुभवसे (वह आत्मद्रव्य) प्रमेय होता है (ज्ञात होता है).' आहाहा !

अंक समयमें अनंत धर्म गिननेमें आया है. किसीको क्रियानयसे और किसीको ज्ञाननयसे, किसीको व्यवहारनयसे और किसीको निश्चयनयसे, ऐसा उसमें आया है. परंतु उसका अर्थ अंक समयमें सब धर्म है. लोग बहुत गडबड करते हैं, (कहते हैं) देओ ! क्रियानयसे मुक्ति (कही) है. परंतु (उसकी) क्या (अपेक्षा है), बापू ? उस समय पर्यायमें क्रियानयका अंक अपेक्षित धर्म गिननेमें आया और श्रुतप्रमाण है वह अनंत धर्मोंको अंक साथ जानता है. अंक समयमें अनंत धर्म साथमें है, ऐसा श्रुतप्रमाण जानता है. नयसे कहा वह तो त्मेह हुआ परंतु यह श्रुतप्रमाण तो अनंत धर्मको अंक साथमें जानता है. उसमें पहला धर्म क्रियानय और बादमें ज्ञाननय धर्म, ऐसा है ही नहीं. बात समझमें आयी ? (प्रमाणमें) जानते हैं. अनंत धर्मकी ऐसी योग्यता अंक समयमें जानते हैं, बस !

वह बात कही थी न ? कि, कालनय और अकालनयसे मुक्ति. उसमें (प्रवचनसारमें नय अधिकारमें ऐसा दिया है), उसका (अर्थ) क्या ? तो किसीको कालनयसे (मुक्ति) होती है और किसीको अकालनयसे (मुक्ति) होती है, ऐसा है ? कालनय और अकालनय, (ऐसे) दो धर्म अंक समयमें गिननेमें आये (है). श्रुतज्ञान प्रमाण अंक समयमें अनंत धर्मोंको अंक साथ जानता है. किसीको कालनयसे (मुक्ति) और किसीको अकालनयसे (मुक्ति), ऐसा है ही नहीं. आहाहा ! बहुत बड़ी गडबड है. वजन यहां है. '...अंक श्रुतज्ञानस्वरूप प्रमाण है, उस प्रमाणपूर्वक स्वानुभवसे (वह आत्मद्रव्य) प्रमेय होता है (ज्ञात होता है).' क्रियानयका, ज्ञाननयका, निश्चयनयका, व्यवहारनयका धर्म भी आया है. व्यवहारनयका अंक धर्म है, निश्चयनयका अंक धर्म है, परंतु सब अंक समयमें साथमें अपेक्षित धर्म गिननेमें आया. श्रुतप्रमाण अंक समयमें अंक साथ सबको जानता है. किसीको व्यवहारनयसे मुक्ति होती है और किसीको निश्चयनयसे मुक्ति (होती है), ऐसा शब्द है ही नहीं. न्याय समझमें आया ? (लोग) इन

नयोंमें से बहुत गडबड करते हैं. आडाडा !

श्रुतज्ञान प्रमाणा लिया है. उसमें वजन है. श्रुतज्ञानप्रमाणा अक समयमें अनंत धर्मोंको अक साथ जानता है. उसका अर्थ अक साथ अनंत धर्म है. किसीको क्रियानय और किसीको ज्ञाननय (से मुक्ति) जैसे भिन्न धर्म नहीं है. आडाडा ! अक साथ गिननेमें आया है. आडाडा !

यहां कलते हैं कि, “अक द्रव्यसे व्याप्य जो अनेक पर्यायों उसमयपनेरूप...” अनेक पर्यायों उसमयपनेरूप लिया. और (अकत्व शक्तिमें) अक द्रव्यमयतारूप लिया था. अकमें द्रव्यमयपना कडा था. अनेकमें उसमयपने (कडा). अनेक पर्याय उसमयपने (कडा). है न ? अनंत भेद हैं, उसमयपने अनेकत्व शक्ति है. आडाडा ! समजमें आया ? बात थोडी सूक्ष्म है.

अनंत पर्यायोंमें व्यापक अक द्रव्यमयपनेकी अक शक्ति गिननेमें आयी और अक ही द्रव्य अनंत पर्यायोंमें व्यापता है. इस अपेक्षासे अनेक शक्ति गिननेमें आयी. आडाडा ! शास्त्रके अर्थ करनेमें भी बडी गडबड हो गयी है. शास्त्रमें किस अपेक्षासे कलना है वह अपेक्षा नहीं समजे और अपनी धारणासे अर्थ कर दे तो उलटा (अर्थ) हो जाये. दो शक्ति छुई.

अब तीसरी शक्तिमें बहुत गंभीर अलौकिक बात है. “विद्यमान-अवस्थायुक्ततारूप भाव शक्ति.” क्या कलते हैं ? कि, आत्मामें अक भाव शक्ति ऐसी है कि, कोई भी वर्तमान निर्मल पर्याय होती ही है, करनी पडती नहीं. यहां निर्मल (पर्यायकी) बात है. भाव शक्तिका स्वरूप विद्यमान अवस्था युक्त (है). वर्तमान निर्मल पर्याययुक्त विद्यमान है, ऐसी भाव शक्ति है. भाव शक्तिके कारण अक वर्तमान पर्याय होती ही है. भाव शक्तिके कारण पर्यायमें निर्मल अवस्थाकी विद्यमानता होती है, समजमें आया ? वह भी अक समयमें, जिस समयमें भाव शक्तिका परिणामन होता है, तो उस समयमें निर्मल पर्याय होती है. यह भाव शक्तिका कार्य है, आडाडा ! भाव नाम उस समयमें विद्यमान अक अवस्था होती ही है. भाव शक्तिके कारण वर्तमानमें निर्मल पर्याय विद्यमान होती ही है, आडाडा ! मैं निर्मल पर्याय करूं तो होवे, ऐसी बात है नहीं, ऐसा कलते हैं. आडाडा ! सूक्ष्म भाव (है).

भाव शक्तिका अर्थ ऐसा है कि, आत्मामें (अक) ऐसा गुण है कि, वर्तमानमें विद्यमान निर्मल अवस्था होती ही है. थोडा गंभीर है. आत्मामें अनंत शक्तियां हैं, उसमें अक भाव शक्ति ऐसी है कि, जिसके कारण वर्तमानमें हयातीवादी विद्यमान निर्मल अवस्था होती ही है. भावशक्तिके कारण विद्यमान निर्मल अवस्था होती है. आडाडा ! यहां निर्मल (पर्यायकी) बात है. मलिन (पर्यायकी) बात नहीं है.

भाव शक्तिके कारण-भाव (अर्थात्) भवन, निर्मल परिणामनका भवन. भावशक्तिके कारण विद्यमान परिणामन होता ही है.

श्रोता : उसका ज्ञान तो करना पडता है न ?

पूज्य गुरुदेवश्री : ज्ञान करना दूसरी बात है. परंतु यहां विद्यमान पर्याय, भाव शक्तिके कारण होती ही है. मैं कइं तो इस भाव शक्तिमें निर्मलता हो, ऐसी बात यहां नहीं. ऐसा कहते हैं. आहाहा !

किरसे कहते हैं. जैसे के जैसे जाने नहीं देंगे. यह तो बड़ी शक्ति है. भगवान आत्मामें जैसे ज्ञान शक्ति है, आनंद शक्ति है, श्रद्धा शक्ति है, अस्तित्व शक्ति है, जैसे अक भाव शक्ति है. भाव शक्तिकी स्थिति क्या ? कि शक्ति तो त्रिकाल है परंतु उस शक्तिका कार्य क्या ? कि वर्तमानमें अनंत गुणकी निर्मल पर्याय विद्यमान हो ही हो. वर्तमानमें निर्मल पर्यायकी विद्यमानता होती ही है. यहां तो सम्यग्दर्शनकी बात है न ? अज्ञानीकी बात नहीं है. यह बात तो भाव शक्ति और शक्तिवानका जिसे अनुभव है, उसे निर्मल पर्याय विद्यमान होती ही है. यहां भिष्यादृष्टिकी बात नहीं है. समझमें आया ?

यहां तो भाव शक्ति और शक्तिको धरनेवाला भगवान उसकी जिसे प्रतीति (हुँई है) और ज्ञानकी पर्यायमें यह गुण और द्रव्य ज्ञेयरूपमें आया है (उसकी बात है). ज्ञान (स्वरूप) निर्मलरूपसे आनंदकी पर्यायके साथ (ज्ञानमें) आया है. उसकी भाव शक्तिमें निर्मल पर्याय विद्यमान होती है. समझमें आया ? आहाहा !

दूसरे तरीकेसे कहें तो, जो भावशक्ति है (उसकी) पूर्वकी निर्मल पर्याय थी, उसके कारण बादमें निर्मल पर्याय हुँई, ऐसा नहीं है. ऐसा कहते हैं. धीरेसे समझनेकी बात है. यह बात बहुत बार व्याख्यानमें ली थी. भाव शक्तिका स्वरूप – वर्तमानमें इस शक्तिके कारण वर्तमान निर्मल पर्यायकी उपाती – विद्यमान होती ही है. आहाहा ! जैसे भाव शक्तिके कारण केवलज्ञानकी पर्याय विद्यमान होती है. (यहां) कहते हैं कि, पूर्वका मोक्षमार्ग था तो यह (केवलज्ञानकी) पर्याय हुँई, ऐसा नहीं है. इस भाव शक्तिके कारण वर्तमान केवलज्ञानकी पर्याय विद्यमान है, आहाहा !

जिस समय जो पर्याय होती है वह काललब्धि (है). जिस समय जो पर्याय होती है वह काललब्धि. (यह) अक बात (हुँई). स्वामी कार्तिकने कहा कि, प्रत्येक द्रव्यकी काललब्धि होती है. अर्थात् उस समयमें वह पर्याय उसकी काललब्धि है. प्रवचनसार १०२ गाथामें कहा कि, जन्मक्षण है (अर्थात्) उस पर्यायकी उत्पत्तिका काल होता है. यहां निर्मल (पर्यायकी) बात है. परंतु काल है, उस समयमें होती है, काललब्धि है परंतु उसका कारण कौन ? यह भाव शक्ति है तो निर्मल पर्याय इसमें होती ही है. समझमें आया ? (यहां) विकल्प नहीं है. विकल्प करे तो होता है, ऐसा नहीं है. विशेष कहेंगे....



प्रवचन नं. २८

शक्ति-३३ ता. ०७-०८-१९७७

भूतावस्थत्वरूपा भावशक्तिः ॥३३॥

समयसार, परिशिष्ट अधिकार (यलता है). शक्तिका वर्णन (यल रडा) है. आत्मा जो वस्तु है, उसमें अनंत शक्तियां हैं. प्रत्येक शक्तिका लक्षण भिन्न-भिन्न है. कोई शक्तिका लक्षण दूसरी शक्तिमें आता है, ऐसा नहीं. ऐसा आत्मा जिसको निर्विकल्प अनुभवमें आया हो, उसकी बात है, आडाडा !

व्यवहार रत्नत्रयके रागसे भी यीज भिन्न है. रागकी क्रियासे आत्माका आत्मज्ञान होता है, ऐसा नहीं. राग बंधका कारण है. उससे उसमें अबंधका कारण मोक्षमार्ग होता नहीं. मोक्षमार्ग तो अबंध स्वरूपी भगवान आत्मा, सुभामृत, अमृतका सागर प्रभु ! उसके पास (जाने से मोक्षमार्ग प्रगट होता है). यहां तो पडले अधिकारमें आया कि, ज्ञानकी एक समयकी पर्याय जब उत्पन्न होती है, तो उसके साथ अनंत गुणकी पर्याय साथमें उछलती है. उछलती है अर्थात् उत्पन्न होती है. यहां सम्यक्दृष्टिकी बात है. उसने भगवान आत्मा ! अतीन्द्रिय आनंद, सुष स्वरूप, सुषका सागर उसकी ओरका पता दिया (और) अंतर अनुभव हुआ. विकल्पसे और निमित्तसे अनुभव नहीं होता. अनुभव तो शुद्धताका परिणाम अपने द्रव्य स्वभाव सन्भुष, त्रिकाली द्रव्य सन्भुष करनेसे (होता है).

कल रात्रिको कडा था न ? (आत्माके) असंख्य प्रदेश है. प्रत्येक प्रदेशमें पर्याय भिन्न-उपर है. समझमें आया ? यह आत्मा जो है वह तो इस शरीर प्रमाण है. परंतु (अंदर) अपनी यीज भिन्न है. इसमें बाहर जो उपर-उपर असंख्य प्रदेश है, उसमें यह पर्याय है, ऐसा नहीं. समझमें आया ? यहां शरीरमें – पेटमें अंदरमें असंख्य प्रदेश है तो प्रदेश-प्रदेशमें पर्याय भिन्न उपर है. रात्रिको आया था. एक पोईन्टमें पर्यायका क्षेत्र भिन्न है (और) ध्रुवका क्षेत्र भिन्न है. आडाडा ! यह तो अवैकिक बातें हैं, भगवान !

असंख्य प्रदेशमें अनंत गुणसे बिराजमान बादशाह आत्मा है, आडाडा ! और प्रत्येक असंख्य प्रदेश इसका देश है और अनंत गुण उसका गाम है. गामको क्या कहते हैं ?

गांव है और अक-अक गांवमें अनंती प्रजा है, आडाडा ! यह तो हिन्दी भाषा है. थोड़ी-थोड़ी किसीको नहीं समझमें आये तो रात्रिको पूछ सकते हैं.

यहां तो प्रभु ! अंतर्मुख दृष्टि करनेका अर्थ यह है कि, सारे असंभ्य प्रदेशमें पर्याय उपर है. शरीर और आत्मा भिन्न (है). यह बाह्य पर्याय है ये उपर है, असा नहीं. बाह्य प्रदेशमें भी पर्याय उपर है और अंतरके प्रदेशमें भी पर्याय उपर है, समझमें आया ?

असंभ्य प्रदेशमें अनंत गुण (हैं). प्रत्येक (गुणकी) पर्याय भिन्न-भिन्न हैं. इस पर्यायका लक्ष छोडकर, (मात्र) उपरकी (पर्यायका) लक्ष छोडना, असा नहीं. अंदरके प्रदेशमें पर्याय है, उन सबका लक्ष छोडकर, अंदर ध्रुव भगवान है, ध्रुवकी धारा (है, उसका लक्ष करना). आडाडा ! समुद्रमें ध्रुवके तारेसे जडाज यलता है न ? उसके लक्षसे (जडाज यलता है). ध्रुव तारा डोता है न ? समुद्रमें जडाज यलता है न ? (उसमें) ध्रुवका तारा डोता है. उसके स्थानमें वही रहता है. वह फिरता नहीं. बडी आगबोट समझते हैं न ? स्टीमर. स्टीमर कडो कि आगबोट कडो (अक ही बात है). आडाडा ! वह सब ध्रुवके तारेके लक्षसे यलता है. वैसे भगवान आत्मा ध्रुवरूप जो अंदर वस्तु है, अक समयकी पर्याय असंभ्य प्रदेशमें उपर है, उससे अंदर ध्रुवपना भिन्न है. उस ध्रुवकी ओर पर्यायको वर्तमानमें गहराईमें ले जाना. आडाडा ! तब उस पर्यायने ध्रुवमें अकता करी. पर से अकता थी, (अब) स्वसे अकता लुई. रागके साथ अकता थी, उस पर्यायकी ध्रुवके साथ अकता लुई. अकताका अर्थ ? ध्रुव और पर्याय अक डो जाती है, असा अकताका अर्थ नहीं. पर्याय उस ओर जुकती है तो अकता कडनेमें आता है. असा मार्ग (है) ! बहुत सूक्ष्म, बापू ! असा सत्य है, वह अंदरमें बैठे नहीं, अनुभव न डो और व्रत और तप करनेसे कल्याण डो (जायेगा, असा भाव) मिथ्यात्वभाव, पापंडभाव है. समझमें आया ?

ध्रुव विद्वानंद, आनंदरस, ज्ञानरस, शांतरस, वीतरागरस, जवतर शक्तिका रस, यिति, दशि, ज्ञानका रस, असे (सब रस) अंदर ध्रुवमें भरा पडा है. आडाडा ! उस ओर पर्यायको अंतरमें जुकाना तब निर्विकल्प दृष्टिमें अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद आना, ये पर्याय लुई वह भाव शक्तिके कारणसे लुई, असा कडनेमें आता है.

अभी बहुत बात बाकी है. क्या है ? शब्द तो बहुत थोडे हैं. “विद्यमान अवस्थायुक्तताइप...” आत्मा (की ओर) अंतर्मुख दृष्टि करनेसे, अनंत शक्तिमें अक भाव शक्ति पडी है कि, जो भावकी शक्ति वर्तमान विद्यमान अवस्थाको प्रगट करती है. भावशक्तिके कारण वर्तमानमें पर्यायकी लयाती डो, विद्यमान डो, वह भाव शक्तिके कारणसे है. क्या कडा ?

श्रोता : (तो फिर) पर्याय पर्यायका कारण नहीं लुई.

पूज्य गुरुदेवश्री : वह तो अपेक्षित कडा. यहां उससे थोडा आगे ले जाना है न ? बादमें उत्पाद्, उत्पाद् के कारणसे (डोता है), यह बादमें लेना है.

यहां तो भाव शक्ति जैसे लिया न ? “विद्यमान अवस्थायुक्ततारूप...” भगवान आत्मा में जितनी अनंत शक्तियां हैं, (उन) प्रत्येक शक्ति में भाव (शक्तिका) रूप है. भाव शक्ति भिन्न है. ज्वतर, यिति, दृशि, ज्ञान, सुष, वीर्य, प्रभुत्व, विभुत्व, सर्वदर्शित्व, सर्वज्ञ, स्वच्छत्व, प्रकाश, असंकुचितविकासत्व, अकार्यकारणत्व, परिणयपरिणामकत्व, त्यागउपादानशून्यत्व, अगुरुलघु आदि सब शक्ति में (भाव शक्तिका रूप है). ४७ शक्ति कंडस्थ है. हमेशा पहले इसका ही स्वाध्याय होता है. सबेरे उठकर यह स्वाध्याय करते हैं. समझ में आया ? कहां न ? ज्वतर, यिति, दृशि, ज्ञान, सुष, वीर्य, प्रभुत्व, विभुत्व, सर्वदर्शित्व, सर्वज्ञ, स्वच्छत्व, प्रकाश, असंकुचितविकासत्व, अकार्यकारणत्व, परिणयपरिणामकत्व, त्यागउपादानशून्यत्व, अगुरुलघुत्व, उत्पाद्व्ययध्रुवत्व, परिणाम, अमूर्तत्व, अकर्तृत्व, अभोक्तृत्व, निष्क्रिय, नियतप्रदेशत्व, स्वधर्मव्यापकत्व, साधारण-असाधारण-साधारणअसाधारण धर्मत्व शक्ति, विद्ब्रह्मधर्मत्व, तत्त्व, अतत्त्व, ऐक्यत्व, अनेक्यत्व, भाव, अभाव, अभी भाव (शक्ति में) आये हैं. भाव, अभाव, भावाभाव, अभावभाव, भावभाव, अभावभाव, भाव, क्रिया, कर्म, कर्तृत्व, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण, स्वस्वामीसंबंध शक्ति, (ये) ४७ हो गई. इन ४७ शक्ति से भी अनंत शक्ति अंदर है. कथन में कितना कहे ? आहाहा !

भगवान अनंत चैतन्य रत्नाकर से भरा पड़ा है. अंदर में अमृतका सागर उछलता है. परंतु किसको ? उछलती है कहां न ? पहले आया था. ज्ञान पर्याय उछलती है. उसमें (साथ में) अनंत शक्ति उछलती हैं. परंतु किसको ? कि जिसकी दृष्टि द्रव्य पर गई है और पर्याय में आनंदका वेदन आया है, उसको भाव शक्तिकी पर्याय विद्यमान आनंदकी (पर्याय) प्रगट होती है. भाव शक्तिकी पर्यायका भी भवन. भाव शक्तिका भवन. यहां विद्यमान कहां न ? भाव शक्ति है उसका भवन. विद्यमान अवस्था युक्तपन. कोई भी समय में भाव शक्तिके कारण विद्यमान अवस्था होती ही है, करनी पड़ती नहीं. ‘में (यह पर्याय) करूं’ ऐसा नहीं है.

अनंत शक्तिका पींड, प्रभु ! अंदर में वर्तमान ज्ञान पर्याय में सारे द्रव्यको ज्ञेय बनाकर उसकी प्रतीति हुई, निर्विकल्प वेदन हुआ तो उस समय में ज्ञानकी पर्याय (विद्यमान है). ज्ञानगुण में भी भाव (शक्तिका) रूप है तो ज्ञान गुण में भी वर्तमान अवस्थायुक्तपना होता है. सूक्ष्म बात है, समझ में आया ? पहली ज्वतर शक्ति ली है. ज्वतर शक्ति में ज्ञान, दर्शन, आनंद सबका प्राण है. यह ज्वतर शक्तिका जो भाव है उसकी वर्तमान अवस्था विद्यमान होती ही है. भावशक्तिके कारण अपनी पर्याय होती है परंतु ज्वतर शक्तिके कारण उसमें भावरूप शक्ति है तो उस कारण से उसकी विद्यमान अवस्था दर्शन, ज्ञान, चारित्र और सत्ताकी पर्याय विद्यमान अवस्थायुक्त होती है, आहाहा !

दूसरी रीत से कहे तो, यह वर्तमान भाव शक्ति अवस्थायुक्त है तो उस समय में जो अवस्था होनेवाली (है), यह भाव शक्तिका भवन (होता है). (भवन)–परिणामन ऐसा लेना

है न ? परिणामन तो स्वतंत्र है. परंतु यहां भाव शक्तिके कारण परिणामन है, ऐसा लेना है, समझमें आया ? जैसे अनंत गुण जो हैं (उसमें भाव शक्तिका रूप है). ज्वतर शक्तिमें भावशक्तिका रूप है, भाव शक्ति (उसमें) नहीं. एक गुणमें दूसरे गुणका अभाव (है). 'निराश्रय गुणा' आता है न ? गुणके आश्रय गुण नहीं, द्रव्यके आश्रयसे गुण है. आहाहा ! भगवान् आत्मा ! उसके आश्रयसे अनंत गुण है. परंतु एक गुणके आश्रयसे दूसरा गुण है, ऐसा नहीं.

ज्वतर शक्ति जो है उसके आश्रयसे भाव शक्ति है कि, भाव शक्तिके आश्रयसे ज्वतर शक्ति है, ऐसा नहीं है. फिर भी ज्वत्व शक्तिमें भाव शक्तिका रूप है तो ज्वतर शक्तिकी वर्तमान अवस्थायुक्तपना होना, यह उसका स्वभाव है, आहाहा !

जिसने सम्यग्दर्शनमें आत्मा प्राप्त किया, पूर्णानंदका नाथ ! यैतन्य रत्नाकर ! अमृतका सागर ! अनंत शक्तिका सागर ! भगवान् (आत्मा) ! अपनी पर्यायमें जब उत्पन्न होता है (तो उसकी) विद्यमान अवस्था होती ही है. उसको (पर्याय) करनी पड़ती नहीं, ऐसा कहते हैं. अरे...! ऐसी सूक्ष्म बातें हैं. शक्तिका अधिकार बहुत सूक्ष्म है. क्योंकि यह तो द्रव्यदृष्टिका अधिकार है न ? आहाहा !

अरे...! (आत्महित) कभी किया नहीं. बाहरकी क्रियामें माथापट्टी करके मर गया. संसारकी क्रियासे झुरसद नहीं (और कभी) झुरसद ले तो व्रत, तपस्या, भक्ति और पूजाकी क्रिया करी. वह भी राग किया है. बंधका (कारण) है, संसार है. वह संसार है और संसारका कारण है. समझमें आया ?

यह शक्तियां जो हैं उसमें भाव शक्तिका रूप प्रत्येक (शक्तिमें) है; तो ज्वन शक्तिकी पर्याय विद्यमान अवस्थायुक्त ही होती है, आहाहा ! यह अबंध परिणाम है. ज्वतर शक्तिका वर्तमान अवस्था संहितपना, यह अबंध परिणाम है. यह मोक्षका मार्ग है अथवा यह मोक्ष ही है, आहाहा ! ऐसी बहुत सूक्ष्म बातें ! परंतु (उसमें) क्या हो सकता है ?

अरुपी भगवान् (आत्मामें) रूप तो नहीं परंतु पुण्य-पापके विकल्पकी जड़ता भी नहीं. उसके मूलमें (स्वरूपमें) यह है ही नहीं, आहाहा ! उसके मूलमें तो अनंत आनंद, अनंत ज्ञान, अनंत शांति ऐसी अनंत शक्तिओंका संग्रहालय (भरा पड़ा है). संग्रह + आलय (अर्थात्) संग्रहका घर. आहाहा !

हमने कहा था न ? पीछले वर्ष बंधी गये थे (तब किसीके यहां) भोजन करने गये थे. यहां एक टाटाका मकान है. यहां एक लड़का था. (तत्त्वका) बहुत प्रेमवाला था. शादीके बाद यहां आया था. शादीके बाद बहुत छोटी उम्रमें (देहांत हो गया). उसको कीडनीका दर्द हो गया. बहुत नरम लड़का था. उसके पास हम गये थे. परंतु शक्ति नहीं थी तो उसकी माताने कीडनी दि थी. फिर भी देह छूट गया. एक सालकी शादी ! आहाहा ! (कैसी

સ્થિતિ !)

જ્ઞાનમાં ભી જો પર્યાય વિદ્યમાન અવસ્થાયુક્તપને હૈ, વહ ભાવરૂપ (ભાવશક્તિ) કે કારણ હૈ. વૈસે શ્રદ્ધા ગુણમાં ભી ત્રિકાલ શ્રદ્ધા ગુણ હૈ. ઉસમાં ભી ભાવરૂપતા હૈ. સમ્યગ્દર્શનકી પર્યાયમાં પર્યાય સહિત વિદ્યમાનતા હોતી હૈ. આનંદ ગુણ હૈ તો આનંદ ગુણમાં ભી ભાવ શક્તિકા રૂપ હૈ, તો આનંદ ગુણ ભી વર્તમાન આનંદકી પર્યાય વિદ્યમાન સહિત હૈ, આહાહા ! સમ્યક્દૃષ્ટિકો અનંત ગુણકી પર્યાય, ઉસ-ઉસ ગુણકી પર્યાય ઉસ-ઉસ વર્તમાન અવસ્થા વિદ્યમાન સહિત હૈ. કરની પડતી નહીં, આહાહા !

કર્તા ગુણસે કહનેમાં આયે તો ઐસે (કહા જાયે કિ), અનંત ગુણકી પર્યાયકા કર્તા હૈ. સમજે ? આગે કર્તા-કર્મ આયેગા. (આત્મામાં) કર્તા નામકી એક શક્તિ હૈ તો ઇસ શક્તિમાં ભી ભાવ શક્તિકા રૂપ હૈ. યહ કર્તા શક્તિ ભી વર્તમાન અવસ્થા વિદ્યમાન સહિત હૈ, આહાહા ! સમજમાં આયા ? થોડા ગંભીર (હૈ). યહ તો બહુત સૂક્ષ્મ બાર્તે હૈં.

દિપચંદ્રજીને પંચસંગ્રહમાં ઇસકા વિસ્તાર કિયા હૈ. બહુત (વિસ્તાર) કિયા હૈ. થોડા-થોડા (વર્ણન) કિયા હૈ પરંતુ વૈસે બહુત સંક્ષેપમાં સમાપ્ત કિયા હૈ. લેકિન શક્તિકા વર્ણન તો એક દિપચંદ્રજીકે અલાવા કહીં ઇતના વિસ્તાર આયા નહીં. થોડા સાધારણ સમયસાર નાટકમાં આતા હૈ. બાકી વિસ્તાર ચિદ્વિલાસમાં ઓર પંચ સંગ્રહમાં (બહુત આયા હૈ).

યહાં કહતે હૈં કિ, “વિદ્યમાન અવસ્થા...” (અર્થાત્) વર્તમાન હોનેવાલી અવસ્થા—વિદ્યમાન અવસ્થા. દ્રવ્ય જો હૈ ઇસમાં અનંત શક્તિયાં હૈં. પ્રત્યેક શક્તિકી વર્તમાન વિદ્યમાન અવસ્થા હોતી હી હૈ. યહ અવસ્થા—પરિણમન (હોતા હી હૈ). શક્તિ જો હૈ યહ દ્રવ્યમાં હૈ, ગુણમાં હૈ ઓર પર્યાયમાં વ્યાપ્ય હોતી અવસ્થા, વિદ્યમાન અવસ્થા સહિત હૈ, આહાહા !

ધર્મીકો આનંદકી અવસ્થા સહિત આનંદ ગુણ હૈ. જ્ઞાનગુણકી અવસ્થા સહિત જ્ઞાનગુણ હૈ. સ્વચ્છતાકી પર્યાય સહિત સ્વચ્છતા શક્તિ હૈ. પ્રભુત્વકી પર્યાય સહિત પ્રભુત્વ શક્તિ હૈ, આહાહા !

યહ કરિયાવર નહીં બિછાતે ? (હિન્દીમાં) કરિયાવરકો ક્યા કહતે હૈં ? લડકીકો દહેજ (દેતે હૈં ન ?) ગૃહસ્થ હો વહ દો-ચાર-પાંચ લાખકા (દહેજ) દેતે હૈં. કુટુંબ દેખને આયે કિ, દેખો ! યહ ઇતના દિયા, યહ પાંચ-પાંચ હજારકી સાડીયાં. (ઐસી-ઐસી) ૨૫ સાડી દેતે હૈં. પાંચ હજાર તોલા સોના દેતે હૈં. યે સબ દેખા હૈ ન ? સમજમાં આયા ? આહાહા ! ઓર ઉસ સાડીકો પહનકર સ્ત્રી (બાહર) નિકલે તો લોગ નજર કરે. લોગોંકી નજર તો દૂસરી હોતી હૈ કિ, ઇસ સાડીમાં બહુત ભરા હૈ. યહ વિવાહીત સ્ત્રીકા સસુર ઐસા દેખે કિ, મૈને જો સાડી દી હૈ, વહ (લોગોંકી) નજરમાં આતી હૈ. ઇસે દેખતે હૈં. સમજમાં આયા ? સાડી દેખકર ઉસકે સસુરકો ઐસા હોતા હૈ કિ, મૈને સાડી બહુકો દી હૈ ઉસ સાડીકો લોગ દેખતે હૈં, તો મૈ ગૃહસ્થ હું, ઐસી (બાત) સાડીકે દ્વારા બાહર આતી હૈ. દૂસરા દેખનેવાલા દૂસરી દૃષ્ટિસે દેખતે

હું, દેખો ! યહ સબ જગતકે ઢોંગ.

યહાં કહતે હું કિ, સમ્યક્દૃષ્ટિકો ભાવ શક્તિકે કારણ નિર્મલ પર્યાયકી વિદ્યમાનતા સહિત વહ શક્તિ હોતી હૈ. ઇસકો જ્ઞાની જાનતે હું ઓર અનુભવતે હું, આહાહા ! સમજમેં આયા ? જગતસે સારી અલગ જાતિ – ભિન્ન જાતિકી (બાત) હૈ. આહાહા ! અભી તો ઇસ વક્ત યહ તુફાન (ચલ રહા હૈ કિ), શુભ જોગકી ક્રિયા વ્રત, તપ, અપવાસ યે સબ ધર્મ હૈ ઓર ધર્મકા કારણ હૈ. અરે પ્રભુ ! પેપરમેં આયા થા. શુભ જોગ ધર્મ હૈ. ધર્મકા કારણ હૈ, ઐસા નહીં લિખા હૈ. ઓર શુભ જોગકો હેય માને વહ મિથ્યાદૃષ્ટિ હૈ, ઐસા લિખા હૈ. અરરર...! પ્રભુ યહ ક્યા કરતા હૈ, ભાઈ ?

યહાં તો શુભ જોગકા અભાવ બતલાતે હું. શુદ્ધ શક્તિ જો હૈ, વહ પ્રત્યેક શક્તિકી વર્તમાન નિર્મલ વિદ્યમાન અવસ્થા હૈ. ઇસ અવસ્થામેં વિકારકા અભાવ, યહ સ્યાદ્વાદ હૈ, યહ અનેકાંત હૈ, આહાહા !

વિકારસે (નિર્મલ પર્યાય) હોતી હૈ, ઐસા નહીં. યહ નિર્મલ શક્તિકી શક્તિમેં ભાવ નામકા રૂપ હૈ, તો પ્રત્યેક શક્તિ નિર્મલરૂપસે વિદ્યમાન પ્રગટ હોતી હૈ. અરે..! ઐસી બાતેં ! સમજમેં આયા ? જિતની અનંત શક્તિ હૈ ઉતની પ્રત્યેક શક્તિમેં ભાવ શક્તિકા રૂપ હૈ. (અંદર) જો જ્ઞાન ગુણ હૈ ઇસકી વર્તમાન જ્ઞાન અવસ્થા વિદ્યમાન સહિત હી હોતી હૈ. વહ પઢાઈ કરે, ઓર શાસ્ત્ર પઢે તો અવસ્થા પ્રગટ હોતી હૈ, ઐસા નહીં હૈ. સમજમેં આયા ? ઐસે શ્રદ્ધા ગુણ ત્રિકાલ હૈ. સમકિત પર્યાય હૈ. શ્રદ્ધાગુણ ત્રિકાલ હૈ. ઇસમેં ભાવ શક્તિકા રૂપ હૈ. યહ શ્રદ્ધા ગુણ સમકિત પર્યાયકી વર્તમાન વિદ્યમાન (અવસ્થા) સહિત હી હૈ. આહાહા ! ઐસા હૈ. (ભાવ) શક્તિ દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાય તીનોમેં વ્યાપતી હૈ. સમજમેં આયા ? ઓર યહ શક્તિ વર્તમાન પર્યાયકી વિદ્યમાન અવસ્થા સહિત હૈ. તો યહ શક્તિ કોઈ રાગકા કાર્ય હૈ, ઐસા નહીં. ઇસી તરહ યહ અવસ્થા રાગકા કારણ હૈ, યહ અવસ્થા વ્યવહારકા કારણ હૈ, ઐસા ભી નહીં હૈ. ઐસી બાતેં હું, બાપૂ ! આહાહા !

અરે...! દુનિયાકો કહાં પડી હૈ ? કહાં જાયેંગે ? ઉલટે રાસ્તે પર (જા રહે હું). બાપૂ ! સંસારકા રાસ્તા તો વિપરીત હૈ હી, આહાહા ! ૨૦-૨૨ ઘંટે અકેલે પાપકી પોટલી (બાંધતા હૈ), આહાહા ! ૬-૭ ઘંટે સોતા હૈ, ૬-૭ ઘંટે સ્ત્રી-પુત્રકો રાજી રખનેમેં, ખુશ રખનેમેં જાયે, અરરર...! બાપૂ ! તુને યે ક્યા ક્રિયા ? આહાહા ! જિસે જો ધંધા હોતા હૈ વહ (ઇસીમેં પડા હૈ). વહ સબ તો પાપકે પરિણામ (હું). ઇસકા તો યહાં અભાવ બતાના હૈ, આહાહા ! ધર્મીકો ઇસ પરિણામકા અભાવ હૈ. સમજમેં આયા ? ધર્મી ઐસા જો આત્મા ઇસમેં અનંત શક્તિરૂપી ધર્મ (હૈ). 'વસ્તુ સહાવો ધમ્મો'. વસ્તુકા જો ત્રિકાલી સ્વભાવ હૈ, વહ ધર્મ (હૈ). યહ ઇસકી વર્તમાન પર્યાય પ્રગટ હોતી હૈ, યહ પ્રગટ ધર્મ (હૈ). આહાહા ! યે સબ સમજે ઇસકે બજાય યહ વ્રત કરે, અપવાસ કરે, કોઈ બેચારા કહતા થા, હમ વ્રતકા પાલન કરે, બ્રહ્મચર્યકા પાલન

करें, महाप्रतका पालन करें, दया पालन करे, जूठ नहीं बोले, सत्य बोले, कुटुंब आदिको छोड़कर निवृत्ति ले लें, तो (भी) धर्म नहीं ? धूलमें भी धर्म नहीं है. आहाहा !

श्रोता : तो क्या करना ?

पूज्य गुरुदेवश्री : यह करना. कहते हैं न ? भगवान ! परका करना ऐसा मानना यह मरणा है. 'करना है, यह मरना है' आता है ? निहालचंद्र सोगानीमें आता है. द्रव्यदृष्टि प्रकाश तीसरे भागमें आता है. 'करना सो मरना' अरे..! मैं राग करूं, (ऐसा) रागका करना सो मरना (है). आहाहा ! (रागको करनेकी मान्यतावाला) यैतन्यकी शक्तिका अनादर करता है अर्थात् अनंत यैतन्य शक्ति जो है, वह है ही नहीं (और) रागका कर्ता वही मैं हूँ — ऐसा (माननेवाला) आत्मा त्रिकाळी भगवान (आत्माकी) हिंसा करता है, आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा !

भाव शक्तिमें तो बड़ी (गंभीरता है). अक तो उसमें विद्यमान अवस्था सहित कर्मबद्धका निर्णय होता है. भाव शक्तिके कारण अपनी कोई भी विद्यमान पर्याय होती ही है. इस (पर्यायको) करनी पड़े, ऐसा नहीं. (विद्यमान अवस्था) होती ही है और अनंत गुणमें भाव शक्तिका रूप है, इस कारणसे अनंत गुणकी वर्तमान विद्यमान पर्याय सहित ही है, आहाहा ! ऐसी विकार रहित, निर्मल पर्याय सहित — इसको यहां भाव शक्तिकी विद्यमान अवस्था कहनेमें आती है. उसमें रागका अभाव है, व्यवहार रत्नत्रयके विकल्पका अभाव है, — यह अनेकांत है. उससे (रागसे धर्म) होता है, ऐसा नहीं. अपने कारणसे, भावशक्तिके कारणसे निर्मल अवस्था होती है. रागसे निर्मल अवस्था होती है, ऐसा नहीं. रागसे (निर्मल पर्याय) नहीं होती है, उसका नाम अनेकांत है. कुछ समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बातें हैं.

अरेरे...! उसने जवकी दरकार नहीं की है. मनुष्यपनाका पांच-पयास-साठ-सत्तर वर्ष भोकर यवा जाता है. त्रसमें रहनेकी २००० सागरकी स्थिति है. वह पूरी होगी और अगर यह आत्माका कार्य नहीं किया तो निगोदमें जायेगा, आहाहा ! समझमें आया ? त्रसकी स्थिति २००० सागरकी है. पंचेन्द्रिय मनुष्यकी स्थिति १००० सागरकी है. पंचेन्द्रिय भव करे तो १००० हजार सागरका (करे). और यदि यह स्थिति पूरी हुई और आत्माका कार्य नहीं किया तो प्रभु ! अरे...! तो वह भवमें रहनेवाला है, आहाहा ! यौरासीके अवतारमें धुमकर निगोदमें यवा जायेगा. पंचेन्द्रियकी स्थिति पूरी हो गई तो अकेन्द्रियमें जायेगा. ये तेरे पांच-पयास लाख, पांच-दस कोड पैसे, स्त्री, पुत्र कोई तेरे साथ नहीं आयेंगे. आहाहा ! यह सब पापके भाव साथमें आयेंगे, आहाहा ! यहां तो कहते हैं कि, उसे भी छोड़कर कदाचित् पुण्यभाव किये (तो) वह साथमें आयेंगे. (परंतु) पुण्यका भाव संसार है (और) उसका इल संसार है. पुण्यभाव संसार (है) और उसका इल भी संसार (है). आहाहा !

यहां तो भगवान ऐसा कहते हैं कि, प्रभु ! तेरी शक्तिमें (तो) संसार नहीं परंतु

શક્તિકી અવસ્થા – વિદ્યમાન અવસ્થા સહિત છે, ઇસ અવસ્થામાં (ભી) સંસાર નહીં. સંસારકા વિકલ્પ જો છે, શક્તિકી વિદ્યમાન અવસ્થામાં ઉસ (વિકલ્પકી) અવસ્થાકા અભાવ છે, આહાહા ! એસી સ્પષ્ટ બાત છે પરંતુ લોગ ચિલ્લાતે હૈં. અરેરે...! હમ કહતે હૈં વ્યવહાર કારણ છે, સાધન છે. વ્રત, તપ, અપવાસ યહ સાધન (હૈ), ભાઈ ! વહ સાધન નહીં છે, ભાઈ ! વહ (સબ) કહા છે, (પરંતુ) વહ નિમિત્તકા જ્ઞાન કરાનેકો કહા છે, સમજમૈં આયા ?

યહાં કહતે હૈં કિ, “વિદ્યમાન અવસ્થા...” ઓહોહો ! જૈસે વિદ્યમાન તત્ત્વ શક્તિ છે, એસે શક્તિકી અવસ્થા ભી વિદ્યમાન હી હોતી છે. હયાતીવાલી અવસ્થા પ્રગટ છે હી. પ્રત્યેક ગુણકી વર્તમાન વિદ્યમાન અવસ્થા હોતી હી છે, કરની પડતી છે, એસા નહીં. આહાહા ! સમજમૈં આયા ?

જ્ઞાન, દર્શન, આનંદ, શાંતિ, સ્વચ્છતા, પ્રભુતા (આદિ શક્તિ છે, વૈસે) આત્મામૈં એક ઉત્પાદ્વ્યયધ્રુવ શક્તિ છે. વહ ચલ ગઈ છે. આત્મામૈં એક ઉત્પાદ્વ્યયધ્રુવ નામકી શક્તિ છે. જૈસે યહ ભાવ શક્તિ છે, વૈસે ઉત્પાદ્વ્યયધ્રુવ નામકી શક્તિ છે. ઉસ કારણસે સમય-સમયમૈં વર્તમાન વિદ્યમાન ઉત્પાદ્ હોતા હી છે. આહાહા ! ક્યા કહતે હૈં ? આત્મામૈં ઉત્પાદ્-વ્યય-ધ્રુવ નામકી શક્તિ-ગુણ છે. ઇસ ગુણકે કારણ વર્તમાન ઉત્પાદ્ ઓર પૂર્વકી પર્યાયકા વ્યય, (વર્તમાન) અવસ્થાકા વિદ્યમાનપના (ઓર) પૂર્વકી અવસ્થાકા અવિદ્યમાનપના, ઇસ શક્તિકા કાર્ય હી એસા છે, આહાહા !

પરકે કારણસે નિર્મલ શક્તિકી (અવસ્થા) હોતી છે, (ઉસકા) યહાં નિષેધ કરતે હૈં. વર્તમાન અવસ્થા યુક્ત છે, નિર્મલ અવસ્થા યુક્ત છે. ધર્મી જીવ, જિસકી દૃષ્ટિ દ્રવ્ય પર છે, ઉન્હૈં અનંત શક્તિકી નિર્મલતા-વર્તમાન અવસ્થાયુક્તપના છે. આહાહા ! એસા છે, પ્રભુ ! લોગોંકો એસા લગે કિ, યહ સબ નિશ્ચય ... નિશ્ચય (હૈ), પરંતુ નિશ્ચય યાની સત્ય ઓર વ્યવહાર માને ઉપચારિત-આરોપિત કથન. આહાહા !

અરે ભાઈ ! યહાં તો અનંત ભવકા છેદ કરકે, ભવભ્રમણ રહિત હોના, યહાં તો યહ બાત છે, ભાઈ ! આહાહા ! જૈસે યહ ભવ મિલા તો (ઇસ) ભવકે બાદ કદાચિત્ સ્વર્ગ મિલે, (તો ઉસમૈં ક્યા હો ગયા ?) કહતે હૈં ન ? ‘એકબાર વંદે જો કોઈ સમેદશિખર, નરક-પશુ ગતિ ન હોય’ નરક-પશુ નહીં હુઆ તો ક્યા હુઆ ? બાદમૈં નરક-પશુકી (ગતિ) હોગી. વર્તમાનમૈં જો કોઈ એસે બહુત શુભભાવ હો તો સ્વર્ગમૈં જાયેગા. આઠવૈં સ્વર્ગમૈં જાનેવાલા તિર્યચ – કોઈ આઠવૈં સ્વર્ગમૈં જાતા છે. (વહાંસે મરકર ફિરસે) તિર્યચ હોતા છે. આહાહા ! સમજમૈં આયા ? (વહાંસે) આઠવૈં સ્વર્ગમૈં જાયે (ઓર) સ્વર્ગકી સ્થિતિ પૂરી હોતી છે તબ વહાંસે કોઈ તિર્યચમૈં ચલા જાતા છે. આહાહા ! તો ‘નરક-પશુ ન હોય’ તો ઉસમૈં હુઆ ક્યા ? નરક યા પશુમૈં જાનેકા એક ભવ ન હો પરંતુ સમેદશિખરકી ભક્તિ, યાત્રાસે ભવકા અભાવ હો (એસા) તીનકાલમૈં નહીં છે, સમજમૈં આયા ?

यहां (अक साधु) आये थे. (अभी तो) गुजर गये. वहां प्रवचनमंडपमें ठहरे थे. हम आहार करके फिरते हैं, वैसे आहार करके यक्कर लगा रहे थे. वहां गये और बैठे. हम पैर तो छुते नहीं. (हम) बैठे तो उसने कहा कि, 'समेदशिपरकी यात्रा करे तो ४८ ભવमें भोक्ष जाये, असा समेदशिपरके माहात्म्यमें है. श्वेतांबरमें शत्रुंजयका असा माहात्म्य आया है कि, अकबार वहां कोई भी साधुको आहार-पानी दे तो उसका संसार नाश होता है—परित होता है. असे तुम समेदशिपरकी यात्रा (करो तो) संसार परित (नाश) होता है. यह सब जूठी बात है. उसके पास 'समेदशिपरका माहात्म्य' (नामका) पुस्तक था. (हमने पूछा) उसमें असा लिखा है ? (तो उन्होंने कहा) हां, (लिखा है). (छसलिये हमने कहा) 'यह भगवानकी वाणी नहीं' यह भगवानकी वाणी नहीं.

श्रोता : फिर उन्होंने क्या कहा ?

पूज्य गुरुदेवश्री : उसने पहले तो कहा कि, (समेदशिपरकी यात्रा करे) तो ४८ ભवमें भोक्ष यवा जाये' बादमें हमने असा कहा कि, असा है ही नहीं. (फिर उन्होंने कुछ कहा नहीं). बादमें क्या कहें ? समेदशिपरकी यात्रा लाभ बार, कोड बार, अजब बार करे तो भी वह तो शुभ भाव है. वह तो संसार है, आहाहा ! (असा मानना) वह (भाव) मिथ्यात्व है. रागसे मुझे लाभ होगा, समेदशिपरकी यात्रासे मेरा भवछेद होगा, (यह सब) मिथ्यात्व है. महा संसार ताप है. समजमें आया ? आहाहा ! ये लोग शत्रुंजयके लिये कहते हैं न ? यैत सुदी पुर्णिमा, कार्तिक सुदी पुर्णिमाको यात्रा करे तो कल्याण हो जायेगा. धूलमें भी (कल्याण) नहीं है.

यहां तो कहते हैं कि, कल्याणका कारण अपनी निर्मल भाव शक्ति है. उसकी वर्तमान पर्याय है, यह कल्याणका कारण है. समजमें आया ? वह कल्याणका कारण कछो या कल्याणरूप कछो, (अक ही बात है), आहाहा !

यहां तो (भाव) शक्ति अनंत गुणमें व्याप्त है. भाव नामकी शक्ति अनंत गुणमें व्याप्त है. अनंतगुणमें यह भाव शक्ति निमित्त है. भाव शक्ति पारिणामिक भावस्वरूप है. अनंत शक्तियां पारिणामिकभावस्वरूप है और उसका परिणामन है यह उपशम, क्षयोपशम (और) क्षायिक भाव(रूप) है. क्या कहा ?

भाव शक्ति जो कही वह तो पारिणामिक भावस्वरूप है. परंतु यह विद्यमान अवस्थायुक्त है. यह अवस्थायुक्त है, वह अवस्था उपशम, क्षयोपशम और क्षायिक सहित है. उदयभाव(रूप) नहीं. समजमें आया ? आहाहा ! लिखा है उसमें ? "विद्यमान अवस्था..." अवस्था नाम पर्याय. वर्तमान पर्याय युक्तरूप भाव शक्ति है. "(अमुक अवस्था जिसमें विद्यमान हो...)" आहाहा ! निर्मल पर्यायकी हयाती हो, यह भाव शक्तिका स्वरूप है, आहाहा ! समजमें आया ? उसमें तो असा कहा कि, जिसने द्रव्यस्वभावकी दृष्टि करी, और शक्तिकी प्रतीति

की, उसकी वर्तमान अवस्था—निर्मल अवस्था शक्तिके कारणसे है. रागके कारणसे निर्मल अवस्था विद्यमान है, ऐसा नहीं है. आहाहा !

(लोग) तो ऐसा कहे कि, पांच-पचीस लाभ भर्य करो और मंदिर बनाओ तो तुम्हारा कल्याण होगा, जाओ ! धूलमें भी कल्याण नहीं, समझमें आया ? तेरे आठ लाभमें या चार लाभमें (मंदिर बनाये तो) कोई धर्म होगा, ऐसा नहीं है. हम तो पहले से कहते हैं, आहाहा !

श्रोता : ४३ सालसे (कहते हो).

पूज्य गुरुदेवश्री : ४३ सालसे नहीं, उससे पहले संप्रदायमें भी हम कहते थे. वह सब रागकी मंदता है, पुण्य है. उससे जन्म-मरणका अंत आ जाता है, (ऐसा नहीं है). यहां तो निर्मल शक्तिकी निर्मल अवस्था संहित होना, यह मोक्षका कारण है, समझमें आया ? आहाहा !

“विद्यमान अवस्था...” (अर्थात्) पर्याय. “युक्तताइप...” (अर्थात्) संहितपनाइप, संहितपनाइप “..भावशक्ति” आहाहा ! “(अमुक अवस्था जिसमें विद्यमान...)” विद्यमान समझे ? हयाती. विद्यमान हो—मौजूद (हो). प्रत्येक गुणकी वर्तमान निर्मल पर्याय मौजूद ही होती है, होती ही है. करनी पडती नहीं. कमबद्धमें वह पर्याय ऐसी ही आती है, आहाहा !

श्रोता : अमुक शब्दका प्रयोग किया है (उसका अर्थ क्या ?)

पूज्य गुरुदेवश्री : अमुक अवस्था यानी जो अवस्था होनेवाली है वह. अमुक यानी जो अवस्था होनेवाली है वह अमुक अवस्था. सब अवस्था नहीं. “(अमुक अवस्था जिसमें विद्यमान हो)” जो वर्तमान अवस्था है यह अमुक (कहनेमें आती है). यह वर्तमान (अवस्था) जिसमें विद्यमान, हयाती धारण करके मौजूद हो. “उसइप भावशक्ति” — उसका नाम भावशक्ति कहनेमें आता है. आहाहा ! भावमें भवन होना (ऐसा उसका अर्थ है). भाव शक्तिका भवन (अर्थात्) पर्याय संहित होना, यह भाव शक्तिका कार्य है. निर्मल अवस्था (होती है), वह व्यवहार रत्नत्रयका कारण है या कार्य है, ऐसा नहीं है. आहाहा ! यह भारी — कठिन पडता है. पंच महाव्रत लिये, जैसे (व्रत) लिये, उस कारणसे यह विद्यमान निर्मल अवस्थाकी हयाती हुई, ऐसा नहीं है. समझमें आया ?

अध्यात्म पंचसंग्रहमें तो ऐसा लिखा है कि, अग्नि तापस होता है न ? ऐसा उससे लाभ होता हो तो अग्निमें पतंगिया भी गिरते हैं, तो उसको भी लाभ होना चाहिये और जलमें स्नान करनेसे, जलमें डूबकी मारनेसे (लाभ होता हो तो) जलमें तो जलयर (प्राणी भी) रहते हैं, उनका भी कल्याण होना चाहिये. बस ! स्नान करनेसे कल्याण होगा, (ऐसा मानते हैं). धूलमें भी नहीं होगा. समझमें आया ? वह कहा था न ? बताया था. और नग्न रहनेसे (मुक्ति होगी), तो नग्न तो पशु भी रहते हैं, उसमें क्या हुआ ? घेंटाका भी बारह महिनेके (बाह बाह काटते हैं). अभी तो केशलोचका बडा महोत्सव होता है

और सब प्रशंसा करते हैं. आहाहा !

श्रोता : यहाँ तो बाल हाथसे भींचते हैं.

पूज्य गुरुदेवश्री : उसमें क्या हो गया ? हाथसे भींचते हैं, (ऐसा मानते हैं). भींचनेकी शक्ति कहां है ? वह तो उसके कारणसे निकलता है. हाथसे भी नहीं निकलता है.

श्रोता : बिना हाथ लगाये निकल जाता है ?

पूज्य गुरुदेवश्री : बिना हाथ लगाये निकलता है. अक द्रव्य दूसरे द्रव्यको निकाले कहांसे ? आहाहा !

यहां तो ज्वतर, यिति, दशि, ज्ञान, सुभ, वीर्य (ऐसे) अनंत गुण लेने. वीर्य शक्तिमें भी भाव शक्तिका रूप पडा है. वीर्य जो है वह निर्मल अवस्थायुक्त ही वीर्य है. वीर्यमें निर्मल अवस्था सहित ही वीर्य है. यह वीर्य शक्तिका कार्य है. समझमें आया ?

दूसरी (बात) लें तो, वीर्य शक्ति स्वरूपकी रचना करता है. यह वीर्य शक्ति ४७ में पडले आ गयी. (वीर्य शक्ति) आत्म स्वरूपकी रचना करती है. इस वीर्य शक्तिको धरनेवाले द्रव्य स्वभाव पर अकाग्र होनेसे जो अनुभव होता है (तो) यह वीर्य शक्ति अनंत (गुणकी निर्मल) पर्यायकी रचना करती है. रागकी रचना करता है, यह वीर्य नहीं. यहां कहां न ? वीर्य अपनी अवस्था सहित है तो निर्मल वीर्य शक्ति है. उसकी अवस्था भी निर्मल अवस्था सहित है. रागकी रचना करे यह वीर्यकी विद्यमान अवस्था नहीं. यह अवस्था ही आत्माकी नहीं है.

श्रोता : तो राग कौन रचता है ?

पूज्य गुरुदेवश्री : नपुंसक वीर्य रचता है. नपुंसकको वीर्य नहीं होता तो प्रजा नहीं होती. वैसे शुभभाव नपुंसक है तो उससे धर्मकी प्रजा नहीं होती, आहाहा ! (यह बात तो) बहुत बार कहते हैं.

यहां तो प्रभुत्व शक्ति आदिमें भावरूपता है तो प्रभुत्व शक्ति भी वर्तमान विद्यमान अवस्था सहित है. यहां तो यह शक्ति पर्यायका परिणामन सहित लेनी है. क्योंकि यहां सम्यक्दृष्टिकी बात है न ? अथवा जिसने आत्माका अनुभव किया उसको शक्तिकी प्रतीति आयी, (उसे) शक्तिकी वर्तमान अवस्था सहित ही (पर्याय) होती है. परिणामनमें यह द्रव्य और शक्तिका भाव हुआ तब पर्यायमें प्रतीत आयी. लक्षमें वस्तु (अर्थात्) शक्ति और शक्तिवान पर्यायमें ज्वालमें न आया तो, ज्वालमें आये बिना प्रतीत किसकी ? इसलिये अवस्था सहित दशा त्रिकाली द्रव्य और गुणकी प्रतीत करती है. समझमें आया ? ऐसी बातें हैं. कहीं नजरमें (भी यह बात) आयी नहीं और कभी कुछ किया नहीं. करनेका था वह किया नहीं और आत्माको सर पर मारकर मार डाला. आहाहा ! रागमें और रागमें (मार डाला).

अकबार (जोहरीकी बात) की थी. अक थोर जोहरीकी टुकान पर ज्वाहरात लेने गया.

मूलमें योर था. १० हजार रुपिया उसके पास (था, तो उसे लेकर गया और कडा), 'जवाहरात लाओ' (जोहरीने) ५-५० हीरे निकाले. वह (योर) थिकना मोम होता है उसे साथ लेकर गया था. भीषण होता है न ? हिन्दीमें मोम कहते हैं. मोमको जेबमें लेकर गया था. जोहरीने २५-५० हीरे बाहर निकाले तो उसे जबर नहीं थी कि, (ये योर है). उसने पचास हजार, लाभका अेक हीरा ले लिया. और मकानकी पाट पर उसे थिपका दिया. (जोहरी) अेक-अेक (हीरेको) तपासे तो (हीरा) नहीं मिला. जोहरीको अैसा लगा कि, अरे..! हीरा कहां गया ? योरने कडा, भाई देओ ! हमारे पास तो कुछ नहीं है. फिर दूसरी बार १०,००० रुपये लेकर आया और कडा, भाई लाओ ! हीरा. उस दिन देभा था न ? वहां वह हीरा थिपका दिया था उसे ले लिया. दूसरी बार (गया तब) ले लिया. उस दिन तो कैसे ले सके ? इस प्रकार भगवान आत्माने रागके साथ आत्माको थिपका दिया है और योर हुआ है. रागसे मुझे लाभ होगा, (अैसा माननेवाला योर है), आडाडा ! क्या कडा ? अेक शक्तिमें तो अेक घंटा चला गया.

अनंत संख्यामें (जो) प्रत्येक शक्ति है, वह प्रत्येक शक्तिमें भाव शक्तिका रूप है तो प्रत्येक शक्ति वर्तमान विद्यमान अवस्था बिना रहती नहीं. प्रत्येक शक्तिकी वर्तमान विद्यमान अवस्था होती है. क्यों ? (क्योंकि) यह शक्ति पर्यायमें व्याप्ति है. द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्याप्ति है. अनादिसे द्रव्य, गुणमें तो है परंतु जब अनुभव हुआ तब इस शक्तिका निर्मल परिणामन हुआ. नहीं तो (द्रव्य) पर दृष्टि नहीं थी तब तक तो मलिन पर्याय पर रूचि थी. मलिन पर्यायकी रूचि (है) तो (उसे) आत्माकी रूचि नहीं. इसलिये उसे निर्मल पर्याय विद्यमान हो, अैसा उसे तो है नहीं. आडाडा ! थोडा सूक्ष्म है, आडाडा ! अपूर्व (भात है). भात तो अैसी है, आडाडा !

जिसको रागकी, पुण्य परिणामकी भीढास है, उसको स्वभावके प्रति द्वेष है. 'द्वेष अरोयक भाव' और जिसको भगवान आत्मा और अनंत शक्तिके प्रति प्रेम है, उसको रागके प्रति प्रेम होता नहीं. ज्ञाता-दृष्टा रहता है. समजमें आया ? यह भाव शक्तिके (कारण) अनंत शक्ति जो निर्मल है (वह) प्रत्येक शक्ति वर्तमान अवस्था सहित होती है. निर्मल (पर्यायकी भात) है. उस अवस्थामें व्यवहारका अभाव है. उसका नाम अनेकांत है. उसमें व्यवहार रत्नत्रयका अभाव है, आडाडा !

राग आता है उसका यहां ज्ञान है, यह अपनी पर्यायमें है. यह अपनी पर्याय विद्यमान है, बस ! राग विद्यमान है, यह (भात) यहां नहीं. क्या कडा ? समजमें आया ?

भाव शक्तिमें तो प्रत्येक शक्तिकी निर्मल पर्याय विद्यमान होती है, तो विद्यमान पर्यायमें ज्ञातापनेकी निर्मल पर्याय भी प्रगट है तो ये राग है उसका ज्ञान हुआ. इस पर्यायमें (ज्ञान) विद्यमान है. इसमें राग विद्यमान है, अैसा नहीं. समजमें आया ? कठिन पडे. सूक्ष्म है.

બાત એસી છે, આહાહા !

વીતરાગ સ્વરૂપી ભગવાન ! (ઉસકી) પ્રત્યેક શક્તિ વીતરાગરૂપ છે ઓર જબ શક્તિ ઓર શક્તિવાનકા અનુભવ હુઆ, આહાહા ! તો વીતરાગી પર્યાયરૂપ – વિદ્યમાન વીતરાગ પર્યાયરૂપ યહ શક્તિ હોતી છે. ઉસમેં રાગપના વિદ્યમાન નહીં છે. આહાહા ! ધર્મીકી વિદ્યમાન અવસ્થા નિર્મલ છે. મલિન અવસ્થા વિદ્યમાન છે, એસા નહીં છે, આહાહા ! જો રાગાદિ અવસ્થા હુઈ, ઉસકો અપનેસે (જાનતે હેં). રાગ છે તો (જાનતે છે, એસા) નહીં. અપનેસે સ્વપરપ્રકાશક જ્ઞાનપર્યાય પ્રગટ હોતી છે; ઉસમેં રાગકો જાનતે છે, એસા કહનેકા વ્યવહાર છે. રાગ છે તો રાગકો જાનનેકી પર્યાય હુઈ, એસા નહીં. અપની પર્યાયમેં સ્વપરપ્રકાશકકી તાકત (છે). ઉસ સમયમેં રાગ ઓર અપનેકો જાને, એસી પર્યાય અપનેસે પ્રગટ હોતી છે. ઉસમેં વ્યવહારકા અભાવ છે, આહાહા ! સમજમેં આયા ? ઉસકો યહાં ભાવશક્તિકા સ્વરૂપ કહતે હેં, વિશેષ કર્ણે....



વીતરાગની વાણી સાંભળતા કાયર કંપી ઉઠે છે. જ્યારે વીર ઊછળી ઉઠે છે.
(પરમાગમસાર-૬૨૧)

प्रवचन नं. २८

शक्ति-३४, ३५ - प्रवचन नं. २८
ता. ०८-०९-१९७७

शून्यावस्थत्वरूपा अभावशक्तिः ॥३४॥
भवत्पर्यायव्ययरूपा भावाभावशक्तिः ॥३५॥

समयसार, शक्तिका अधिकार (यलता है). शक्ति अर्थात् आत्माका गुण, आत्मा गुणी है – शक्तिवान है. उसकी शक्तिको गुण कडो कि शक्ति कडो – उसका यह सामर्थ्य है. गुण है यह द्रव्यका सामर्थ्य है. सत्का गुण, उसका सत्त्व है. सत्य भगवान आत्मा ! सत् अविनाशी, उसका सत्त्व-गुण-शक्ति-स्वभाव उसको यहां शक्ति कडनेमें आता है. समजमें आया ? भाव शक्ति तो कल यल गई. अक घंटा यली थी. उसका तो कोई पार नहीं आये, ऐसी शक्ति (है). आज तो अभाव शक्ति लेते हैं. बहुत अलौकिक बात है, भगवान !

“शून्य (अविद्यमान) अवस्थायुक्ततारूप अभावशक्ति.” आछाछा ! आत्माकी पर्यायमें (आठ कर्मका अभाव है). आत्मा द्रव्य है, उसकी शक्ति त्रिकाली ध्रुव है. उसकी पर्यायमें आठ कर्मका अभाव (है). (उसकी) अवस्था आठ कर्मसे शून्य है, आछाछा ! समजमें आया ?

भगवान आत्मा ! (ऐसी) वस्तुकी जिसको दृष्टि छुई, ‘मैं निर्विकल्प चैतन्य स्वरूप छुं’ ऐसी भाव शक्तिमें अनंत गुणकी वर्तमान निर्मल पर्याय विद्यमान है. समजमें आया ? भाव शक्तिमें तो ज्ञानकी निर्मल पर्याय विद्यमान है, दर्शनकी है, चारित्रकी है, आनंदकी है, अस्तित्वकी है, वस्तुत्वकी है, प्रभुत्वकी है, विभुत्वकी है, आदि जितनी संख्यामें अनंत शक्तियां हैं, (उन) सबकी भावशक्तिके कारण (वर्तमान निर्मल पर्याय विद्यमान छोती छी है). दूसरी शक्तिमें भावशक्तिका रूप है. भावशक्ति अपनेमें (है) और परमें भावशक्तिका रूप (है) तो प्रत्येक शक्ति वर्तमान निर्मलरूपसे विद्यमान है, उसका नाम भावशक्ति कडते हैं. आछाछा ! यहां भविनताकी बात नहीं है. वड तो बादमें लेते हैं. आछाछा !

अभाव शक्तिका अर्थ, आत्मामें अक अभाव नामका गुण, शक्ति, सत्त्व है. उसका कार्य

ક્યા ? કિ (આત્મામે) આઠ કર્મકી અવસ્થાકા અવિદ્યમાનપના (યહ અભાવશક્તિકા કાર્ય હૈ). આહાહા ! સમજમે આયા ? ભગવાન આત્મા ! આનંદકી પર્યાયમે ઔર અનંત ગુણકી નિર્મલ પર્યાયમે વિદ્યમાન અવસ્થા (યુક્ત હૈ). પરંતુ આઠ કર્મકી અવસ્થાસે શૂન્ય હૈ. આહાહા ! સમજમે આયા ? આઠ કર્મ હૈ, વહ તો જડ હૈ. પરંતુ ઉસકા જો ઉદય હૈ, ઉસમે જો વિકાર હોતા હૈ (ઉસસે શૂન્ય હૈ). ઉસ આઠ (દ્રવ્ય) કર્મસે શૂન્ય હૈ તો ભાવકર્મસે ભી શૂન્ય હૈ. સમજમે આયા ? આહાહા !

“શૂન્ય (અવિદ્યમાન) અવસ્થાયુક્તતારૂપ..” ભાવકર્મકી અવસ્થાકા ભી અવિદ્યમાનપના હૈ. આહાહા ! દયા, દાન, ભક્તિ, વ્રત, તપકા જો વિકલ્પ હૈ, ઉસસે તો આત્માકી અવસ્થા શૂન્ય હૈ. આહાહા !

શ્રોતા : ભાવકર્મસે (શૂન્ય હૈ) યહ બરાબર હૈ, પરંતુ દયા, દાનકે (ભાવસે ભી શૂન્ય હૈ) ?

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : દયા, દાન હૈ યહ ભાવકર્મ હૈ. ઉસકા સ્પષ્ટીકરણ હુઆ. (અધ્યાત્મ) પંચસંગ્રહમે આતા હૈ, દાન, શીલ, તપ યે સબ ભાવ-શુભ જોગ બંધકા કારણ હૈ. યહ સમયસારકા નિચોડ ઐસા ઉસમે આતા હૈ કિ, પુણ્ય-પાપસે (આત્મા) ભિન્ન હૈ. ભાવ પુણ્ય-પાપકી (બાત) હૈ. જડ પુણ્ય-પાપ, વહ (તો) કર્મમે ગયા, આહાહા ! યહાં લોગોંકો વિરોધ હૈ. મૂલ શક્તિ ઔર શક્તિવાનકી ખબર નહીં. વે કહતે હૈં કિ, રાગ ઔર દયા, દાન, વ્રત આદિકો નહીં માનો તો તુમ નરકમે ચલે જાઓગે. અરે પ્રભુ ! સુન તો સહી, નાથ ! આહાહા ! સમજમે આયા ?

યહાં તો પરમાત્મા ઐસા કહતે હૈં કિ, પ્રભુ ! તૂ વસ્તુ હૈ કિ નહીં ? તો વસ્તુમે બસી હુઈ-રહી હુઈ શક્તિ હૈ કિ નહીં ? વસ્તુ તો ઉસે કહતે હૈં કિ, જિસમે શક્તિકા વસવાટ હૈ. ગાંવ ઉસે કહનેમે આતા હૈ કિ, જિસમે પ્રજા બસતી હૈ. યહાં કહતે હૈં કિ, શીલ, દાન, તપ, ભાવ આદિ તો વિકારી પર્યાય હૈ – ભાવકર્મ હૈ. ભગવાન આત્મામે અભાવ નામકા ગુણ – શક્તિ હૈ. ઉસ કારણસે આત્મા વિકારી પર્યાયસે શૂન્ય હૈ. પર્યાયમે શૂન્ય હૈ. (આત્મામે) અભાવ નામકી શક્તિ હૈ તો દ્રવ્ય-ગુણમે તો (વિકારસે શૂન્યતા) હૈ હી. પરંતુ પર્યાયમે (ભી) અભાવપનાકા પરિણામન હોનેસે વહ અવસ્થા વિકારી પરિણામ-ભાવકર્મસે શૂન્ય હૈ, આહાહા !

ઐસી બાતે હૈં. ક્યા કરે ? ઉસે ખબર નહીં હૈ ઇસલિયે બહુત વિરોધ કરતે હૈં. પ્રભુ ! વિરોધ મત કર ! નાથ ! તેરે ઘરકી બાત હૈ. પ્રભુ ! તુજે ખબર નહીં, ભાઈ !

શ્રીમદ્દમે આતા હૈ, “કોઈ ક્રિયા જડ થઈ રહ્યાં, શુષ્ક જ્ઞાનમાં કોઈ, માને માર્ગ મોક્ષનો કરુણા ઉપજે જોઈ” “કોઈ ક્રિયાજડ (થઈ રહ્યાં)” (અર્થાત્) શુભ ઔર અશુભ ભાવ (હૈ, ઉસમે ભી) મૂલ તો શુભ ભાવમે (ધર્મ માનનેવાલા) ક્રિયાજડ હૈ. રાગકી ક્રિયામે રુકકર મુજે ધર્મ હોગા, (ઐસા માનનેવાલા) ક્રિયાજડ હૈ. ઔર “શુષ્કજ્ઞાનમાં કોઈ” (અર્થાત્) ક્ષયોપશમસે

ચૈતન્યકી બાતે કરે પરંતુ અંદરમેં રાગસે રહિત પરિણમન હોના, વહ હૈ નહીં તો વહ શુષ્કજ્ઞાની હૈ, આહાહા ! “કોઈ ક્રિયાજડ થઈ રહ્યાં,” ગુજરાતી ભાષા હૈ. “શુષ્કજ્ઞાનમાં કોઈ” જ્ઞાનની વાત કરે પરંતુ રાગની રુચિનો પ્રેમ ખસે નહીં. અંદરથી શુભરાગનો અને અશુભરાગનો પ્રેમ ખસે નહીં, આહાહા ! ઉસે શુષ્કજ્ઞાની કહનેમેં આતા હૈ, આહાહા ! ક્યોંકિ આત્મામેં વિકારી પરિણામકા અભાવ સ્વભાવરૂપ ભાવ હૈ. વિકારી પરિણામકી અવસ્થાકા ભાવ આત્માકી પર્યાયમેં હૈ, ઉસકો યહાં આત્મા હી નહીં કહતે. સમજમેં આયા ?

યહ તો આત્મદર્શનકી બાતે ચલતી હૈં ન ? આત્મા ઔર આત્માકી શક્તિયાં ઔર વર્તમાનમેં ઉસ શક્તિકા દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાયમેં વ્યાપ્ત હોના. જો શક્તિ (હૈ) (ઉસકા) પર્યાયમેં અભાવપનાકા પરિણમન હોતા હૈ. કિસકા અભાવ ? આઠ કર્મકે અભાવરૂપ શૂન્ય અવસ્થા હૈ. આહાહા ! આત્મા જ્ઞાનાવરણ કર્મકી અવસ્થાસે શૂન્ય હૈ. આત્મા દર્શનાવરણી કર્મસે શૂન્ય હૈ. આત્મા વેદનીય કર્મસે શૂન્ય હૈ, મોહકર્મસે શૂન્ય હૈ, દર્શનમોહસે શૂન્ય હૈ, ચારિત્રમોહસે શૂન્ય હૈ, આહાહા ! નામકર્મકી ૯૩ પ્રકૃતિ હૈ ઉસસે શૂન્ય હૈ. ગોત્રકર્મ હૈ પરંતુ ઉસસે આત્મા શૂન્ય હૈ, આહાહા !

લોગ યહાં કહતે હૈં કિ, કર્મ હમકો નડતે હૈં. (હિન્દીમેં) નડતે હૈં કો ક્યા કહતે હૈં ? હૈરાન કરતે હૈં. કર્મ હૈરાન કરતે હૈં, અરે ભગવાન ! ‘કર્મ બિચારે કૌન ? ભૂલ મેરી અધિકાઈ’ આતા હૈ કિ નહીં ? ચંદ્રપ્રભુ ભગવાનકી સ્તુતિમેં આતા હૈ. ‘કર્મ બિચારે કૌન ? ભૂલ મેરી અધિકાઈ’ બિચારે કર્મ જડ હૈ. ઉસકી અવસ્થાસે તો આત્મા શૂન્ય હૈ. પરકી અવસ્થાસે તો શૂન્ય હૈ પરંતુ અભાવ શક્તિકે કારણ ઉસકે (જડ કર્મકે) નિમિત્તસે હુઈ વિકારી દશા, ઉસસે ભી શૂન્ય હૈ, આહાહા ! અપના આનંદ સ્વભાવસે અશૂન્ય હૈ ઔર રાગ સ્વભાવસે શૂન્ય હૈ, આહાહા ! યહ અભાવ (હુઆ), ઓહોહો ! અમૃતચંદ્રઆચાર્યને ગજબ કામ ક્રિયા હૈ !

ઘરમેં ભાઈકી શાદી હો ઔર છોટા ભાઈ સાલ-ડેઠ સાલકા હો તો ઉસે જુલાયે નહિ તો રોતા હૈ. ઉસે ખબર નહીં હૈ કિ ભાઈકી શાદી હૈ તો રોયા નહીં જાતા. ઉસે ખબર હૈ ? વૈસે યહાં આત્માકી શાદી ચલ રહી હૈ, ભાઈ ! તેરે ભાઈકી શાદી ચલ રહી હૈ. આત્મા આનંદકા નાથ ઉસકી શાદી (અર્થાત્) અંદર એકાગ્રતા (હોની) ઉસકી (બાત) ચલતી હૈ. ક્યા કહા ? કિ આઠોં કર્મકી જો ૧૪૮ પ્રકૃતિ (હૈ, ઉસસે આત્મા શૂન્ય હૈ). આહાહા ! નામકર્મમેં જો તીર્થકર પ્રકૃતિ હૈ ઉસકી અવસ્થાસે આત્મા શૂન્ય હૈ, આહાહા ! ક્યોંકિ ભાવશક્તિકે કારણ અપની પવિત્ર અનંત શક્તિયોંકી વિદ્યમાનતા – મૌજૂદગી હૈ. વહાં અપવિત્ર નામકર્મકી કર્મ પ્રકૃતિકી અવસ્થાસે (આત્મા) શૂન્ય હૈ, આહાહા !

દૂસરી બાત. આતા હૈ ન ? ‘સોલશ કારણ ભાવના ભાય, સોલહ તીર્થકર પદ પાય’ તો (યહાં તો) કહતે હૈં કિ, તીર્થકરકે કારણભૂત સોલશ ભાવના જો હૈ, ઉસ ભાવનાસે ભગવાન (આત્મા) શૂન્ય હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ? યહ બાત કઠિન પડતી હૈ. લોગોંકો સુનને નહીં મિલતી હૈ. ઇસલિયે પરંપરા ટૂટ ગઈ (ઔર) ગુરુગમ રહા નહીં. સમયસારમેં જયચંદ

पंडितने पीछे लिखा है, समयसारकी सत्य बातका गुरुगम छूट गया. आहाहा ! समझमें आया ? समयसारमें पीछे लिखा है. “**‘‘ॐस ग्रंथके गुरु संप्रदायका (–गुरुपरंपरागत उपदेशका) व्युत्थेद ढो गया है,...**’’ आहाहा ! हिन्दीमें ६०४ पन्ना है. उसकी आभीरकी पंक्ति है. “**‘‘ॐस ग्रंथके गुरु संप्रदायका (–गुरुपरंपरागत उपदेशका) व्युत्थेद ढो गया है,...**’’ आहाहा ! समझमें आया ? “**समयसार अविकारका, वर्णन कर्षा सुनन्त; द्रव्य-त्माव-नोर्कर्म तजि, आत्मतत्त्व लभंत**’’ उसके नीचे है. समझमें आया ? यह तो अलौकिक बातें (हैं), बापू ! आहाहा ! लोगोंको षट्कती है कि, दया, दान, व्रत, भक्ति और पूजा वह धर्म नहीं ? अरे.. भगवान ! सुन तो सही नाथ ! तेरेमें पवित्रता भरी है तो उसकी पर्याय पवित्र होती है. समझमें आया ? अपवित्रतासे तो (आत्मा) शून्य है, आहाहा ! समझमें आया ?

द्रव्यकर्म, त्मावकर्म और नोर्कर्म इन तीनोंसे शून्य है. आठ कर्मसे अत्मावर्प शून्य है, त्मावकर्मसे अत्मावर्प शून्य है और नोर्कर्म – यह शरीर, औदारिक आदि पांच शरीर हैं (उससे भी अत्मावर्प शून्य है). औदारिक, वैक्यिक, आहारक, तैजस (और) कार्मण (ऐसे पांच शरीर है). कार्मणमें उत्कृष्ट १४८ प्रकृति कोर्ष ज्ञानीको ढोती है. समझमें आया ? क्यौंकि तीर्थंकर प्रकृति तो ज्ञानीको ढी ढोती है, अज्ञानीको तो ढोती ढी नहीं. वैसे आहारक (शरीर)का बंधन भी समकित्तीको ढोता है, अज्ञानीको ढोता नहीं. परंतु कोर्ष समकित्तीको सत्तामें १४८ प्रकृति ढोती है. मिथ्यादृष्टिको १४८ (प्रकृति) नहीं ढोती है, थोडी (कम) ढोती है. समझमें आया ?

यहां तो ढतना कलना है कि, जो प्रकृतिसे बंधन पडे वह त्माव, आत्मामें अत्माव शक्तिके कारण उस त्मावकी शून्यता है, आहाहा ! ऐसा सूक्ष्म मार्ग, बापू ! उसे नहीं बैठता. अंदर मढा प्रभु पवित्रताका सागर उछल रढा है, आहाहा !

चैतन्य रत्नाकर पवित्रताका पिंडका नाथ, प्रभु ! वह नाथ पवित्रताका रक्षक है. नाथ किसको कलते हैं ? जो कोर्ष यीज है उसकी रक्षा करे और नहीं प्राप्त हुंई यीजको मिढा दे. योगक्षेमके करनेवालेको नाथ कलते हैं. योगक्षेम (अर्थात्) वर्तमान जो दशा है उसकी रक्षा करे. निर्मल (पर्यायकी बात है). और पूर्ण केवलज्ञान नहीं है, उसको ढाये, मिढा दे. आहाहा ! ऐसा भगवान (आत्मा) अपना नाथ है, समझमें आया ? कितनी स्पष्ट बात है !

४७ शक्तिमें तो ढतना भर दिया है ! आहाहा ! अमृतयंद्र आचार्यने तो गजब काम किया है ! कुंढकुंढ आचार्यने पंचम कालमें तीर्थंकर जैसा काम किया है (और) ढन्ढोंने गणधर जैसा काम किया है. आहाहा !

(यहां) कलते हैं कि, शक्तिमें शब्द तो ढतना है, पाठमें तो ढतना है, है न ? “**शून्यावस्थत्वरूपा अभावशक्ति**’’ अक्षर तो कितने हैं ? सोलढ अक्षर है परंतु उसके अर्थमें तो बढुत गंभीरता है. दिपयंद्रजने शक्तिका वर्णन किया है. समझमें आया ? दूसरे किसीने

किया नहीं है. ओक अमृतयंद्रआचार्यने शक्तिका वर्णन किया है और शक्तिका स्पष्टीकरण दीपयंदेजने किया. ओसा दूसरे कोई स्थानमें आता नहीं. समयसार नाटकमें थोडे नाम आते हैं.

भगवान आत्मा मछा प्रभु है. वह यैतन्य भगवान है. आछाछा ! उसका जिसको अंतरमें निर्विकल्प दृष्टि होकर तान हुआ, सम्यग्दर्शन हुआ और अंदरमें सम्यग्दर्शनकी शक्ति जो श्रद्धा है, उसके परिणामनमें सम्यग्दर्शनकी पर्याय (प्रगट हुई), उस पवित्रताकी—भावशक्तिकी विद्यमानतामें और कर्मके निमित्तसे (हुअे) राग आदि (और) मिथ्यात्व आदिकी शून्यता (है), आछाछा ! समजमें आया ? ओसा मार्ग है, भाई ! क्या कछा ? “शून्य (—अविद्यमान) अवस्थायुक्त..” नहीं अवस्थायुक्त ओसे (कछना है). किसकी (अवस्था नहीं) ? कि कर्मकी, शरीरकी. यह औदारिक आदि (शरीरकी अवस्था नहीं). यह औदारिक शरीर है. यह (उसकी) अवस्था है, इस अवस्थासे भगवान शून्य है. समजमें आया ? यह अवस्था ओसी करते हैं, वह आत्मा नहीं (करता). समजमें आया ? क्योंकि यह अवस्था आत्मामें शून्य है. यह शरीरकी अवस्था आत्मामें शून्य है, अभाव शक्ति है, (उस कारणसे). आछाछा ! समजमें आया ?

मुनिको आछारक शरीर छोता है न ? (तो उस) आछारक शरीरकी अवस्थासे यैतन्य तो शून्य है. आछाछा ! गजब बात है ! (मुनिराजको) विकल्प आता है कि, आछारक शरीर छो और में भगवानके पास जाऊँ. परंतु कछते हैं कि, विकल्प और आछारक शरीरकी अवस्था, दोनों आत्मामें नहीं हैं. और (ओसे आछारक शरीरधारी मुनिराज) भगवानके पास जाते हैं तो (कोई प्रश्न) पूछे बिना उसका समाधान छो जाता है. अंदरमें ओसी योग्यता है. आछाछा ! आछारक शरीर हुआ तो मेरे पास आया, ओसा भी नहीं और मेरे पास आनेका विकल्प आया, वह भी तेरेमें नहीं, आछाछा ! ओसा मार्ग ! विद्यमान अवस्थायुक्त यह भाव(शक्ति) और अविद्यमान अवस्थायुक्त अभाव(शक्ति), आछाछा ! समजमें आया ? “शून्य (—अविद्यमान) अवस्थायुक्त...” शून्य अवस्थायुक्त (यानी) शून्य अवस्था सछित. शब्द ओसा है न ? शून्य अवस्था सछित. यानी कि आत्मा आछाँ कर्मकी पर्यायकी अवस्थासे शून्य है. ओसी अवस्थायुक्त है, आछाछा !

अब यहां पुकार करते हैं कि, अरे..! हमे कर्म छैरान करते हैं. हमको कर्मसे विकार छोता है. अरे.. प्रभु ! तेरा (विकार) भाव (जो) है, कर्मके निमित्तके आधिन होकर तू जो भाव करता है, वह भी स्वभावकी दृष्टिकी अपेक्षासे तो उस भावका भी तेरेमें अभाव है, आछाछा !

यहां तक यैतन्य तत्त्वमें जाना — पहुंचना कि, यह भगवान आत्मा (है). भावशक्तिके कारण अनंत गुणकी निर्मल पर्याय विद्यमान है और अभावशक्तिके कारण कर्म और शरीरसे

(શૂન્ય છે). પાંચ શરીરમાં કાર્મણ શરીર આતા છે ન ? જીવ કાર્મણ શરીરની અવસ્થાએ શૂન્ય છે. આહાહા ! સમજમાં આયા ? અજ્ઞાનીનો જો વિકાર હોતા છે, વહ વિકાર સહિત છે. અજ્ઞાની કર્તા-કર્મ માનતા છે. પરંતુ ધર્મીજીવ જિસકો આત્માની દૃષ્ટિ હુઈ, વહ તો રાગની અવસ્થાએ મેરી દશા શૂન્ય છે, એસા માનતે હૈં, આહાહા ! સમજમાં આયા ? રાગસે ભિન્ન હોકર ભેદજ્ઞાન હુઆ વહાં ભેદજ્ઞાનમાં ભગવાન રાગની અવસ્થાએ તો શૂન્ય છે. આહાહા ! રાગ સહિત છે, એસા પર્યાયદૃષ્ટિમાં છે. પરંતુ વહ તો પર્યાયદૃષ્ટિમાં જિસકો દ્રવ્યની દૃષ્ટિ નહીં ઓર દ્રવ્યની ખબર નહીં, (ઉસકો વિકાર સહિત છે), આહાહા ! એક સમયની પર્યાયમાં – અવસ્થામાં (વિકાર) સહિત જિસકો અપને અસ્તિત્વકા સ્વીકાર છે, ઉસકો વિકાર સહિત અવસ્થા છે. વહ પરિભ્રમણ છે, દુઃખ છે. સમજમાં આયા ?

ભગવાન આત્મા અનંત શક્તિઓંકા ભંડાર – ગોદામ (હૈ). આહાહા ! ઇસ શક્તિકે ગોદામમાં અંદર અભાવ શક્તિ ભી પડી છે. ઉસ દ્રવ્ય પર, વસ્તુ પર ધ્યેય લગાકર, જો દ્રવ્યકા ભાન હુઆ, (વહ) દશા કાર્મણની ૧૪૮ પ્રકૃતિકી અવસ્થાએ ભી શૂન્ય છે. આહાહા ! સમજમાં આયા ? એસા ગલે ઉતારના (કઠિન પડતા છે). હૈ ઓર નહીં હૈ ? કિસ અપેક્ષાએ ભાત હૈ ? પ્રભુ ! તેરી ચીજ જો છે, આત્મા ! પ્રભુ ! ઉસકી અનંત શક્તિયાં હૈં. ઉન અનંત શક્તિઓંકા એકરૂપ આત્મા ! ઉસકા જિસકો અનુભવ હુઆ, સમ્યગ્દર્શન હુઆ, રાગસે ભિન્ન ભાન હુઆ, ઇસે યહાં કહતે હૈં કિ, ઇસ અભાવશક્તિ (કે કારણ) પરસે શૂન્ય છે. અજ્ઞાની તો અપનેમાં (વિકાર) છે, એસા માનતે હૈં. વિકારી અવસ્થા (ઓર) કર્મકા મેરે (સાથ) સંબંધ છે, એસા અજ્ઞાની માનતે હૈં, આહાહા ! એસી ભાત (હૈ) !

એક ઓર ગોમટ્ટસારમાં એસા કહે કિ, જ્ઞાનાવરણીય કર્મ જ્ઞાનકો રોકે, જ્ઞાનકો આવરણ કરે. ભાષા એસી આયી છે. આહાહા ! સમજમાં આયા ? વહ તો નિમિત્તકા કથન છે. અપની પર્યાયમાં દ્રવ્યસ્વભાવકી દૃષ્ટિકા જબ અભાવ છે, તો હીન અવસ્થારૂપ અપને કારણસે પરિણમન કરતા હૈ, તો ઉસમાં જ્ઞાનાવરણીય કર્મ નિમિત્ત કહનેમાં આતા હૈ. નિમિત્ત કહનેમાં આતા હૈ, ઉસકો કહા કિ, ઉસને (કર્મને) આવરણ કિયા. વહ તો વ્યવહારકા કથન હૈ. ભાવ ઘાતિ કરનેવાલા (કહનેમાં આતા હૈ), આહાહા ! ગજબ ભાત હૈ ! જ્ઞાનકી હીન દશા-ભાવઘાત કરનેવાલેકો જ્ઞાનાવરણીય દ્રવ્યઘાતિ નિમિત્ત કહનેમાં આતા હૈ. પરંતુ જહાં ભાવઘાતિ પર્યાય હી મેરેમાં નહીં (તો દ્રવ્યઘાતિ તો દૂર રહા). દ્રવ્યઘાતિ કર્મ તો મેરેમાં હૈ હી નહીં. વહ દ્રવ્યકર્મમાં ગયા. પરંતુ ભાવઘાતિ જો વિકૃત અવસ્થા હૈ, ઉસકા ભી મેરી ચીજમાં અભાવ હૈ, શૂન્ય હૈ, આહાહા ! સમજમાં આયા ? ભાઈ ! માર્ગ એસા હૈ. માર્ગ નહીં, યહ તત્ત્વ હી એસા હૈ.

ચૈતન તત્ત્વ ભગવાન આત્મા ! આહાહા ! ઇસ આત્માકા જિસકો આત્મજ્ઞાન હુઆ... આત્મજ્ઞાન કહતે હૈં ન ? ઉસકો કર્મકા જ્ઞાન, રાગકા જ્ઞાન, પર્યાયકા જ્ઞાન – એસા નહીં કહતે હૈં. આહાહા ! આત્મજ્ઞાન નામ આત્મા અનંત શક્તિકા એકરૂપ, ઉસકા જિસકો સ્વસન્મુખસે

अंतर ज्ञान हुआ, तो कहते हैं कि, ज्ञानीको तो कर्मकी अवस्था (जो) निमित्तसे हुई, उससे भी (वे) शून्य हैं. आहाहा ! ऐसी बातें (हैं) ! सर्वज्ञके अलावा यह (बात) कहीं छो नहीं सकती.

अक तो कर्म है, ऐसा स्वीकार करते हैं. (दूसरा) कर्मके निमित्तसे अवस्था है, ऐसा स्वीकार करते हैं. परंतु स्वप्नमें नहीं है, ऐसा (ज्ञानीको) स्वीकार है, आहाहा ! जिसको स्वप्नदृष्टि हुई, स्वप्नदृष्टि (अर्थात्) स्वभावदृष्टि (हुई) उनको स्वप्नदृष्टिमें तो अनंत शक्तिरूप स्वप्न, इसकी पर्यायमें निर्मल परिश्रमन विद्यमान है, आहाहा !

(ज्ञानीको) आनंदकी अवस्था विद्यमान है, ईश्वरकी अवस्था, प्रभुताकी (अवस्था) विद्यमान है, स्वच्छताकी (अवस्था) विद्यमान है, कर्ता-कर्म आदि शक्तिओंकी वर्तमान निर्मल पर्याय (विद्यमान) है. उसमें कर्मके निमित्तसे (हुई) शरीरका अवस्था-पांयों शरीर (और) कर्मकी १४८ प्रकृति – उसकी अवस्थासे प्रभु शून्य है, आहाहा !

प्रवचनसारमें दिया है. प्रवचनसारमें अस्तित्व-नास्तित्व लेकर, स्वप्नसे अस्तित्व है और परस्वप्नसे नास्तित्व है. ऐसा अर्थ करनेके बाद संस्कृत टीकामें ऐसा (दिया) कि, अपनेसे अशून्य है और परसे शून्य है. समझमें आया ? पहले ऐसे दिया कि, अपनेसे अस्तित्व है और परसे नास्तित्व है. बादमें उसको स्पष्ट करते हुआ (कहा), अपनेसे अशून्य है और परसे शून्य है. प्रवचनसारमें सप्तमंगी आती है, वह याद आ गई. आहाहा ! यह शून्य शब्द आया न ? आहाहा !

भावशक्तिमें विद्यमान शब्द था और यह शून्य शक्ति (कही), आहाहा ! यैतन्यकी नजर तेरा स्वभाव-तेरे निधानमें (गई नहीं), आहाहा ! वह तो कहा था न ? कि जैसे नरकमें स्वर्गके सुभकी गंध नहीं, स्वर्गमें नरकके दुःखकी हवाती नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? सूर्यके प्रकाशमें अंधकारका अभाव है, (अंधकारसे) शून्य है. अक परमाणुमें पीडाका अभाव है. ऐसे भगवान आत्मामें विकार और कर्मका अभाव है. आहाहा ! अरे...! ऐसा मार्ग उसे बैठाता नहीं और मैं पराधीन (हुं) ऐसा मानता है. (परंतु) इसमें ईश्वरशक्ति है. प्रवचनसार ४७ नयमें अक ईश्वर नामकी शक्ति (नय) है. बालक जैसे धावमाताको पराधीन छोकर दूध पीता है. (धावमाता) दूध पिलाती है. तुम्हारी भाषामें क्या है ? धावमाता होती है न ? (बालक) धावमाताको पराधीन छोकर दूध पीता है. प्रवचनसारमें दृष्टांत दिया है. समझमें आया ? ४७ नयमें ३४वा नय है. 'आत्मद्रव्य ईश्वरनयसे परतंत्रता भोगनेवाला है, धायकी दुकान पर दूध पिलाये जानेवाले राहगीरके बालककी भांति' मुसाफिरका बालक छो, उसकी माताको दूध नहीं (आता) छो, और गांवमें आये छो तो धावमाताके पास (बालकको) दूध पिलाते हैं. ऐसे भगवान आत्मा, अपनी पर्यायमें निमित्तके आधीन छोकर विकार करता है, उसका नाम ईश्वरनय (है), आहाहा !

यहां कहते हैं कि, जब ज्ञानका अधिकार हो तो ज्ञानसे तो जाननेमें आता है कि, मेरी पर्यायमें विकृतपना है. उससे मैं शून्य नहीं हूँ. (विकारकी) अस्ति है. वह तो ज्ञान जानता है. परंतु दृष्टिका विषय और दृष्टिका जब कथन यत्ने तब तो अशुद्धताकी विद्यमानता उसमें है ही नहीं. समझमें आया ? समयसारमें तो शक्तिका वर्णन है न ? तो शक्ति तो द्रव्यकी शक्ति है. द्रव्यदृष्टिका वर्णन है और प्रवचनसारमें ज्ञानप्रधान कथन है. यहां ४७ नय उस प्रकारसे दिये हैं. समझमें आया ? यहां कर्ता आदि (शक्तिमें) ऐसा आयेगा कि, आत्मा रागादिका कर्ता है ही नहीं. वह कर्ताशक्ति है, वह निर्मल परिश्रमन है उसका कर्ता है. समझमें आया ? यहां दृष्टिप्रधान (कथनमें) द्रव्यस्वभावकी अपेक्षासे ऐसा वर्णन आता है. परंतु दृष्टिके साथ जो ज्ञान हुआ तो ज्ञान अपनेमें जितना रागके कण्डू-अंशरूप परिश्रमन है उसका कर्ता है, ऐसा ज्ञान जानता है, आहाहा ! समझमें आया ?

मुनि भी ऐसा जानते हैं. अमृतयंद्र आचार्यने (विष्णु) न ? 'कल्माषितायाः' यहां उसकी ना कहते हैं. कल्माषित अवस्था आत्मामें है (ही नहीं). तीसरे श्लोकमें तो ऐसा कहा (कि), मैं वस्तुस्वरूपसे – द्रव्यस्वरूपसे तो शुद्ध हूँ. परंतु मेरी पर्यायमें अनादिकालसे 'कल्माषितायाः' – अशुद्धता यही आती है, आहाहा ! वही अमृतयंद्र आचार्य शक्तिका वर्णन करनेवाले ऐसा कहते हैं कि, अनादिकालसे मेरी पर्यायमें 'कल्माषितायाः' – अशुद्धता यही आती है. आहाहा ! मेरी पर्यायमें दुःखका वेदन है, आहाहा ! यहां कहते हैं कि, दुःखके वेदनकी अवस्थाका (आत्मामें) अभाव है. जिस अपेक्षासे कहा है उस अपेक्षासे जानना याहिये न ! आहाहा ! समझमें आया ?

भाई ! तेरी यीजको समझना-जानना (यह) कोई अलौकिक यीज है ! लौकिकसे कोई प्राप्त नहीं होता. द्रव्यसंग्रहमें व्यवहारनयको लौकिक कहा है. द्रव्यसंग्रहमें लौकिक (कहा है). टीकामें व्यवहारनयको कथनमात्र कहा है. पांयवे श्लोकमें कथनमात्र (कहा है). आहाहा ! व्यवहारसे कहा है, उसको (लोग) पकड़ ले. मोक्षमार्ग प्रकाशकमें आया न ? कि, सिंदको बताना हो और सिंद न हो तो बिल्लीको सिंद कहे. (बिल्लीको) सिंद कहे तो (बिल्ली) सिंद नहीं है. मात्र उसकी पहचान करानेके लिये (कहते हैं कि) ऐसा सिंद होता है. ऐसा कूर (होता है). पकड़, पकड़में फँक है. (सिंद) अपने बख्येको भी द्वांतमें पकड़े और यूहेको भी पकड़े – (लेकिन) दोनोंमें फँक है. पकड़, पकड़में फँक है. यूहेको तो द्वांतसे दबाती है और अपने बख्येको पकड़ती है तो (नरभीसे पकड़ता है). बिल्ली सात दिनके बाद बख्येको घुमाती है न ? (उस समय) मुँहमें लेकर घुमती है. परंतु नरम-नरम (द्वांतोंसे पकड़ती है). समझमें आया ? उमने तो सब नजरोंसे देखा है न !

दामनगरमें अपासरा है. उसके सामने एक किरानाकी दुकान थी. उसमें बिल्ली जाये. बड़ा यूहा अपासरामें आये तो उसे पानेके लिये उसके पीछे जाये. (बाहर आये तब मुँहमें

यूहा) लटकता है. आहाहा ! वह तो जैसे दबाकर (पकडती है तो) मर ही जाता है. और बिल्ली अपने दो-चार बच्चे छो तो ओक को धीरे-धीरे लेती (है), समजमें आया ? जैसे ज्ञानी रागकी अवस्थासे शून्य है. रागको पकडते नहीं. (बिल्ली) यूहेको जैसे पकडती है, जैसे (ज्ञानी रागको) पकडते नहीं, आहाहा ! समजमें आया ? ऐसी बातें हैं !

यह तो सब देखा है न ! ओक-ओक बातको जैसे विचार करते-करते देखा है. वहां जैसे देखा है कि, यह किस प्रकारसे चलता है ? छतना बडा यूहा मुंडमें पकडकर निकले. हम अपासरामें पाट पर बैठे छो तो अपासरामें से निकले.

यहां कहते हैं कि, भगवान आत्मामें रागकी पकड नहीं है. रागसे तो शून्य है. आहाहा ! राग होता है, व्यवहार आता है. क्या कडा ? धर्मीको भी दया, दान, पूजा, भक्तिका भाव आता है परंतु उस भावसे पर्याय शून्य है. आहाहा ! ऐसा द्रव्यका स्वभाव है. अभावशक्तिका वर्णन है न ? यह द्रव्यका स्वभाव है. वह अभाव शक्ति (स्वरूप) स्वभाव है. आहाहा ! मार्ग ऐसा है ! भाई ! लोगोंको यह नया लगता है. लोगोंको ऐसा लगता है कि, नया मार्ग निकाला. भाई ! नया नहीं है, प्रभु ! तुजे जबर नहीं, बापू ! तेरी शक्तिके स्वभावका वर्णन ही यह है. समजमें आया ?

तुम ऐसा कहते छो कि, दया, दान, व्रत नहीं करे, तो फिर (लोग) पाप करेंगे. भाई ! यहां वह प्रश्न ही कहां है ? यहां तो दया, दान, व्रतका शुभभाव है उसकी रुचि छोड. क्योंकि यह अवस्था तेरे द्रव्य, गुण और पर्यायमें है ही नहीं. पर्यायमें – सम्यक् पर्यायमें यह अवस्था नहीं है. आहाहा ! बापू ! यह तो वीतराग तीनलोकके नाथ सीमंधर भगवान बिराजते हैं, आहाहा ! उनके (श्रीभुजसे) यह बात आयी है. समजमें आया ?

प्रभु तो ऐसा कहते हैं, भाई ! तेरे द्रव्य, गुणमें तो अशुद्धता नहीं परंतु तेरी पर्याय (भी) अभावशक्तिके कारण अशुद्धतासे शून्य है, आहाहा ! समजमें आया ? सम्यक्दृष्टिको ऐसा भासित होता है, ऐसा कहते हैं. मिथ्यादृष्टिको ऐसा भासित नहीं होता, (उसे) राग सहित भासित होता है. (स्वरूपकी) शुद्धता मेरी है (और) शुद्धतासे परिणामन हुआ, उसमें अशुद्धता तो शून्य है, ऐसी दृष्टिका जिसको विरह है, उसको अशुद्धता भासित होती है. परंतु सम्यक्दृष्टिका जिसको सदभाव है, (उसे राग सहित भासित नहीं होता) आहाहा ! ऐसा मार्ग है ! यहां तो प्रसन्नताका अंकुर छुटे वह आत्माकी विद्यमानता है. दुःभके विकल्पसे तो शून्य है, प्रभु ! आहाहा ! समजमें आया ?

“शून्य (—अविद्यमान) अवस्थायुक्ततारूप अभावशक्ति. (अमुक अवस्था...)” अमुक अवस्था यानी विकारी अवस्था. “(...जिसमें अविद्यमान छो..)” जिसमें (विकारी अवस्था) नहीं है. “(...उत्तरूप अभावशक्ति).” आहाहा ! गजब काम किया है !

संतोंने जगतको शांतिका (मार्ग दिखवाया है). शांतिका मार्ग दिखाये उसे संत कहते हैं.

आहाहा ! यहाँ तो शांति...शांति..शांति... प्रभु ! तेरेमें तो शांतरस पडा है न ? तो पर्यायमें शांतरस आता है, उसका नाम धर्म है. रागादि कषाय तो अशांत है, दुःख है, आहाहा ! दया, दान, व्रत, तपका विकल्प उठता है, वह तो दुःख है. प्रभु ! तुझे ખબर नहीं, आहाहा ! इस दुःखकी अवस्थासे प्रभुकी अवस्था शून्य है.

प्रभु ! भगवान् आत्मा ! प्रभुत्व शक्तिका धरनेवाला ईश्वर (स्वरूप है). आहाहा ! वह ईश्वर शक्ति (४७ नयमें जो कही, वह) दूसरी और यह ईश्वर शक्ति दूसरी. इस शक्तिमें प्रभुत्व शक्ति है. यह अस्ति शक्ति है. दृष्टिके विषयमें अस्ति प्रभुता शक्ति है, तो प्रभुता शक्तिसे पर्यायमें प्रभुता आती है. और ईश्वरनय अत्मी जो कहा, वह पर्यायके लक्षसे (अपेक्षासे) है. यह नय गुणमें नहीं है, द्रव्यमें नहीं है. पर्यायमें निमित्ताधीन होनेकी योग्यता है. कोई शक्ति नहीं है कि विकाररूप करे. अनंत शक्तिमें कोई शक्ति विकाररूप हो, ऐसी कोई शक्ति नहीं. तो विकार होता है न ? तो कहते हैं कि, वह पर्यायकी योग्यतासे विकार होता है. (उसका) ज्ञान करानेको बात की है, आहाहा ! परंतु जहां दृष्टिका विषय और द्रव्यका स्वभावका वर्णन (है), वहां अशुद्ध अवस्थासे प्रभु तू शून्य है. आहाहा !

अनंत गुणकी पवित्र पर्यायकी विद्यमानतामें अमुक गुणकी (ही) अशुद्धता (है), सब गुण अशुद्ध नहीं होते. अस्तित्व गुण, वस्तुत्व गुण, कर्मी अशुद्ध नहीं होते. समझमें आया ? अनंत गुणकी शुद्धताकी विद्यमान अवस्थावादी प्रभु तेरी यीज है और अशुद्धतासे तो तुम शून्य हो, आहाहा ! अशुद्धता (है) तो सर्व गुणकी अशुद्धता तो होती नहीं. अमुक गुणकी अशुद्धता होती है, समझमें आया ?

एक बार बहुत वर्ष पहले २१ बोल निकाले थे. बहुत वर्ष पहले तो सब विचार चलते थे. (हम) सायलामें थे. रात्रिमें मकानके बाहर यर्था करते थे कि, अनंत शक्ति अशुद्ध नहीं हैं. अनंत शक्ति तो शुद्ध ही हैं. (मात्र) शक्ति नहीं, शक्तिका परिणामन भी शुद्ध है. परंतु कोई-कोई शक्तिमें जैसे (कि), छ (सामान्य गुण है, उसमें) अस्तित्व, वस्तुत्व, प्रमेयत्व उसकी पर्याय निर्मल है. मात्र प्रदेशत्वगुणकी पर्याय मलिन है. एक प्रदेशत्व गुणकी (पर्यायमें) अशुद्धता (है). अशुद्धता है, यह ज्ञान करानेको कहा, परंतु द्रव्यके स्वभावकी दृष्टिमें उस प्रदेशकी अशुद्धताका भी अभाव है, आहाहा !

यह भगवान् आत्मा ज्ञानयंद्र है. शितल स्वरूप... शितल स्वरूप... ज्ञानयंद्र, शितल स्वरूप है. रात्रिमें यंद्रमामें शितलता होती है न ? आहाहा ! भगवान् आत्मा शितल स्वरूप है. शांत...शांत...शांत... (स्वरूप है).

अरे प्रभु ! तुझे तेरी महत्ता ओर बडप्पनकी ખબर नहीं और तुझे अशुद्धतासे धर्म डोगा (ऐसा मानकर) प्रभु तुने प्रभुका पुन कर दिया है. तेरी यीजकी शुद्धताका तुने पुन कर दिया. शुद्धकी ताकतसे (पर्यायमें) शुद्धता होती है. ऐसा नहीं मानकर, अशुद्धतासे शुद्धता

होती है (यह विपरीत मान्यता है). आहाहा ! व्यवहार करते-करते शुद्धता होती है (यह विपरीत मान्यता है). आहाहा ! दरकार कहां है ? जैसे के जैसे ही जय नारायण (करते हैं). रात्रिको नहीं कहां ? जैसा हम सुने असा माने. बात तो (तुम्हारी) सखी है परंतु (यथार्थ) निर्णय करना चाहिए न ?

यहां तो कहते हैं कि, प्रभु ! अक बार सुन तो सही नाथ ! तेरा आत्मा पवित्रताका भंडार है. उसमेंसे तो पवित्रताकी पर्याय आती है. द्रव्यमें – शक्तिमें कोई अशुद्धता नहीं है. मात्र पर्यायकी योग्यतासे अक समयके लिये विकृत अवस्था होती है. उसे यहां द्रव्यदृष्टिका विषय बतानेमें अशुद्ध अवस्थासे (आत्मा) शून्य है, असा बताना है.

अनंत शुद्ध शक्तिओंका शुद्ध परिणामन विद्यमान है, उसमें थोड़ी अशुद्धता २-४ या २१ गुण आदिमें है. समझमें आया ? इससे यह शून्य है, आहाहा ! २१ गुणमें अशुद्धता (है). अक दिन सायलामें कहां था. राजकोट पल्ले यातुर्मासमें गये थे, उस समयकी बात है. ८५ की (सावकी) बात है. यहां तो कुछ विषयकी आदत नहीं है.

यहां कहते हैं कि, अनंत गुणोंमेंसे कोई गुणमें (अशुद्धता होती है). जैसे कि दर्शन गुण है, उसमें अशुद्धता होती है, चारित्र गुणमें अशुद्धता होती है, आनंद गुणमें अशुद्धता होती है. परंतु अस्तित्व, वस्तुत्व आदि गुणमें अशुद्धता नहीं होती. अन्विको भी उन (गुणोंमें) अशुद्धता नहीं होती. समझमें आया ? समझमें आता है ? आहाहा ! सभी गुणोंमें अशुद्धता नहीं होती है. कोई-कोई गुणोंमें ही अशुद्धता होती है. बाकी अनंत-अनंत गुण तो शुद्ध है और उसकी पर्याय भी शुद्ध है, आहाहा !

आत्मामें अक अभाव शक्ति पडी है. उस अभाव शक्तिका जहां स्वीकार हुआ अर्थात् अभाव शक्तिको धरनेवाला भगवान उसका स्वीकार हुआ, तो पर्यायमें अभाव शक्तिके कारण अशुद्धताका शून्यपनेका परिणामन है, आहाहा ! अशुद्धता है, यह ज्ञानमें ज्ञेयके रूपमें – परज्ञेयके रूपमें जाननेमें आती है. समझमें आया ? अपनी पर्यायमें अशुद्धता (है), (इसलिये वह) स्वज्ञेय है, असा नहीं. क्या कहां ? समझमें आया ? फिरसे लेते हैं.

अपना द्रव्य है, वस्तु शुद्ध है, गुण शुद्ध है और पर्याय भी शुद्ध है. उसको ही यहां पर्याय कहते हैं. अब अशुद्धता जो थोड़े गुणकी है, उसका भी यहां अभाव है, शून्य है. परंतु वह (अशुद्धता) है न ? तो (अशुद्धता) है तो (उसे) परज्ञेयके रूपमें जानते हैं, आहाहा ! कुरसद कहां है ? बापू ! प्रभुका मार्ग तो यह है, भाई ! आहाहा ! अशुद्धताके कर्तव्यमें लोगोंको यदा दिया है और शुद्धताका भंडार (अक ओर) पडा रहा. क्या कहां ? अशुद्ध व्यवहार दया, दानके परिणाममें यदा दिया. शुद्धताका भंडार भगवान है उसको छोड दिया, समझमें आया ? (यह) अभाव शक्ति हुई. आज भी ५५ मिनट तो हो गई. भाव (शक्तिमें) प्रत्येक शक्तिकी पवित्र विद्यमान पर्याय गिननेमें आयी. अभाव (शक्तिमें) कोई भी अशुद्धता

હૈ, ઉસકી શૂન્યતા ગિનનેમેં આયી હૈ. ભાવ (શક્તિમેં) અશૂન્યતા નામ પવિત્ર વિદ્યમાન અવસ્થા ગિનનેમેં આયી ઔર અભાવ (શક્તિમેં) અપવિત્રતાકી શૂન્યતા ગિનનેમેં આયી. સમજમેં આયા ? ઈન શક્તિઓંકા પિંડ ભગવાન યા અનંત શક્તિકા પિંડ દ્રવ્ય હૈ. વહ તો શુદ્ધ હૈ. ઉસકી દૃષ્ટિ કરનેસે સમ્યગ્દર્શન હોતા હૈ. સમજમેં આયા ? ઉસકે બિના સમ્યગ્દર્શન – ધર્મકી પહલી સીઢી – શુરૂઆત (નહીં હોતી), આહાહા ! વીતરાગ માર્ગ તો દેખો ! દો બોલ હુએ. તીસરા શુરૂ કરતે હૈં, થોડા શુરૂ તો કરેં.

૩૫ (વીં શક્તિ). “ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) પર્યાયકે વ્યયરૂપ ભાવાભાવશક્તિ.” ક્યા કહતે હૈં ? આત્મામેં એક ઐસી શક્તિ હૈ, ભાવ અભાવ (નામકી એક શક્તિ હૈ). વર્તમાનમેં જો પર્યાય ભાવરૂપ હૈ, ઉસકા અભાવ કરે, ઐસી એક શક્તિ હૈ. વર્તમાન નિર્મલ પર્યાયકી બાત હૈ, આહાહા !

ભગવાન આત્મામેં ભાવ અભાવ (નામકી), ઐસી એક શક્તિ હૈ, ગુણ હૈ. ભાવકા અર્થ વર્તમાન પવિત્રતાકી વિદ્યમાન અવસ્થા હૈ, વહ ભાવ અભાવ શક્તિકે કારણ ભાવકા અભાવ હો જાતા હૈ. વહ ભી અપની શક્તિકે કારણ હૈ. પર્યાયકા અભાવ હોના વહ શક્તિકે કારણ હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

શાંતિસે સુનના, બાપૂ ! યહ તો (વીતરાગ) માર્ગ હૈ. તીન લોકકે નાથ ! કેવલજ્ઞાનીને નિધાન દેખે હૈં, ઐસા સમ્યક્જ્ઞાનમેં ભાસિત હોવે, ઐસી યહ ચીજ હૈ. આહાહા ! કહતે હૈં, “ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) પર્યાય...” વર્તમાન પર્યાયકી (બાત હૈ). અનંત ગુણકી વર્તમાન નિર્મલ પર્યાય જો હૈ, વહ ભવતે (અર્થાત્) હોનેવાલી હૈ. ‘ભવતે’ હૈ ન ? “ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) પર્યાયકે વ્યયરૂપ...” ઉસકે અભાવરૂપ. (ઐસી) એક શક્તિ હૈ. ભાવઅભાવ (યાની) વર્તમાન ભાવ હૈ, ઉસકા અભાવ હો, ઐસી ભાવઅભાવ નામકી એક શક્તિ હૈ. ઉસ પર્યાયકા મેં અભાવ કરું, ઐસા નહીં. યહ શક્તિ હી ઐસી હૈ કિ પર્યાયકા અભાવ હો જાયે. વિદ્યમાન અવસ્થાકા અભાવ હો જાયે, ભાવકા અભાવ હો જાયે, ઐસી યહ શક્તિ હૈ. વિશેષ આયેગા....



प्रवचन नं. ३०

शक्ति-३५, ३६ ता. ०८-०८-१९७७

भवत्पर्यायव्ययरूपा भावाभावशक्तिः ॥३५॥
अभवत्पर्यायोदयरूपा अभावभावशक्तिः ॥३६॥

(समयसार), यह (परिशिष्ट) अधिकारमें अनेकांतकी विशेष यर्था करते हैं. (इसका) अधिकार है. यह अधिकार अनेकांतको विशेष यर्थाते हैं. (इस) अधिकारमें यह आया है. क्यों ? क्योंकि (आचार्य भगवानने) ज्ञानमात्र पर्याय वह आत्मा और ज्ञानमात्र पर्याय है, वह उसका धर्म. तो शिष्यने प्रश्न किया कि उसमें अेक ही धर्म आता है, (तो) अेकांत हो जाता है. (तो आचार्य भगवान कहते हैं कि) अेकांत नहीं है. ज्ञानमात्र यैतन्य स्वरूप, उसकी परिणतिमें ज्ञान पर्याय आती है, उसके साथ अनंत गुणकी पर्याय उत्पन्न होती है. 'ज्ञानमात्र' कहनेसे राग और पुण्य आदि नहीं; परंतु अनंत शक्ति नहीं, ऐसा नहीं (कहना चाहते). समझमें आया ? दो पत्रा पढ़ले (आ गया है). "यहां आचार्यदेव अनेकांतके संबंधमें विशेष यर्था करते हैं" अपनी पर्यायमें ज्ञानकी दशा उत्पन्न होती है, यह भाव शक्तिमें आया. परंतु उसमें रागका अभाव है, व्यवहारका अभाव है—यह अनेकांत है. ऐसा कहते हैं कि, व्यवहारसे भी हो और निश्चयसे (भी) हो, उसका नाम अनेकांत. (उस बातका) निषेध करनेको यह यर्था दी है. समझमें आया ? आहाहा ! उपादानसे भी हो और निमित्तसे भी हो, उसके निषेधके लिये यह अनेकांत दिया है, आहाहा !

पढ़ले भावशक्ति आ गयी न ? अपनी जितनी शक्ति है, इसमें भावशक्तिका रूप है. इस भाव शक्तिके कारण वर्तमान शुद्ध निर्मल पर्याय विद्यमान रहती है. समझमें आया ? यहां तो जिसे (स्वरूपकी) दृष्टि हुई इसकी बात है. जिसे शक्ति और शक्तिवानका भान नहीं, उसके (लिये) यहां अनेकांतकी यर्था नहीं करी है. समझमें आया ? वह तो व्यवहार — दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा, तपस्या, मुनिपना, बाह्यक्रियाकांड (यह सब करते-करते धर्म) होगी, (ऐसा माननेवाला) तो अेकांत मिथ्यादृष्टि है.

यहां तो अनेकांत नाम अपनी (जो) अनंत पवित्र शक्ति हैं, उसमें वर्तमान भावशक्तिके

कारण और शक्तिका रूप भी (अनंत) शक्तिमें है, उस कारणसे वर्तमान निर्मल पर्याय उत्पन्न होती है, वह विद्यमान रहती है। उसका कभी अभाव नहीं होता। वर्तमान विद्यमान है (उसकी बात है)। इसमें राग आदि व्यवहारका अभाव (है), उसका नाम अनेकांत और स्याद्वाद है। आहाहा ! समझमें आया ?

जैन दर्शन वस्तुकी स्थिति है। समझमें आया ? अपनी चीज परकी पर्याय करे, यह (बात) तीन काल, तीनलोकमें नहीं। पहले अकारणकार्य शक्ति आ गयी। अकारणकार्य शक्ति आ गई न ? कि अपने द्रव्यमें जितनी शक्तियां हैं, सबकी वर्तमान विद्यमान अवस्था रहती है। समझमें आया ? परंतु यह अवस्था परका कारण हो या परका कार्य हो, ऐसा नहीं है। ऐसा काम ! बाहरकी धमाधम करे, यह किया और वह किया। रथयात्रा, वरघोडा, गजरथ यलाते हैं। कौन यलाये ? भाई ! तुझे भबर नहीं। आहाहा !

श्रोता : कौन यलाता है ?

पूज्य गुरुदेवश्री : वह जडकी पर्याय जडसे होती है। छाथीका यलना-बैठना उसकी पर्याय छाथीके शरीरसे होती है, उसके आत्मासे नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? यह मंदिर बनाया तो किसने बनाया ?

श्रोता : आपने (बनाया)।

पूज्य गुरुदेवश्री : मैंने तो कभी कड़ा ही नहीं। बहुत लोग कहते हैं कि, यहां जंगल था तो आपके कारणसे यह कोडो रूपयेका पर्याय हुआ न ? अरे प्रभु ! वह बात नहीं है। उस समय इस परमाणुकी पर्याय होनेका स्वकाव था। उससे हुई है। भारी कठिन काम !

श्रोता : सारी दुनिया कल रही है, (किर) कैसे नहीं माने ?

पूज्य गुरुदेवश्री : सारी दुनिया तो अज्ञानमें पड़ी है, आहाहा !

यहां तो वस्तुस्थिति है वह बात होती है। यह परका मैं कर दूं, यह शास्त्र लिख दूं, अनुवाद करूं, वह आत्माकी किया नहीं। आहाहा ! बहुत सूक्ष्म बात, भापू ! सत्य बात ऐसी है।

अमृतचंद्रआचार्य कहते हैं कि, यह टीका मैंने बनाई नहीं। मोहमें मत पड़ो कि, मैंने बनाई है और तुमको उससे ज्ञान होता है, जैसे (मोहमें) मत पड़ो, भाई ! आहाहा ! यह शास्त्र श्रवण होता है तो अंदर ज्ञान होता है, ऐसा मत करो। मोहमें नहीं नाथो, आहाहा ! समझमें आया ? यह शास्त्र-शब्द सामने पड़ा है तो शब्दके कारण यहां ज्ञान होता है, जैसे मोहमें न पड़ो ! आहाहा ! क्योंकि शब्दकी पर्याय तो जडकी है, पर है और ज्ञानकी पर्याय अपने गुणके कारण, भाव शक्तिके कारण (उसकी) विद्यमान निर्मल अवस्था उत्पन्न होती ही है। ये कोई शब्दसे, वाणीसे, या भगवानकी वाणीसे भी (उत्पन्न) नहीं (होती)। ऐसी बात है ! आदमीको कठिन पड़े ! (लेकिन) क्या हो सकता है, भाई ! (वस्तु स्थिति

ऐसी है), आडाडा !

सिद्ध भगवान् देखते हैं, शास्त्रमें नुक्सान हो, शास्त्रमें कोई लाभ हो, (उनको) कोई विकल्प आता है ? वे तो जानते हैं कि, 'है' (ऐसा) होता है. वे तो पहले से ही जानते हैं. केवलज्ञान पहलेसे ही जानते हैं. 'जे-जे देभी वीतरागने, ते-ते छोसी वीरा, अनछोनी कबहुं न छोसे, काहे छोट अधिरा ?' आडाडा ! अभिमान छूटना कठिन (पडे), भाई ! समझमें आया ?

यहां तो कहते हैं कि, भावशक्तिके कारण अनंत गुणोंकी वर्तमान विद्यमान अवस्था होती ही है, आडाडा ! दूसरा भी आत्मा है, वह भी सम्यक्दृष्टि है, तो सम्यक्दृष्टि भी (भगवानकी वाणी) सुनने आते हैं. ओकावतारी क्षायिक समझिती ईन्द्र आदि भगवानकी वाणी सुननेको आते हैं. परंतु उसको भी जो ज्ञानकी पर्याय उत्पन्न होती है, (वह) ज्ञानगुणमें भाव शक्ति है (अर्थात्) ज्ञानगुणमें भावशक्तिका रूप है, उस कारणसे विद्यमान निर्मल पर्याय उत्पन्न होती है, आडाडा ! ऐसी बात है !

(लोग) ऐसा कहते हैं, (हम) बाहर थे तो हमें यह ज्ञान नहीं था और सुननेमें (आया) तो नया ज्ञान आया. तो सुननेसे (ज्ञान) आया कि नहीं ? आडाडा ! भाई ! ऐसा नहीं है. वह तो उस समय ज्ञानकी पर्याय उस प्रकारकी विद्यमान उत्पन्न होनेके लायक थी तो उत्पन्न हुई है. शब्दसे (और) परसे (उत्पन्न) नहीं (हुई). आदमीको ऐसा कठिन पडता है. जैनदर्शन कोई अलौकिक चीज है. लौकिकके साथ कोई मिलान नहीं होता.

भाव(शक्ति) कही बादमें अभाव (शक्ति कहते हैं). आत्मामें अभाव नामकी शक्ति है तो रागके अभावरूप परिणामन होना, यह अभाव शक्तिका कार्य है. राग-व्यवहार रत्नत्रयका जो विकल्प है, उससे अभावरूप परिणामन होना, यह अभावशक्तिका कार्य है. आडाडा ! समझमें आया ?

बादमें जो चलती है, ऐसी भावअभाव शक्ति. भावअभावका अर्थ (क्या) ? "भवते हुअे (प्रवर्तमान) पर्याय..." अनंत गुणकी वर्तमान प्रवर्तमान पर्याय (अर्थात्) ज्ञानकी, दर्शनकी, चारित्रकी, ज्वतरकी, कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, प्रभुत्व आदिकी कोई भी वर्तमान पर्याय भवति—होती है, उसके व्ययरूप (अर्थात्) उसका दूसरे समयमें व्यय होता है. परंतु वह व्यय होता है (यह) भावअभावशक्तिके कारण है. आडाडा ! ज्ञान, दर्शन, आनंद यह शक्तियां हैं, तो उसकी शक्तिमें वर्तमान पर्याय विद्यमान है.. विद्यमान है. अब इस पर्यायका अभाव कैसे होता है ? लोग कहते हैं न कि परिणामनमें काल निमित्त है, तो कालसे ऐसा परिणामन होता है. वह तो कालकी सिद्धि करनेको (ऐसा कडा) है. परिणामन तो अपनेसे (होता है). पूर्वकी पर्याय विद्यमान है, उसका अभाव करनेकी भावअभाव नामकी आत्मामें शक्ति है, आडाडा ! समझमें आया ?

નિશ્ચયમેં તો વર્તમાન કેવલજ્ઞાનકી પર્યાય જો હૈ, ઉસકા વ્યય-અભાવ (હોના), ‘હે’ ઉસકા અભાવ (હોના) યહ ભાવઅભાવ શક્તિકે કારણસે કેવલજ્ઞાનકી પર્યાય પલટ જાતી હૈ, આહાહા ! બાત તો ઐસી હૈ. આહાહા ! મૂલ તત્ત્વકી સ્થિતિ-મર્યાદા ક્યા હૈ ? વહ દૃષ્ટિમેં નહીં આયે, તબ તક વિપરીતતા ટલતી નહીં, આહાહા ! ભાવઅભાવ (અર્થાત્) ભાવ જો હૈ ઉસકા અભાવ (હોના). આયા ન ? “ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) પર્યાયકે વ્યયરૂપ ભાવઅભાવશક્તિ.” ભાવઅભાવશક્તિકા કાર્ય વ્યક્ત પર્યાય ઉત્પન્ન હૈ, ઉસકા અભાવ (હોના), આહાહા !

શ્રોતા : અગલે સમય જો ઉસકા અભાવ હોતા હૈ, વહ ઇસ શક્તિકે કારણ હોતા હૈ.

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : ઇસ ભાવઅભાવ (શક્તિકે કારણ હોતા હૈ). વર્તમાન પર્યાયકા અભાવ હોતા હૈ, યહ ભાવઅભાવશક્તિકે કારણસે (હોતા) હૈ. યહાં નિર્મલ પર્યાયકી (બાત) ચલતી હૈ, વિકારી (પર્યાયકી) બાત નહીં. દૂસરે તરીકે સે કહેં તો, (વર્તમાન) નિર્મલ પર્યાય ભવિષ્યકી પર્યાયકા કારણ હૈ, ઐસા ભી નહીં, આહાહા ! ઔર ભૂતકાલકી પર્યાયકા વર્તમાન પર્યાય કાર્ય હૈ, ઐસા ભી નહીં, આહાહા ! ઐસી બહુત સૂક્ષ્મ બાતેં (હેં), બાપૂ !

(યહાં) કહતે હૈ, “ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) પર્યાય...” (કભી) પર્યાયકી બાત સુની ન હો (ઔર) દ્રવ્ય, ગુણ ઔર પર્યાય ક્યા (હૈ) ? (ઇસકી ખબર નહીં). આહાહા ! સમજમેં આયા ? ત્રિકાલી શક્તિઓંકા પિંડ યહ દ્રવ્ય (હૈ) ઔર ઇસમેં શક્તિ-ગુણ હૈ – યહ શક્તિ. (ઔર) ઉસકી અવસ્થા બદલતી હૈ, વહ પર્યાય (હૈ). પરંતુ યહાં તો કહતે હૈં કિ, પર્યાયકા વ્યય હોના, (ઇસકા) ક્યા કારણ હૈ ? ઇસ ભાવઅભાવ શક્તિકા કારણ હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? કર્મકા ઉદય આયા ઔર (જો) નિર્મલ પર્યાય (હૈ) વહ મલિન હો ગયી, ઐસા યહાં હૈ હી નહીં. યહ બાત યહાં હૈ હી નહીં. પરંતુ અપની જો નિર્મલ પર્યાય હૈ ઉસકા દૂસરે સમયમેં વ્યય હોતા હૈ, વહ વ્યય હોનેકા કારણ ક્યા ? (તો કહતે હૈં કિ), યહ ભાવઅભાવશક્તિ (કારણ હૈ), આહાહા ! સમજમેં આયા ? યહ ભાવઅભાવશક્તિકા પ્રત્યેક ગુણમેં રૂપ હૈ. અનંત ગુણમેં ભાવઅભાવ શક્તિકા રૂપ હૈ. સમજમેં આયા ? આહાહા !

મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશકમેં સાતવેં અધિકારમેં આ ગયા હૈ ન ? વ્યવહારનય એકકા કારણ-કાર્ય ભિન્ન (દ્રવ્યમેં) બતાતા હૈ. દૂસરે કારણસે દૂસરા કાર્ય હોતા હૈ ઔર એક દ્રવ્યકા કાર્ય દૂસરે દ્રવ્યસે હોતા હૈ, ઐસા બતાતા હૈ. ઇસ વ્યવહારકી શ્રદ્ધા કરના યહ મિથ્યાત્વ હૈ, ઐસા બતાયા હૈ. મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશકમેં નિશ્ચયાભાસ ઔર વ્યવહારાભાસકા (સ્વરૂપ બતાયા હૈ, ઉસમેં આયા હૈ). યહ ક્લાસમેં ચલ ગયા થા.

યહાં ક્યા કહતે હૈં ? કિ વર્તમાન જો નિર્મલ પર્યાય હૈ, વહ કોઈ વિકારકે કારણસે (ઉત્પન્ન) હુઈ, ઐસા નહીં. સમજમેં આયા ? ઔર જિતના વ્યવહારનયકા કથન હૈ, વહ સબ, વૈસે હી માને તો મિથ્યાત્વ હૈ, ઐસા કહતે હૈં. યહાં આયા હૈ ? વ્યવહારનય એક દ્રવ્યકો દૂસરે દ્રવ્યમેં, એક ગુણકો દૂસરે ગુણમેં, એક પર્યાયકો દૂસરી પર્યાયમેં, એક કારણકો દૂસરે

કાર્યમાં મિલન કરતા હૈ. વહ મિથ્યાત્વ હૈ. નિશ્ચયનય યથાસ્થિત જૈસી પર્યાય જિસકી હૈ, (વહ) અપનેસે હુઈ હૈ, ઉસકા નિર્ણય કરતા હૈ, યહ સત્ય હૈ—સત્યાર્થ હૈ. આહાહા ! સૂક્ષ્મ બાત (હૈ). વસ્તુ તો ઐસી હૈ, આહાહા ! ઐસા (અપને) જ્ઞાનમાં ઉસકો નિર્ધાર કરના યાહિયે— નિર્ણય કરના યાહિયે. યહાં તો (જિસને) નિર્ણય કિયા હૈ, ઉસકી પર્યાયકી બાત ચલતી હૈ. સમજમાં આયા ? આહાહા !

સુખ શક્તિમાં ભી વર્તમાન આનંદકી પર્યાય વિદ્યમાન હૈ, ઉસકા વ્યય કરતે હૈં (હોતા હૈ). યહ સુખ શક્તિમાં ભાવઅભાવ નામકી (શક્તિકા) રૂપ હૈ, ઉસ કારણસે હોતા હૈ, આહાહા ! ક્વૌંકિ પર્યાયકી સ્થિતિ એક સમયકી હૈ. સમજમાં આયા ? ઉસ પર્યાયકી સ્થિતિ એક સમયકી હૈ તો ઉસકા વ્યય હોતા હૈ. (પર્યાયકા) વ્યય હોકર જાતી હૈ કહાં ? જલકે તરંગ જલમાં સમાતે હૈં. જલકા (એક) તરંગ ગયા ઔર દૂસરા તરંગ આયા, તો (પહલા તરંગ) ગયા કહાં ? જલમાં (ગયા). જલકા તરંગ જલમાં ડૂબત હૈ. યહ સમયસાર નાટકમાં આતા હૈ. યહાં ભી આયા હૈ. (અધ્યાત્મ) પંચસંગ્રહમાં ભી આયા હૈ. ઉસમાં યહ ભાવઅભાવ શક્તિકા વર્ણન આયા હૈ. વર્તમાન જલકા તરંગ જો હૈ ઉસકે ભાવકા અભાવ હોતા હૈ. સમજમાં આયા ? (જો) પર્યાય વ્યય હુઈ (વહ) ગઈ કહાં ? પર્યાય વિદ્યમાન થી ઉસકા અભાવ હુઆ તો વહ પર્યાય ગઈ કહાં ? કહાં ગઈ ? જલકે તરંગ અંદર જલમાં ડૂબત હૈં.

યહાં તો નિર્મલ પર્યાયકી બાત ચલતી હૈ. અશુદ્ધ પર્યાય ભી જો હૈ, (ઉસમાં) દૂસરે સમયમાં અશુદ્ધ હોતી હૈ તો પહલે સમયકી અશુદ્ધતાકા વ્યય હુઆ, વહ સત્ થા, તો કહાં ગયા ? વ્યય હુઆ તો (કહાં ગયા) ? (તો કહતે હૈં કિ) (પર્યાય વ્યય હોકર) અંદરમાં ગઈ પરંતુ (અંદરમાં) અશુદ્ધતા નહીં રહી. ક્યા કહતે હૈં ? રાગકી પર્યાય હૈ, (તો) દૂસરે સમયમાં ઉસ રાગકી પર્યાય વ્યય હુઈ. વ્યય હુઆ તો (પર્યાય) ગઈ કહાં ? કિ અંદર દ્રવ્યમાં ગઈ. અંદરમાં ગઈ તો વહાં અશુદ્ધતા રહી હૈ ? નહીં (અશુદ્ધતા નહીં રહી). વહ અશુદ્ધતા તો ઉદયભાવકી પર્યાય હૈ ઔર ઉસમાં (દ્રવ્યમાં) ગયી તબ પારિણામિકભાવરૂપસે હો ગઈ. સમજમાં આયા ? જો દયા, દાન વિકલ્પ આદિ રાગ હૈ, વહ તો ઉદયભાવ હૈ ઔર દૂસરે સમયમાં તો ઉસકા વ્યય હોતા હૈ. વ્યય હોતા હૈ તો કહાં ગયા ? અંદર દ્રવ્યમાં ગયા. પરંતુ વહાં અશુદ્ધતા ગઈ ? (નહીં) ઉસકી યોગ્યતા અંદર ગઈ (હૈ), આહાહા !

વર્તમાન અશુદ્ધતા જો હૈ વહ ઉદયભાવ હૈ. ઉદયભાવ અંદર ગયા તો વહાં અંદર પારિણામિકભાવમાં ગયા, તો (વહાં) ઉદયભાવ તો હૈ નહીં.

શ્રોતા : શુદ્ધાશુદ્ધ પર્યાયોંકા પિંડ, વહ દ્રવ્ય ઐસા કહતે હૈં.

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : વહ તો જો અશુદ્ધતાકો માનતે નહીં હૈ ઉસ કારણસે (ઐસા કહા). મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશકમાં દો ઠિકાને આયા હૈ. શુદ્ધાશુદ્ધ પર્યાયકા પિંડ (વહ દ્રવ્ય). વહ તો ભૂતકાલમાં અશુદ્ધતા ગઈ, ઇસકો માનતે હી નહીં, ઉસકો બતાનેકો વહ બાત કહી હૈ. શુદ્ધ-અશુદ્ધ (પર્યાયકા

पिंड वह द्रव्य. उसका मतलब यह नहीं है कि अंदरमें अशुद्धता है. इसकी बात तो यहां है ही नहीं. यहां तो विद्यमान निर्मल पर्याय जो भवती प्रवर्तमान, सम्यग्दर्शनकी पर्याय, आनंदकी पर्याय, शांतिकी पर्याय विद्यमान है उसका व्यय होता है. यह व्यय होता है, ये भावअभावशक्तिके कारणसे व्यय होता है. और गઈ कहां ? कि अंदरमें डूबी. यहां (जब) बाहर पर्याय थी तो वह उपशम, क्षयोपशम या क्षायिकभाव आदिकी थी. निर्मल (पर्यायकी) बात चलती है न ? सम्यग्दर्शनकी पर्याय बाहर आयी वह, उपशमभाव, क्षयोपशमभाव या क्षायिकभावकी थी परंतु उसका व्यय हुआ और (अंदरमें) गई (तो) वहां अंदरमें क्षयोपशम, क्षायिकभाव रहा नहीं, आडाडा ! ऐसा बातें (हैं) ! पारिणामिकभाव हो गया. आडाडा ! प्रभुका सत्का स्वरूप तो देखो ! प्रभु यानी तू हूं ! आडाडा !

यहां तो “भवते बुभे...” भवते नाम प्रवर्तमान-वर्तमान (पर्याय) उसका व्यय (नाम) अभाव. वर्तमान भाव-पर्याय थी उसका व्यय – यह अभाव. यह भावअभावशक्तिके कारणसे है. आडाडा ! छतने शब्दमें तो कितना भर दिया है ! अरे...! प्रभुता नामकी शक्ति जो है इसमें भी भावअभाव पडा है. इस प्रभुता शक्तिकी वर्तमान विद्यमान निर्मल पर्याय जो है, उसका व्यय होकर अंदरमें यही जाती है और व्यय होकर भावका अभाव हो जाता है. भाव है उसका अभाव हो जाता है. आडाडा ! ऐसा तत्त्वका स्वरूप है. ऐसी दृष्टि नहीं हो और विपरीत दृष्टि हो तो (वह) मिथ्यादृष्टि है. आडाडा ! समझमें आया ? आडाडा !

अक युवान भाई कहता था. दमोदके पास अधाना (गांव) है, वहांसे आया है. आठ द्योपहरको आया था. बहुत भुश हुआ था. कहता था, ‘मैं तो समवसरणमें बैठा हूं, ऐसा लगता है’ आडाडा ! देखो ! जवान आदमीको भी (तत्त्वका) प्रेम हो जाता है. यह जवान अवस्था तो जडकी है. आत्माकी जवान अवस्था तो सम्यग्दर्शन हुआ, यह जवान अवस्था है. रागको अपना मानना यह बाल अवस्था है. अज्ञान अवस्था है. शरीरकी अवस्था तो बाहरमें-जडमें है, आत्मामें तो है नहीं, आडाडा !

यहां कहते हैं, “भवते बुभे (प्रवर्तमान)...” अनंत गुणकी वर्तमान निर्मल पर्याय जो है, उसका अभाव-व्यय किस कारणसे होता है ? कालका निमित्त है तो होता है, ऐसा नहीं, ऐसा कहते हैं. आडाडा ! समझमें आया ? (मलिन पर्याय) व्यय होकर दूसरी मलिन पर्याय होती है, उसकी (बात) यहां नहीं है. यहां तो (पर्याय) व्यय होकर दूसरी निर्मल पर्याय ही होती है. बादमें भावभाव (शक्तिमें) आयेगा. यहां तो भावअभावकी बात चलती है. भाई ! यह तो मंत्र है ! यह तो थोड़े शब्दोंमें मंत्र है ! आडाडा ! भगवानकी द्विव्यध्वनिमें ऐसे मंत्र आये हैं. भगवान ! तेरेमें तो अनंत पवित्र शक्तियां पडी हैं. उसकी दृष्टि होती है तब प्रत्येक गुणकी पवित्र पर्याय प्रगट होती है. अकेली ज्ञानकी (पर्याय) ही (प्रगट) होती

है और अनंत आनंदकी (पर्याय प्रगट) नहीं (होती), ऐसा नहीं. क्योंकि सुषु नामकी जो शक्ति है, उसमें भी भावअभाव नामकी (शक्तिका) रूप है तो आनंद नामकी वर्तमान पर्याय है उसका व्यय हो जाता है. भावअभावके कारण वर्तमान आनंदकी पर्याय है उसका अभाव हो जाता है, आहाहा ! किस कारणसे अभाव होता है ? कि भावअभावशक्तिके कारणसे (अभाव होता है). इसका मकभन जो प्यालमें आ जाये तो उसमें सभी शक्तियां आ गयी. समझमें आया ? आहाहा ! भारी गजब है !

यह शक्तिका वर्णन पढकर, श्वेतांबरमें एक साधु हुआ है. (उनको) उनके संप्रदायका वाचन भी बहुत था, और थोडा यह भी पढा. तो वे उसकी नयी कल्पित शक्ति बनाते थे. आठ (शक्ति) बनाई, परंतु यह नहीं. इस स्थितिकी नहीं. उसके पेपरमें आठ शक्ति आयी थी. यह तो अलौकिक बातें (हैं), बापू ! दिगंबर धर्म यानी सनातन जैन वस्तुकी स्थिति—सनातन वस्तुकी स्थिति. ऐसी स्थिति कहीं है नहीं. समझमें आया ? दिगंबरके संप्रदायमें जन्म हुआ, उस संप्रदायवालोंको कुछ खबर नहीं. देवदर्शन करना, व्रत करना, अपवास करना, ब्रह्मचर्य पालना, यह हमारा धर्म है. (ऐसा मानते थे).

श्रोता : आपके प्रतापसे सब शक्ति प्रकाशमें आयी हैं.

पूज्य गुरुदेवश्री : स्पष्ट तो भगवानने किया है. आचार्योंने स्पष्ट कर दिया है. टीका तो देखो ! पाठ है न ? देखो ! क्या है ? आहाहा ! 'शून्यावस्थत्वरूपा अभावशक्ति' - आ गई. बादमें 'भवत्पर्यायव्ययरूपा भावाभावशक्ति:' यह संस्कृत है. 'भवत्पर्यायव्ययरूपा भावाभावशक्ति:' आहाहा ! इसमें तो अनंत पर्यायका स्पष्टीकरण कर दिया. जो कोई अनेक शक्ति है, सम्यक्दृष्टिको उसकी वर्तमान निर्मल पर्याय होती है. उस पर्यायका व्यय होना, भाव है उसका अभाव होना, यह भावअभाव शक्तिका कार्य है. उसे करना पडता नहीं कि, मैं इस पर्यायका (व्यय करूं). इस शक्तिका कार्य ही ऐसा है. समझमें आया ? शक्तिवानको जहां दृष्टिमें लिया तो शक्तिका कार्य जो वर्तमान पर्यायका (अभाव होना), उसका मैं अभाव करूं, ऐसा विकल्प भी नहीं (है), आहाहा ! समझमें आया ? प्रभु ! समझमें आये उतना समझो, बापू ! यह तो गंभीर चीज है. पूरी-पूरी (बात) तो संतों कर सके. एक-एक शक्तिमें अनंत शक्तिका रूप पडा है. अनंत शक्तिमें एक शक्तिका रूप पडा है, आहाहा !

ज्ञानकी पर्यायमें, प्रभुत्वकी पर्यायमें वर्तमान विद्यमान जो भवती (पर्याय) है, प्रवर्तमान, उसका व्यय होना (यह भावअभावशक्तिके कारण से है). वैसे तो उत्पाद्-व्यय-ध्रुव नामकी १८ वीं शक्ति है. वह पहले कह गये. उत्पाद्-व्यय-ध्रुव शक्तिके कारणसे पर्याय उत्पन्न होती है, पूर्वकी (पर्याय) व्यय होती है, और ध्रुव (कायम) रहता है. वह तो पहले आ गया है.

यहां तो वर्तमान पर्याय विद्यमान है. उसका अभाव (होता है, यह बात लेनी है).

आहाडा ! भाव संपन्न स्वरूप प्रभु ! उसमें—द्रव्यमें भावअभाव शक्ति भी है. और गुणमें भी अक-अक गुणमें भावअभाव (शक्तिका) रूप है. आहाडा ! भावशक्ति तो भावशक्तिमें है. भावका अभाव (होना, असी) भावअभाव शक्ति तो भावअभावशक्तिमें है. इस शक्तिके कारण, आहाडा ! वर्तमान निर्मल वीतरागी पर्याय उत्पन्न हुई, उसका व्यय होना, यह भावअभाव (शक्तिका) कार्य है. 'मैं (पर्यायका) व्यय करूं', ऐसा भी वहां नहीं है. वैसे ही मैं वर्तमान विद्यमान निर्मल पर्यायको प्रगट करूं, (ऐसा भी नहीं है). विद्यमान है, उसको करूं क्या ? भावशक्तिके कारण विद्यमान (पर्याय) तो होती ही है. आहाडा ! समझमें आया ?

यह तो पुरुषार्थका मार्ग है, आपू ! आहाडा ! उसमें भी अपने समझनेमें जिसका उल्लासित वीर्य आया, उसके लिये यह बात है, आहाडा ! उल्लासित वीर्यका अर्थ (क्या) ? अपने स्वरूपकी रचनामें (जिसका) वीर्य उल्लासित है. वीर्यगुणका यह कार्य आया न ? आत्मस्वरूपकी रचना करे वह वीर्य, आहाडा ! यहां तो पुण्य-पापकी रचनाकी बात ही नहीं है. प्रभु ! उसका नाम अनेकांतकी यर्यामें आता है. क्या करें ? यह मिला नहीं, सुनने मिला नहीं. सत्यकी स्थितिकी मर्यादा सुनने मिले नहीं, तो मर्यादामें कहांसे आये ? आहाडा !

यहां कहते हैं कि, सर्वदृशी शक्तिमें भी भावअभाव (शक्तिका रूप) पडा है. सर्वदृशीपना प्रगट हुआ उसका भी भावअभावके कारण, सर्वदृशी शक्तिकी विद्यमान पर्यायका अभाव होता है, आहाडा ! जैसे सर्वज्ञ पर्याय जो उत्पन्न हुई, आहाडा ! उस पर्यायमें अक तो अगुरुलघुगुणके कारण षट्गुणहानिवृद्धि होती है, वह दूसरी थीज (है). केवलज्ञानकी पर्यायमें भी अगुरुलघु (गुणके कारण) अक समयमें षट्गुणहानि (और उसी समयमें) षट्गुणवृद्धि (होती है). आहाडा ! यह तो गजब बात है ! केवलज्ञानकी अक समयकी पर्यायमें अनंतगुणहानि, असंख्यगुण हानि, संख्यगुण हानि, अनंतभाग हानि, असंख्यभाग हानि, संख्यभाग हानि — यह हानिके छः भोल हैं. अनंतगुण वृद्धि, असंख्यगुण वृद्धि, संख्यगुण वृद्धि, अनंतभाग वृद्धि, असंख्यभाग वृद्धि, संख्यभाग वृद्धि, — यह छः वृद्धिके (भोल) हैं. आहाडा ! अक ही समयमें इस छः प्रकारकी (हानि-वृद्धि) है. यह तो वीतराग (केवलज्ञान) गम्य है. यह तो आत्माके ज्ञानमें आ सके असी थीज है, समझमें आया ? आया न ?

भाव (अर्थात्) प्रवर्तमान वर्तमान विद्यमान वस्तु—उसका व्यय (होना), आहाडा ! क्षायिक समकितकी सम्यक् पर्याय जो है, उसका भी दूसरे समयमें व्यय होता है, आहाडा ! समझमें आया ? तो कहते हैं कि, क्या कारणसे ऐसा होता है ? कि भावअभावशक्तिके कारण (होता है). उसे द्रव्य पर नजर करनी पड़ेगी. उसे गुण और पर्यायके त्मेद पर भी दृष्टि नहीं (करनी है), समझमें आया ? आहाडा !

यह तो अपना कार्य करना हो, उसकी बात है. दुनियाको समझने आये न आये उसके साथ कोई संबंध नहीं है, आहाडा ! उसका विशेष अर्थ करने आये या नहीं आये, अनुवाद

करने (आये या नहीं आये) उसके साथ कोई संबंध नहीं (है). आहाहा ! यह तो शक्तिरूप जो वस्तु है, उसे पर्यायमें प्रसिद्ध करना, यहां तो यह कार्य है. और पर्याय प्रसिद्ध हुई (उसका) दूसरे समयमें व्यय होता है, वह भी उसकी शक्तिके कारण है, आहाहा ! समझमें आया ?

यह निर्मल पर्यायकी बात चलती है. मलिन पर्याय है (और उसका) व्यय होता है, उसकी यहां बात नहीं है. क्योंकि मलिन पर्याय तो ज्ञाताकी पर्यायका परज्ञेय है. परज्ञेयकी पर्यायका व्यय हो, वह भावअभाव है, यहां यह बात नहीं है. आहाहा ! समझमें आया ?

अनंतधर्मत्व शक्ति आयी न ? अनंतधर्मत्वशक्ति आ गई. अक-अक धर्म विलक्षण है. कोई दूसरे धर्मके साथ लक्षण मिलता नहीं. आहाहा ! अनंतधर्म शक्तिमें – अनंतधर्म माने गुण. प्रत्येक धर्मकी विलक्षणता है. अक धर्मका लक्षण दूसरे धर्मके लक्षणमें आता है, ऐसा नहीं. आहाहा ! ऐसा अनंतधर्मत्व शक्तिमें भी अक समयमें अनंत धर्मकी पर्याय विद्यमान है, उसका व्यय हो, यह भावअभाव शक्तिके कारण (है), आहाहा ! शक्तिका व्यय नहीं (होता). प्रवर्तमान पर्यायकी बात (है). शक्तिका व्यय होता नहीं. उत्पाद् होता नहीं.

व्यापारके आडे-पापके आडे कुरसद नहीं मिलती. आहाहा ! उसमें दो-पांय कोड मिल जाये तो 'हुं पड़ोणो अने शेरी सांकडी' (ऐसी गुजरातीमें कडावत है) ऐसा हो जाता है. लडकेके लिये मकान बनाओ, इसके लिये ये करो, वह करो, अरेरे.. प्रभु ! तुझे कहां जाना है ? सुननेके लिये निवृत्ति नहीं मिले और पुण्य भी नहीं हो तो धर्म तो कहांसे आया ? सुननेके लिये – वांयनके लिये समय निकाले शुभभाव-पुण्य तो होता है. परंतु यहां उसकी बात है नहीं. यहां तो सम्यक्दृष्टिके आत्माने त्रिकादीका आश्रय लिया है तो जितनी शक्तियोंका पिंड है, उन प्रत्येक शक्तिकी वर्तमान निर्मल पर्यायकी लयाती है, उस लयातीका व्यय होता है, ऐसी बात है. आहाहा !

भावअभावशक्ति उसका गुण है, ऐसा कहते हैं. भावअभाव नामकी शक्ति उसका अर्थ उसका गुण है, आहाहा ! आत्माने भावअभाव नामका अक गुण है, शक्ति (है). शक्ति कहां कि गुण कहां (अक ही बात है). इस गुणके कारण वर्तमान पर्यायका अभाव होता है, आहाहा ! निर्मल (पर्याय) हां ! क्योंकि पर्यायकी स्थिति अक समयकी है. पर्यायकी स्थिति अक समयकी है (और) द्रव्य-गुणकी स्थिति त्रिकाल है. आहाहा ! समझमें आया ? दर्शन, ज्ञान, यारित्र, प्रभुत्व, विभुत्व, सर्वदर्शी, कर्ता, कर्म, करण, अकर्ता, अमोक्ता – ये नामकी शक्ति है तो पर्यायमें अकर्तापनेकी निर्मल पर्याय विद्यमान है. परंतु इस अकर्तापनेकी शक्तिमें भावअभाव शक्तिका रूप है, इस कारणसे उसका भी वर्तमान पर्यायका व्यय होकर भावअभाव होता है. 'है' उसका अभाव होता है, आहाहा !

अब अभावभाव शक्ति (लेते हैं). इसमें पूरा तो कहां हो सकता है ? (अंदरसे जितना

सहज) आये तो आये. तैयार किया हुआ थोड़ा है ? आहा ! ज्वतर शक्ति आयी न ? ज्वतर शक्तिका लक्षण यिति है. दूसरी (शक्ति) उसका लक्षण है. सम्यक्दृष्टिको यिति शक्ति और ज्वतर शक्ति दोनोंकी वर्तमान पर्यायमें निर्मलता शुद्धताकी (पर्याय) विद्यमान है. विद्यमान शुद्धताका व्यय होता है, यह भावअभावके कारण (होता है). आहाहा ! समझमें आया ?

पर्यायमें शक्ति नहीं आती. शक्तिका रूप है, यह ज्ञानपर्यायमें जाननेमें आता है. क्या कडा ? ज्ञानकी वर्तमान पर्याय विद्यमान है, इस पर्यायमें शक्ति और द्रव्यका जानपना आता है, परंतु इस पर्यायमें द्रव्य और शक्ति आती नहीं. इस वर्तमान विद्यमान पर्यायका अभाव (हुआ) तो इस अभावमें ज्ञानकी पर्यायमें भी अभाव (हुआ). यह अभाव पर्यायमें हुआ, शक्तिमें अभाव नहीं (हुआ). समझमें आया ? शक्ति तो जो है सो है. आहाहा ! ऐसा है. ऐसा आदमीने सुना नहीं हो उसे अंकांत लगे. इसमें तो निश्चयकी ही बातें करते हैं. परंतु निश्चय यानी सत्य. व्यवहार यानी उपचार और आरोपित बात. आहाहा ! वह तो कथनमात्र (है, ऐसा) नहीं कडा था ? व्यवहार कथनमात्र है, आहाहा ! यह उप वीं शक्ति छुई.

अब उ६ (वीं शक्ति लेते हैं). “नहीं भवते हुआ...” (अर्थात्) नहीं होनेवाली पर्याय—मलिनताकी नहीं होनेवाली पर्याय, आहाहा ! “...(अप्रवर्तमान) पर्यायके उदयरूप...” आहाहा ! पहले भावअभाव (शक्ति) आयी. अब अभावभाव (शक्ति है). जो वर्तमान पर्यायमें अभाव(रूप) है, उसका भाव होना. है ? “नहीं भवते हुआ (अप्रवर्तमान) पर्यायके उदयरूप...” उदय (दिखा) है न ? (अर्थात्) प्रगट होना. आहाहा !

यह तो बहुत शांतिसे और धीरजसे समझे तो (समझमें) आये ऐसी (बातें हैं). बापू ! यह कोई कथा नहीं है, कडानी नहीं है. यह तो भागवत् कथा—भगवानकी कथा है, भाई ! आहाहा ! उसने उल्लासित वीर्यसे कभी सुनी नहीं. समझमें आया ? आहाहा !

वहां पद्मनंदि पंचविंशतीमें कडा था न ? ‘तत्प्रतिप्रीतिचित्तेन येन वार्तापि हि श्रुता’ जिसने प्रीति (प्रसन्न) चित्तसे अध्यात्मकी बात सुनी है, वह अवश्य मोक्षका भाजन है, आहाहा ! पद्मनंदि पंचविंशतीमें है तो २६ अधिकार परंतु २५ अधिकार लिये हैं. आहाहा ! उसमें तो जैसे अंक अधिकार लिया है. ब्रह्मचर्यके २६वें (अधिकारमें) ब्रह्मचर्यकी बहुत बात (कही है). आनंद स्वरूपमें रमणता (करना) यह ब्रह्मचर्य है. शरीरसे शील (ब्रह्मचर्य) पालना यह कोई ब्रह्मचर्य नहीं, वह तो विकल्प—राग है. भगवान आत्मा ! आनंद स्वरूपमें ब्रह्म नाम आनंदमें लीन होना, यह ब्रह्मचर्य है. आचार्य बादमें कहते हैं, ‘अरे युवको ! अरे युवानो ! मेरी यह ब्रह्मचर्यकी बात सुनकर तुमको ठीक न लगे, (तो) क्षमा करना. मैं तो मुनि हूँ. (मुझे) क्षमा करना’ आहाहा ! क्योंकि ये स्त्रीके भोगमें (लोग) लीन है. अरे भाई ! तुझे भबर नहीं, बापू ! ब्रह्म नाम आनंद स्वरूप भगवानमें लीन होना, यह ब्रह्मचर्य है. कायाके

द्वारा, मनके द्वारा (भोग) नहीं करना, ये (ब्रह्मचर्य) नहीं. अंदरमें विकल्पसे (भोग) नहीं करना (यह ब्रह्मचर्य है). आहाहा ! निर्विकल्प ब्रह्मचर्यमें लीन होना उसका नाम ब्रह्मचर्य है. यह (बात) गाथामें है. आचार्य महाराजने फरमाया कि, 'हे युवको ! हे युवानो ! तुम्हारी २५-३०-४० सालकी युवान अवस्था है. जाने-पीनेसे तंदुरस्त जैसे लगते हो, पांय-दस लापका मकान हो, आहा ! अरे प्रभु ! तुजे (यह बात) न रुये तो कंटावा नहीं करना. (हमको) क्षमा करना. क्योंकि हम मुनि हैं. हम क्या करें ? दूसरा क्या करें ?' वैसे यहां आचार्य कहते हैं कि, हम तो समझिती है तो हम तो क्या करें ? यह बात तुमको समझमें नहीं आये और कंटावा लगे तो हमको माफ़ करना. आहाहा ! अरे ! ऐसा उपदेश (सुनने) मिलना भी मुश्किल है. आहाहा ! ऐसी बात है. इसलिये लोगोंको बेयारोंको ऐसा लगता है. अरेरे..! यहांकी दया पाते हैं. अरेरे... बापू ! भाई ! व्यवहारसे मुक्ति नहीं मानते हो वे (लोग) नरकमें और निगोदमें (यले जायेंगे). प्रभु ! सुन तो सही, आहाहा ! वह नरक और निगोद तो तत्त्वदृष्टिसे विरुद्ध कहनेवालोंको लागू पडती है, समझमें आया ?

समयसारमें तत्-अतत्, अक-अनेक १४ बोल नहीं आये ? वहां पशु कहा है. जो अकांत मानते हैं कि, रागसे लोभ होता है वह तो अकांत है. आहाहा ! इसको वहां पशु कहा है. पशु है. प्रभु ! वर्तमानमें भी तुम 'पश्यति एति पशु', 'बद्धति एति पशु' (हो). आहाहा ! संस्कृतमें १४ बोलमें पशु (कहा है). उसका अर्थ क्या है ? पश्यति-पशु. पशुका अर्थ यह है कि, मिथ्यात्वसे बंधता है इसलिये पशु (है). और यह पशुका अर्थ वर्तमानमें भी मिथ्यात्वरूपी पशुसे बंधता है और इसके फलमें भी निगोद गति है, प्रभु ! आहाहा ! वह (भी) पशु है, निगोद पशु है. समझमें आया ? आहाहा !

आचार्य महाराज तो वहां तक कहते हैं कि, अक वस्त्रका टुकड़ा रफ़कर 'हम मुनि हैं' ऐसा माने, मनावे (और ऐसी) मान्यतावालेका अनुमोदन करे, वह निगोद 'गच्छ'— (निगोदमें जायेगा). आहाहा ! ककडीके थोरको झंसी मिले ? आहाहा ! नहीं प्रभु ! तुमने बहुत बड़ा गुना किया है. अक वस्त्रका टुकड़ा रफ़कर तीनकालमें मुनिपना होता ही नहीं. वस्त्रके कारण (निगोदमें) नहीं (जाता है). परंतु उस ममताके कारण (निगोदमें जाता है). समझमें आया ? आहाहा ! जहां वस्त्र रफ़नेका, ओढनेका भाव है वहां ममत्व है और (जहां) ममत्व हो वहां चारित्र नहीं है. उसको (मुनि) मानना वह मिथ्यात्वभाव है और मिथ्यात्वका फल निगोद है. आहाहा ! कोई शुभ परिणाम हो और स्वर्ग मिल जाये और अशुभ परिणाम हो तो नरक मिल जाये. परंतु वास्तवमें तत्त्वदृष्टिसे विरुद्ध दृष्टिका फल तो यथार्थ निगोद है. और तत्त्वदृष्टिकी आराधनाका फल मुक्ति है, अस ! समझमें आया ? आहाहा ! वह तो भीयमें थोड़ा शुभ भाव हो और स्वर्गमें जाये, अशुभ हो तो नरकमें जाये; वह कोई चीज नहीं. मूल चीज तो मिथ्यात्वका फल निगोद और सम्यग्दर्शनका फल

મુક્તિ (હૈ), આહાહા !

(યહાં) ક્યા કહા ? નહીં પ્રવર્તતે પર્યાયકે ઉદયરૂપ (અર્થાત્) ભવિષ્યકી જો પર્યાય હોનેવાલી હૈ, વહ વર્તમાનમ્ નહીં હૈ. દૂસરે સમયમ્ જો પર્યાય હોનેવાલી હૈ વહ વર્તમાનમ્ નહીં હૈ. નિર્મલ (પર્યાયકી) બાત ચલતી હૈ. આહાહા ! નહીં પ્રવર્તમાન પર્યાયકે ઉદયરૂપ વર્તમાનમ્ (ભવિષ્યકી પર્યાય) પ્રવર્તમાન નહીં હૈ. ભવિષ્યમ્ (વહ) ભવિષ્યકી (પર્યાય) વર્તમાન હો જાયેગી. અભાવ હૈ ઉસકા ભાવ હો જાયેગા. અભાવ હૈ ઉસકા ભાવ હો જાયેગા. આહાહા ! સમજમ્ આયા ? ભવિષ્યકી કેવલજ્ઞાન આદિકી પર્યાય વર્તમાનમ્ નહીં હૈ. સમજમ્ આયા ? આહાહા ! વર્તમાનમ્ નહીં પ્રવર્તમાન પર્યાયમ્ ભવિષ્યકી પર્યાય પ્રગટ હોગી, આહાહા ! ક્યા કહા ? વર્તમાનમ્ ભવિષ્યકી પર્યાયકા અભાવ (હૈ). સમજમ્ આયા ? પરંતુ ઉસ અભાવકા ભાવ હો જાયેગા. ઐસી અભાવભાવશક્તિ હૈ.

પહલેમ્ ભાવઅભાવશક્તિ કહા થા. (વર્તમાનમ્) હૈ ઉસકા વ્યય હોગા. યહાં તો કહતે હૈં કિ, (વર્તમાનમ્) નહીં હૈ ઉસકા ઉદય હોગા. આહાહા ! ઇસ શક્તિકે કારણ ઐસા હોગા હી. આહાહા ! ક્ષયોપશમ સમકિતમ્ ક્ષાયિક સમકિતકા અભાવ હૈ, સમજમ્ આયા ? તો કહતે હૈં કિ, ભલે (વર્તમાનમ્) અભાવ હો, પરંતુ (જો) અભાવ (રૂપ હૈ, ઉસકા) ભાવ હો જાયેગા. અભાવમ્ હી ભાવ હો જાયેગા. ભગવાનકે સમીપમ્ ક્ષાયિક સમકિત હોતા હૈ, વહ તો નિમિત્તકા કથન હૈ. ભગવાન તીર્થકર યા શ્રુતકેવલીકે સમીપમ્ (ક્ષાયિક સમકિત હોતા હૈ). ઐસા આતા હૈ ન ? યહાં તો દૂસરે તરીકે સે કહતે હૈં કિ, ક્ષયોપશમ સમકિત હૈ, ઇસમ્ ક્ષાયિકકા અભાવ હૈ. (વર્તમાનમ્) ઉસ ક્ષાયિકકા અભાવ હૈ. પરંતુ (ભવિષ્યમ્) ક્ષાયિક હો જાયેગા. આહાહા ! અભાવકા ભાવ હો જાયેગા. આહાહા ! ઐસી અભાવભાવ નામકી શક્તિ હૈ. સમજમ્ આયા ?

શાસ્ત્રમ્ ઐસા ચલા હૈ કિ, ક્ષાયિક સમકિત તો ભગવાનકે સમીપમ્ હી હોતા હૈ. પરંતુ સમીપમ્ (હોતા હૈ) વહ તો નિમિત્તકા કથન હૈ. ઉસ સમય પર્યાયમ્ ક્ષાયિક સમકિત નહીં હૈ, અભાવ હૈ – ઉસકા ભાવ હો જાયેગા, આહાહા ! વહ અપની અભાવભાવ (નામકી) શક્તિકે કારણ ઐસા હોતા હૈ. ભગવાનકે સમીપમ્ આયા (તો) ક્ષાયિક સમકિત હુઆ, ઐસા નહીં (હૈ), ઐસા કહતે હૈં. સમજમ્ આયા ? અરે ! ઐસી બાતે (હૈં) ! લોગ ઐસા કહતે હૈં કિ, વ્યવહારકો ઉત્થાપતે હૈં. બાત તો સચ્ચી હૈ, આહાહા !

અબ યહાં (એક ઓર) કહતે હૈં કિ, શ્રુતકેવલી ઓર તીર્થકરકે સમીપમ્ ક્ષાયિક સમકિત હોતા હૈ (ઓર) યહાં કહતે હૈં કિ, (વર્તમાનમ્) ક્ષયોપશમ સમકિતમ્ ક્ષાયિક સમકિતકા અભાવ હૈ. પરંતુ જિસકા અભાવ હૈ વહ ભાવ હો જાયેગા. અભાવકા ભાવ હો જાયેગા. આહાહા ! અપની શક્તિકે કારણસે હો જાયેગા. ભગવાનકે સમીપ હૈ તો ક્ષાયિક સમકિત હો જાયેગા (ઐસા નહીં હૈ). આહાહા ! સમજમ્ આયા ? યહ તો એક લક્ષમ્ ખ્યાલ આ ગયા.

વર્તમાનમ્ સ્વરૂપ આચરણ ચારિત્રકી પર્યાય હૈ, ઇસમ્ વિશેષ સ્થિરતાકી પર્યાયકા અભાવ

હૈ, પરંતુ વહ અભાવ હૈ ઉસકા ભાવ હો જાયેગા. આહાહા ! અભાવકા ભાવ હો જાયેગા. અભાવ હૈ ઉસકા ભાવ હોગા. ઉદય શબ્દ ઇસ્તમાલ કિયા હૈ ન ?

શ્રીમદ્મં ભી ઐસી બાત કરતે હૈં. ‘ઉદય થાય ચારિત્રનો’ આત્મસિદ્ધિમં ઐસા આતા હૈ. ઉદય નામ પ્રગટ હોગા. વર્તમાનમં ક્ષયોપશમ સમકિત હૈ, ઉસમં ક્ષાયિકકા અભાવ હૈ. (પરંતુ) અભાવભાવ શક્તિ હૈ તો અભાવકા ભાવ હો જાયેગા. વિશેષ કહૈંગે....



આત્માનું બળ એટલે કે વીર્ય એમાં એવી તાકાત છે કે તે આત્મસ્વરૂપની રચના કરે છે અને તે જ તેનો સ્વભાવ છે. તે વિકારને રચે કે પરને રચે તેવું તે વીર્યનું સ્વરૂપ જ નથી.

પરમજ્ઞાની આત્માની દિવ્ય શક્તિઓનું વર્ણન કરતાં જણાવે છે કે આત્મામાં દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાયની રચનાના સામર્થ્યરૂપ એક વીર્ય શક્તિ છે કે જેનું શક્તિવાન એવા આત્માદ્રવ્ય ઉપર નજર જતાં દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાય એ ત્રણેમાં વ્યાપવું થાય છે.

(પરમાગમસાર-૧૦)

પ્રવચન નં. ૩૧

શક્તિ-૩૬ તા. ૧૦-૦૯-૧૯૭૭

અભવત્પર્યાયોદયરૂપા અભાવભાવશક્તિ: ॥૩૬॥

સમયસાર શક્તિકા અધિકાર ચલતા હૈ. શક્તિકા અર્થ ધ્રુવમેં જો સામર્થ્ય હૈ, ગુણ હૈ, ઉસકો યહાં શક્તિ કહતે હૈં. દ્રવ્ય એક હૈ, શક્તિ અનંત હૈ. અનંત શક્તિકા એકરૂપ, યહ દ્રવ્ય હૈ. શક્તિ કહો કિ ગુણ કહો, (એક હી બાત હૈ). અનંત ગુણકા એકરૂપ યહ દ્રવ્ય હૈ. ઉસમેં યહાં અપને ઉદ વીં (શક્તિ) ચલતી હૈ ન ?

દેખો ! ઇસ શક્તિમેં ગંભીરતા હૈ. ક્યા (ગંભીરતા હૈ) ? કિ, “નહીં ભવતે હુએ (અપ્રવર્તમાન) પર્યાયકે ઉદયરૂપ..” ક્યા કહતે હૈં ? કિ વર્તમાન ભાવમેં જ્ઞાનકી કમી હૈ ઓર બાદમેં પીછેકી પર્યાયમેં વૃદ્ધિ હોતી હૈ, (તો) વર્તમાનમેં (જિસકા) અભાવ હૈ, ઉસકા ભાવ હોતા હૈ, યહ અભાવભાવ શક્તિકે કારણસે (હોતા હૈ). ક્યા કહા સમજે ? ચાર (ઘાતિ) કર્મકા નાશ હુઆ તો કેવલજ્ઞાન ઓર કેવલદર્શન હુઆ, ઐસા તત્ત્વાર્થસૂત્રમેં (આતા) હૈ. ચાર ઘાતિ (કર્મકા) નાશ હોતા હૈ (તો કેવલજ્ઞાન હોતા હૈ). યહ તો નિમિત્તકા કથન હૈ. આત્મામેં ઐસા ગુણ હૈ કિ વર્તમાન પર્યાય (જો) નહીં (હૈ), અભાવ (રૂપ હૈ, ઓર) પીછેકી પર્યાય જો ઉત્પન્ન હોનેવાલી હૈ, (ઉસમેં) યહાં (વર્તમાન) ભાવકા અભાવ કરકે, (ભવિષ્યકે) ભાવકા તો (વર્તમાનમેં) અભાવ હૈ, (ઉસ વર્તમાન) ભાવકે અભાવમેં ભાવ હોગા. (વર્તમાન) ભાવકે અભાવમેં દૂસરા ભાવ (હોગા).

અભાવભાવશક્તિ (અર્થાત્) વર્તમાન પર્યાયમેં કેવલજ્ઞાન નહીં હૈ, (ઉસકા) અભાવ હૈ, બાદમેં કેવલજ્ઞાન હોતા હૈ, (તો) વહ કિસ કારણસે (હોતા) હૈ ? જ્ઞાનાવરણીય (કર્મકા) નાશ હુઆ વહ કારણ હૈ ? (વહ તો નિમિત્તસે કથન હૈ). (આત્મામેં) અભાવભાવ નામકી શક્તિ હૈ; (ઉસ કારણસે) વર્તમાનમેં ઉસકા જો ભાવ (પ્રગટ) નહીં હૈ, ઉસકા ભાવ (પ્રગટ) હોગા હી. પીછેકી પર્યાયમેં વહ ભાવ (હોગા હી). વર્તમાનમેં (ઉસ ભાવકા) અભાવ હૈ. પીછેકી પર્યાય જો અભી અભાવરૂપ હૈ, વહ આયેગી, યહાં પ્રગટ હોગી, વહ અભાવભાવ શક્તિકે કારણ

(प्रगट होगी). समजमें आया ?

अभी निमित्त-नैमित्तिकका निषेध (बहुत) है. ये तकरार यही है. भाषिया यर्थामें सामनेवालोंने लिखा है कि, तत्त्वार्थ सूत्रमें तो ऐसा यला है (कि), यार घाति (कर्मका) नाश होता है तो केवलज्ञान, केवलदर्शन, अनंत सुष और अनंत वीर्य प्रगट होता है. वहां (हमारे विद्वानने) जवाब दिया कि, उस यार कर्मका नाश-व्यय हो, तो उसका अर्थ यह है कि, अकर्मरूप पर्याय होती है. कर्मरूप पर्यायका व्यय हुआ तो क्या हुआ ? कि अकर्मरूप पर्याय हुई. उससे केवलज्ञान हुआ, ऐसा नहीं है. समजमें आया ? यह निर्णय करना पड़ेगा. वैसे के वैसे ही सब यला है, (ऐसा नहीं यलेगा). आहाहा !

अभावभाव शक्तिका कार्य क्या ? कि वर्तमान पर्यायमें जिसका अभाव है, वहां पीछेकी पर्याय होगी. अपनी अभावभाव शक्तिके कारणसे होगी. कर्मके अभावके कारणसे होगी, ऐसा नहीं. समजमें आया ? आहाहा !

कल अक क्षयोपशम समकितका दृष्टांत दिया था. वह लक्षमें आ गया था कि, गोमट्टसार शास्त्रमें अक ऐसा लेख है कि, तीर्थकर और श्रुतकेवलीके समीपमें यह क्षायिक समकित होता है. वह तो निमित्तका कथन है. यहां तो कहते हैं कि, उसमें अभावभाव शक्ति है तो (वर्तमानमें) क्षयोपशममें क्षायिकका अभाव है, (तो) (क्षयोपशमका) अभाव (करके) क्षायिक करेगा. वह अभावभाव शक्तिके कारणसे क्षायिक (समकित) होगा. तारी बातें, बापू ! आहाहा ! समजमें आया ? ज्ञानकी पर्यायमें जो यार ज्ञान है, उसका अभाव होकर केवलज्ञान होता है, तो कहते हैं कि, (घाति कर्मका) अभाव होता है तो केवलज्ञान होता है, ऐसा नहीं. यार ज्ञानमें केवलज्ञानका अभाव है, तो अभावभाव शक्तिसे बादमें केवलज्ञान होगा. शक्तिसे (केवलज्ञान) होगा. समजमें आता है ? इसमें निमित्त-नैमित्तिक संबंध उडा देते हैं. निमित्त हो परंतु उससे होता है, ऐसा कहीं नहीं है. समजमें आया ?

अक प्रश्न यला था. अभी कहा न ? हम जमशेदपुर गये थे, तो वहां इसरीमें दो विद्वानोंके बीच यर्था यली थी. अक विद्वानने कहा, कानज्जस्वामी ऐसा कहते हैं कि, ज्ञानावरणीय आदि कर्म कुछ नहीं करते हैं. आत्मामें कर्म कुछ नहीं करते हैं. अपनी योग्यतासे ज्ञानमें कमी-बेसी होती है. ज्ञानकी पर्यायमें कमी और वृद्धि (अपनसे होती है). समजमें आया ? अपनी ज्ञानकी पर्यायमें कमी होती है तो अपनी योग्यतासे (होती है). ज्ञानावरणीय कर्म निमित्त हो, परंतु निमित्त आत्मामें कमी करता है, ऐसा नहीं है. और वृद्धिकी (बात) तो यहां (यल) रही है. समजमें आया ?

ज्ञानगुणमें अभावभाव नामकी (शक्तिका) रूप है. अभावभाव शक्ति है उसका रूप ज्ञानगुणमें भी है. ज्ञानगुणके परिणामनमें वर्तमान जो अल्पज्ञान है, उसके स्थानमें केवलज्ञान (अभी) नहीं (है), वर्तमान नहीं (है), वह विशेष वृद्धि पीछे होनेवाली है, वह अभावभाव

शक्तिके कारण (डोगी). जो भाव नहीं (है), वह भाव आयेगा. कर्मके अभावसे (केवलज्ञान) आयेगा, वह प्रश्न यहां नहीं है. आहाहा ! ऐसी बात है. उसकी शक्ति-ताकत (ऐसी) है. 'कर्म बियारे कौन ? भूल मेरी अधिकाई' समझमें आया ?

यहां तो वह भी नहीं लेना है. यहां तो आत्मामें एक अभावभाव नामका गुण है. भगवान आत्मा गुणी है. यहां (काठियावाडमें) यावल और बाजरेकी (गुणीको) गुणी कहते हैं. आपके (हिन्दीमें) बोरी कहते हैं. यहां काठियावाडमें गुणी कहते हैं. यहां तो गुणीका अर्थ इसमें अनंत गुण भरे हैं, ऐसा गुणी; तो अनंत गुणमें एक ऐसा गुण है कि, वर्तमान पर्यायमें विशेष ज्ञानका अभाव है, पीछे विशेष ज्ञान होनेका भाव डोगा, वह अभावभाव शक्तिके कारणसे विशेष ज्ञान डोगा. अभावभाव (अर्थात्) वर्तमानमें विशेष ज्ञानका, केवलज्ञानका, अवधिज्ञानका इत्यादिकका अभाव है, उस ज्ञानगुणमें ऐसा अभावभाव नामका रूप है, उस कारणसे अभावभाव नामके गुणकी शक्तिका रूप है, उस कारणसे वर्तमानमें ज्ञानकी अल्पता है, इसमें विशेष ज्ञानका अभाव है तो अभावभाव शक्तिसे यह वर्तमान जो अल्प ज्ञान है, उसके स्थानमें विशेषज्ञान डोगा, वह अभावभाव शक्तिके कारणसे डोगा.

यह तो सिद्धांत है. आगम है, युक्ति है और अनुभव है. तीनों बोलसे यह सिद्ध होता है. युक्ति से भी अपनी पर्याय परसे होती है, वह भी नहीं. क्योंकि निमित्त है, वह अपनी पर्याय करता है तो परकी पर्याय कहांसे करे ? अत्यंत अभाव है.

यहां तो दूसरी बात कहनी है कि, वर्तमानमें आनंद, ज्ञान (इत्यादिमें से) यहां पहले ज्ञान लेना है. इस ज्ञानकी अल्पतामें विशेष ज्ञानका अभाव है, विशेष ज्ञानका अभाव है (तो) इस अभावभाव शक्तिसे अभावके स्थानमें विशेषज्ञान डोगा. विशेष ज्ञान डोगा वह शक्तिके कारणसे डोगा. कोई निमित्तसे सुनना (हुआ) है, या गुरुगम भिदा है, तो उस कारणसे विशेषज्ञान डोगा, ऐसा नहीं है.

भगवान आत्मामें अनंत गुणमें एक गुण ऐसा है कि, वर्तमानमें गुणकी विशेष वृद्धि नहीं है – अभाव है, वह अभावभाव शक्तिके कारणसे पीछे वृद्धि डोगी. उस अभावमें (भाव) आयेगा. (वह) अपने कारणसे आयेगा. आहाहा ! समझमें आया ? इस अभावभाव शक्तिके कारण वर्तमानमें विशेष गुण नहीं है—अल्प है और विशेष (गुण) पीछे आयेगा, यह अभावभाव शक्तिके कारणसे विशेष (भाव) आयेगा, आहाहा !

उसे करना तो क्या है ? कि, शिद्रूप जो भगवान आत्मा ! इसका स्वीकार करना. इसमें यह अभावभावकी शक्तिका भी स्वीकार आ गया. गुणीका स्वीकार हुआ तो उसमें गुणका भी स्वीकार हुआ. स्वीकार हुआ तो वर्तमान पर्यायमें जो अल्पज्ञान है, ज्ञान गुणमें अभावभावका रूप है तो विशेष शक्तिका भाव, अभावभाव शक्तिके कारणसे विशेष ज्ञान डोगा. निमित्तसे डोगा, ज्ञानावरणीय (कर्मके) अभावसे डोगा, यह बात नहीं है. बराबर

है ? आहाहा !

ऐसे समकितमें (लेना). क्षयोपशम समकितके स्थानमें क्षायिक समकितका अभाव है. क्षयोपशम समकितमें क्षायिक (समकितका) अभाव है. यहां अभावभाव शक्तिके कारण अंदरमें श्रद्धा गुणमें भी अभावभाव नामका रूप पडा है. श्रद्धा गुण है और समकित पर्याय है. परंतु श्रद्धागुणमें अभावभाव नामका रूप पडा है. उस कारणसे श्रद्धागुणमें अभावभाव शक्तिके कारण क्षयोपशम (समकितके) स्थानमें क्षायिक (समकित) आयेगा. वह इस कारणसे आयेगा. भगवानके समीपमें गया तो (क्षायिक समकित) आयेगा, ऐसी बात नहीं है, आहाहा ! ऐसी बात है ! बात बैठती है ? बात तो ऐसी है.

यहां तो ज्ञान गुणमें अभावभाव नामका गुण अंदर नहीं (है) परंतु उसका रूप है. उस कारणसे ज्ञानकी वर्तमान पर्यायमें विशेषका अभाव है, तो विशेषके अभावमें (भविष्यमें) भाव हो जायेगा. अभावभाव शक्तिके कारण (भाव हो जायेगा), आहाहा !

यह निमित्तका बडा गोटावा ठीक जाता है. गुरुसे ज्ञान मिलता है, भगवानकी वाणी सुननेसे ज्ञानकी वृद्धि होती है, यह सब ठीक जाता है. आत्मामें गुण ही ऐसा है. अभावभाव नामकी शक्ति-गुण ऐसा है कि, उस कारणसे वर्तमानमें विशेष (ज्ञान) न हो तो विशेष (ज्ञान) आयेगा. (वह) अभावभाव शक्तिके कारणसे आयेगा. समजमें आया ? यह अक बोध भी यथार्थ समजे तो (निमित्तका उघडा) ठीक जाये. उपादानसे होता है, निमित्तसे नहीं, समजमें आया ? (निमित्तसे होता है, यह) बडी गडबड है.

अक विद्वानने पंथाध्यायीकी टीकामें लिखा था कि, एहे गुणस्थानमें बुद्धिपूर्वकका राग है और अबुद्धिपूर्वकका (राग) सातवें (गुणस्थानमें) है, ऐसा पंथाध्यायीमें लिखा. हमने कडा, ऐसा नहीं (है). एहे गुणस्थानमें बुद्धिपूर्वक और अबुद्धिपूर्वक दोनों प्रकारका राग है. और सातवें (गुणस्थानमें) अबुद्धिपूर्वक अक (राग) है. बुद्धिपूर्वकका (राग) एहे (गुणस्थानमें) है और अबुद्धिपूर्वकका (राग) सातवें (गुणस्थानमें) है, ऐसा नहीं है. क्या कडा समजमें आया ? यौथे (गुणस्थानमें) भी है, उसकी यहां बात नहीं है. यहां तो यौथे (गुणस्थानमें) भी उपयोगमें बुद्धिपूर्वक जो राग भ्यालमें आता है, वह है और उपयोग काम नहीं करता, ऐसा अबुद्धिपूर्वकका (राग) यौथे (गुणस्थानमें) भी है. यारित्रवंत है, तीन कषायका अभाव है, (ऐसे) मुनिमें ऐसी बात नहीं है. आहाहा ! भ्यालमें नहीं आनेवाले रागको अबुद्धिपूर्वकका (राग) कहते हैं और नयसे कडो तो असद्भुत अनउपचार कहनेमें आता है. ऐसी सूक्ष्म बातें हैं !

झिंसे कहते हैं. अकदम जाने नहीं देंगे. तब तो बात पक्की सिद्ध होगी. क्या कडा ? इस आत्मामें यिदूधनका ज्ञान-भान हुआ, उसे भी राग तो है परंतु राग जितना भ्यालमें आता है, इसको असद्भुत उपचार कहनेमें आता है. क्योंकि राग अपनेमें नहीं इसलिये असद्भुत और उपचार तो भ्यालमें आता है, झिं भी राग कहना, वह उपचार (हुआ).

उस समय उपयोग सूक्ष्म नहीं है. (किर भी) वहां अबुद्धिपूर्वकका राग है. अबुद्धिपूर्वकके रागको असद्भुत अनउपचार नयका विषय कलनेमें आया है. एतना सब (कैसे समजना) ? समजमें आया ? बुद्धिपूर्वक और अबुद्धिपूर्वक (राग) यौथे, पांयवे, छट्टे (गुणस्थान) तक डोता है. सातवें (गुणस्थानमें) अकेला अबुद्धिपूर्वकका (राग) डोता है. (उस विद्वानको) भूल बताया तो (उन्होंने कडा), हम सब पंडित लोगोंने निमित्त आधीन (दृष्टिसे शास्त्र) पढ़ें हैं. हमारी सब वृत्ति निमित्ताधीनकी है. यह पढाई हमारे पास नहीं है. हम कहांसे लावे ? ऐसा कहते थे.

यहां कहते हैं कि, यौथे गुणस्थानमें आत्मज्ञान हुआ, किर भी कषायभाव है. कषायमें राग डो, द्वेष डो, क्रोध डो, क्रोध-मानको द्वेष कहते हैं, माया-लोभको राग कहते हैं. उसमें से कोई रागका अंश डो वह अंश ब्यालमें आता है, एतने रागको बुद्धिपूर्वक कहते हैं. ब्यालमें नहीं आनेवाले (रागको) अबुद्धिपूर्वकका (राग कहते हैं). असद्भुत कलनेसे आत्मामें दोनों (प्रकारके) रागका अभाव है. यहां (शक्तिके वर्णनमें) ये बात लेनी ही नहीं है. उसे क्रोध है और क्रोधका अभाव (डोगा), यहां ये प्रश्न ही नहीं है. यहां तो इसमें क्रोध है ही नहीं. शक्तिका वर्णन है तो शक्ति गुणरूप है. गुणरूप है तो उसका परिणामन निर्मल ही है. कमवर्ती निर्मल पर्याय और अकमवर्ती निर्मल गुण, उसका समुदाय वह आत्मा है. यहां विकारकी बात नहीं है. आहाहा ! समजमें आया ? कितना याद रचना ? बनियेको व्यापारके आडे कुरसद नहीं मिलती. आहाहा !

अरे भाई ! अनंतकालमें कभी यथार्थ निर्णय – अनुभव नहीं किया तो अनुभवके बिना जन्म-मरण नहीं भिटेगा, भाई ! तेरे व्रत, तप, भक्ति और पूजा लाभ, कोड, अनंत (भार) करे (तो भी) वह तो राग है, विकार है, क्लेश है, दुःख है. समजमें आया ? कोडकी पुंज डो और (उसमेंसे) दस लाभ, पचीस लाभ पर्य कर दे (और माने कि) धर्म है. (लेकिन) तीनकालमें (धर्म) नहीं है, समजमें आया ? आहाहा !

रात्रिको दृष्टांत नहीं दिया था ? (कोई) गृहस्थ करोडपति आदमी डो उसको (यह) सुननेसे ऐसा हुआ कि, अरे..! मैं यला जाता हूं. मेरे पास करोड (रुपया) है, तो मैं दस लाभ देना चाहता हूं. (लेकिन अंतिम समयमें भाषा बराबर बोल नहीं पाते थे). दस...दस..लाभ, (ऐसा बोलने लगे) तो (लडकेको ऐसा लगा) कि दो लाभका कुछ कलना चाहते हैं. इसलिये लडकेने कडा कि, पिताज ! इस समयमें पैसेको याद नहीं करते. लडके भी सब ऐसे धूर्त हैं, आहाहा ! नियमसारमें (ऐसा) पाठ है. तुजे आजविकाके लिये धूर्तकी टोली मिली है. स्त्री, पुत्र, पुत्री, पुत्रकी बलु (ये) सब धूर्तकी टोली है. तुजे लूट लेंगे. मार डालेंगे. पर द्रव्य है, उसको मेरा मानना, मैं उसका रक्षण करूं, (ऐसी मान्यतामें) तू मर जायेगा. नियमसारमें कलशमें है. आजविकाके लिये धूर्तकी टोली (मिली है). साडी लाओ, लडकेकी शाही करो, लडकी

बडी छो गई है.... सब लूटेरे हैं.

यहां कहते हैं कि, आत्मामें जो कषाय होता है, यहां उसकी बात तो ली ही नहीं. क्योंकि यहां तो आत्मा और आत्माकी शक्ति दोनों निर्मल हैं. निर्मल स्वरूपकी दृष्टि करनेसे पर्यायमें निर्मलता ही उत्पन्न होती है. कमवर्ती निर्मल पर्याय और अकमवर्ती निर्मल शक्तियां, उसका समूह उसे आत्मा कहा है. यहां रागकी बात नहीं है, समझमें आया ?

इसलिये यहां कहते हैं कि, ज्ञानगुणमें एक अभावभाव नामकी शक्ति है. ऐसी श्रद्धागुणमें अभावभाव नामकी शक्ति है. शक्ति माने उसका रूप. श्रद्धा जब क्षयोपशमरूप है तो उसके स्थानमें क्षायिक (समकित) नहीं. क्षयोपशममें क्षायिकका अभाव है. परंतु इस अभावभाव शक्तिके कारण क्षयोपशमका अभाव होकर क्षायिक (समकित) होगा ही. क्षायिक होगा यह अभावभाव शक्तिके कारण होगा. भगवानके समीपमें आया इसलिये (क्षायिक समकित) होगा, ऐसा नहीं है. समझमें आया ? जैसे यारित्रगुणमें भी अभावभाव नामकी शक्तिका रूप है, तो यारित्रगुण जो थोड़ा निर्मल हुआ है और अभी विशेष निर्मल नहीं हुआ, विशेष निर्मलताका वर्तमान अल्प निर्मलतामें अभाव है तो अभावभावशक्तिके कारण अल्प निर्मलता छूटकर यारित्रकी विशेष निर्मलता होगी ही. वह अभावभाव शक्तिके कारण है. यारित्रमोह छूट जायेगा तो यहां वृद्धि होगी, ऐसी बात नहीं है, आहाहा ! ऐसा स्वरूप है, भाई ! लोग तकरार करते हैं. लोग कहते हैं कि, निमित्तको मानते नहीं, व्यवहारको मानते नहीं. बापू ! यहां व्यवहारको तो गिननेमें आया ही नहीं. यहां शक्तिके वर्णनमें व्यवहार और निमित्तको गिननेमें आया ही नहीं. क्योंकि अपनेमें व्यवहारका ज्ञान होता है, उस पर्यायको निर्मल गिननेमें आया है. व्यवहार (गिननेमें) नहीं (आया है). क्या कहा ? समझमें आया ? राग आदि व्यवहार होता है परंतु यहां शक्तिके वर्णनमें सब शक्तियां निर्मल है तो उसकी दृष्टि करनेसे निर्मल परिणति ही होगी. यहां मलिन परिणतिकी बात नहीं है. तो (कोई) कहे कि, थोड़ी मलिनता है न ? तो (उसका जवाब यह है कि) उस मलिनताका ज्ञान करते हैं, यह ज्ञानकी पर्याय उसकी है. वह भी अपनी अभावभाव (शक्तिके) कारणसे ज्ञानकी पर्याय हुई है. आहाहा ! यह तो बहुत कठिन काम (है), बापू ! (धर्मकी मान्यतामें) बड़ा इर्क (है). पूर्व-पश्चिम जितना अंतर है.

जैसे (आत्मामें) आनंद गुण है. उसमें अभावभाव शक्तिका रूप है. (आनंद) शक्ति है उस कारणसे और उसका (अभावभाव शक्तिका) रूप है उस कारणसे, यौथे गुणस्थानमें आनंदका जो अल्प वेदन-अनुभवमें है और पांचवे (गुणस्थानमें) विशेष है, छठे (गुणस्थानमें) उससे) विशेष, और सातवें (गुणस्थानमें) उससे) भी) विशेष है. तो कहते हैं कि, वर्तमानमें विशेष आनंदका अभाव है तो उस स्थानमें अभावभाव शक्तिके कारण विशेष आनंद होगा ही. मोहकर्मका नाश होगा तो सुख वृद्धि होगी, ऐसा नहीं है. आहाहा ! एक-एक शक्तिने

(कोई) काम किया है ! गजब काम किया है ! ओहोहो ! दिगंबर संतोंकी धारावाही कथनी (है). आहाहा ! ऐसी वस्तुकी स्थिति है. यह तो वस्तुकी मर्यादा ऐसी है.

यहां स्वर्णपायरुपमें यौथे गुणस्थानमें यारित्रकी निर्मलता अल्प है और पांचवे (गुणस्थानमें) यारित्रकी विशेष (निर्मलता है). क्योंकि दूसरे कषायका अभाव हुआ न ? अपने परिणामकी मलिनताका (अभाव हुआ). दूसरी प्रकृतिके अभावकी यहां बात नहीं है. दूसरे कषायकी मलिनताका अभाव होनेसे पंचम गुणस्थानमें शांति और आनंद विशेष है तो भी कहते हैं कि, विशेष आनंद आया वह कषाय प्रकृति गयी इसलिये विशेष आनंद आया, ऐसा नहीं है. आहाहा ! उसमें जो अभावभाव नामकी शक्ति है तो आनंदमें भी अभावभाव नामका भाव (रूप) पडा है. आनंदमें अभावभावका भाव पडा है. (वर्तमानमें) आनंदका जो अल्प वेदन है, विशेष आनंदका अभाव है तो अभावभावके कारण विशेष आनंद आयेगा. समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बात है !

(वर्तमानमें) वीर्य कम है. यौथे-पांचवे आदि (गुणस्थानमें) पुरुषार्थ-वीर्य कम है. उस वीर्यकी वृद्धि-स्वरूप रचनाकी वृद्धि, जो यौथे गुणस्थानमें स्वरूप रचना है, इससे पांचवें, छठे और सातवें (गुणस्थानमें) विशेष स्वरूप रचना है. विशेष स्वरूप रचनाका पहले अभाव है, उसमें इस अभावभाव शक्तिके कारणसे विशेष स्वरूपकी रचना होगी, आहाहा ! यह वीर्य अंतरायका क्षय, क्षयोपशम हुआ, इसलिये वृद्धि हुई, ऐसा नहीं है. वीर्यांतराय है न ? अंतरायकी पांच प्रकृति (है). (उसमें) वीर्यांतरायका अभाव हुआ तो वीर्यकी वृद्धि हुई, ऐसा नहीं, आहाहा ! गजब बात है !

संतोंकी शैली तो (देखो) ! शांति प्राप्त कराये उसे संत कहें. उनके दासानुदास बनकर रहें. आहाहा ! समझमें आया ? समझिती दास हैं न ? सबेरे कहा था न ? जिनेश्वरदास है. आत्मा भगवानका दास है. (भविष्यमें) उसमें जिनेश्वरपना आयेगा, दासमें जिनेश्वरपना आयेगा. वह अभावभाव शक्तिके कारणसे आयेगा. आहाहा ! समझना, समझमें आये ऐसा है. बात समझमें आयी ? भाषा तो सादी है. परंतु निमित्त और उपादानके जघडेको (लोगोंने पडा किया). हमारे सोनगढके नामसे निमित्त-व्यवहार और कमबद्ध, ये तीनका विरोध करते हैं. अरे भगवान ! सुन तो सही नाथ !

यहां तो सम्यग्दर्शनसे बात उठाई है न ? यहां अज्ञानीकी बात नहीं है. अपना चिद्धन अनंत गुण संपन्न, अनंत शक्ति संपन्न, प्रभु ! उसका (जिसे स्वीकार हुआ है, उसकी बात है). आत्मधर्ममें अंतमें आया है न ? 'जिहीं देण्यो हम, अवर न देण्यो' ऐसा शब्द पडा है. 'जिहीं देण्यो हम, अवर न देण्यो' भजनमें कहते हैं कि, 'मैं मेरा आत्मा देण्यो (तो) अवर न देण्यो' उस समयमें मैंने परको नहीं देण्यो. और 'देण्यो सो श्रद्धान्यो' जो देणनेमें आया वह पूर्णानंदका नाथ है, ऐसा देणनेमें आया उसका श्रद्धान किया. 'जिहीं देण्यो हम,

अवर न देप्यो' भगवान आनंद और अनंत गुण संपन्न प्रभु ! उसने अपनी पर्यायमें देभा और 'अवर न देप्या' परको देभनेका बंद छो गया और अपनेको देभा. और 'देप्या सो श्रद्धान्यो' भगवान पूर्णानंदका नाथ ! जैसा देभा ऐसा श्रद्धान हुआ. देभा ऐसा श्रद्धान हुआ. दर्शनमोह टला इसलिये श्रद्धान हुआ, ऐसा नहीं है. समझमें आया ?

मिथ्यात्वके कालमें सम्यग्दर्शनका अभाव है. परंतु जिसने आत्माको देभा तो उसमें अभावभाव शक्तिके कारण (क्षायिक) सम्यग्दर्शनकी पर्याय नहीं है तो (क्षायिक) सम्यग्दर्शन होगा, आडाडा ! समझमें आया ? यह शब्द थोडा प्यालमें रह गया था. 'जिहीं देप्या हम, अवर न देप्यो, देप्या सो श्रद्धान्या' मैंने देभा उसका श्रद्धान किया. समझमें आया ? देभे बिना श्रद्धान (किसका) ? जो चीज ज्ञानमें आयी नहीं तो श्रद्धान किसका ? १७-१८ गाथामें यह दृष्टांत आया न ? भरगोशके सींग नहीं छो तो उसकी प्रतीत क्या ? 'है' (ऐसा) देभनेमें आवे तो उसकी प्रतीत (छो सकती है). वैसे भगवान आत्मा ! ज्ञानकी पर्यायमें जाननेमें आता है. श्रद्धाकी पर्यायमें श्रद्धानमें आता है. जो देभा उसकी श्रद्धा है. जाना उसकी श्रद्धा है. आडाडा ! उस श्रद्धाकी पर्यायमें जो कमजोरी है—क्षयोपशम समकित (है और) क्षायिक (समकितका) अभाव है, परंतु अभावभाव शक्तिके कारण (क्षायिक समकित होगा ही). आडाडा ! गजब काम करते हैं !

अक दूसरी बात यह भी है कि, समयसारकी ३८ गाथा (और) प्रवचनसारकी ८२ गाथामें आचार्य ऐसा कहते हैं, हमको आत्मज्ञानसे मिथ्यात्वका नाश हुआ है. वह अब फिर नहीं आयेगा, आडाडा ! (ऐसा) कैसे कडा ? हमारे आत्मामें अभावभाव नामका गुण है. उस गुणके कारणसे मिथ्यात्वका अभाव हुआ, उस समयमें समकित आदि वृद्धिगत नहीं था, वह (क्षायिक) समकित अभावभाव (शक्तिके) कारणसे आयेगा ही. यह आया अब फिरेगा नहीं, आडाडा !

यहां तो यह कडा न ? कि जिसने दृष्टिमें द्रव्य लिया, उसे शक्तिओंकी भी प्रतीति आयी. उसमें अभावभाव नामकी शक्ति है, तो उसकी वर्तमान पर्याय अल्प है और विशेष नहीं, उस विशेषका अभाव (है तो भविष्यमें) भाव आयेगा ही. उसमें विशेषका अभाव है (किर भी) अभावभाव शक्तिके कारण विशेष आयेगा ही. (समकितसे) गिर जायेगा, व्युत्त छो जायेगा, यहां ऐसी बात नहीं है. आडाडा ! भाई ! क्या कडा समझमें आया थोडा ?

सम्यग्दर्शन प्राप्त करे और बादमें गिर जायेगा, वह बात ही यहां नहीं है. आडाडा ! क्योंकि जिसे अनुभूतिमें द्रव्यस्वभाव, भगवान आत्माकी प्रतीति—अनुभव हुआ, (उसने साथमें) अभावभाव गुणको भी पकड लिया. उस कारणसे वर्तमानमें जो अभाव (रूप) है, उसका भाव होगा ही. भावका अभाव होगा, ऐसा नहीं. अभाव है उसका भाव होगा, आडाडा ! समझमें आता है कुछ ?

जो भाव प्रगट हुआ है उसका अभाव होगा, किस अपेक्षासे (कहा) ? भावका अभाव कहा तो (उसमें मात्र) पर्यायका अभाव (होगा) धतना (लेना). परंतु पर्यायके अभावमें समकितका (भी) अभाव (होगा), ऐसी बात नहीं है.

पहले भावअभाव (शक्ति) आयी न ? तीसरी भावअभाव शक्ति (यल गઈ). पहली भाव शक्तिके (कारण) वर्तमानमें अनंत गुणकी निर्मल पर्याय विद्यमान होती है और होती (ही) है. और अभावशक्तिके कारण परके अभावरूप अपना सहज परिणामन है, रागरूप और पररूप नहीं परिणामन करना, ऐसा अभाव शक्तिके कारणसे है. अब भावअभावमें – वर्तमान पर्याय-भाव है, उसका अभाव होगा. अभाव होगाका अर्थ – निर्मल पर्याय है और उसका अभाव होकर दूसरी (निर्मल) पर्याय होगी, परंतु अभाव होकर मिथ्यात्व होगा, (ऐसा नहीं है). आहाहा ! समझमें आया ? गजब काम किया है, प्रभु ! आहाहा ! शक्तिका वर्णन (गजब है) ! कोई विद्वान कहेते हैं कि, (शक्तिका वर्णन) पूरा होगा या नहीं ? यह तो कहां (भ्रम हो ऐसा है) ? यलते-यलते कहां निकले (क्या भ्रम) ? आहाहा ! समझमें आया ?

भावका अभाव (होगा उसका) अर्थ यह नहीं है कि, निर्मल पर्याय भावरूप है, उसका अभाव होगा और मिथ्यात्व होगा, ऐसा नहीं है. यहां तो वर्तमान निर्मल पर्याय है, वह भावअभाव (शक्तिके) कारण उसका व्यय होकर दूसरी (निर्मल) पर्याय होगी. दूसरी (पर्याय) होगी वह निर्मल (पर्याय) ही होगी. आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! भ्रमना भोल दिया है ! आहाहा ! भगवान तेरे पास अक अभावभाव नामकी शक्ति है न ? गुण है न ? इस गुणमें अनंती ताकत है न ? और इस गुणकी अनंती पर्याय हैं न ? आहाहा ! समझमें आया ? यह अभाव (भाव) नामकी शक्ति-गुण है उसकी अनंती (निर्मल पर्याय) होगी ही होगी). यहां निर्मल (पर्याय) की बात है. मलिन (पर्यायकी) बात नहीं है. यह निर्मल पर्याय अत्मी अल्प है और विशेषका अभाव है तो अभावभाव (शक्तिके) कारण विशेष पर्याय होगी ही होगी. आहाहा ! यहां नीचे गीर जानेकी बात ही नहीं है. (यहां तो उपर-उपर) यडनेकी (बात) है, आहाहा ! वस्तु यह है.

भगवान ! जिसने द्रव्य दृष्टिमें लिया वह द्रव्य गिर जाये, द्रव्यका अभाव हो तो समकितका अभाव हो, आहाहा ! द्रव्यका जो अभाव हो तो समकितका अभाव हो, ऐसे यहां लिया है. द्रव्य और द्रव्यकी शक्तिका तीनकालमें अभाव होता नहीं. आहाहा ! उसकी जिसने अनुभवमें प्रतीति की, (उस पर्यायका) व्यय होगा लेकिन व्यय होकर दूसरी निर्मल पर्याय उत्पन्न होगी, उसका व्यय होकर मिथ्यात्व उत्पन्न होगा, ऐसा आत्मामें कोई गुण नहीं है, आहाहा ! समझमें आया ? आस्रव अधिकारमें 'नय परिच्युता' लिया है. मूलमें तो शुद्धनयको ही नय कहा है. यहां व्यवहारनयको नय ही नहीं गिना. 'नय परिछिशा'में शुद्धनयको ही नय गिना

है. आहाहा ! समजमें आया ? जिसने अपने द्रव्य स्वभावको प्रतीति-दृष्टिमें लिया, वह (दृष्टि) जिसने छोड़ी वह नयसे 'परिछिड़ा' हो गया. यहां तो छोड़नेकी बात ही नहीं है. आहाहा ! ओहोहो ! गजब बात है ! अप्रतिहतभावकी बात करते हैं ! (वर्तमानमें) याहे तो क्षयोपशम समकित हो, परंतु (यहां तो) कहते हैं कि, दूसरे समयमें क्षायिक (समकित) होनेवाला है तो उस भावका अभाव होकर, अभावका भाव हुआ. जो उसमें (वर्तमानमें) नहीं है, वह अभावभाव शक्तिके कारण हुआ. द्रव्यकी शक्ति ही ऐसी है. आहाहा ! द्रव्यका सामर्थ्य छतना है कि वर्तमानमें निर्मल पर्याय अल्प है उसका (अभाव होकर) विशेष (निर्मल पर्याय) होगी ही. आहाहा ! यहां निमित्तकी अपेक्षा नहीं है. कर्मका अभाव होता है तो निर्मलता होती है (ऐसी निमित्तकी अपेक्षा नहीं है). आहाहा ! समजमें आया ? गजब काम किया है !

(ऐसे) वीर्य, जैसे सुभ, जैसे कर्ता, कर्म आदि शक्ति है न ? (सभीमें जैसे ही लेना). कर्ता (शक्ति) बादमें आयेगी. कर्ता शक्तिमें भी अभावभाव नामकी शक्तिका रूप है. जो निर्मल परिणतिका कर्ता होता है तो वह कर्ताकी अल्प निर्मल परिणति है, (उसका) विशेष भाव होगा. अभावभाव शक्तिके कारण अनंत गुणकी परिणतिका अल्पता है, उसका विशेष कर्ता होगा. कर्ता गुणमें भी अभावभाव नामकी शक्तिका रूप है. आहाहा ! गजब बात है ! समजमें आया ?

भगवान आत्माका दृष्टिमें भेटा हुआ (उसकी पर्याय अब नीचे गिरेगी, ऐसा नहीं है). आहाहा ! द्रव्यमें अभावभाव नामकी शक्ति भी है तो द्रव्यकी जहां प्रतीति हुयी, अभावभाव नामकी शक्ति अंदर है तो यह प्रतीति गिर जायेगी, यहां वह बात नहीं है. सुभकी, ज्ञानकी, दर्शनकी, यारित्रकी, वीर्यकी विशेष वृद्धि होगी, आहाहा ! अरे ! अनंत गुणकी जो अल्प पर्याय है (उसका) विशेष होनेका वर्तमानमें अभाव है तो (भविष्यमें विशेष) भाव होगा ही. आहाहा ! क्या कदा समजे ? भगवानमें ऐसा अभावभाव नामका गुण है. अभावभावका गुण है तो वर्तमानमें (विशेष भाव) नहीं है, उसका भाव आ जायेगा, आहाहा ! यहां निर्मल (पर्यायकी) बात है. आहाहा !

निमित्तकी यथायथा यह तकरार लि है कि, ज्ञान वाणीका कर्ता है, ऐसा शब्द आता है. (ऐसा) निमित्तसे कथन है. वाणीकी पर्यायका कर्ता ज्ञान है, (ऐसा कथन आता है), आहाहा ! यहां तो ये बात नहीं है. वाणीका कर्ता तो नहीं परंतु अल्प ज्ञानका कर्तापना जो है, उसमें वर्तमानमें विशेष ज्ञानका कर्तापनेका अभाव है, (तो भविष्यमें विशेष) भाव आयेगा. आहाहा ! गजब काम किया है न ! शब्द तो छतने है, “नहीं भवते हुआ (अप्रवर्तमान) पर्यायके उदयरूप...” (वर्तमानमें) नहीं होनेवाली पर्यायमें, प्रगट पर्याय होनेरूप – अभावभावशक्तिका कार्य है, आहाहा ! गजब काम किया है न !

लोग स्वाध्याय करते नहीं. शास्त्र-आगमका क्या अभिप्राय है ? उसे अपनी दृष्टिमें लेते नहीं और अपनी दृष्टि आगमकी दृष्टिमें लगा देते हैं (और कहते हैं) 'इसमें कडा (है), ज्ञानावरणीय (कर्मसे) ज्ञान (आवरित) होता है' आडाडा ! वह तो निमित्तका कथन है. ज्ञानावरणीय कर्म ज्ञानको आवरित करता है, वह तो निमित्तका कथन है और आवरण टलता है तो क्षयोपशम होता है, वह तो निमित्तका कथन है. यहां तो अभावभाव शक्तिके कारण क्षयोपशम बढ जाता है. (वर्तमानमें) अल्प (पर्यायमें विशेषका) अभाव है, तो (भविष्यमें) विशेष (भाव) हो जायेगा ही. कर्मके अभावके कारणसे नहीं, (परंतु अपनी शक्तिके कारणसे होगा), आडाडा !

लोग ऐसा कहते हैं कि, हमें यह सुननेमें आया वह ज्ञान पहले तो नहीं था, तो सुननेमें आया तो सुननेसे नया ज्ञान हुआ, उसका (यहां) निषेध करते हैं. तेरा ज्ञानका परिणामन पहले इस जातका (प्रकारका) नहीं था और बादमें इस जातका हुआ, वह तेरी अभावभाव शक्तिके कारण निर्मलताकी वृद्धि हुई है. सुननेसे वृद्धि हुई, ऐसा नहीं है. आडाडा ! गजब बात है !

श्रोता : फिर सुनना क्यों ?

पूज्य गुरुदेवश्री : वह तो विकल्प आता है, आये बिना रहता नहीं. विकल्प और सुनना, अंदर दोनोंका निषेध है. समझमें आया ?

परमात्मप्रकाशमें तो लिया है कि, भगवानकी दिव्यध्वनिसे भी अपना ज्ञान नहीं होता, आडाडा ! उसका विरोध करते हैं. अरेरे...! भगवानकी वाणीसे (ज्ञान नहीं होता, ऐसा कहते हैं) ! अरे भाई ! सुन तो सही ! यह परमात्मप्रकाश क्या पुकार करते हैं ? दिव्यध्वनि और मुनिके कहे हुए शास्त्रोंसे ज्ञान नहीं होता, आडाडा ! तेरी पर्यायमें जो ज्ञान नहीं है, वह ज्ञान आता है, वह अभावभाव शक्तिके कारणसे आता है, आडाडा ! ऐसी बात (है) ! यह शक्ति बहुत यही. पोना घंटा (हो गया).

ऐसा अनंत गुणमें लेना है. अभावभाव शक्ति अनंत गुणमें लेनी. जितने गुण हैं इन सबमें अभावभाव शक्तिका रूप है, आडाडा ! अपना आत्माका-स्वरूपका लाभ होता है, तो लाभांतरायके क्षयोपशममें स्वरूपका लाभ होता है, ऐसा नहीं. आडाडा ! लाभांतराय, वीर्यांतराय (ऐसे) पांय आवरण हैं न ? आडाडा ! यहां तो कहते हैं कि, अंतराय कर्मका नाश होता है तो तेरे स्वरूपका लाभ होता है, ऐसा नहीं है. स्वरूपका अल्प लाभ है इसमें विशेष लाभ होता है, वह अंतरायमें लाभांतराय गया इसलिये नहीं, परंतु तेरेमें एक अभावभाव नामका गुण है, उस कारणसे अल्प लाभसे विशेष लाभ होता है. उसमें अभावभाव (शक्ति) कारण है, आडाडा ! ऐसी बातें कहां (सुनने मिले) ?

भिंडसे एक विद्वान आये थे. (दृष्टिमें) बहुत डेरडार था. (वे कहते थे), 'सम्यग्दर्शन

छोनेके बाद गिरता ही नहीं' (हमने कहा), 'ऐसा नहीं है. वह अपेक्षा अलग है.' वे ऐसा कहते थे कि, (सम्यग्दर्शन) गिर जाये तो (भी) अंदर सम्यग्दर्शनका रस रहता है' हमने कहा, 'ऐसा नहीं है. गिर जानेका अर्थ द्रव्यकी जो शक्तियां हैं, उसकी प्रतीति यही जाये तो गिर जाता है. द्रव्यकी प्रतीति रहे और गिर जाये, ऐसा तीन कालमें नहीं होता.' समझमें आया ? आहाहा ! लोगोंको अपनी कल्पनासे शास्त्रका अर्थ बनाना है और अपनी कल्पनासे चलाना, ऐसा नहीं चलता. यह तो तीनलोकके नाथ वीतराग सर्वज्ञ परमेश्वरका मार्ग है. गजब बात है, प्रभु !

तेरेमें जितनी शक्तियां हैं, गुण कडो कि शक्ति कडो, उस अके-अके गुणमें अभावभाव नामकी शक्तिका रूप पडा है, आहाहा ! सामान्यगुण भी अनंत है और विशेष गुण भी अनंत है. आचार्योंने सामान्य गुण ६ दिये हैं. वह तो विशेष कथन नहीं कर सकते (इसलिये ६ कहे हैं). बाकी (अनंत गुण हैं). आत्मामें ज्ञान, दर्शन और आनंद ऐसे विशेष गुण भी अनंत हैं और अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रदेशत्व जैसे भी अनंत गुण हैं. ऐसे सामान्य-विशेष अनंत गुण संख्यासे है. उसका वर्तमानमें द्रव्यकी दृष्टिसे स्वीकार होता है तो जो निर्मल पर्याय छोटी है, उसमें विशेष निर्मलताका अभाव है, उस अभावका भाव छोटा ही, आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बातें हैं ! अरे प्रभु ! किसके साथ वाद करें ? और वादविवाद कैसे करना ? आहाहा !

चित्ति, दृशि, ज्ञान, सुख, वीर्य, प्रभुत्व (इत्यादि अनंत शक्तियां हैं). प्रभुत्व नामकी शक्ति है उसमें भी अभावभाव शक्तिका रूप है. जो पर्यायमें अल्प ईश्वरता प्रगट हुई है, उस प्रभुत्व शक्तिमें अभावभावशक्तिके रूपके कारण, अल्प प्रभुतामें विशेष प्रभुता आयेगी ही. आहाहा ! अल्प ईश्वरदशा जो सम्यग्दर्शनमें प्रगट हुई और वर्तमानमें पर्यायमें विशेष ईश्वरताका अभाव है तो अभावभाव (शक्तिके) कारण अल्पतामें विशेष प्रभुताकी शक्ति आयेगी ही. तेरी शक्तिके कारणसे शक्ति आयेगी, आहाहा ! ईश्वर नाम सामर्थ्यता. प्रभुताकी पर्यायमें जो अल्प प्रभुता है, उसमें विशेष प्रभुताका अभाव है, परंतु अंदर अभावभाव शक्तिके कारण विशेष प्रभुता आयेगी, आहाहा ! ऐसी बात है, समझमें आया ?

(अब) स्वसंवेदन लेते हैं. आत्मामें जो अपना वेदन-अनुभव होता है, वह प्रकाशशक्तिके कारण - इस गुणके कारण (होता है). स्वसंवेदन (अर्थात्) स्व (नाम) अपना और (संवेदन नाम) प्रत्यक्ष वेदन. यौथे गुणस्थानमें जो स्वसंवेदन है, उससे मुनिको अथवा पांयवें (गुणस्थानमें) स्वसंवेदन वृद्धि पाता है, तो यह कषायके भावका अभाव हुआ, उस कारणसे नहीं. प्रकृतिका अभाव हुआ उस कारणसे तो नहीं परंतु अपनेमें मलिनताका अभाव हुआ, इसलिये शांति बढ गई, स्वसंवेदन बढा, ऐसा (भी) नहीं, आहाहा ! स्वसंवेदन शक्तिमें - प्रकाश शक्तिमें भी अभावभावका रूप पडा है. (वर्तमानमें) स्वसंवेदन अल्प है, इसमें विशेषका अभाव

है (तो भविष्यमें) विशेष स्वसंवेदन आयेगा ही, आहाहा ! गजब बात करते हैं !

यह तो मुख्य-मुख्य गुणोंकी बात चलती है. आहाहा ! स्वसंवेदन – अपना स्व उसका वेदन. आनंदका, शांतिका अनंत गुणकी व्यक्त पर्यायका वेदन. यौथे गुणस्थानमें भी 'सर्व गुणांश ते समकित' (है). जितनी संख्यामें गुण है, उसका प्रत्येकका व्यक्त अंश प्रगट होता है. परंतु वह प्रगट होता है उसमें व्यक्त पर्यायमें विशेष व्यक्तताका अभाव है, अभाव होने पर भी, अभावभावशक्तिके कारण विशेष भाव होगा ही, आहाहा ! स्वसंवेदन विशेष होगा ही, आहाहा ! ऐसी बातें पहली-पहली बार चल रही है. (किसीने कहा कि) पहले जो शक्तिका वर्णन किया है, उसे नहीं छपवाना. अब नया ये हुआ उसे छपवाना. अधिक स्पष्टीकरण आया है न इसलिये ! आहाहा ! भगवान ! तेरा निधान तो देख ! तेरे निधानमें एक अभावभाव नामका गुण पडा है. उस कारणसे (वर्तमान) पर्यायमें अल्पता है (और) विशेषका अभाव है, वह विशेष (भाव) होगा ही. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसा सब गुणमें लेना.

अकारणकार्य शक्ति (है) उसमें भी अभावभाव (शक्तिका रूप है). अकारणकार्य शक्ति है न ? यह शक्ति भिन्न है. (लेकिन) उसमें भी अभावभाव (शक्तिका) रूप है. अपना विशेष कारण और कार्य उसमें (वर्तमानमें) अपना अल्प कारण और कार्य है, वह विशेष अकारणकार्य होगा. वह अपनी अभावभाव शक्तिके कारण होगा. आहाहा ! समझमें आया ?

श्रोता : ऐसा ४७ (शक्तिमें) लगाना ?

पूज्य गुरुदेवश्री : ४७ में क्या अनंत (शक्तिमें) लगाना. समझमें आया ? (सिर्फ) कहा उसीमें लगाना और नहीं कहा उसमें (भी) लगाना. आहाहा ! अहमदाबादमें माणिकवाडीमें जवाहरातका धंधा है. वैसे इस माणिकयोक्तमें (अर्थात्) आत्माके योक्तमें जवाहरातका धंधा है.

(कोई) पंडित पूछ रहे थे, यह शक्ति कब पूरी होगी ? भाई ! इसमें क्या मासूम पडे ? नहीं भवते हुआका भवना (अर्थात्) उदय होना (वह अभावभाव शक्तिके कारण होगा). आहाहा ! जिसने द्रव्यका पता लिया आहाहा ! दृष्टिमें द्रव्यदृष्टि प्रगट हुई, उसकी पर्यायमें कभी है और विशेषका अभाव है (किर भी उन्हें विशेष) भाव होगा ही. वह अपनी अभावभाव शक्तिके कारण (होगा). समझमें आया ? आहाहा ! गजब बात है ! थोड़े शब्दोंमें सारा गंभीर (भाव) भर दिया है ! संतोंकी बखिलारी है ! आहाहा ! जिसमें यथार्थ धारा निकाले उसे संत कहनेमें आता है, आहाहा ! विशेष कहेंगे....



प्रवचन नं. ३२

शक्ति-३३,३४,३५,३६,३७

ता. ११-०८-१९७७

| | |
|--------------------|--------------------|
| भूतावस्थत्वरूपा | भावशक्तिः ॥३३॥ |
| शून्यावस्थत्वरूपा | अभावशक्तिः ॥३४॥ |
| भवत्पर्यायव्ययरूपा | भावाभावशक्तिः ॥३५॥ |
| अभवत्पर्यायोदयरूपा | अभावभावशक्तिः ॥३६॥ |
| भवत्पर्यायभवनरूपा | भावभावशक्तिः ॥३७॥ |

समयसार शक्तिका अधिकार (यलता) है. प्रथम तो उसमें यह लिया है कि, जिसको सम्यग्दर्शन होता है तो (यह) कैसे हो ? तो कहते हैं कि, व्यवहारका जो विकल्प है; (विकल्प तो है) परंतु उस ओरकी रुचि छोड़कर, (स्वइपकी दृष्टि करनेसे सम्यग्दर्शन होता है). शुभभाव यला जाता नहीं. शुभभाव तो पूर्ण शुद्ध उपयोग होगा तब जायेगा. समझमें आया ? परंतु शुभराग है उसकी रुचि छोड़कर (यह) भूल है जैसे (उसकी) रुचि छोड़कर; रुचि छोड़करका अर्थ यह भूल है, इसलिये (उसकी) रुचि छोड़कर, ज्ञायकभाव सिद्धान्त अण्ड आनंदकंद प्रभु ! उसकी दृष्टि करना—रुचि करना और अनुभूति करना, यह जवकी प्रथम कार्य सिद्धि है. समझमें आया ? आहाहा ! व्यवहार है इसलिये मिथ्यात्व है, जैसे नहीं. परंतु व्यवहारमें धर्म मानना, यह मिथ्यात्व है. शुभभाव छूट जाता है और अकदम शुद्ध हो जाता है, ऐसा नहीं. परंतु शुभभावकी रुचि छोड़कर स्वभावका शुद्ध उपयोग होता है, यह सम्यग्दर्शन है. शुभभाव तो जब पूर्ण वीतरागी शुद्ध उपयोग होगा तब छूटेगा. परंतु पहले रुचिमेंसे छूटता है, आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा !

अशुभभाव तो हेय है ही (परंतु) शुभ छोड़कर अशुभमें (जाना), यह तो कोई बात नहीं है. शुभ छोड़कर अशुभ होना, यह प्रश्न यहां नहीं है. शुभभावकी रुचि छोड़कर शुद्ध आनंदकंदकी दृष्टि करना, उसका अनुभव करना, उसके लिये शुभको रुचिमेंसे छोड़ना. समझमें

आया ? (शुभभावका) आश्रय करनेका छोड़ना. त्रिकाली स्वरूप आश्रय करने लायक है, उस ओर जुकनेसे शुभका आश्रय छूट जाता है, आहाहा ! ऐसी बात (है) ! विशेष विचार क्यों आया ? कि इन छत्रों शक्तिओंमें पर्याय ली है, भाई ! क्या कदा ? देओ ! पहला बोल है न ? भावशक्ति है न ? पहले उसे रागकी रुचि छोड़कर अंतरमें आत्माका (आश्रय करना) आहाहा ! भगवान आनंद स्वरूप, शुद्ध ज्ञानधन द्रव्यकी दृष्टि करनेसे इसमें निर्विकल्प अनुभव होता है. समझमें आया ? बादमें शुभराग तो आता है परंतु वह हेयबुद्धिसे आता है. उसको छोड़कर अशुभ करना, ऐसा कुछ नहीं है, समझमें आया ?

जब तक वीतरागता-पूर्णादशा न हो, तब तक पर्यायमें शुद्धकी दृष्टि और अनुभव होने पर भी शुभभाव आता है. क्षायिक समकिति मुनिको भी शुभभाव आता है. क्षायिक समकिति मुनि होते हैं कि नहीं ? आहाहा !

श्रेष्ठिक राजा क्षायिक समकिति (थे). आहाहा ! फिर भी शुभभाव आया (तो) तीर्थंकर गोत्र बंध गया. भाव बंधका कारण है. शुभभाव पापका कारण है, ऐसा भी नहीं और अबंधका कारण है, ऐसा भी नहीं. वह पुण्य बंधका कारण है, समझमें आया ?

यहां तो प्रथम जिसकी दृष्टि राग और पर्याय पर है उसे छोड़ाकर, प्रभु ! अकबार तेरा निधान (अंदर पडा है, उसे देख !) अंतर्मुख देख ! अंदर तेरे आत्मामें पूर्णानंद पडा है. बहिर्मुख देखनेसे तो तेरी पर्यायमें राग लक्षमें आयेगा. अंतर्मुख देखनेसे निधान, विद्यानंद सत् विद्यानंद, प्रभु ! तेरी दृष्टिमें देखनेमें आयेगा. ऐसी दृष्टि लुई, सम्यग्दर्शन हुआ बादमें, यह छः शक्तिका वर्णन लागू पडता है. समझमें आया ? क्यों ? कि, देओ ! पहले भावशक्ति ली है.

“विद्यमान - अवस्थायुक्ततरूप भावशक्ति.” पर्यायसे बात ली है. है ? पहली भावशक्ति. “विद्यमान - अवस्थायुक्ततरूप भावशक्ति.” उसका अर्थ जहां अंतर शुद्ध चैतन्यमूर्तिकी दृष्टि— अनुभव हुआ तो उसकी भाव नाम शुद्ध पर्याय विद्यमान होती है. भावशक्तिके कारण उस समयमें शुद्ध पर्यायकी विद्यमानता होती है. रुचिमेंसे (अशुद्धता) छूट गई, इसलिये अशुद्धता तो है नहीं. (अशुद्धता) है तो भी उसका जाननेवाला रह गया. अपनेमें जाननेकी पर्याय है परंतु अशुद्धता अपनेमें है, यह बात तो छूट गई. समझमें आया ? क्या शब्द है ? यह तो पर्याय (शब्द दिया) है. छत्रों बोलमें पर्याय लि है. (ऐसी) भाषा (है). है शक्ति, परंतु पर्यायकी प्रधानतासे शक्तिका वर्णन किया है. अर्थात् अवस्था होती है (निर्मल) अवस्था होती (ही) है. भावशक्तिके कारण निर्मल अवस्था होती ही है. शक्ति तो ध्रुव है परंतु इस शक्तिका कार्य विद्यमान अक निर्मल अवस्था होती ही है. समझमें आया ? अक बोल (हुआ).

(अब) दूसरा (बोल). “शून्य (—अविद्यमान) अवस्थायुक्ततरूप...” यह अभावशक्ति

આથી. અભાવશક્તિમાં ભી અભાવરૂપી અવસ્થા સહિત લેના છે. રાગકા, પુણ્ય આદિકા અભાવ સ્વભાવરૂપ, રાગકી શૂન્યતા ઉસમાં છે. એસી અભાવ(શક્તિકી) પર્યાય પ્રગટ હોતી છે. (યહાં) અકેલા અભાવ (લેના) છે. રાગકા અભાવરૂપ અસ્તિરૂપસે વિદ્યમાન નિર્મલ પર્યાય ભાવશક્તિમાં (લિયા). અભાવશક્તિમાં રાગકા અભાવરૂપ પરિણમન (હોતા છે). રાગકા મલિનપનારૂપ પરિણમન નહીં, એસી અવસ્થા હોતી છે. એસી બાર્તે (હૈં) !

બાપૂ ! પહલે માર્ગકી સૂક્ષ્મતા બહુત છે. આહાહા ! પીછે તો રાસ્તા ખુલ્લા હો જાતા છે. ખજાના ખુલ ગયા. બાદમાં અંદરસે કબાટ ખુલ ગયા. રાગકી એકતાબુદ્ધિ છોડકર ત્રિકાલી સ્વભાવકી એકતાબુદ્ધિ હુઈ (તો) ખજાના ખુલ ગયા. રાગકી એકતાબુદ્ધિમાં ખજાનેમાં તાલા થા. આહાહા ! સમજમાં આયા ? રાગકી એકતાબુદ્ધિ છૂટ ગઈ (ઔર) સ્વભાવકી એકતાબુદ્ધિ હુઈ (તો) કુંચીસે ખજાના ખુલ ગયા. સમ્યગ્દર્શનકી કુંચીસે ખજાના ખુલ ગયા, આહાહા ! ઉસમાં વિદ્યમાન ભાવશક્તિકે કારણ નિર્મલ પર્યાય વિદ્યમાન છે ઔર મલિન પર્યાયકા શૂન્યપના છે. સમજમાં આયા ? વહાં મલિન પર્યાય છે, ઉસકો યહાં ગિનનેમાં નહીં આયા છે. ઉસકા અભાવ ગિનનેમાં આયા (હૈ). સમજમાં આયા ? ઇસ અભાવ (શક્તિમાં) પર્યાય લિ છે. ભાવ (શક્તિમાં) ભી પર્યાય (લિ) છે. (ઔર) અભાવમાં (ભી) પર્યાય (લિ) છે.

(અબ તીસરા બોલ). “ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) પર્યાયકે વ્યયરૂપ ભાવાભાવશક્તિ.” હૈ ? વર્તમાન ભાવકે કારણ જો નિર્મલ પર્યાય વિદ્યમાન છે, ઉસમાં ભાવઅભાવશક્તિ (કે કારણ) વિદ્યમાન (નિર્મલ પર્યાય) છે, ઉસકા અભાવ હો જાયેગા. ક્યોંકિ ઉસકી એક સમયકી મુદત છે. પર્યાયકી શુદ્ધતાકી વિદ્યમાનતાકી એક સમયકી મર્યાદા છે. ઇસ ભાવકા વ્યય હોકર અભાવ હો જાયેગા. પર્યાયકા ભાવ છે ઉસકા અભાવ હો જાયેગા. યહ ભાવઅભાવ શક્તિકે કારણ પર્યાય એસે હુઈ, આહાહા ! સમજમાં આયા ?

બાદમાં અભાવભાવ આયા ન ? “નહીં ભવતે હુએ (અપ્રવર્તમાન) પર્યાયકે અભવનરૂપ અભાવાભાવ શક્તિ.” આહાહા ! હૈ ? બાદમાં “નહીં ભવતે હુએ (અપ્રવર્તમાન) પર્યાયકે ઉદયરૂપ અભાવભાવ શક્તિ.” વર્તમાનમાં (વિશેષ ભાવ) નહીં હૈ પરંતુ ભવિષ્યકી પર્યાય પ્રગટ હોગી હી, એસા અભાવભાવ શક્તિકા કાર્ય છે. સમજમાં આયા ? વર્તમાનમાં અભાવ હૈ પરંતુ અભાવભાવ શક્તિકે કારણ વહ ભાવ છે, ઉસકા અભાવ હો જાયેગા ઔર જો અભાવ હૈ, ઇસકા ભાવ હો જાયેગા. વર્તમાનમાં પીછેકી નિર્મલ પર્યાયકા અભાવ છે, ઉસકા ભાવ હોગા ઔર (વર્તમાનમાં) નિર્મલ પર્યાય છે, ઇસકા અભાવ હો જાયેગા, આહાહા ! સમજમાં આયા ? સૂક્ષ્મ બાત છે, ભાઈ !

અબ, “ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) પર્યાયકે ભવનરૂપ ભાવભાવશક્તિ.” આજ અબ ભાવભાવ શક્તિ (લેંગે). કેસે (શક્તિ) લિ હૈ ? “ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) પર્યાયકે ભવનરૂપ ભાવભાવશક્તિ.” વર્તમાન જ્ઞાનકી પર્યાય ભવનરૂપ હૈ, એસી કી એસી જ્ઞાનરૂપ પર્યાય ભવનરૂપ

होगी. जैसा (अभी) भाव है, असा ही भाव रहेगा. प्रथम द्रव्य और गुणमें जो ज्ञान भाव है, उस कारणसे भी भावभावशक्ति गिननेमें आती है और वर्तमान जो भावपर्याय है, वैसी की वैसी उसी ज्ञानकी ज्ञानकी पर्याय, ज्ञानकी पर्याय रहेगी. दर्शनकी, दर्शनकी पर्याय रहेगी. यारित्रकी, यारित्र पर्याय रहेगी. बादमें त्रिविध्यमें (असौ ही रहेगी). (असौ) भावभाव शक्ति (है). आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा !

फिरसे, क्या कहा ? देओ ! “**भवते हुअे...**” है ? यह तो अकेले मंत्र है, भाई ! यह कोई कथा या कहानी नहीं है, आहाहा ! भगवान आत्मामें अेक भावभावशक्ति है. अभावभावकी बात पहले यह गई. अब भावभाव नामकी अेक शक्ति है, इस शक्तिमें कार्य क्या हुआ ? कि जो ज्ञानकी पर्याय विशेषरूपसे सब पदार्थको जानती थी असौ पर्याय बादमें होगी. तबले वह (पर्याय) नहीं, परंतु वैसी की वैसी ज्ञान पर्याय होगी. यह भावभाव शक्तिका (कार्य) है, आहाहा !

फिरसे, पक्का होना याहिये न ? जो आत्मामें द्रव्यमें और गुणमें – भावरूप ज्ञान है, यह भावरूप (जो) है, वह द्रव्यमें भाव है और गुणमें भाव है, उस कारणसे भावभाव शक्तिको कलनेमें आयी. दूसरी बात कि, जो ज्ञानकी पर्याय वर्तमानमें है, वैसी की वैसी दूसरे समयमें भी ज्ञानकी ज्ञान रहेगी. ज्ञानकी ज्ञान (रहेगी).

श्रोता : पर्याय बदल जायेगी न ?

पूज्य गुरुदेवश्री : (पर्याय तो बदल जायेगी) परंतु रहेगी ज्ञानकी ज्ञान, आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! गजब काम किया है न !

“**भवते हुअे पर्यायके...**” ‘पर्यायके’ (असौ) भाषा है. वर्तमान ज्ञानकी पर्याय – यहां सम्यक्ज्ञानकी पर्यायकी बात चलती है. मतिश्रुतकी जो ज्ञान पर्याय है, तो भावभाव शक्तिके कारण, वैसा क वैसा भाव...भाव...भाव... और निर्मल ज्ञान...ज्ञान...ज्ञान...ज्ञान... रहेगा. द्रव्य-गुणमें तो (ज्ञान) रहेगा ही. द्रव्य और गुणमें भी भाव...भाव...भाव..., वही ज्ञान... वही ज्ञान... वही ज्ञान... गुणमें ज्ञान...ज्ञान... द्रव्यमें ज्ञान... ज्ञान... तो रहेगा. परंतु पर्यायमें भी जो सम्यक्ज्ञानकी पर्याय हुई है, उस ज्ञानकी बादमें भी ज्ञानकी पर्याय रहेगी. यह भावभावशक्तिका कार्य है. आहाहा ! धीरेसे कहते हैं, बापू ! यह विचार करके, प्यालमें लेना, असौ यीज है, समझमें आया ? उसका भावका भासन होना याहिये (कि यह भाव) क्या है ? भाषा भाषामें रही. “**भवते हुअे (प्रवर्तमान) पर्यायके (भवनरूप)...**” प्रवर्तमान ज्ञानकी पर्यायके “**...भवनरूप...**” (अर्थात्) दूसरे समयमें, तीसरे समयमें वैसी की वैसी ज्ञानकी पर्याय होगी. द्रव्य-गुणमें तो भाव..भाव..भाव..भाव... ध्रुवरूप है ही. परंतु पर्यायमें ज्ञानकी ज्ञान जो है, वही ज्ञान दूसरे समयमें रहेगी.

असे सम्यग्दर्शनकी पर्याय है, वह वर्तमान पर्याय है असौ समकित पर्याय, समकित

પર્યાયરૂપ રહેગી.

દ્રવ્ય-ગુણમાં તો ચારિત્ર ત્રિકાલ હૈ, વહ હૈ. દ્રવ્ય, ગુણમાં તો (ચારિત્ર) ધ્રુવરૂપ હૈ. ભાવ..ભાવ..ભાવ..(રૂપ હૈ). દ્રવ્યમાં ભાવ, ગુણમાં ભાવ ઇસ પ્રકારસે ભી ભાવભાવ શક્તિ હૈ. પરંતુ પર્યાયમાં ભી ઉસી જાતકી પર્યાય બાદમાં રહેગી. સમજમાં આયા ? આહાહા ! ઐસી સૂક્ષ્મ બાતે (હૈ) ! તત્ત્વકો સમજે નહીં, પહચાને નહીં ઓર ઉસે ધર્મ હો જાયે (ઐસા નહીં હો સકતા). સમજમાં આયા ?

શ્રોતા : તિર્યચ કહાં યે સબ સમજતા હૈ ?

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : તિર્યચકો ભાવમાં ભાસન હો જાતા હૈ. નામ આતા નહીં. સમજમાં આયા ? મેરી જો જાત વર્તતી હૈ, વૈસી કી વૈસી જ્ઞાનકી પર્યાય હોગી, ઐસા ભાવભાસન હૈ. શબ્દ યાદ નહીં હોતે. ઉસસે ક્યા ? આહાહા ! ભાઈ ! આતા હૈ ન ? શિવભૂતિ મુનિકો ગુરુને કહા, ‘મા રુષ, મા તુષ’ કિસીકે પ્રતિ દ્વેષ નહીં ઓર કિસીકે પ્રતિ રાગ નહીં. ઇસકા અર્થ કિ, ‘(તૂ) વીતરાગભાવરૂપ રહે’ ઐસા કહા. પરંતુ ‘મા તુષ, મા રુષ’ હી યાદ નહીં રહા. પરંતુ એક બાઈને ઉડદકી દાલ ભિગોઈ થી, ઉસકે છીલકે – તુષ ઓર દાલ ભિન્ન કર રહી થી. દૂસરી બહનને કહા, ‘બહન ! ક્યા કરતી હો ?’ (તો ઉસને કહા) તુષ-માસ ભિન્ન કરતી હું. યહ તુષ-માસ શબ્દ સુના તો રાગ તુષ હૈ ઓર અંદરસે સ્વભાવ-દાલ ભિન્ન હૈ. યે શબ્દ સુને વહાં અંદરસે રાગ આદિ તો વિકલ્પ-તુષ હૈ ઓર મેરી જ્ઞાન શક્તિ જો હૈ, અખંડ આનંદકંદ પ્રભુ ! ઉસ પર અંતર દૃષ્ટિ ગથી ઓર ફિર કેવલજ્ઞાન હો ગયા. આહાહા ! સચ્ચે મુનિ તો થે. અપની ઘરકી ચીજ હૈ વહાં જાના હૈ – પર ઘરકો અપના કરના, પરમાણુકો અપના કરના હો તો વહ ત્રીનકાલમાં નહીં બન સકતા.

ભગવાન આત્માકો એક છોટે પરમાણુકો અપના કરના હો તો ત્રીનકાલમાં નહીં બન સકતા. સમજમાં આયા ? અરે...! રાગકો ભી અપને સ્વભાવમાં એકતા કરની હો તો વહ ભી ત્રીનકાલમાં નહીં બનતા. ક્યોંકિ રાગ ઓર સ્વભાવ વહ તો ભિન્ન ચીજ (હૈ). દોનોંકે બીચમાં સંધી-સાંધ હૈ. પરંતુ અપના અપનેમાં (સ્વભાવમાં એકત્વ) કરના, વહ તો અંતરકી ચીજ હૈ. સમજમાં આયા ?

શ્રીમદ્જી એક જગહ પત્રમાં ઐસા કહતે હૈં, સત્ સરલ હૈ, સત્ સર્વત્ર હૈ. સમજમાં આયા ? સત્ સરલ હૈ. સત્ સર્વત્ર હૈ, ઐસા લિખા હૈ. એક પત્રમાં લિખા હૈ. સરલ નામ વસ્તુ તો સત્ હૈ, આહાહા ! ઉસકી કબૂલાત (કિયે) બિના ‘મૈં સત્ હું’ ઉસકી કબૂલાત આયી નહીં. ઉસકે જ્ઞાનમાં યહ ચીજ આયે બિના કબૂલાત આયે નહીં, સમજમાં આયા ? આહાહા ! જ્ઞાનકી વર્તમાન પર્યાયમાં સત્ ત્રિકાલી ભગવાન જ્ઞેયરૂપ હોકર જહાં જ્ઞાન હુઆ તો ઉસ જ્ઞાનકી પર્યાયમાં યહ ત્રિકાલી સત્ આતા નહીં. પરંતુ ત્રિકાલી સંબંધીકી તાકત જો અપની હૈ, ઇસ સંબંધીકા જ્ઞાન પર્યાયમાં આતા હૈ.

યહાં કહતે હૈં કિ, જો જ્ઞાન પર્યાય ભાવરૂપ હૈ, (વહ) બાદમેં ભી વહી ભાવરૂપ જ્ઞાન...જ્ઞાન...જ્ઞાન...જ્ઞાન... રહેગા. ઇસ જ્ઞાનકા કિસી દિન અજ્ઞાન હો જાયે કિ, જ્ઞાનકી પર્યાય શ્રદ્ધારૂપ હો જાયે કિ, શ્રદ્ધાકી પર્યાય જ્ઞાનરૂપ હો જાયે, (એસા નહીં બનતા). એસી બાત હૈ ! ઓહોહો ! આચાર્યને તો ઇતને થોડે શબ્દોમેં (કિતના ભર દિયા હૈ) ! કિતને (શબ્દ હૈ) ? “ભવતે હુએ...” (અર્થાત્) હોનેરૂપ પર્યાયકે “..ભવનરૂપ..” (અર્થાત્) હોનેરૂપ પર્યાયકા બાદમેં ભી હોનેરૂપ. આહાહા ! પીછે ઉસે કરના નહીં પડતા. વસ્તુકી દૃષ્ટિ હુઈ તો ઇસમેં ભાવભાવ નામકી શક્તિ હૈ તો જો જ્ઞાનકી જાત હૈ, વહ જ્ઞાનકી જાત હી (રહેગી). જ્ઞાન...જ્ઞાન... ભાવ...ભાવ..., જ્ઞાનભાવ...જ્ઞાનભાવ...જ્ઞાનભાવ... રહેગા.

સમકિતકી પર્યાય...શ્રદ્ધાકી પર્યાય...શ્રદ્ધાકી પર્યાય...શ્રદ્ધાકી પર્યાય...શ્રદ્ધાકી પર્યાય... ભાવ..ભાવ.. રહેગી. ચારિત્રકી પર્યાય હૈ વહ ચારિત્રકી પર્યાય ભી ચારિત્રરૂપ, શાંતિરૂપ, સ્થિરતારૂપ, શાંતિ...શાંતિ...શાંતિ...શાંતિ...શાંતિ...યહ ભાવભાવ રહેગા.

આનંદરૂપ પર્યાય હૈ (વહ આનંદરૂપ હી રહેગી). દ્રવ્ય, ગુણમેં તો યહ ભાવ ત્રિકાલી હૈ. પરંતુ યહ આનંદકી પર્યાય હૈ વહ દૂસરે સમયમેં ભી આનંદ (રૂપ) રહેગી. આનંદકી જાત પલટકર દુઃખરૂપ હો જાયે, એસા નહીં. આનંદકી પર્યાય પલટકર શ્રદ્ધારૂપ હો જાયે, એસા નહીં, આહાહા ! ગજબ કામ કિયા હૈ ન ! આહાહા ! ક્યા કહતે હૈં ?

ભગવંત ! તેરી ચીજકા જો તુજે પતા લગ ગયા, અનુભવ હુઆ, સમ્યગ્દર્શન (હુઆ), તો બાદમેં સમ્યગ્દર્શનકી જો પર્યાય દર્શનરૂપ હૈ તો વહ શ્રદ્ધારૂપ (હી રહેગી). શ્રદ્ધારૂપ..શ્રદ્ધારૂપ..શ્રદ્ધારૂપ..ભાવભાવરૂપ રહેગી. યહ શ્રદ્ધારૂપ પર્યાય બદલકર આનંદરૂપ હો જાયે કિ શ્રદ્ધારૂપ પર્યાય બદલકર જ્ઞાનરૂપ હો જાયે, એસા નહીં હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? સમજમેં આયા ? એસા કહનેમેં આતા હૈ ન ? (ઉસકા અર્થ) ખ્યાલમેં-જ્ઞાનમેં ભાવ ઇસ પ્રકારસે હૈ, એસા અંદર આના ચાહિયે ન ? વૈસે કે વૈસે હી રટ લે તો (ઉસકા કોઈ મતલબ નહીં હૈ). (વૈસે) રટ લેનેમેં ક્યા હૈ ? આહાહા !

અનંત ગુણમેં ભાવ પડા હૈ ઔર એક ગુણમેં અનંત ગુણકા ભાવ આયા હૈ, આહાહા ! ભાવશક્તિકે કારણ ભાવશક્તિકા રૂપ અનંત ગુણમેં ઔર અનંતી પર્યાયમેં હૈ. સમજમેં આયા ? એક ગુણમેં અનંત ગુણકા ભાવ હૈ ઔર અનંત ગુણમેં એક ભાવ (શક્તિકા) ભાવ હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

જો અસ્તિત્વ ગુણ હૈ ઉસકી વર્તમાન પર્યાય અસ્તિરૂપ હૈ, વહ ભવિષ્યમેં ભી અસ્તિરૂપ..અસ્તિરૂપ..અસ્તિરૂપ... રહેગી. યહ ભાવભાવ હૈ.

(વૈસે) વસ્તુત્વ ગુણ હૈ. સામાન્ય-વિશેષ જો જાનનેકી ચીજ હૈ, ઇસકો સામાન્ય વિશેષરૂપ પર્યાય જાનતી હૈ, વહી સામાન્ય-વિશેષરૂપ પર્યાય રહેગી. ભવિષ્યમેં ભી ભાવ..ભાવ..ભાવ..ભાવ..(રહેગા). સમજમેં આયા ? આહાહા !

(वैसे) प्रमेयत्वगुण है. उसमें भी भावभाव शक्ति है. प्रमेयत्वकी पर्याय जो वर्तमान विद्यमान प्रमेयत्व (रूप) है, वैसी ही भविष्यमें प्रमेयत्वकी पर्याय प्रमेयत्वरूप रहेगी. यह भावभाव शक्तिका कार्य है. ऐसा है. अरे भगवान ! तेरी चीज तो बड़ी है. पहले उसको जानना तो चाहिये न ! विशेष बुद्धि न हो तो संक्षेपमें भी उसका भान तो होना चाहिये न ? आहाहा !

“भवते हुअे पर्यायके...” भाषामें ‘पर्याय’ लिया है. वर्णन शक्तिका करना है. शक्ति नाम त्रिकादी गुण. परंतु इस गुणका भाव जो वर्तमानमें वर्तता है, वैसा भविष्यमें भी ऐसा का ऐसा भाव रहेगा. ज्ञानका ज्ञानरूप भाव, दर्शनका दर्शनरूप भाव, चारित्रिका चारित्ररूप भाव, आनंदका आनंदरूप भाव (रहेगा). अनंत गुणकी पर्याय जो-जो गुणकी है वही गुणरूप भविष्यमें भी रहेगी. आहाहा ! कितना भेद कर दिया है ! समझमें आया ?

“भवते हुअे (प्रवर्तमान)...” (अर्थात्) वैसी की वैसी पर्यायके भवनरूप. भविष्यमें भी वैसी की वैसी पर्यायके भवनरूप-होनेरूप. ‘है’ ऐसी पर्याय भवनरूप. ‘है’ ऐसी होने लायक है, उसका नाम भावभाव शक्ति कहनेमें आता है. आहाहा ! समझमें आया ?

वेदांतमें तो पर्याय मानी ही नहीं है. यहां तो छत्रों शब्दमें पर्याय आया है. वस्तुका स्वरूप स्पष्ट करते हैं. वेदांतने तो पर्यायको मानी ही नहीं. वे तो आत्मा आनंदस्वरूप, अण्ड, अत्मेद अकरूप सर्वव्यापक है, बस ! (ऐसा मानते हैं). उसे तो पर्यायकी भी जरूरत नहीं. पर्याय जरूरत करनेवाली तो पर्याय है. मैं अण्ड अत्मेद व्यापक हूं, ऐसा निर्णय तो पर्यायमें है. द्रव्य, गुणमें तो निर्णय नहीं है. (जिसने) पर्याय मानी नहीं तो उसका निर्णय भी जूठा है और उसका विषय द्रव्य है, वह भी जूठा है. समझमें आया ? आहाहा ! कितनोंको तो ऐसा लगता है कि, इस समयसारकी शैली तो मानो वेदांतकी है. ऐसा कहते हैं.

बंभईमें अक विद्वान थे. वे ऐसा कहते थे कि, समयसारको कुंदकुंदआचार्यने वेदांतके ढांचेमें ढाला है. अरे भगवान ! अरे प्रभु ! वेदांतके ढांचेमें ढाला हो तो, वेदांतमें पर्याय है ? आहाहा ! तुझे जरूरत नहीं, भगवान ! समयसार तो आत्माका स्वरूप है, जैसे ढांचेमें ढाला है. समझमें आया ? कोई निश्चयकी बात और शुद्धकी बात आये (या) अण्ड, अत्मेद आनंदकंद (की बात आये) तो मानो कि वेदांतके साथ मिलता है, (ऐसा लगे).

यहां अक विद्वान आये थे. पहले ८८-९० की सालमें राजकोटमें व्याख्यानमें आते थे. वैष्णव थे. परमहंस हो गये थे. बादमें हमारे पास आये. (व्याख्यान सुनकर) कहा, ‘यह तो वेदांतकी श्रद्धा है’ हमने कहा, ‘देखो ! तुम ऐसा कहो कि, आत्मा सर्वव्यापक अक ही है. सर्वव्यापक अक है, ऐसा निर्णय किसने किया ?’ (यह) अक बात. दूसरी बात यह है कि, अगर भूल अंदर न हो तो उपदेश किस कारणसे दिया ? ‘सर्व दुःखसे मुक्त होना’

(ઐસા કહતે હો). (તો ઉસમેં) ભૂલ હૈ વહ તો પર્યાય હૈ. સમજમેં આયા ? ઐસા ભૂલ પર્યાય હૈ, ઉસકા નાશ કરના વહ ભી પર્યાય હૈ. દ્રવ્ય, ગુણકા તો નાશ હોતા નહીં. સમજમેં આયા ? આહાહા ! હમારે પર પ્રેમ થા. પરંતુ વૈષ્ણવ થે. વ્યાખ્યાન સુનતે થે. રાજકોટમેં ૮૯કી સાલમેં તીન-તીન હજાર આદમી (સુનને) આતે થે. કિતને વર્ષ હુએ ? ૪૪ વર્ષ હુએ. એક ઘંટે પહલે વ્યાખ્યાન સુનનેકો તો બડે ગૃહસ્થોંકી, ડોક્ટરોંકી ગાડીયાં જમ જાતી થી. ઉસમેં વેદાંતવાલે ભી કોઈ આતે હોંગે. ઐસી બાત વહાં હુઈ થી કિ, ઈસ આત્મામેં પર્યાય હૈ કિ નહીં ? અગર પર્યાય ન હો તો નિર્ણય કરના હૈ કિ, યહ અનેક નહીં હૈ ઐસા એકરૂપ હૈ. યહ નિર્ણય કિસને કિયા ? કિ ઉસને (પર્યાયને નિર્ણય) કિયા. દ્રવ્ય-ગુણમેં (નિર્ણય આતા) હૈ ? દ્રવ્ય-ગુણ તો ધ્રુવ હૈ. સમજમેં આયા ? ઐસા દ્રવ્ય-ગુણકા સ્વીકાર ભી પર્યાયમેં હોતા હૈ કિ દ્રવ્ય-ગુણમેં હોતા હૈ ? આહાહા ! શ્રીમદ્ને કહા હૈ કિ, વેદાંતને પર્યાયકો માની નહીં. (વહ) નિશ્ચયાત્માસી મિથ્યાદૃષ્ટિ હૈ. યહ શબ્દ હૈ.

યહાં તો છઓં (શક્તિઓંમેં) પર્યાયસે (બાત ઉઠાઈ) હૈ. આહાહા ! ક્યોંકિ કાર્ય તો પર્યાયમેં હોતા હૈ. દ્રવ્ય, ગુણમેં તો કાર્ય (હોતા નહીં). વહ તો ત્રિકાલી શક્તિ હૈ. કાર્ય હૈ ઐસા કાર્યકા પલટા આતા હૈ, ભૂલ થી ઐસા ભૂલકા નાશ હુઆ, વહ તો પર્યાયમેં હોતા હૈ. વ્યયકા અભાવ હોકર ઉત્પાદ્ હોતા હૈ, વહ તો પર્યાયમેં (હોતા) હૈ. ભાવકી વિદ્યમાન પર્યાય ભી પર્યાયમેં હૈ. ભાવકા અભાવ ભી વર્તમાન પર્યાયકા વ્યય હોકર અભાવ હો જાયેગા, વહ ભી પર્યાયમેં હૈ. સમજમેં આયા ? ઐસા વર્તમાનમેં (વિશેષભાવકા) અભાવ હૈ, વહ ભાવ (ભવિષ્યમેં) હોગા, વહ ભી પર્યાયમેં હૈ. આહાહા ! ભાવ, અભાવ, ભાવઅભાવ, અભાવભાવ યહ ચાર બોલ તો ચલ ગયે હૈં. યહાં તો પાંચવાં બોલ ચલતા હૈ.

ભાવભાવમેં પર્યાય શબ્દ લિયા હૈ. દેખો ! “ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) પર્યાયકે ભવનરૂપ...” આહાહા ! ભગવાન આત્મામેં જો અનંત ગુણ હૈ, જિસ જાતિકે ગુણ હૈ ઉસ જાતકી પર્યાય ઉસ સમયમેં ઐસા બાદમેં ભી ભાવભાવ ઉસ જાતકા રહેગા. વહ જાત પલટ જાયેગી, ઐસા તીનકાલમેં નહીં હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

ભાવભાવકા એક અર્થ તો વહ હૈ કિ, દ્રવ્યમેં ભાવ હૈ, વહી ગુણમેં ભાવ હૈ. ગુણમેં ભાવ હૈ વહી દ્રવ્યમેં ભાવ હૈ, તો યહ ભાવભાવ હો ગયા. પરંતુ યહાં ભાવભાવ વર્તમાન પર્યાય હૈ, ઉસકા ભવન હોકર વૈસી કી વૈસી પર્યાય હોગી. ભવનરૂપ (અર્થાત્) વૈસી કી વૈસી જ્ઞાન..જ્ઞાન..જ્ઞાન..જ્ઞાન.. સમકિત...સમકિત...સમકિત...સમકિત... આનંદ...આનંદ... આનંદ...આનંદ... આનંદ... સ્વચ્છતા...સ્વચ્છતા...સ્વચ્છતા...સ્વચ્છતા...સ્વચ્છતા (વૈસી કી વૈસી રહેગી). સમજમેં આયા ? આહાહા ! યહ પરમાત્મા ત્રિલોકનાથકી બાજાર હૈ. બાપૂ ! યહ તો કોલેજ હૈ. પરમાત્માને કહી હુઈ કોલેજ હૈ. કુછ તો તૈયારી ઉસકી હોની ચાહિયે. બાદમેં યહ સમજમેં (આતા હૈ).

“ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) પર્યાયકે...” ગુણકી જો પર્યાય જિસ જાતકી હૈ, વૈસી કી વૈસી

જાતકી (પર્યાય) ભવિષ્યમાં (રહેગી). અનંત ગુણ જો હે ઉસ-ઉસ ગુણકી, ઉસી રૂપકી પર્યાય રહેગી. આહાહા ! જિસ જાતકી પર્યાય હે, વહ દૂસરી જાતકી પર્યાય હો જાયે, એસા નહીં હે. આહાહા ! જ્ઞાનકી પર્યાય હે વહ શ્રદ્ધારૂપી પર્યાય હો જાયે ઓર શ્રદ્ધાકી પર્યાય હે વહ ભવિષ્યમાં જ્ઞાનરૂપ પર્યાય હો જાયે, એસા નહીં હે. સમજમાં આયા ?

મોક્ષમાર્ગ પ્રકાશકમાં ઉપાદાન-નિમિત્ત લિયા હે ન ? શુભભાવમાં – શુદ્ધતાકા અંશ હે. લિયા હે ? શુભભાવમાં શુદ્ધકા અંશ હે. સુનો ! ક્યા કહના હે ? કિ શુભભાવમાં શુદ્ધકા અંશ ન હો તો જ્ઞાનકી પર્યાય જ્ઞાનસે નિર્મલ હોગી. પરંતુ (અગર) યહ અશુદ્ધ પર્યાય હી હે, તો અશુદ્ધસે શુદ્ધતાકી પર્યાય કહાંસે આયેગી ? ક્યા કહા ? (શુદ્ધતાકા) અંશ જો ન હો તો (શુદ્ધતા કહાંસે આયેગી) ? જ્ઞાન નિર્મલ હુઆ વહ તો જ્ઞાનકે કારણ જ્ઞાન..જ્ઞાન..જ્ઞાન..જ્ઞાન...જ્ઞાન... હુઆ. પરંતુ જો ચારિત્ર પર્યાય નિર્મલ હુઈ વહ જ્ઞાન નિર્મલ હુઆ ઇસલિયે ચારિત્રકી પર્યાય નિર્મલ હુઈ ? શુભભાવમાં ભી શુદ્ધકા અંશ હે. પરંતુ યહ અંશ કાર્ય કબ કરે ? કિ ગ્રંથીભેદ હો તબ. સમજમાં આયા ? ઉસકે કારણ હે કિ જો જ્ઞાનકી પર્યાય જ્ઞાનરૂપ રહેગી, આનંદકી પર્યાય આનંદરૂપ રહેગી, વૈસે યથાખ્યાત ચારિત્રકી પર્યાયમાં ભી વર્તમાન જો શુદ્ધ અંશ હે, વહ શુદ્ધ..શુદ્ધ..શુદ્ધ..શુદ્ધ... એસે ચારિત્રમાં (શુદ્ધતા) રહેગી. સમજમાં આયા ? અશુદ્ધ હે વહ શુદ્ધ હો જાયેગી, એસા નહીં. ક્યા કહા સમજમાં આયા ? એક ગુણકી અપની પર્યાયમાં પૂર્ણતા હુઈ તો દૂસરે ગુણકી પૂર્ણતાકા કારણ કૌન ? કિ જ્ઞાન પૂર્ણ હુઆ ઇસલિયે (ચારિત્ર પૂર્ણ હુઆ) ? સમજમાં આયા ? ઉસમાં બહુત સુંદર દૃષ્ટાંત દિયા હે. આહાહા ! અંદરમાં શુભભાવકે અંશમાં ભી શુદ્ધતાકા અંશ હે. ગ્રંથીભેદ હોનેકે બાદ યહ શુદ્ધતા બઢતી (હે), શુદ્ધ હે...શુદ્ધ હે...શુદ્ધ હે... ભવિષ્યમાં શુદ્ધ..શુદ્ધ..શુદ્ધ..શુદ્ધ હોકર ચારિત્ર (કી પર્યાય) ભી (પૂર્ણ) શુદ્ધ હો જાયેગી. ચારિત્રકી શુદ્ધતા બઢકર ચારિત્રકી શુદ્ધતા હો ગયી. ઉસ જાતકી શુદ્ધતા હે તો ઉસ જાતકી પૂર્ણતા હોગી, આહાહા ! નહીં સમજમાં આયા ? જ્ઞાન પૂર્ણ હુઆ (ચારિત્રમાં) શુદ્ધતા બિલકુલ ન હો ઓર (ચારિત્ર) પૂર્ણ હો (જાયે, એસા નહીં). ભવિષ્યમાં વહ જાત રહેગી તો કહાંસે રહેગી ? સમજમાં આયા ? આહાહા ! યહ ગ્રંથીભેદ (હોનેકે બાદ) શુભમાં શુદ્ધકા અંશ હે, યહી અંશ યથાખ્યાત (ચારિત્રકા) અંકુર હે. યથાખ્યાત ચારિત્રકા અંકુર હે પરંતુ યહ અંકુર કબ કાર્ય કરે ? જબ પૂર્ણાનંદકે નાથકી અનુભવદશા પ્રતીતમાં આયી તબ કાર્ય કરે. જ્ઞાન જૈસે અપની પર્યાયમાં નિર્મલ..નિર્મલ..નિર્મલ..નિર્મલ... જ્ઞાન..જ્ઞાન..જ્ઞાન..જ્ઞાન.. (રહેગા). એસે ચારિત્રકી શુદ્ધતાકા અંશ ભી શુદ્ધતા..શુદ્ધતા..શુદ્ધતા..શુદ્ધતા ભાવભાવ રહેગા, આહાહા ! ઉસ સમયકે પંડિત ભી કહાંસે નિકાલતે થે ! દેખો ન ! શુભમાં સે શુદ્ધકા અંશ કહાંસે નિકાલા ? પાઠમાં કહીં એસા નહીં હે. પરંતુ ન્યાયસે નિકાલા કિ અગર શુભમાં શુદ્ધકા અંશ ન હો તો (ક્યા) અશુદ્ધતા બઢકર યથાખ્યાત ચારિત્રકી (શુદ્ધ) પર્યાય હોગી ? સમજમાં આયા ? ઉસકી જાતકી જો નિર્મલ પર્યાય ન હો તો વહી જાત..વહી જાત..વહી જાત.. કહાંસે રહેગી ? આહાહા !

बनारसीदास ! (कोई कड़ता था) उन्होंनेने भांग पीकर अध्यात्म कड़ा है. अरे प्रभु ! क्या करता है ? भाई ! सत्यके शरणांमें जाना चाहिए. भगवान ! तू परमात्मा और ऐसी आडमें तू क्यों पडा ? आडाडा !

यहां तो परमात्मा ऐसा कड़ते हैं कि, जिस भावमें यारित्रकी शुद्धताका अंश है वह शुद्ध..शुद्ध..शुद्ध.. भाव..भाव..भाव.. रहेगा. शुद्ध भावभाव रहेगा. समझमें आया ? आडाडा ! बहुत संक्षिप्त कर दिया है. आचार्योंने तो धतना (भर दिया है कि) उसमें पार नहीं है.

श्रोता : आपने यह सब कहांसे निकाला ?

पूज्य गुरुदेवश्री : यह तो उसमें है. न्याय है कि नहीं ? देखो न ! अगर शुद्धताका अंश यारित्रमें न हो तो शुद्धताकी वह जात.. वह जात.. वह जात.. भाव..भाव.. कहांसे रहेगा ? आडाडा ! ओहो ! गजब काम किया है ! समकित्ती भले गृहस्थाश्रममें हो. सिद्धके सम्यग्दर्शन और तिर्य्यके सम्यग्दर्शनमें कोई फर्क है ?

यहां कड़ते हैं कि, (यारित्रकी) निर्मल पर्याय दुई है (वह) स्वरूपायरण यारित्रकी पर्याय निर्मल है. यह स्वरूप आयरण यारित्र भाव है. वही भाव पीछे भी रहेगा. स्थिरता...स्थिरता..स्थिरता.. यह भावभाव है. आडाडा ! थोडा कठिन पडे परंतु मार्ग तो ऐसा है. अंदरसे आये उसका क्या करना ? कोई रटके तैयार रभते हैं क्या ? आडाडा ! गजब बात कही है !

अगर वर्तमानमें यारित्रकी पर्यायका निर्मल अंश यौथे (गुणस्थानमें) न हो तो यह भाव..भाव..भाव..भाव..भाव.. (शक्ति) लागू नहीं पडती है. समझमें आया ? आडाडा ! जो शुद्ध यारित्रका अंश है, वर्तमान भवति पर्याय है, उसका भवन. बादमें भी वह जात वैसी ही रहेगी. वह जात ज्ञानमें मिल जायेगी (ऐसा नहीं है). यारित्रकी पर्याय ज्ञानमें मिल जाये, आनंदमें मिल जाये, ऐसा नहीं है, आडाडा !

संप्रदायमें हमारे गुरुभाई थे. वे ऐसा कड़ते थे, कुछ भबर नहीं थी इसलिये ऐसा कड़ते थे कि, हम लोग जो बाहरके व्रत और यारित्र पालते हैं, उसका फल सिद्ध (गतिमें) यह ज्ञान और दर्शन दोनों आयेगा. वे तो कड़ते थे, हम लोगोंको तो सम्यग्दर्शन है ही. गौतमकी श्रद्धा हमें स्थानकवासीमें मिली है. अहिंसा किसको कहे ? भाई ! रागकी अनउत्पत्तिरूप (अर्थात्) उत्पत्ति नहीं होना, उसका नाम अहिंसा है. परकी दयाका भाव-राग, वह तो हिंसा है. आडाडा ! वे ऐसा कड़ते थे, परकी दया वह अहिंसा है और यह अहिंसा हमें मिली है तो अपनी श्रद्धा तो बराबर यथार्थ है, आडाडा ! हमलोग यह व्रत और नियम पालते हैं बादमें उसका फल क्या रहेगा ? ज्ञान और दर्शन दोनों रहेगा. बादमें उसमें यारित्र नहीं रहेगा.

तीन-चार साल पहले जैन संदेशमें एक प्रश्न आया था कि, सिद्धमें यारित्र नहीं. यहां

यारित्र हुआ (तो) सिद्धमें (भी) इस भावभावशक्तिके कारण) यारित्र... यारित्र..यारित्र..यारित्र..
भावभाव तो कायम रहेगा. समझमें आया ?

बहुत साल पहले यर्थां लुई थी. हमें तो कल (लुई हो) ऐसा लगता है. वे कहते थे. सिद्धमें यारित्र नहीं है. यहां कहते हैं कि, अगर सिद्धमें यारित्र नहीं है तो यहां भी यारित्र नहीं है. यहां यारित्र नहीं है तो सिद्धमें यारित्र कहांसे आया ? यारित्र यहां है, वीतरागी पर्याय है—यौथे गुणस्थानमें स्वरूपायरण यारित्रका अंश (है). छोटे (गुणस्थानमें) यारित्रका अंश, निर्मल वीतराग दशा (है) तो वीतराग दशा वह यारित्र है. यह भावभाव— वीतराग..वीतराग..वीतराग पर्यायरूप रहेगा. समझमें आया ? वह तो अंदरसे जिस प्रकारसे आये उस प्रकारसे होता है, उसमें दूसरा क्या हो सकता है ? ये कोई रट नहीं लिया था, तैयार नहीं किया था. आहाहा ! सूक्ष्म पडे लेकिन उसको जानना चाहिए.

“भवते लुअे पर्यायके...” यहां अपने यारित्रकी पर्याय ली है. यारित्रकी पर्याय भवती है—वर्तमान है, तो यह यारित्र, यारित्ररूप भावभाव, इस जातका भावभाव कायम रहेगा. सिद्धमें भी यारित्र पर्याय रहेगी. समझमें आया ? संयमका पालन करना या इन्द्रियोंसे दमन करना—१२ प्रकारका संयम आता है न ? वह दूसरी चीज है. परंतु यह यारित्र तो अपनी स्वरूप स्थिरताकी पर्यायका (है). अंदरमें यारित्र नामका गुण है. आत्मामें जैसे ज्ञानगुण है, दर्शन गुण है, आनंद गुण है, वैसे यारित्र गुण है. अकषायभाव यारित्र गुण है. उसकी परिणति—पर्यायमें भी स्थिरतारूप वीतराग पर्याय आती है और यह वीतराग पर्याय भी भाव..भाव..भाव..भाव..भाव.. (रहेगी). वीतराग पर्यायरूपसे भाव..भाव..भाव..भाव.. कायम रहेगा. आहाहा ! ऐसा है. ऐसा कभी सुना नहीं है.

यहां तो कहते हैं कि, भगवानकी पर्याय पर्यायमें न हो तो भाव..भाव..भाव..भाव.. कहांसे रहेगा ? आहाहा ! समझमें आया ? यौथे गुणस्थानमें भी प्रभुताकी पर्याय है, यह प्रभुताकी पर्याय है (वह) भगवानकी पर्याय है. प्रभुताकी पर्याय है यह प्रभुता..प्रभुता..प्रभुताकी ही जात रहेगी. आहाहा ! गजब बात है !

अरे..! ऐसी बात कहां है ? बापू ! द्विगंबर संतोंके अलावा यह बात कहीं नहीं है. दूसरोंको दुःख लगे तो क्या करें, भाई ? समझमें आया ? द्विगंबर संत यानी नग्नपना नहीं. अंदर सम्यग्दर्शन, ज्ञान और वीतरागी पर्यायवाला यह सख्या यारित्र (है). यह वीतरागी पर्याय (छोटे गुणस्थानमें) प्रगट लुई. आहाहा ! पहले स्वरूपकी स्थिरताका भाव था. यह भावभाव (वृद्धि) होकर (उसकी) वृद्धि हो गयी और छोटे गुणस्थानमें यारित्र पर्याय लुई तो बादमें यारित्र..यारित्र..यारित्र.. वीतरागभाव..वीतरागभाव.. रहेगा. यह भावभाव (शक्तिका) कार्य है.

आहाहा ! देओ तो सही ! सत्के भजनेमें जिस जातिकी जात है, वही जात भविष्यमें

रहेगी, ऐसा कहते हैं. गुणभे तो (यह जात) रहेगी, यह दूसरी बात (है). गुणमें तो यारित्र है वह यारित्र ही रहेगा. श्रद्धा (है यह) श्रद्धा रहेगी. त्रिकावीकी (बात है). आनंद, आनंद रहेगा. द्रव्य और गुणमें (वही जात) रहती है. यह भावभावशक्तिका कार्य है. परंतु यहां तो पर्यायमें भी जो वर्तमान भाव है, वही जात भविष्यमें रहेगी, उसका नाम भावभाव शक्ति कहनेमें आता है. आहाहा !

जितना स्पष्टीकरण आज हुआ है, उतना स्पष्टीकरण पहले नहीं किया था. (हमको कडा था कि) क्लासमें शक्ति पढना. अलग-अलग गांवसे लोग आते हैं और ऐसी शक्ति (आयी), आहाहा ! आज तो शक्तिका उर दिन हुआ. दो दिन बाकी है. उर दिनमें उ७ शक्ति हुई. और १० शक्ति बाकी है. यहां तो अक-अक भाव और अक-अक अभावमें घंटोंके घंटों चले जाये तो भी भ्रम हो ऐसा नहीं है, ऐसी यीज है, आहाहा ! सारा भंडार भरा है.

(यहां) कहते हैं कि, यांटीकी पर्याय है वह यांटीकी पर्याय यांटीरूप रहेगी. वह लोहेरूप हो जाये, ऐसा नहीं बनता. आहाहा ! यह दृष्टांत दिया. उसमें तो (यांटीकी पर्याय) लोहेरूप हो जायेगी. यांटीके परमाणु लोहेरूप हो जायेंगे. (लोहेरूप) पर्याय होगी. यह (शक्तिकी पर्याय अन्यरूप) नहीं होगी, आहाहा !

यहां तो भगवान आत्मा ! विद्वानंदस्वरूपकी दृष्टि हुई, सम्यग्दर्शन हुआ तो जो सम्यग्दर्शनकी पर्याय है, (वह) भले क्षयोपशमसे क्षायिक (सम्यग्दर्शन) रूप हो, परंतु जात तो वही है. यह भावभाव (शक्तिका कार्य) है. समझमें आया ? क्षयोपशमसे क्षायिक हो. पहले अभावभाव कडा था (उसका अर्थ) कि, क्षयोपशम(भावमें) क्षायिकभावका अभाव है तो अभावभाव हो जायेगा. (अर्थात् क्षायिकभावका) अभाव है उसमें (क्षायिक) भाव आ जायेगा. अब यहां कहते हैं कि, क्षयोपशमसमकित है, यह पर्यायभाव है और उसी पर्यायका भावभाव क्षायिकके समय भी भाव तो समकितका ही है. समझमें आया ? यह अपनी भावभाव (शक्तिके) कारण यह भावभावरूप रहा है. कोई वीतराग भिले और केवली (भगवान) भिले छसदिये भावभावकी क्षायिक समकितकी पर्याय हुई, (ऐसा नहीं है). आहाहा ! समझमें आया ?

सम्यग्दर्शनकी पर्याय है यह भाव (है). बादमें भले क्षयोपशम हो, वह कोई प्रश्न नहीं. अब यह भाव..भाव..भाव.. रहेगा. सम्यग्दर्शनकी पर्याय दर्शन..दर्शन..दर्शन.. (रूप) रहेगी. क्षायिकमें दर्शन - प्रतीति है कि नहीं ? उस जातकी है कि नहीं ? आहाहा ! ऐसी बात (है) ! कुंदकुंदआचार्य, अमृतचंद्रआचार्य आहाहा ! जगतको निहाल कर दिया है ! आहाहा !

स्वामिनारायणके समयमें अन्यमतिओंको मांस और दारु तो छुडाते थे. तो उसे स्वामीनारायण न्यायकरण कहते थे. न्यायकरण यह है, न्याय कर दिया है ! तेरी जात तो जात रहेगी ही. यह जात - कजात कभी हो, परके भावकी जात हो जाये, ऐसा नहीं

હૈ, આહાહા !

યહાં ભાવભાવમેં તો યહ કહા, કભી ભાવકા અભાવ હોકર મિથ્યાત્વ હો જાયે કિ, ચારિત્રકી પર્યાયકા અભાવ હોકર અચારિત્ર હો જાયે. ઐસા વસ્તુમેં નહિ હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયે ઉતના સમજો, પ્રભુ ! યહ તો ભગવાનકી વાણી હૈ ! આહાહા !

ચૌથે (ગુણસ્થાનમેં) અલ્પ સ્વસંવેદન હૈ. સ્વસંવેદન હૈ યહ સ્વસંવેદન..સ્વસંવેદનકી જાતકા હી રહેગા. સ્વસંવેદન મિટકર અવ્રત હો જાયેગા કિ અસ્વસંવેદન હોગા, ઐસા વસ્તુકા સ્વરૂપ હી નહીં. આહાહા ! સમજમેં આયા ?

ઓહોહો ! આચાર્યોને ગજબ કામ ક્રિયા હૈ, પ્રભુ ! ખજાના ખોલ દિયા હૈ. આહાહા ! જિતની સંખ્યામેં ગુણ હૈ ઉતની (એક) સમયકી પર્યાય હૈ ઔર જો પર્યાયકી જાત હૈ, વહ ભાવ હૈ. યહ ભાવ ભવિષ્યમેં ભી ઉસી જાત(કા) રહેગા. આહાહા ! (વહ ભાવ) દૂસરી પર્યાયમેં મિલ જાયે, ઐસા નહીં હૈ, ઐસા કહતે હૈં. સમજમેં આયા ? જૈસે પર્યાયને દ્રવ્યકા આશ્રય લિયા તો (પર્યાય) દ્રવ્યમેં તન્મય હુઈ, ઐસા કહનેમેં આતા હૈ. પરંતુ પર્યાય દ્રવ્યમેં તન્મય હોતી હી નહીં. વહ તો પરસન્મુખ થી વહ સ્વસન્મુખ હુઈ, તો દ્રવ્યમેં તન્મય હુઈ, ઐસા કહનેમેં આતા હૈ. પર્યાય તો પર્યાયમેં રહકર દ્રવ્યકા જ્ઞાન કરતી હૈ. સમજમેં આયા ?

શ્રદ્ધાકી પર્યાય શ્રદ્ધામેં રહકર દ્રવ્યકી શ્રદ્ધા કરતી હૈ. (દ્રવ્યકા) દ્રવ્યપના શ્રદ્ધામેં આ જાતા હૈ, ઐસા નહીં. આહાહા ! ચૈતન્ય જાત હૈ તો ચૈતન્ય..ચૈતન્ય...ચૈતન્ય..ચૈતન્ય... જાત રહેગી. કભી ચૈતન્ય જાતકી અચૈતન્ય જાત હો જાયે, ઐસા બનતા નહીં. આહાહા ! ઐસે જો ગુણકી નિર્મલ પર્યાય હૈ વહ નિર્મલ પર્યાય ઉસ ભાવ... ઉસ ભાવ...ઉસ ભાવ... (રૂપ) રહેગી. ઉસમેં કભી મલિનતા આ જાયે, ઐસા વસ્તુકા સ્વરૂપ નહીં હૈ. સમજમેં આયા ? આહાહા ! આસ્રવ (અધિકારમેં) 'નયપરિહીણા' આયા ન ? વહ બાત યહાં નહીં હૈ. જિસને શક્તિકા પિંડ પ્રભુ જ્ઞાનમેં શ્લેષ બનાકર પ્રતીત ક્રિયા તો યહ પ્રતીતિકી પર્યાય, પ્રતીતિ...પ્રતીતિ..પ્રતીતિરૂપ રહેગી. મિથ્યારૂપ હો જાયે, ઐસા તીનકાલમેં બનતા નહીં. આહાહા ! ઐસી બાતેં હૈં !

અરે બાપૂ ! કિસકા વિરોધ કરતા હૈ ? ભાઈ ! તુજે ખબર નહીં. યહ જિનેશ્વર પરમાત્માકી વાણી હૈ. ઉસકા યહ ભાવ હૈ. સમજમેં આયા ? વીતરાગકા માર્ગ યહ હૈ. ઉસે તુમ રાગકે માર્ગમેં ઠરા દો, પ્રભુ ! (યહ વિપરીતતા હૈ). રાગસે – વ્યવહારસે લાભ હોગા, ભાઈ ! યહ વીતરાગ માર્ગ નહીં. આહાહા ! તેરી શ્રદ્ધામેં પહલે તો ઐસા પક્કા આના ચાહિયે કિ, વીતરાગભાવસે હી આત્માકા કલ્યાણ હોગા, રાગસે કલ્યાણ હોગા નહીં. વીતરાગભાવ કાયમ રહેગા. (વીતરાગતા) કરતે..કરતે..કરતે..કરતે.. પૂર્ણ વીતરાગ હો જાયેગા. પરંતુ સર્વજ્ઞ પરમાત્માકી (જો) જાત હૈ, (વહી) જાત વહાં રહેગી. આહાહા !

અલ્પ મતિશ્રુત જ્ઞાન હૈ, વહ જ્ઞાનકી જાત હૈ. પરંતુ જ્ઞાન...જ્ઞાન..જ્ઞાન..જ્ઞાન.. હોકર સર્વજ્ઞ હો જાયેગા. સબ (પર્યાય) પૂર્ણ હો જાયેગી. વહ જાત સ્વયં પૂર્ણતા (રૂપ) હો જાયેગી. દૂસરી

પર્યાયકે કારણ નહીં, દૂસરે ગુણકે કારણ નહીં. ઉસકા નામ ભાવભાવ શક્તિ હૈ. દેખો ! યહ લગભગ એક ઘંટા તો હો ગયા. વિશેષ કહુંગે...



આ વસ્તુ પ્રયોગમાં લાવવા માટે અંદર મૂળમાંથી પુરુષાર્થનો ઉપાડ આવવો જોઈએ કે હું આવો મહાન પદાર્થ ! – એમ નિરાવલંબપણે કોઈના આધાર વિના અદ્વરથી વિચારની ધૂન ચાલતાં-ચાલતાં એવો રસ આવે કે બહારમાં આવવું ગોઠે નહિ. હજુ છે તો વિકલ્પ, પણ એમ જ લાગે કે આ...હું...આ..હું... એમ ઘોલનનું જોર ચાલતાં ચાલતાં એ વિકલ્પો પણ છૂટીને અંદરમાં ઉતરી જાય છે. (નિર્વિકલ્પ થવા પહેલાની દશા આવી હોય છે).

(પરમાગમસાર-૩૦૪)

પ્રવચન નં. ૩૩

શક્તિ-૩૮ તા. ૧૨-૦૯-૧૯૭૭

અભવત્પર્યાયાભવનરૂપા અભાવાભાવશક્તિ: ।।૩૮।।

સમયસાર શક્તિકા અધિકાર (ચલતા હૈ). ૩૭ (શક્તિ) હુઈ. યહ આત્મા જો વસ્તુ હૈ, ઉસમેં સંખ્યાસે અનંત શક્તિયાં હૈં. (આત્મા) અનંત કાલ રહેગા યહ કાલકી (અપેક્ષાસે) હૈ. પરંતુ સંખ્યાસે અનંત શક્તિયાં હૈં. એક સાથ વ્યાપક અનંત શક્તિયાં એક સમયમેં હૈ. કથન કમસે હોતા હૈ. સમજમેં આયા ?

ઐસા ચૈતન્ય ભગવાન ! ગુણી જો સ્વભાવવાન ઉસકી અનંતિ શક્તિ—જિસકા સ્વભાવ (યાની) અપના ભાવ, ઉસકી જિસે દૃષ્ટિ હુઈ (કિ), મેં ચૈતન્ય જ્ઞાયકભાવ હું. ઐસી દૃષ્ટિમેં અનંત શક્તિકા અંદર સંગ્રહ પડા હૈ, ઉસકા ભી આદર હો ગયા. સમજમેં આયા ? ઉસમેં આજ યહાં ભાવભાવમેંસે અંતિમ શક્તિ હૈ. વૈસે તો અભી દૂસરી (શક્તિયાં બાકી) હૈં. આહાહા !

પહલે તો યહ કહા થા કિ, ભાવ શક્તિકે કારણ વર્તમાન પર્યાયમેં નિર્મલતા વિદ્યમાન હોતી હી હૈ. અભાવ શક્તિકે કારણ રાગકે અભાવરૂપ પરિણમન હોતા હી હૈ. આહાહા ! ભાવઅભાવ શક્તિકે કારણ વર્તમાન નિર્મલ પર્યાયકા ઉત્પાદ્ હૈ, ઉસકા વ્યય હોકર ભાવકા અભાવ હો જાયે. અભાવભાવ (શક્તિકે) કારણ વર્તમાન પર્યાયમેં જો વિશેષ નિર્મલ પર્યાય નહીં થી, ઇસકા અભાવ હૈ, ઉસકા ભાવ હો જાયેગા, આહાહા !

બહુત શક્તિયાં તો લગભગ એક-એક ઘંટા ચલી. આહાહા ! ભાવભાવશક્તિકે કારણ પ્રત્યેક ગુણકી વર્તમાન પર્યાય ભાવરૂપ હૈ, યહ ભાવરૂપ, ભાવરૂપ હી રહેગી. જો નિર્મલ સમ્યગ્દર્શન આદિ પર્યાય ઉત્પન્ન હુઈ, ઐસા ભાવભાવ (અર્થાત્) ઐસી સમ્યગ્દર્શન પર્યાય, સમ્યક્જ્ઞાન આનંદકી પર્યાય ભાવરૂપ ભાવ હૈ, વહી ભાવ (ભવિષ્યમેં) રહેગા. સમજમેં આયા ? યે પાંચ બાત ચલી હૈં. આજે તો ઉસમેં સે અભાવઅભાવ (નામકી) છઠી (શક્તિ) હૈ ન ? આહાહા ! (ઉસે લેતે હૈં).

ભગવાન ! તેરેમેં એક અભાવઅભાવ નામકી શક્તિ હૈ, ગુણ હૈ કિ, જિસ ગુણકે કારણ વર્તમાન વિકારકા અભાવ સ્વભાવરૂપ તેરા પરિણમન હૈ, વ્યવહાર રત્નત્રય વિકાર હૈ, ઇસકે

अभावरूप तेरा परिणामन है, आहाहा ! यह व्यवहारकी बड़ी तकरार (यलती है). व्यवहारसे (धर्म) होता है, शुभभावसे (धर्म) होता है. अरे प्रभु ! सुन तो सही. वर्तमानमें शुभभावका अभावरूप परिणामन है, ऐसा ही शुभका अभावरूप परिणामन अभावअभाव (शक्तिके) कारण (भविष्यमें भी) अभावरूप ही रहेगा, आहाहा ! क्या कडा ?

वर्तमान भगवान आत्मा ! शुद्ध चैतन्यघन, उसमें अनंती शक्तिओंमें एक अभावअभाव (नामकी) शक्ति ऐसी है कि, जिसने द्रव्यस्वभावको दृष्टिमें लिया, उसके वर्तमान (परिणामनमें) जो विकारका अभावरूप परिणामन है (वह भविष्यमें भी अभावरूप ही रहेगा). आहाहा ! व्यवहार रत्नत्रय शुभराग है. यहां शक्तिका ऐसा गुण है कि, रागका अभावरूप परिणामन अभावअभावके कारण है. पहले तो अभावके कारण था. व्यवहार रत्नत्रयका अभावरूप परिणामन यह अभाव शक्ति (है). अब वर्तमान व्यवहार रत्नत्रयका – रागका अभावरूप परिणामन है, ऐसा ही अभावरूप (परिणामन भविष्यमें) रहेगा, आहाहा ! भविष्यमें भी ऐसा रहेगा.

उसका अर्थ यह है कि, जिसने भगवान आत्मा चैतन्यघन उसका अवलंबन—आश्रय लिया, उसमें अभावअभाव नामकी शक्तिका भी आश्रय आ गया. तो इस अभावअभाव शक्तिका परिणामन रागके अभावरूप है, (तो) अब रागका अभावरूप ही (परिणामन) रहेगा. कभी रागका सदृभाव हो जाये (ऐसा नहीं बनेगा). अभावअभाव शक्तिके कारण (ऐसा) कभी नहीं (बनेगा), आहाहा ! समझमें आता है ? दूसरी भाषासे कहें तो, उदय भावका वर्तमान पर्यायमें अभाव है. (पर्यायमें) है ही नहीं. अभावके कारण पर्यायमें नहीं है. उसमें है वह तो परज्ञेयके रूपमें हुआ. समझमें आया ?

श्रोता : अभी तक तो द्रव्यमें नहीं है, ऐसा कहते थे. अब पर्यायमें नहीं है, ऐसा कहते हो !

पूज्य गुरुदेवश्री : पर्यायमें नहीं है. आहाहा ! द्रव्य-गुणमें तो नहीं है परंतु यहां तो अभावअभाव शक्तिका वर्णन (यल रहा है) तो अभावअभाव शक्ति है, उसका प्रत्येक गुणमें रूप है, तो कोई भी गुण रागरूप परिणामन करे या मिथ्याश्रद्धारूप परिणामन करे, ऐसी शक्ति ही नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? यह तो भगवानका दरबार है, उसमें अनंती-अनंती प्रजा-शक्ति पडी है. आहाहा ! चारित्रिके परिणामनमें निर्मल परिणति ही है. अचारित्रिके परिणामनका तो अभाव है. शांतिसे समझनेकी यीज है, भाई ! आहाहा ! यह तो तीनलोकके नाथको जगानेकी बात है.

भगवान तीनों काल अभावअभाव शक्तिसे भरा है. आहाहा ! पूर्वमें (राग) था तो पर्यायबुद्धिके कारण राग था. वह तो पर्यायबुद्धिको लेकर राग था, ऐसा माना था. परंतु द्रव्यबुद्धि जहां हुई तो, वर्तमानमें रागका अभावरूप परिणामन है, ऐसा विकारका अभावरूप

परिणामन कायम रहेगा. आडाडा ! समजमें आया ? मार्ग बापू ! (सूक्ष्म है). सूक्ष्म भात है, भाई !

यह तो तीनलोकका नाथ भगवान आत्मा ! आडाडा ! 'सिद्ध समान सदा पद भेरो' आता है न ? 'चेतन रूप अनुप अमुरत', 'चेतन रूप अनुप अमुरत, सिद्ध समान सदा पद भेरो; मोह महातम आतम अंग कियो परसंग न आतम भेरो' वस्तुमें (राग) नहि परंतु मैंने रागका संग किया. मोह महातम घेरा बनाया, औसा कडा. उसने महातमका घेरा बनाया है. वस्तुमें (मोह) नहीं है, समजमें आया ? आडाडा !

यहां तो परमात्मा, परमात्माकी शक्तिओंका वर्णन करते हैं, आडाडा ! प्रभु ! तेरी शक्तिमें अनंत शक्ति संख्यासे है. उसमें एक अनंत.. अनंत.. अभावअभाव नामकी शक्ति है. आडाडा ! समजमें आया ? यहां तो ४७ शक्तिओंका वर्णन है. विशेष शक्तिका वर्णन (और भी) लिया है.

दूसरी ३७ शक्ति उतारी हैं. दूसरे शास्त्रोंमें से—अनुभव प्रकाश, तत्त्वार्थ राजवार्तिक, पद्मनंदि पंचविंशती, पद्मपुराण सब देखा है न ! सब देखा है तो उसमें से निकालकर (बनाई है). (अध्यात्म) पंचसंग्रहमें परमात्मपुराण है. इसमें शक्ति बहुत भरी है. इसमें से निकालकर लगभग ३७ (शक्तियां) बनायी हैं. बाकी तो अनंत हैं. हमको ज्यादा खबर नहीं, समजमें आया ? जितना ब्याजमें आया इतना (कडा). (एक) कागजमें लिखा था. आडाडा !

भगवान आत्मा ! जिसको सम्यग्दर्शन है अर्थात् जिसको द्रव्यस्वभावकी दृष्टि है, जिसमें पर्यायबुद्धि छूट गयी है, आडाडा ! उसके द्रव्यमें अभावअभाव नामका एक गुण है. शक्ति कडो, गुण कडो, द्रव्यका स्वभाव कडो, सत्का सत्त्व कडो, माल (कडो), सत् द्रव्य है उसका माल है — कस है. आडाडा ! समजमें आया ? औसा अंदरमें माल पडा है (उसमें) एक अभावअभाव नामका गुण (है), आडाडा !

बहुत दिन पहले (३७ शक्ति) लिपी हैं. उसमें सुभ शक्ति आयी है. समकित और यारित्र (शक्ति) नहीं आयी है. तो पहले यह लिया है. समकित, यारित्र, स्वयंसिद्धत्व, अज (यानी) जन्म नहीं लेना. अभंडता, विमल, भेद, अभेद, नास्ति, साकार-अकार तो ज्ञान-दर्शनमें आ गया. वस्तुत्व, अयल, उर्ध्वगमनत्व, सत्, असत्, सूक्ष्म, स्थूल, अप्रेयत्व, अन्यत्व, अनंत गुरुलघुत्व, एक शक्ति (है). अगुरुलघु शक्ति आ गयी है. परंतु उसके अविभाग प्रतिच्छेद अनंत है. अनंत अगुरुलघु क्यों (कडा) ? क्योंकि प्रत्येक गुणमें अगुरुलघुपना है, आडाडा ! भव्य, अभव्य, यह नहीं लिया है. पर्याय है न ! भव्य-अभव्य शक्ति पर्यायमें है, अंदर गुणमें नहीं. क्योंकि गुण डो तो भव्यपना सिद्धमें (भी) रहना चाहिए. परंतु भव्यपना तो सिद्धमें नहीं है. क्योंकि भव्यत्वकी योग्यताकी पर्याय थी, उस पर्यायका अभाव डो गया. पूर्ण भव्यता प्रगट डो गयी. सर्वगतत्व, द्रव्यत्व, अवगाहन, अव्याबाध यह प्रतिष्ठव गुण (है).

विभाव, योग, अवगाहन, क्रियावती, भोक्तृत्व, असर्वगत. प्रवचनसार पृष्ठ-१५०, अनुभव प्रकाश पृष्ठ-६, राजवार्तिक पृष्ठ-५५८, पद्मनांदि पंचविंशती पृष्ठ-१११ के आधारसे (बनायी है). इन शास्त्रोंके आधारसे बनायी है. परमात्मपुराणमें से नित्य, पर प्रभाव, निज धर्मभाव, ध्रुवभाव, केवलभाव, शाश्वतभाव, अतुलभाव, अछेद्यभाव, अनित्यभाव, प्रकाशभाव, अपार महिमाभाव, अपरमभाव, अक्रमभाव, अघटभाव, अभेदभाव, निसंसारभाव, कल्याणभाव, ओहो ! इसमें ५४ हो गयी. ३८ यही थी बादमें परमात्मपुराणमें से ली. १०१ हो गयी. ५४ और ४७, (अैसे) १०१ (हो गयी). आहाहा ! पहलेसे उतारी थी. आहाहा ! यहां तो अभावअभाव शक्तिका वर्णन संतोंने कडा. दूसरे संतोंने त्रिभुज-त्रिभुज शास्त्रोंमें (कडा) था (तो उसका) मिलान करके लिख लिया था, आहाहा !

सबेरे सूक्ष्म द्रव्यदृष्टि आया था न ? आहाहा ! पुण्य-पाप स्थूल है और स्थूलका वर्तमान परिणामनमें अभाव है. द्रव्यदृष्टिकी संभाल करनेसे जो शुभभाव है, उसका भी वर्तमानमें तो अभाव है. आहाहा ! और बादमें भी अभाव रहेगा, उसका नाम अभावअभाव शक्ति कहनेमें आती है, आहाहा !

जैसे कि, समकित पर्याय है तो उसमें मिथ्या पर्यायका अभाव है. अभावरूप परिणामन है. पीछे भी समकित पर्यायमें (मिथ्या पर्यायका) अभावरूप परिणामन रहेगा. मिथ्यात्वका परिणामन कभी आयेगा नहीं, आहाहा ! समझमें आया ?

अैसे यारित्रका जो निर्मल परिणाम हुआ, उसमें वर्तमानमें अयारित्रके परिणामका अभाव है. अैसे अयारित्रका परिणाम कायम अभावरूप रहेगा. आहाहा ! समझमें आया ? अैसी बात है ! तंडार जोला है ! भजना जोल दिया ! ओहोहो ! अैसी वस्तु है ! परसे उदास है, परका अभाव स्वभाव है, अैसा कहते हैं. पर शब्दका (अर्थ) शरीर, वाणी तो कहीं दूर रह गया, वह तो अभाव शक्तिमें आया था. पांय शरीर, आठ कर्म, और भावकर्म (इन तीनोंका) आत्मामें अभाव है. अभावशक्तिमें तीनोंका अभावरूप परिणामन है, आहाहा ! अभावमें आया था. यहां तो तीनोंका अभावरूप परिणामन है, यह पर्याय अपनी है. और इन तीनोंका अभावरूप परिणामन है, अैसा त्रिविध्यमें भी समय-समयमें (रहेगा).

पांय शरीर, शरीर यानी नोकर्म, आठ कर्म और भावकर्म—दया, दान, व्रत, पुण्य-पाप शुभाशुभभाव आदि उसका अभाव शक्तिके कारण वर्तमानमें अभाव है. अैसा (त्रिविध्यमें भी) अभावअभाव रहेगा. ये अभावअभाव शक्तिके कारण है. आहाहा !

अरे.. ! प्रभुका बडा भजना पडा है ! उसका विश्वास नहीं, उसकी प्रतीति नहीं और रागकी प्रतीति (है). मैं शुभ राग करता हूं, उसका विश्वास (है). जो विकार है, जो स्वभावमें नहीं है, उसका विश्वास (है) कि, मेरा शुभभावसे कल्याण होगा, आहाहा ! समझमें आया ? दृष्टिमें बडी विपरीतता है.

यहां तो कहते हैं कि, स्वभावके आश्रयसे जहां दृष्टि पलट गयी, तो इसमें वर्तमानमें भी मिथ्याश्रद्धाका अभावरूप परिणामन है. औसा ही अभावरूप परिणामन कायम रहेगा. आहाहा ! सादी अनंत (औसा ही परिणामन रहेगा). आहाहा ! समझमें आया ? क्या कहा ?

“नहीं भवते...” (अर्थात्) वर्तमानमें नहीं है. “(अप्रवर्तमान)...” (अर्थात्) वर्तमानमें राग आदिका परिणाम नहीं है. रागका प्रवर्तन नहीं है, आहाहा ! धर्मी ज्वको द्रव्यदृष्टि होनेसे वर्तमानमें रागका प्रवर्तन नहीं है, आहाहा ! यहां तो व्यवहार रत्नत्रयका प्रवर्तन करे तो निश्चय रत्नत्रय होगा, (औसा लोग मानते हैं). यहां तो प्रभु ना कहते हैं. समझितिको, धर्मीको, द्रव्यदृष्टिवानको रागका अप्रवर्तन है. कहां, समझमें आया ? भाई ! औसी बात बाहरमें आयी तो लोगोंको (बैठी नहीं). (परंतु) भाई ! तेरे घरकी बात है, प्रभु ! आहाहा !

भजनमें नहीं आता है ? ‘अब हम कबहु न निज घर आये, पर घर त्रमत अनेक नाम धराये’ (रागादि भाव) वस्तुका स्वरूप नहीं. मैं रागी हूं, मैं क्रोधी हूं, मैं मानी हूं, मैं व्यवहार करनेवाला, यह वस्तुका स्वरूप नहीं. निज घरमें आये तो इसमें विकारका अभाव दिभता है. आहाहा ! विकारका अभाव यह इसका स्वभाव ही है. द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें (यह स्वभाव) व्यापक है, आहाहा ! द्रव्य, गुणमें तो (रागका) अभाव है ही (परंतु) पर्यायमें भी रागका अभाव है. ज्ञानीको विकार दया, दान, व्रत, भक्तिका परिणाम होता है किंर भी उसकी पर्यायमें उसका अभावरूप परिणामन है, आहाहा ! (रागादि) है उसको जाननेवाली ज्ञानकी पर्याय उसकी उसमें है. राग है उसको जाननेकी पर्याय उसमें है. परंतु रागके स्वभावका अभावरूप परिणामन है. आहाहा ! समझमें आया ? क्या कहते हैं ?

आहाहा ! गजब बात है ! अमृतयंद्र आचार्यने समयसार ८६ गाथामें कहा है न ? अरे ! अमृतका सागर इस मृतक कलेवर—इस मुर्देमें मुर्छाया (है)। यह मुर्दा—मृतक कलेवर परमाणु है. आहाहा ! जिसमें चैतन्यका तो अभाव है. शरीर—जडमें तो चैतनका अभाव है. यह तो मृतक कलेवर है. आहाहा ! क्या कहा ? मूढने मुर्देसे सगाई मानी (है). मानता है कि, मैंने सगाई की है और शादी करुंगा. अरे प्रभु ! मुर्देसे सगाई (कहांसे मानी) ! आहाहा ! भोक्षमार्ग प्रकाशकमें यह दृष्टांत आया है. आहाहा ! रागके साथ सगाई की और रागके साथ अकाकार हो जायेगा, आहाहा ! प्रभु ! यह तेरी चीज नहीं. समझमें आया ?

यहां तो कहते हैं कि, जिस भावसे तीर्थकर गोत्र बंधे उस भावका भी अभाव स्वभावरूप परिणामन है. आहाहा ! (लोग) उसमें तो राज-राज हो जाये कि, आहाहा ! षोडशकारण भावना भाये, क्या कहते हैं ? ‘दर्शन विशुद्धि भावना भाये सोलह तीर्थकर पद पाय’, आहाहा ! यहां तो प्रभु औसा कहते हैं और औसा है कि, जिस भावसे तीर्थकर गोत्र बंधे उस भावका धर्मीको तो अभाव स्वभावरूप परिणामन है, आहाहा ! समझमें आया ?

ऐसे वीर्यमें भी अभावअभाव नामका रूप है. वीर्य जो निर्मल स्वरूपकी रचना करता है, उस वीर्यमें मलिनताकी रचनाका तो अभाव है. आहाहा ! यह जो पुरुषार्थ करता है तो जो पुरुषार्थ तो निर्मल परिणति होती है, वह पुरुषार्थ है. मलिन पर्यायका तो उसमें अभाव है. आत्माके वीर्यसे—बलसे पुरुषार्थसे मलिन पर्यायकी रचना होती नहीं. आहाहा ! गजब काम किया है न ! प्रभु ! आत्मा तो ऐसा है. प्रभु ! तेरी यीज यह है. आहाहा !

अक द्रव्यमें दूसरे द्रव्यका अभाव है, अत्यंत अभाव है. तो दूसरा द्रव्य क्या करे ? जैसे रागका तो स्वभावमें अत्यंत अभाव है. यह अध्यात्मका अत्यंत अभाव है. जो दूसरे यार (अभाव) है, प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अन्योन्याभाव, इसमें यह नहीं आता. यहां तो कर्ता-कर्म अधिकारकी ७३ गाथामें कहा कि, जितना दया, दान, व्रत आदिका विकल्प है, आहाहा ! समझमें आया ? उसका आत्माकी पर्यायमें अत्यंत अभाव है. समझमें आया ? आहाहा ! वह तो कहा परंतु पर्यायमें भी षट्कारक रूप निर्मल परिणामन है, वह यहां लेना है. निर्मल परिणामन षट्कारकसे होता है वह तो पर्यायमें है, परंतु मलिन परिणामके षट्कारकका तो उसमें अभाव है, ओहोहो ! गजब काम किया है न !

यहां तो पर्याय बुद्धिवालेको, पर्यायमें षट्कारकरूप विकृत परिणामन होता है, समझमें आया ? विकृत पर्याय द्रव्य, गुणमें तो है नहीं. क्योंकि विकाररूप परिणामन करे, ऐसी कोई शक्ति नहीं है. यहां तो पर्यायबुद्धिमें पर्यायमें राग कर्ता, राग कर्म, राग करण, राग अपादान, राग संप्रदान, राग आधार (है). आहाहा ! वह भी पर्यायमें है. (परंतु) जहां द्रव्यबुद्धि हुई तो (किं रागके) षट्कारकके परिणामनका अभाव है. समझमें आया ? यह बादमें लेंगे. आहाहा ! यहां तो अभावअभाव सिद्ध करना है न ?

धर्मीको और द्रव्यदृष्टिके दृष्टिवानको इस षट्कारकका जो विकृत परिणामन है, उसका तो पर्यायमें अभावरूप (परिणामन) है, आहाहा ! मिथ्यादृष्टिके दृष्टि पर्याय पर थी तब तक पर्यायमें भाव है, समझमें आया ? आहाहा ! सम्यक्दृष्टिके (अर्थात्) धर्मकी पहली सीढ़ीवालेको पर्यायमें षट्कारकरूप विकृत अवस्था जो है (वह), कर्मसे नहीं, (बलिक) अपनी पर्यायसे विकृत अवस्था है, वह कोई शक्तिका कार्य नहीं. पर्यायमें अद्धरसे (विकृत अवस्था गिठी है) और उठावगीर (है). उठावगीर समझते हो ? विकृत अवस्था उठावगीर है, वस्तुमें नहीं है, आहाहा !

९: कारकके परिणामनका द्रव्यदृष्टिवंतको—धर्मीको विकारका अभावरूप ही परिणामन है. आहाहा ! (रागका) परिणामन है ना ? नयमें तो ऐसा कहा है. वह तो ज्ञान कराया है. समझमें आया ? यहां तो द्रव्यदृष्टिकी प्रधानतासे शक्तिका कथन है. उसमें तो षट्कारकसे विकृत पर्याय है. उसका तो पर्यायमें अभाव है. द्रव्य, गुणमें तो अभाव है ही, (परंतु) पर्यायमें भी अभाव है). आहाहा ! समझमें आया ? जैसे अभावरूप परिणामन है, आहाहा !

धर्मीको व्यवहार रत्नत्रयका अभावरूप परिणामन है, आहाहा ! और व्यवहार रत्नत्रयका अभावरूप परिणामन कायम रहेगा, यह अभावअभाव शक्तिका कार्य है. आहाहा ! ऐसी गुण भात (है) ! समझमें आया ? भात तो ऐसी है ! आहाहा !

भाई ! तेरी थीज ऐसी है. तेरा स्वरूप ऐसा है, आहाहा ! कि, विकाररूप नहीं परिणामन करना, यह तेरी थीज है. विकाररूप परिणामन करना ये कोई तेरी शक्ति नहीं या कोई गुण नहीं, आहाहा ! तेरी शक्तिमें तो अभावअभाव नामका गुण पडा है. इस गुणके कारण वर्तमानमें भी ज्ञानकी पर्यायमें विपरीतताका तो अभाव है और ऐसा विपरीतताका अभाव, यह विपरीतताका अभाव कायम रहेगा, आहाहा ! और ज्ञानकी पर्याय जो निर्मल भावरूप है, (उसका) वैसा का वैसा ही भाव (भविष्यमें) रहेगा और विकारसे अभावरूप है तो कायम अभावरूप ही रहेगा, आहाहा !

यहां तो ऐसा लिया है कि, जिसको द्रव्यदृष्टि हुई उसको गिर जाना है कि, पीछे हट जाना है, यह भात है ही नहीं. द्रव्यदृष्टि छोड दे तो गिर जाये. समझमें आया ? वस्तु जो भगवान ज्ञायकभाव, अनंत शक्तिका पीड प्रभु, जैसे द्रव्यकी प्रतीति और पर्यायमें द्रव्यका ज्ञान हुआ, यह ज्ञान पीछे हट जाये ऐसी तो द्रव्य, गुणमें कोई शक्ति नहीं. द्रव्यदृष्टिकी प्रतीति छोडे तो हट जाये. (परंतु) द्रव्यमें (ऐसा) कोई कारण नहीं है. समझमें आया ? आहाहा !

यह तो कुंथी है कुंथी ! ताका भोवनेकी कुंथी यह है. मैं तो भगवान आत्मा ! अभावअभाव शक्तिसे—गुणसे भरा हुआ हूं. आहाहा ! अनंत गुणकी, अनंत अनंत विकृत अवस्था हो, विपरीत (परिणामन) हो (ऐसे) २१ (गुण) निकाले हैं. अंदरमें विचार करते-करते (निकाला है). ओक बार बाहरगांव (गये थे), तो बहुत ही गुणका विपरीत (परिणामन) होगा परंतु २१ भ्यासमें आता है. विपरीतका परिणामन धर्मीको द्रव्यदृष्टिवंतको अभाव (स्वरूप) है. आहाहा ! समझमें आया ?

निर्मल परिणतिका सदृभाव है, मलिन परिणतिका अभाव है. यह अस्ति-नास्ति हुई. निर्मल परिणतिका भावभाव रहेगा, वह भावभाव शक्तिके कारण (रहेगा). मलिन परिणतिका अभाव है, वह अभावअभाव (रूप) रहेगा, वह अभावअभाव (शक्तिके) कारण रहेगा. आहाहा ! तेरी संपदा तो देख ! आहाहा ! भाई ! तुने तेरी थीजको देखा नहीं, आहाहा !

ज्ञायक स्वभावमें अभावअभाव नामकी शक्ति (है) तो अनंत गुणमें अभावअभावपना है. अनंत गुणमें अभावअभावका रूप है. कोई गुण विपरीत रूप परिणामन नहीं करता और कोई गुण विपरीतरूप परिणामन करेगा, ऐसा वस्तुमें नहीं है. आहाहा ! समझमें आया ? यह तो अंतरकी थीज है, भगवान ! यह कोई बाह्यसे मिले (ऐसा नहीं है). पवित्रता अंदरमें पडी है. इस पवित्रताके परिणामनमें अपवित्रताका तो अभावरूप परिणामन

है. आहाहा ! सम्यक्दृष्टि हुआ तबसे (ऐसा परिणामन है). द्रव्यमें तो (पवित्रता) थी, गुणमें तो (पवित्रता) थी परंतु दृष्टि हुआ बिना (पवित्रता कैसी) ? पर्यायमें दृष्टि है तो राग (रूप), विकाररूप और संसाररूप परिणामन करता है. यह कोई द्रव्य, गुणमें नहीं है, पर्यायमें (इस प्रकार) परिणामन करता है, समझमें आया ? आहाहा !

यहां तो अभी तकरार उठाते हैं कि, कर्मसे विकार होता है. अरे भगवान ! बादमें कहेंगे कि, विकार भी पर्यायमें षट्कारकसे परिणामन करता है, यह अपनेसे है. परंतु उसका रहितपना आत्मामें है. समझमें आया ? उट (शक्तिके बाद) उट (शक्तिमें यह है). है ? “(कर्ता, कर्म आदि) कारकोंके अनुसार...” कर्मके अनुसार नहीं. पर्यायमें भी विकृत अवस्था होती है वह कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान (आदि) छ कारकोंसे होती है, कर्मसे नहीं. यह भी कर्ता आदि षट्कारकका परिणामन है, उसका स्वभावमें अभाव है. धर्मीको (इसका) अभाव है, ऐसा कहते हैं, आहाहा ! ऐसी बात (है) ! ओहोहो ! ऐसी बात कहीं नहीं है, आहाहा !

भाई ! तू कौन है ? क्या है ? प्रभु ! तेरेमें ऐसी शक्ति पडी है न नाथ ! तेरी यीजको संभालनेसे तेरी यीजमें एक अभावअभाव नामका गुण पडा है. ऐसा गुण है. इस गुणका कार्य विकाररूप नहीं परिणामन करना और ऐसा नहीं परिणामनेका (कार्य) कायम रहना (यह है). आहाहा ! ऐसी बात है. (लोगोंको) लुभा लगे (परंतु) बापू ! यह तो वीतरागी वार्ता है. वीतरागी कथा है.

धर्मीको उपदेशका विकल्प आता है तो भी यहां तो कहते हैं कि, उसका तो विकल्पका अभावरूप परिणामन है, आहाहा !

श्रोता : विकल्पके कालमें भी (ऐसा परिणामन है) ?

पूज्य गुरुदेवश्री : (हां), विकल्पके कालमें भी (ऐसा परिणामन है). समझमें आया ? आहाहा !

“नहीं भवते...” (अर्थात्) नहीं प्रवर्तमान. वर्तमानमें पर्यायमें विकारका प्रवर्तन नहीं है. पहले अभाव लिया. है ? “नहीं भवते हुआ...” अर्थात् नहि प्रवर्तमान. “... अप्रवर्तमान पर्यायके..” (ऐसे लिया है). अपनी यीज क्या है ? उसके तान बिना, उसने रागमें भेला. आहाहा !

यहां तो कहते हैं कि, प्रभु ! अकेबार तेरी दृष्टि द्रव्य पर हो और द्रव्यका स्वीकार हो तो रागरूप परिणामन करना, ऐसी तेरी कोई शक्ति द्रव्यमें, गुणमें (और) पर्यायमें भी नहीं. क्योंकि अभावअभाव शक्ति द्रव्यमें, गुणमें और पर्यायमें व्याप्त हुई है. द्रव्य, गुण, पर्यायमें तीनोंमें व्याप्त है तो पर्यायमें भी अभावअभावपना (है), आहाहा ! गजब काम किया (है), प्रभु ! आहाहा !

अेक हजर वर्ष पडले अमृतयंद्र आचार्य द्विगंबर संत (हुअे). उनकी वाणी तो द्देषिये ! केवलीके केवलज्ञानके क्कभाट ढोल द्दिये हैं. केवलज्ञानीने जो क्कहा उसका क्कभाट ढुल्ला करके बताया कि, भाई ! भगवान् अैसा क्कहते हैं. तेरे भगवान् में भी अैसा है, अैसा क्कहते हैं, आहाहा ! तेरे भगवान् की तुझे ढबर नहीं, प्रभु ! रागकी प्रभुतामें तेरा ढेला ढो गया है. यह तेरा ढेल नहीं. यह तेरे ढ्यालका ढेल नहीं, आहाहा ! तेरे ढ्यालका ढेल तो रागरूप नहीं परिश्रमन करना, यह तेरा ढेल है. रूपयेमें सूज भी नहीं पडती है. (समयसार) उरु (गाथा-जयसेनआचार्यकी टीका और) शक्तिका वर्णन छपकर बाहर आयेगा. छिन्दीमें बाढमें गुजरातीमें ढोनोंमें आयेगा, आहाहा !

(यहां) क्क्या क्कहते हैं ? नहीं प्रवर्तते अैसे विकारका अभाव. वर्तमानमें भी ढर्मीको विकारका अभावरूप प्रवर्तन है. अप्रवर्तन (है, अर्थात्) विकारमें प्रवर्तन है ढी नहीं, आहाहा ! सम्यग्दर्शन और उसका विषय, द्रव्य उसकी शक्तिओंका वर्णन अलौकिक है !! आहाहा !

श्रोता : आपने उद्घाटन किया है.

पूज्य गुरुदेवश्री : उसमें भरा है न ? और जगतके भाग्य ढो उस प्रकारसे भाषा आती है. आहाहा ! कौन ढोले ? कौन करे ? आहाहा ! ढोले वह दूसरा, आत्मा नहीं आहाहा ! भाषामें भी स्वपर क्कहनेकी ताकत है. आत्मामें स्वपर जाननेकी ताकत है. स्वपर करनेकी ताकत – परको (करनेकी ताकत) नहीं. स्वमें भी क्क्या करता है ? स्व तो है. भाषामें अपने उपादानसे स्वतंत्र स्व-पर क्कहनेकी ताकत है, आहाहा ! यहां क्कहते हैं कि, भाषा अैसा क्कहती है कि, तेरे भावमें निश्चयसे तो संसार-उदयभाव जो है उसका तो तेरी पर्यायमें अभाव है, भगवान् ! तेरी यीज-पर्याय अैसी ढी है. द्रव्य अैसा है, गुण अैसा है और पर्याय अैसी है. अैसे द्रव्य, गुण, पर्याय की प्रतीति यथार्थ ढो, उसका नाम सम्यग्दर्शन है. समजमें आया ? यह ज्ञानप्रधान क्कथनमें – सर्वविशुद्ध (अधिकारमें आया है). ज्ञेय और ज्ञायककी यथार्थ प्रतीति (उसका नाम सम्यग्दर्शन है), अैसा आया है. दर्शनप्रधान (क्कथनमें) अकेले त्मूतार्थकी श्रद्धा (आती है). समजमें आया ? (श्रद्धाप्रधान क्कथनमें) त्रिकाल ज्ञायककी श्रद्धा (आती है और) ज्ञानप्रधान (क्कथनमें) ज्ञेय और ज्ञायक ढोनोंकी यथार्थ प्रतीति (आती है), आहाहा !

द्रव्यकी दृष्टिवंतको अपनी पर्यायमें विकारके अभावरूप परिश्रमन है, तो वहां विकार है उसका परज्ञेय के रूपमें ज्ञान करते हैं और ज्ञान करते हैं ढस ज्ञानकी पर्यायमें विद्यमानता है. परंतु विकारकी पर्यायका तो ज्ञानकी पर्यायमें अभाव है, आहाहा ! अैसे प्रत्येक गुणमें लेना. समजमें आया ?

वीर्य गुण पडले क्कहा न ? वीर्यांतरायका नाश हुआ तो वीर्य प्रगट हुआ, यहां अैसा नहीं है. उसमें वीर्य शक्ति है उस द्रव्यका स्वीकार हुआ तो वीर्य शक्तिका निर्मल परिश्रमन ढोता है. अंतराय (कर्म) गया तो निर्मल (परिश्रमन) ढोता है, अैसा नहीं है. अपने गुणके

कारण निर्मल (परिष्कृत) होता है, ऐसा स्वभाव है. समझमें आया ? आहाहा !

क्या कहा ? कि वीर्य नामका गुणका है, उसमें भी अभावअभाव नामकी (शक्तिका) रूप है. वीर्य स्वरूपकी रचना करता है. अपनी पर्यायमें भी शक्ति तो है न ? वीर्य जो गुण है वह गुण तो गुणमें है. परंतु वीर्यका रूप अनंत गुणमें है. वीर्य शक्तिका रूप अनंत गुणमें (है), ऐसी शक्ति है, आहाहा ! अनंत शक्तिका जो वीर्य है तो इस वीर्यके परिष्कृतमें विकारके अभावरूप परिष्कृत है, आहाहा ! यह अभावरूप परिष्कृत है (उसमें) स्वरूपकी रचनाका भावभाव है और परकी रचनाका अभावअभाव है, आहाहा !

यहां तो (लोग) कहते हैं कि, परद्रव्यकी किया करता है. छन्दौरमें एक बार ऐसी बात यही थी. ५० पंडित लोग एकट्ठे होकर रात्रिको बोले थे कि, 'पर द्रव्यका कर्ता न माने तो वह द्विगंबर जैन नहीं' अरे प्रभु ! क्या करता है ? भाई ! भगवान तू ज्ञानस्वरूप है न ! तेरेमें तो रागका अभावस्वभाव है न ! तो रागका कर्तापना ही तेरे स्वभावमें नहीं है न ! तेरी पर्यायमें भी रागका कर्ता स्वभाव नहीं. द्रव्य, गुणकी तो बात ही कहां है ? वे लोग तो ऐसा कहते हैं कि, पर द्रव्यका कर्ता न माने तो द्विगंबर नहीं. उन लोगोंको यहां के द्विगंबरको उडाने थे न ! अरे प्रभु ! क्या करता है, भाई ? आहाहा ! पर द्रव्यकी पर्याय कर (सकता) नहीं, आहाहा ! अरे... प्रभु ! द्विगंबर किसे कहें ? अरे बापू ! भगवान ! आत्माका विकल्प रहित स्वरूप है, यह द्विगंबर है. दृष्टिमें द्विगंबरपना कब हुआ ? कि विकल्पका अभावरूप परिष्कृत हुआ और स्वभावका शुद्धरूप परिष्कृत हुआ, तब द्विगंबर समकित्ती हुआ और द्विगंबर मुनिओंको (अंदरमें) तीन कषायका अभाव और बाहरमें कपडेका अभाव (होता है), आहाहा !

श्रोता : कपडा तो पर द्रव्य है, (वह) रहे तो भी क्या हुआ ?

पूज्य गुरुदेवश्री : पर द्रव्य (है), उसकी कौन ना कहता है ? पर द्रव्यका स्वभावमें अभाव है. पर द्रव्य नुकसान करता नहीं परंतु उसकी ममता (नुकसान करती है). मैं कपडा रभूं, ऐसी ममता नुकसान करनेवाली है, आहाहा !

यहां एक श्रेतांभरके साधु आये थे. साडे चार मछिने यहां रहे होंगे, उमेशा सुभलको और दोपहरको सुनते थे. (अकबार) अंदर आकर कहा, 'स्वामीजी ! मार्ग तो तुम कहते हो यह सत्य है. हमे क्या करना ?' (हमने कहा), हम तो किसीको कहते नहीं कि तुम संप्रदाय छोडो. (उनको मनमें ऐसा था कि) आप कडो तो हम संप्रदाय छोड दे. बादमें हमारे जाने-पीनेकी जिम्मेदारी आपकी. समझमें आया ? यहां बापू ! कुछ नहीं है. अपने कारण से यहां रहते है, किसीके कारणसे कोई यहां नहीं है. तो उन्होंने कहा, 'बात तो सच्ची है' हमने कहा, देओ ! कपडे नडते नहीं, (लेकिन) कपडेका राग है, यह नुकसान करता है. और कपडेका राग जब तक है, तब तक मुनिपना नहीं होता. समझमें आया ? तब यहां

तो कबूल किया. (हमें) क्या करना ? ऐसा पूछा. तो (हमने कहा), भाई ! हम तो किसीको कहते नहीं कि क्या करना ? क्या नहीं करना ? हम तो मार्ग कहते हैं. हमारे पर तो कोई जवाबदारी नहीं है, समझमें आया ?

अकबार श्वेतांबरके दूसरे यार साधु आये थे. उन्होंने कहा, 'आप कपडेका निषेध करते हो, पर द्रव्य नुकसान करता है क्या ?' (हमने कहा), 'हमने कभी कहा ही नहीं कि कपडा नुकसान करता है' हम तो किसीको यहाँ रખते नहीं. जिसकी जवाबदारी हो, वह रहो. आओ या नहीं आओ, हम तो किसीको कहते नहीं. हम तो तत्त्वकी बात करते हैं. ठीक पडे (उसे) जये. जयो तो जयो. अंतमें ऐसा बोले, 'अक ओर निर्विकल्पकी बात करते हैं, अक ओर ऐसा कहते हैं कि, कपडा हो तो मुनिपना नहीं', परंतु कपडेके कारण मुनिपना नहीं, उसका कहां प्रश्न है ? कपडेका विकल्प है तब कपडेका संयोग होता है. और कपडेके संयोगमें धर्म मानना और यारित्र मानना, उसमें नौ तत्त्वकी भूल है. आहाहा ! समझमें आया ? क्योंकि कपडेका राग है. वहां श्रवका घतना आश्रय नहीं हुआ कि, तीन कषायके अभावमें श्रवका तीव्र आश्रय लेना याहिये. आश्रय हुआ नहीं और रागका भाव है तो मुनिपनामें राग होता नहीं तो घतना आस्रव होता नहीं. मुनिपनाकी दृशामें कपडेके रागका आस्रव होता ही नहीं. यह आस्रवकी भूल है. श्रवके आश्रयकी भूल है. रागकी भूल और संवर, निर्जराकी भूल जहां कपडे आदिका राग है वहां मुनिपना (योग्य) ऐसी संवर, निर्जरा होती नहीं.

(लोग) कहते हैं न ? भाई ! कुंदकुंद आचार्यने घतना क्यों लिखा ? कि कपडेका टुकडा रभे और मुनिपना माने तो 'निगोद गच्छ' सूत्रपाहुडमें आता है. 'निगोद गच्छ' घतना क्यों कहते हैं ? भापू ! उसमें नौ तत्त्वकी भूल है, इसलिये कहते हैं, आहाहा ! समझमें आया ?

यहां तो छोड़े गुणस्थानमें विकल्प तो है नहीं. रागके अभावरूप परिशमन है. पंथ मडाव्रतका विकल्प है, उसका भी अभावरूप परिशमन है. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसा अभावअभावरूप परिशमन कायम रहेगा, आहाहा ! अभावअभाव शक्तिके कारण (कायम रहेगा). गुण अपने गुणके कारण है. आहाहा ! यह गुण ऐसा कार्य करता है कि, विकारके अभावरूप परिशमन वर्तमानमें (है) और ऐसा का ऐसा (परिशमन) लविष्यमें रहेगा. यह (अभावअभाव) गुणका कार्य है. आहाहा ! ऐसी बात है ! क्या करें ? प्रभु ! आहाहा ! लगभग ५० मिनीट तो हो गई. अक-अक गुणमें उतारने जाये तो बहुत समय लगे.

दूसरे प्रकारसे कहें तो अभावअभाव शक्ति जो है न ? उसमें दो उपादान (है). अक ध्रुव उपादान और अक क्षणिक उपादान. कायम यीज - शक्ति पडी है, यह ध्रुव उपादान है और वर्तमानमें जो क्षणिक राग रहित परिशमन है, यह क्षणिक उपादान है. पर्यायमें क्षणिक उपादान (है और) ध्रुवमें नित्य उपादान (है). यह शक्तिका दो रूप है, आहाहा !

સમજમેં આયા ? યહ શક્તિ અનંત ગુણમેં વ્યાપ્ત હુઈ હૈ. એક શક્તિ અનંત ગુણમેં નિમિત્ત હૈ, આહાહા ! ત્રિકાલી શક્તિ જો હૈ, યહ પારિણામિકભાવસ્વરૂપ હૈ. પરંતુ રાગરૂપ નહીં પરિણમન કરના, એસી જો નિર્મલ પર્યાય હૈ, યહ ઉપશમ, ક્ષયોપશમ, ક્ષાયિકભાવ (સ્વરૂપ) હૈ. યહાં ઉદયભાવકો તો લિયા હી નહીં. ઉસકા ઉદયભાવસે અભાવરૂપ પરિણમન હૈ. ઉસકા નામ અભાવઅભાવ શક્તિ કહનેમેં આતા હૈ. ઉસકા નામ દ્રવ્ય કહનેમેં આતા હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

અરે ! ચીજકી ખબર નહીં. વસ્તુકી શક્તિ-ગુણકી તાકત કિતની હૈ ! (ઉસકી ખબર નહીં). ઉસમેં અભાવઅભાવ ગુણકી ઇતની તાકત હૈ કિ, રાગ (વ્યવહાર) રત્નત્રયરૂપ નહીં પરિણમન કરના, એસી એક તાકત હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ? યહ સબ કહાં સુના હૈ ? શેત્રુંજયકી યાત્રા કર લે તો હો ગયા કલ્યાણ ! (એસા હી અભી તક સુના હૈ). દૂસરે કામમેં-પાપમેં રુક ગયા. થોડા યહાં કુછ કરને જાયે તો (માનો) હો ગયા ધર્મ ! જાઓ ! અરે ભાઈ ! પરકી યાત્રામેં તો રાગ હૈ. (અભી) આયા નહીં ? અભાવઅભાવ કહા ન ? યાત્રાકે રાગકા તો સ્વરૂપમેં - પર્યાયમેં અભાવઅભાવરૂપ પરિણમન હૈ. સમજમેં આયા ?

પર્યાયમેં જો રાગકા અભાવઅભાવરૂપ પરિણતિ હુઈ યહ પરિણતિ ઉપશમ, ક્ષયોપશમ (ઔર) ક્ષાયિકભાવરૂપસે હૈ. ઉપશમ તો અલ્પ કાલ રહતા હૈ; બાકી વાસ્તવમેં તો ક્ષયોપશમ ઔર ક્ષાયિકભાવરૂપ પરિણતિ હૈ. ઔર જબ અંતરમેં પર્યાય ચલી જાતી હૈ, તબ પારિણામિકભાવરૂપ હો જાતી હૈ. આહાહા ! ક્યોંકિ વર્તમાન તો એક સમયકી અવસ્થા હૈ. એક સમયકી અવસ્થા વ્યય હો જાતી હૈ. યહ તો ભાવઅભાવમેં આ ગયા. (વર્તમાન) ભાવકા અભાવ હો જાતા હૈ. અભાવ હો જાતા હૈ પરંતુ પર્યાય જાતી તો અંદર હૈ. જલકા તરંગ જલમેં ડુબત હૈ. વૈસે અપની પર્યાયકા વ્યય હોકર અંદરમેં જાતી હૈ. અંદરમેં ગયી તો પારિણામિકભાવ હો ગયી. બાહરમેં થી તો ક્ષયોપશમ ઔર ક્ષાયિકભાવરૂપ મુખ્ય થી. કહો સમજમેં આયા ? બહુત લિયા હૈ. જન્મક્ષણ હૈ વહી નાશ ક્ષણ હૈ. અભાવઅભાવ શક્તિકી પર્યાય જો ઉત્પન્ન હુઈ, વહ જન્મક્ષણ થા, વહ ઉત્પત્તિકા કાલ થા. સમજમેં આયા ? અપના સ્વકાલ એસા થા. અભાવઅભાવ શક્તિકા પરિણમન રાગ બિના હોના, યહ જન્મક્ષણ હૈ. ઔર જો જન્મક્ષણ હૈ વહી વ્યયકા ક્ષણ હૈ. ઔર ઉસી સમયમેં નિર્મલ પર્યાયકી કાલ લબ્ધિ થી. તબ (વહ પર્યાય) આયી હૈ. આહાહા ! ઔર વહી પૂર્વ ઔર પશ્ચિમ જો અવસર હૈ, વહ અપને અવસરમેં રાગરૂપ પરિણમન હુઆ, યહ અપને અવસરમેં હુઆ હૈ. યહ કમબદ્ધમેં આતા હૈ, આહાહા ! કમબદ્ધ હૈ. શક્તિકા ભેદ ભી દૃષ્ટિકા વિષય નહીં. શક્તિ ઔર શક્તિવાન, એસા ભેદ દૃષ્ટિકા (વિષય) નહીં. અભાવઅભાવ શક્તિ ઔર અભાવઅભાવ શક્તિકા ધારણ કરનેવાલા દ્રવ્ય, એસા (ભેદ) દૃષ્ટિકા વિષય નહીં. દૃષ્ટિકા વિષય તો અભેદ હૈ, આહાહા ! અભેદ દૃષ્ટિ હોનેસે પર્યાયમેં અભાવઅભાવ નામકી નિર્મલ પરિણતિ, વિકાર રહિત હોતી હૈ

ઔર યહ અકાર્યકારણમે હૈ, આહાહા ! યહ પરિણતિ રાગકા કાર્ય નહીં ઔર અભાવઅભાવકી પરિણતિ રાગકા કારણ નહીં, આહાહા !

યહાં તો વિશેષ લિયા થા કિ, કમવર્તી જ્ઞાન પર્યાય કમસે અભાવઅભાવરૂપ હુઈ. વહ પરકો જાનતી હૈ, ઐસા (કહના) ભી વ્યવહાર હૈ. વહ રાગકો જાનતી હૈ, ઐસા કહના વહ ભી વ્યવહાર હૈ. અભાવઅભાવ (શક્તિકે) કારણ વ્યવહાર-રાગ ઉસમે તો હૈ નહીં પરંતુ રાગકો જાનના કહના, યહ વ્યવહાર હૈ. વાસ્તવમે તો અપની પર્યાયકો જાનતે હૈં. રાગ સંબંધી જ્ઞાન ઔર જ્ઞાનકી પર્યાય જ્ઞાન, યહ અપનેકો જાનતી હૈ.

જાનનેવાલા જાનનેવાલેકા હૈ, ઉસ સ્વામી અંશસે ભી ક્યા સાધ્ય હૈ ? ક્યા કહતે હૈં ? 'મેં જાનનેવાલા જાનનેવાલેકા હું. રાગકા જાનનેવાલા મેં હું' – ઐસે ભેદસે તુજે ક્યા સાધ્ય હૈ ? આહાહા ! રાગકા જાનના તો હૈ નહીં પરંતુ મેં જાનનેવાલા જાનનેવાલેકા હું-જાનનેવાલેકો મેં જાનનેવાલા હું, તુજે ઐસે ભેદસે ક્યા કામ હૈ ? ઉસમે ક્યા સાધ્ય (હોતા) હૈ ? આહાહા ! શક્તિકે પિંડ પર દૃષ્ટિ દેનેસે સબ કાર્ય હો જાતા હૈ. ભેદ પર દૃષ્ટિ દેનેસે તો દૃષ્ટિ સમ્યક્ નહીં હોતી, આહાહા ! વિશેષ કહુંગે...



ભગવાન જેના હૃદયમાં બિરાજે છે તેનું ચૈતન્ય શરીર રાગ-દ્વેષરૂપ કાટ વગરનું થઈ જાય છે. (પરમાગમસાર-૩૨૫)

प्रवचन नं. ३४

शक्ति-३८, ४० ता. १३-०८-१९७७

कारकानुगतक्रियानिष्क्रान्तभवनमात्रमयी भावशक्तिः ॥३९॥
कारकानुगतभवत्तारूपभावमयी क्रियाशक्तिः ॥४०॥

समयसार शक्तिका अधिकार (यत्नता है). उट वीं अभावअभाव (शक्ति) हो गयी न ? आडाडा ! जिसकी दृष्टि द्रव्य पर है, उसके द्रव्यमें अभावअभाव नामका अेक गुण है, आडाडा ! उस कारणसे वर्तमानमें विकारका अभाव है—अभावरूप परिणामन (है). ऐसा अभावरूप (परिणामन) भविष्यमें भी रहेगा. ऐसा अभावअभाव नामका गुणका कार्य है. कल अेक घंटा यला न ? समजमें आया ? अब आज तो उट (शक्ति) लेनी है.

यहां तो बात ऐसी है कि, जिसको द्रव्य—वस्तु जो ज्ञायकभाव, इसकी ओर दृष्टि है उसमें अनंत शक्तियां पडी हैं, उसकी भी प्रतीति है; तो ऐसे धर्मी जवको अथवा सम्यक्दृष्टिको अर्थात् द्रव्यस्वभावकी प्रतीतिवालेको, “(कर्ता, कर्म आदि)...” क्या कहते हैं ? देजो ! कि धर्मीको अेक समयकी पर्यायमें राग आदि, विकल्प आदिका कर्तापना होता है, पर्यायमें कर्म—कार्य भी होता है. पर्यायमें कर्ता—कर्म (आदि) षट्कारक (होते हैं), आडाडा ! अेक समयकी पर्यायमें शुभ-अशुभरागकी पर्याय कर्ता है, पर्याय कर्म है, पर्याय करण—साधन है, पर्यायने विकार करके अपनेमें रभा, पर्यायसे पर्याय हुं और पर्यायके आधारसे पर्याय हुं. समजमें आया ? थोडी सूक्ष्म बात है.

अेक समयकी पर्यायमें विकृत अवस्थाका षट्कारकरूप परिणामन है. यहां कहते हैं कि, “कारकोंके अनुसार जो किया...” आडाडा ! पर्यायमें षट्कारकके अनुसार विकार (अर्थात्) पुण्य, पाप, दया, दान, व्रत आदिका विकल्प उसकी षट्कारकरूप परिणामनरूप किया होती है. आडाडा ! है ? “... उससे रहित..” द्रव्यदृष्टिवंतको, समकितिको, ज्ञानीको, धर्मीको पर्यायमें षट्कारकरूप विकृत अवस्था है. इसमें तो छतना भी सिद्ध किया कि, पर्यायमें षट्कारकसे विकृति है, यह कर्मसे नहीं और अपने गुणसे नहीं, जो शक्ति है उससे नहीं. शक्तिमें भावशक्ति

तो ऐसी है कि, पर्यायमें षट्कारक रूप विकृत अवस्था स्वतंत्र-स्वयं होती है, उससे रहित भावशक्तिके कारणसे, उससे रहित परिणामना, यह उसका स्वभाव है, आहाहा ! समझमें आया ? ओहोहो ! शक्तिका वर्णन गजब किया है ! निधान जोल दिया है निधान ! संतोंने जगतको (निहाल कर दिया है). प्रभु ! तेरी यीज तो अखंड वस्तु है न ? आहाहा ! इस अखंड पर दृष्टि देनेसे तेरी पर्यायमें षट्कारककी विकृत अवस्था हो, परंतु उससे रहितपना तेरा स्वभाव है, आहाहा ! समझमें आया ?

दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा ऐसा विकल्प तो ज्ञानीको भी होता है; षट्कारक यानी कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण उससे पर्यायमें (परिणामन) होता है. परंतु उसकी भाव-स्वभावकी शक्ति और गुण ऐसा है कि, उससे रहित परिणामन करना, यह भाव शक्तिका कार्य है. समझमें आया ? आहाहा !

द्रव्य जो ज्ञायक, चैतन्य भगवान्, अनंत आनंदकंड प्रभु ! है, उसकी पर्यायमें षट्कारकसे विकृत अवस्था होती है. फिर भी ज्ञानीको-धर्मीको उस षट्कारककी क्रिया जो विकृत अवस्था है, उससे रहित अपनी दशा है, ऐसा जानते हैं. सूक्ष्म बातें हैं, भापू ! आहाहा !

इसमें दो बात सिद्ध हुई. एक तो पर्यायमें पर्याय दृष्टिवंतको षट्कारकका विकृत (भाव) होता है और द्रव्यदृष्टिवंतको भी पर्यायमें विकृत स्वभावकी पर्याय षट्कारकसे होती है. फिर भी भाव शक्तिके कारण उसका गुण ऐसा है, भाव (शक्तिका) गुण ऐसा है कि, विकारसे रहित परिणामन करना, यह उसका स्वभाव है, आहाहा ! ऐसा है. पर्यायदृष्टि छूट गई न ? आहाहा ! द्रव्यदृष्टि हुई (अर्थात्) ज्ञायकभावका भान हुआ, ज्ञायक भावमें तो भावशक्ति नामकी एक शक्ति-गुण भी है. यह सब शक्ति एक साथमें है तो कमसे वर्णन चलता है. आहा ! ऐसा जैन दर्शन (है) ! आहाहा !

(यहां) कहते हैं कि, पर्यायमें-एक समयकी अवस्थामें राग, दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजाका (भाव है, उसका) पर्याय कर्ता, पर्याय कार्य (है). (यह सब पर्यायमें है) द्रव्य-गुणमें नहीं. परमें नहीं (और) परके कारण नहीं. समझमें आया ? विकृत अवस्था जो (होती) है, उसमें आत्माका गुण ऐसा है कि, विकृत अवस्था रहित परिणामन करना, ऐसा गुण है. विकृत रूपसे परिणामन करना ऐसा उसका गुण नहीं है. आहाहा ! सूक्ष्म बात है, भाई ! आहाहा !

चैतन्य ज्ञायकस्वरूप भगवान् ! पूर्ण अनंत शक्तिका संग्रहालय ! संग्रहका स्थान भगवान् ! उसमें भाव नामका एक गुण है. जिसने गुणीकी दृष्टि की, उसको इस गुणके कारण विकृत भावसे अभाव रूप परिणामन होता है. यह (भावशक्तिका) कार्य है. यह विकृत अवस्था परज्ञेयमें जाती है. क्या समझमें आया ? यह तो सूक्ष्म अधिकार है.

बडी बात है, भगवान् ! सुनो तो सही, प्रभु ! आहाहा ! तेरी प्रभुताईमें भाव

नामकी प्रभुताई पडी है. प्रभुत्व शक्ति आ गयी न ? तो प्रभुत्व शक्तिमें भी भाव नामका रूप है. भावशक्ति है यह भिन्न है. प्रभुत्वमें (भावशक्तिका) रूप है. पर्यायमें जो पामरतारूपसे षट्कारकृपसे परिणामता है, उससे रहित होना, यह तेरा स्वभाव है, समझमें आया ?

जिसकी पर्यायदृष्टि है, उसको तो षट्कारकका परिणामन उसके अस्तित्वमें है और वह विकृत है, ऐसा उसने माना है. परंतु जिसकी द्रव्यदृष्टि है, धर्मीकी-सम्यक्दृष्टिकी द्रव्य सामान्य स्वरूप जो त्रिकाल (स्वरूप उस पर दृष्टि है). उसका अर्थ (यह है कि, उसकी) वर्तमान पर्यायमें विकृत अवस्था होने पर भी उस समयमें जो निर्विकल्प अवस्था (है), वह द्रव्यकी ओर जुकी है. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसी बात है ! यहां तो धर्म कैसे होता है ? इसकी बात है. धर्मीको धर्म कैसे होता है ? कि, धर्मी (माने) द्रव्य और उसका धर्म (माने) वर्तमान पर्याय. यह वर्तमान धर्म नाम वीतरागी पर्याय कैसे होती है ? (इसकी बात चलती है). सूक्ष्म बात है, भगवान ! अरेरे...! यहां तो अभी शुभभावसे धर्म-मोक्षमार्ग मानते हैं. अरे प्रभु ! यहां तो पर्यायमें शुभभाव, विकृत अवस्था षट्कारकसे होती है. उसकी अभी कबूलात नहीं (और विकृत अवस्था) परसे होती है, (ऐसी) कबूलात (है). पर्यायमें विकृत (अवस्था) अपनेसे होती है. उसमें भी भूल. और यह विकृत अवस्था है तो द्रव्यका भाव गुण ऐसा है कि, विकृत रहित परिणामना, यह गुणका गुण है. आहाहा ! समझमें आया ? यह तो बहुत ध्यान रभे तो पकड़में आये ऐसी बात है, बापू ! यैतन्य रत्नाकर भगवान परमात्म स्वरूप ! जैसे परमात्मस्वरूप पर जिसकी दृष्टि दुर्घ, उसको पर्यायमें विकृत अवस्था होने पर भी उससे रहित परिणामना (यह) उसका स्वभाव है.

यह तो ऐसा कहा कि, पर्यायमें रागादि व्यवहार हो, व्यवहार रत्नत्रय, देव, गुरु, शास्त्रकी श्रद्धाका विकल्प, नौ तत्त्वके भेदकी श्रद्धाका विकल्प, शास्त्रका पढना, परकी ओरका लक्षवाला विकल्प और पंथ महाव्रतका विकल्प (हो), तीनों अेक समयमें विकृत अवस्थाएँ पर्यायमें होता हो, फिर भी आत्मामें गुण ऐसा है कि, जिसने गुणीकी (द्रव्यकी) दृष्टि की (है), उसका गुण ऐसा है कि, विकाररूप (नहीं परिणामना). आया ? क्या आया ? “कारकोंके अनुसार जो किया...” (अर्थात्) वर्तमान विकृत अवस्था. “...उससे रहित...” जो किया की (अर्थात्) दया, दान, व्रत, भक्ति आदि पर्यायकी विकृत अवस्था (यह) किया (है), “... उससे रहित भवनमात्रमयी..” (अर्थात्) उससे रहित होने रूप. रागसे सहित होनेरूप नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बातें हैं ! ओहोहो ! संतोंने थोड़े शब्दोंमें रामबाण बातें कही हैं ! आतमराम अपने स्वरूपमें रभे. (यहां) कहते हैं कि, (आतमराम) विकृत अवस्थासे रहित रभते हैं. विकृत अवस्थामें नहीं खेलता है, ऐसा कहते हैं. आहाहा ! परका तो उसमें अभाव है. परमें तो अपनी पर्याय घुसती नहीं परंतु पर्यायमें जो विकृत अवस्था है, यह द्रव्य-गुणमें घुसती नहीं, ऐसा कहते हैं. आहाहा ! समझमें आया ?

हमें यह सब (बाहरमें अनुकूलता) है, ऐसा मानकर बैठे हैं और जिंदगी यही जाती है. यात्रा करें, इसलिये मानो जैसे हो गया धर्म ! शत्रुंजय शाश्वत तीर्थ है, ऐसा कोई कल पूछता था न ? अरे भगवान ! शत्रुंजय तो यह भगवान आत्मा है. विपरीत राग यह शत्रु है, अनिष्ट है, इसकी परिणतिसे रहित होना, यह आत्माका गुण है, आडाडा ! समझमें आया ? आजकी बात समझनेकी थीज है.

यहां तो अंदर परमात्मा विद्वानंदका फोटो लेना है. पर्यायमें द्रव्यदृष्टि होनेसे परमात्मका फोटो पर्यायमें आता है. इस परमात्माकी पर्यायमें विकृत अवस्थाका अभावरूप परिणामन करना, यह भाव नामके गुणका कार्य (है). यह द्रव्यका स्वभाव है. आडाडा ! बहुत कठिन काम !

यहां तो अभी व्यवहारसे निश्चय होता है, व्रत, तप, भक्ति, पूजाके शुभभाव भूष करे, तो निश्चय होता है, (ऐसा मानते हैं). अरे भगवान ! यहां तो व्यवहारकी क्रिया पर्यायमें हो परंतु ज्ञानीका परिणामन तो उससे रहित परिणामन है. विकार परिणाम यह तो पर ज्ञेयमें जाता है, भाई ! आडाडा ! (विकार परिणाम) है सही, परंतु उस विकृत अवस्थाका ज्ञान होता है और विकृत (अवस्थासे) रहित भवन होना, यह उसका गुण है. विकृत सहित होना, ऐसा आत्मामें कोई गुण नहीं है, आडाडा ! समझमें आया ? ऐसी बात है. क्या कडा ?

आत्मामें एक गुण ऐसा है, गुण ऐसा है, – गुण कडो कि शक्ति कडो (दोनों अकार्य है), – कि, जिसने आत्म द्रव्यकी दृष्टि की तो आत्मामें ऐसा एक गुण है कि, पर्यायमें विकृत अवस्था होने पर भी उससे रहित परिणामना, यह भावश्रुतका कार्य है. विकार (सहित) परिणामना, यह आत्माका गुण नहीं है. आडाडा ! समझमें आया ? क्या कडा ?

“कारकोंके अनुसार..” छ कारक आया. १३ की सालमें एक बडे विद्वानके साथ पर्यायकी यर्था हुई थी. पंथास्तिकायकी दर गाथा (का आधार दिया था). २० वर्ष हुआ. फागुन मास था. वहां कडा था, पर्यायमें विकृत अवस्था स्वतंत्र परके कारककी अपेक्षा बिना, विकृत होती है. दया, दान, व्रत, भक्ति, काम, क्रोधका भाव पर्यायमें षट्कारकसे पर निमित्तके कारककी अपेक्षा बिना अपनेमें होती है. यह बात तो सिद्ध रही. पर्यायमें तो सिद्ध रही, भाई ! अब यहां तो द्रव्यदृष्टि जहां हुई (तो) पर्यायमें षट्कारककी विकृत अवस्था तो सिद्ध रही. परंतु वह ज्ञेयमें गया. द्रव्यस्वभावका जहां भान हुआ तो भावशक्तिका ऐसा गुण है कि, विकृत अवस्थासे रहित परिणामन करना. है ? “...उससे रहित भवनमात्रमयी...” भवन (माने) पर्यायमें परिणामन होना, ऐसा कहते हैं. राग जो व्यवहार रत्नत्रयका विकल्प है, उससे रहित होना, यह उसका गुण है. राग सहित होना ऐसा आत्मामें कोई गुण है ही नहीं. आडाडा ! अरेरे...! प्रभुका जैन धर्म, अलौकिक पंथ है, बापू ! आडाडा !

भगवान गुणी जो इन गुणोंको धरनेवाला, गुणका आश्रय द्रव्य है. गुणका आश्रय गुण नहीं. भावशक्तिका आश्रय तो द्रव्य है. आहाहा ! भाव (शक्तिका) आश्रय कोई दूसरा गुण है, ऐसा नहीं. जो भाव गुण है, उसका आश्रय तो द्रव्य है, तो जिसने द्रव्यका आश्रय लिया, गुणका (और) द्रव्यके भेदका (आश्रय) भी नहीं, आहाहा ! जिसे द्रव्यका, त्रिकाली ज्ञायकभावका लक्ष हो गया, लक्ष कछो, आश्रय कछो कि सन्भुषता कछो (अंक ही बात है). जैसे सम्यक्दृष्टि ज्वको पर्यायमें विकृत अवस्था होती है, फिर भी उसकी पर्याय पर दृष्टि नहीं. उसकी दृष्टि द्रव्यस्वभाव पर है. इस कारणसे धर्मको विकृत अवस्थासे रहित भवनमात्र—विकृत अवस्थासे रहित भवन, विकृत अवस्थासे रहित होना, विकृत अवस्थासे रहित होना, यह उसका गुण है, आहाहा ! समझमें आता है न ?

सुनो भगवान ! आहाहा ! यहां तो पर्यायमें षट्कारकसे विकृत अवस्था स्वयंसिद्ध, स्वतंत्र निमित्तकी अपेक्षा बिना, अपनेसे होती है. (विकृत अवस्था) हो, परंतु आत्माका अंक गुण ऐसा है कि, उससे रहित होना यह उसका गुण है. आहाहा ! ऐसी बात कहां (सुनने मिले) ? ये सब सेठ लोग पैसेमें घुस गये हैं. पांच-पचीस लाख रुपये हो और द्वा-पांच-दस लाखका ખર્ચ करे (तो मान ले कि) धर्म हो गया ! धूलमें भी धर्म नहीं है, सुन तो सही !

यहां तो पुण्य परिणामका जो विकल्प है, दान आदिका विकल्प है, उस विकल्पकी पर्याय भले हो, परंतु भगवानका स्वभाव विकृत अवस्थासे रहित होना, विकृत अवस्थासे रहित भवन होना, यह उसका गुण है, आहाहा ! गजब बात कही है न !

व्यवहारसे जाना हुआ प्रयोजनवान है, यह बात भी इस तरह मिल जाती है, आहाहा ! शैली तो कोई शैली है ! ११ गाथामें कहा न ? कि, भूतार्थके आश्रयसे सम्यग्दर्शन होता है. त्रिकाल ज्ञायकभाव सत्यार्थके आश्रयसे सम्यग्दर्शन होता है, आहाहा ! यह तो निश्चय हुआ. बादमें उसको व्यवहार है कि नहीं ? तो १२ वीं गाथामें कहा कि, राग आदि होता है, उसको जानना यह व्यवहारनयका विषय है. (मात्र) जानना. राग मेरा है, ऐसा करना यह कोई स्वरूपमें नहीं है, आहाहा ! गजब बात है, प्रभु ! समयसार आहाहा ! केवलज्ञानीका विरह भूला दे ऐसी बात है ! आहाहा !

क्या कहते हैं ? देओ ! इतने शब्दमें सब पडा है ! “कारकोंके अनुसार...” कर्मके अनुसार ऐसा नहीं लिया. क्या कहा ? कर्मके अनुसार ऐसा नहीं लिया. अंक बात तो यह हुई. आहाहा ! प्रभु ! तेरी पर्यायमें षट्कारकके अनुसार विकृत अवस्था होती है, परंतु प्रभु ! तेरा गुण ऐसा है कि, विकृत अवस्था रहित भवन होना, यह तेरा गुण है. आहाहा ! समझमें आया ? ‘थोड़ुं लभ्युं वशुं करीने ज्ञानो’ (यह अंक गुजराती कहावत है). यह ऐसी बात है. ‘थोडा कहा बहुत करके जानना’ अरेरे...! उसने आत्माकी कभी दरकार नहीं की.

यहां तो प्रभु कहते हैं कि, प्रभु ! तेरे स्वभावमें गुण असा है कि, विकृत अवस्थासे रहित होना, भवन होना—यह तेरा गुण है. विकृत (अवस्था) सहित होना, असा कोई तेरेमें (गुण) है ही नहीं. वह तो पर्यायमें भडा किया है. पर्यायमें षट्कारकके परिणामनसे विकृत (भावका विकल्प) भडा किया है. व्यवहार रत्नत्रय भी पर्यायमें भडा किया है. आहाहा ! वह भी कारकके अनुसार (भडा है). परके अनुसार नहीं, समजमें आये उतना समजना, प्रभु ! यह तो अंदरमें भगवान बिराजमान हैं वह कहते हैं. आहाहा ! समजमें आया ? आहाहा ! प्रभु ! तू अकेबार सुन तो सही, नाथ ! तेरी शक्तिमें ऐसी अके प्रभुता है और प्रभुत्व (शक्तिमें) भाव नामका अके रूप असा है कि, तेरी पर्यायमें विकृत अवस्था होने पर भी, उससे रहित भवन होना, यह तेरा स्वभाव है, आहाहा !

श्रोता : प्रतिज्ञाको कैसे निभाना ?

पूज्य गुरुदेवश्री : किसने प्रतिज्ञा की है ? राग करना यह प्रतिज्ञा है ? रागसे रहित होना, यह (वास्तवमें) प्रतिज्ञा है, आहाहा ! पंचमहाव्रतकी प्रतिज्ञा करते हैं (न) ?, असा समजने के लिये पूछते हैं. आहाहा ! निश्चय प्रत्याभ्यान तो यह है कि, ज्ञान-आनंदमें रहे, रागरूप न हो उसका नाम प्रत्याभ्यान है. यह तो (समयसारमें) उठ गाथामें आ गया है, आहाहा ! यारों ओर देखो तो अके धारा बहती है !

तेरी यीज प्रभु ! वीतराग स्वभावसे भरी है न ? नाथ ! और इस स्वभाववानकी जो तुजे दृष्टि हुई तो विकाररूप परिणामन करना, यह तेरा स्वभाव नहीं है, पर्यायका स्वभाव है. तेरा गुण और द्रव्यका (स्वभाव) नहीं, असा कहते हैं. आहाहा ! समजमें आया ? विकाररूप परिणामन करता नहीं. उससे रहित परिणामना (असा स्वभाव है). सहित परिणामना (असा स्वभाव नहीं). आहाहा !

इसका अके गुण असा है, शक्ति ऐसी है. द्रव्यकी अके शक्ति ऐसी है, तो प्रत्येक गुणमें इस शक्तिका रूप है. यारित्र गुणकी विपरीत पर्याय परिणामन करती हो लेकिन यारित्र गुणमें इस भाव नामकी (शक्तिका) रूप है, इस कारणसे विकारसे रहित होना, यह तेरा गुण है. आहाहा ! कभी सुना भी नहीं हो, क्या करे ? जैन नाम धराते हैं. (अके कहता है) हम द्विगंबर हैं, वे कहते हैं, हम श्वेतांबर हैं. आहाहा ! भाई ! तेरी यीज क्या है ? उसको ले न ! द्विगंबर-श्वेतांबरके नामसे क्या (मतलब) है तुजे ?

वस्तु भगवान आत्मा ! अके समयमें पूर्णानंदका नाथ प्रभु ! (उसे) त्रिकाल कहना, यह भी अभी तो व्यवहार है. यहां तो वर्तमानमें त्रिकाली यीज ही पडी है. समजमें आया ? और इस त्रिकाली यीजमें त्रिकाली शक्तियां पडी हैं, उसमें भाव नामका गुण-शक्ति (है). उसके कारण प्रत्येक गुणमें वर्तमानमें कोई विकृत अवस्था हो, फिर भी प्रत्येक गुणका गुण असा है कि, विकृत (अवस्था) रहित भवन होना, यह तेरा गुण है. आहाहा !

कितने लोगोंको तो पहली बार सुनने मिला हो, ऐसा लगे. आहाहा ! प्रभु ! तुम कहां हो ? क्या तुम शरीरमें हो ? परमें हो ? क्या तुम रागमें हो ? आहाहा ! तुम रागमें भी नहीं (हो). आहाहा ! तुम तो पवित्र शक्तिका पिंड है, उसमें तुम हो. उसमें रहनेवालेको पर्यायमें राग (रूपी) षट्कारकसे परिणामन होने पर भी, इस गुणके कारण उससे (विकारसे) रहित होना यह उसका गुण है. राग सहित होना, ऐसा कोई गुण नहीं, आहाहा !

दूसरी बात (यह है) कि, व्यवहार रत्नत्रयसे सहित होना, ऐसा कोई गुण नहीं, भाई ! आहाहा !

श्रोता : नयी शैलीसे बात आयी.

पूज्य गुरुदेवश्री : उसमें है न ? पर्यायमें षट्कारकसे विकृत पर्याय कर्ता (है). द्रव्य-गुण कर्ता नहीं, वैसे पर (भी) कर्ता नहीं, आहाहा ! एक समयकी दृश्यामें कुछ एक गुणकी विपरीत अवस्था रूप पर्यायमें होना, यह कोई उसका स्वरूप नहीं. उससे रहित भवन होना, यह तेरा स्वरूप है. आहाहा ! समझमें आया ? यहां तो अभी व्यवहार है तो उससे निश्चय होगा और व्यवहार भी मोक्षमार्ग (है, ऐसा मानते हैं). प्रभु ! बहुत ईर्ष्य है, नाथ ! तेरी चीजमें तो अंदर दुबकी मारनी याहिये, उसके बदलेमें तुने रागमें दुबकी मारी है, आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! बात ऐसी (है), भगवान !

प्रभु ! तू पवित्र है न ? तेरा द्रव्य पवित्र है, तेरा गुण पवित्र है, प्रभु ! आहाहा ! तो भी परिणामनमें पवित्रता आती है कि अपवित्रता आती है ? ऐसा कहते हैं, आहाहा ! यह अपवित्रता पर्यायमें हो परंतु उससे रहित पवित्रताका परिणामन होना, यह तेरा गुण है. आहाहा ! अरे..! एक भाव भी (जो) यथार्थ समझे तो सर्व भाव समझमें आता है. एक भाव भी—कोई भी एक भाव यथार्थ समझमें आता है तो सारी वस्तुकी यथार्थ स्थिति (समझमें) आ जाती है, आहाहा !

अरे..! जगत अनादिसे विकल्पकी जालमें अपनत्व मानकर यार गतिमें घुम रहा है, जहां द्रव्य और गुण पवित्र है, वहां अपना अपनत्व माना नहीं और विकृत अवस्था शरीर, वाणी, मन, स्त्री, पुत्र, कुटुंब तो पर रहे, उसकी बात तो यहां है ही नहीं. उसका द्रव्य उसके कारणसे परिणामन कर रहा है, तेरे कारणसे नहीं. उसकी पर्याय उसको छोटी है, तेरेसे नहीं, आहाहा ! उसके कारणसे रहा है, उसके कारणसे आया है (और) उसके कारणसे वह बला जायेगा. तेरे कारणसे आया है और तेरे कारणसे बला जायेगा, ऐसा नहीं है, आहाहा ! यहां तो तेरे कारणसे पर्यायबुद्धिमें विकृत अवस्था (छोटी है). आहाहा !

“(कर्ता-कर्म आदि)...” यानी छ (कारकोंके) बोल लेना. कारकों यानी यहां पर्यायकी बात है. छाँकारक पर्यायमें छोते हैं. द्रव्य, गुणमें षट्कारक तो ध्रुवरूप है. द्रव्य और गुणमें जो षट्कारक है, वह तो ध्रुवरूप है. आहाहा ! पर्यायमें षट्कारकके अनुसार, आहाहा !

गजब बात करते हैं न !

अरे..! अमृतयंद्रआचार्य प्रभु ! तुने तो केवलज्ञानका काम किया है ! आहाहा ! अेक हज्जर वर्ष पहले मुनि हुआ. यह उसकी बात है. पंचमकालके मुनि (हैं), आहाहा ! वे परमेश्वर पदमें थे. 'लामो लोअे सव्व आयरियाणं' परमेष्ठिपदमें है न ? अैसा टीकाका विकल्प आया. टीका (अर्थात्) इन शब्दोंकी रचना तो ४३ पर्यायसे हुई, ४३से हुई. परंतु (यहां) कहते हैं कि, (टीकाका) विकल्प जो आया, इससे रहित मेरा परिणामन है, वह मैं हूं, आहाहा ! राग सहित हूं, यह मैं नहीं. आहाहा ! कहीं मिले अैसा नहीं है.

अभी तो कोई कहते हैं कि, यर्था करो ! प्रभु ! क्या (यर्था) करनी ? कि कर्मसे विकार होता है, कर्मसे विकार होता है, अरे प्रभु ! तेरी पर्यायमें परलक्षसे षट्कारकके अनुसार तेरेमें (विकार) होता है. वह भी तेरा कोई गुण अैसा नहीं कि, विकार सहित परिणामन करना, आहाहा ! पर्यायकी विकृत अवस्था स्वतंत्ररूपसे हुई, फिर भी तेरेमें अैसी ताकत है, गुणकी ताकत है, भाव नामके गुणकी ताकत है, अरे..! अनंत गुणमें भाव नामका गुण है तो अनंत गुणकी ताकत है कि, विकाररूप नहीं परिणामना, यही तेरी ताकत है. आहाहा !

श्रोता : आधी पंक्तिमें छतना भरा है, यह कौन बतायेगा ?

पूज्य गुरुदेवश्री : है न अंदर ? देओ ! आहाहा ! हमको अभी बाहरकी बात तो याद नहीं रहती (है). अंतरकी-ज्ञायककी (बात) विशेष याद रहती है. बाहरमें कभी भूल भी हो जाये, समझमें आया ? पार नहीं है, छतनी गंभीरता अेक शक्तिमें है ! भावशक्तिका जो रागरहित क्मवर्ती परिणामन होता है, यह क्मवर्ती पर्याय और अक्मवर्ती गुण और द्रव्य, यह तीनों मिलाकर आत्मा है. रागका परिणामन होना, उसके सहित आत्मा नहीं. आहाहा ! क्या कहा ?

आत्मा आनंदस्वरूप प्रभु ! यह तो पवित्रताका पिंड प्रभु है. यह तो वीतरागस्वभावसे भरा हुआ भगवान आत्मा (है). (यहां) कहते हैं कि, वीतरागस्वभावमें अेक वीतरागी भाव नामका गुण अैसा है, आहाहा ! (कि) वीतराग भावरूप परिणामना, रागरूप नहीं परिणामना, यह तेरा गुण है, प्रभु ! आहाहा ! समझमें आया ? अरे प्रभु ! तू किसकी तकरार करता है ? भाई ! अरे प्रभु ! तेरे हितकी बात है न ? विकार सहित परिणामना, यह तो मिथ्यादृष्टिको है, अैसा कहते हैं.

पर्यायमें व्यवहार रत्नत्रयका राग स्वतंत्र षट्कारकसे होता है, आहाहा ! तो भी उसका गुण अैसा है और प्रत्येक गुणमें भाव नामकी (शक्तिका) रूप नाम स्वरूप भी अैसा है कि, विकृत अवस्थासे (परिणामन) नहीं होना-उससे रहित होना. सहित नहीं होना बल्कि रहित होना (अैसा उसका स्वरूप है). आहाहा ! है ?

“कारकोंके अनुसार...” भाषा कारकों अनुसार (अैसे ली है). कर्मके अनुसार, अैसे नहीं

दिया. आहाहा ! पर्यायमें रागकी विकृत अवस्था, परमें सुषुब्ध—ऐसी मिथ्यात्वकी बुद्धि, इसकी तो बात यहां नहीं है. यहां तो ज्ञानीकी पर्यायमें आसक्तिका परिणाम जो आता है, (उसकी बात चलती है). समझमें आया ? मिथ्यात्वकी पर्यायमें विकृत अवस्था हो तो—तो उसका अभावरूप परिणामन उसे होता ही नहीं. क्योंकि वहां द्रव्यदृष्टि नहीं है. समझमें आया ? आहाहा !

मुनिओंने तो गजब काम किया है ! अर्थ करते-करते उसमें से निकलना (मुश्किल है). छतनी गंभीरता ! छतनी गंभीरता ! आहाहा ! अमृतके तीर मारे हैं, प्रभु ! तेरे (अनंत) गुणोंमें एक गुण ऐसा है कि, अमृतरूपसे परिणामना, यह तेरा गुण है. रागरूप—अहंरूप परिणामना, यह कोई तेरा गुण नहीं है. आहाहा ! मैं परका (कुछ) कर दूं. परसे मेरेमें कुछ होता है (ऐसी मान्यता) यह तो बड़ी भूल (है). यहां तो पर्यायमें अपनेसे होता है, (और) उसरूप नहीं परिणामना, यह तेरा गुण है, आहाहा ! समझमें आया ? इसमें पुनरुक्ति (दोष) नहीं लगता. आहाहा !

तेरेमें एक चारित्र नामका गुण है, वीतरागभाव स्वभाव (है). और उसके साथ यह भाव नामका गुण है. ४७ शक्तिमें सुषु शक्ति आयी थी न ? सुषु शक्तिमें समकित और चारित्र साथमें मिलाया है. हमने अलग किया है. कल ५४ शक्ति आयी थी न ? ५४ (शक्ति) बताई थी. उसमें समकित—चारित्र (दिया है). इसमें नाम नहीं आया है. परंतु (उसमें) भिन्न कर दी थी. यहां कहते हैं, समकित जोवको द्रव्य और गुणकी प्रतीति हुई है. द्रव्य और गुणके त्वेदसे भी (प्रतीति) नहीं (हुई), आहाहा ! द्रव्यकी प्रतीति ज्ञायकभाव, यह चैतन्यस्वभाव पवित्रताका पिंड प्रभु ! ऐसा ज्ञान करके प्रतीति हुई है, और धर्मोंको पर्यायमें विकृत अवस्था होने पर भी (उस रूप भवन नहीं होना, ऐसा गुण है). यहां परके संबंधकी (तो) बात छोड़ दी है. अपनी पर्यायमें कारक अनुसार—कर्ता-कर्मके अनुसार विकृत (अवस्था) होने पर भी, उस रूप भवन—नहीं होना, यह तेरा गुण है, आहाहा ! उसका अर्थ (जो) राग होता है, उसका ज्ञान..ज्ञानरूप रहना, यह तेरा गुण है. आहाहा ! ऐसा मार्ग (है) ! समझमें आया ?

“कारकोंके अनुसार जो किया..” (अर्थात्) वर्तमान पर्यायमें विकृत किया. किया कहते हैं कि नहीं ? ये हमारी कियाकांडको उथापते हैं. परंतु यह किया कारकोंके अनुसार पर्यायमें होती है, यह विकृत (अवस्था) है. आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! तू परमात्मस्वरूप प्रभु ! है न ? बाह्य परमात्माकी छाजरी नहीं, तेरा प्रभु तो तेरे पास है न ? अरे ! तेरा प्रभु तू ही है. ऐसी प्रभुत्व शक्ति एक-एक शक्तिमें पड़ी है और एक-एक शक्तिमें भावशक्ति नामका रूप पडा है, आहाहा ! प्रभुताकी शक्तिके कारण पर्यायमें प्रभुतरूप परिणामन होता है. और यहां भावशक्तिके कारण विकारसे रहित भवनरूप परिणामन होता है. छतनी

भात (है). समजमें आया ?

अब इसमें व्यवहारसे निश्चय होता है और व्यवहार निमित्त है तो निमित्त है तो निश्चय होता है, बापू ! (वह सब मान्यता) कहीं दूर रह गयी, भाई ! निमित्त हो, परंतु निमित्तके (स्वरूप) नहीं होना, यह तेरा गुण है, आडाडा ! निश्चयमें व्यवहार रत्नत्रयका निमित्त कहां परंतु निश्चयमें निमित्तसे परिणामना यह है नहीं, उससे रहित परिणामना, यह तेरा गुण है, आडाडा ! निमित्तसे नहीं परिणामना, निमित्तरूप भावसे नहीं परिणामना, ऐसा तेरा गुण है, आडाडा ! समजमें आया ? यह तो भगवानकी वाणी है, प्रभु ! यह तो महान गंभीर है ! उसका पार तो संतों कर सके, केवली कर सके ! आडाडा ! तू यैतन्य भगवान परमात्मा स्वरूप है न, नाथ ? तेरे नाथका अर्थ क्या ? जो शुद्ध परिणति हुई है उसकी तो रक्षा करता है (और) विशेष (शुद्धता) नहीं हुई है, उससे भिदाते हैं (—प्रगट करता है). रागको भिदाते हैं और रागको करते हैं, यह बात तो तेरेमें है ही नहीं, आडाडा ! समजमें आया ? नाथ किसको कहते हैं ? ये पत्निका पति—नाथ कहते हैं न ? तो पत्निके पास जो चीज है उसकी रक्षा करे और नहीं भिदी हो (उसे) भिदा दे. घरमें पांय हजरकी ठीकी साडी नहीं है और अपने पास २५-५० लाख रुपिया हो गया है तो अक पांय हजरकी साडी, तीन लउकेकी (बहुके) के दिये याहिये. पहले (जो साडी आदि) है उसकी रक्षा करते हैं, (और) नहीं है उसे भिदाते हैं.

यहां परमात्मा कहते हैं कि, अपनी पर्यायमें जितनी निर्मलता है, उसकी तो भावशक्तिके कारण रक्षा करते हैं. परंतु भावभाव शक्तिके कारण (भविष्यमें विशेष निर्मलता प्रगट करते हैं), इस भाव शक्तिमें भावभाव शक्तिका रूप है तो निर्मल परिणती—राग रहित परिणामन होना, यह तेरा गुण है और ऐसा भावभाव सदा निरंतर रहे, यह तेरा गुण है. और रागका अभावरूप परिणामन है, ऐसा अभावभाव (भविष्यमें) रहता है, यह तेरा गुण है. यह शक्ति तो पहले आ गयी. समजमें आया ? आडाडा ! अक बात भी यथार्थरूपसे भावमें भासन हो तो सब भावका भासन यथार्थ हो जाता है, समजमें आया ? उसको विशेष ज्ञान करनेकी जरूर नहीं पडती. आडाडा ! समजमें आया ?

टीकाकार कहते हैं कि, पर्यायमें विकल्पका षट्कारक (रूप) परिणामन हो परंतु उससे मेरा परिणामन रहित है, आडाडा ! टीकाके विकल्प (रूप) परिणामन—सहित में हूं, ऐसा नहीं (है). आडाडा ! समजमें आया ? पर्यायमें पंयमहाव्रतका विकल्प उठता है, वह पर्यायके षट्कारक अनुसार (उठता है). फिर भी मेरा गुण ऐसा है कि, षट्कारकरूप भवन नहीं (होना). नहीं भवन, है ? आडाडा ! “.. उससे रहित भवनमात्रमयी..” भवनमात्रमयी (यानी) अत्मेद. समजमें आया ? यह तो अक-अक अक्षरमें बडा (भाव भरा है), आडाडा ! भवन होने मात्रमयी (अर्थात्) रागके व्यवहारके विकल्पकी पर्याय हो परंतु उससे रहितपना

छोने मात्र उसका गुण है, आटाआ ! व्यवहारपने छोना यह उसका गुण नहीं. आटाआ !

यहां तो अभी व्यवहारका कोई ठिकाना नहीं होता और कहते हैं कि, व्यवहार करते हैं (तो) आगे निश्चय होगा, समकित होगा, धर्म होगा ! अरे प्रभु ! (ऐसा मानना यह) बड़ा शक्य है. तेरे गुण और द्रव्यकी शक्तिकी तुझे प्रतीति नहीं. तेरे द्रव्य और गुणमें ताकत कितनी है, उसकी तुझे प्रतीति नहीं. (छसलिये) तुझे व्यवहारसे निश्चय होता है, ऐसी तेरी प्रतीति (वही) मिथ्या शक्य तुझे छो गया. बराबर है ? आटाआ !

भावशक्ति—(उसमें) द्रव्यको भी भाव कहते हैं, गुणको भी भाव कहते हैं, निर्मल पर्यायको भी भाव कहते हैं और रागको भी भाव कहते हैं. परंतु रागरूप नहीं छोना, ऐसा भावका तेरा स्वभाव है, आटाआ ! ऐसी बातें हैं !

‘प्रभुनो मारग छे शुरानो, नहि कायरना काम’ आटाआ ! आता है न ? ‘हरिनो मारग छे शुरानो, नहीं कायरना काम जो ने; परथम पड़ेवुं मस्तक मुकी, पछी लेवुं हरिनुं नाम जो ने’ हरि यानि यह भगवान आत्मा छं ! विकारको छरे, अज्ञानको छरे, ऐसा भगवान (आत्मा) हरि (है). विकार करे वह हरि नहीं. (वह) आत्मा (नहीं). आटाआ ! समझमें आया ? विकारको छरे वह भी अक निमित्तका कथन है. बाकी विकारका ज्ञान करे, वह भी व्यवहारका कथन है. अपनी विकार रहित ज्ञानकी, श्रद्धाकी, आनंदकी परिणतिमें उसका ज्ञान आ जाता है. अपने स्वपर प्रकाशक ज्ञानके कारण उसका ज्ञान आ जाता है. उसका ज्ञान, ऐसा कहना यह व्यवहार है, आटाआ ! समझमें आया ?

ऐसा धर्म किस जातका ? साधारण मनुष्यको, नया छो उसे तो पकड़में भी नहीं आये. क्या कहते हैं यह ? (ऐसा लगे). वहां क्या सुनकर आये (ऐसा कोई पूछे तो कहे) मलाराज ऐसा कहते थे कि, ऐसा है और वैसा है. कुछ समझमें नहीं आता था, अरे भगवान ! नहीं समझमें आये ऐसी चीज है ? यह समझवालेको समझते हैं न ? कि रागवालेको समझते हैं ? रागको समझते हैं ? शरीरको समझते हैं ? आटाआ ! यहां तो क्षयोपशमज्ञानकी पर्याय होती है, उसको कहते हैं, प्रभु ! तेरे क्षयोपशमज्ञानमें निर्मल परिणति होती है, यह तेरे गुणके कारण है. ज्ञानकी शुद्धिकी वृद्धि छो, वह ज्ञानावरणीय कर्म भिसकते हैं तो शुद्धिकी वृद्धि होती है, ऐसा नहीं है, आटाआ ! शुद्धिकी वृद्धि होती है, यह तेरे भाव नामके गुणके कारण (होती) है. और भाव नामके गुणके कारण वर्तमान रागसे रहित छोना, यह तेरे गुणका कार्य है. समझमें आया ? छतनी शक्तियां छुई. अब दूसरी (लेते हैं).

“कारकोंके अनुसार परिणामित छोनेरूप भावमयी क्रिया शक्ति” अब देखो ! पहले कारक अनुसार रहित छोनेकी (बात कही) थी. अब कारकके अनुसार (यानि) निर्मल कारकके अनुसार (कहते हैं). समझमें आया ? पहले पर्यायमें विकृत कारकके अनुसारसे रहित छोना (ऐसा दिया था). और यहां निर्मल कारकसे सहित छोना (ऐसा दिया है). निर्मल षट्कारककी

पर्यायके निर्मल षट्कारक अंदर पडे हें, उसके षट्कारकके अनुसार निर्मल परिश्रुति होना, यह उसका गुण है. इसके पहले तो रलितपना होना, छतना गुण कडा था. अब यहां सलितपना होना, यह गुण है, (अैसा कहते हें). समजमें आया ?

“कारकके अनुसार...” उसमें भी कारकके अनुसार था. परंतु वह विकृत अवस्थाकी किया थी. इस कारको अनुसारमें जो अविकृत कारक अंदर है (उसकी बात है). आडाडा ! कर्ता, कार्य, जिसका कार्य हो, कर्ता हो, करण हो—साधन हो, संप्रदान—रभकर अपनेमें रहो, अपनेसे हो और अपने आधारसे हो, (अैसे छः कारक हें). समजमें आया ? आडाडा ! “कारकके अनुसार परिश्रुमित होनेरूप भावमयी कियाशक्ति” यह कियाशक्ति. “कारकके अनुसार परिश्रुमित होनेरूप भावमयी कियाशक्ति.” देओ ! कियाशक्तिका यह अर्थ है. किया उसे कहते हें कि, किया शक्ति अंदर (उसको कहते हें कि) जो निर्मल षट्कारक है उनके अनुसार परिश्रुति करे, यह कियाशक्ति. यहां रागकी कियाकी बात नहीं है, समजमें आया ? आडाडा !

“कारकके अनुसार..” (यहां) निर्मल कारककी (बात है). उससे “..परिश्रुमित होनेरूप भावमयी..” अैसी अवस्थारूप “...कियाशक्ति” उसकी अवस्था भी अैसी होती है. निर्मल षट्कारक जो पडे हें, उसके अनुसार निर्मल परिश्रुति होती है, उसको यहां कियाशक्ति कहते हें. आडाडा ! यहां रागकी कियाकी बात नहीं है. आडाडा ! अपनेमें अेक भावमयी कियाशक्ति अैसी है कि, जो निर्मल षट्कारक भगवान आत्मामें पडे हें, उसके अनुसार निर्मल परिश्रुति हो, उसका नाम कियाशक्ति कहनेमें आती है. आडाडा ! रागकी किया और ज्ञानकी किया, दोनों होकर मोक्षमार्ग (है), अैसा नहीं है, समजमें आया ?

(हम) संप्रदायमें (थे तब) अेक प्रश्न ओटा था. ८०की सालमें योटिलामें अेक साधु मिले थे. हम (कोई) साधुके साथ नहीं ठहरते थे. संप्रदायमें (थे तब भी) हम तो पहलेसे किसीको साधु नहीं मानते थे. (उस समय अेक) प्रश्न यला कि, शास्त्रमें ‘ज्ञानकियात्व्याम मोक्ष’ कडा है न ? तो वह कौनसा ज्ञान ? ज्ञान (माने) अपना वेदन और किया (माने) राग रलित किया. वह ‘ज्ञानकियात्व्याम मोक्ष’ है, अपना ज्ञान और रागकी किया दोनोंसे मोक्ष है, अैसी बात है ही नहीं. तो (उन्होंने) कडा, बात तो सखी लगती है. बात तो सखी है. अभी तो (सब) दूसरी (बात) यलती है. ५५ सालकी तो दीक्षा थी. (हमने कडा), बापू ! मार्ग तो यह है.

भावमयी नाम शुद्ध निर्मल परिश्रुतिमयी शक्ति, वह मोक्षका कारण है. समजमें आया ? उस परिश्रुतिको यहां कियाशक्ति कहते हें. विशेष आयेगा....



પ્રવચન નં. ૩૫

શક્તિ-૩૯, ૪૦, ૪૧ તા. ૧૪-૦૯-૧૯૭૭

કારકાનુગતક્રિયાનિષ્ક્રાન્તભવનમાત્રમયી ભાવશક્તિ: ॥૩૯॥
 કારકાનુગતભવત્તારૂપભાવમયી ક્રિયાશક્તિ: ॥૪૦॥
 પ્રાપ્યમાણસિદ્ધરૂપભાવમયી કર્મશક્તિ: ॥૪૧॥

સમયસાર શક્તિકા અધિકાર ચલતા હૈ. શક્તિકા એકરૂપ જો દ્રવ્ય હૈ, ઇસ દ્રવ્યકે પરિણમનસે ગુણકા પરિણમન સાથમે હોતા હૈ. યહ પહલી બાર ચિદ્વિલાસમે કહ ગયે હૈ. સમજમે આયા ? ઉસમે રહસ્ય હૈ. ગુણ પર દૃષ્ટિ દેનેસે ગુણકા પરિણમન નહીં હોગા. સમજમે આયા ? પરંતુ ગુણકા જો આશ્રય દ્રવ્ય હૈ, આહાહા ! ઉસકે આશ્રયસે દ્રવ્યકા પરિણમન હોતા હૈ. ઉસમે ગુણકા પરિણમન આ જાતા હૈ. યહ ન્યાય સમજે ? ચિદ્વિલાસમે એસા હૈ. એકબાર કહા થા ન ? (ગુણોકા) પરિણમન સીધા નહીં હોતા, ઉસમે એસે (લિયા) હૈ. ઉસકા કારણ હૈ કિ, વસ્તુ જો પૂરી હૈ, યહ પરિણમતી હૈ તબ ગુણકા પરિણમન સાથમે હોતા હૈ, પરંતુ ગુણકા સ્વતંત્ર પરિણમન હૈ ઓર દ્રવ્ય નહીં પરિણમે ઓર (માત્ર) ગુણ પરિણમે, એસા નહીં હૈ. સમજમે આયા ? ન્યાય સમજે ?

ઉસકા આશ્રય ભી એસા હૈ કિ, ગુણકે ભેદકી દૃષ્ટિ નહીં કરની હૈ. ક્યોંકિ ગુણકા પરિણમન ગુણકે લક્ષસે નહીં હોતા. ભલે એક ઠિકાને પ્રવચનસારમે આયા હૈ – ‘અસાધારણ જ્ઞાનકે કારણસે’ (એસા આયા હૈ). પરંતુ જ્ઞાન શબ્દ (માને) આત્મા. સમજમે આયા ? આહાહા ! યહ તો શાંતિકી બાત હૈ, ભગવાન ! અંદરકી બાતે હૈ. શક્તિકે વર્ણનમે શક્તિ-ગુણ હૈ, તો ગુણકા સીધા પરિણમન નહીં આતા. દ્રવ્ય પરિણમતા હૈ તો અનંત ગુણકા પરિણમન સાથમે હૈ. એસી સૂક્ષ્મ બાતે હૈ. સમજમે આયા ?

અપને તો યહાં શક્તિકે વર્ણનમે ૩૯-૪૦ (શક્તિ) થોડી ફિરસે લેની હૈ. આહાહા ! ક્યોં (ફિરસે લેના હૈ) ? (ક્યોંકિ) કારણ હૈ. “(કર્તા, કર્મ આદિ) કારકોંકે અનુસાર જો ક્રિયા...” યહાં મલિન પર્યાયકી બાત હૈ. પર્યાયમે મલિનતા હોતી હૈ, ઉસકો યહાં ક્રિયા કહતે હૈ. સમજમે આયા ? “કારકોંકે અનુસાર ક્રિયા..” એસા કહકર યહ સિદ્ધ ક્રિયા કિ, પર્યાયમે ષટ્કારકકે

अनुसार जो मलिन किया होती है, (उससे रहित भवनमात्र भावशक्ति है).

(अपनी विद्विलासकी यलती हुई बातमें), विद्विलासमें ३१ पन्ने पर परिशमनशक्तिमें आया है. आधार दे न ? कोर्टमें कायदेका आधार देते हैं. यह शास्त्रका आधार (है). यह परिशमन शक्ति द्रव्यते उठे हैं. एतना गृहस्थ समकित्ती काम करते हैं. है ? यह परिशमन शक्ति द्रव्यमें है. मथाणा यह है. परिशमन शक्ति द्रव्यमें है. परिशमन शक्ति स्वतंत्र परिशमन करती है, औसा नहीं है. आहाहा ! औसी तो अनंत शक्तियां हैं तो द्रव्य परिशमता हैं तो (साथमें) गुण परिशमते हैं, आहाहा ! उसका अर्थ भी यह है कि, द्रव्य पर दृष्टि देनेसे सारा द्रव्य शुद्धरूपसे परिशमता है. आहाहा ! औसी वस्तु है. आहाहा ! यहांका सभुत-तत्त्वार्थसूत्रका सूत्र है, 'द्रव्यश्रया निर्गुणा गुणा' औसा कहा है. द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणा (यानी) गुणके आश्रयसे गुण नहीं परंतु द्रव्यके आश्रयसे गुण है. समजमें आया ? थोड़ी औसी बातें हैं. आहाहा ! गजब बात है ! कितना सिद्ध किया है ! कि यह शक्तिओंका वर्णन करते हैं, परंतु यह शक्ति-गुण है वह, गुण स्वयं उठते हैं-परिशमन करते हैं, औसा नहीं. आहाहा ! द्रव्यके परिशमनमें गुणकी परिशमति उठती है. समजमें आया ? औसा कलकर गुण और गुणीके भेदकी दृष्टिको छोड दे, औसा कलते हैं. आहाहा !

अनंत शक्तिका भंडार भगवान परमात्मा ! अनंत आनंद, अनंत आनंदका सागर उछल रहा है. आहाहा ! अनंत ज्ञान, अनंत स्वच्छता, अनंत प्रभुता, अनंती ईश्वरता, अक-अक शक्तिमें अनंत ईश्वरता है. औसी अनंत ईश्वरता स्वयं परिशमन नहीं करती हैं. अनंत ईश्वरका धरनेवाला द्रव्य, अनंती ईश्वरताका आश्रय द्रव्य - इस द्रव्यके परिशमनसे सब गुणका परिशमन होता है-दशा होती है. आहाहा ! औसा कलकर यह भी सिद्ध किया कि, गुण पर दृष्टि नहीं देना. गुणका ज्ञान करना (परंतु गुणके भेद पर दृष्टि नहीं देना). जहां सारा गुणका गहा पडा है, आहाहा ! अनंत शक्तिका गहा द्रव्य पडा है, उस पर दृष्टि दे ! (तो) तुजे सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र और केवलज्ञान आदि होगा, आहाहा ! समजमें आया ?

पहलेमें आया है. द्रव्यमें परिशमन शक्ति है, यह बात दूसरी और बादमें परिशमन शक्तिका वर्णन (है), यह दूसरी (बात है). शक्ति तो यह (है). दो बार वर्णन (किया है). यहां परिशमन शक्ति द्रव्यमें है, औसा करके विस्तार किया और बादमें परिशमन शक्तिका वर्णन आता है न ? वस्तु विषे परिशमन शक्तिका वर्णन, यह दूसरी बार है. पहले औसे लिया कि, परिशमन शक्ति द्रव्यमें है, भाई ! आहाहा ! द्रव्यमें है इसलिये द्रव्यके परिशमनसे परिशमनशक्तिका परिशमन होता है. बादमें वस्तु विषे परिशमन शक्तिका वर्णन (लेते हैं). बादमें तो वस्तुकी यह शक्ति है, उसका वर्णन है.

अब, यहां तो आज दो बात कलनी है. जो उलवीं शक्ति है, इसमें किया शब्द इस्तमाल

क्रिया है. 'पर्यायमें' (ऐसा कडा है). द्रव्य, गुणमें तो षट्कारक है परंतु पर्यायमें (भी षट्कारक है). पर्यायिकायमें जो दूर गाथा कही, भाई ! वहां इसरीमें यथा यली थी कि, पर्यायमें पर्यायके षट्कारक परिणामनसे विकार होता है, (उसमें) परकी अपेक्षा नहीं, द्रव्य, गुणकी (अपेक्षा) नहीं. ऐसा सूक्ष्म (है), प्रभु ! क्या करें ? (वस्तुका स्वरूप ही ऐसा है).

अक समयकी पर्यायमें पर्याय रागका कर्ता, पर्याय कार्य, पर्याय करण-साधन, पर्याय अपादान, पर्याय संप्रदान (और) पर्याय अधिकरण (है). अक ही पर्यायमें-विकृत अवस्थामें षट्कारक है. यहां ये सिद्ध करना है कि, पर्यायमें षट्कारककी विकृत अवस्था है परंतु वस्तुका गुण ऐसा है कि, उससे रहित परिणामन हो. यह उसका स्वभाव है. आडाडा ! समजमें आया ? आडाडा ! क्या कडा समजमें आया ?

कारकोंके अनुसार क्रिया (अर्थात्) पर्याय. पर्यायमें षट्कारकसे कर्ता, कर्म आदि (षट्कारक है, उसकी बात है). पर्यायमें कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान (रूप) षट्कारक क्रिया उससे रहित, आडाडा ! यह परिणामन क्रिया मलिन पर्याय है, परंतु उससे रहित (अर्थात्) उसको तो ज्ञेय बना दिया है. आडाडा ! जैसे पर द्रव्य ज्ञेय है, वैसे षट्कारक पर्यायमें विकृत अवस्था है, उससे रहित भवनमात्र भावशक्ति है, आडाडा ! बहुत सूक्ष्म (है), बापू !

'प्रभुनो मारग छे शुरानो' आडाडा ! समजमें आया ? यहां तो क्रिया और भाव जैसे शब्द क्यों कहे ? पहले पर्यायमें षट्कारकके परिणामनको क्रिया कही, मलिन पर्यायमें षट्कारकरूप परिणामनको क्रिया कही. भावशक्तिका कार्य क्या है ? उसमें भाव नामका गुण है. अक भाव नामका गुण ऐसा था कि, (जिसके कारण) विद्यमान निर्मल पर्याय हो, वह भावशक्ति. यह दूसरी भावशक्ति (है). इस भावशक्तिका गुण ऐसा है कि, पर्यायमें षट्कारक विकृत अवस्था है, उससे रहित होना. (यह उसका कार्य है). समजमें आया ? आडाडा ! यह तो सूक्ष्म बातें हैं, भाई ! (लोगोंका) बहुत विरोध आया है न ! उसका विशेष स्पष्टीकरण हो रहा है.

यहां तो पर्यायमें षट्कारकरूप रागका-व्यवहार रत्नत्रयका परिणामन हो ! समजमें आया ? राग पर्यायमें है न ? तो (राग) षट्कारकरूप स्वतंत्र परिणामन करता है. (उसके परिणामनमें) कर्मकी अपेक्षा नहीं और द्रव्य-गुणका कारण नहीं. द्रव्य-गुण तो पवित्र है. अपवित्रता हो ऐसी कोई शक्ति नहीं. वैसे ही अपवित्रतामें पर (पदार्थ) कारण है, इसलिये अपवित्रता होती है, ऐसा नहीं. आडाडा ! समजमें आया ? इसको यहां कडा कि, छे कारकके अनुसार पर्यायकी क्रिया. उससे रहित मलिन पर्याय... (मलिन पर्यायको यहां) क्रिया कडा. उससे रहित भवन मात्र.. आडाडा ! व्यवहार रत्नत्रय (रूप) रागका परिणामन पर्यायमें षट्कारकसे हो, परंतु उससे रहित-भावशक्तिके कारण उससे रहित उसका परिणामन है. आडाडा ! समजमें आया ?

श्रोता : ओक समयमें उससे रचित परिणामन करे, वही स्वभाव है.

पूज्य गुरुदेवश्री : वही उसका गुण है. वल गुण है. आहाहा ! कोई गुण ऐसा नहीं है कि, विकृतइपसे परिणामन करे. ऐसा कोई गुण नहीं है. (किर भी) विकृती होती है, विकार (होता) है, (कोई विकार) नहीं है, (ऐसा) नहीं (है), आहाहा ! तो कहते हैं कि, विकृत अवस्था षट्कारकइपसे स्वतंत्र पर्यायमें होने पर भी भाव नामकी शक्ति नाम गुणके कारण उस मलिन पर्यायसे रचित परिणामन है, यह उसका (कार्य) है. आहाहा ! यह शक्ति है.

श्रोता : विकार करना ऐसी शक्ति नहीं है ?

पूज्य गुरुदेवश्री : ऐसी शक्ति नहीं है. किर भी पर्यायमें (विकार) होता है. आहाहा ! समयमें आया ?

अहो बापू ! वीतराग मार्ग बहुत गंभीर (है), भाई ! ओक-ओक शक्तिमें भी उसका वर्णन छतना (किया है) ! पर्यायमें षट्कारक विकृत अवस्था सिद्ध करनी है परंतु पर्यायदृष्टिवालेको उसका सहितपना है. लेकिन द्रव्यदृष्टिवालेको द्रव्यमें भाव नामका गुण है, उस कारणसे व्यवहार रत्नत्रयकी षट्कारककी विकृत अवस्था है, उससे रचित भावगुणके स्वभावके कारण परिणामन होता है, आहाहा ! समयमें आया ?

अब, दूसरी बात. ३८ (शक्ति) तो हो गयी थी. ४० (शक्ति) बादमें थोड़ी यली थी. (अब) ४० (शक्ति लेते हैं). “कारकोंके अनुसार...” अब यह कारक निर्मल लेना. पहले जो कारके थे वह पर्यायके (कारक) थे, अब यह द्रव्यके-गुणके कारक है, भाई ! क्या कहते हैं ? समयमें ! पहले (३८ वीं शक्तिमें) पर्यायमें विकृत (अवस्थाका) षट्कारकका परिणामन था. अब यह गुणका जो पवित्र षट्कारक (है, उसकी बात है), आहाहा ! बादमें ओक-ओक को भिन्न करके कहेंगे. पहले ओक साथ कर्ता, कर्म, करण, अपादान आदि जो शक्तियां—गुण हैं, उन छ शक्तिको धरनेवाला भगवान ! उसके आश्रयसे जो परिणामन होता है, (उसकी यहां बात है). देओ !

“कारकोंके अनुसार...” उसमें भी कारकोंके अनुसार किया थी. वह पर्यायकी बात थी. और यह कारको अनुसार (है, यह) कारको त्रिकादी शुद्ध है उसके अनुसार. पर्यायके कारक पर्यायमें रह गये. समयमें आया ? तेरा परके साथ क्या संबंध है ? पर है, वह तो उसके कारणसे है. तेरी पर्यायमें विकृत अवस्था, पर्यायके कारणसे षट्कारकका विकृत परिणामन हो, परंतु उसके भाव नामके गुणके कारण, गुण ऐसा है और अनंत गुण ऐसे हैं कि, कोई विकृतइपसे परिणामन करे, ऐसा कोई गुण ही नहीं. आहाहा ! गजब बात करते हैं ! भाव नामका गुण है, उस कारणसे मलिन किया जो पर्यायमें षट्कारकसे लुई, उससे रचित परिणामन होना, यह भाव नामके गुणका (कार्य) है. बनियेको कुरसद नहीं मिलती और

धर्म औसा सूक्ष्म ! (उसके लिये) निवृत्ति (याहिये), भापू ! मार्ग (कोई) दूसरा है, भाई ! सम्यग्दर्शनकी शुद्धि-दर्शन विशुद्धि-दर्शन शुद्धिकी बात अलौकिक है ! समझमें आया ?

यहां कहते हैं कि, पहले कारक अनुसार कड़ा वह पर्यायके (कारक कहे थे). अक समयके कारक अनुसार (कड़ा था). अब जो कड़ा वह त्रिकावी पवित्र कारकके अनुसार (कड़ा है). कारका आश्रय द्रव्य है परंतु कारकके अनुसारमें द्रव्यका आश्रय हुआ है. समझमें आया ? आहाहा ! अब लोग यहां खिल्लाते हैं कि, व्यवहार मोक्षका मार्ग (है). शुभ भाव मोक्षका (मार्ग है). अरे प्रभु ! सुन तो सही प्रभु ! दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजा (आदि) शुभभाव यह मोक्षका मार्ग (है) अथवा शुभभाव शुद्धताका कारण है, (लोग) औसा कहते हैं. यहां तो ना कहते हैं कि, अशुद्धता है, उसके अभावरूप (परिणामन) हो, उसका नाम भावशक्ति-गुण कहनेमें आता है. आहाहा ! समझमें आता है कुछ ? पैसे (कमानेमें) जल्दी समझमें आता है, यह कठिन (पडता है). भारी बात ! अमृतयंद्रआचार्यने बहुत भजना भोल दिया है ! ओहो ! इन दोनों कारको परसे बहुत विचार आये थे कि, इन दोनों कारकोंमें (इसमें भी) कारकों अनुसार (दिया है) और (दूसरेमें भी) कारकोंके अनुसार (कड़ा है), यह दो (शीज) क्या (है) ? अक समयकी पर्यायमें पर्यायके कारको अनुसार (कड़ना है). तो उससे रहितपना (होना), भाव नामका गुण है तो उससे रहितपना होना, विकारसे रहितपने होना, यह भाव नामका गुणका (कार्य) है. आहाहा ! समझमें आया ?

४० (वीं शक्तिमें) यह कड़ा कि, “कारकोंके अनुसार परिणामति होनेरूप..” यह निर्मल त्रिकावी द्रव्य, गुणमें जो कारक है (उसकी बात है). शक्ति समझमें आयी ? आहाहा ! पहलेमें अकेले पर्यायके स्वतंत्र षट्कारक लिये थे. यहां त्रिकावी द्रव्यमें जो षट्कारक पडे हैं, उस कारकके अनुसार (की बात है). आहाहा ! कारकोंके अनुसार-उसमें भी था. परंतु उस ‘कारकोंके अनुसार...’ (कड़ा उसमें) पर्यायकी क्रियाकी (बात थी). यहां ‘कारकोंके अनुसार...’ (कड़ा उसमें) द्रव्यके कारकोंके अनुसार (की बात है). समझमें आया ?

भगवान ! मार्ग औसा है, भाई ! सर्वज्ञकी आज्ञा यह है. जिनेन्द्रदेव त्रिलोकनाथ ! जिनेन्द्रदेवका यह इरमान है. प्रभु ! तेरी पर्यायमें द्रव्य-गुणके आश्रय बिना और परके आश्रय बिना (स्वतंत्ररूपसे विकार होता है). आहाहा ! उसके लिये भी तकरार. (औसा कहते हैं), कर्मके कारणसे विकार होता है. उसका यहां निषेध करते हैं और शुभभावसे धर्म होता है उसका भी यहां तो निषेध करते हैं. समझमें आया ? कर्मके कारणसे विकार (होता है), यह बात नहीं है. यह तो पर्यायमें पर्यायका षट्कारक (रूप) परिणामन है, उस कारणसे मलिन पर्याय उत्पन्न होती है. कर्मसे नहीं और द्रव्य-गुणसे नहीं. आहाहा ! औसा स्वरूप (है), भगवान ! यह भाव नामके गुणका कार्य (है). इसका गुण ही औसा है कि, मलिन परिणामसे रहित होना, औसा गुण है. मलिन परिणामसे रहित होना, औसा कोई गुण नहीं है, आहाहा !

समजमें आया ?

यहां कलते हैं कि, जो द्रव्य पर दृष्टि देते हैं, उनको भविन परिणामसे रहित परिणामन होता है, आहाहा ! उसका नाम भाव शक्तिका कार्य (है). भाव नामका गुण है उसका यह कार्य (है). आहाहा ! समजमें आया ? भगवान आत्मामें भाव नामका गुण है, शक्ति, सत्त्व है, उसका पर्यायमें कार्य क्या ? कि पर्यायमें भविन षट्कारकके परिणाम हैं, उससे रहित परिणामन करना, यह भाव गुणका कार्य है, आहाहा !

बहुत सूक्ष्म है. बाप-दादाने कभी सुना नहीं होगा ! सेठ कलते हैं न ? जैसा सुना था, वैसा माना था. सेठको जब ऐसा कलते हैं कि, अभी तक कोई सख्या निर्णय ही नहीं किया. (इसलिये ऐसा कलते हैं कि), हमने जैसा सुना था, वैसा माना था. आहाहा ! पंडित कलना किसको ? आहाहा ! 'पंड्या, पंड्या, झोतरा पंड्या' झोतरा समजे ? तुष. भोक्षमार्ग प्रकाशकमें आता है, आहाहा ! तुने विकृत अवस्थाके षट्कारकके परिणामनसे धर्म माना है तो तुने झोतरा-तुष पंड्या है. समजमें आया ?

ऐसा भी कलते हैं न ? 'विद्वज्जन भूतार्थ त्यज्ज, व्यवहारमां वर्तन करे', परंतु निश्चयके आश्रित निर्वाणको प्राप्त करते हैं. आहाहा ! विद्वानका नाम धराकर, षट्कारकका परिणामन विकृत अवस्था है, उस व्यवहारमें वर्तन करते हैं. परंतु निश्चय जो द्रव्य, गुण, पर्याय है, उसका तो आश्रय करते नहीं-वर्तन करते नहीं. आहाहा ! यारों ओर देखो तो सत्य सिद्धांत भडा होता है. समजमें आया ?

यहां अपने ४० वीं (शक्ति) यलती है. पहले उल (शक्तिमें जो) कारक थे, वह पर्यायके कारक थे. और यह कारक अब द्रव्यके-गुणके कारक है, आहाहा ! समजमें आया ? गजब बात कही है ! अक-अक शक्तिमें कितना (भरा है) ! आहाहा ! अरे जैसे शास्त्र ! मुश्किलसे बाहर आये (तो लोग कलने लगे) जिनवाणीमेंसे निकाल दो ! अरे प्रभु ! क्या करते हो ? बापू ! भाई ! इस समयमें कोई मिलता नहीं है, केवलज्ञानी नहीं, अवधिज्ञानी, मनःपर्याय(ज्ञानी) नहीं और यह अन्याय करते हो, भाई ! 'करुणा उपजे जोई' बापू ! तेरा क्या होगा, भाई ? बापू ! तुजे दुःख होगा, प्रभु ! सहन नहीं कर पायेगा, जैसे दुःख होंगे, भाई ! तू सत्का अनादर कर रहा है. इसलिये कोई पर (जव) दुःखी हो, वह कोई प्रशंसा करने लायक (बात) है ? आहाहा !

यहां ४० शक्तिमें कलते हैं. कारक अनुसार दोनों (शक्तिमें) आया तो यह है क्या ? (ऐसा विचार यदा था). पहले (उल शक्तिमें) कारक अनुसारमें (ऐसा कलना है कि), पर्यायमें विकार अवस्था स्वतंत्र होती है, परंतु इसका भाव नामका गुण है, इस गुणके कारण विकृत (अवस्थासे) रहितपने परिणामन होना, यह गुणका कार्य है. धर्मीको विकारसे रहित परिणामन होता है, यह आत्माका कार्य है, ऐसा कलते हैं, आहाहा ! समजमें आया ?

‘इसका रस लो, बापू ! संप्रदायमें तो इस समयमें पंडितके नाम पर बहुत गडबड यली है. बापू ! क्या कहें, भाई ? आहाहा !

पहले ‘कारकके अनुसार’ था, वह पर्यायके (षट्कारक) थे. यह ‘कारकके अनुसार’ है, यह गुणके (षट्कारक) है. (यहां) भले कारकके अनुसार लिया, परंतु वास्तवमें तो कारक जिसके आश्रयमें पडे हैं, जैसे द्रव्यका आश्रय लेनेसे कारकके अनुसार पवित्र (परिणामन) होता है, समझमें आया ? जो षट्कारक शक्ति पवित्र है, उसका आश्रय द्रव्य है. इस द्रव्यकी दृष्टिसे षट्कारक निर्मल परिणामन – सम्यग्दर्शन, ज्ञानकी पर्यायका परिणामन होता है. समझमें आया ? (कोई) गुणका सीधा परिणामन नहीं (होता). परंतु द्रव्यके परिणामनके साथमें गुणका पवित्र परिणामन होता है, आहाहा ! ऐसी बातें (हैं) ! उसमें तो दया पावो, व्रत करना, अपवास करना, २-५ लापका मंदिर बना देना, (उसमें बात सरल हो जाती थी). (लेकिन) यह मंदिर बनानेके जो भाव है, यह शुभभाव है और धर्मीकी दृष्टि शुभ (भावके) परिणामनसे रहित है. गजब बात है ! समझमें आया ? शुभभावका परिणामन पर्यायमें षट्कारकसे होता है. मंदिर, पूजा, भक्ति, बड़ी रथयात्रा आदि शुभभाव हो तो (पुण्य बंधे). मात्र पापके लिये (अर्थात्) बाहरमें दिभावके लिये, दुनिया मुझे मान दे, दुनिया मेरी गिनती करे, तो-तो वह अशुभभाव है. आहाहा ! परंतु शुभभाव हो तो (भी) यहां परमात्मा ऐसा इरमाते हैं कि, शुभभावकी जो विकृत क्रिया है, उससे रहित तेरा गुण ऐसा है कि, उससे रहित परिणामन हो, यह तेरा गुण है. मलिनरूपसे परिणामन करना, ऐसा तेरा कोई गुण है ही नहीं. आहाहा ! समझमें आया ?

‘इस ४० (शक्ति) में यह आया, ‘कारक अनुसार’. (उत् शक्तिमें) कारक अनुसार था. (वह) पर्यायके कारक (थे). यह कारक अनुसार (है) - यह द्रव्यका कारक (है). समझमें आया ? आहाहा ! शक्तिका वर्णन करके अमृतयंद्रआचार्यने तो गजब काम किया है ! गजब काम किया ! आहाहा ! सारा निर्मल मार्ग कैसा होता है, उसकी सिद्धि कर दी है. (पर्यायमें) मलिन परिणाम हो, फिर भी ज्ञानीकी परिणामतिमें मलिनतासे रहित परिणामति (होती है). वह ज्ञानीकी परिणामति है. आहाहा ! धर्मी जिवकी परिणामति, सम्यक्दृष्टि जिवकी परिणामति नाम पर्यायमें – विकृत अवस्था होती है, परंतु उसका (परिणाम) तो भावशक्तिके कारण-गुणके कारण (उससे रहित परिणामन है). भावशक्ति गुण है, तो प्रत्येक गुणमें भाव (शक्तिका) रूप है, तो प्रत्येक गुण पवित्रतासे परिणामे ऐसा उसका गुण है, आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा !

सूक्ष्म पडे, प्रभु ! (लेकिन) क्या हो सकता है ? मार्ग ऐसा है. आहाहा ! कभी परिचय नहीं किया, सुननेमें आया नहीं. बाहरमें और बाहरमें गोथे जाये, आहाहा ! यीज बाहरमें नहीं है. शुभभावमें यीज आयी नहीं.

श्रोता : बाहरकी चीज आकर्षक लगती है.

पूज्य गुरुदेवश्री : धूलमें भी आकर्षक नहीं है. अज्ञानी (आकर्षक) मानता है. आहाहा ! पर्यायमें विकृति होना, यह बाह्य कारणसे नहीं. औसा यहां पड़ले सिद्ध करना है. समझमें आया ? बाहरके कारणसे (विकृति) नहीं (होती). भगवानके कारणसे यह शुभभाव हुआ, औसा नहीं. आहाहा ! शुभभावकी पर्यायमें परिणति हुई, फिर भी द्रव्यकी दृष्टिवंत गुणीको (ज्ञानीको) प्रत्येक गुणमें औसी शक्ति है कि, विकारसे रहित होना, यह तेरी शक्तिका कार्य है. आहाहा ! समझमें आता है कुछ ? (घसमें) पुनरुक्ति (दोष) नहीं है. वारंवार (भात) आये (लेकिन) अधिक स्पष्ट (होता है).

षट्कारकके अनुसार आनंदकी पर्याय प्रगट हो, शांतिकी पर्याय प्रगट हो, वीतरागताकी पर्याय प्रगट हो, रागसे रहित प्रभुताकी पर्याय प्रगट हो, आहाहा ! यह चौथे गुणस्थानकी (भात है). 'सर्व गुणांश ते समकित' कहा है न ? उसका अर्थ यह है कि, द्रव्यमें निर्मल कारक जो पड़े हैं, इन गुणोंका आश्रय तो द्रव्य है, तो द्रव्य पर दृष्टि (करनेसे) द्रव्यके परिणामनमें कारकोंके अनुसार निर्मल परिणामन होता है.

“कारकोंके अनुसार जो किया...” देओ ! समझमें आया कुछ ? (४० वीं शक्तिमें) “कारकोंके अनुसार परिणामित होनेरूप भावमयी...” (औसा कहा). (३८ वीं शक्तिमें) पर्यायकी बातमें किया थी और यहां लिया, “कारकोंके अनुसार परिणामित होनेरूप भावमयी किया शक्ति” भावमयी कियाशक्ति.. आहाहा ! समझमें आया ? “कारकोंके अनुसार परिणामित होनेरूप भावमयी कियाशक्ति” यहां किया शब्द था. वह मलिन पर्यायकी परिणतिको किया कहा था और उससे रहित होना, यह उसका गुण है. और यहां कहते हैं कि, “कारकोंके अनुसार परिणामित होनेरूप भावमयी कियाशक्ति” आहाहा ! पड़लेमें भी भावशक्ति ली और यहां भावमयी कियाशक्ति ली. दोनोंमें झूट है. उसमें तो किया शक्ति ली थी. पर्यायमें विकृत अवस्थासे रहित भाव. अब यहां तो भावमयी कियाशक्ति (लेना है). आहाहा !

अनंत गुणका तंडार भगवान ! उसके षट्कारकका आश्रय द्रव्य है तो द्रव्यके आश्रयसे उसकी शुद्ध परिणति होती है, यह भावमयी कियाशक्ति है. आहाहा ! शक्तिका नाम किया है. और शक्तिका नाम किया है तो परिणतिमें जो निर्मलता है, उसकी किया शक्तिका यह कार्य है, आहाहा ! क्या कहा ? पड़ले जो कहा था वह, पर्यायकी किया—अेक समयकी पर्यायकी मलिन किया उससे रहित, औसे कहा था. और यहां तो कहा कि, यह किया शक्ति त्रिकाली है. त्रिकाल गुणोंमें अेक किया नामकी शक्ति है, आहाहा ! क्या कहते हैं ? देओ ! भावमयी कियाशक्ति. “कारकोंके अनुसार परिणामित होनेरूप भावमयी कियाशक्ति” आहाहा ! द्रव्यके अनुसार होनेवाली कियाशक्तिका नाम निर्मल परिणति, यह कियाशक्तिका कार्य है. समझमें आया ?

(लोगोंको ऐसा सामान्य लगता है) यह ४७ शक्ति है, उसको कहते हैं. बापू ! शक्तिका अर्थ प्रभु है—प्रभुता है. अक-अक शक्ति प्रभुतासे भरी पडी है. आहाहा ! पहले किया कडा वह तो भलिन पर्यायको किया कहकर, उससे रहितपनामयी भावशक्ति. यहां कारकोंके अनुसार भावमयी कियाशक्ति है. त्रिकालीमें (ऐसा) गुण है. पहले पर्यायकी किया थी. यहां गुणकी किया है. समझमें आया ? आहाहा ! कितनी धीरज याहिये, बापू !

भगवान् आत्मामें अक किया शक्ति है. ऐसी किया शक्तिका रूप प्रत्येक गुणमें है. आहाहा ! गुणके अनुसार अथवा गुणका आश्रय द्रव्य है, (ऐसे) द्रव्यके अनुसार कियाशक्तिका कार्य क्या है ? कि, निर्मल परिणामन होना, भावमयी निर्मल (परिणामन) होना. यह कियाशक्तिका कार्य है. आहाहा ! (पहलेमें) भलिन किया थी. यह किया शक्तिका परिणामन निर्मल है. समझमें आया ? भाषा कियाशक्ति रभी, भावमयी कियाशक्ति (कहा). मूल तो कियाशक्ति है. अंदर स्वभावमयी कियाशक्ति (है). भावशक्ति तो पहली उलमें आ गयी. यह तो भावमयी कियाशक्ति—गुणमयी कियाशक्ति (कहा). समझमें आया ?

“कारकोंके अनुसार परिणामित होनेरूप..” आहाहा ! देओ ! यहां तो कारकोंके अनुसार परिणामित होनेरूप (ऐसे दिया है). इसदिये तो कडा कि, अक-अक गुण परिणामन नहीं करते. कारकके अनुसारमें (षट्कारकोंको) द्रव्यका आश्रय है. समझमें आया ? जिसकी भानमें षट्कारक पडे हैं, भगवान् (आत्म) द्रव्यकी भानमें छ कारक पडे हैं. आहाहा ! द्रव्यके आश्रयसे परिणामन होनेरूप भावमयी कियाशक्ति, आहाहा ! ऐसा अंदरमें भावमयी कियाशक्ति—गुण है. इस गुणके कारण षट्कारकका अनुसरण करके निर्मल पर्याय हो, यह गुणका कार्य है, आहाहा ! यह किया शक्ति तो प्रत्येक गुणमें है. समझमें आया ? २२ बोलको अक-अक (शक्तिमें) उतारे तो पार नहीं आवे, आहाहा !

भावमयी कियाशक्ति द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्यापती है. कियाशक्तिका परिणामन निर्मल है, आहाहा ! यह निर्मल परिणामन वही स्व-अपना है, भलिन परिणाम अपना नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? वह आभीरमें स्वस्वामीत्वसंबंध शक्तिमें लेंगे. उसका यह अर्थ है कि, भगवान् आत्मा ! अंतर शक्तिओं (और) पवित्रताका पिंड है, उसका आश्रय करनेसे, द्रव्यका परिणामन जो होता है, यह तदन शुद्ध होता है. शुद्ध परिणामन, शुद्ध शक्ति और शुद्ध द्रव्य — यह अपना स्व और उसका आत्मा स्वामी, ऐसी स्वस्वामीसंबंधशक्ति उसमें है. आत्मा रागका स्वामी नहीं. आहाहा ! गजब बात है ! व्यवहार रत्नत्रयका विकल्प उठता है, उस कियासे रहित तो कडा, परंतु उसका स्वामीपनासे रहित है. आहाहा ! ४७ (शक्तिमें) अंतिम शक्तिमें लेंगे. समझे ?

“कारकोंके अनुसार परिणामित होनेरूप..” देभा ? उल शक्तिमें कारकोंके अनुसार किया उससे रहित, ऐसा कडा था. और (यहां) कारकों अनुसार परिणामित, (ऐसा कडा). निर्मल

जो छ कारकके गुण पडे हें, उस गुणका आश्रय जो द्रव्य, उसके आश्रयसे होनेवाला – परिणामन होनेरूप भावमयी क्रियाशक्ति, यह भावमयी क्रियाशक्ति है—स्वभावमयी क्रियाशक्ति. आहाहा ! क्यों भावके साथ लिया ? (उल शक्तिमें) पर्यायमें क्रिया तो कही थी. वहां भावमयी क्रिया, यह नहीं (लेना है). यह तो मलिन परिणामरूप क्रिया थी. आहाहा ! समझमें आया ?

यह तो संतोंकी वाणी है. वीतरागी मुनिओं है. आहाहा ! बापू ! मुनि किसे कहें ? अभी जिसको प्रयुर स्वसंवेदनकी दृष्टि ही प्रगट नहीं हुई है, वहां यह बात (कहांसे हो सकती है) ? मुनिपना तो प्रयुर स्वसंवेदन है. क्योंकि कारक अनुसार जो भाव—गुण है, उसके अनुसार सम्यग्दर्शन होता है और उसके अनुसार यारित्र होता है. कोई पंचमहाव्रत या रागके आश्रयसे यारित्र होता है, ऐसा नहीं है, आहाहा ! भारी कठिन (काम है), इसलिये लोग ऐसा कहते हैं कि, निश्चय...निश्चय ... (है). बापू ! निश्चय यानी सत्य. आहाहा ! सत्यका साहेबा भगवान आत्मा ! उसका सत् स्वरूप ऐसा है कि, सत्यके आश्रयसे जो परिणामन होता है, भावमयी क्रिया (होती है), यह उसका गुण है. निर्मलरूपसे परिणामना ऐसा उसका गुण है. मलिनरूपसे परिणामना, ऐसी कोई शक्ति—गुण नहीं है. आहाहा ! ऐसी बात (है) !

(बाह्य व्यवहारमें) तो (लोग) बेयारे सामायिक, पोसा करे और प्रतिक्रमण (करे), और मान ले कि, हो गया धर्म ! अरे ! बापू ! यह क्या है ? भाई ! तुजे (माझूम नहीं है). यह तो विकल्प—राग है. उसकी पर्यायमें षट्कारकका परिणामन है, परंतु धर्मी जवका परिणामन उससे रहित है, आहाहा ! समझमें आया ? उसे ऐसा मार्ग सुनने मिलता नहीं. यह तो परम सत्य ! सर्वज्ञकी श्री वाणी ! श्री वाणी—दिव्यध्वनि, उससे आया (हुआ) मार्ग यह है. आहाहा !

अक-अक शक्तिमें बहुत भरा है. अक भावमयी क्रियाशक्ति है. समझमें आया ? और यह भावमयी (क्रियाशक्ति) अनंत गुणमें निमित्त है. पहले जो भावमयी (कहा) था, वह भी अनंत गुणमें निमित्त है और यह भावमयी पवित्र क्रिया है वह भी अनंत गुणमें निमित्त है, वह भी पवित्र थी. भावमयी शक्ति (कही, उसमें विकृत) परिणामनसे रहित होना, वह भी भावमयी निर्मल (पर्याय) थी. निर्मल शक्तिकी परिणामन दशा अनंत गुणोंमें निमित्त है और पर्याय जो निर्मल हुई, उसमें इस शक्तिका परिणामन भी निमित्त है. आहाहा ! समझमें आया ?

“कारकोंके अनुसार परिणामित होनेरूप...” देखा ! आहाहा ! राग सहित होनेरूप परिणामन, यह बात धर्मीको नहीं. द्रव्यदृष्टिवंतको नहीं, ऐसा कहते हैं. द्रव्यदृष्टिवंतका अर्थ कि, जिसकी सम्यक्दृष्टि हुई, वस्तु अपंड अत्मेद त्रिकाल आनंदकंद प्रभु ! ऐसी दृष्टिमें — सम्यग्दर्शनमें सारा द्रव्यका आश्रय आया (उसे सम्यक्दृष्टि कहते हैं). अंदर भावमयी क्रियाशक्ति—गुण है (तो) श्रद्धा गुणमें भी उसका रूप है. श्रद्धागुण समकितरूप परिणामित

होता है, यह भावमयीक्रियाशक्तिका ही कार्य है, आहाहा ! समझमें आया ?

(लोग) कहते हैं न ? कि, यार कर्मके नाशसे केवलज्ञान होता है. तत्त्वार्थसूत्रमें (ऐसा) है. यह यर्था बहुत यही है. भाषिया यर्थामें है कि, यार कर्मके नाशसे केवलज्ञान पर्याय होती है. तत्त्वार्थसूत्रमें है. यहां कहा कि, सुन तो सही, नाथ ! तेरेमें अेक भावमयी क्रिया शक्ति है, उस कारणसे केवलज्ञानकी परिणति होती है. समझमें आया ? विकृत अवस्था है, उससे भी नहीं और पूर्वमें जो केवलज्ञानके पहले मोक्षका मार्ग था, उससे भी यह परिणामन नहीं, ऐसा कहते हैं. आहाहा ! समझमें आया ? पूर्वमें मोक्षमार्ग था तो उससे मोक्ष नाम केवलज्ञानकी पर्याय हुई, ऐसा नहीं. त्रिकावी शुद्ध कारक है, उसके अनुसार केवलज्ञानकी पर्याय उत्पन्न हुई है, आहाहा ! परसे तो नहीं (हुई) परंतु अपनी पूर्व पर्यायसे (भी) नहीं (हुई है). उससे तो नहीं लेकिन अपने गुणकी दूसरी पर्यायसे भी यह पर्याय नहीं (हुई). आहाहा ! समझमें आया ?

प्रत्येक गुणमें ऐसा रूप है कि, द्रव्यका आश्रय करनेसे प्रत्येक गुणकी पर्याय स्वतंत्र अपनेसे निर्मल परिणामन (रूप) होती है, दूसरी पर्यायसे नहीं, आहाहा ! कर्मका अभाव हुआ तो (भी) नहीं. मोक्षका मार्ग हुआ तो केवलज्ञान हुआ, ऐसा भी नहीं. आहाहा ! लोगोंको ऐसा सुनने मिले तो कठिन पडता है. दूसरे विपरीत रास्ते (पर) बढा दिया है. यह ४० (शक्ति) हुई. यहां पांच मिनीट बाकी रही.

अब ४१वीं शक्ति (लेते हैं). ऐसा मार्ग, बापू ! आहाहा ! सत्का पोकार है. अंदरसे पोकार होकर सत् जडा होता है. आहाहा ! उसे असत्य-विकारके शरणाकी कोई जरूरत नहीं है. व्यवहार रत्नत्रयके कारणकी उसे जरूरत नहीं है. आहाहा !

अपनेमें भावमयी शक्ति अथवा तो भावमयी क्रियाशक्ति (है). उसके कारणसे केवलज्ञानकी, सम्यग्दर्शनकी, सम्यक्ज्ञानकी, सम्यक्चारित्रकी निर्मल परिणति (होती है). आहाहा ! पंचमहाव्रतका परिणाम-द्रव्य चारित्र है तो उससे भावचारित्र होता है, ऐसा यहां नहीं है. वस्तुमें ऐसा नहीं है. समझमें आया ? उसमें भी बडा इर्क है, प्रभु ! क्या करें ? आहाहा ! अेकमें इर्क (आवे इसलिये) सबमें इर्क आयेगा. आहाहा !

अब ४१ (शक्ति). “प्राप्त किया जाता जो सिद्धरूप भाव...” क्या कहते हैं ? कर्म लेना है न कर्म ? “प्राप्त किया जाता जो सिद्धरूप भाव...” सिद्ध यानी पवित्र पर्याय. सिद्ध पर्याय यहां नहीं लेना है. यहां सिद्ध यानी निर्मल पर्यायरूप जो भाव प्रगट होता है, (उसकी बात है). समझमें आया ? “प्राप्त” ऐसा है कि नहीं ? “प्राप्त किया जाता..” है. सम्यग्दर्शनकी पर्याय, सम्यक्ज्ञानकी पर्याय, सम्यक्चारित्रकी पर्याय, केवलज्ञानकी पर्याय, अैसे प्रत्येक पर्याय लेनी.

प्राप्त किया जाता है जो सिद्धरूपभाव, जिस समय उत्पन्न होनेवाली है वह पर्याय सिद्ध (अर्थात्) योक्कस है. यह सिद्धरूपभाव (माने) सिद्ध भगवानकी बात नहीं. उस समयमें

જો પર્યાય ઉત્પન્ન હોતી હૈ, ઉસકો સિદ્ધરૂપ ભાવ કહતે હૈં. વહી પર્યાય ચોક્કસરૂપસે ઉત્પન્ન હોનેવાલી, ઉસકો સિદ્ધભાવ કહતે હૈં. આહાહા ! ભાષા ક્યા હૈ ? “પ્રાપ્ત ક્રિયા જાતા..” (ઐસા કહા) હૈ. પુરુષાર્થસે (પ્રાપ્ત ક્રિયા જાતા હૈ), આહાહા !

અનંત ગુણકા-શક્તિકા આશ્રય દ્રવ્ય ઓર દ્રવ્યકે આશ્રયસે-પુરુષાર્થસે પ્રાપ્ત ક્રિયા જાતા હૈ, આહાહા ! સમ્યગ્દર્શનરૂપી પર્યાય યહ કાર્ય (હૈ). યહ કર્મકા કાર્ય હૈ. કર્મ શક્તિકા યહ કાર્ય હૈ. કર્મ નામ કાર્ય. કર્મ શક્તિ હૈ ન ? કર્મ નામકી શક્તિ હૈ, કાર્ય શક્તિ (હૈ). ઉસકા કાર્ય વર્તમાન નિર્મલ પર્યાયકી પ્રાપ્તિ, યહ (કર્મ શક્તિકા) કાર્ય હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? યહ કાર્ય વ્યવહાર રત્નત્રયકા નહીં, યહ કાર્ય પૂર્વકી પર્યાયકા નહીં, આહાહા ! કિતના સિદ્ધ ક્રિયા હૈ !

પ્રાપ્ત ક્રિયા જાતા હૈ. પ્રાપ્ત યાની વર્તમાન પર્યાયમેં કાર્યરૂપ પ્રાપ્ત ક્રિયા જાતા હૈ, ઐસા ચોક્કસરૂપ ભાવ, “..ઉસમયી કર્મશક્તિ.” અંદર એક કર્મ નામકી શક્તિ હૈ, જિસમેં કાર્ય પ્રાપ્ત હોતા હૈ. નિર્મલ પર્યાયકી પ્રાપ્તિ હોતી હૈ. ઇસ કાર્યકા કારણ કર્મ શક્તિ હૈ. વિશેષ કહૈંગે...



જ્ઞાનદ્વારમાં સ્વરૂપ શક્તિને જાણવી. લક્ષણ જ્ઞાન, અને લક્ષ્ય આત્મા પોતાના જ્ઞાનમાં ભાસે છે. ત્યારે સહજ આનંદધારા વહે છે તે અનુભવ છે.

(પરમાગમસાર-૭૧૦)

प्रवचन नं. ३६

शक्ति-४१ ता. १५-०८-१९७७

प्राप्यमाणसिद्धरूपभावमयी कर्मशक्तिः ॥४१॥

समयसार, शक्तिका अधिकार है. ४० (शक्ति) तो छो गयी न ? (अब) ४१ (वीं शक्ति लेते हैं). शक्तिका अर्थ क्या है ? कि, आत्मा जो गुणी है—वस्तु, उसमें यह गुण है. गुणका परिणामन होना, वह पर्याय है. यहां निर्मल पर्यायकी बात है, मलिन पर्यायकी बात नहीं है. जो गुण है, यह पवित्र है और द्रव्य पवित्र है. शुद्ध कछो कि पवित्र कछो (अक ही बात है). उसकी पर्याय भी शुद्ध है. कर्मवर्ती शुद्ध पर्याय और गुणका अकर्मरूप होना (एन) दोनोंका समुदाय यह आत्मा है. रागकी पर्याय सहित आत्मको (यहां) आत्मा गिननेमें आया ही नहीं. आहाहा ! समझमें आया ?

(आत्मा) शरीर सहित तो नहीं (है). यह तो ४३ मिट्टी धूल है. परंतु दया, दान, व्रत, भक्ति, पूजाके भाव (रूप) राग सहित आत्मको यहां (आत्मा) गिननेमें आया ही नहीं. मात्र राग होता है, पर्यायमें षट्कारकसे अक समयकी दशामें विकृत अवस्था है. परंतु यहां तो विकृत अवस्थासे रहित (परिणामन होना, इसकी बात है). वह अपने आ गयी न ? भाव शक्ति (यल गयी). “(कर्ता, कर्म आदि) कारकोंके अनुसार जो किया उससे रहित **भवनमात्रमयी (-छोनेमात्रमयी) भावशक्ति.**” है. आहाहा ! अक भावशक्ति गुण उसको कहते हैं कि, जिसके कारण वर्तमानमें निर्मल पर्यायकी विद्यमानता हो, यह भावशक्ति—गुणका स्वरूप है. और अक भावशक्ति यह है कि, अक समयकी मलिन पर्याय द्रव्य-गुणमें नहीं, द्रव्य-गुणके कारण नहीं, परके कारण नहीं, अक समयकी पर्यायमें विकृत अवस्था याहे तो अशुभभाव हो कि शुभ (भाव), इसका वर्तमानमें षट्कारकसे परिणामन होकर, उससे रहितपने (परिणामन होना) यह आत्माकी पर्याय है. समझमें आया ?

यहां तो अपने ४१ वीं (शक्ति) यलती है. “प्राप्त किया जाता...” (अर्थात्) वर्तमान पर्यायमें प्राप्त कराता हुआ, प्राप्त करता हुआ. वर्तमान पर्यायमें निर्मल पर्याय प्राप्त करता हुआ. सम्यग्दर्शनकी, सम्यक्ज्ञानकी सम्यक्चारित्रकी, आनंदकी, वीतरागताकी, पर्यायको प्राप्त कराता

હુઆ, “જો સિદ્ધરૂપ..” (અર્થાત્) ચોક્કસરૂપ. “..ભાવ, ઉસમયી કર્મશક્તિ.”

યહાં કર્મ તો ચાર પ્રકારકે કહનેમેં આતા હૈ. એક જડકી કર્મ અવસ્થાકો ભી કર્મ કહનેમેં આતા હૈ. વહ તો ભિન્ન (હૈ). એક ભાવકર્મકો કર્મ કહનેમેં આતા હૈ. ઉસસે ભી ભિન્ન (હૈ). એક નિર્મલ પરિણતિકો ભી ભાવકર્મ કહનેમેં આતા હૈ. ઓર યહાં જો કર્મ શક્તિ હૈ, વહ તો ગુણરૂપ કર્મશક્તિ હૈ. આહાહા ! ભારી સૂક્ષ્મ (હૈ), ભાઈ !

જડ કર્મકી અવસ્થા—કર્મ, વહ ચીજ તો ભિન્ન રહી. ઓર દયા, દાન, વ્યવહાર રત્નત્રયકા વિકલ્પ જો રાગ વહ ભી ભિન્ન રહા ઓર નિર્મલ પર્યાયમેં કર્મ નામ કાર્ય હોતા હૈ, વહ નિર્મલ કર્મ શક્તિકા કાર્ય હૈ. કર્મ શક્તિકા કર્મ (કાર્ય) હૈ. શાંતિસે વિચાર કરના. સમજમેં આયા ?

આત્મામેં કર્મ નામ કાર્ય નામકા એક ગુણ હૈ. કર્મ નામકા યાની કાર્ય નામકા એક ગુણ હૈ. જિસ ગુણકે કારણ વર્તમાન પર્યાયમેં પ્રાપ્ત જો પર્યાય હોતી હૈ, વહ કર્મકા કાર્ય હૈ. વહ કર્મ ગુણકા કાર્ય હૈ. આહાહા ! ગજબ (બાત) હૈ ! સમજમેં આયા ?

શ્રોતા : યહ સમજકર ક્યા કરના ?

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : યહ સમજકર દ્રવ્ય પર દૃષ્ટિ દેકર, ગુણકે કારણસે પર્યાયમેં, વર્તમાનમેં સમ્યગ્દર્શન આદિ પર્યાયકા કાર્ય હોતા હૈ, એસા નિર્ણય કરના. કોઈ વ્યવહાર રત્નત્રયકે રાગસે સમ્યગ્દર્શનકી પર્યાયકા કાર્ય હોતા હૈ, એસા નહીં. ઓર દેવ, ગુરુ, શાસ્ત્રકે નિમિત્તસે કાર્ય હોતા હૈ, યહાં યહ (ભી) નહીં હૈ. યહાં તો નિર્મલ સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્ર, વીતરાગી મોક્ષમાર્ગકી પર્યાયકો પ્રાપ્ત કરાતા, ઉસ કાર્યકા કારણ કર્મ શક્તિ હૈ. અરે..! એસી બાત કભી સુની ન હો. ધ્રુવમેં એસી શક્તિ હૈ. ધ્રુવમેં કર્મ નામકી એક શક્તિ હૈ કિ, જિસસે વર્તમાન કાર્ય સુધરતા હૈ. ધીરેસે સુનો ! યહ તો પૈસેકી (જાતસે) દૂસરી જાત હૈ. આહાહા ! સુન તો સહી, પ્રભુ !

તેરેમેં આત્મદ્રવ્ય જો હૈ—ગુણી, ઉસમેં એક કર્મ નામકા ગુણ હૈ. કર્મ નામ કાર્ય હોનેકા એક ગુણ હૈ. ઇસ કર્મ ગુણકે કારણ વીતરાગી પર્યાય, જ્ઞાનકી પર્યાય, દર્શનકી પર્યાય, ચારિત્રકી પર્યાય, સ્વચ્છતાકી પર્યાય, યહ કર્મ (શક્તિકે) કારણસે (એસા) શુદ્ધ (કાર્ય) આતા હૈ. જડ કર્મ નહીં, ભાવકર્મ નહીં. નિર્મલ પરિણતિમેં જો કાર્ય હોતા હૈ, યહ કર્મ નામકે ગુણકે કારણસે કાર્ય સુધરતા હૈ, આહાહા ! કભી બાપ—દાદાને સુના ભી નહીં હૈ. આહાહા ! (સેઠ લોગ કહતે હૈ) હમને જૈસા સુના થા વૈસા માના થા. બાત તો સચ્ચી હૈ. આહાહા ! એસા દ્રવ્યકા માર્ગ (કોઈ અલૌકિક હૈ) !

ભગવાન આત્મા ! દ્રવ્ય જો વસ્તુ (હૈ), ઇસમેં કર્મ નામકા એક ગુણ હૈ. આત્મ દ્રવ્યમેં જૈસે જ્ઞાન નામકા ગુણ હૈ, શ્રદ્ધા નામકા ગુણ હૈ, આનંદ નામકા ગુણ હૈ—એસે કર્મ નામકા એક ગુણ હૈ. આહાહા ! કર્મ નામ કાર્ય સુધરનેકા કારણરૂપ કાર્ય. અંદરમેં કાર્ય હોનેકી એક શક્તિ હૈ. આહાહા ! એસી બાતેં (હૈ).

आत्मामें एक ऐसी शक्ति है—गुण है, जिसका सामर्थ्य है, इस द्रव्यमें गुणका घटना सामर्थ्य है कि, कर्म नामके गुणके कारण निर्मल पर्यायरूप कार्य होता है, आहाहा ! समझमें आया ?

ज्ञान (एक) गुण है. द्रव्य गुणी है (और) ज्ञान गुण है. उसमें भी कर्म (शक्तिका) रूप है. उस कारणसे अंदर ज्ञानकी निर्मल पर्यायरूपी कार्य (होता है). आहाहा ! ज्ञानावरणीय कर्म भिन्नक गये तो ज्ञानकी पर्याय हुई, ऐसा नहीं. जैसे ही पूर्वकी पर्याय निर्मल थी इसलिये वर्तमान निर्मल (पर्याय) हुई, ऐसा भी नहीं. आहाहा ! ऐसी बात कभी सुनने मिलती नहीं. समझमें आया ?

भगवान आत्मा ! परमात्मस्वरूपे बिराजमान (है). उसमें ज्वतर शक्तिसे लेकर कर्म शक्ति तक आये हैं. पहले एक अकार्यकारण शक्ति आ गयी. आत्मामें ऐसा एक अकार्यकारण (नामका) गुण है कि, जिसके कारण आत्मामें (निर्मल पर्याय) रागका कार्य नहीं और निर्मल पर्याय रागका कारण नहीं. समझमें आया ? यहां तो अब मात्र कार्य होता है, यह प्राप्त कार्य क्या होता है ? तो रागका कार्य नहीं और रागका कारण नहीं. समझमें आया ?

वस्तु जो भगवान आत्मा ! इसमें एक अकार्यकारण नामकी शक्ति है, गुण है, सत्व है, भाव है, स्वभाव है. आहाहा ! अरे भगवान ! आत्मा अनंत-अनंत शक्तिओंका भंडार है. समझमें आया ? तो कहते हैं कि, ज्वतरशक्तिमें भी जो ज्ञान, दर्शन, आनंद और सत्ताकी पर्याय प्राप्त होती है, (तो) अंदर ज्वतर शक्तिमें कर्म नामकी (शक्तिका) रूप है, उस कारणसे (निर्मल) पर्यायकी प्राप्ति होती है. आहाहा ! यह ज्वका ज्वन है. शरीरसे ज्वका ज्वन, यह ज्वन नहीं और अंदर भाव इन्द्रिय, मन, वचन, काया और दस भावप्राणसे ज्वन, यह ज्वका ज्वन नहीं, आहाहा !

ज्वका ज्वन तो उसको कहते हैं कि, जड कर्मके ज्वनसे भिन्न और अंदरमें भावइन्द्रिय आदिका कार्य उससे भी भिन्न (यह तेरा ज्वन है). आहाहा ! गजब (बात) है न ! प्रभु ! तेरे ज्वका ज्व (तो) वह है कि, भंड-भंड इन्द्रियसे रहित, जो भावइन्द्रिय (है, उससे) भी रहित ऐसा ज्ञानका परिणामन होना—अतीन्द्रिय ज्ञानका परिणामन होना, यह ज्वका ज्वन है, आहाहा ! भारी बातें ! जैसे और जवाहरातमें कभी सुना भी नहीं.

यहां तो कहते हैं कि, तेरे कार्यमें उतारना यह क्या है ? तेरा कार्यमें जो सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र, अतीन्द्रिय आनंदकी पर्यायरूपी (कार्य हुआ, उस) कार्यका कारण कौन ? कि तेरेमें एक कर्म नामका गुण है, (उसके कारणसे यह पर्याय हुई है). आहाहा ! कहां जड कर्म, कहां पुण्य-पाप, दया, दान भाव कर्म, कहां निर्मल परिणति—वर्तमान पर्यायरूपी कर्म ! और यह कर्म गुणरूपी कर्म ! आहाहा ! समझमें आया ? परंतु इस गुणरूपी कार्यका (कर्मका) कार्य क्या ? कि निर्मल शुद्ध पर्यायरूपी सुधरना, यह कर्म नामके गुणका कार्य है.

कभी सुना नहीं छो, ऐसा सभ है. बाप-दादाने तो सुना भी नहीं था.

यैतन्य भजानामें अेक कर्म नामका गुण पडा है न ? ऐसा कहते हैं. आहाहा ! कर्म नामकी शक्ति पडी है न ? ४३ कर्म नहीं, भावकर्म नहीं, उसमें पर्यायरूप कार्य आता है (वह) अेक कर्म नामकी शक्ति (है, उस) कारणसे (आता) है. आहाहा ! समजमें आया ? यहां तो ऐसा कहते हैं कि, व्यवहार रत्नत्रय कारण और निश्चय कार्य, यह बात ठीक जाती है, ऐसा नहीं है. समजमें आता है ? भैया ! भाषा तो बहुत सादी है. आहाहा ! क्या कहा ? कि, सम्यग्दर्शनरूपी पर्यायरूप कार्य (है), यह कार्य है. पर्याय कार्य है और व्यवहारसे द्रव्य, गुण कारण है. अब जो सम्यग्दर्शनकी पर्याय (है), निश्चयसे वीतरागी श्रद्धा (जो छोती है), उस श्रद्धाका प्राप्त करना उसका कारण कौन ? तो कहते हैं कि, कर्म नामका गुण है, (यह कारण है). आहाहा ! उस कारणसे समकित रूपी कार्य सुधरता है, आहाहा ! गजब बात है ! समजमें आया ? अेक-अेक शक्तिमें कितना संग्रह है !

यह कर्म शक्ति ध्रुव उपादान है और उसका निर्मल परिणामरूपी कार्य (है), यह क्षणिक उपादान है, आहाहा ! कर्म शक्ति जो त्रिकाल ध्रुव है, यह पारिणामिकभावसे है और उसका सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रके परिणामकी प्राप्ति (है), वह उपशम, क्षयोपशम और क्षायिकभावस्वरूप है. आहाहा ! कहते हैं कि, कर्मका उपशम छो तो यहां उपशमभाव हुआ, ऐसा नहीं है. कर्म नामका गुण है, उसके कारण उपशमभावकी पर्यायरूपी कार्य सुधरा. कभी, कहीं सुना नहीं है. यह जैन दर्शन (है) ! आहाहा ! अभी तो दया पावो, व्रत करो, भक्ति करो, पूजा करो (ऐसा सभ चलता है). ये सेठ लोगोंको कुरसद मिलती नहीं और द्यो घडी-यार घडी वैसा (सभ) कर आये, (तो मान लेते हैं कि) छो गया धर्म ! अरे भगवान ! (कोई कहता है) निर्विकल्प सम्यग्दर्शन तो सातवें (गुणस्थानकी) बात है. यहां तो यौथे (गुणस्थानकी) वीतरागदशाकी बात है.

ऐसी यर्था दुई थी, भाई ! (कोई वर्तमानके द्विगंबर मुनि ऐसा भी मानते हैं, उसे पूछा गया) कि, समकित किसे कहते हैं ? (तो कहा), देव, गुरु, शास्त्रकी श्रद्धा यह समकित, बस ! यौथे गुणस्थानमें व्यवहार समकित होता है, आहाहा ! अरे प्रभु ! सुन तो सही नाथ ! यौथे गुणस्थानमें व्यवहार समकित है (और) आगे वीतराग समकित होता है, (ऐसा कहते हैं), अरेरेरे....!

यहां तो कहते हैं कि, सुन तो सही, नाथ ! तेरेमें अेक वीतरागभाव स्वरूप कर्म नामका गुण है. यह वीतरागभावस्वरूप है. कर्म गुण यह वीतराग भावस्वरूप है. उसका कार्य सम्यग्दर्शनकी वीतरागी पर्याय दुई, यह वीतराग स्वरूप कर्म गुण (है, उसका) कार्य है. यौथे गुणस्थानसे उसका कार्य है, आहाहा ! समजमें आया ?

यह शक्तिका वर्णन करके अमृतचंद्र आचार्यने भजाना भोल दिया है ! ओहोहो !

कर्म शब्द लगे हो परंतु कर्म शब्दका (अर्थ) आत्मामें कार्य होनेकी शक्ति है. पर्यायमें सम्यग्दर्शनका, सम्यक्ज्ञानका, सम्यक्चारित्रका, आनंदकी पर्यायका, वीर्यकी—स्वऋपकी रचनाका कार्य (होता है), (तो) प्रत्येक गुणमें कर्म (शक्तिका) रूप है, उस कारणसे उसमें निर्मल कार्य होता है. आहाहा ! यहां तो कहते हैं कि, भगवानकी यात्रा करनेसे निर्मल कार्य नहीं होता है, ऐसा कहते हैं.

यह तो शांतिसे समझनेकी चीज है. यह मार्ग तो वर्तमानमें विच्छेद हो गया है. समझमें आया ? संप्रदायमें तो यह बात विच्छेद हो गयी है. बापू ! प्रभु ! तू भगवान है न ! भग नाम ज्ञान-आनंदकी लक्ष्मी, इस कर्म शक्तिका भी तुम लक्ष्मीवान हो. आहाहा ! तेरी पर्यायमें सम्यक्दर्शन और धर्मकी पर्याय (ऋषी) कार्य, (होता है, तो) तेरेमें कर्म नामकी गुणलक्ष्मी पडी है, उससे कार्य होता है, आहाहा ! ऐसा बहुत सूक्ष्म मार्ग (है), बापू ! आहाहा !

अक-अक शक्तिमें इस कर्म नामके (गुणका) रूप है. जैसे ज्ञानस्वभाव है न ? ज्ञान गुण है न ? तो अक अस्तित्व भी गुण है. ज्ञानगुणमें अस्तित्व गुण नहीं (है) परंतु गुण 'है', गुण अपनेसे है, ऐसा अस्तित्वका रूप अपनेसे है. न्याय समझमें आया ? आहाहा ! भगवान आत्मामें ज्ञान गुण है, अस्तित्व गुण है, कर्म गुण है, श्रद्धा गुण है, आनंद गुण है, तो यहां कहते हैं कि, ज्ञानमें यह अस्तित्व गुण (गुणका रूप) हो, परंतु ज्ञानमें अस्तित्व गुण नहीं आया. परंतु ज्ञान 'है' ऐसा अस्तित्व गुणका रूप आया. ज्ञान 'है' वह अपनेसे है. अस्तित्व गुणके कारणसे नहीं, आहाहा ! ऐसी बातें ! समझमें आया ?

ऐसे अंदरमें त्रिकाली श्रद्धा गुण है. तो अस्तित्व गुणके कारणसे श्रद्धा गुण 'है', ऐसा नहीं, आहाहा ! ऐसा मार्ग (है) ! शक्तिका वर्णन (ऐसा है) !

मुझे विचार तो आया था कि, यलता विषय साधारण है. ये लोग जो बाहरगांवसे आये हैं उनके लिये कुछ विशेषता याहिये. शक्ति आदिका (वर्णन करनेका) लक्षमें आया था, तो यलता विषय छोड़कर शक्तिका वर्णन लिया है. आज तो शक्तिका उद् वां दिन है. गुजराती लोग तो हिन्दी समझ सकते हैं. हिन्दी भाषा सादी है (इसलिये हिन्दीमें यलता है). आहाहा !

यहां कहते हैं, प्रभु ! तू अक तो यह सिद्ध कर कि, मैं तो द्रव्य हूं और मैं ज्ञायक हूं, आहाहा ! मैं पर्याय नहीं, गुण लगे भी नहीं, राग भी नहीं, निमित्त भी नहीं, ऐसे ज्ञायकभावका जब तुझे निर्णय हो, तो (इस) निर्णयका कार्य (ऐसा आयेगा कि) ज्ञानगुणमें कर्म नामकी (शक्तिका) रूप है, उस कारणसे ज्ञानकी—ज्ञायककी निर्मल पर्याय हुई है, आहाहा !

अब यहां तो (लोग) यह कहते हैं कि, कर्मका क्षयोपशम हो तो ज्ञानकी निर्मल पर्याय हो ! आहाहा ! बडी चर्चा हुई थी न ? यह बात थी ही नहीं. हिन्दुस्तानमें (कहीं) नहीं थी. निमित्तसे होता है, (ऐसी सब बातें) थी. (अक) पंडितने कबूल किया था कि, हम सब पंडितोंकी पढाई निमित्त आधिनकी है. आप कहते हो, निमित्तसे कुछ नहीं होता, यह

પઢાઈ હમારી તો હૈ નહીં.

યહાં કહતે હૈ, સુન તો (સહી) નાથ ! આહાહા ! કહતે હૈ કિ, વ્યવહાર સમકિત યહ સમકિત હી નહીં. વ્યવહાર સમકિત તો વિકલ્પ-રાગ હૈ. વહ તો નિશ્ચય સમ્યગ્દર્શન (રૂપી) અપના કાર્ય, કર્મ શક્તિકે કારણ અથવા શ્રદ્ધા ગુણમે ભી કર્મકા રૂપ હૈ, ઉસ કારણ દ્રવ્યદૃષ્ટિ જહાં હુઈ તો શ્રદ્ધા ગુણકા કાર્ય સમકિત પર્યાય હોતી હૈ. ઇસમે કિતની શર્તે હૈ ? સમજમે આયા ? સમકિતકી પર્યાયકે સાથ રાગ હૈ તો આરોપસે કથન કહનેમે આતા હૈ કિ, યહ વ્યવહાર સમકિત હૈ (લેકિન વહ) હૈ તો રાગ. વહ સમકિતકી પર્યાય હૈ હી નહીં. પરંતુ યહાં તો જો રાગકી પર્યાય હૈ, વહ અપના કાર્ય તો નહીં, લેકિન નિર્મલ પર્યાય હુઈ, વહ ઉસકા (રાગકા) કાર્ય નહીં. આહાહા ! આત્મામે શ્રદ્ધા નામકી ત્રિકાલી શક્તિ હૈ, ગુણ હૈ. ઉસમે કર્મ શક્તિકા રૂપ હૈ, ઉસ કારણસે શ્રદ્ધાકા કાર્ય (આતા હૈ). શ્રદ્ધા ગુણમે કર્મ નામકા રૂપ હૈ, ઉસ કારણસે શ્રદ્ધાકી સમકિત પર્યાય સુધરતી હૈ. શ્રદ્ધા ગુણમે કર્મરૂપ કાર્ય (હોતા હૈ, વહ ઉસકે) કારણસે સુધરતી હૈ. મિથ્યાત્વ ટલ ગયા તો (કાર્ય સુધરા), વ્યય હુઆ તો (કાર્ય સુધરા), યહાં તો વહ ભી નહીં હૈ. આહાહા ! ગજબ બાત હૈ ! કર્મકા અભાવ હુઆ તો (કાર્ય) સુધરા વહ તો હૈ નહીં પરંતુ મિથ્યાત્વકા વ્યય હુઆ તો કામ સુધરા, ઐસા ભી નહીં.

યહાં તો સમ્યગ્દર્શનકા ઉત્પાદ્ જબ હુઆ, જહાં ચૈતન્ય ભગવાન પૂર્ણાનંદકી દૃષ્ટિ હુઈ, તો ઉસમે (કર્મ નામકા) ગુણ હૈ (ઉસ કારણસે શ્રદ્ધાકા કાર્ય સુધરતા હૈ). જ્ઞાનમે, શ્રદ્ધાગુણમે, ચારિત્રગુણમે, આનંદગુણમે કર્મકી શક્તિકા રૂપ હૈ, તો ઉસ કારણસે અંદર જ્ઞાનકી પર્યાયકા કાર્ય કર્મકે કારણસે (અર્થાત્) કર્મ (શક્તિકે) રૂપકે કારણસે સમ્યક્જ્ઞાન સુધરતા હૈ, આહાહા ! વાણીસે (કાર્ય) સુધરતા નહીં, ઐસા કહતે હૈ. શાસ્ત્ર વાંચનસે યહ કાર્ય સુધરતા નહીં, ઐસા કહતે હૈ.

યહ સબ નયા હૈ. સ્વાધ્યાય કરતા હૈ વહ વિકલ્પ હૈ. માર્ગ ઐસા હૈ, ભાઈ ! ઉસસે જ્ઞાન સુધરતા નહીં, ઐસા કહતે હૈ. જ્ઞાનકા સુધરના-સમ્યક્જ્ઞાનકા હોના, યહ જ્ઞાનગુણમે કર્મ શક્તિકા-ગુણકા રૂપ હૈ, ઉસ કારણસે જ્ઞાન સુધરતા હૈ, આહાહા ! ઐસા સ્વરૂપ હૈ.

અબ અંદર આત્મામે એક ચારિત્ર નામકા ગુણ હૈ. આત્મામે વીતરાગ ભાવરૂપી ચારિત્ર ગુણ અનાદિસે હૈ. ઇસ ગુણમે ભી કર્મ (શક્તિકા) રૂપ હૈ. ઉસ કારણસે ચારિત્ર ગુણકી નિર્મલ પર્યાયકા કાર્ય (કર્મગુણકે) કારણસે હોતા હૈ, આહાહા ! ચારિત્રગુણકા કાર્ય પંચમહાવ્રતકા વિકલ્પ હૈ, ઉસસે ચારિત્રગુણકા કાર્ય હોતા હૈ, ઐસા નહીં હૈ, આહાહા ! અભી સત્કી (કિસીકો) ખબર નહીં.

યહાં તો (લોગ) કહતે હૈ કિ, પંચમહાવ્રત પાલો, વ્રત પાલો ઉસસે નિશ્ચય (ધર્મ) હો જાયેગા. વહ તો કહતે હૈ, ચૌથે ગુણસ્થાનમે તો વ્યવહાર હી હોતા હૈ, ઐસા કહતે હૈ. આહાહા ! (સાતવે ગુણસ્થાનમે) નિશ્ચય (સમ્યગ્દર્શન) હોતા હૈ, (ઐસા માનતે હૈ). આહાહા ! (વર્તમાનકે

अेक द्विगंवर मुनि अैसा वलषकर गये हैं). वीतराग समकित्ती-निश्चय समकित्ती तो सातवें निर्विकल्प (गुणस्थानमें) होते हैं. अरे भगवान ! तेरेमें श्रद्धा गुणकी शक्ति त्रिकाल है कि नहीं ? श्रद्धागुणमें कर्मका गुण है कि नहीं ? कर्म शक्तिका-गुणका रूप है कि नहीं ? श्रद्धागुणके कारण वीतरागी पर्याय प्रगट होती है, यह यौथे (गुणस्थानका) कार्य है, आडाडा ! निश्चय सम्यग्दर्शन-वीतरागी पर्यायका कार्य तो श्रद्धा गुणमें कर्मका रूप है, उस कारणसे वीतरागी पर्यायका कार्य सुधरता है, आडाडा !

व्यवहार समकितमें शम, संवेग, निर्वेग, अनुकंपा और आस्था (होती है, अैसा) कहते हैं न ? उन सब विकल्पसे रहित कर्म गुणके कारणसे अपनेमें कार्य आता है. आडाडा ! और इस कार्यकी सिद्धि यह अपना कार्य है, बाकी कोई रागकी सिद्धि, पुण्यभाव और बाहरकी अनुकूलता-पैसा, स्त्री, कुटुंब, परिवारका कार्य हो गया, (उसमें) धूलमें भी तेरी कार्य सिद्धि नहीं. आडाडा ! समजमें आया ? पांच-पचीस लाभ मिल गया तो अपनी कार्यसिद्धि हो गयी, (लेकिन) धूलमें भी (कार्यसिद्धि) नहीं.

श्रोता : भगवानकी दया है.

पूज्य गुरुदेवश्री : वहां कहां भगवानकी दया आयी ? (लोगोंको अैसा लगता है कि) प्रभुकी कृपासे अपनेको पैसा मिलता है तो भयं करे. धूलमें भी नहीं है, सुन न ! अभी कुछअेक तो अैसा कहते हैं, महाराजकी यह लकड़ी फिरती है इसलिये (पैसा मिलता है). धूल भी नहीं है लकड़ीमें ! यह तो हाथमें पसीना हो तो पसीना शास्त्रको छुअे तो अशातना होती है. उस कारणसे हाथमें लकड़ी (रभते) हैं. लकड़ीमें कुछ नहीं है. यह तो जड है, आडाडा ! उस प्रकारके पूर्वके पुण्य हो तो (पैसा) आ जाता है. उसमें तेरा कार्य क्या है ? यहां तो उसमें राग हो वह भी तेरा कार्य नहीं, (अैसा कहना है). आडाडा !

भगवान ! तेरा कार्य तो निर्मल पर्याय-वीतरागी कार्य होना, यह तेरा कार्य है. आडाडा ! (लोग) पूजा, भक्ति और १० दिनके अपवास करे (लेकिन) कि, यह रागका कार्य तेरा नहीं, अैसा कहते हैं. समजमें आया ? आडाडा !

ज्ञानगुणमें, दर्शनगुणमें, यारित्रगुणमें, आनंदमें (इत्यादि सभी गुणोंमें कर्म शक्तिका रूप है). आत्मामें आनंद गुण है. अतीन्द्रिय आनंदस्वरूप प्रभु ! अतीन्द्रिय आनंदका प्रभु आत्मा सागर है, तो उसमें भी कर्म नामके गुणका रूप है. उस कारणसे पर्यायमें अतीन्द्रिय आनंदका प्रगट होना, आनंदकी पर्याय सुधरनी, (यह) अतीन्द्रिय आनंदमें कर्म नामके (गुणका) रूप होनेके कारण सुधरता है, दूसरे गुणके कारणसे नहीं, आडाडा ! क्या कडा ? यह क्या आया ? अैसा कहते हैं कि, आत्मामें जो आनंदकी पर्याय प्रगट होती है, वह आनंद गुणमें कर्मका रूप है, उस कारणसे आनंद पर्याय सुधरती है, दूसरे गुणके कारणसे नहीं, दूसरी पर्यायके कारणसे नहीं, रागसे नहीं (और) निमित्तसे नहीं, आडाडा ! अैसा मार्ग (है) ! वीतराग

मार्ग यह है. आहाहा ! समझमें आया ? क्या चलता है ? ४१ वीं शक्ति चलती है.

शक्तिका अर्थ गुण. आत्मामें कर्म नामका अेक गुण (है). उस गुणको कर्म कहा. परंतु कर्मका अर्थ (आत्मामें अेक) अरुपी गुण है. कर्म नामका अेक अरुपी गुण है कि, जिस गुणके कारण वर्तमानमें निर्मल पर्यायका सुधरना, निर्मल पर्यायका कार्य होना, यह कर्म गुणका कार्य है. निर्मल..निर्मल..निर्मल..निर्मल... कमवर्ती पर्यायका कारण कर्म नामका गुण है. आहाहा ! समझमें आया ?

पहले अल्प पर्याय थी और बादमें शुद्ध हुए, विशेष शुद्धिकी वृद्धि हुई. संवरमें से निर्जराकी शुद्धि विशेष (हुई). निर्जराके तीन प्रकार हैं. अेक ४३ कर्मकी निर्जरा (होना). वह तो ४३ (का कार्य) हुआ. अेक अशुद्धताका जरना, उसका व्यय हो गया परंतु शुद्धिकी वृद्धि हुई, उसको भी निर्जरा कहते हैं. (यहां) कहते हैं कि, शुद्धिकी वृद्धिका कार्य यह कर्म नामकी शक्ति है, (उसके कारणसे होता है). रागकी निर्जरा, अशुद्धताकी निर्जरा (होकर) उसमें जो (विशेष) शुद्धिकी वृद्धि हुई, यह कर्म नामके गुणके कारणसे है, आहाहा ! पूर्वमें निर्मल पर्याय थी, इसलिये दूसरे समयमें वृद्धि हुई, अैसा भी नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? पूर्वमें भोक्षमार्गकी पर्याय थी तो वहां भोक्ष नाम केवलज्ञानकी पर्याय हुई, अैसा नहीं. सिर्फ ज्ञानगुणमें कर्मका रूप है, उस कारणसे केवलज्ञानकी पर्यायका स्वतंत्र कार्य (होता है). केवलज्ञानका कार्य सुधरता है. आहाहा ! अपनी पर्याय सुधरती है तो (उसमें कर्म शक्ति) कारण है. (यह बात) कहीं है ही नहीं. श्वेतांबरमें तो नाम भी नहीं है. धीरे..धीरे..तो कहते हैं, भाई !

श्रोता : आप तो गहराईमें ले जाते हो !

पूज्य गुरुदेवश्री : यह मार्ग गहरा है न ! आहाहा !

भगवान ध्रुवस्वरूप है, उसमें यह कर्म नामका गुण (है) वह भी ध्रुवस्वरूप (है). परंतु इस कर्म नामके गुणका कार्य क्या ? यह कर्म नाम कार्य गुण है, उसका पर्यायमें कार्य क्या ? आहाहा ! निर्मल सम्यग्दर्शन, निर्मल सम्यक्ज्ञान, अतीन्द्रिय आनंदका वेदन, यह सब निर्मल (कार्य) कर्म नामकी शक्तिके कारण है, आहाहा ! बहुत बातें समा दी हैं !

कर्म नामकी शक्ति अनंत गुणमें व्यापक है. कर्म नामकी शक्ति अनंत गुणमें निमित्त है. कर्म नामकी शक्ति, उसकी निर्मल कमवर्ती पर्याय और इन सभी शक्तिओंका समुदाय दोनों मिलकर आत्मा है, आहाहा ! यहां तो निर्मल पर्याय संहितको आत्मा गिननेमें आया है.

नियमसारमें जो ३८ गाथामें दिया है. वहां तो पर्याय बिनाका त्रिकाली आत्माको आत्मा कहा है. परंतु त्रिकाली आत्माको आत्मा कहा तो त्रिकाली (आत्मा) जाननेमें आया, उसको त्रिकाली (आत्मा) है. परिणामनके साथ लेना है. आहाहा ! क्या कहा ? नियमसार ३८ गाथामें त्रिकाली द्रव्य स्वभावको त्रिकाली आत्मा कहा.

यहां तो त्रिकावी स्वरूप है – इस स्वरूपकी अस्तिका स्वीकार निर्मल पर्यायमें हुआ तो, इस निर्मल पर्याय सहित और गुण सहितको आत्मा कहते हैं. मात्र 'है'.. 'है'.. (अैसी उपर-उपरकी बातमें आत्माकी प्रतीति नहीं होती). पर्यायमें उसकी कबूलात आयी और पर्यायमें निर्मलता हुई, (तो) यह निर्मलताकी कमवर्ती पर्याय और अकम गुण अेक साथ दोनोंका समुदाय, यह आत्मा है. अैसी बातें (हैं) !

लोग कहते हैं कि, व्रत करो, अपवास करो, तपस्या करो, दया पालो (तो हो गया धर्म) ! आहाहा ! (यह) सब करके मर गया, सुन न ! वह तो रागकी क्रिया है. जो उसके गुणमें भी नहीं है और उसकी पर्यायमें भी नहीं है. रागकी क्रिया तो उसकी पर्यायमें भी नहीं है. उसको द्रव्यकी पर्याय कहते हैं, आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! फिर लोग तो अैसा कहते हैं कि, ये सोनगढवालोंने नया धर्म (निकावा) ! परंतु यहां क्या कहते हैं ? ये कहां सोनगढका पुस्तक है ? अेक-अेक शक्तिमें कितना भरा है ! आहाहा ! समझमें आया ?

प्राप्त करता हुआ-प्राप्त करता हुआ-कार्यको प्राप्त करता हुआ जो सिद्धरूप भाव (अर्थात्) योक्कसरूप भाव, उसमयी कर्मशक्ति. आहाहा ! अपने आप ही पढे तो कुछ समझमें नहीं आये अैसा है. धतने शब्दमें धतना सारा भरा है ! कितना भरा है ! सब ञोलने जाये तो घंटोंके घंटो यले जाये, आहाहा ! समझमें आया ?

अेक-अेक शक्ति पारिष्णामिकभावस्वरूप है और उसका कार्य जो है, यह उपशम, क्षयोपशम (और) क्षायिकभाव स्वरूप है. आहाहा ! और यह उपशम, क्षयोपशम, क्षायिक भाव (है, उसमें) उदयभाव भी नहीं. आहाहा ! द्रव्य और द्रव्यका गुण, उसका जो कार्य है वह तो निर्मल है. उदयभाव उसका कार्य है ही नहीं. आहाहा ! वह तो पर्यायकी योग्यतासे उदय है. यहां तो द्रव्यदृष्टिमें कर्म नामके गुणके कारण अथवा षट्कारककी निर्मल पर्यायकी भावरूप भावमयी शक्तिके कारण निर्मल पर्याय उसका कार्य है, आहाहा ! व्यवहार रत्नत्रयका कार्य (उसका) नहीं. क्योंकि व्यवहार रत्नत्रयमें यह कर्म नामका गुण नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! पूर्व पर्याय निर्मल थी तो विशेष पर्याय (हुँ), शुद्धिकी वृद्धि (हुँ), अैसा भी नहीं, आहाहा ! समझमें आया ?

अनजानेको तो (अैसा लगे कि) यह क्या कहते हैं ? धर्मकी कुछ ञबर नहीं. संसारकी मजदुरी कर-करके मर गया. उसमें दो-पांय करोड रुपिया मिल जाये तो ओहोहो...! (हो जाता है). धूलमें भी कुछ नहीं है, सुन न ! तेरी बादशाही अंदर पडी है उस बादशाहीकी ञबर नहीं, भिभारी ! (अंतरके) आनंदको नहीं देभता है (और) यहांसे (सुभ) मिलेगा, इससे (सुभ) मिलेगा, (इस प्रकार) भिभारी (बन गया है). यकवर्ती भिभारी बनकर घुम रहा है ! यैतन्य यकवर्ती जिसमें अनंत गुणके यक पडे हैं, आहाहा ! निर्विकारी (यक पडे हैं). विकारी पर्यायका भिभारी हुआ. भिक्षा मांगता है. मुजे अैसे पैसेमें सुभ मिलेगा, धूलमें सुभ

मिलेगा, स्त्रीमें सुभ मिलेगा, अच्छा डोशियार लडका (पैसा कमानेवालेमें सुभ मिलेगा), (लेकिन वहां) धूलमें भी (सुभ) नहीं है. बिभारी ! बिभारा है ! रांक है ! आडाडा ! बादशाह तो भगवान अंदर बिराजते हैं. उसमें बादशाही शक्ति पडी है. शक्तिका परिणामन हो, यह बादशाही है. समजमें आया ? है उसमेंसे प्राप्त होता है, यह बादशाही है. ऐसी (कोई) यीज रागमें है ? सुभकी पर्याय, ज्ञानकी (पर्याय), आनंदकी (पर्याय) रागमें है ? कि उसमें से प्राप्त हो ? (रागमें तो) आकुलता है. दया, दान, भक्ति, पूजा आदिके भावमें आकुलता है, भाई ! आकुलतामें कर्म नामका गुण नहीं है और कर्म नामकी पर्याय भी नहीं, आडाडा ! वह तो पर्यायमें अद्वरसे उत्पन्न हुआ विकृत भाव है और उससे रहित होना, यह भावमयी शक्ति है. उसका गुण ऐसा है. आत्माका गुण ऐसा है कि, विकारके भावसे रहित होना, यह इसका गुण है. विकार करना ऐसा कोई गुण आत्मामें त्रिकालमें नहीं है. समजमें आया ? आडाडा ! देभो ! यह बात !

समयसार—आत्माका सार. समयसारका अर्थ यह है कि, द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म रहित यह समयसार (है). आडाडा ! यह समयसार कैसे प्रगट हो ? आडाडा ! कि, अपनेमें सार—कस—शक्ति पडी है, उस शक्तिको धरनेवाला आत्मा उसकी दृष्टि करनेसे शक्तिका कार्य सुधरता है. अनादिकावसे पर्यायमें बिगाडते आया है, आडाडा ! राग, विकल्प, शुभ (भाव करके पर्यायको बिगाडता आया है). आडाडा ! यह तेरा कार्य नहीं, प्रभु ! यह द्रव्य, गुणका कार्य नहीं, आडाडा ! रागादि शुभभाव यह कोई तेरे द्रव्य, गुणका कार्य नहीं. गजब बात है !

जैसे पुद्गलमें आठ कर्मकी पर्याय होती है तो पुद्गलमें कोई गुण नहीं कि, जो आठ कर्मकी पर्यायरूप परिणामे. (ऐसा) कोई गुण नहीं. समजमें आया ? पुद्गलमें कोई ऐसा गुण नहीं कि, (कर्मरूप) पर्याय होती है, इसलिये (यह कोई) गुणकी पर्याय है, (ऐसा नहीं है), आडाडा ! परमाणुमें भी कर्मरूपी पर्याय होनेका कोई गुण नहीं. पर्यायमें अद्वरसे मलिनता—विभाव उत्पन्न होती है. आडाडा ! जैसे भगवानमें (अर्थात्) भगवान आत्मामें विकार होना, विकार करना, ऐसी कोई शक्ति या गुण नहीं. आडाडा ! उसका गुण तो विभावरूप नहीं परिणामना, ऐसा उसका गुण है, आडाडा !

अरे...! अभी तत्व क्या है ? तत्वकी शक्ति क्या है ? और शक्तिकी पर्याय—कार्य कैसे होता है ? इसकी जबर नहीं और उसको धर्म हो जाये (यह कैसे हो सकता है) ? जैसे से धर्म नहीं होता है. शुभभाव है (उस रूप) नहीं परिणामना, ऐसा उसका गुण है. आडाडा ! व्रतका, तपका, भक्तिका, पूजाका, पडिमाका जो विकल्प है, यह विकार है. उस रूप नहीं परिणामना, (ऐसा) उसका गुण है. विकाररूप परिणामना ऐसा तेरेमें कोई गुण नहीं है, प्रभु ! आडाडा ! अरे...! धरकी जबर नहीं है और पर धरके आयरणमें स्व धरका आयरण मान लेता है,

आहाहा !

आत्मामें वीर्य नामका गुण है तो उसमें भी कर्म नामके गुणका रूप है — तो वीर्यकी पर्याय निर्मल हो—निर्मल पुरुषार्थ हो, यह वीर्यका कार्य है और दूसरे तरीके से कहें तो वीर्यका कार्य स्वरूपकी रचना करना (है). मूल (शक्तिमें) आया था. आत्मामें अंक बल है, वीर्य—बल है. उसका कार्य स्वरूपकी रचना करना. वीतरागी आनंद और ज्ञान आदि की रचना करना, यह वीर्यका कार्य है. रागकी—व्यवहारकी रचना करना, यह वीर्यका कार्य है ही नहीं. आहाहा ! बडा झूठ है, भाई ! अभी जबर नहीं है कि, कैसी श्रद्धाको श्रद्धा कहनी ? कौनसे ज्ञानको ज्ञान कहना ? इसकी जबर नहीं. आहाहा ! समझमें आया ?

(वर्तमान कोई द्विगंबर मुनिके) साथ (किसी की) यर्था लुयी थी. (वे कहते हैं), व्यवहार समकित है, यह समकित है. आहाहा ! मूलमें (बात यह है कि) इस बातकी किसीको जबर नहीं.

भगवान तीन लोकका नाथ, आनंदकंद प्रभु ! उसमें ऐसी शक्ति है कि, विकाररूप नहीं होना परंतु विकार है, उससे रहित होना, ऐसा उसमें गुण है. उसके बटवे (ऐसा मानते हैं कि), अकेले व्रत, तप, भक्ति और परिभा लेकर हमे धर्म हो जायेगा. (ऐसी मान्यता) मिथ्या शय्य है. मिथ्यादृष्टि है—जूठी दृष्टि है. आहाहा !

श्रोता : जूठी दृष्टि कहां तक तो ठीक है, लेकिन मिथ्यादृष्टि (क्यों कहते हो) ?

पूज्य गुरुदेवश्री : मिथ्या कहां कि जूठी कहां, (अंक ही बात है). सम्यग्दर्शन कहां कि सत्य कहां, सत्यदृष्टि कहां, (अंक ही बात है). (इसीप्रकार) मिथ्यादृष्टि कहां कि जूठी दृष्टि कहां, (अंक ही बात है). आहाहा ! समझमें आया ?

हजारों रूपयेका पगार बुद्धिके कारणसे मिलते होंगे ? उसको लेकर सुभी है ? धूलको लेकर सुभी नहीं है. आठ हजार मिला, ऐसा विकल्प ठीका, यह दुःखरूप है. सब आकुलता है. ऐसा करूं..ऐसे काम करूं...ऐसा करूं... बडे लोग कहते हैं, वैसे काम करना. आहाहा ! (सब) आकुलताकी पीजशी है. पीजशी समझते हो ? इर्धको पीजते हैं न ? अंक पुष्पी पतम होती है बादमें दूसरी पुष्पी सांधते हैं. पुष्पी होती है न इर्धकी ? अंक पूरी करके दूसरी पुष्पी सांध देते हैं. वैसे, अंक आकुलता पूरी हो उतनेमें दूसरी आकुलता, दूसरी (आकुलता) पूरी हो उतनेमें, तीसरी आकुलता (शुरू हो जाती है). (इस तरह) आकुलताकी पीजशी करता है. यह कोई आत्माका गुण नहीं, आहाहा ! समझमें आया ?

ओहो ! बहुत है, बहुत भरा है ! अंक (बात) तो यह है कि, कर्म नामके गुणके कारण अपना निर्मल कार्य सुधरता है, वह भी उसकी (उस) समयकी उत्पत्तिका जन्म काल है, आहाहा ! शुद्ध समकित—सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान आदि उत्पन्न हुआ, उसका वह जन्मक्षण था. उत्पत्तिका वह काल था. उस गुणके कारण (हुआ, यह) कहना व्यवहार है. आहाहा !

गुण कारण और पर्याय कार्य, यह भी व्यवहारका उपचार कथन है. आहाहा ! ऐसी बात (है) ! अभी तो इसको व्यवहार कहते हैं, वहां लोग रागको व्यवहार कहकर (उससे) निश्चय होता है, (ऐसा कहते हैं. इसमें कहां कोई बातका भेद है ?) प्रभु ! बापू ! (ऐसी मान्यतामें) तेरे रज्जनेके रास्ते बंध नहीं होंगे, आहाहा ! अरे..! नरक और निगोदमें जाकर बसा. आहाहा !

श्रोता : यह रहस्य आपके सिवा कौन जोले ?

पूज्य गुरुदेवश्री : वस्तुस्थिति ऐसी है. भाई ! निगोदमें जायेगा. एक शरीरमें अनंत आत्मा, अनंत (जिवका) एक श्वास साथमें, आयुष्य साथमें, आहाहा ! वस्तु अलग, उसकी पर्याय अलग, आहाहा ! अरे..! वहां रहकर तेरा अनंत काल गया, प्रभु ! आहाहा ! प्रभु तो ऐसा कहते हैं न ? प्रभु ! माताके पेटमें १२-१२ साल रहा. साधारणरूपसे तो सवा नव महीनेको जन्म होता है. परंतु शास्त्र तो ऐसा कहते हैं कि, कोई-कोई स्त्रीके पेटमें (गर्भ) रह जाये (तो) १२ साल तक (गर्भ) रह सकता है. बारह सालके बाद जन्म होता है, आहाहा ! उलटे माथे, श्वास ले सके नहीं, यारों ओर कड़ (पडा डो), आहाहा ! यहां थोडा (श्वास नहीं ले सके और भिडकी बंध डो तो कहता है), भिडकी भोल ढो, भिडकी भोल ढो. (अरे..) वहां (गर्भमें) कहां भुल्ला है ? आहाहा ! भाई ! तुने १२-१२ साल माताके पेटमें (निकाले हैं). और दूसरी बात तो यह कहते हैं कि, प्रभु ! कदाचित् वह बारह सालके बाद जन्म (भी) ले (तो, मरकर) फिरसे वहां बारह साल रहता है. उसकी माताके पेटमें से (निकलनेके बाद) दूसरी माताके पेटमें (जाये). (इस प्रकार) एक साथ कुल २४ वर्ष हुआ. गर्भकी (उत्कृष्ट) कायस्थिति २४ सालकी है. आहाहा ! जैसे २४ वर्षकी कायस्थिति एक साथमें बितायी है. ऐसी अनंत बार बितायी है, नाथ ! आहाहा ! इस दुःभसे मुक्त होना डो तो तेरे द्रव्य स्वभावमें शक्ति पडी है, उसकी संभाल कर. समझमें आया ? दूसरी संभाल रहता है, उसके बढले शक्तिकी संभाल कर ! तेरी शक्ति है उसकी रक्षा कर ! आहाहा ! द्रव्यकी रक्षा कर, मेरा द्रव्य शुद्ध विद्वानंद ज्ञायक है, आहाहा ! मैं तो अतीन्द्रिय आनंदका सागर हूं. ऐसा (स्वरूप) 'है', ऐसी प्रतीति करी (तो) रक्षा की, (ऐसा कहा जाये). 'है' ऐसा नहीं मानना (उसने स्वरूपकी) हिंसा की. समझमें आया ? आहाहा ! बहुत भरा है ! बापू !

'प्राप्त किया जाता...' आहाहा ! निर्मल भाव प्राप्त होता है. सिद्धरूप-योक्करूप भाव उसमयी कर्मशक्ति है. कहां जड कर्म और (कहां) कर्म शक्ति-गुण ! (यह गुण तो) छत्रों द्रव्यमें है, प्रत्येकमें है. आहाहा ! उस कारणसे निर्मल पर्यायरूपी कार्य (होता है). तेरी (पर्यायमें) सुधार करना डो तो द्रव्य पर दृष्टि देनेसे, द्रव्यमें यह कर्म नामका गुण है, इस कारणसे तेरी पर्याय सुधरेगी. तब तुम सुधारक हुआ, नहीं तो बिगाडनेवाला है. आहाहा ! विशेष कहे...



प्रवचन नं. ३७

शक्ति-४१, ४२ - ता. १६-०८-१९७७

प्राप्यमाणसिद्धरूपभावमयी कर्मशक्तिः ॥४१॥
भवत्तारूपसिद्धरूपभावभावकत्वमयी कर्तृशक्तिः ॥४२॥

(समयसार, शक्तिका अधिकार यलता है). (४१ वीं शक्ति) “प्राप्त किया जाता...” यह तो गंभीर मंत्र है. वर्तमान पर्यायमें निर्मल पर्याय प्राप्त होती है, प्राप्त की जाती है, वह “सिद्धरूप भाव...” वर्तमान जो निर्मल परिणति है, उस रूप भाव. सिद्धरूप भाव यानी परिणतिरूप भाव. सभरेका विषय सूक्ष्म है. सिद्ध यानी सिद्ध (परमात्मा) नहीं. त्वविष्यमें होनेवालेको सिद्ध कहते हैं. वर्तमान जो होनेवाला भाव उसका नाम सिद्ध. सिद्ध यानी सिद्ध पर्याय नहीं. आहाहा ! समझमें आया ?

प्राप्त किया जाता है जो सिद्धरूप भाव (अर्थात्) सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, आनंद आदि अनंत गुणकी निर्विकारी निर्मल पर्याय प्राप्त की जाती है, ऐसा जो भाव उसमयी कर्मशक्ति. इस कर्म शक्तिके कारण और अनंत गुणमें कर्म शक्तिका रूप (होनेके) कारण (अनंत गुण अपनी निर्मल पर्यायको प्राप्त करता है). अक-अक गुण अपनी निर्मल पर्यायको प्राप्त करे, यह कर्म (गुणका) स्वरूप है. और कर्म शक्तिका स्वरूप निर्मल पर्याय प्राप्त करे, यह कर्म शक्तिका स्वयं कार्य है. आहाहा ! ऐसी बात है ! कल अक घंटा तो चल गई है. आज तो अपने कर्तृत्व शक्ति लेनी है. समझमें आया ?

ज्ञायकरूप भाव उसमें कर्तृत्व नामका अक गुण है, शक्ति है, आहाहा ! कर्तृत्व गुणके कारण वर्तमानमें भावकपनामयी भाव..., है ? “होनेपनरूप और सिद्धरूप भाव...” यानी वर्तमान योक्कस भाव. “...भावके भावकत्वमयी...” भावके करनेरूपमयी. भावका ‘क’ यानी करनेरूपमयी कर्तृत्वशक्ति. छतना तो शब्दार्थ हुआ. समझमें आया ?

यह शक्ति द्रव्य स्वभावमें पडी है. द्रव्य स्वभावको जिसने दृष्टिमें लिया, उसको स्वरूप कर्तृत्वशक्तिके कारण, कर्तृत्व शक्ति सीधी परिणमती नहीं (लेकिन) कर्तृत्व शक्तिका आश्रय द्रव्य, इस द्रव्यका परिणमन होता है तो (कर्तृत्वशक्तिका परिणमन होता है). वर्तमान जो

સિદ્ધ—ચોક્કસરૂપ નિર્મલ પર્યાય—ભાવ, ઉસ-ઉસ સમયકી નિર્મલ પર્યાય—વીતરાગી સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન આદિ પરિણમનરૂપી ભાવમેં (કર્તૃત્વશક્તિ નહીં, પરંતુ) કર્તૃત્વ શક્તિકા રૂપ હોનેસે, જ્ઞાનકી વર્તમાન નિર્મલ પર્યાયકા ભાવકા કર્તૃત્વ, એસા જ્ઞાનગુણમેં કર્તૃત્વકા રૂપ પડા હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ? ભાષા કિતની ભી સાદી કરે, લેકિન વસ્તુ તો જો હૈ વહ (આતી હૈ), આહાહા !

“હોનેપનરૂપ..” વર્તમાનમેં વીતરાગી પર્યાય, ગુણકી નિર્મલ પર્યાય હોનેરૂપ. “સિદ્ધરૂપ..” (યાની) જો હોનેવાલી હૈ યહ ચોક્કસ હૈ. વહ પર્યાય ઉસ સમયમેં હોનેવાલી સિદ્ધરૂપ (હૈ). “ભાવકે ભાવકત્વમયી...” (અર્થાત્) એસા જો વર્તમાન ભાવ ઉસકા ભાવકમયી—ઉસ ભાવકા કર્તૃત્વમયી, ઉસ ભાવકે કર્તાપનામયી કર્તૃત્વશક્તિ હૈ. આહાહા ! વર્તમાન પર્યાયરૂપ—વર્તમાન જો નિર્મલ પર્યાય હોનેરૂપ, ઇસ ભાવકે ભાવકત્વમયી (યાની) ભાવકો કરનેવાલી કર્તૃત્વ શક્તિ હૈ. સિદ્ધ શબ્દકા અર્થ સિદ્ધ પર્યાય નહીં લેના. સિદ્ધ (યાની) ચોક્કસ પર્યાય લેના. કલ ભી કર્મ શક્તિમેં, “પ્રાપ્ત ક્રિયા જાતા સિદ્ધરૂપ ભાવ” કહા થા. સિદ્ધ યાની સિદ્ધ પર્યાય નહીં લેના. સિદ્ધ પર્યાય ભી આ જાતી હૈ પરંતુ અકેલી સિદ્ધ પર્યાય નહીં (લેની હૈ).

વર્તમાનમેં હોનેરૂપ—સિદ્ધરૂપ અર્થાત્ જો નિર્મલ પર્યાય ઉસ કાલમેં હોનેવાલી ચોક્કસરૂપ ઉસ ભાવકા ભાવકપનામયી (યાની) ભાવકા કરનેપનામયી (કર્તૃત્વશક્તિ). આહાહા ! એસી બાત હૈ ! સમજમેં આયા ? આહાહા !

એક સાદી ભાષા બહેનશ્રીકે (વચનામૃતમેં આ ગયી). બહુત સાદી ભાષા હૈ. ગુજરાતી હૈ, હિન્દીમેં સમજ લેના. “જાગતો જીવ ઊભો છે ને...” એસા કહા હૈ. “જરૂર પ્રાપ્ત થાય..” ક્યા કહા ? જાગતો યાની જ્ઞાયકભાવ. યહ જ્ઞાયકભાવ—ત્રિકાલી જાગતો યાની જ્ઞાયકભાવ. જાગતો જીવ ઊભો છે ને ! ધ્રુવ છે ને ! યહ ભાષા (હૈ). આહાહા ! ક્યા કહા ? સમજમેં આયા ? જ્ઞાયક..જ્ઞાયક.. જાગૃત સ્વભાવભાવ, ત્રિકાલી જ્ઞાયક જાગૃત સ્વભાવભાવ, એસા જાગતા—જાગૃત સ્વભાવમયી જીવ ઊભો છે ને ? ઊભો યાની હૈ ન ! હૈ ન ! ત્રિકાલ હૈ કિ નહીં ? સમજમેં આયા ? બહુત સાદી ભાષા હૈ. ઇસ પુસ્તકકે તો બહુત પ્રકારકે પુસ્તક હોંગે, એસા લગતા હૈ. મરાઠી હોગા, કન્નડ હોગા, હિન્દી હો રહા હૈ. અરે..! સુને તો સહી !

ક્યા કહા ? હૈ ? ૧૬ વાં પન્ના હૈ. જાગતો જીવ ઊભો છે ને ! અર્થાત્ જ્ઞાયકભાવ ટિકતા હુઆ ભાવ હૈ ન ! આહાહા ! સમજમેં આયા ? જાણક સ્વભાવ ભાવ ઊભો છે ને ! ઊભો યાની ધ્રુવ હૈ ન ! તો ઉસ ઓર નજર કરને પર જરૂર પ્રાપ્ત હોગા, આહાહા ! સમજમેં આયી કિ નહીં ભાષા ? જાગૃત સ્વભાવ યાની યહ જ્ઞાયકભાવ.

જાગૃતભાવ નામ જ્ઞાનભાવ—જ્ઞાયકભાવ—સ્વભાવ ભાવ—ત્રિકાલી જ્ઞાયકભાવ—જાગતો ભાવ. યહ જીવ (યાની) જાગૃત ભાવરૂપી જીવ ઊભો છે ને ! ત્રિકાલી ટિકતા હુઆ તત્ત્વ હૈ ન ? સમજમેં આયા ? જાગૃત સ્વભાવ યાની જ્ઞાયક સ્વભાવમયી, આહાહા ! જિસે છઠ્ઠી ગાથામેં જ્ઞાયક કહા, “णવિ હોદિ અપ્પમત્તો ણ પમત્તો જાણગો દુ જો ભાવો!” જ્ઞાયકભાવ,

પ્રજ્ઞા બ્રહ્મ સ્વરૂપ ભગવાન ! જાગૃત સ્વભાવકા શક્તિવાન. 'હૈ' ઊભો નામ 'હૈ' આહાહા ! 'હૈ' જાગૃત સ્વભાવરૂપી ભાવ કાયમી હૈ. ઉસ પર દૃષ્ટિ દેનેસે જરૂર પ્રાપ્ત હોગા. યે શુદ્ધરૂપ ભાવ-વસ્તુમેં જો શક્તિયાં હૈ, જાગૃતભાવરૂપી જ્ઞાયકભાવ, ઉસમેં કર્તૃત્વ શક્તિ હૈ. વહ ભી ધ્રુવ હૈ. જ્ઞાયકભાવ-જાગૃત સ્વભાવ એસા જીવ જો ધ્રુવ હૈ, ઉસમેં કર્તૃત્વ શક્તિ ભી ધ્રુવરૂપ પડી હૈ, સમજમેં આયા ? ઇસ જ્ઞાયકભાવકી દૃષ્ટિ કરનેસે, કર્તૃત્વ શક્તિકા ભી પ્રત્યેક ગુણમેં રૂપ હોને સે, વર્તમાનમેં નિર્મલ પર્યાય-ભાવકા કર્તૃત્વશક્તિકે કારણ, વર્તમાન નિર્મલ ભાવ હોગા.

જ્ઞાનકે નિર્મલ ભાવમેં જ્ઞાન કર્તા હૈ. જ્ઞાયક ત્રિકાલ હૈ. પરંતુ જો જ્ઞાન ગુણ હૈ, ઉસમેં કર્તૃત્વ (શક્તિકા) રૂપ હૈ. યહ જ્ઞાન ગુણ કર્તૃત્વ ગુણ સહિત હોનેસે કર્તૃત્વ ગુણકા સીધા પરિણમન નહીં (હોતા). પરંતુ ઇસ કર્તૃત્વકો ધારણ કરનેવાલા જ્ઞાયકભાવ હૈ, એસા જ્ઞાયકભાવકા પરિણમન હોનેસે, કર્તૃત્વ શક્તિકા ભી સાથમેં પરિણમન હોતા હૈ. તો ક્યા હોતા હૈ ? નિર્મલ આત્મધર્મ – શાંતિ, વીતરાગતા, સ્વચ્છતા, જ્ઞાનમેં જ્ઞાનકે નિર્મલ પરિણામ કર્તૃત્વ શક્તિકે કારણ નિર્મલ પરિણામકા કાર્ય હોતા હૈ, આહાહા ! બહુત ધ્યાન રખને જૈસા હૈ. બાપૂ ! યહ ગંભીર શક્તિ (હૈ). ઓહોહો ! ગજબ કામ ક્રિયા (હૈ) !

જ્ઞાયકભાવ-જાગૃત સ્વભાવભાવ, એસા જીવ પ્રભુ ! ઉસમેં કર્તૃત્વ નામકી શક્તિ નામ ગુણ હૈ. જ્ઞાયકભાવમેં કર્તૃત્વ ગુણ ભી ધ્રુવ હૈ. પરંતુ જ્ઞાયકભાવકી પ્રતીતિ હુઈ તો પર્યાયમેં જ્ઞાનગુણકે નિર્મલ ભાવકા કર્તા કર્તૃત્વશક્તિ હૈ, ઉસ કારણસે નિર્મલ પર્યાય પ્રગટ હોતી હૈ. કોઈ કર્મકા અભાવ હુઆ તો નિર્મલ પર્યાય પ્રાપ્ત હોતી હૈ, કિ પૂર્વમેં પર્યાય થી તો નિર્મલ પર્યાય વર્તમાનમેં (પ્રાપ્ત હુઈ, એસા નહીં હૈ). ઇસલિયે સિદ્ધ કહા. અંદર નિર્મલ કર્તૃત્વ શક્તિકે કારણ જ્ઞાનકે વર્તમાન નિર્મલ પરિણામકી પ્રાપ્તિ (હોતી હૈ). મતિ, શ્રુત, અવધિ, મન:પર્યય ઓર કેવલ(જ્ઞાન) પ્રાપ્તિકા કારણ કર્તૃત્વ શક્તિ હૈ, આહાહા ! એસી બાર્તેં કભી સુની ન હો ઓર ધ્યાન દે નહીં (તો કેસે સમજમેં આયે) ?

જાગૃત જ્યોત જો ભગવાન આત્મા ! જ્ઞાયકભાવસે ભરા પડા (હૈ), આહાહા ! પુણ્ય ઓર પાપ આદિ તો અંધેરા હૈ. યહ અંધેરા સ્વભાવમેં નહીં. ઇસ સ્વભાવમેં કર્તૃત્વ નામકી એક શક્તિ નામ ગુણ હૈ. જિસ ગુણકે કારણ જ્ઞાનકી વર્તમાન નિર્મલ પર્યાય જો સિદ્ધ નામ હોનેવાલી હૈ, ઉસકા કર્તા કર્તૃત્વ શક્તિ હૈ. સમજમેં આયા ? નિશ્ચયસે કર્તૃત્વ શક્તિ ન લો તો ઇસ નિર્મલ પર્યાયકા કર્તા દ્રવ્ય હૈ. આહાહા !

યહ સબ ઝઘડે હૈ ન ! વ્યવહારસે હોતા હૈ, નિમિત્તસે હોતા હૈ, આહાહા ! (ઉસકા સમાધાન હૈ). પૂર્વમેં નિર્મલ પર્યાય થી તો પીછે નિર્મલ પર્યાય હોગી, યહ (બાત) યહાં નિકાલ દેતે હૈ. યહાં તો વર્તમાન જ્ઞાનકી જો સમ્યક્જ્ઞાનકી પર્યાય, મતિ-શ્રુતજ્ઞાનકી પર્યાય યા કેવલજ્ઞાનકી પર્યાય ઉસ-ઉસ કાલમેં હોનેરૂપ પર્યાય હૈ, ઉસ-ઉસ પર્યાયરૂપી ભાવકા ભાવકપનમથી (યાની)

उस भावका भावक कर्तापनामयी, आत्मामें कर्तृत्व शक्ति है. थोड़े शब्दोंमें छतना भरा है ! आछाछा !

प्रभु ! तेरी ऋद्धि तो देख ! तेरी समृद्धिकी संपदा तो देख ! आछाछा ! तेरेमें कर्तृत्व नामकी अेक शक्ति-संपदा पडी है. उस कारणसे ज्ञान गुणकी वर्तमान निर्मल पर्याय श्रुतज्ञान है; तो उसकी प्राप्ति भी भावकी भावकमयी कर्तृत्व शक्तिके कारण है. और बादमें केवलज्ञान छोता है, वल भी कर्तृत्वशक्तिके कारण (छोता है). वर्तमान केवलज्ञानकी पर्याय सिद्धरूप जो योक्कस छोनेवाली है, उसका कर्तृत्व शक्ति कारण है, आछाछा ! भारी कठिन काम, भाई ! बनियेको बहुत आता नहीं.

तीनलोकका नाथ अंदर जगृत स्वभावसे भरा हुआ ध्रुवरूपसे परमात्मा बिराजमान है, आछाछा ! उसमें कर्तृत्व नामका अेक गुण है. गुणीमें गुण है, परंतु दृष्टिमें गुणी और गुणका भेद भी नहीं. आछाछा ! दृष्टिमें त्रिकाली ज्ञायक गुणी जगृत ज्योति यैतन्य प्रकाशकी मूर्ति (है). समजमें आया ? उस पर दृष्टि करनेसे, कर्तृत्व शक्तिके कारण, द्रव्यके गुणके कारण, वर्तमान ज्ञानकी निर्मल पर्यायका कर्ता, यल गुण है अथवा यल द्रव्य है. आछाछा ! समजमें आया ? आछाछा !

अैसे दर्शन गुण (में लेना). दर्शन गुण जो वर्तमानमें है, यक्ष, अयक्ष, अवधि दर्शनकी निर्मल पर्याय जो वर्तमान सिद्ध वली छोनेवाली है, अैसे भावके भावकमयी (यानी) उस भावके कर्तामयी कर्तृत्व शक्ति है. आछाछा ! समजमें आया ? इसमें छतना समा दिया है कि, कोई कर्मका क्षयोपशम हुआ तो यलं ज्ञानकी पर्याय प्राप्त हुई, अैसा नहीं. यक्ष दर्शन या अवधि दर्शनावरणीके अभावसे दर्शनकी पर्याय प्राप्त हुई, अैसा भी नहीं. केवलदर्शनावरणीयके अभावके कारण केवलदर्शन प्राप्त हुआ, अैसा भी नहीं. आछाछा !

भाषिया यर्यामें यल बडी तकरार थी न ? तत्त्वार्थसूत्रमें लिखा है, यार कर्मका नाश छोनेसे केवलज्ञान छोता है. परंतु उसका अर्थ क्या ? उस समयमें कर्मका क्षय उसके कारणसे छोता है. परंतु उस कारणसे यलं केवलज्ञानकी प्राप्ति छोती है, अैसा नहीं. केवलज्ञानकी पर्याय उस समयमें सिद्धरूप छोनेवाली पर्यायका भावका— केवलज्ञानरूपी भावका भावकमयी - उस भावकी कर्तामयी कर्तृत्व शक्ति है, आछाछा ! अैसी भाते (है) !

भगवान तेरेमें (अेक) दशि शक्ति है. दशि शक्तिमें भी कर्तृत्व शक्तिका रूप है. तो दशि शक्तकी वर्तमान रूप दर्शन पर्याय प्राप्त छो, उसमें कर्तृत्व (शक्तिका) रूप है, यल (शक्ति) उसकी कर्ता है. और कर्म शक्तिमें भी अपनी कर्म शक्तिकी जो निर्मल पर्याय छोती है, उसका भावकका भावमयी कर्तृत्व शक्ति कारण है. आछाछा ! प्रत्येक गुणकी वर्तमान निर्मल प्राप्त छोती है, उसमें कर्तृत्व शक्तिका रूप है, उस कारणसे वल कर्तारूपसे उत्पन्न छोती है, आछाछा ! सत्यकी स्थिति छी अैसी है, समजमें आया ?

ऐसे यारित्र गुण (में लेना). आत्मामें अेक अकषाय भाव नामका, यारित्र नामका गुण है. इस गुणमें भी कर्तापनाका रूप है. कर्तृत्व गुण भिन्न है, परंतु कर्तृत्वका उसमें रूप है, उस कारणसे वर्तमानमें निर्मल वीतरागी पर्याय सिद्धरूपसे – योक्कसरूपसे प्राप्त होनेवाली है, उसका कर्ता यह कर्तृत्वका रूप है. यारित्रगुणमें कर्तृत्व (शक्तिका) रूप है. उसका कर्ता वह है, आडाडा ! यारित्रगुणकी वीतरागी पर्याय प्राप्त हो, उसमें ज्ञान-दर्शनमें कर्तृत्व है, यह काम नहीं करता है, ऐसा कहते हैं. वह तो यारित्रमें कर्तृत्वका रूप है, उस कारणसे यारित्रकी पर्याय प्राप्त होती है, आडाडा ! ऐसा सूक्ष्म है, बापू !

आत्मामें आनंद नामकी शक्ति है. सुभस्वरूप (शक्ति है). भगवान आत्मामें अेक सुभ स्वभाव है. सुभ स्वभावका धरनेवाला द्रव्य है. सुभ शक्तिमें कर्तृत्व शक्तिका रूप है. इस कारणसे सुभकी प्राप्ति, वर्तमानमें आनंदकी (प्राप्ति) होती है, यह सुभ गुणमें कर्तृत्वका रूप है, इस कारणसे होती है. आडाडा ! इसमें कितना याद रचना ? संसारकी सभी बातें याद रचना है. जिसमें रुचि होती है, वह याद रहता है, आडाडा ! वीतराग मार्ग अलौकिक है, बापू ! उसे समजना यह कोई साधारण बात नहीं है, आडाडा !

अंदर अेक वीर्य नामकी शक्ति है. वीर्य नामके गुणमें भी कर्तृत्वका रूप है, आडाडा ! तो अनंत वीर्य जो भगवानको प्रगट होता है, उस सिद्धरूप पर्याय-भावका करनेवाला कर्तृत्व (शक्तिका) रूप है, वह उसका कर्ता है, आडाडा ! समजमें आये उतना समजो, बापू ! यह तो कह सके नहीं छतनी बातें है.

अेक-अेक गुणमें अनंत गुणका रूप और अनंत गुणमें अेक-अेक गुणका रूप (है), आडाडा ! समजमें आया ? यहां तो द्रव्य, गुण, पर्याय तीन (है). उसमें भी, निर्मल पर्यायकी बात है. यहां मलिनताकी बात नहीं है. मलिनताका अभाव और निर्मल वीतरागी धर्मरूपी पर्यायका सदभाव, उसका कर्ता कौन ? कि, पूर्व पर्याय भी (उसकी कर्ता) नहीं. समजमें आया ? कर्मका अभाव भी कारण नहीं, आडाडा ! यारित्रमें सम्यग्दर्शनकी पर्यायरूपी भावका भावक, उस भावका भाव करनेवाला और श्रद्धा और यारित्रमें भावरूपी रूप है, उस कारणसे सम्यग्दर्शन, ज्ञान और यारित्र प्राप्त होता है, आडाडा !

‘सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्राणी भोक्षमार्ग’ तत्त्वार्थसूत्रमें सूत्र है ? (यहां) कहते हैं कि, सम्यग्दर्शनकी पर्याय जिस समयमें प्राप्त होती (है), वह प्राप्त होनेका काल है, तो (वह) सिद्धरूप-योक्कसरूप वही भाव है. उस भावका कर्ता कौन ? कि श्रद्धागुणमें कर्तृत्वका रूप है, उस कारणसे भावमयी कर्तृत्वसे उत्पन्न होती है. आडाडा ! बहुत गंभीरता (है) ! ओहोहो ! द्विगंबर संतोंकी वाणी है ! अेक-अेक शक्तिमें १२ अंगका सार भर दिया है. आडाडा !

जगृत स्वरूप प्रभु नित्य है. उसमें अेक कर्तृत्व शक्ति भी नित्य है. अेक-अेक गुणमें कर्तृत्वका रूप भी नित्य है, आडाडा ! समजमें आया ? सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रकी निर्मल

पर्याय जिस समयमें (यह) भाव होनेवाला है, उस भावका भावकपनामयी—उस भावका कर्तापनामयी - भावक शब्द पडा है न ? भावका भावकपनामयी. उस भावका कर्तापनामयी. उस-उस गुणमें इसका रूप है, वह कर्ता है, आडाडा ! दूसरा गुणका कर्तृत्व दूसरे गुणमें कारण है, ऐसा भी यहां तो नहीं, समझमें आया ?

ऐसा मार्ग (है) ! लोगोंने बाहरसे (धर्म) मना दिया है. यह व्रत करो, अपवास करो, तपस्या करो, दसलक्षणी पर्वमें १० अपवास करे इसलिये ओहोहो ! (हो जाता है). (उसमें) तुने क्या किया ? वह तो अपवास है - भराब वास है. उपवास तो उसे कहते हैं कि, ज्ञायकभावके समीप जाकर, वर्तमानमें उसकी परिणति हो, उसका नाम उपवास है. समझमें आया ? यहां तो बात-बातमें झूठ (है). इसका मेल कहां करना ? आडाडा !

अंदरमें स्वच्छत्व नामकी शक्ति है, आडाडा ! उसकी वर्तमान पर्यायमें स्वच्छता प्रगट होती है, इस भावमें भावकपनामयी कर्तृत्वका रूप है. यहां कर्तृत्व शक्ति है तो इस कर्तृत्व शक्तिका रूप प्रत्येक गुणमें है, आडाडा ! समझमें आया ? अलग जातकी बात है, आडाडा !

ऐसे आत्मामें प्रभुत्व नामकी शक्ति है. भगवान आत्मा ! प्रभुत्व शक्तिका आश्रय करनेवाला यानी कि द्रव्यके आश्रयसे प्रभुत्व शक्ति है. प्रभुत्व शक्तिका आश्रय द्रव्य है. परंतु प्रभुत्व शक्तिमें वर्तमानमें प्रभुताकी पर्याय—प्रगट कार्य होनेवाला, भावका कर्ता (ऐसा) प्रभुत्वशक्तिमें कर्तृत्व शक्तिका रूप है, इस कारणसे वर्तमानमें प्रभुताकी पर्याय भावकी—भावकपनामयी होती है, आडाडा ! ऐसी बात है ! आडाडा !

आत्मामें एक अकार्यकारण नामका गुण है कि, जिस कारणसे वर्तमान निर्मल पर्याय होती है, यह निर्मल पर्याय रागका कारणरूप कार्य नहीं, वैसे निर्मल पर्याय रागका कारण नहीं. अकार्यकारणकी परिणति जो हुई, उस समयमें होनेवाली पर्याय, रागका कारण नहीं और रागका कार्य नहीं. ऐसे निर्मल पर्याय भावरूप, भावकपनामयी—कर्तापनामयी शक्तिसे है. (इस शक्तिके कारण) यह पर्याय उत्पन्न हुई है. आडाडा ! समझमें आया ?

सर्व गुण असहायक—(कोई) गुणको किसीकी सहाय नहीं. एक गुणमें दूसरा गुणका निमित्तपना है अथवा एक गुण व्यापक है वहां (दूसरे गुण) व्यापक है. परंतु एक गुण दूसरे गुणकी सहायसे रहता है और एक गुणकी पर्याय दूसरे गुणकी पर्यायकी सहायसे होती है, ऐसा नहीं है. आडाडा ! एक भाव भी यथार्थ समझे तो सब भुलासा हो जाये. आडाडा ! समझमें आया ? आडाडा !

आत्मामें एक प्रमेयत्व नामका गुण है. अपने गुणका प्रमाणा करना और दूसरेके परिणाममें अपना प्रमेय होना. (ऐसा इस गुणके कारणसे होता है) आडाडा ! प्रमेयगुण—परिणाम्यपरिणामकत्व (शक्ति) आ गयी है. अपने ज्ञानमें प्रमाणा रूप होना और दूसरेके ज्ञानमें प्रमेयरूप होना. इस गुणकी वर्तमान पर्याय जो सिद्ध नाम जो होनेवाली है, इसमें उस

ભાવકે ભાવકપનામયી (અર્થાત્) પરિણમ્યપરિણામકત્વ શક્તિમેં કર્તૃત્વ (શક્તિકા) રૂપ હૈ, ઇસ કારણસે હોતી હૈ. આહાહા ! ભાષા (સાદી હૈ, પરંતુ) ગંભીર ભાવ ભરા હૈ !

એક-એક ગુણમેં અનંત ગુણકા રૂપ ઓર એક ગુણમેં અનંતકા રૂપ, આહાહા ! ઓર એક ગુણમેં ઇસ રૂપકી અનંતિ શક્તિયાં ઓર એક-એક ગુણકી અનંતી નિર્મલ પર્યાય ! યહાં મલિન (પર્યાયકી) બાત નહીં હૈ, આહાહા ! પ્રત્યેક ગુણકી નિર્મલ પર્યાય—ભાવરૂપ, સિદ્ધરૂપ—ઉસ સમયમેં હોનેવાલી હૈ, ઉસ રૂપ જો ચોક્કસ ભાવ, આહાહા ! (યહાં) કમબદ્ધ સિદ્ધ ક્રિયા. (ઉસમેં) ઉસકા કર્તાપના ભી સિદ્ધ ક્રિયા. સમજમેં આયા ? થોડા સૂક્ષ્મ હૈ લેકિન ઉસે સમજના તો પડેગા કિ નહીં ? ભાઈ ! આહાહા !

યહ તો બહેનકી સાદી ભાષા હૈ. સાદી—સાદી (ભાષા હૈ), આહાહા ! “જાગતો જીવ ઊભો છે ને, પ્રભુ ?” એસે હૈ ન ? સમજમેં આયા ? એસી ઇસ શક્તિકી ગંભીરતા હૈ. ભગવાન ! સાદી ભાષા હૈ. (બહેનશ્રી ચંપાબહેનકે) જીવનમેં બહુત નિવૃત્તિ. બહુત સંક્ષિપ્ત ભાષામેં પુસ્તકકા સાર આ ગયા હૈ. ઇસ પુસ્તક તો મેરે હિસાબસે સભી જગહ વાંચનમેં ચલેગા. સમજમેં આયા ? વાંચન કરને જૈસા હૈ. બહુત લંબા-લંબા નહીં સમજમેં આયે લેકિન યહ સંક્ષિપ્તમેં સમજમેં આયે, (એસા હૈ). યહાં તો ભાષા કોઈ ભી પ્રકારકી હો પરંતુ વસ્તુસ્થિતિ સિદ્ધ કરતી હો તો ભાષા કોઈ ભી હો, (ઉસસે કોઈ મતલબ નહીં). સમજમેં આયા ? હિન્દીમેં હી સિદ્ધ હોતા હૈ ઓર ગુજરાતીમેં (સિદ્ધ) નહીં હોતા, એસા નહીં હૈ, આહાહા !

પ્રભુ ! તૂ જાગતી જ્યોત (સ્વરૂપ) ખડા હૈ ન ? ઊભા નામ ખડા (હૈ). તુમ જાગતી ચૈતન્ય જ્યોતમયી ધ્રુવ હૈ. જાગતી જ્યોતકા સ્થંભ હૈ, ધ્રુવ સ્થંભ હૈ. ઉસ પર નજર કરના, યહ તેરા કાર્ય હૈ. કોઈ બડા આદમી આયા હો તો ઉસકે સાથ બાતચીત કરતા હૈ કિ નહીં ? યા, બાતચીત બાલકકે સાથ કરે ઓર ઉસકે સાથ નહીં કરે ? (એસા કરે તો) ઉસકો એસા લગે કિ, યહાં આયે ઉસકા કોઈ ફાયદા નહીં હૈ. કોઈ કોડપતિ—અબજોપતિ આપકે યહાં આયે (ઓર) વે ૧૫ મિનીટ હી બૈઠનેવાલે હો, ઉસમેં વહ બાલકકે સાથ ખેલને લગે તો સેઠ ઊઠકર ચલા જાયેગા. વૈસે ભગવાન મહા પ્રભુ ! તેરે પાસ ધ્રુવ ખડા હૈ ન ? આહાહા ! ઉસ પર નજર નહીં કરકે રાગ ઓર પુણ્ય પર નજર (હૈ, તો) તેરી નજર બાલકકી હૈ. ઇસલિયે તેરે લિયે (ધ્રુવ સ્વરૂપ) નહીં હૈ, એસા હો ગયા. સમજમેં આયા ? આહાહા ! તેરા પુણ્ય-પાપકે વિકલ્પમેં રુકના તો બાલબુદ્ધિ હૈ, એસા કહતે હૈં. આહાહા !

ભગવાન આત્મા ચૈતન્ય જ્યોતિ પડા હૈ ન ! ઓર ઉસમેં ઉસકા કર્તૃત્વ નામકા ગુણ હૈ ન ? યહાં તો ક્યા કહા ? જીવકા કોઈ ઈશ્વર કર્તા નહીં. જીવકો જીવકા કોઈ ઈશ્વર કર્તા નહીં. જીવકી પર્યાયકા કોઈ ઈશ્વર કર્તા નહીં. જીવકી જો ગુણકી પર્યાય હૈ ઉસકા દૂસરા ગુણ ઓર દૂસરી પર્યાય કર્તા નહીં, આહાહા ! સમજમેં આયા ? એસી કર્તૃત્વ (શક્તિ) ઓર કરણ શક્તિકા વર્ણન વીતરાગ સંતોંકે અલાવા કહીં નહીં હૈ. કઠિન બાત હૈ, બાપૂ ! માર્ગ

કિસીને દેખા નહીં હૈ ન ! આહાહા ! યહ તો ભગવાન કે પાસસે આયા હૈ ન ? કહતે હૈં કિ, તૂ યહ શરીર, વાણી, મન, પુણ્ય-પાપકે ભાવકા લક્ષ છોડ દે, ઉસમેં આત્મા નહીં હૈ. ઔર એક સમયકી પર્યાયકા લક્ષ ભી છોડ દે, ઉસમેં પૂરા આત્મા નહીં હૈ.

ભગવાન ! સારા આત્મા તો ધ્રુવ સ્વરૂપ જાગૃતભાવ ખડા હૈ. ઉસમેં યહ કર્તૃત્વ નામકી શક્તિ પડી હૈ. ઇસ ધ્રુવ પર જોર કરનેસે, ધ્રુવકા ધ્યાન કરનેસે, ધ્રુવકા આશ્રય લેનેસે, જો પર્યાય પ્રગટ હોતી હૈ, ઉસ સમયમેં વહ હોનેવાલી હૈ. ઉસકા ગુણ જો હૈ યહ ઉસકા કર્તા હૈ. એક-એક ગુણમેં ષટ્કારકકા પરિણમન અપનેસે હૈ, ઔસા કહતે હૈં. યહ તો કરણશક્તિ ઉતારી હૈ. બાકી એક જ્ઞાનગુણકી પર્યાય(મેં) જ્ઞાન સ્વયં કર્તા, કર્મ વહ જ્ઞાનકી પર્યાય, કરણ વહ જ્ઞાનકી પર્યાય, સંપ્રદાન અપની પર્યાય રખી, (અપાદાન) અપની જ્ઞાનકી પર્યાયસે જ્ઞાનકી પર્યાય હુઈ, જ્ઞાનકી પર્યાયકા આધાર જ્ઞાન પર્યાય હૈ. ઔસી બાતેં (હૈં) ! (લોગોંકો) કહીં ફુરસદ નહીં મિલતી. આહાહા !

અપની સંપદા કિતની હૈ ? (ઉસકી ખબર નહીં). જ્ઞાન ગુણકી એક પર્યાયમેં ષટ્કારકકા નિર્મલ પરિણમન (અપનસે હૈ). આહાહા ! વાસ્તવમેં તો વહ પર્યાય હી પર્યાયકી કર્તા હૈ. પરંતુ યહાં ગુણ હૈ ઉસકો લેના હૈ. કર્તૃત્વશક્તિ દ્રવ્ય, ગુણ, પર્યાય તીનોંમેં વ્યાપ્ત હોતી હૈ. કર્તૃત્વશક્તિ હૈ, (યહ) દ્રવ્યમેં હૈ ઔર ગુણમેં હૈ. પરંતુ જહાં ઉસકા સ્વીકાર હુઆ, ધર્મીકી દૃષ્ટિ હુઈ, તો કર્તૃત્વશક્તિકે પરિણમનમેં નિર્મલ પર્યાયકા કર્તા ઇસ પર્યાયમેં આ ગયા. આહાહા ! ઔસી સૂક્ષ્મ બાતેં હૈં. માર્ગ તો ઔસા હૈ, ભાઈ ! વીતરાગ માર્ગ ગંભીર માર્ગ (હૈ), આહાહા !

યહાં તો (લોગ) કહતે હૈં કિ, ચૌથે ગુણસ્થાનમેં વ્યવહાર સમકિત હોતા હૈ. અરે પ્રભુ ! તૂ ક્યા કર રહા હૈ ? સમ્યગ્દર્શનમેં તો સારા આત્મા પ્રતીતમેં આ ગયા. સમ્યક્ (અર્થાત્) સત્ય દર્શન-સત્યકા દર્શન હુઆ. આહાહા ! દેખનેવાલેકો દેખા, જાનનેવાલેકો જાના. ઔસી પ્રતીત હૈ યહ તો વીતરાગી પ્રતીત હૈ. વહાં સરાગ (પના) નહીં હૈ. આહાહા ! સરાગપનાકા ઉસમેં અભાવ હૈ, યહ અનેકાંત હૈ. સરાગ સમકિતકા વીતરાગી પર્યાયકે કારણ (ઉસમેં) અભાવ હૈ. ઉસકા નામ અનેકાંત ઔર સ્યાદ્વાદ હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

યહ કર્તૃત્વ શક્તિ જો હૈ, કર્મ શક્તિમેં ભી કર્તૃત્વશક્તિકા રૂપ હૈ. ક્યા કહા ? બહુત ગંભીર હૈ. ઇસમેં શબ્દોંકા ઇતના સંગ્રહ હૈ ! ભાવકા ઇતના સંગ્રહ હૈ ! અનંત..અનંત.. ભાવ સમા દિયે હૈં ! એક-એક વાક્યમેં અનંત-અનંત ભાવકા સમાવેશ કર દિયા હૈ. આહાહા ! કર્મ નામકી જો શક્તિ હૈ, ઇસમેં ભી કર્તા નામકા રૂપ હૈ. આહાહા ! ઔર કર્તા નામકી શક્તિ હૈ ઉસમેં કર્મ (શક્તિકા) રૂપ હૈ. આહાહા ! અપને આપ (પઢે તો) કુછ હાથમેં આયે ઔસા નહીં હૈ. કોલેજમેં પઢને જાના પડતા હૈ કિ નહીં ? વૈસે જહાં (ઉસકી પઢાઈ) હોતી હો વહાં જાના પડતા હૈ કિ નહીં ? આહાહા ! યહ તો જીવકે જીવનકી બાત હૈ, ભાઈ ! જીવકા જીવન જો જ્ઞાન, દર્શન ઔર આનંદકી પર્યાયસે જીએ, યહ જીવકા જીવન હૈ. શરીરસે

जो यह जवका जवन है ही नहीं. और दया, दानके विकल्पसे जो, यह जवका जवन नहीं, आहाहा ! समझमें आया ?

भगवान आत्मा जो (है), उसमें अनंत शक्तियां हैं और जवपना भी है और उसकी पर्याय है, वह भी जवपना है. निर्मल पर्याय है यह जवपना है. आहाहा ! दया, दान और व्रत, यह जवपना है ही नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? यह तो भगवानकी पेढी है, आहाहा !

भगवान परमात्मा ! अपने स्वरूपमें अनंत शक्तियां अर्थात् अनंत गुण बसे हैं. इन गुणोंका कार्य क्या ? आहाहा ! ज्ञानगुणका कार्य निर्मल (ज्ञान) पर्याय होना, श्रद्धागुणका (कार्य) समकितकी पर्याय होना, चारित्र गुणकी पर्यायमें वीतरागीदशा उत्पन्न होना, आहाहा ! सुख गुणमें आनंदका वेदना आना, आहाहा ! और कर्म गुणका वर्तमानमें जो कार्य है, यह कर्म (गुणका) कार्य है और कर्ता (गुणकी पर्याय हुआ) उसका कर्ता भी कर्ता गुण है. आहाहा !

सम्यग्दर्शनरूपी धर्म पर्याय, उसमें भी कर्म (शक्तिका) रूप है तो उसके कारण सम्यग्दर्शनकी सिद्ध पर्याय – उस समयमें होनेवाली हुई है. उस भावका कर्ता (यह) कर्म (शक्ति) है और उसमें कर्तृत्व शक्तिका रूप भी है. आहाहा ! उस कारणसे सम्यग्दर्शनकी पर्याय (रूप) भाव – उसका भावकपनामयी कर्तृत्वशक्तिका रूप है. बहुत समावेश किया है !

द्विपंचद्विजने अध्यात्म पंचसंग्रहमें सवैयामें (बहुत) समा दिया है. धतना लिखा है कि, जल्दी पकड़में नहीं आये. धतना सत्का विस्तार किया है. समझमें आया ? आहाहा ! उसमें वस्तुकी स्थिति ऐसी है उसका वर्णन किया है. (ऐसे ही कोई लिख दिया है, ऐसा नहीं है).

“**होनेपरूप..**” होनेपरूप यानी वर्तमान अवस्था. “**सिद्धरूप..**” यानी जो होनेवाली है वह होती है. उसका भावके भावक. उस “**.. भावके भावकत्वमयी (कर्तृत्वशक्ति).**” आहाहा ! कितना समा दिया है ! संतोंने गजब काम किया है ! आहाहा ! दिगंबर संतोंने जैन धर्म और केवलज्ञानके सब ‘कक्के’ का घुटन किया है. आहाहा ! ‘कक्का’ माने केवलज्ञान ले ! ‘भब्भा’ माने तेरी भबर ले ! आहाहा ! समझमें आया ? थोडा भी (हो लेकिन) सत्य समजना याहिये. सत्य कहां है (और) सत्यका स्वरूप कैसे है ? धतना समजना तो याहिये. दूसरा विशेष ज्ञान (भले ही) न हो, लेकिन सत्य जैसे है (ऐसे) उसका ज्ञान होना याहिये और भावके भासनमें यह चीज होनी याहिये. आहाहा ! समझमें आया ?

ऐसे “**होनेपरूप और सिद्धरूप..**” ओहोहो ! गजब काम किया है ! सिद्धरूप यानी उस समयकी अवस्था (प्राप्त) है. (समयसार) ७६, ७७, ७८ (गाथामें) प्राप्य, विकार्य, निवर्त्य आता है न ? प्राप्य यानी उस समयमें जो पर्याय होनेवाली है, उसको प्राप्त करते हैं, यह प्राप्य है. ओहोहो ! समझमें आया ? धीरे-धीरे विचार करना, भगवान ! तेरी संपदा बड़ी

હૈ, આહાહા ! અનંત ગુણ (હૈ). એક-એક ગુણમાં અનંત રૂપ ! એક-એક ગુણમાં અનંત રૂપ, અનંત ગુણમાં અનંત રૂપ, એસી અનંતી પર્યાયમાં અનંતા રૂપ ! અનંતી પર્યાયમાં અનંતી પર્યાય જો ભિન્ન હૈ, ઉસકા રૂપ ! આહાહા ! (વ્યવહારસે સમકિત હોતા હૈ) એસા અભી તો ચલતા હૈ, બાપૂ ! ભગવાન (આત્મા) એક ઓર પડા રહા. જિસમાં વિભાવ નહીં હૈ, ઉસ રાસ્તે પર ચઢા દિયા હૈ. અરે પ્રભુ ! વીતરાગકા વિરહ હૈ (ઔર લોગોંકો) રાગકે રાસ્તે પર (ચઢા દિયા).

એક-એક ગુણમાં કર્તૃત્વ નામકી (શક્તિકા) રૂપ હૈ, આહાહા ! ઉસ કારણસે જિસ સમયમાં ઉસ ગુણકી જો પર્યાય હોનેવાલી હૈ, ઉસકા કર્તા વહ ગુણ હૈ. દૂસરા ગુણ ભી કર્તા નહીં. આનંદકી પર્યાય (હોનેમાં), કર્તૃત્વ પર્યાય જો હુઈ, વહ કર્તૃત્વકી પર્યાય ભી ઇસ આનંદ ગુણકી પર્યાય નહીં કરતા. આહાહા ! એસી બાત હૈ ! યાદ રહના મુશ્કિલ હૈ. એસા માર્ગ હૈ. કભી સુના ભી નહીં ઔર એસા માને કિ, હમ સ્થાનકવાસી હૈં, શ્વેતાંબર હૈં, હમ દિગંબર હૈં, આહાહા !

એક-એક પર્યાયમાં પર્યાયકા ગુણ કર્તા ઔર એક-એક પર્યાયમાં પર્યાય ખુદ કર્તા, આહાહા ! એક સમકિતકી પર્યાય (હુઈ, ઉસ પર્યાયમાં) સમકિતકી પર્યાયકી કર્તા પર્યાય, કર્મ પર્યાય, સાધન પર્યાય, કરણ વહ પર્યાય, સંપ્રદાન (યાની) હુઈ ઉસે રખી ઔર પર્યાયમાંસે પર્યાય હુઈ ઔર પર્યાયકે આધારસે પર્યાય હુઈ, આહાહા ! એસે એક-એક ગુણકી એક-એક પર્યાયમાં ષટ્કારક લગાના, આહાહા ! સમજમાં આયા ? એક-એક પર્યાયમાં પરસે પર્યાય નહીં, એસી અનંતી પર્યાયકી સપ્તભંગી લગાના. અપની પર્યાયસે પર્યાય હૈ – દૂસરી અનંતી પર્યાયસે નહીં. એસી સપ્તભંગી લગાના, આહાહા ! સમજમાં આયા ? એસા માર્ગ (હૈ) ! (ફિર ભી) કોઈ વિરોધ કરે, પ્રભુ ! એક બાર સુન તો સહી, નાથ ! એકબાર તેરી બાત તો સુન ! ફિર તુજે વિરોધ કરનેકા રહેગા નહીં, ભાઈ ! પ્રભુ ! તેરે ઘરકી બાત હૈ, આહાહા !

યહાં “..ભાવકત્વમયી..” લિયા ન ? ભાવકા ભાવકમયી. ભાવ કૌન ? કિ, વર્તમાન જો નિર્મલ પર્યાય (હુઈ વહ ભાવ). ઉસકા ભાવકત્વમયી—ઉસ ભાવકે કર્તાપનેમયી કર્તૃત્વશક્તિ (હૈ). આહાહા ! વર્તમાન જો-જો ગુણકી પર્યાય—ભાવ હૈ, ઉસ સમયકા સિદ્ધભાવ, ઉસ ભાવકા ભાવકત્વમયી (અર્થાત્) ઉસ ભાવકા કર્તાપનામયી; વહ-વહ ગુણ ઉસકા કર્તા હૈ. આહાહા ! દેખો ન ! પર્યાય સ્વતંત્ર, ગુણ સ્વતંત્ર ઔર વિકારકા જિસમાં અભાવ (હૈ), આહાહા !

વર્તમાનમાં લોગ ચિલ્લાતે હૈં કિ, ‘સોનગઢવાલે નિશ્ચયસે (ધર્મ) હોતા હૈ, (એસી) બાત કરતે હૈં. વ્યવહારસે (ધર્મ) નહીં હોતા હૈ, (એસા કહતે હૈં) તો (યહ) એકાંત હૈ’. અરે પ્રભુ ! સુન તો સહી, બાપૂ ! ભગવાન ! યહ સમ્યક્ એકાંત હૈ. એકાંતમાં ભી સમ્યક્ એકાંત ઔર મિથ્યા એકાંત દો (પ્રકાર) હોતે હૈં. અનેકાંતમાં ભી સમ્યક્ અનેકાંત ઔર મિથ્યા અનેકાંત, દો પ્રકાર હોતે હૈં. અપની પર્યાય અપનેસે હો ઔર રાગસે ભી હો, યહ મિથ્યા અનેકાંત હૈ. અપની પર્યાય અપનેસે હૈ, પરસે નહીં, યહ સમ્યક્ અનેકાંત હૈ, આહાહા !

અરે..! જિંદગી ચલી જા રહી છે, બાપૂ ! ઉસકા જિસ સમયમેં જો કાર્ય (આત્મહિત) કરના હો વહ નહીં કરે, કરને યોગ્ય કર્તૃત્વ હૈ ઉસે ન કરે ઓર નહીં કરને યોગ્ય (કાર્યમેં) રુક જાયે, આહાહા ! સારી દુનિયા ઉસ રાસ્તે પર હૈ ઇસલિયે ઉસે દેખકર ખુદ ભી ઉસ રાસ્તે પર ચલા જાતા હૈ. લેકિન દુનિયા દુઃખી હો રહી હૈ તબ તૂ (ભી) ઉસ દુઃખમેં જા રહા હૈ ? તેરે દુઃખમેં તૂ હૈ ઓર ઉસકે દુઃખમેં વહ હૈ. આહાહા ! અકેલા દુઃખી હોકર રૂદન કરે—મુજસે સહન નહીં હોતા હૈ.

એક શ્વેતાંબર સાધુ થે. ૮૮ કી સાલકી બાત હૈ. જામનગરમેં સબ સાધુ હમારે પાસ આતે થે. હમારા નામ બડા થા. એક (સાધુ) બિમાર થે ઇસલિયે હમ વહાં ગયે થે. વે કહતે થે, ‘મહારાજ ! અબ મુજસે સહન નહીં હોતા હૈ’ દેહકી ૫૫-૬૦ વર્ષકી ઉમર હોગી. બાપૂ ! (શરીર) તો જડકી પર્યાય હૈ, ભાઈ ! કહતે થે, ‘મુજસે સહન નહીં હોતા હૈ. અબ યહ જિંદગી કેસે નિકાલની ?’ ભાઈ ! ક્યા હો સકતા હૈ ? બાપૂ ! આત્માકો સહન કરના પડે. આહાહા ! (જો) હોતા હૈ, ઉસે જ્ઞાતા-દૃષ્ટારૂપસે જાનના, યહ આત્માકા કાર્ય હૈ. સમજમેં આયા ? આહાહા ! અપને પર જબ આતા હૈ તબ કઠિન લગતા હૈ.

યહાં તો કહતે હૈ, સુન તો સહી નાથ ! તેરેમેં એક કર્તૃત્વ નામકા ગુણ હૈ (જો) નિર્મલ પર્યાયકો કરે—મલિન પર્યાયકો કરે નહીં, ઐસા તેરેમેં ગુણ હૈ. વિકારભાવકા કરનેવાલા આત્મા નહીં. સમજમેં આયા ? આહાહા ! ઐસી બાત ઓર ઐસા ધર્મકા સ્વરૂપ, લેકિન ઇસમેં કરના ક્યા ? કરના યહ કિ, દ્રવ્ય સ્વભાવ હૈ, ઉસમેં અનંત શક્તિ હૈ, ઇસ શક્તિકો ધરનેવાલે ભગવાનકી દૃષ્ટિ કરના ઓર ઉસકા જ્ઞાન કરના. જાગૃત જ્ઞાયકભાવ હૈ ઉસકા જ્ઞાન, ઉસકી શ્રદ્ધા ઓર ઉસમેં લીનતા, યહ કરના હૈ. લીનતામેં તો અનંત ગુણકી પર્યાય ઉસમેં લીન હોતી હૈ, આહાહા ! સમજમેં આયા ? યહ ૪૨ (શક્તિ સમાપ્ત) હુઈ.

અબ ૪૩ (શક્તિ) થોડી શુરૂ કરતે હૈ ફિર કલ (લેંગે). “ભવતે હુએ (પ્રવર્તમાન) ભાવકે ભવનકે (—હોનેકે)..” આહાહા ! અમૃતચંદ્ર આચાર્યને સમયસારમેં શિરોમણી શક્તિ નિકાલી હૈ. આહાહા ! કરણ શક્તિકા વર્ણન (હૈ). કરણ નામ કારણ શક્તિ અંદર હૈ. વર્તમાન પર્યાયમેં કરણ શક્તિકે કારણ કાર્ય હોતા હૈ, આહાહા ! ક્યા કહતે હૈ ? દેખો !

“ભવતે હુએ..” (યાની) હોનેવાલી. “પ્રવર્તમાન” (યાની) વર્તમાન ભાવ. ઉસકે “..ભવનકે હોનેકે..” (અર્થાત્) ઉસકે હોનેમેં. “.. હોનેકે સાધકતમપનેમથી..” સાધકતમ (માને) ઉત્કૃષ્ટ સાધકપના, આહાહા ! જો કરણ નામકી શક્તિ હૈ, યહ નિર્મલ પર્યાયકી સાધકતમ કારણ હૈ. યહ કારણ હૈ. રાગ આદિ કારણ નહીં હૈ. નિમિત્ત કારણ નહીં હૈ, યહાં તો ઐસા કહતે હૈ. સમજમેં આયા ? વિશેષ કહુંગે...



પ્રવચન નં. ૩૮

શક્તિ-૪૩ - તા. ૧૭-૦૯-૧૯૭૭

ભવદ્વાવભવનસાધકતમત્વમયી કરણશક્તિ: ।।૪૩।।

સમયસાર, શક્તિઓંકા અધિકાર (ચલતા હૈ). શક્તિ યાની આત્માકા ગુણ જો હૈ, આત્મા જો ગુણી હૈ—સ્વભાવવાન હૈ, ઉસકે ગુણકો શક્તિ કહતે હૈં. શક્તિ કહો કિ ગુણ કહો (દોનોં એક હી બાત હૈ). ઉસમેં અનંત શક્તિ હૈ. વસ્તુ આત્મા એક—દૃષ્ટિ કરને લાયક એક પરંતુ ઉસમેં અનંત શક્તિયાં હૈં. (વહ) ભેદરૂપ હૈ. શક્તિ પર લક્ષ કરના, એસા નહીં. શક્તિવાન જો અભેદ—એકરૂપ આત્મા હૈ, ઉસ પર દૃષ્ટિ કરનેસે સમ્યગ્દર્શન હોતા હૈ. વહાં સે ધર્મકી શુરૂઆત હોતી હૈ, આહાહા ! કોઈ દયા, દાન, વ્રત, ભક્તિ, અપવાસ, ૨-૫-૨૫ લાખકે મંદિર બનાયે—ઉસસે ધર્મ નહીં હોતા, આહાહા ! એસી બાત હૈ ! વહ (રાગ ભાવ) ધર્મકી શુરૂઆતકા કારણ નહીં. ધર્મકી શુરૂઆતકા કારણ (કરણ શક્તિ હૈ). કરણ શક્તિ આજ ચલેગી ન ? કરણ શક્તિ કહો યા કારણ શક્તિ કહો (એક હી બાત હૈ). આહાહા !

ભગવાન આત્મામેં એક કારણ નામકી શક્તિ હૈ. યહાં કરણ કહેંગે. કરણ કહો—કારણ કહો (એક હી બાત હૈ). આત્મામેં સાધન-સાધક નામકી એક શક્તિ હૈ. આહાહા ! કહીં સુના ન હો ઇસલિયે આદમીકો મુશ્કિલ પડતા હૈ. (ઉસે એસા લગે કિ), યહ કેસા ધર્મ નિકાલા ? હમ તો વ્રત પાલને, ભક્તિ કરની, પૂજા કરની, યાત્રા કરની — યહ સબ (ધર્મ માનતે હૈં). અરે ભગવાન ! ભાઈ ! તુજે ખબર નહીં, બાપૂ ! વીતરાગ ધર્મ તો ઇસે કહતે હૈં કિ, રાગસે રહિત અપની ચીજ હૈ, ઉસકી શક્તિઓંકા ભેદ ભી લક્ષમેં નહીં લેના, આહાહા ! શક્તિવાન જો ભગવાન આત્મા હૈ, અખંડ, અભેદ, એકરૂપ ઉસકી દૃષ્ટિ કરનેસે ધર્મકી પ્રથમ શુરૂઆત—સમ્યગ્દર્શનકી ઉત્પત્તિ હોતી હૈ. બાકી સબ થોથા (બેકાર) હૈ. આહાહા ! સમજમેં આયા ? આજ તો યહાં અભી (કરણ) શક્તિકા વર્ણન હૈ.

કિતને નંબરકી હુઈ ? ૪૩ (હુઈ). ૪૭ શક્તિકે વર્ણનમેં આજ ૪૩ નંબરકી (શક્તિ) આયી. આહાહા ! કયા કહતે હૈં ? “ભવતે હુએ...” થોડા સૂક્ષ્મ હૈ. બહુત ધ્યાન રખે તો સમજમેં આયે એસી બાત હૈ. યહ કોઈ કથા-વાર્તા નહીં. યહ તો ભગવાન આત્માકી ભગવત્

स्वरूप कथा है.

सर्वज्ञ जिनेन्द्रदेव, परमेश्वर वीतराग त्रिलोकनाथ इस आत्माकी कथा करते हैं. दिव्यध्वनिमें आया कि, प्रभु ! अंक बार सुन तो सही ! आहाहा ! तेरी यीजमें जो वर्तमान “**भवते हुअे (प्रवर्तमान..)**” (अर्थात्) वर्तमान जो परिणाम (यानी) सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र आदिका निर्मल वर्तमान प्रवर्तमान परिणाम. प्रत्येकमें ध्यान रणे तो समजमें आये अैसा है. अंक शब्द उधर-उधर हो जाये तो कुछ समजमें आये अैसा नहीं है. आहाहा ! समजमें आया ?

यहां कलते हैं कि, आत्मा जो पदार्थ-वस्तु है, उसमें अंक शक्ति अैसी है कि, वर्तमान निर्मल सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र आदि निर्मल परिणामका (माने) भवते हुअे भावका-होनेवाला भावका भवते हुअेका अर्थ (हुआ). आहाहा ! अैसे “**भवते हुअे (प्रवर्तमान) भावके भवनके (-होनेके)..**” धर्मकी वीतरागी पर्याय-सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्यारित्र, प्रभुता, स्वच्छता आदि अनंद गुणकी वर्तमान निर्मल पर्याय-प्रवर्तमानका भाव उसके होनेमें कारण, अंदरमें कारण शक्ति है, यह कारण है. आहाहा ! समजमें आया ?

दुनिया अैसा कलती है कि, व्रत करो, अपवास करो, भक्ति करो, पूजा करो यह सब (धर्मके) साधन हैं. भगवान तो (यहां) ना कलते हैं. समजमें आया ? इसे साधन कला है न ? भिन्न साध्य-साधन शास्त्रमें आता है. वह भिन्न साधन-साध्य कला, वह तो निमित्तका ज्ञान करानेको कला है. पंथास्तिकायमें भिन्न साधन-भिन्न साध्य (है). रागकी क्रियाकी मंदता वह भिन्न साधन और निश्चय सम्यग्दर्शन, ज्ञान आदि साध्य-वह तो व्यवहारका ज्ञान करानेको कला है और वह आरोपित कथन है, आहाहा ! निश्चयमें-वास्तविकतामें-यथार्थमें भगवान आत्मामें कारण नामका गुण है (यह कारण है). भगवान आत्मा गुणी (है) और उसमें कारण नामका अंक गुण है. कारण कलते कि कारण कलते (होनों अेकार्थ हैं). जिस कारण नामके गुणके कारण वर्तमान निर्मल पर्यायके साधनरूपी कारणको प्राप्त होता है, आहाहा !

यह तो वीतराग मार्ग (है) ! भाई ! अनंत कालमें समजा नहीं है. अनंतबार जैनदर्शन-संप्रदायमें जन्म हुआ और साक्षात् तीनलोकके नाथ तीर्थंकर महाविदेहमें बिराजते हैं, यहां भी अनंतबार जन्म हुआ है. समवसरणमें भी अनंत बार गया है और भगवानकी वाणी भी सुनी है, आहाहा ! लेकिन उन्होंने जो कला कि, तेरी यीजमें कारण नामका अंक गुण है, उससे तेरी पर्यायमें कार्य होता है. मोक्षका मार्ग-‘सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्राणी मोक्षमार्ग’ इस कार्यका कारण तेरेमें कारण नामकी शक्ति है, इस कारणसे यह कार्य होता है. आहाहा ! समजमें आया ? फिर भी कारण शक्ति पर लक्ष नहीं करना है. लक्ष तो कारणका धरनेवाला द्रव्य जो है, उस पर दृष्टि देनेसे पर्यायमें कार्य होता है. आहाहा ! पर्याय कलते कि कार्य कलते (अेकार्थ है).

“**भवते हुअे..**” कला न ? “**भवते हुअे (प्रवर्तमान) भाव...**” (अर्थात्) वर्तमान भाव.

आहाडा ! यहां तो (लोग) कहते हैं कि, दया पावो, व्रत करो, अपवास करो, योवियार करो, कंदमूल नहीं आओ, भगवानके दो-पांय मंदिर बनाकर पूजा करो, इसलिये धर्म हो जायेगा. अरे प्रभु ! सुन तो सही, भाई ! वह तो शुभ भाव किया हो तो कदाचित् पुण्य है, धर्म नहीं. आहाडा ! धर्म तो वीतरागी स्वरूप भगवान (आत्मा) उसमें करण नामका धर्म पडा है, गुण पडा है, शक्ति पडी है तो उस कारणसे धर्मी जैसे आत्मा पर दृष्टि करनेसे, साधक नामकी एक शक्ति है, उसका निर्मल परिणामका कारण वह साधकपना है. सम्यग्दर्शनकी पर्यायका कारण साधक नामकी शक्ति है, उसके कारण यह परिणाम होता है, आहाडा ! धीरे-धीरे आता है. अंदरसे आये जैसे हो न ? आहाडा !

यहां कहते हैं कि, जो यीज पडी है, ध्रुव भगवान आत्मा ! वर्तमान पर्यायमें उत्पाद-व्यय है परंतु वह एक समयकी मुदतवाली यीज है, परंतु यीज जो ध्रुव है, वह तो त्रिकाली मुदतवाली यीज है, आहाडा ! त्रिकाली जिसकी मुदत है, ऐसा ध्रुव, उस पर दृष्टि करनेसे उसकी पर्यायमें सम्यग्दर्शन, ज्ञान आदिका परिणाम हो, उसका कारण द्रव्य है अथवा द्रव्यमें रही हुई साधक नामका एक गुण-शक्ति है, (यह कारण है). निर्मल पर्यायका कारण यह (गुण) है, आहाडा !

कभी सुना भी नहीं. जैसे ही जिंदगी माथाकूटमें यली गई. आहाडा ! हम जैन है और हम धर्म करते (हैं), जैसे बड़ममें जिंदगी यली जाती है. बापू ! आहाडा ! भवके अभावके कारणरूप जो सम्यग्दर्शन, ज्ञानकी निर्मल पर्याय-उसका साधक नामकी शक्ति है, उस कारणसे पर्यायमें कार्य होता है. आहाडा ! व्यवहार रत्नत्रय भीयमें आता है लेकिन वह कारण नहीं, आहाडा ! वह तो लेय है. समझमें आया ? उपादेय तो भगवान आत्मा ! जिसमें साधक नामका, करण नामका गुण पडा है, इस गुणका धरनेवाला गुणी, आहाडा ! पंचम पारिणामिक स्वभावभाव, नित्यानंद नाथ प्रभु ! उसका आश्रय करनेसे उसमें साधक नामकी शक्ति-गुण है, उस कारणसे सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रका परिणाम-प्रवर्तमान भाव प्रगट होता है, आहाडा ! ऐसा सुनना मुश्किल पडे.

श्रोता : साधक और करण एक ही बात है ?

पूज्य गुरुदेवश्री : साधक कडो, करण कडो या कारण कडो एक ही बात है. तीन शब्द लिये न ? समझमें आया ? आहाडा ! धीरेसे समझे, प्रभु ! यहां तो सर्वज्ञ त्रिलोकनाथ जिनेन्द्रदेव परमेश्वरका लुकम-आज्ञामें यह आया है, आहाडा ! कि, प्रभु ! तेरा धर्मका जो कार्य है, यह धर्मका कार्य तो वीतरागी पर्याय है. दया, दान, व्रत यह कोई धर्मका कार्य है ही नहीं. आहाडा ! वह तो बंधका कारण है, आहाडा ! कठिन बात (है) !

कभी यैतन्य भगवान अंदर मडा माहात्म्यवाली यीज है, (उसकी मडिमा नहीं आयी). जिसकी मडिमा पूर्ण सर्वज्ञ परमेश्वर भी वाणी द्वारा कह सके नहीं, ऐसी यह यीज अंदर

भगवान सख्यिदानंद प्रभु आत्मा है. सर्वज्ञ परमेश्वरने देखा (उसकी बात है). अज्ञानी आत्मा..आत्मा करते हैं, उसकी यह बात नहीं है, आडाडा !

सर्वज्ञ परमेश्वरने अपने आत्माको ऐसा देखा, “प्रभु तुम जाणग रीति, सौ जग देभता हो लाल” हे नाथ ! आप सर्वज्ञ परमेश्वर तीनकाल तीनलोकके द्रव्य, गुण, पर्यायको अेक समयमें जानते हो. ‘प्रभु तुम जाणग रीति सौ जग देभता हो लाल, निज सत्ताअे शुद्ध अमने पेभता हो लाल’ प्रभु ! आप अपने सर्वज्ञपनेमें हमारी निज सत्ता—निज ह्याती पवित्र है, (ऐसा) आप आत्माको देभते हो. पुण्य, पाप और शरीरको तो तुम पर देभते हो, आडाडा ! भगवान शरीर, वाणी, मन, कर्मको अण्वरूपसे देभते हैं. हिंसा, जूठ, योरी, विषय-भोग वासनाको भगवान पापरूप देभते हैं. और दया, दान, व्रत, शील, ब्रह्मचर्य आदिके भावको भगवान पुण्यरूप देभते हैं, आडाडा ! ‘निज सत्ताअे..’ निज ह्याती-स्वयंका है-पना, वह तो प्रभु आप शुद्ध है, ऐसा देभते हैं. शुद्ध नाम द्रव्य, गुण दोनों पूर्ण शुद्ध है, इसको आत्मा कहते हैं. इस आत्मामें अेक करण नामकी शक्ति है, गुण है, साधकपनाका अेक गुण है. साधकपना जो अंदर प्रगट होता है, उसका (कारण) साधक नामकी शक्ति है, आडाडा ! जवाहरातके (धंधेमें) कभी सुना नहीं और माथाकूट करके जिंदगी यली गर्ह, आडाडा ! समजमें आया ? आडाडा ! सारी जिंदगी पैसा..पैसा..पैसा.., धूल..धूल..धूलमें (गर्ह).

यहां तो परमात्मा कहते हैं, जो कोई पर चीजको मांगता है, वह बडा रांका—भिभारी है. अपनी चीज आनंदका नाथ भगवान, अनंत शक्ति संपन्न (वस्तु) पडी है, उसके पास (सुभ) मांगता नहीं है और परके पास (सुभ) मांगता है कि, इसमें से (सुभ) लाओ, पैसेमें सुभ है, स्त्रीमें सुभ है, दो-पांय-पयीस लाभका मकान बनाकर वास्तु ले और पांय-पयास हजर-लाभ-दो लाभ भर्य करे, (तो मान ले कि हम) सुभी है. धूलमें भी (सुभी) नहीं है, सुन न ! दुःभी आकुलताके तंजारमें पडा है. सुभ तो भगवान आत्मामें पडा है. सुभ शक्ति आत्मामें है और उसके साथ साधन शक्ति भी है. सुभका साधन करके आत्मामें सुभकी प्राप्ति करनी, इस सुभकी प्राप्तिका कार्यका कारण, यह साधक नामकी शक्ति है, आडाडा !

अेक सुभ नामका गुण है, उसमें साधक नामके गुणका रूप है. रूप यानी स्वरूप. जो आत्मा है इसमें आनंद नामकी शक्ति—गुण है. (उसके साथ) अेक साधक नामकी, करण नामकी शक्ति है. आनंद (गुणमें करण शक्ति) नहीं, लेकिन आनंद गुणमें साधकपनाकी शक्तिका स्वरूप है. आनंदमें साधकपनाकी शक्तिका स्वरूप है. (किसीको ऐसा लगे) क्या कहते हैं ? कुछ मेल जाता नहीं, आडाडा ! आत्मामें आनंद नामका गुण है. उसमें साधक नामकी शक्तिका स्वरूप है. साधक नामकी शक्ति आनंदगुणमें नहीं. आडाडा ! त्तारी बातें (हैं) बापू ! निज घरमें क्या है ? इसकी खबर नहीं और परघरमें ढूंढने जाता है. बडा मूर्ख है. अबजोपति सब परमें (सुभ) ढूंढते हैं, वे सब मूर्ख हैं. यहां तो ऐसा कहते हैं. समजमें आया ?

યહાં કહતે હૈં, આત્મામેં જ્ઞાન ગુણ હૈ. ઉસકે સાથ એક કારણ નામ સાધક નામકી શક્તિ હૈ. યહ શક્તિ જ્ઞાનગુણમેં નહીં. જ્ઞાનગુણમેં ઇસ શક્તિકા સ્વરૂપ હૈ. યહ ક્યા ? અભી રૂપ કે બદલેમેં સ્વરૂપ કહા. સમજમેં આયા ? દૂસરે પ્રકારસે કહેં તો, અંદર જ્ઞાનગુણમેં યહ સાધક નામકી શક્તિકા ભાવ હૈ. યહ શક્તિ વહાં (જ્ઞાનગુણમેં) નહીં. એસી બાર્તે હૈં !

અરે..! ઉસકે ઘરમેં (ક્યા હૈ, યહ) કભી સુના નહીં. મેરે ઘરમેં ક્યા હૈ ? ઔર મેં કહાં રખડતા હું ? ભટકતા હું ? આહાહા ! ચૌરાસી (લાખ યોનીકે) અવતારમેં અનંત બાર તો નિગોદમેં અવતાર લિયા. અનંત બાર અબજોપતિ રાજા (હુઆ). એક દિનકી અબજ (રૂપયેકી) કમાઈ (કરનેવાલા) એસા રાજા અનંત બાર હુઆ. ધૂલકા ઘણી મરકર નરકમેં ગયા. આહાહા ! સમજમેં આયા ? પરંતુ આત્માકી શક્તિ ઔર આત્મા ક્યા હૈ ? ઇસકી કભી ખોજ નહીં કરી. આહાહા ! સમજમેં આયા ? જિંદગીમેં કહીં સુનને મિલે એસા નહીં હૈ. આહાહા ! યહ બાત, બાપૂ ! ક્યા કહેં ? ઇસ સમયમેં યહ બાત બહુત લોપ હો ગયી હૈ. સાધુ નામ ધરાનેવાલે ભી વ્રત કરો, અપવાસ કરો, મંદિર કરો, યાત્રા કરો ઉસસે તુજે ધર્મ હૈ, (એસા કહતે હૈં). એસી પ્રરૂપણા મિથ્યાદૃષ્ટિકી હૈ. સમજમેં આયા ? વહ મિથ્યાદૃષ્ટિ હૈ, સાધુ નહીં, આહાહા !

યહાં તો કહતે હૈં કિ, પ્રભુ ! એક બાર સુન તો સહી ! તેરી ચીજમેં અનંત શક્તિયાં એક સાથ એસે વિસ્તારસે પડી હૈં. ઔર ઉસકી પર્યાય હૈ, વહ કમસર આયત હોતી હૈ. એક કે બાદ એક (હોતી હૈ). યહાં નિર્મલ (પર્યાયકી) બાત હૈ, મલિન (પર્યાયકી) બાત નહીં હૈ. અનંત શક્તિયાં હૈં, ભગવાન આત્મા વસ્તુ હૈ ઉસમેં અનંત શક્તિ નામ ગુણ હૈ. એક સાથ એસે વિસ્તાર પ્રાપ્ત હૈ. એસે વિસ્તાર પ્રાપ્ત હૈ ઔર ઉસકી જો નિર્મલ પર્યાય હૈ, વહ કમસર એસે આયત પ્રાપ્ત હૈ. એક કે બાદ એક, એક કે બાદ એક, ગુણ એક કે બાદ એક હૈ, એસા નહીં હૈ. ગુણ તો એક સાથ અનંત હૈ, આહાહા ! પરંતુ પર્યાય હૈ, વહ અનંત ગુણકી એક સમયમેં એક હી હોતી હૈ.

અબ યહાં તો કહતે હૈં કિ, પર્યાયમેં જો નિર્મલ કાર્ય (પ્રગટ હોતા હૈ), ધર્મ સ્વભાવ જો પર્યાયમેં પ્રગટ હોતા હૈ, વીતરાગી ભાવ જો પ્રગટ હોતા હૈ, 'સમ્યગ્દર્શન, જ્ઞાન, ચારિત્રાણી મોક્ષમાર્ગ' જો પર્યાયમેં પ્રગટ હોતા હૈ, ઉસકા કારણ કૌન ? ઉસકા કરણ કૌન ? ઉસકા સાધન કૌન ? આહાહા !

એસે હી મર ગયા. બાહરમેં બડી પંડિતાઈ કી, લાખો આદમીઓંકે બીચ બડે ભાષણ કિયે ઔર રાજી-રાજી હો (ગયા). વહાં લોગ ભી એસે હી હોતે હૈં, આહાહા ! વ્યવહાર કરતે-કરતે નિશ્ચય હોગા. દયા, દાન, વ્રત, શુભભાવસે શુદ્ધતા હોગી. એસી પ્રરૂપણા મિથ્યાદૃષ્ટિકી હૈ, આહાહા ! (કિસીકો) ધર્મકા ભાન હી કહાં હૈ ? તીન લોકકા નાથ જાગૃત સ્વભાવસે ભરા પડા હૈ, આહાહા ! અરે ભાઈ ! તુજે ખબર નહીં હૈ. તેરે ઘરમેં તુજે વાસ્તુ લેના હો,

(તો તુજે દ્રવ્ય પર દૃષ્ટિ કરની હોગી). પર ઘરમેં તુજે વાસ્તુ લેના હો તો બડા મહોત્સવ કરતા હૈ. પાંચ-પચીસ હજારકા ખર્ચ કરો ઐસા (ફર્નીચર) કરો ઐસા વૈસા કરો, આહાહા ! યહાં તુજે (આત્મામેં) વાસ્તુ લેના હૈ તો, ભગવાન (આત્મામેં) ઇતની શક્તિ હૈ કિ, (ઉસમેં) એક સાધક નામકા ગુણ પડા હૈ. ઇન ગુણોંકો ધરનેવાલા ભગવાન ઉસમેં તુજે વાસ્તુ લેના હો, તો દ્રવ્ય પર દૃષ્ટિ કરની પડેગી. પર્યાય પર (દૃષ્ટિ) નહીં, રાગ પર નહીં (ઐર) ગુણકે ભેદ પર (ભી) નહીં, આહાહા !

ઐસા કહીં સુનને નહીં મિલતા. બેચારે જીંદગી (ઐસે હી નિકાલ દેતે હૈં). પૈસે કમાને હો તો સારા દિન પૈસા..પૈસા... (કરે). સ્ત્રી-પુત્રકો રાજી રખનેકે પાપમેં ૨૦-૨૨ ઘંટે ચલે જાયે, આહાહા ! એક-દો ઘંટા (કુછ) સુનનેકો મિલે તો કુગુરુ ઉસે લૂટ લેતે હૈં. તુમકો વ્રત કરનેસે ધર્મ હોગા, અપવાસ કરનેસે ધર્મ હોગા (ઐસા કહકર). કુગુરુ ઉસે લૂટ લેતે હૈં. આહાહા ! બનિયે તો કેસે ફંસે હૈં ! બનિયે બાહરમેં કભી ફંસતે નહીં, (યહાં) ધર્મમેં ફંસ જાતે હૈં. યહાં તો કહતે હૈં કિ, દયા પાલો, વ્રત કરો, અપવાસ કરો, આઠ અપવાસ કરો, ૨-૫-૨૫-૫૦ લાખ ખર્ચ કરકે મંદિર બનાઓ, (ઇસલિયે) બનિયે માન લે કિ, આહાહા ! (યહ) ધર્મ હૈ. અરે ! ફંસ ગયા. શુભભાવમેં (કભી) ધર્મ નહીં.

શ્રોતા : બનિયેકો સભી ચીજ સસ્તી ચાહિયે.

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : યહ સસ્તી લેને ગયા ઉસમેં મહેંગી પડ ગયી. આહાહા ! એક બાર દૃષ્ટાંત દિયા થા. હમારે યહાં ગુજરાતમેં કાઠિયા હોતે હૈં. (વહ) સબ્જી બેચતે હૈં. હમારે પાલેજમેં માલ લેને આયે તબ ૨૦-૪૦ કિલો લે જાતે હૈં. ફિર બેચને આતે હૈં. બેચતે-બેચતે ૧૦ શેર ઇદ્રવાલી સબ્જી બચ ગયી હો. તબ કંજૂસ-લોભી બનિયેકો કહે, 'યહ ૧૦ શેર બચ ગયા હૈ, ઇસે ઉઠાકર વાપસ ગાંવમેં કહાં લે જાયેંગે ? અભી તક ૮ આના શેરમેં બેચા હૈ, તુમકો ૪ આના શેરમેં (દે દેંગે). થોડા ઇદ્ર હૈ (તો) તુમકો ચાર આના શેરમેં દે દેંગે'. (અરે.. ઐસા લેગા તો) એક ટુકડા ભી કામમેં નહીં આયેગા. ઐસી બનિયેકી બુદ્ધિ ! ઐસે ધર્મકે નામ પર ફંસ ગયા. ઇસ સાલમેં દો-ચાર શેત્રુંજયકી યાત્રા કરો—કાર્તિક સુદી-૧૫, ચૈત્ર સુદી-૧૩ (કે દિન યાત્રા કરો), જાઓ ! તુમહારા કલ્યાણ (હો ગયા) ! મર જાયેગા ! ફંસ જાયેગા. વહાં કલ્યાણ નહીં હૈ, સુન તો સહી ! સમજમેં આયા ?

(યહાં દિગંબરોંમેં) સમ્મેદશિખરકી (બાત કરતે હૈં). 'એકબાર વંદે જો કોઈ, નરક-પશુ ન હોય' નરક-પશુ ન હો તો ઉસમેં ક્યા હુઆ ? પહલે પશુ હોકર ફિર નરકમેં જાયેગા, આહાહા ! ભાઈ ! વહ તો એક બાર ઐસા શુભભાવ હુઆ હો તો મરકર તિર્યચમેં નહીં જાયેગા. લેકિન મનુષ્ય હોકર ફિર તિર્યચમેં જાકર નિગોદમેં જાયેગા. જબ તક આત્માકા જ્ઞાન નહીં હૈ, આત્મા ક્યા ચીજ હૈ ? ઉસકી પ્રતીતિકા—વિશ્વાસકા ભાન નહીં, જિસકા વિશ્વાસ કરના હૈ, ઉસ ચીજકા તો ભાન નહીં, આહાહા ! ઐસે ભાન બિના ઉસ ક્રિયાકાંડ (ઐર) રાગસે

तो पुण्य बंध होगा. उससे अेकबार स्वर्ग मिलेगा (तो) वहांसे तिर्यय छोकर नरकमें—निगोदमें जायेगा. उससे भवका अभाव नहीं होगा. समजमें आया ? कडक पडे लेकिन क्या करें ? वीतरागका मार्ग तो यह है, आहाहा !

यहां कहते हैं कि, “भवते दुःखे...” (अर्थात्) वर्तमान होनेवाली पर्यायका कार्यरूप भाव. उसके “भावके भवनके...” (अर्थात्) निर्मल वीतरागी भावके होनेके कारणरूप. “..साधकतमपनेमयी..” आहाहा ! उत्कृष्ट साधक तममयी. उसमें किसीने निकाला कि, जघन्य साधक कोई है या नहीं है ? वह तो जघन्य साधनका आरोप (किया) है. उत्कृष्ट साधनमयी—वास्तविक साधन तो अंदरमें साधक नामकी शक्ति—गुण है. उसके कारण निर्मल पर्यायका साधकपना है. निर्मल सम्यग्दर्शन, ज्ञान धर्मका भाव और भवका छेदका भाव (का कारण, यह करण शक्ति है). आहाहा !

यहां अेक बडा अबजोपति गृहस्थ हो और मरकर नरकमें जाये, आहाहा ! पहली नरक है उसकी कम से कम १० हजार वर्षकी स्थिति है. नारकीकी कम से कम दस हजार वर्षकी स्थिति (है). विशेष स्थिति तो ३३ सागरोपम (है). (यहां) पाप करके दस हजार वर्षकी स्थितिमें जाये. आहाहा ! उसकी छतनी वेदना है कि, अबजोपतिका लडका हो, शादिका दिन हो, करोडो रूपये शादीमें खर्च किये हो, और २५ सालकी जवान अवस्था हो, राजकी लडकी लाया हो और (वह लडकी भी) दहेजमें करोडो रूपये लायी हो और उसी लडके को (शादीकी) पहली रातको जमशेदपुरकी लडकीमें सीधा डाल दे (और) उसको जो वेदना (होती) है, उससे अनंत गुनी वेदना पहली नरककी स्थितिमें है, आहाहा ! अरे भाई ! तुने सुना नहीं, भाई ! तुने अनंतकाल मिथ्यादृष्टिपनेमें व्यतीत किया है. तो कोईबार शुभभावसे स्वर्गादि भिला तो धूलका सेठ बना. फिर मरकर यार गतिमें रभडने जायेगा..आहाहा ! समजमें आया ?

यहां तो कहते हैं कि, तुजे परित्रमण भिटाना हो अर्थात् यह दुःख भिटाने हो तो सुभका साधनरूपी कार्य, इसका साधन क्या ? आहाहा ! भगवान (आत्मामें) अेक करण नामकी शक्ति पडी है, यह सुभका साधन है. दया, दान, व्रत यह कोई सुभका साधन नहीं है, आहाहा ! अैसी बातें हैं !

पर्युषणके दिन हो (तब) लोगोंको कहेंगे, अपवास करो, अैसा करो, वैसा करो, वर्षीतप करो, वर्षीतप करता है न ? अेक दिन जाना और (अेक) दिन लांघण. आत्माका भान नहीं (वहां) तेरे अपवास कहांसे आये ? अपवास माने पराब वास. रागकी मंदतामें तेरा वास उसको अपवास कहते हैं. सय्या उपवास तो यह है कि, आनंदका नाथकी उप नाम समीपमें जाकर बसना, उसका नाम सय्या उपवास है. यह तो सुना ही नहीं, भान ही नहीं है, आहाहा ! समजमें आया ?

यहां कहते हैं, बहुत थोडे शब्दोंमें तो कितना भरा है ! आत्मामें अंदर यारित्र नामका

गुण है. आत्मा गुणी (अर्थात्) स्वभाववान (और) यारित्र (उसका) स्वभाव (है). यारित्र स्वभावमें भी करण नामकी शक्तिका स्वरूप है. करण नामकी शक्ति यारित्र गुणमें नहीं लेकिन करण नामकी शक्ति-साधक नामकी शक्तिका यारित्र गुणमें स्वरूप है. और इस स्वरूपके कारण वीतरागी पर्यायका कारण यह यारित्रगुण होता है.

संतों-सख्ये मुनि जिसको कहें, आहाहा ! उनकी दृशामें तो प्रचुर आनंदका वेदन होता है. आहाहा ! प्रचुर क्यों कहा ? कि सम्यग्दर्शनमें आनंदका वेदन है लेकिन प्रचुर (वेदन) नहीं है. और जो सख्ये मुनि है (उन्हें प्रचुर वेदन है). सख्ये मुनिकी (बात है). ये नग्न होकर घुमते हैं इसलिये साधु हो गये, यह कोई साधु नहीं है. समझमें आया ? क्योंकि साधक नामकी शक्तिका साधन किया नहीं, तो वह साधु नहीं है, आहाहा ! उसने तो रागका-दया, दान, व्रतका साधन किया. वह तो बंधका कारण है. वह साधन नहीं है (और) वह साधु (भी) नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! ऐसी बातें कठिन पडती हैं, (लेकिन) क्या हो सकता है ? (वस्तुस्थिति ऐसी है).

यहां तीन लोकका नाथ वर्णन करते हैं. संतों केवली परमात्माने कही लुई बात आडतीया होकर जाहिर करते हैं. (बहुत लोग) ऐसा सुने बिना भाषण करे. गप-गोले यलाये (लोगोंको ऐसा लगे कि) इसे तो भाषण करने आता है ! भगवानकी भक्ति करे और व्रत पावे तो धर्म होता है, (ऐसा माने). बहुत लोग ऐसा ही करते हैं न ? आहाहा ! प्रभु ! बहुत कठिन बातें, बापू ! जन्म-मरण भिटनेकी - सम्यग्दर्शन यीज उसकी महिमा अपार है और सम्यग्दर्शनका आश्रय जो (द्रव्य) है, उस यीजकी तो अपार महिमा है ! आहाहा !

ऐसी यीजमें यारित्रकी पर्याय जिसमें होती है, उसको बाहरमें नग्न दृशा हो जाती है और उसके अंतरमें कोई पंच महाव्रतका विकल्प आता है, वह यारित्र नहीं. यारित्र तो अंदरमें वीतरागी आनंदकी रमणता (होना) उसका नाम यारित्र है, आहाहा ! इस यारित्रका कारण कौन ? पंच महाव्रत, समिती, आदि कारण हैं ? ना. (तो फिर) कारण कौन ? यारित्र गुणमें कारण शक्तिका रूप-स्वरूप पडा है, उस कारणसे यारित्रकी वीतरागी पर्यायका भवन होना, उसका (कारण) साधकतम कारण शक्ति है. समझमें आया ? बातमें बहुत ईर्ष है.

स्त्रीका शरीर और चुरमेके लडुका भोक्ता आत्मा नहीं. उस समयमें उसको राग होता है कि, मैं स्त्रीका भोग लेता हूं और वह राज्य होती है और मैं भी राज्य होता हूं. यह रागका भोग है, दुःखका भोग है, अनाकुलताका भोग है, आहाहा ! परंतु जिसको अनाकुलताका भोग लेना हो तो (उसका) साधक-कारण कौन ? समझमें आया ? अनाकुल आनंदका भोग लेना हो, इस धर्मका अनुभव करना हो तो उसका कारण कौन ? उसका कारण भोजनेसे वह कार्य होगा, आहाहा ! भगवान आत्मामें एक साधक नामकी शक्ति पडी है. उस शक्तिवानको भोजनेसे, शक्तिके कारणसे अनाकुल आनंदका भोग होता है. समझमें आया ? अनाकुल आनंदका

वेदन धर्म है. त्मारी कठिन बात ! समजमें आया ?

यह अक-अक गुण अनंत शक्तिमें व्यापक है. आत्मामें अनंत अपरिमित शक्तियां हैं. अनंत शक्ति कडो या गुण कडो (अक ही बात है). प्रत्येक गुणमें यह साधक नामकी शक्ति व्यापी है अथवा साधक नामकी शक्तिका प्रत्येक गुणमें स्वरूप है अथवा साधक नामकी शक्तिने अपने द्रव्यस्वभावका आश्रय किया तो जो निर्मल पर्यायका कार्य हुआ, उसका वह कारण है, समजमें आया ? साधकतम कारणसे निर्मल कार्य होता है, आडाडा !

दूसरे प्रकारसे कहें तो, सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र, आनंदका भोग वारंवार उस आनंदका भोग वह धर्म (है), तो उसका कारण कौन ? आडाडा ! कि आनंद स्वरूप भगवान उसमें करण नामकी शक्तिका रूप है. उस कारणसे पर्यायमें आनंदका भोग होता है. समजमें आया ?

अरे...! यह शब्द भी सुने न डो और (माने कि) हम जैन है. 'शमो अरिहंताशं, शमो सिद्धाशं, शमो आयरियाशं....' (बोले). आडाडा ! जैसे 'शमो अरिहंताशं' अनंत बार किये. पंथ परमेष्ठिपदको नमस्कार और भक्ति अनंत बार किये, वह तो शुभ राग है. वहां कहां धर्म आया ? समजमें आया ? अपनी धर्म दशामें कारणरूप कारण नामकी शक्ति है, यह कारणरूपसे कार्यमें आती है, आडाडा ! अरे.. ऐसी भाषा ! कभी सुना भी न डो. बनियेके पास सब सुना डो, यह अंदरसे सुना नहीं. सारा दिन धंधा करो-ये करो, आडाडा ! जो धंधेमें रुकते हैं वह तो अकेले पाप है. यहां तो कहते हैं कि, धर्म श्रवणमें आया और श्रवण किया, दो-दो घंटे, यार-यार घंटे, वह भी विकल्प और शुभराग है, वह भी धर्म नहीं. धर्म तो राग रहित भगवान आत्मा उसमें साधक नामका गुण पडा है, (इस) गुणीके अवलंबनसे, गुणके कारण (जो पर्याय प्रगट होती है, यह धर्म है). (कोई अक गुण अकेला) परिणामन नहीं करता. द्रव्यके साथ (गुण) परिणामता है. सारा द्रव्य अक साथ परिणामता है. साधक नामकी शक्ति अकेली त्मिन्न डोकर परिणामती है, ऐसा नहीं. क्या कहते हैं ? इसमें अक-अक बातमें ईर्क है. आडाडा !

यह सिद्धविलासकी बात तो पहले कही थी. (अकेला) गुण परिणामन नहीं करता. द्रव्य परिणामता है, उसमें साथमें गुणका परिणामन डो जाता है. यह अक बार कडा था. समजमें आया ? गुण परिणामन और द्रव्य परिणामन, (ऐसी कैसी) भाषा है ? बनियेकी हिसाबकी किताबमें (ऐसा कुछ) आता नहीं. मंदिरमें और (और कहीं जगह) सुनने मिले नहीं, आडाडा !

यहां कहते हैं कि, अक बार सुन तो सही, आडाडा ! तेरा स्वभाव ही ऐसा है, यानी तेरा गुण ऐसा है कि, धर्मकी पर्यायका कार्य जो हुआ; पर्याय कडो कि कार्य कडो (अक ही बात है), इस कार्यके प्रवर्तनमें कारणरूप तो अंदर साधक नामका गुण है. प्रत्येक गुणमें अंदर साधक नामका गुणका (रूप) है. प्रत्येक गुण अपनी पर्यायका कारण है. प्रत्येक गुणका

कार्यका कारण प्रत्येक गुण है. दूसरा गुणका कार्यका कारण दूसरा गुण है, ऐसा नहीं है, आछाछा ! समजमें आया ? अक-अक बात कितनी याद रखनी ? पहले आयी छो उससे अलग प्रकारकी (बातें आती हैं), आछाछा !

(आत्मामें) अनंत गुण हैं. प्रत्येक गुणमें साधक नामकी शक्तिका स्वरूप है. तो प्रत्येक गुणके कार्यरूपमें साधक नामका स्वरूप है, वह कारण होता है, आछाछा ! अंदर श्रद्धा नामका गुण है. उसमें करण नामका स्वरूप है. उसके कारण सम्यग्दर्शनकी पर्यायका कार्य होता है. सम्यग्दर्शनकी पर्यायका कारण अंदर करण (शक्तिका) रूप है. जैसे सम्यक्ज्ञानमें सम्यग्दर्शनका रूप है, वह कार्य नहीं करता. (लेकिन) सम्यक्ज्ञानमें – जो ज्ञानगुण है, उसमें करण नामकी (शक्तिका) स्वरूप है, उस कारणसे सम्यक्ज्ञानकी पर्यायका कार्यका कारण (वह करण गुण) होता है, आछाछा ! बहुत सूक्ष्म, आपू !

यह तो वीतराग जिनेन्द्रदेव तीन लोकके नाथ ! अक समयमें जिन्होंने तीन काल तीन लोक देभे. पर्यायको देभा उसमें तीन लोकको देभा, ऐसा कलनेमें आता है. उस भगवानकी वाणीमें ऐसा कहते हैं, भाई ! तुने सुना नहीं. तेरे घरमें क्या पुंछ है ? क्या लक्ष्मी है ? छसे तुने सुना नहीं, नाथ ! आछाछा ! तेरी लक्ष्मीमें—तेरी पुंछमें अक करण नामका गुण है. आछाछा ! अनंतगुणमें छस करणगुणका स्वरूप है, आछाछा ! प्रत्येक गुणका जो निर्भल कार्य है, उसका कारण (करणगुणका) स्वरूप है, यह कारण है. आछाछा ! दूसरे गुणका स्वरूप है, यह गुणके कार्यका कारण नहीं, तो फिर दया, दान, व्रतका (शुभभाव) उसका कारण है, (वह तो बहुत दूर है). उसका (स्वरूपमें) अभाव है, यह स्याद्वाद है. व्यवहारका अभाव कारण है, व्यवहारका सदभाव कारण नहीं. अथवा सदभाव कारण है और उसका अभाव कारण है. आछाछा ! उसका नाम अनेकांत और उसका नाम स्याद्वाद है. उसको अनेकांत कडा. (लोग तो) अनेकांत (किसे कहते हैं ? कि) अपनेसे भी (कार्य) होता है और व्यवहारसे भी होता है, ऐसा अनेकांत करो. वह अनेकांत नहीं वह तो झुंझीवाद है. टेढी—मेढी झुंझी घुमता है, वह झुंझीवाद है.

भगवानका अनेकांत मार्ग तो यह है कि, अपने गुणमें—शक्तिमें करण नामकी शक्ति है, तो प्रत्येक गुणका भवन नाम प्रवर्तमान जो कार्य उसका कारण यह स्वरूप है. आछाछा ! समजमें आया ? प्रत्येक (शक्तिके) अक-अक शब्दमें झर्क है. वही के वही शब्द नहीं है. यहां (प्रत्येक) शब्दमें भिन्न-भिन्न वाच्य है. प्रत्येक शब्दमें भिन्न वाच्य है, आछाछा ! समजमें आया ? यहां (कोई) कहे कि भिन्न साधन-साध्य कडा है न ? ऐसा सब कहते हैं. वह तो आरोपित कथन है. निमित्तका ज्ञान करानेको वह बात कही है. मोक्षमार्ग प्रकाशकमें सातवें अध्यायमें आता है. निश्चयात्मास और व्यवहारात्मासमें (आता है) व्यवहार लेय है. और ग्रहण करने लायक है, ऐसा कडा है न ? ग्रहण करने लायकका अर्थ यह है कि, 'है' उसको

जानना. उसका नाम ग्रहण है. व्यवहार है उसको जानना और निश्चय है, उसे उपादेय करना, आडाडा ! इसका नाम निश्चय—व्यवहारका सय्या ज्ञान है. (इसमें भी) तकरार, आडाडा !

कोई तो ऐसा कहते हैं कि, सोनगढने नया (धर्म) निकाला. यह सोनगढका है ? अभी तक तो संप्रदायमें (ऐसी) बात नहीं थी. यह नया निकाला. (हम तो अभी तक) भक्ति करते थे, शेरुंजयकी यात्रा करते थे. कार्तिक सुदी-१५ के दिन १०-१० हजर, १५-१५ हजर आदमी (छक्के छोते हैं).

श्रोता : सभ बंध करा दिया.

पूज्य गुरुदेवश्री : कौन (बंध) कराये ? शुभभाव आता है और डोगा, परंतु वह धर्म नहीं. वह तो अशुभसे बचनेको भीयमें शुभभाव आता है लेकिन धर्मी उसको लेय जानते हैं. अज्ञानी उसको उपादेय मानते हैं, धतना ईर्क है. ऐसी बातें (हैं) ! बहुत भरा है ! ओडोडो !

अनंत गुणमें कारण नामका रूप है. अपना निर्मल कार्यका वह कारण है. यह सम्यग्दर्शन आदिकी जो पर्याय उत्पन्न होती है, यह सम्यग्दर्शनकी पर्यायमें भी कारण शक्तिकी पर्यायका अंश है, आडाडा ! कारणका अंश इस सम्यग्दर्शनमें भी है. षट्कारक है न ? तो सम्यग्दर्शनकी पर्यायका कर्ता सम्यग्दर्शन, सम्यग्दर्शनकी पर्यायका कर्म सम्यग्दर्शन, सम्यग्दर्शनका साधन (वह) पर्याय (स्वयं) साधन, पर्यायको साधन (कडा). गुणको साधन तो पडले कडा. सम्यग्दर्शनकी पर्यायका आधार वह पर्याय, सम्यग्दर्शनका अपादान—क्षणिक उपादान अपना अपनेसे हुआ वह (अपादान) और समकित जो हुआ उसे रभा (वह) संप्रदान. अपनी पर्यायसे संप्रदान है. गुणके कारणसे भी नहीं. आडाडा ! अरेरे..भाई ! तुने भगवानका मार्ग सुना नहीं, भाई ! अनंतकालसे मर गया, आडाडा !

अनंत बार साधु हुआ. 'मुनिव्रत धार अनंत बैर, गैवेयक उपजायो, आतमज्ञान बिन लेश सुभ न पायो' उसका अर्थ क्या हुआ ? कि, पंयमहाव्रत, समीति और गुप्तिका राग यह दुःख है, आकुलता है, आडाडा ! 'आतमज्ञान बिन लेश सुभ न पायो' इसका (अर्थ) क्या हुआ ? पंयमहाव्रत दिया वह सुभ तो नहीं (लेकिन) दुःख है. यह गजब बात है ! दुःखको यारित्रका साधन बनाना (इससे सुभ कहांसे डोगा) ? यारित्र तो अंदर आनंदकी लहेर है. आनंदकी लहेर उठती है उसका नाम यारित्र है. इस यारित्रका कारण इस दुःखको बनाना ? महाव्रत कारण है और यारित्र कार्य है, (ऐसा नहीं है), आडाडा !

यहां तो वीतरागी पर्याय यारित्र (है). आडाडा ! उसके यारित्र गुणमें कारण नामका स्वरूप है, रूप है, भाव है. यह भाव कारण होता है. वीतरागी पर्यायका कारण यारित्र गुणमें कारण नामका भाव है, यह कारण होता है. कभी बाप-दादाने भी सुना नहीं. ऐसी बात है, वस्तु ऐसी है.

શ્રોતા : કોઈ બતાવવાલા નહીં મિલા.

પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી : પાત્ર હો તો બતાવવાલે મિલે બિના રહે હી નહીં. પાત્રકી ખામી હૈ. અપની યોગ્યતાકી કમી હૈ. ઇસ કારણસે નહીં મિલા, એસે લો. (બતાવવાલે) મિલે તો અનંત બાર હૈ. પ્રભુકે પાસ સુના હૈ (ફિર ભી) ક્યોં નહીં પાયા ? અપની પાત્રતા નહીં થી (ઇસલિયે નહીં પાયા). આહાહા ! સમજમ્ને આયા ? યહ પાત્રતા અપનેસે પ્રગટ હોતી હૈ. પરકે કારણસે નહીં, આહાહા ! સમ્યગ્દર્શનકો હી પાત્રતા કહા હૈ. જિસમ્ને સિદ્ધપદ રહતા હૈ, સિદ્ધપદ પ્રાપ્ત હોતા હૈ. સમ્યગ્દર્શન હી પાત્રતા હૈ, આહાહા ! જો સમ્યગ્દર્શનકે કારણ કેવલજ્ઞાન પ્રાપ્ત હોગા હી. બીજ ઊગી વહ પુનમ હોગી હી. સમ્યગ્દર્શનમ્ને આત્માકે આનંદકા અનુભવ હુઆ ઉસકો કેવલજ્ઞાન પ્રાપ્ત હોગા હી. વહ કેવલજ્ઞાન લેનેકો પાત્ર હુઆ. સમજમ્ને આયા ? આહાહા !

શાસ્ત્રમ્ને ભિન્ન કારણ ઓર ભિન્ન કાર્ય આતા હૈ. (લોગ બાતકો) વહાં લે જાતે હૈં. (કહતે હૈં) દેખો ! સાધન-સાધ્ય ભિન્ન કહા હૈ. બાપૂ ! વહ ભિન્ન સાધન કહા (હૈ), વહ સાધનકા આરોપ દેકર કહા હૈ. બાકી વાસ્તવિક સાધન તો અંતર નિર્મલ વીતરાગી દશા હો, યહ સાધન (હૈ). લેકિન ઉસકા કારણ યહ સાધક નામકી શક્તિ (હૈ). સમજમ્ને આયા ? ઓર ઉસકા મૂલ કારણ તો દ્રવ્ય (હૈ). શક્તિકા ધરનેવાલા ભગવાન આત્મા ઉસકા આશ્રય કરનેસે ધર્મકી વીતરાગી પર્યાય ઉત્પન્ન હોતી હૈ. એસા હૈ, ભાઈ !

અભી તો જિસકો સચ્ચા જ્ઞાન ભી નહીં હૈ—સમજનેકા સચ્ચા જ્ઞાન—બુદ્ધિ નહીં, ઉસકો તો અંદર પ્રયોગ કિયે બિના ધર્મ કેસે હોગા ? આહાહા ! અરે.. દુઃખી હૈ, ભાઈ ! આહાહા ! આજકા કરોડપતિ, અબજપતિ સેઠ હો (ઉસકા) દેહ છૂટને કે (બાદ) નરકમ્ને જાયે, આહાહા ! બાપૂ ! એસે ભવ તુને અનંતબાર કિયે હૈં. ભાઈ ! તેરે દુઃખકો દેખનેવાલેકો રોના આયા હૈ, આહાહા ! તુને ઇતને દુઃખ સહન કિયે હૈં, આહાહા ! અરે..! સમુદ્ર ભર જાયે (ઉતની માતાએ રોયી હૈં). લડકા મર જાયે ઓર માતાકો આંસુ આવે ઉસ આંસુકે મેરુ (પર્વત) જિતને સમુદ્ર ભર જાયે, ઇતને તો આંસુ (બહાયે હૈં), આહાહા ! ઇતની બાર (તેરે) મરણસે તેરી માતાકો દુઃખ હુઆ, આહાહા !

યહાં તો એસા કહતે હૈં કિ, જબ સમ્યગ્દર્શન હોતા હૈ, અપને સ્વરૂપકે અનુભવમ્ને સમ્યગ્દર્શન હુઆ, બાદમ્ને જબ સ્વરૂપકી રમણતા (પ્રગટ કરનેકો) જંગલમ્ને જાનેકા ચારિત્ર પ્રગટ કરતે હૈં (તબ) અકેલા જંગલમ્ને જાતા હૈ, કોઈ સાથમ્ને નહીં (હોતા), કોઈ આહાર દેનેવાલા નહીં, શરીરકી રક્ષા કરનેવાલા નહીં, કોઈ વૈદ્ય નહીં, આહાહા ! મુનિ અપને આનંદકી મૌજ કરનેકો જંગલમ્ને ચલે જાતે હૈં, આહાહા ! (એસે મુનિકો) માતા ઇજાજત નહીં દે (ઓર) રોતી હૈ, (તબ કહતે હૈં), 'માતા ! એક બાર રોના હો તો રો લે, મા ! લેકિન મેં આત્માકા સાધન કરનેકો જંગલમ્ને ચલા જાતા હું. ઓર માતા ! મેં કોલ-કરાર કરતા હું, (અબ આગે) દૂસરી

माता नही करुंगा, मा ! मैं तो मेरा यारित्रका साधन करुंगा. (अब) दूसरी माता नही करुंगा'. आहाहा !

उत्तराध्ययनके १४वें अध्ययनमें है. माता ! मैं आज ही यारित्रको—आनंदकी दशाको अंगीकार करना चाहता हूं. माता ! मैं यारित्र अंगीकार करने, आनंदका रमण करने जाता हूं. जिससे मैं दुबारा दूसरा भव नही करुंगा. मैं इस भवमें शरीर रहित सिद्ध हो जाऊंगा'. ऐसी यारित्र दशा (होती है) ! आहाहा ! अरे..! इस समयमें उसे सुनने मिले नही. (यह) वस्तु तो (कही) है नही. समझमें आया ? (आगे कहते हैं) माता ! जगतमें नही प्राप्त हुई ऐसी कौनसी चीज रह गई है ? सब पाया है. अनंत बार लक्ष्मी मिली, स्त्री-कुटुंब मिला, धूल मिली, बंगला मिला, माता ! नही प्राप्त हुई ऐसे आनंदके नाथकी (मूल) चीज रह गई है'. समझमें आया ?

जन्म-मरणका रोग मिटानेकी दवा, आत्माका आनंदका आश्रय लेना यह है. 'आत्मत्प्रांति सम रोग नहि' आत्मत्प्रांति सम रोग नही, यह (बाहरका) रोग नही, नाथ ! रागसे मुझे धर्म होगा और राग मेरी चीज है, यह त्प्रांति है. इसके जैसा कोई रोग नही. 'आत्मत्प्रांति सम रोग नही, सद्गुरु वैद्य सुजाण, गुरु आज्ञा सम पथ्य नही' पथ्यका पालन करते हैं न ? 'औषध विचार ध्यान' त्प्रांति सम रोग नही, नाथ ! पुण्यमें धर्म है, रागकी क्रिया करते-करते धर्म हो जायेगा ! यह त्प्रांति है, प्रभु ! तुझे बड़ा रोग हो गया. मिथ्यात्वका बड़ा रोग हो गया. तुझे क्षय रोग लागू हुआ है. आहाहा ! समझमें आया ? 'सद्गुरु वैद्य सुजाण' सख्ये धर्मात्मा ! सत्यके जाननेवाले यह सद्गुरु (है). उसकी आज्ञा है कि, आत्माका आश्रय करनेसे तुझे धर्म होगा. यह आज्ञा है. आहाहा ! 'औषध विचार ध्यान' विचार करना और ध्यान लगाना, यह औषध है. स्वर्ूपका ध्यान लगाना और स्वर्ूपकी ओर जुकना, यह औषध है. ये (बाहरके) औषध तो अनंत बार किये. ४३ (शक्ति) हुई. ४७ शक्तिमेंसे ४३ (शक्ति) हुई. ४४ वीं (शक्ति) विशेष कहेंगे....



પ્રવચન નં. ૩૯

શક્તિ-૪૪ - તા. ૧૮-૦૯-૧૯૭૭

સ્વયં દીયમાનભાવોપેયત્વમયી સમ્પ્રદાનશક્તિ: ॥૪૪॥

સમયસાર શક્તિકા અધિકાર ચલતા હૈ. ભગવાન આત્મા અનંત શક્તિકા ભંડાર હૈ. શક્તિયોંકે રત્નોંકા ભંડાર ભરા હૈ. (લેકિન) ખબર નહીં હૈ. બાહર ઢૂંઢને જાતે હૈં (લેકિન) આત્મા વહાં નહીં હૈ. દયામ્, દાનમ્, ભક્તિમ્, કામમ્, વિષય વાસનામ્ ઢૂંઢને જાતા હૈ. (લેકિન) વહાં તો આત્મા નહીં હૈ, આહાહા ! વહાં તો દુઃખ હૈ. શુભભાવમ્ ઢૂંઢને જાયે તો શુભભાવમ્ તો દુઃખ હૈ. વહાં કહાં આત્મા હૈ ? આહાહા ! યહાં તો આત્મા જ્ઞાયક સ્વભાવકા સામાન્ય સ્થિતિમ્ વર્ણન ક્રિયા ઓર ઇસ જ્ઞાયકભાવમ્ અનંત ગુણરૂપી શક્તિ પડી હૈ. ૪૩ (શક્તિ) ચલી ન ?

આજ ૪૪ (શક્તિ લેતે હૈં). ક્યા કહતે હૈં ? આત્મામ્ (એક) સંપ્રદાન નામકા ગુણ હૈ. ઇસ ગુણકા કાર્ય ક્યા ? રાગ, દયા, દાનકે વિકલ્પસે રહિત ભગવાન, નિર્વિકલ્પ ચૈતન્યમૂર્તિ પ્રભુ ! ઇસકા દૃષ્ટિમ્ સ્વીકાર કરનેસે જો અનુભવ હોતા હૈ, (ઇસ) અનુભવમ્ પ્રતીતિ ઓર જ્ઞાન દોનોં આતે હૈં, આહાહા ! ઇસ અનુભવમ્ જો આત્મા જાનનેમ્ આયા, વહ રાગસે, દયા, દાનસે, યા વ્યવહારસે જાનનેમ્ નહીં આતા. ક્યોંકિ વિકલ્પ રાગ હૈ ઓર સ્વરૂપમ્ રાગ નહીં હૈ. આહાહા ! બહુત સૂક્ષ્મ બાત હૈ. ઇસલિયે આદમીકો કઠિન પડતા હૈ ન ?

ભગવાન (આત્મામ્) સંપ્રદાન નામકા ગુણ હૈ. જૈસે જ્ઞાન ગુણ હૈ (તો) જ્ઞાનગુણ તો અનંતી શક્તિકા પટારા હૈ. ક્યોંકિ કેવલજ્ઞાન આદિ પર્યાય પ્રગટ હોતી હૈ. એક..એક..એક.. એસી અનંત (પર્યાય પ્રગટ હોતી હૈ), ફિર ભી જ્ઞાન ગુણમ્ કમ નહીં હોતી. આહાહા ! એસી અનંત શક્તિયાં હૈં. ઇસમ્ (એક) સંપ્રદાન નામકી શક્તિ હૈ. ઇસકા કાર્ય ક્યા ? જિસને દ્રવ્ય સ્વભાવકી દૃષ્ટિ કી હો, નિમિત્ત પરસે દૃષ્ટિ ઉઠાકર શુભરાગ—વિકલ્પ જો હૈ, ઉસ પરસે ભી દૃષ્ટિ ઉઠાકર, એક સમયકી વર્તમાન પ્રગટ પર્યાય હૈ, ઉસ પરસે ભી દૃષ્ટિ હટાકર, અખંડાનંદ પ્રભુ આત્મા ઉસમ્ દૃષ્ટિ લગાના. આહાહા ! જહાં પ્રભુ બિરાજતા હૈ, ઉસકા ભેટા કરના. ઇસકા નામ સમ્યગ્દર્શન હૈ, આહાહા ! ધર્મકી પહલી સિદ્ધી હૈ.

यहां तो संप्रदान (शक्तिमें) क्या है ? जब स्वरूप विद्वानंद आनंदकंदका अनुभव हुआ तो रागसे और व्यवहार रत्नत्रयसे भी विभक्त (अनुभव हुआ). आहाहा ! वह तो साधक (शक्तिमें) कहां. व्यवहार रत्नत्रय साधक नहीं. आदमीको यह कठिन पड़ता है. अंतरमें साधक नामकी शक्ति है, करण नामकी शक्ति है, कारण नामकी शक्ति कहां, करण कहां कि साधक कहां (सब अकार्य है). ऐसा ही आत्मामें गुण है. जैसे गुण और गुणीके भेदका लक्ष छोड़कर, एक गुणी पर दृष्टि देनेसे ज्ञानकी पर्याय जो प्रगट होती है, वह धर्म-सम्यक्ज्ञान है.

इस ज्ञानकी पर्यायमें संप्रदान (शक्तिका) स्वरूप है. यह संप्रदान शक्ति जो है, उसका ज्ञान गुणमें स्वरूप है. उस कारणसे अपनी वर्तमान निर्मल पर्यायकी पात्रता और निर्मल पर्यायका अपनेसे लेना (ऐसा कार्य होता है). आत्मा दाता (है) और आत्मा पात्र (है), आहाहा ! लक्ष्मी देनेवाला दाता और लेनेवाला गरीब आदि अथवा कोई मंदिर आदिमें दे (लेकिन) वह यीज आत्माकी नहीं, आहाहा ! आत्माकी यीजमें तो अपना ज्ञानस्वरूप प्रथम तो ज्ञायकभाव लेनेमें आया न ? तो इस ज्ञायकभावमें संप्रदान नामका एक रूप है. संप्रदान शक्ति इससे विभक्त है परंतु ज्ञायकभावमें-ज्ञान भावमें संप्रदान (शक्तिका) स्वरूप है. यह तो अजब-गजबकी बातें हैं, बापू ! आहाहा ! ऐसी बात है, भाई ! आहाहा ! समझमें आया ?

धर्मीको धर्म करनेमें क्या होता है ? (ऐसा) कहते हैं, स्वरूपकी दृष्टि होनेसे ज्ञानकी एक समयकी जो निर्मल पर्याय है, वह संप्रदानके स्वरूपके कारण निर्मल आत्मा अपना दाता और अपनी पर्याय दे नाम पात्रता-(दोनों) एक समयमें है. सम्यक्ज्ञानका दाता अपनी पर्याय है, आहाहा ! वीतरागकी वाणी भी सम्यक्ज्ञानकी दाता नहीं, आहाहा ! ऐसी बहुत कठिन बातें हैं, बापू !

सम्यक्ज्ञानकी पर्यायका दाता कौन ? (ऐसा) कहते हैं. और लेनेकी पात्रता किसकी ? कि, सम्यक्ज्ञानमय भगवान (आत्मा) इसमें एक संप्रदानका स्वरूप है, उस कारणसे उसकी निर्मल पर्याय दुर्घ, वह निर्मल (पर्याय) दाता और उसी समयमें लेनेकी योग्यता वह पात्रता (है). समझमें आया ?

तीर्थंकर तीनलोकके नाथ छत्रस्थ हो और आहार देनेका भाव (आवे) वह स्वभाव नहीं. वह तो शुभभाव है. अंदर शुभभावकी कोई शक्ति-गुण नहीं है कि अपना शुभभाव दे और ले, आहाहा ! पैसा लेना-देना ऐसी तो आत्मामें कोई शक्ति है ही नहीं. लेकिन शुभभाव बने और शुभभाव ले और शुभ भाव रभे, आत्मामें ऐसी कोई शक्ति नहीं, आहाहा ! परंतु ज्ञानकी पर्यायमें जो निर्मल ज्ञानकी पर्याय शांतिके साथ उत्पन्न होती है, वह दान देनेवाली पर्याय और लेनेवाली भी वही पर्याय (है). आहाहा ! पात्र भी वही, (और) दाता भी वही और दे भी वही, आहाहा ! समझमें आया ?

संप्रदान (शक्ति) है न ? क्या कहते हैं ? देजो ! “अपने द्वारा दिया जाता...” सूक्ष्म है, भाई ! यह हिसाबकी बातें बहुत सूक्ष्म हैं ! यहां कहते हैं, “अपने द्वारा दिया जाता...” कौन ? वर्तमान ज्ञानकी पर्याय, आनंदकी पर्याय, शांतिकी पर्याय, सम्यक् वीर्यकी पर्याय, (यह सब) निर्मल पर्याय अपनेसे दी जाती है. है ? “अपने द्वारा दिया जाता...” आडाडा ! जगतको यह बात पकडनी कठिन (पडती है).

“अपने द्वारा दिया जाता जो भाव...” (अर्थात्) वर्तमान निर्मल भाव, वर्तमान वीतरागी पर्याय, आनंदकी पर्याय, ज्ञानकी पर्याय, समकितकी पर्याय, अकारणकार्य नामके गुणकी पर्याय, यह अपने द्वारा दिया जाता है. आत्मा अपनेको अपनी पर्याय देता है और अपनी पर्याय उस समय लेता है, अेक ही समयमें दाता और (लेनेवाला) अेक है, आडाडा ! समजमें आया ? सम्यक्दृष्टि और सम्यग्दर्शनका विषय अनंत शक्तिका तंउार भगवान यह विषय जहां दृष्टिमें आया, ध्येय (स्वरूप) जो पूर्णानंदका नाथ आत्मा ज्ञानमें जब आया, तो कहते हैं कि, जो निर्मल सम्यक्ज्ञानकी पर्याय प्रगट हुई, वह किसने दी ? वह अपने द्वारा दी (गई), आडाडा !

त्रिकावी श्रद्धा गुण है उसमें संप्रदानका स्वरूप है. संप्रदान शक्ति भिन्न है. (लेकिन श्रद्धामें) संप्रदानका स्वरूप है. उस कारणसे श्रद्धा शक्ति वर्तमान सम्यग्दर्शन रूपी पर्यायका परिणामन करके दाता (डोकर) पर्याय दी और वही पर्याय स्वयंने ली.

(कोई) कहते हैं कि, गुरु समकितको देते हैं. (उसको) यहां ना कहते हैं. आडाडा ! भाई ! तेरी थीजमें क्या कमी है ? कि, दूसरेके पाससे तुजे लेना है ? तेरी पूर्णतामें कहां अपूर्णता है ? कि परसे पूर्णता लेना है ? आडाडा ! केवलज्ञानकी पर्याय भी (अपनेसे उत्पन्न होती है). ज्ञानमें संप्रदानका रूप होनेसे केवलज्ञानकी पर्याय देनेवाला आत्मा (है). अपने द्वारा दी है – राग द्वारा नहीं, निमित्त द्वारा नहीं, श्रवण द्वारा नहीं. आडाडा ! (लोगोंको) कुरसद नहीं है. रभडनेकी कुरसद (है).

अरेरे...! अनंत कालमें शुभभाव और अशुभभाव अनंत बार किये. वह विभाव है. विभाव होनेकी कोई शक्ति नहीं, आडाडा ! (आत्मामें) कोई गुण नहीं कि विभाव हो, आडाडा ! विभावकी पर्याय पर्यायदृष्टि करनेसे अपनेसे षट्कारकसे विकारकी परिणति उत्पन्न होती है. परंतु वह पर्यायके षट्कारकसे विकृत अवस्था उठती है; गुणके बिना, द्रव्यके बिना, परके संयोग बिना, परके कारकके कारण बिना (स्वयंके षट्कारकसे पर्याय उत्पन्न होती है).

यहां तो कहते हैं कि, षट्कारकरूप विभावका परिणामन लेना या देना, अैसा तेरा कोई गुण है ही नहीं, आडाडा ! गजब बात करते हैं ! समजमें आया ? शुभभाव होना और शुभभाव रचना, अैसा कोई तेरेमें गुण नहीं है. आडाडा ! अैसी बातें हैं ! तेरे भजनेमें कोई कमी नहीं, नाथ ! तेरे भजनेमें तो अनंत शक्तियां पडी हैं न, नाथ ! तू कहां डूंडने

जाता है ? जहां बाहरमें लटकना है वहां तो संसार है. याहे तो शुभ (भाव) हो या अशुभ (भाव) हो, (दोनों संसार है), आहाहा ! अरे..! यह चीज क्या है ? भाई ! (तुझे ખબર नहीं). आहाहा !

स्फटिकमण्डी यैतनरत्न भगवान ! इसमें एक संप्रदान नामका गुण है. इस गुणका लंकार है. आहाहा ! इस गुणका स्वरूप तो अपनेमें है और आनंदके गुणमें भी (संप्रदानका) स्वरूप है. (संप्रदान) शक्ति उसमें नहीं लेकिन आनंद नामके गुणमें संप्रदानका स्वरूप है. उस कारणसे आनंदकी पर्याय प्रगट होती है, वह अपने द्वारा आनंदकी पर्याय प्रगट हुई है और आनंदकी पर्याय अपनी पात्रतासे ले ली है. अपनी योग्यतासे ले ली है, आहाहा !

यहां तो आपके पैसोंके दानकी बात तो ठीक गઈ. पैसे तो ठीक लेकिन यहां तो शुभभावकी बात भी ठीक गई. तेरेमें (विभाव करनेका) कोई गुण नहीं. तेरेमें गुण तो (ऐसा है कि) आनंदकी पवित्र पर्याय प्रगट हो और एक समयमें आनंदकी पर्याय लेनेकी तेरी पात्रता है, आहाहा ! दाता (भी) तू और पात्र भी तू, आहाहा ! ऐसी बातें हैं, भाई ! लोगोंको कठिन पडता है, (लेकिन) क्या हो सकता है ? (वस्तु स्थिति ऐसी है). अरे..! अंदर चीज पडी है, महाप्रभु ! समझमें आता है कुछ ? भगवान होकर भीष मांगता है. भगवान होकर पैसेके लिये भीष मांगता है. आहा नाथ ! तू भगवान है न प्रभु ! तू भगवान होकर रागकी भीष मांगे कि, मुझे पुण्य हो तो ठीक, मुझे कोई मानका सुभ दे (तो ठीक). स्त्रीसे सुभ मिले, पैसेसे सुभ मिले, भिभारी ! भिभारा ! तुने बादशाही को लूलेके भिभारीपना दिया है. आहाहा !

संप्रदानके कारण अपनेमें अपने द्वारा लेनेमें आया और अपने द्वारा देनेमें आया. आहाहा ! समझमें आया ? मार्ग बहुत सूक्ष्म है, भगवान ! स्वयं अरुपी आनंदका नाथ परमात्मा (है). आहाहा ! अरे..! मुझे कहींसे सुभ मिल जाये, कहींसे सुभ मिल जाये (ऐसी आशा रखकर) रांक भिभारी होकर (धुमता है). यकवतीके घर वाघरण हो, वाघरण समझते हो ? वाघरी दातुन बेचते हैं (उसकी पत्नी, उसे वाघरण कहते हैं). वह वाघरण यकवतीके घर रहती हो तो वह उसकी आदत नहीं छोडती. दो-चार रोटी हाथमें लेकर उसे एक गोभला (गोभ) होता है उसमें रहती है. बादमें कहती है, 'महाराज ! दातुन लो और रोटी दो' बादमें वहां दातुन रहे और रोटी ले, तब उसे हर्ष होता है. यकवतीके घरकी वाघरण (ऐसा करती है) ! वैसे तेरा आत्मा यकवती (है). तू यैतन्य यकवती है. यह शुभ और अशुभ भाव करके वाघरणकी भांति मुझे (उसमेंसे) सुभ मिले (ऐसा करता है). आहाहा ! शुभ करनेसे अशुभ करनेसे मुझे लाभ मिले, भिभारी ! रांका ! तेरी बादशाहीको तुने गुलाम बना दी है. समझमें आया ? आहाहा ! उसे अपनी महत्ताकी महिमा आयी नहीं और शुभभावकी महत्ता और महिमा आयी, वह भिभारी है, आहाहा !

यहां तो परमात्मा जिनेन्द्रदेव त्रिलोकनाथ ऐसा इरमाते हैं. संतों उसके आडतीया ढोकर भात करते हैं. माल तो सर्वज्ञके घरका है. जिनेन्द्रदेवका पूर्ण माल तो वहां है न ? मुनि आदि साधक हैं लेकिन (वे) साधक हैं, पर्यायमें पूर्णता प्रगट नहीं हुई है. आहाहा ! पूर्णानंदके नाथको निहारा (है) लेकिन अभी निधानमेंसे पर्यायमें पूर्णता नहीं आयी. आहाहा ! ऐसे मुनिराज ऐसा कहते हैं कि, सर्वज्ञ तो ऐसा कहते हैं न प्रभु ! तुम मतिज्ञानमें ऐसा मानते हो कि, सर्वज्ञकी पर्याय बाहरसे आयेगी, वांचन करनेसे आयेगी, राग करनेसे आयेगी, यह मिथ्या भ्रम है. मतिज्ञानके कालमें भी मतिज्ञानकी निर्मल पर्याय जो प्रगट होती है, वह अपने द्वारा प्रगट हुई है. है ? “अपने द्वारा दिया जाता..” (अर्थात्) अपने द्वारा देनेमें आता है. कौन (द देनेमें आता है) ? जो भाव. है न ? “अपने द्वारा दिया जाता जो भाव...” आहाहा ! अपनी वीतरागी निर्मल पर्याय अपने द्वारा दी जाती है, वह निर्मल पर्याय भाव (है). आहाहा !

अमृतयंद्रआचार्यने तो गजब काम किया है ! आहाहा ! श्वेतांबरके (आगम) पढ-पढकर पढे तो भी अेक पंक्ति ऐसी नहीं मिलेगी. कुछ हाथ नहीं आता, आहाहा ! दूसरेको दुःख लगे (लेकिन) क्या हो सकता है ? भाई ! भगवान् चैतन्यको दुःख लगे (लेकिन) तुम भी परमात्मा हो, प्रभु ! तुझे दुःख नहीं (हो). परंतु तेरी चीजकी विपरीत दृष्टिसे आत्माका लाभ होगा, यह (वस्तु स्थिति) नहीं है.

जिसने अपने स्वभावकी सम्यक्दृष्टि की, तो कहते हैं कि, उसे सुभका गुण है उसमें अपने द्वारा दी हुई (अर्थात्) सुभकी पर्याय अपने द्वारा आयी. अंतरमें से सुभरूपी तंजारमें से, संप्रदानके स्वरूपके कारण, अंदर आत्मामें आनंदकी जो जलक ठीकी वह दाता. अपने द्वारा दिया और अपने द्वारा लिया. कभी (ऐसी बात) सुनी नहीं. सब जगह बहुत गडबड है, बापू ! क्या कहें ? आहाहा ! भगवानकी पेढीकी दुकान कोई अलग प्रकारकी है. आहाहा !

तीनलोकका नाथ जिनेन्द्रदेव, सर्वज्ञ परमात्मा ! उसकी पेढीका मुनिम बनके रहना, यह बहुत अलौकिक बातें हैं. संतों मुनिम बनकर (भगवानकी) पेढीको चलाते हैं, आहाहा ! भगवान् ! भगवान् कहकर ही बुलाते हैं. ७३ गाथामें आ गया न ? भगवान् आत्मा ! आहाहा ! अरे संतों ! तुम कहां हो ? (आप तो) आनंदकी दशामें लीन होनेवाले ! अरे..! पामरको तुम भगवान् कहकर संबोधन करते हो, नाथ ! पामर पर्यायमें है—वस्तुमें पामरता नहीं है. वस्तुमें सब प्रभुतासे भरी शक्ति है. अेक-अेक शक्ति प्रभुतासे पूर्ण भरी है.

ज्ञानशक्तिमें पूर्ण प्रभुता पडी है, वह अपने द्वारा ज्ञानकी पर्याय अपनेसे उत्पन्न होती है, उसे अपने द्वारा दिया और अपने द्वारा लिया, आहाहा ! समयमें आया ? समय अेक (परंतु) पात्र भुद-देनेवाला (भी) भुद और लेनेवाला (भी) भुद (है). भुद है न ? स्वयं कहते हैं न ? समयमें आया ? वही कहा न ? देओ !

“अपने द्वारा दिया जाता...” आहाडा ! गजब बात है ! “जो भाव..” (अर्थात्) निर्मल पर्यायरूपी भाव-वह अपने द्वारा दिया जाता है. आहाडा ! समजमें आया ? गुरु, शास्त्र, भगवान तो निमित्त है, आहाडा ! उन्होंने कहा कि, प्रभु ! तेरी शक्तिमें तो भंडार पडा है न ! वहां नजर कर ! तेरी निर्मल पर्यायका दाता तुम हो. अपने द्वारा (निर्मल पर्याय) प्रगट होती है. गुरु द्वारा, शास्त्र द्वारा निर्मल पर्याय प्रगट नहीं होती. आहाडा ! समजमें आया ?

“अपने द्वारा दिया जाता जो भाव...” निर्मल वीतरागी पर्याय, धर्म पर्याय, दर्शन, ज्ञान, यारित्र, आनंदकी पर्याय आहाडा ! (यह भाव है). पर्याय यानी अवस्था-भाव. वह भाव “अपने द्वारा दिया जाता..” आहाडा ! व्यवहार द्वारा दिया जाता है, ऐसा नहीं. अरे..! अक-अक शक्तिके वर्णनमें व्यवहारसे दिया जाता नहीं, ऐसा अनेकांत सिद्ध किया है. अपने द्वारा वीतरागी दशा दी जाती है. आहाडा ! समजमें आया ?

शक्तिके भंडारको रागकी अकताबुद्धिमें तावा (भार) दिया है. दया, दानका विकल्प जो शुभराग है, यह मेरी चीज है, ऐसी अकताबुद्धिमें सारा भजनेको तावा (भार) दिया है. उस रागकी अकता तोडकर भेदज्ञान हुआ, वह कुंथी लगी तो (भजना) भुल गया, भजना भुल गया ! समजमें आया ? इस भजनेमें अक संप्रदान नामका गुण है-रत्न है, आहाडा ! समजमें आया ? संप्रदान नामका अक गुणरूपी रत्न (है). अंदर कमरा है. समजमें आया ? आहाडा ! उस कारणसे वर्तमान ज्ञानकी, दर्शनकी, आनंदकी, वीर्यकी, प्रभुताकी, स्वच्छताकी पर्याय-निर्मलभाव अपने द्वारा दिया है. पूर्वकी पर्याय द्वारा नहीं, निमित्त द्वारा नहीं, आहाडा ! गजब बात है ! अंदर गहराईसे विचार करे तो मालूम पडे कि यह क्या है ? पूर्वकी पर्याय थी, निर्मल पर्याय थी तो पीछेकी निर्मल पर्याय आयी, पूर्वकी पर्याय दाता और लेनेवाली (बादकी) पर्याय-ऐसा नहीं है, आहाडा ! समजमें आया ?

“अपने द्वारा दिया जाता..” गुजरातीमें शब्द है न ? “पोताथी देवाभां आवतो..” अपनी गुजरातीमें ऐसा (लिखा) है. “पोताथी देवाभां आवतो...” (अर्थात्) अपने द्वारा देनेमें आया. आहाडा ! आत्म द्वारा (अर्थात्) आत्माकी शक्ति द्वारा निर्मल पर्याय देनेमें आयी, ऐसा जो निर्मल भाव, धर्म भाव. यह धर्म भाव अपनेसे दिया जानेवाला धर्मभाव है, आहाडा ! कितनी बात करते हैं ! व्यवहार रत्नत्रयसे धर्म पर्याय होती है, उसका नकार किया है. यह तकरार बहुत (यलती है). भगवान ! आहाडा ! प्रभु ! तेरी चीजकी तुझे भबर नहीं. (तेरेमें) अनंत शक्तिओंका भंडार पडा है न ! अक-अक शक्तिमें अनंती प्रभुताकी ताकत है. प्रभुताकी शक्तिके कारण अपनी पर्यायमें जो सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रकी प्रभुता प्रगट हुई, वह अपने द्वारा हुई है. गुरु द्वारा नहीं, शास्त्र द्वारा नहीं, व्यवहार द्वारा नहीं और पूर्वकी पर्याय द्वारा नहीं और अक-अक गुणकी पर्याय दूसरे गुण द्वारा नहीं, आहाडा !

ऐसी बातें हैं ! सत्य तो ऐसा है.

“अपने द्वारा दिया जाता जो भाव...” (अर्थात्) वर्तमान निर्मल सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्रिकी पर्याय अथवा अनंत गुणकी प्रगट व्यक्त निर्मल पर्याय, अनंत गुणकी व्यक्त निर्मल पर्याय. यहां उसको भाव कडा. “अपने द्वारा दिया जाता जो भाव उसके उपेयत्वमय (— उसे प्राप्त करनेके योग्यतामय,...)” पर्यायमें प्राप्त करनेकी अपनी योग्यता है, आडाडा ! समझमें आया ? ‘योग्यतामय’ उसका अर्थ क्या किया ? “(..उसे लेनेके पात्रपनामय.)” आडाडा !

अपनेमें अपनेसे निर्मल पर्याय दी. (जिसने) दिया वह दाता और अपनी योग्यतासे— पात्रतासे लिया. एक ही समयमें दो भाव है. आडाडा ! कहते हैं न ? दाता, देय और दान. दान निर्दोष होना चाहिए. दाता भी निर्दोष भावसे — शुभभावसे देते हैं और लेनेवाले पात्र-तीर्थकर जैसे, मुनि जैसे पात्र, समकित्तिकी आदार देना, परंतु वह तो बाहरका पात्र— शुभभावकी बात है, आडाडा ! जो आत्मामें कोई गुण नहीं, ऐसी विकृत अवस्थाका यह कार्य है. यहां तो गुणका कार्य यह है कि, निर्मल अवस्था अपनेसे अपनेमें दि (और) अपनेमें ली. एक समयमें यह स्थिति !

संस्कृतमें है, देओ ! “स्वयं दीयमानभावोपेयत्वमयी संप्रदानशक्ति” “स्वयं दीयमानभाव..” अपनेसे देनेवाली निर्मल पर्याय (भाव). आडाडा ! गजब बात है ! यह तकरार करते हैं कि, व्यवहारसे होता है, वह बात ठीक जाती है. व्रत, तप, भक्ति, पूजा करो, मंदिर बनाओ, रथयात्रा निकालो, गजरथ निकालो और पांच-दस लाभ भर्ष करो तो तुम्हें धर्म होगा. यहां तो कहते हैं कि उससे तीनकालमें (धर्म) नहीं होता, आडाडा !

वह शुभ भाव है. वह अपने गुणकी विपरीत अवस्था है. गुणकी अविपरीत अवस्था तो अपनी अपनेसे निर्मल (अवस्था) लेते है, वह अवस्था है. आडाडा ! समझमें आया ? शुभभाव देना और लेना यह कुपात्र है. अररर...! आडाडा ! शुभभाव करना और लेना— रचना, वह तो कुपात्रकी बात है, आडाडा !

प्रभु ! तेरी शक्तिके तंडारमें से मोक्षमार्गरूपी धर्मकी पर्याय, उस पर्यायका भाव—यहां पर्यायको भाव कडा, अपनेसे दिया है. कोई (अन्य) से नहीं. पर्यायसे नहीं, निमित्तसे नहीं, रागसे नहीं, आडाडा ! अरे..! विचार तो करे कि, यह यीज क्या है ? अरे..! सुनने भिदे नहीं. (कोई ऐसा माने कि) गुरुकी भक्ति करते-करते कल्याण हो जायेगा, गुरुकी कृपा है तो समकित्त हो जायेगा. लेकिन गुरुकी कृपा कैसी ? सुन तो सही ! तेरी शक्तिकी कृपा हो जाये (तो) उससे निर्मल पर्याय प्रगट होती है, आडाडा ! ऐसा धर्म ! सबेरेकी बात थोड़ी समझमें ऐसी स्थूल है. यह सूक्ष्म है.

यहां तो एक-एक शक्तिमें अनंत-अनंत शक्तिका रूप पडा है अथवा अनंत शक्तिका एक शक्तिमें स्वरूप और एक शक्तिमें अनंत शक्तिका स्वरूप पडा है, आडाडा ! समझमें

आया ? (आत्मामें) अकारणकार्य नामकी शक्ति है. इस गुणकी पर्याय रागका कारण नहीं और रागका कार्य नहीं. व्यवहार है तो सम्यग्दर्शन उत्पन्न हुआ, ऐसा कोई कार्य नहीं, आडाडा ! परका कारण और कार्य नहीं. ऐसी अकारणकार्य शक्तिमें संप्रदान (शक्तिका) रूप है. अपनेमें वीतरागी पर्याय परका कारण नहीं और परका कार्य नहीं. ऐसी (पर्यायकी) उत्पत्ति, उसे देनेवाला आत्मा और लेनेवाला आत्मा (है). एक समयमें दो (भाव हैं). आडाडा ! अरे...! एक समयमें छ (भाव हैं). संप्रदानकी पर्यायका कर्ता आत्मा, कार्य उसका, संप्रदान अपना, पर्यायका साधकपना (अपना), और अपादान-ध्रुव उपादानसे होना, वह भी व्यवहार है. क्षणिक उपादानसे निर्मल पर्याय उत्पन्न हुई और अपनेमें अपनी पर्यायका पर्याय आधार. आडाडा ! ऐसा अनंत गुणमें लगाना. यहां पर्यायके षट्कारककी (भात है). बहुत सूक्ष्म भात, बापू ! यहां तो अभी लिया जाता है, जैसे त्पेदसे भात करते हैं. परंतु निर्मल पर्याय जो सम्यग्दर्शन, ज्ञानकी होती है, वह षट्कारकसे अपनेसे उत्पन्न होती है, आडाडा ! गुणके षट्कारक तो ध्रुव है. यह तो परिणतिके षट्कारक है, आडाडा ! समझमें आया ? ऐसी भातें (हैं).

तेरा भगवान अंदर प्रगट है, प्रभु ! भग नाम अनंत ज्ञान आदि लक्ष्मी उसका वान है—उसका स्वरूप है. भगवान आत्मा ! तेरा स्वरूप है न ! आडाडा ! यह स्त्री, पुरुष और नपुंसकका शरीर तेरी यीज नहीं. वह तो पर यीज (है), जउकी यीज है, आडाडा ! छन्द्रीयका, स्त्रीका, पुरुषका और शरीरका आकार, प्रभु ! वह तो जउ—मिट्टी—धूलका आकार है. वह तेरी पर्यायमें नहीं, तेरेमें नहीं और तेरेसे हुई नहीं, आडाडा !

यहां तो शुभभाव भी तेरेसे हुआ नहीं. यह तो पर्यायबुद्धिसे विकार होता है, कमजोरीसे उत्पन्न होता है. यह तो गुणका कार्य जो है (उसमें) विकार (होना) उसके गुणके कारणसे होता नहीं. जिसको गुण और गुणीकी अत्पेद दृष्टि हुई, उसमें विकार कार्य होता ही नहीं, आडाडा ! उसका कार्य शुद्ध परिणतिका है. अपने द्वारा वह परिणति उत्पन्न हुई है. आडाडा ! इसमें तकरार करते हैं. (दोग कलते हैं) अकांत है...अकांत है.. प्रभु ! सुन तो सही ! नाथ ! तेरे घरकी स्वतंत्रताकी भातें (हैं). आडाडा ! किसका विरोध करना ? आडाडा !

जिसकी अक-अक शक्तिमें अनंत स्वरूप ! अक-अक शक्तिमें अनंत शक्ति और अनंत गुण, आडाडा ! यह (सब) शक्ति प्रभुत्व शक्तिसे भरी पडी है. अपनी प्रभुत्व शक्तिमें भी संप्रदानका रूप है और संप्रदान शक्तिमें प्रभुताका रूप है. समझमें आया ? प्रभुत्व नामकी अक शक्ति है— ईश्वर होनेकी (शक्ति है). इसमें संप्रदानका स्वरूप है और संप्रदानमें प्रभुत्व शक्तिका स्वरूप है. आडाडा ! प्रभुत्व शक्ति भले संप्रदान शक्तिमें न हो, लेकिन अंदर संप्रदान शक्तिमें प्रभुत्व शक्ति भरी है. उसका स्वरूप (भरा है). आडाडा ! कितना विस्तार ! गजब भात है, भाई !

अरे..! निवृत्ति बिना, (परकी) चिंता छोड़े बिना, यह (वस्तु) प्राप्त नहीं होगी, आहाहा ! समझमें आया ? शुभभावसे मोक्षमार्ग है, अरे प्रभु ! गजब बात है ! जैन दर्शनमें यह चीज नहीं है. जैन दर्शन यह वीतराग दर्शन है. उसमें राग (से धर्म होता है), यह जैन दर्शन ही नहीं - यह जैन धर्म नहीं. आहाहा ! जैन दर्शन और जैन धर्म जो वीतरागी पर्याय वह अपनेसे प्रगट होती है, जो अपनेसे दिया है. आहाहा !

रागकी बहुत मंदता-शुक्ल लेश्या जैसी मंदता, ८ वीं गैवेयक गया, वह शुक्ल लेश्यासे गया (उससे कल्याण नहीं हुआ). शुक्ल लेश्याकी (बात है). शुक्ल ध्यान नहीं. शुक्ल ध्यान दूसरी चीज है, शुक्ल लेश्या दूसरी चीज है. शुक्ल लेश्या अत्मीको भी होती है और शुक्ल ध्यान तो ८वां गुणस्थान यठे तब ध्यान होता है. शुक्ल लेश्या तो अत्मीको भी होती है, आहाहा ! और ऐसी शुक्ल लेश्या तो अनंत बार हो गयी (है). आहाहा ! क्योंकि शास्त्रमें-भगवानके आगममें ऐसा लिखा है कि, मनुष्यका भव भी तुने अनंत किया. उससे असंख्य गुणा अनंत नरकका भव किया. एक मनुष्य भव (उसके सामने) असंख्य नरक (का भव). एक मनुष्य (भव और सामने) असंख्य नरकका (भव). ऐसा असंख्य गुना अनंत (भव किया). और ऐसे एक नरकका (भव और सामने) असंख्य (भव) देवका (किया). असंख्य गुना अनंता भव स्वर्गका किया. स्वर्गका (भव) किया तो शुभभावसे (स्वर्ग) होता है कि पापसे होता है ? समझमें आया ? मनुष्यसे ज्यादा नरकका अनंत भव और स्वर्गका भव नरकके भवसे अनंतगुना भव (किया). असंख्यगुना अनंत (किये). आहाहा ! वह सब तिर्ययमें से जाते हैं. पंचेन्द्रिय तिर्ययकी संख्या बहुत है. क्योंकि मनुष्य अल्प है और उससे असंख्य गुना नरक और उससे असंख्यगुना देव, तो (सब) कहांसे गये ? समझमें आया ? पशु-तिर्ययकी संख्या बहुत है, आहाहा ! उसमें ऐसी कोई शुक्ल लेश्या आ जाये तो सातवें स्वर्ग में यला जाये. समझमें आया ? ऐसे नरकके भवसे असंख्य गुना अनंता भव स्वर्गके किये. अनंत भव किये तो शुभभाव कितनी बार किये ? आहाहा ! अशुभ भावसे ज्यादा असंख्यगुना अनंता शुभभाव किया. अरेरेरे..! समझमें आया ? यह कोई तेरी चीज नहीं, आहाहा ! कोई शुभभाव हुआ हो तो शुभभावसे ४३ परमाणु बनते हैं. उसमें तेरी पर्यायमें क्या आया ? तेरी पर्यायमें मखिनता छूटकर निर्मलता कहां आयी ? आहाहा ! समझमें आया ?

(यहां) कहते हैं कि, निर्मलताकी-धर्मकी पर्यायका दाता अपने द्वारा दाता देता है. अपने गुण और गुणके द्वारा वह निर्मल पर्यायका दाता है. निश्चयसे तो पर्याय दाता और पर्याय पात्र (है). समझमें आया ? परंतु व्यवहारसे उसमें संप्रदानका गुण है तो गुणका परिणामन द्वारा (परिणामन हुआ, ऐसा कहनेमें आता है). परिणामन तो पर्यायमें हुआ (है). गुण परिणामता नहीं. समझमें आया ? संप्रदान शक्ति तो ध्रुव है. उसकी परिणति-पर्याय होती है उसमें-

परिणतिमें पर्याय आती है. वास्तवमें तो—निश्चयसे तो अपनी निर्मल परिणति दाता और देय—लेनेवाली परिणति अेक ही समयकी है. आहाहा ! जिसको द्रव्यदृष्टि हुई उसको (यह बात है). जिसको पर्यायदृष्टि है उसके पास संप्रदान शक्तिकी प्रतीति नहीं. आहाहा ! अरे..! उसमें वादविवाद करनेसे कहां पार आ सकता है ?

समयसार ११वीं गाथाके भावार्थमें कहा है कि, भगवानने हस्तावलंब तुल्य जानकर निमित्तका-व्यवहारका बहुत कथन किया है. अेक तो अनादिका व्यवहारका तुजे पक्ष है. और परस्पर तुम व्यवहारकी यर्था करते हो और व्यवहारका कथन भी जैन दर्शनमें बहुत आया है, लेकिन तीनोंका इल संसार है. उसमें लिखा है. देओ ! क्या कहते हैं ?

“भेदरूप व्यवहारका पक्ष तो अनादिकालसे ही है..” हिन्दी पुस्तकमें २४ नंबरके पन्ने पर पहली पंक्ति. “प्राणीयोंको भेदरूप व्यवहारका पक्ष तो अनादिकालसे ही है.” अेक बात. “और इसका उपदेश भी बहुधा सर्व प्राणी परस्पर करते हैं.” व्यवहारसे होता है, व्यवहारसे होता है (अैसा उपदेश) परस्पर प्राणी करते हैं. (उसमें) सुननेवाले राज्ज होते हैं. समजमें आया ? दो बात हुई. “और जिनवाणीमें व्यवहारका उपदेश शुद्धनयका हस्तावलंबन (सहायक) जानकर बहुत किया है.” लोग आधार देते हैं परंतु वह तो निमित्तको देभकर कहा है. समजमें आया ? जिनवाणीमें भेदके-निमित्तके लक्षसे हस्तावलंबन जानकर जिनवाणीमें कथन बहुत आया है. “किन्तु उसका इल संसार ही है.” समजमें आया ?

यहां तो उसे निकाल देना है. अपने स्वरूपमें व्यवहारभावका लेना-देना (हो) अैसा स्वरूपमें कोई गुण ही नहीं है. आहाहा ! तेरा यह गुण नहीं. तेरे गुणमें तो अैसा है कि, निर्मल पर्याय देना और लेना. तुम ही दाता और तुम ही पात्र, योग्यता भी तेरी और लेनेवाला भी तू, आहाहा !

यहां तो सम्यग्दर्शन, ज्ञानकी पर्यायवालेको पात्र कहा. सम्यग्दर्शनको पानेवाला पात्र कौन है ? यह बात यहां नहीं ली है. समजमें आया ? क्या कहा ? कि अपनेमें जो सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रकी पर्याय उत्पन्न होती है, वह अपने द्वारा दी जाती है और अपने द्वारा योग्यतासे ली जाती है. उसका नाम योग्यता—उसका नाम पात्रता. श्रीमद्ने कहा है, सम्यक्दृष्टि ही धर्मका पात्र है, अैसा लिखा है. वह पात्रतामें आगे बढ गया है और केवलज्ञान होगा. वह पात्रमें होगा. आहाहा ! समजमें आया ?

श्रोता : पात्र विना वस्तु न रहे.

पूज्य गुरुदेवश्री : वह दूसरी थीज है. यह थीज दूसरी है. दूसरे ठिकाने उन्हींने समकित्तीको पात्र कहा. इसमें आया न, भाई ? भगवान आत्मा ! पूर्णानंदका नाथ, अनंत शक्तिका सागर इसकी जिसने दृष्टि की, यह सम्यक्दृष्टि योग्य—पात्र है. और लेनेकी अवस्थाका दाता भी वह है, आहाहा ! अरे..! अैसी बात सुनने मिले नहीं. बाहरमें ही भटक-भटककर

मरी गया. प्रभु ! तेरी महत्ताकी तुझे ખબર नहीं. आडाडा ! कितना भरा है ! (इसका तो) कोई पार नहीं ! (इतना भरा है).

अक संप्रदान शक्ति अनंत गुणमें व्याप्त है. और यह संप्रदान शक्ति अनंत गुणमें निमित्त है. और यह संप्रदान शक्ति ध्रुव (उपादान) और क्षणिक उपादानसे पडी है. संप्रदान शक्ति ध्रुव है. और निर्मल पर्याय अपनेमें दिया-लिया वह क्षणिक उपादान है. आडाडा ! अरे..! सर्वज्ञ त्रिलोकनाथ जिनेन्द्रदेवके श्रीभुषसे दिव्यध्वनिमें तो यह आया है. समझमें आया ? आडाडा ! आत्मामें अकर्तागुण है. आ गया न ? अकर्तागुण है. अकर्तागुणमें भी संप्रदानका स्वरूप है. उस कारणसे अकर्ता गुणकी जो पर्याय है वह अकर्तागुण दाता और अकर्तागुणकी जो पर्याय है, वह लेनेवाला पात्र. आडाडा ! पात्र – लेनेकी पर्याय और पात्र – देनेका दान, अक समयमें (है). आडाडा !

ऐसा मार्ग ! वीतरागी मार्ग ! भाग्यवानको कानमें सुनने भिले, भाई ! लोगोंको ऐसा लगे कि, अकांत है.. अकांत है. सोनगढवाले अकांत कहते हैं. अरे...! प्रभु ! इस प्रकार आलोचना मत कर ! नाथ ! तुझे यह शोभा नहीं देता. तेरे गुणमें ऐसा कोई गुण नहीं कि, व्यवहारसे लाभ हो. ऐसा कोई गुण नहीं. वह तो पर्यायदृष्टिमें माननेवाला है.

दो शब्द लिये. “अपने द्वारा दिया जाता..” (अर्थात्) पर्याय. “उसके उपेयत्वमय..” (अर्थात्) उसे लेनेवाला—उसे प्राप्त करनेके योग्य—लेनेके योग्य अथवा लेनेके पात्रपनामय. योग्यता कडो कि पात्रता कडो (अक ही बात है). यहां तो दो (बात) लेनी है कि, निर्मल पर्यायकी योग्यता लेनेवाली सम्यग्दर्शनकी पर्याय. आडाडा ! धर्मकी पर्याय वही योग्यतासे लेनेवाली है और वही पर्याय देनेवाली पर्याय है, आडाडा ! समझमें आया ? दूसरे गुणकी पर्याय—योग्यता और लेनेवाली (है), वह (बात) यहां नहीं. यहां तो अक-अक गुणकी जो अपनेमें निर्मल पर्याय होती है, वह दाता और वही पर्यायकी योग्यता—पात्रता है. आडाडा ! समझमें आया ?

श्रीमद्में ‘इच्छे छे जोगीजन’ (काव्यमें) आता है न ? जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट तीन (पात्रकी बात आती है). यहां तो इस प्रकारकी पात्रता ली है. समझमें आया ? मध्यपात्र महाभाग्य और बादमें उत्कृष्ट पात्रकी बात (कही है). वह (बात यहां) नहीं है. यहां तो निर्मल सम्यग्दर्शनकी पर्यायके योग्य जव और वही सम्यग्दर्शनकी पर्यायका देनेवाला दाता (है). सम्यग्दर्शन होनेके लायक कौन ? ये बात यहां नहीं. समझमें आया ? जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट (ऐसे) तीन बोल लिये हैं. ‘इच्छे छे जे जोगीजन’ (काव्यमें) अंतमें है.

“जिन प्रवचन दुर्गम्यता, थाके अति मतिमान,
अवलंबन श्री सद्गुरु, सुगम और सुभभाषा
परिणामनी विषमता, तेने योग अयोग,

મંદ વિષય ને સરળતા, સહ આજ્ઞા સુવિચાર
 કૃષ્ણા કોમળતાદિ ગુણ, પ્રથમ ભૂમિકા ધાર,
 રોક્યા શબ્દાદિક વિષય, સંયમ સાધન રાગ
 જગત ઇષ્ટ નહિ આત્મથી, મધ્યપાત્ર મહાભાગ્ય,
 નહિ તૃષ્ણા જીવ્યા તણી, મરણ યોગ નહીં ક્ષોભ,
 મહાપાત્ર તે માર્ગના, પરમ યોગ જિતલોભ.’’

યહાં તો કહતે હું કિ, સમ્યક્દૃષ્ટિ જીવને અપને દ્રવ્યસ્વભાવકા આશ્રય લિયા હૈ, તો વહ સમ્યગ્દર્શનકી પર્યાય હૈ વહી લેને યોગ્ય ઓર વહી દેને યોગ્ય હૈ. પાત્રતા હી વહ હૈ. સમજમેં આયા ? વિશેષ કહેંગે...



આત્મામાં એટલે કે અનંત શક્તિ સંપન્ન દ્રવ્યમાં અનંત શક્તિનું સ્વસંવેદનપણે એટલેકે નિજ (પોતાના) ભાવથી રાગના અભાવરૂપ પોતાના સ્વભાવથી પ્રત્યક્ષ વેદન થવું તે અનંત ગુણ માહેંની એક એવી સ્વસંવેદનશક્તિને બતાવે છે.

(પરમાગમસાર-૧૪)

प्रवचन नं. ४०

शक्ति-४५ - ता. १९-०९-१९७७

उत्पादव्ययालिङ्गितभावापायनिरपायध्रुवत्वमयी

अपादानशक्तिः ॥४५॥

समयसार शक्तिका अधिकार यलता है. शक्ति नाम गुण. गुणी ऐसा जो आत्मा उसमें गुणकी संख्या अनंत है. द्रव्य अेक (है) लेकिन उसकी शक्तियां—गुण अनंत हैं. यहां तो ४७का वर्णन किया है. शक्तिका गुण जो है, उसका कार्य क्या ? तो कहते हैं कि, जो व्यवहार—रागकी उत्पत्ति होती है वह व्यवहार, निश्चय शक्तिका कार्य ही नहीं, आहाहा ! अपनी शक्तिमें से निर्मल सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रकी पर्याय होती है. उससे व्यवहार उत्पन्न नहीं होता. उसमें तो व्यवहारका अभाव उत्पन्न होता है, आहाहा !

यहां तो पहले ऐसा कहते थे कि, वर्तमान साधु (है), ये सब भावविंगी (साधु) है. भावविंगीका अन्वी अर्थ किया कि, वर्तमान (साधु है) ये सब सराग यारित्र है. वह सराग भाव है. आहाहा ! अरे बापू ! भावविंग किसे कहें ? भाई !

आज यहां ४५ वीं शक्ति यलती है. ४४ (शक्ति) हो गयी. “उत्पादव्ययसे आलिङ्गित भाव..” यह प्रधान शक्ति है. द्विपयंदृष्टने पंयसंग्रहमें—ज्ञान दर्पणमें उस शक्तिकी बहुत प्रशंसा करी है. यह अपादान शक्ति मुख्य है, प्रधान है, ऐसा कहकर (बहुत प्रशंसा की है). क्योंकि ध्रुव उपादान और क्षणिक उपादान दोनों उसमेंसे उत्पन्न होता है. उससे सिद्धि होती है. क्या ? जो त्रिकावी गुण है, यह ध्रुव उपादान है और वर्तमान जो यह कहा, “उत्पादव्ययसे आलिङ्गित..” (अर्थात्) वर्तमान पर्याय यह क्षणिक उपादान है. आहाहा ! क्षणिक उपादान और ध्रुव उपादान, (अैसे शब्द) कभी तुम्हारी हिसाबकी किताबमें भी नहीं भिदेगा.

यिद्विलासमें अष्टसहस्रीका आधार देकर, त्यक्त-अत्यक्त कहा है. जो वर्तमान निर्मल परिणाम है, उसको त्यक्त (कहते हैं). वह परिणाम छूट जायेगा और नया परिणाम होगा. यह क्षणिक उपादान है. वह अपनेसे आलिङ्गित स्पर्श करनेवाला निर्मल परिणाम—पर्याय यह

क्षणिक रहता है और दूसरा परिणाम भिन्न होता है. इस क्षणिक उपादानमें त्यक्त (अर्थात्) वर्तमान निर्मल परिणाम (कलना है). यहां मलिन (पर्यायकी) बात है ही नहीं. मलिनता कोई यारित्र नहीं. मलिनता कोई सुभ शक्तिका कार्य नहीं, आडाडा ! मलिनता है, वह डेयमें जाती है. क्षणिक उपादानमें भी नहीं (है). आडाडा ! बहुत सूक्ष्म बात है, भाई ! द्विगंबर संतोंकी अंतरमें जानेकी शैली अवलौकिक है ! आडाडा !

जहां आनंदका नाथ भगवान बिराजता है, वहां समीपमें जा ! समीपमें जानेकी पर्याय वर्तमान है. समजमें आया ? यह त्यक्त है. यह परिणाम छूट जाता है (और) नया परिणाम आता है. ध्रुव अत्यक्त है. ध्रुव उपादान है वह कभी छूटता नहीं—बदलता नहीं. वह तो जो है सो है, आडाडा !

उपादान-निमित्तका बडा उघडा है न ? (लोग कहते हैं कि), निमित्तसे होता है, निमित्तसे होता है, लेकिन यहां तो ना कहते हैं. सुन तो सही ! “उत्पाद्व्ययसे आदिगित..” कौन ? वर्तमान पर्याय. वर्तमान सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र आदि अनंत गुणकी वर्तमान परिणितका भाव, वह उत्पाद्व्ययसे स्पर्शित (आदिगित) भाव (है). आडाडा ! यह तो बडे मंत्र हैं ! वर्तमान सम्यक्दृष्टिका जो निर्मल परिणाम उत्पाद्व्यय (रूप) होता है, ऐसा जो भाव, उससे आदिगित पर्याय है. उत्पाद्व्ययकी पर्याय आदिगित है. पर्याय आदिगित है. “उत्पाद्व्ययसे आदिगितभाव..” आडाडा ! बहुत संक्षिप्तमें (समा दिया है).

जो वर्तमान सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र आदिकी वीतरागी पर्याय उत्पाद्व्ययरूप होती है, उसको स्पर्शित भाव (अर्थात्) वर्तमान पर्याय. उत्पाद्व्ययको स्पर्शित वर्तमान पर्याय, ध्रुव नहीं, आडाडा ! “उत्पाद्व्ययसे आदिगित (भाव)..” (अर्थात्) स्पर्शित भाव. भाव नाम वर्तमान पर्याय. “..अपाय..” (अर्थात्) उस पर्यायका नाश होने पर भी. निर्मल सम्यग्दर्शन, ज्ञान आदि अनंत गुणकी क्षणिक (पर्यायका नाश होने पर भी). सम्यग्दर्शन अर्थात् ‘सर्व गुणांश ते समकित’ सर्व गुणांश ते समकित (अर्थात्) जितनी संख्यामें गुण है उतनी अनंत गुणकी व्यक्त निर्मल पर्याय सम्यग्दर्शनमें होती है. यह सम्यग्दर्शनकी पर्याय भी उत्पाद्व्ययवादी है और अनंत गुणकी पर्याय व्यक्त होती है, वह भी उत्पाद्व्ययवादी है. समजमें आया ? थोडा ध्यान रभे तो पकड़में आये ऐसा है, बापू ! यह कोई कथा-वार्ता नहीं है. यह तो वीतरागके पेट भोलकर संतोंने बात कही है. आडाडा ! समजमें आया ?

(यहां) कहते हैं कि, उत्पाद्व्ययसे स्पर्शित (अर्थात्) अनंत गुण जो है, उसमें यह अेक शक्ति ऐसी है कि, अनंत गुणमें यह अेक (अपादान) शक्तिका स्वरूप है. ज्ञान, दर्शन, आनंद, अस्तित्व, वस्तुत्व, प्रभेयत्व, अनंतधर्मत्व (सभीमें अपादानका स्वरूप है). समजमें आया ? यहां कहते हैं कि, आत्मामें जितनी संख्यामें अनंत गुण-शक्ति है, उन प्रत्येक गुणमें यह अपादान नामकी शक्तिका स्वरूप है. आडाडा ! कि, जिस कारणसे जो ज्ञान गुण है, यह

ध्रुव है और उसकी पर्याय है यह उत्पाद-व्ययसे आदिगित क्षणिक है. (यहां) ध्रुव उपादान और क्षणिक उपादान, जैसे अपादानके दो भेद है. त्रिकाली ध्रुव उपादान और क्षणिक पर्याय (इस प्रकार) अपादानमें से दो उपादान निकलते हैं.

ज्ञान त्रिकाल है, यह ध्रुव उपादान है और उसमें अपाय नामकी शक्तिके कारण, यह ध्रुव उपादान कायम रहकर, वर्तमान सम्यग्दर्शन, ज्ञान आदिकी सम्यक् पर्याय उत्पन्न होती है, यह पर्याय उत्पाद-व्ययसे स्पर्शित है. ध्रुवको स्पर्शित नहीं. आहाहा ! ऐसी बातें हैं ! बहुत भरा है ! शक्तिमें तो घटना भंडार है ! घटना भरा है ! ओहोहो...! सारा समयसार क्लृप्त बाहमें उपर क्लेश यथाया है. आहाहा ! मंदिरमें जैसे उपर क्लेश होता है न ? (जैसे यह क्लेश यथाया है). आहाहा ! ऐसी बात (है). वायक शब्द है कि, उत्पादव्ययसे स्पर्शित (अर्थात्) ज्ञानकी वर्तमान निर्मल पर्याय उत्पादव्ययसे स्पर्शित (है), फिर भी उत्पादव्ययका नाश होने पर भी ध्रुव उपादान कायम रहता है. अरे..! ऐसी बातें हैं !

अरे..! उपादान-निमित्तके जघड़े, व्यवहार-निश्चयके जघड़े और कमबद्धका जघड़ा. ये पांच जघड़े सोनगढके सामने आते हैं. अरे भगवान ! बापू ! सुन तो सही नाथ ! आहाहा !

तेरी पर्यायमें ज्ञानकी पर्याय उत्पन्न होती है, उसमें अपादान नामकी शक्तिका रूप है, उस कारणसे ज्ञानकी निर्मल पर्याय उत्पन्न हो, वह उत्पादव्ययसे आदिगित है. और उस पर्यायका अभाव होने पर भी ध्रुव उपादान कायम रहता है. समझमें आया ? यह अंक गुण पर लगाया.

“उत्पादव्ययसे आदिगित...” (अर्थात्) ज्ञान गुणकी स्पर्शित पर्याय. पर्याय उत्पाद-व्ययसे संहित है, जैसे भावकी हानि-अपाय होने पर भी, पर्यायका अभाव होने पर भी, पर्यायका नाश होने पर भी, हानिको प्राप्त न होनेसे. “...अपाय (-हानि, नाश) होनेसे हानिको प्राप्त न होनेवाले...” क्योंकि अंदर ध्रुवत्वमयी अपादान शक्ति है. पर्यायकी हानि हुई तो ध्रुवमें हानि नहीं (हुई) है. आहाहा ! समझमें आया ?

वर्तमान निर्मल पर्याय जो उत्पन्न हुई है, वह व्यवहारसे (उत्पन्न) नहीं (हुई). निमित्तसे (उत्पन्न) नहीं (हुई). वह ध्रुव उपादानसे उत्पन्न हुई (है). वह उत्पन्न हुई और उसका नाश होने पर भी ध्रुव उपादान कायम है. ऐसी बातें (हैं). समझमें आया ? इस तत्त्वकी स्थिति ऐसी है. वस्तुकी शक्ति और परिणति वस्तुकी मर्यादा है. आहाहा ! तत्त्वज्ञानकी जिसको भ्रम नहीं, उसको धर्म कैसे हो ? आहाहा ! समझमें आया ?

(यहां) तो कहते हैं कि, ज्ञानगुणमें भी अपादान नामका रूप होनेसे ज्ञानगुणकी वर्तमान पर्याय उत्पाद-व्ययसे आदिगित है और उस पर्यायका तो अभाव-नाश होता है. (पर्यायका) नाश होने पर भी, है ? हानिको प्राप्त न होनेसे. पर्याय नाश हुई लेकिन हानिको प्राप्त नहीं हुई. अंदर त्रिकाल ध्रुवत्वमयी है, आहाहा !

दूसरे तरीकेसे कहे तो, उस पर्यायका अभाव होता है और पर्यायका उत्पाद् होता है (तो) ध्रुवमें कोई इंरफार नहीं (होता) है, ऐसा कहते हैं. सम्यग्दर्शन, ज्ञान आदि पर्याय (है, उसमें) यहां पहले ज्ञानकी पर्याय ली. उसका अभाव होने पर भी, ध्रुव तो ध्रुव अेक सरीभा पडा है. पर्याय उत्पन्न हुं तो भी ध्रुव तो जो है सो है. और उत्पन्न (पर्यायका) अभाव हुआ तो भी ध्रुव तो ध्रुव ही है. आहाहा ! समजमें आया ? ऐसी सूक्ष्म बातें पकडनी कठिन (पडे). तत्वज्ञानीको तो यह वस्तु ज्ञाननी पडेगी. समजमें आया ? यह दृष्टि बिना, ज्ञान बिनाकी दृष्टि निर्मल नहीं होगी, आहाहा ! समजमें आया ?

दूसरे प्रकारसे कहे तो वर्तमान ज्ञान पर्यायकी हानि होने पर भी, दृष्टि तो ध्रुव पर है. ध्रुवमें हानि नहीं होती. आहाहा ! समजमें आया ? दृष्टि तो शाश्वत उपादान जो ध्रुव है, उस पर है. आहाहा ! समजमें आया ? अधिकार सूक्ष्म है. पर्युषणके भौके पर शक्तिका वर्णन आ गया है. आहाहा ! भगवान ! तेरी सम्यक्ज्ञानकी पर्याय उत्पन्न हो, वह क्षणिक उपादानके कारण अपनेसे है. ज्ञानावरणीयका अभाव हुआ कि, शास्त्रके शुभ विकल्पसे पढाई करी तो इस विकल्पके कारण यहां निर्मल पर्याय उत्पन्न होती है, ऐसा नहीं (है), आहाहा ! ११ अंग-८ पूर्वके शास्त्र पढे हो तो यह पर्याय तो परसत्ता अवलंबी है, आहाहा ! यह (पर्याय) तो अपनी सत्ताका अवलंबन होकर उत्पाद्-व्ययको आखिगित होती है. उसका भाव शास्त्र ज्ञानकी पर्यायसे नहीं होता, आहाहा ! उसकी अपादान नामकी शक्ति है, उससे उत्पन्न होता है. अरे..! ऐसी बात (बैठनी मुश्किल पडे).

निमित्तसे होता है... निमित्तसे होता है..., व्यवहारसे निश्चय होता है. सब मिथ्या भ्रम है. समजमें आया ? भगवान आत्मा अनंत शक्ति-गुणका भंडार, ऐसे स्वभावका धरनेवाला (ऐसी) स्वाभाविक थीज पर जिसकी दृष्टि गयी और उसका अनुभवमें स्वीकार आया, पर्यायमें आनंदकी वेदनदशा हुं, तो यहां कहते हैं कि, यह आनंदकी दशा अेक समय रहती है. उत्पाद्-व्ययसे आखिगित यह दशा है. उसका अभाव होने पर भी आनंद नामका ध्रुव गुण तो कायम रहता है. आहाहा ! समजमें आया ? पर्याय नाश हुं तो ध्रुवमें कुछ इंरफार हुआ है, (ऐसा नहीं है). आहाहा ! समजमें आया ? नये आदमीको (ऐसा लगे) ऐसा कहां समजना ? कुरसद नहीं मिलती. यौबीस घंटे पापका धंधा. अकेला पाप (बांधता है). धर्म तो नहीं लेकिन पुण्य भी नहीं, आहाहा ! कौन धंधा करे ? कौन कर सकता है ? (मात्र) भाव करे. पापके-रागके भाव करे. धंधा कौन कर सकता है ? (परकी) किया कौन कर सकता है ? यहां तो अपनी पर्यायमें विकृत अवस्था उत्पन्न होती है, उसका भी यहां निषेध किया. विकृत (अवस्था है) उसका ज्ञान करते हैं. यह ज्ञानकी पर्याय जो उत्पन्न हुं वह उत्पाद्-व्ययसे आखिगित पर्याय है, उसका अभाव होने पर (भी) ध्रुवमें अभाव नहीं (होता). ध्रुवमें कोई हानि नहीं होती, आहाहा ! ऐसी बातें (हैं).

ऐसे सम्यग्दर्शनमें (लेना). अंदरमें त्रिकाल श्रद्धा गुण जो है, उसमें अपादान शक्तिका स्वरूप—रूप है, स्वरूप है. उस कारणसे सम्यग्दर्शनकी जो पर्याय उत्पन्न हुई, वह उत्पाद्यव्यवहारी पर्याय, पर्यायको स्पर्श करती है, ध्रुवको (स्पर्श) नहीं (करती). इस निर्मल पर्यायका दूसरा समयमें अभाव होता है, हानि होती है. हानि होने पर भी वस्तुमें हानि नहीं होती. परिणाम त्यक्त हुआ (और) ध्रुव अत्यक्त—कायम रहता है. क्षणिक उपादान समय-समयमें पलटता है. यहां निर्मल (पर्यायकी) बात है. फिर भी ध्रुव उपादान शाश्वत कायम है. समझमें आता है कुछ ? त्माँ तेरी यीज तो ध्रुव और क्षणिक (है). (उसमें) क्षणिक पर्यायमें निर्मलता होती है, वह अपने उपादानसे (होती) है. अपादान शक्तिका दूसरा अर्थ उपादान है.

पंचसंग्रहमें तो (दिपयंदंजने शक्तिओंका) बहुत वर्णन किया है, त्माँ ! यह प्रधान शक्ति (है). सबमें मुख्य-प्रधान शक्ति है. क्योंकि सर्व गुणकी यीज उसमें है. समझमें आया ? अध्यात्म पंचसंग्रहमें — ज्ञानदर्पणमें है. “अपनो अभंडपद सलज सुथिर मडा” यह अपादान शक्तिका वर्णन है, आहाहा ! व्याकरणमें छ बोल आते हैं. कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान (और अधिकरण). “अपनो अभंडपद सलज सुथर मडा, करे आप आप छि तैं यह अपादान है” शाश्वत उपादान है, उसमें क्षणिक उपादान.. “करे आप आप छि तैं यह अपादान है” निर्मल सम्यग्दर्शन आदिकी पर्याय, निर्मल आनंदकी पर्याय अपने आपसे होती है. आहाहा ! “सासतो भिणक उपादान करे आप छि तैं.” शाश्वत और क्षणिक उपादान ‘आप छि तैं’ — (अपनेसे ही है.) परसे नहीं, व्यवहारसे नहीं, निमित्तसे नहीं, आहाहा ! यह शक्तिका—गुणका स्वरूप है. “सासतो भिणक उपादान करे आपहीतैं, आप हवैं अनंत अविनासी सुभथान है, याही तैं अनूप यिद्दरूप रूप पाँयतु” आहाहा ! अपादान शक्तिके कारण अंदर यिद्दुपकी प्राप्ति पर्यायमें होती है, ऐसा कहते हैं, आहाहा !

निर्मल धर्मकी पर्याय अपादान शक्तिके कारण वर्तमानमें प्राप्त होती है, आहाहा ! कोई व्यवहारके कारणसे, निमित्तके कारणसे या कर्मके अभावके कारणसे प्राप्त नहीं होती. आहाहा ! पीछे कहते हैं, “याही तैं अनूप यिद्दरूप रूप पाँयतु” उससे यिद्दरूप—ज्ञान स्वरूपकी पर्यायमें प्राप्ति होती है. “याही तैं अनूप यिद्दरूप रूप पाँयतु, यातैं सब सकतिमें परम प्रधान है” अपादान शक्ति परम प्रधान है. क्योंकि उपादान आया न ? ध्रुव उपादान और क्षणिक निर्मल उपादान. आहाहा ! और इस शक्तिका प्रत्येक गुणमें स्वरूप है, इस कारणसे सभी शक्तिमें परम प्रधान है.

यिद्दविलासमें तो ऐसा लिखा है कि, जैसे-जैसे निर्मल गुणका भेद (और) पर्यायका भेद समझमें आते हैं, वैसे-वैसे शिष्यको आनंद आता है, त्माँ ! ऐसा आया है. आहाहा ! जैसे-जैसे अक-अक गुण और उसकी पर्यायका वर्णन भेद करके समझते हैं, तब शिष्यको (यह)

सुननेसे आनंद आता है, ऐसा कहते हैं. समजमें आया ? यिद्विलासमें द्विपयंद्वज्जका (विष्णु) हुआ है. “द्रव्यका जो त्यक्तस्वभाव (पर्याय रूप) है, उसे परिणाम कहते हैं. और वह व्यतिरेक स्वभाव है” यिद्विलासमें ३७ नंबरके पन्ने पर अष्टसहस्रीका दृष्टांत दिया है. (लोग तो ऐसा मानते हैं कि), व्यवहार-सराग क्रियासे निश्चय यारित्र होता है. अरेरेरे...! (ऐसा मानना वह तो) मिथ्यात्वका भडा शल्य है. समजमें आया ? तेरे गुण और तेरी पर्यायकी शक्तिकी ताकत (भडान है). (उसमें) परके कारणसे (यारित्र धर्म) उत्पन्न हो, (ऐसा मानना) भडा शल्य है. उस कारणसे यहां कडा, अत्यक्तभाव गुणरूप है. त्यक्तरूप भाव पर्याय है. अन्वय स्वभाव है. (अर्थात्) गुण अन्वय स्वभाव है और पर्याय व्यतिरेक-अभाव स्वभाव है. क्षण-क्षणमें अभाव होता है. वह गुण तो पूर्वमें थे वही रहते हैं. परिणाम अपूर्व-अपूर्व होते हैं. यह द्रव्यका उपादान है वह परिणामको तो त्याग करता है लेकिन गुणको सर्वथा त्याग नहीं करता. आडाडा ! द्विपयंद्वज्जने (गजब) काम किया है ! कोई कहता है, ‘आचार्यका कडा हुआ लाईये, पंडितोंका नहीं यलेगा’ अरे ! पंडितोंने स्पष्ट किया है. समजमें आया ? आडाडा ! “**इसलिये परिणाम क्षणिक उपादान है और गुण शाश्वत उपादान है. वस्तु उपादानसे सिद्ध है.**” निर्मल पर्याय अपने उपादानसे प्रगट होती है. राग, दया, दान, व्रत और व्यवहार रत्नत्रय किया तो (निर्मल) उपादान होता है, तीनकालमें ऐसी शक्ति नहीं है. समजमें आया ? आडाडा ! सूक्ष्म अधिकार है.

(दूसरी जगह ऐसा दिया है) जैसे-जैसे धर्मात्मा द्रव्य, गुण और पर्यायका त्मेदरूप (वर्णन करके कहते हैं और) ओक-ओक शक्तिका त्मिन्न-त्मिन्न वर्णन (करते हैं), वैसे-वैसे शिष्यको आनंदकी पर्याय प्राप्त होती है, ऐसा कहते हैं. समजमें आया ? आडाडा ! द्विपयंद्वज्जने तो (जैसा) शक्तिका वर्णन किया है, वैसे किसीने किया नहीं है. आचार्यने शक्तिका नाम दिया, भाई ! (और) काम किया इसने. लेकिन उसका विशेष स्पष्टीकरण द्विपयंद्वज्जने यहां पंचसंग्रहमें और यिद्विलासमें जो स्पष्टीकरण है, ऐसा स्पष्टीकरण कोई आचार्यने नहीं किया. कोई गृहस्थने नहीं किया. स्वतंत्र पुढने दिया है. निवृत्ति बहुत (थी), (और) पंडितने (इतना स्पष्टीकरण किया है).

यहां भाषीयामें यर्था लुई न ? यहां सामनेवालेने कडा, पंडितका (आधार) नहीं लेना, आचार्यका लेना, यहांके विद्वानने कडा, पंडितों, आचार्यों सबका (आधार) लेना. आडाडा !

यहां तो मुझे यह कहना है कि, “**यारतैं सब सकतिमें परम प्रधान है.**” अपादान शक्ति परम प्रधान (है), आडाडा ! त्मगवान ध्रुवमें दृष्टि देनेसे, शक्तिका स्वीकार करनेसे अपादानके कारण क्षणिक पर्यायमें सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रकी, आनंदकी निर्मलता उत्पन्न होती है. आडाडा ! व्यवहारसे, निमित्तसे और शास्त्र बहुत पढे, इसलिये जानपना हो गया, लोगोंको समजते हैं, इसलिये गुणकी परिणति विशेष प्रगट होती है, ऐसा नहीं है.

यहां तो पंडित द्विपयंदज्जु ऐसा कहते हैं कि, यह अपादान शक्ति सर्व शक्तिमें प्रधान है, क्योंकि परिणतिमें उत्पाद्-व्ययकी पर्याय होती है, वह ध्रुव उपादानसे उत्पन्न होती है, ऐसा कहना भी व्यवहार है. यह परिणति अपने कारणसे उत्पाद्-व्यय (रूप) उत्पन्न होती है. निर्मल सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र आदिकी (भात है). यह परिणति उत्पन्न होती है, वह अपनेसे स्वतंत्र (उत्पन्न होती है). व्यवहारके कारण नहीं और द्रव्य, गुणके कारण भी नहीं, आहाहा ! समझमें आया ? यह विद्विवासमें है. विद्विवासमें ८५ पन्ने पर है कि, पर्यायका कारण पर्याय है, पर्यायका वीर्य पर्याय है, पर्यायका क्षेत्र पर्याय है. द्रव्य-गुण (के कारण) बिना पर्याय अपनेसे होती है. समझमें आया ? जैसे-जैसे गुरु द्रव्य, गुण, पर्यायकी भेदता समझते हैं, वैसे-वैसे श्रोताको आनंद आता है, ऐसा विधा है. ऐसा नहीं है कि, भेदको समझते हैं इसलिये दुःख होता है, आहाहा !

यहां कहते हैं, जैसे आत्मामें यारित्र गुण है, सुनो ! आत्मामें यारित्र गुण ध्रुवरूप है. वह ध्रुवरूप है. वर्तमान यारित्रकी जो वीतरागी पर्याय उत्पन्न हुई, वह उत्पाद्-व्ययसे आदिगित है. यह (पर्याय) उत्पाद्-व्ययसे आदिगित है, रागसे आदिगित नहीं, निमित्तसे आदिगित नहीं, आहाहा !

विद्विवास पन्ना ३५. “सामान्यतासे निर्विकल्प है. विशेषतासे शिष्यको प्रतिबोध किया (समझाया) जाता है, तब ज्यों-ज्यों शिष्य गुरु द्वारा प्रतिबोध किये जानेसे गुणका स्वरूप जान-जानकर विशेष भेदी (भेदविज्ञानी, विवेकी) होता जाता है, त्यों-त्यों उस शिष्यको आनंदकी तरंगे ठीकती है” (शिष्यको) ऐसा नहीं होता है कि, धतने सारे भेद समझये इसलिये (दुःख होता) है, (ऐसा नहीं है). (इसमें तो) भजना भुलता है. समझमें आया ? अंदरमें बराबर कान देकर गुणभेदको सुने तो पर्यायमें धनके (निर्मल पर्यायके) ढगले होते हैं.

(दूसरी भात) ८८ पन्ने पर है, देओ ! गुणके बिना ही (अर्थात् गुणकी अपेक्षा बिना ही) “पर्यायकी सत्ता, गुणके बिना ही पर्यायका कारण है.” क्या कहते हैं ? पर्यायकी सत्ता—(वही भात यहां कही न) ? “उत्पाद्-व्ययसे आदिगित (भाव)..” भाव यानी पर्याय. वह पर्याय स्वतंत्र (उत्पन्न होती है). गुण बिना पर्याय, पर्यायका कारण है. ध्रुव गुण बिना पर्यायका कारण पर्याय है. आहाहा ! देओ ! “पर्यायकी सत्ता गुणके बिना ही, सत्ता पर्यायका कारण है.” आहाहा ! गुण बिना ही पर्यायका कारण पर्याय है. पर्यायकी सत्ता-वर्तमान सम्यग्दर्शन आदि निर्मल पर्यायकी सत्ता, गुण बिना ही, अपनेसे सिद्ध होती है, आहाहा ! समझमें आया ? व्याख्यानमें यह तो बहुत बार बताया है.

“पर्यायका सूक्ष्मत्व पर्यायका कारण है.” गुण-द्रव्य (सूक्ष्मत्वका कारण) नहीं. पर्यायका सूक्ष्मत्व ही पर्यायका कारण है. आहाहा ! “पर्यायका वीर्य पर्यायका कारण है.” पर्यायमें जो वीर्य शक्ति पडी है, वह पर्यायका कारण है. द्रव्य-गुण (कारण) नहीं (और) व्यवहार

कारण नहीं. आडाडा ! अरे ! ऐसी बात (है) ! यह तो समझिती गृहस्थ है. समझिती गृहस्थ है उन्होंने छतना स्पष्ट किया है, आडाडा !

(लोगोंको) पढना नहीं है और अपनी बात छोडनी नहीं है. (कोई) ऐसा कहता है कि, सोनगढकी बात तो सख्खी है, लेकिन हम अगर कबूल करने जायें तो सोनगढकी प्रसिद्धी हो जाये ! लोग वहां यवे जाये और हमको कोई माने नहीं. अरे.. भगवान ! ऐसे मानने नहीं माननेकी बात यहां नहीं है. थोज जैसी है ऐसा भगवानने इरमाया है. सभरे नहीं आया था ? कि, अनादि परंपराका उपदेश है. आडाडा ! निर्मल पर्याय अपनेसे उत्पन्न होती है, राग और परसे नहीं. व्यवहार रागसे निश्चय यारित्र और निश्चय समझित होता है, ऐसा कभी नहि. ऐसा अनादि परंपरा यह उपदेश यला आया है. समझमें आया ? आडाडा ! यह सोनगढका नया नहीं है. आडाडा ! (दिपयंदज साडबने) लिखा है न ? कि, अभी तो किसीकी आगमके अनुसार श्रद्धा दिपती नहीं और वक्ता भी यथार्थ श्रद्धावाले नहीं दिपते हैं. उस समय २०० वर्ष पहले लिखा है और मुझसे हम कहें तो (कोई) सुनता नहीं. अभी तो सुननेवाले निकले हैं. मुझसे कहे तो सुनते नहीं तो हम लिपकर जाते हैं कि, मार्ग ऐसा है, दूसरे कहते हैं ऐसा मार्ग नहीं है. भावदीपिकामें है. आडाडा !

“पर्यायका प्रदेशत्व पर्यायका कारण है.” आडाडा ! सम्यग्दर्शन आदि धर्मकी निर्मल पर्याय उत्पन्न हुई, उसका प्रदेश भिन्न है. असंख्य प्रदेशमें ध्रुवका प्रदेश भिन्न (और) पर्यायका प्रदेश भिन्न (है), आडाडा ! जितने क्षेत्रमेंसे निर्मल पर्याय उत्पन्न होती है, छतने प्रदेश भिन्न गिननेमें आये (हैं). पर्यायका कारण वह प्रदेश है, ध्रुव प्रदेश (पर्यायका कारण) नहीं, ऐसा कहते हैं. आडाडा ! समझमें आया ? ध्रुवका प्रदेश सूक्ष्म है. पर्यायकी उत्पत्तिमें ध्रुवका क्षेत्र कारण नहीं. पर्यायका क्षेत्र पर्यायका कारण है, आडाडा ! गजब बात करते हैं न ! यह गृहस्थ पंडितका लिखा हुआ है. आडाडा !

“अथवा उत्पाद्व्यय कारण है. क्योंकि उत्पाद्व्ययसे पर्याय जनानेमें आती है. अतः ये पर्यायके कारण है और पर्याय कार्य है.” ध्रुव कारण नहीं. आडाडा ! समझमें आया ? बहुत गंभीरता ! बहुत गंभीरता ! आडाडा !

सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र जो मोक्षका मार्ग है, इस पर्यायका उत्पाद्व्यय होता है. यह उत्पाद्व्यय भी अपने क्षणिक उपादानमें स्वतंत्र कारणसे उत्पन्न होता है. ध्रुव उपादान है तो उससे उत्पन्न हुआ है, ऐसा भी नहीं. आडाडा ! क्योंकि ध्रुव उपादान तो अकरूप त्रिकाल रहता है. पर्यायमें केवलज्ञान हो तो भी ज्ञानकी ध्रुवतामें कोई कभी हो गई (ऐसा नहीं है). समझमें आया ? बहुत पर्याय बाहर आ गयी इसलिये कभी हो गयी, ऐसा भी नहीं. और निगोदके शरीरमें अक जवको अक्षरके अनंतवें भागमें पर्यायमें विकास है तो अंदर गुणमें पुष्टि हो गयी है, बाहर थोडा विकास है तो अंदर बहुत गुण है, ऐसा नहीं है.

आहाहा !

ये (बात) यहाँ कड़ते हैं. ध्रुव उपादान तो कायम जैसा है ऐसा है. समझमें आया ? याहे तो सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न हो कि याहे तो केवलज्ञानकी पर्याय उत्पन्न हो, ध्रुव तो ध्रुव है वह है. (जैसा है) ऐसा है. आहाहा ! अकबंध है. बहुत विषा है.

“अतः ये पर्यायके कारण हैं और पर्याय कार्य है.” पर्याय कारण और पर्याय कार्य है. निमित्तसे तो नहीं लेकिन द्रव्य-गुणसे (भी पर्याय) नहीं, आहाहा ! २०० वर्ष पहले द्विगंबर पंडितों भी बहुत काम कर गये हैं. भाग्यंदेह, बनारसीदास, टोडरमल्ल (हो गये).

यहाँ कड़ते हैं आत्मामें प्रभुत्व नामकी शक्ति है. उसमें यह अपादानकी शक्तिका स्वरूप है. उस कारणसे प्रभुताकी उत्पाद-व्यय पर्याय जो उत्पन्न होती है, वह उत्पाद-व्ययको स्पर्शित होती है और उसका अभाव होने पर भी ध्रुवमें हानि नहीं होती. ध्रुव तो ऐसे के ऐसे रहता है, आहाहा ! समझमें आया ?

यहाँ तो यह बताना है कि, पर्याय क्षणिक पलटती है, फिर भी ध्रुव तो ऐसे का ऐसा रहता है. उसको ऐसा कड़ना है कि, जिसने द्रव्यकी शक्ति दृष्टिमें ली और अनंत शक्तिका भेद भी लक्षमें लिया, उसकी पर्याय बाधमें लड़ती है और गिर जायेगी, पर्यायसे गिर जायेगा और मिथ्यात्व हो जाये, ऐसी बात नहीं है. आहाहा ! क्योंकि निर्मल पर्याय स्वतंत्र उत्पन्न हुई है. लेकिन उसका व्यवहार कारण जो ध्रुव है, तो जिसकी दृष्टि ध्रुव पर है उसकी निर्मल पर्याय उत्पन्न हुआ ही करती है. उसकी निर्मल पर्यायसे लटकर मिथ्यात्व आ जाये, ऐसा कोई गुण नहीं है. आहाहा ! समझमें आया ? आये उतना आये. आये उतना समझना. बाकी क्या हो सकता है ? बहुत भरा है. अक-अक शक्तिमें तो घटना (भर दिया है). यह तो परम प्रधान शक्ति है. द्विपदेहने ऐसा कड़ा है. क्योंकि प्रत्येक शक्तिमें क्षणिक उपादान और ध्रुव (उपादान है). यह क्षणिक उपादान पलटता होने पर भी ध्रुव उपादान तो वैसा का वैसा है-हानिको प्राप्त नहीं होता, आहाहा !

अक दूसरी बात (है) कि, सम्यग्दर्शन आदिकी निर्मल पर्याय जो है, वह अल्प हो. उसकी हानि-नाश होने पर भी यह पर्याय द्रव्यमें गयी है. द्रव्यमें-ध्रुवमें गयी है. वहाँ अल्पज्ञता रहती है, ऐसा नहीं. वह तो पारिणामिकभाव हो गया. आहाहा ! यहाँ कड़ते हैं न कि, ध्रुव ऐसा का ऐसा रहा ? पर्यायमें सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र है, इस पर्यायका अभाव हुआ. अभाव हुआ लेकिन (पर्याय) गयी कड़ा ? ‘जलके तरंग जलमें डुबत है’ जलका तरंग जलमें जाते हैं. ऐसे सम्यग्दर्शन आदिकी निर्मल पर्यायका अभाव हुआ. (वह) कड़ा गयी ? और वर्तमान पर्यायमें क्षायिक, क्षयोपशमभाव था. वह ध्रुवमें गया तो पारिणामिकभावसे हो गया. आहाहा ! (पर्याय) ध्रुवमें गयी वहाँ पारिणामिकभावसे हो गयी, आहाहा !

अभी तक सब जिंदगी झोंगट गयी. आहाहा ! बापू ! मार्ग ऐसा है, लार्ड ! और जिसे अभी रागसे विन्न मेरी यीज-शक्ति ध्रुव उपादान और क्षणिक (उपादान) स्वतंत्र है, ऐसी (रागसे) अेकताबुद्धि तोडकर तान नहीं हुआ. प्रभु ! मरणके समय दब जायेगा, प्रभु ! आहाहा ! रागसे निश्चयधर्म होता है, ऐसी अेकता बुद्धिवाला मृत्युकालमें (दब जायेगा). अेक तो मृत्युका काल, अेक तो (शारीरिक वेदना). आहाहा ! और शरीर मेरा ऐसी बुद्धि सारी जिंदगी रही हो. मेरा भगवान मेरा है, ऐसा तो तान हुआ नहीं, आहाहा ! मरणके समय (जैसे) घाड़ीमें पिल जाता है वैसे पिलकर देह छूटेगा. आहाहा ! और वह देह छोडकर यार गतिमें चला जायेगा ! आहाहा ! समजमें आया ?

यहां तो पवित्रताकी पर्याय और पवित्र गुण, उसकी बात है, आहाहा ! यह अपादान नामकी शक्ति है. इसमें निर्मल पर्याय जो हुई, वह कमसर कमवर्ती होती है. पर्याय कमवर्ती होती है और गुण अकम साथमें है. यह कमवर्ती पर्याय और अकमवर्ती गुणका समुदाय यह आत्मा है. राग साथमें होता है तो राग सहित आत्मा है, ऐसा है नहीं. आहाहा ! समजमें आया ?

मोक्षमार्ग प्रकाशकमें तो दो ठिकाने ऐसा कहा है कि, शुद्धाशुद्ध पर्यायका पिंड द्रव्य है, ऐसा कहा है. वह दूसरी बात है. वहां तो पूर्वमें अशुद्धता थी, यह नहीं मानता है, उसको यह बताया है. समजमें आया ? लेकिन अशुद्धता थी उसे मानता है, तो वह पर्याय गई कहा ? वह अंदरमें गयी तो अंदरमें अशुद्धता नहीं गयी है, आहाहा ! अंदरमें तो योग्यता रह गयी है और वह पारिणामिकभावरूप हो गयी. आहाहा ! भगवानमें मिल गयी वह भगवानरूप हो गयी. परम पारिणामिकभाव है न ? आहाहा ! ऐसा मार्ग (है) ! ऐसा धर्मका उपदेश (है) ! हमे क्या करना ? यह करना नहीं है ? वस्तुका स्वभाव है, उस ओर तेरा जुकाव कर, प्रभु ! ध्रुवको ध्यानमें ले. ध्रुवको ध्येय-सेठ बना. पर्यायका सेठ ध्रुवको बना. प्रस्वाह प्रण है न ? उसका पिता ध्रुव है, आहाहा ! समजमें आया ?

(ऐसे) अनंत गुणमें लेना और अपादान शक्तिका अनंत गुणमें स्वरूप है. और अेक शक्तिमें अनंत गुणका स्वरूप इस ओर (अपादान शक्तिमें) है. आहाहा ! अपादान शक्तिमें भी ज्ञान, आनंद शक्तिका रूप है. बहुत सूक्ष्म ! बहुत सूक्ष्म ! ओहोहो ! समजमें आया ? व्यवहार और निमित्तको ठोडाकर बात करते हैं. अपने नित्य ध्रुव शुद्ध उपादान और पर्यायका क्षणिक उपादान (दोनों) स्वतंत्र हैं. आहाहा ! यह व्रत आदि सराग यारित्र पालते हैं तो पीछे निश्चय यारित्र होता है, यह वस्तुकी शक्तिमें और गुणमें नहीं है. वह तो अज्ञानीने अद्धरसे उत्पन्न किया है. समजमें आया ? आहाहा ! ऐसी बात है ! भगवानका दरबार खुला है. आहाहा !

प्रभु ! तेरी शक्तिमें छतनी संपदा है कि, अनंत शक्तिमें अपनी ध्रुवता (है) और

पर्याय जो क्षणिक उत्पादन (है, वह) अपनेसे उत्पन्न होता है, आडाडा ! नाश भी अपने कारणसे (होता है) और उत्पाद् भी अपने कारणसे (होता है). आडाडा ! दूसरे तरीके से वें तो यह उत्पाद्-व्यववाली जो पर्याय है, यह उत्पाद्का क्षण है. उस क्षणमें उस समयकी स्थिति है, इसलिये उत्पन्न होता है, आडाडा ! उत्पाद्-व्ययकी निर्मल पर्याय है और ध्रुव कायम है. उसमें अेक भाव नामकी शक्ति है. (छ प्रकारकी) शक्ति आ गयी है. भाव, अभाव, भावअभाव, अभावभाव, भावभाव, अभावअभाव. (उसमें) भाव शक्तिका यह रूप है कि, वर्तमान विद्यमान निर्मल पर्याय डोवे डी. आडाडा ! इस गुणका कारण है. अैसी बात है.

छ: डोलमें भाव आ गया न ? भाव नामकी शक्ति है कि, जिसके कारण प्रत्येक गुणकी पर्याय निर्मलरूपसे उत्पन्न रहना, यह भावशक्तिके कारणसे है, आडाडा ! समजमें आया ? व्यवहारका अभाव होता है, इसलिये भावशक्तिका निर्मल (कार्य) होता है, अैसा भी नहीं. समजमें आया ? भावशक्तिके कारण वर्तमान निर्मल अवस्थाकी डयाती डोती है. प्रत्येक गुणकी भाव शक्तिके कारण और उस गुणमें भाव शक्तिका रूप डोनेके कारण, वर्तमान निर्मल अवस्थाकी डयाती डोती है. वह उत्पाद्-व्यववाली क्षणिक पर्याय है. आडाडा ! इसमें क्या समजना ? कुछ करना था वह सरल था. व्रत करो, अपवास करो, यात्रा करो, त्मक्ति करो, डो-पांय लापका डान करो (यह सब सरल था). डस लाप क्या करोड रूपये डे डे न ! उसमें कडां धर्म था ?

पडवे संप्रदान (शक्ति) आ गयी. अपनेमें अपनी पर्याय दाता-डेती है. डेनेवाला भी आत्मा और डेनेवाला भी आत्मा. आडाडा ! संप्रदान नामकी शक्तिका कार्य अैसा है. निर्मल पर्याय दाता और निर्मल पर्याय पात्र. अेक समयमें पात्र और दाता, वह पर्याय है, आडाडा ! परको डान डेना यह किया आत्मामें नहीं है. और डानमें शुभराग होता है, वह भी आत्मामें नहीं है. समजमें आया ? आडाडा ! और शुभभावसे तीर्थकर गोत्र बंधे (वह भी तेरी यीजमें नहीं है). (यडां) कडते हैं कि, शुभभाव और बंधन तेरी यीजमें है नहीं न ! आडाडा ! तेरी कोई शक्ति अैसी नहीं है कि, तीर्थकर गोत्रका भाव-कारण उत्पन्न करे, आडाडा ! गजब बात है ! तेरी कोई शक्ति – गुण और तेरी निर्मल उत्पाद्-व्यववाली पर्याय (उसमें) कोई (शक्ति) नहीं है कि शुभभावको उत्पन्न करे. आडाडा ! तीर्थकर गोत्र बांधे उसमें राज्ण डोना (वह बात तो डूर रह गई). आडाडा ! समजमें आया ?

पांय पांडव. भावडिंगी वीतरागी संत थे. पांयोंने ध्यान लगा डिया और तीन तो अंतरके ध्यानके कारण डेवलज्ञान पाकर शेत्रुंजयसे मुक्ति गये. सहडेव और नकुल भावडिंगी संत, मुनि, सडोडर (थे). डडे त्माईको डोडेका मुगट, डोडेका कडा (पडनाया था). (अैसे) संत-साधर्मीका विकल्प आया. वह विकल्प तो शुभ है. समजमें आया ? (अैसे) शुभभावमें डेवलज्ञान रुक गया. सर्वार्थसिद्धिमें उड सागरकी (आयु स्थितिमें) जाना पडा. और वडांसे भी मनुष्य

डोकर तुरंत मोक्ष नहीं जायेंगे, ८ वर्षके बाद केवलज्ञान होगा. आहाहा ! आठ वर्ष पहले तो होगा ही नहीं. जैसे विकल्पमें यह बंध पड़ गया. समझमें आया ? ऐसा शुभ विकल्प (आया कि) संतोंको कैसा होगा ? आहाहा ! प्रवचन डोलमें (चित्रपट है न) ? लोहेके धगधगते कडे (पहनाये हैं). (विकल्प आया कि) भाईको कैसा होगा ? ऐसा विकल्प आया, यह कोई शक्तिका कार्य नहीं. समझमें आया ? वह तो अद्धरसे—उपरसे उत्पन्न हुआ है. आहाहा ! ज्ञानी रागकी अपनेमें भतवशी नहीं करते. लेकिन ऐसा झल आ गया (कि) बंधन हो गया. ज्ञानी बंधन और रागको अपनेमें भिलाते नहीं. वे तो निर्मल पर्याय और निर्मल गुणको अपनेमें भिलाते हैं. समझमें आया ? आहाहा !

कभी सुना नहीं. ऐसी बात (है), प्रभु ! भाग्यशाली जोवको पुण्य हो तो कानमें सुनने मिले. भगवानका प्रवाल है. भगवानके श्रीमुखसे निकला हुआ प्रवाल है, आहाहा !

“उत्पाद्व्ययसे आदिगित..” (अर्थात्) पर्याय, पर्यायसे स्पर्शित है. ध्रुवको स्पर्शित नहीं है. “उत्पाद्व्ययसे आदिगित भाव...” (भाव यानी) वर्तमान पर्याय. “..अपाय (—हानि, नाश) होनेसे हानिको प्राप्त न होनेवाले...” वह (तो) ध्रुव है. दूसरी पर्याय अंदर तैयार है. आहाहा ! समझमें आया ? पर्याय गयी इसलिये हानि हो गयी (ऐसा नहीं है). आहाहा ! ध्रुव उपादान पडा है तो क्षणिक उपादानकी दूसरी निर्मल पर्याय होगी, होगी और होगी. भावशक्तिके कारण और अपादान क्षणिक उपादानके कारण (निर्मल पर्याय होगी). समझमें आया ? निर्मल पर्याय गयी—नाश हुई तो दूसरी निर्मल पर्यायकी विद्यमानता प्रगट होगी. (पर्यायके) अभावमें (ध्रुवका) अभाव हो जाये, ऐसा नहीं है, आहाहा ! ऐसी बात है ! आहाहा !

(बाहरमें) बहुत डेरडार (हो गया), आहाहा ! डेर (लोगोंने) निश्चय है.. निश्चय है.. ऐसा कड़कर निकाल दिया. निश्चय है यानी सत्य है, यह सत्य है. व्यवहारसे निश्चय कभी नहीं होता. निमित्तसे उपादानमें कार्य नहीं होता और कमबद्ध पर्याय अपने कालमें होती है (उसमें कोई) डेरडार नहीं होता. समझमें आया ? आहाहा ! “..हानिको प्राप्त न होनेवाले ध्रुवत्वमयी अपादान शक्ति है.” आहाहा !

दूसरा ऐसा कहना है कि, केवलज्ञानकी पर्याय है, (वह) तो एक समयकी है. (और वह) पर्यायको आदिगित है. एक समयकी पर्यायका तो अभाव होगा. अभाव होने पर भी ध्रुवत्व है. दूसरी केवलज्ञानकी पर्याय विद्यमान उत्पन्न होगी, होगी और होगी. (पर्यायका) अभाव हुआ तो (ध्रुवत्वका) व्यय हो गया (और) दूसरी पर्याय उत्पन्न नहीं होगी, ऐसा नहीं है, आहाहा ! समझमें आया ?

क्षयोपशम समकितसे क्षायिक समकित होता है. वह कोई भगवानके समीप था इसलिये हुआ, ऐसा नहीं है. लेकिन उसकी ध्रुव शक्तिमें ताकत पडी है कि, जो क्षयोपशम समकितकी पर्याय थी, उसका व्यय हुआ (और) क्षायिकका जन्म हुआ, ऐसी पर्याय उत्पन्न होती है.

ભગવાનકે સમીપ છે, ઇસલિયે ક્ષાયિક સમકિત ઉત્પન્ન હુઆ, ઐસા નહીં છે, આહાહા ! સમજમેં આયા ?

ક્ષયોપશમ (સમકિતકા) વ્યય હુઆ તો ધ્રુવ (તો) પડા છે. ઉસકે આશ્રયસે, ઉસમેં એક ભાવ નામકા ગુણ છે તો વર્તમાન વિદ્યમાન અવસ્થા બિના વહ રહે નહીં, આહાહા ! નયી નિર્મલ વિદ્યમાન અવસ્થા ઉત્પન્ન હોગી, હોગી ઓર હોગી. ઐસા યહ અપાદાન શક્તિકા ગુણ છે. વિશેષ કરેંગે...



અશરીરી સિદ્ધની જાતનો જ હું છું તેનો એકનો જ આદર કરવાની મારી દૃઢ ટેક છે તેથી સ્વપ્નેય પુણ્ય-પાપ સંસારની વાતનો આદર કરું નહિ, હું પણ સિદ્ધ ચિદાનંદ પૂર્ણ થયા તેના કુળનો કેડાયત છું, ચાર ગતિમાં જવાનો રાગ કલંક છે. અતીન્દ્રિય સિદ્ધ પરમાત્મપણાનાં મહિમા વડે સર્વ કલંક ટાળી વીતરાગી થવાનો જ છું એમ ધર્મી ગૃહસ્થદશામાં કોલકરાર કરી દૃઢ વ્રતી થાય છે.

(પરમાગમસાર-૭૯૬)

પ્રવચન નં. ૪૧

શક્તિ-૪૬ તા. ૨૦-૦૯-૧૯૭૭

ભાવ્યમાનભાવાધારત્વમયી અધિકરણશક્તિ: ૧૧૪૬ ૧૧

સમયસાર, ગુણકા અધિકાર ચલતા હૈ. ગુણ કહો કિ શક્તિ કહો (એકાર્થ હૈ). આતમ પદાર્થ દ્રવ્યકી અપેક્ષાસે એક હૈ. લેકિન ગુણકી અપેક્ષાસે ઇસમ્ અનંત ગુણ હૈ. ઇન ગુણોમ્ એક આધાર નામકી શક્તિ હૈ. આજ ૪૬ વીં શક્તિ લેની હૈ. (આત્મામ્) અનંત શક્તિયાં હૈ, ઇસમ્ જબ દ્રવ્ય સ્વભાવકા આશ્રય લેતે હૈ તો સમ્યક્જ્ઞાનકી પર્યાય ઉત્પન્ન હોતી હૈ. ઇસકે સાથ અનંત શક્તિકી પર્યાય ઉત્પન્ન હોતી હૈ. ‘ઉછલતી હૈ’ એસા પાઠ હૈ.

જૈસે પાતાલમ્ પાની હોતા હૈ ન ? ઉપરકી શીલા અગર તૂટ જાયે તો અંદરસે પાનીકી ધાર નિકલતી હૈ. પાતાલમ્ ઇતના પાની ભરા હૈ કિ, ઉપરકા પાતાલ જબ તૂટે, (તો અંદરસે પાનીકી ધાર નિકલતી હૈ). અભી એસા બના થા. એક ગાંવમ્ કુઆ ખોદા લેકિન પાની નહીં નિકલા. બહુત ગહરા ખોદનેકે બાદ ભી પાની નહીં નિકલા. બહુત ગહરા ખોદનેકે બાદ એક પથ્થરકા પડ રહ ગયા થા. તો કિસીને આકર ઉપરસે અંદરમ્ બડા પથ્થર ડાલા તો પથ્થર તૂટ ગયા. એક પથ્થરકી શિલા (બાકી) રહ ગયી થી તો ઇસમ્ જબ બડા પથ્થર ડાલા તો એકદમ પાની ઉછલા.

એસે ભગવાન આત્મા ! રાગકી એકતાબુદ્ધિ હૈ તબ તક પાની નિકલતા નહીં. પાતાલમ્ પાની હૈ. અનંત આનંદ, અનંત જ્ઞાન, અનંત શાંતિ પડી હૈ. આહાહા ! રાગકી એકતા તોડકર, અપના શુદ્ધ સ્વભાવકા અનુભવ કરતા હૈ, તબ અંદર પાતાલમ્ દ્રવ્યકી શક્તિ હૈ, વહ પરિણતિરૂપસે પર્યાયમ્ બાહર આતી હૈ. શક્તિ તો શક્તિ હૈ.

સંવર અધિકારમ્ તો એસા લિયા હૈ કિ, આત્મા જો જ્ઞાનસ્વરૂપ હૈ, ઇસમ્ જો પર્યાયમ્ જાનનક્રિયા હોતી હૈ—સ્વકો જાનનેકી જાનન ક્રિયા (હોતી હૈ) ઇસ જાનનક્રિયાકે આધાર પર આત્મા હૈ. યહ શક્તિકા વર્ણન ભિન્ન હૈ, યહ વસ્તુકા સ્વરૂપ દૂસરે તરીકેસે (કહા હૈ). આત્મામ્ અનંત શક્તિકા પિંડ પડા હૈ. ઇસકા જબ જ્ઞાન હોતા હૈ, સ્વસન્મુખ હોકર જ્ઞાનકી પર્યાય પ્રગટ હોતી હૈ તો ઇસ જાનન ક્રિયા કે આધારસે આત્મા જાનનેમ્ આતા હૈ. સંવર અધિકારકી

भात है. संवर कैसे होता है ? धर्मकी पर्याय-संवर कैसे होती है ? कि, 'उपयोगमें उपयोग है' आहाहा ! यह संवर (अधिकारकी) गाथा है. उपयोगमें उपयोग है, उसका अर्थ क्या है ? कि, अपना भगवान जो उपयोग (अर्थात्) त्रिकादी शुद्ध स्वरूप है, उस उपयोगमें उपयोग है. वर्तमान ज्ञानन क्रियाका स्वसन्मुख उपयोग हुआ, इसमें आत्मा ज्ञाननेमें आया है. उस कारणसे उपयोगमें उपयोग है. ज्ञानन क्रियाके भावमें आत्मा ज्ञाननेमें आता है, आहाहा ! संवर अधिकार बहुत चल गया है.

वस्तु तो है. (वस्तुमें) अनंत शक्तियां पडी हैं. गुणरूपसे-स्वभावरूपसे-ध्रुवरूपसे-नित्यरूपसे-सत्के स्वरूपसे-कस स्वरूपमें, सत्यका जो कस है-माल है (उस रूप अनंत शक्तियां पडी हैं). लेकिन उसका ज्ञान कब होता है ? आहाहा ! संवर कैसे होता है ? धर्मकी शुरुआत (कैसे होती है) ? (ज्ञानको) रागसे भिन्न करके, अपनी ज्ञानन क्रियारूपी परिणति-पर्याय, उस उपयोगमें उपयोग आता है. ज्ञानन क्रियामें आत्मा ज्ञाननेमें आता है, आहाहा ! समझमें आया ? सूक्ष्म भात है.

यहां (चलते) अधिकारमें अधिकरण शक्ति लेंगे. इस अधिकरण (शक्तिका) आश्रय आत्मा है. यह शक्तिका आश्रय-आधार आत्मा है. आहाहा ! और वहां (संवर अधिकारमें) ऐसा लेना है (कि), रागसे भिन्न भेदज्ञान जब क्रिया, अपना शक्तिवंत परमात्मा उसका अंतरमें स्वसन्मुख होकर, वर्तमान उपयोगमें ज्ञानन क्रिया हुई, उस ज्ञानन क्रियाके आधार पर उपयोग नाम आत्मा है. क्योंकि ज्ञानन क्रियाके आधारसे (आत्मा) ज्ञाननेमें आया, आहाहा ! सूक्ष्म भात है.

अभी याद आया. वहां अंदर (स्वाध्याय करते समय) दूसरा लिया था. समझमें आया ? वहां अभी वांचन करते (वक्त) ऐसा विचार आया था कि, प्रवचनसारमें आता है न ? कर्ता, करण और अधिकरण, तीन बोल आते हैं, भाई ! बडी सूक्ष्म भात है. वहां तो ऐसे लिया है कि, अपना आत्मा जो शुद्ध यैतन्यधन है, उसका गुण और पर्यायके आधारसे द्रव्य सिद्ध होता है. निर्मल गुण और पर्यायकी (भात है). उसके आधारसे द्रव्य सिद्ध होता है और द्रव्यके आधारसे गुण-पर्याय सिद्ध होते हैं. आहाहा ! समझमें आया ?

द्रव्यमें अधिकरण नामकी शक्ति पडी है. तो द्रव्यके आधारसे गुण-पर्याय प्रगट होते हैं और गुण-पर्यायके आधारसे द्रव्य प्रगट होता है, आहाहा ! गुण-पर्यायके आधारसे द्रव्य प्यालमें आता है. (ऐसा) सिद्ध करना है. आहाहा ! सूक्ष्म भात है, भाई ! तत्त्वज्ञान (बहुत) सूक्ष्म (है). वर्तमानमें सब इंरफार हो गया, आहाहा ! ऐसा प्रभु है न !

(यहां) कहते हैं कि, यह द्रव्य-शक्तिवान (है), शक्ति-गुण (है और) निर्मल पर्याय (है). (दूसरी जगह तो) मलिन (पर्याय) संहितकी साधारण भात ली है. जो (यह) त्रिकादी गुण है, यह अधिकरण आदि शक्ति कही न ? यह गुण और गुणका परिणमन (उसमें) वहां

परिणामनमें निर्मल और अनिर्मल (पर्याय) दोनों लिये हैं, भाई ! जरा शांतिसे समजना. क्योंकि वहां तो विकारी पर्यायके आधारसे द्रव्य है, ऐसा लेना है. क्योंकि उससे सिद्ध होता है. यह विकार अवस्था है, यह किसकी (है) ? कि द्रव्यकी (है). विकारी पर्यायके आधारसे द्रव्यकी सिद्ध होती है. (द्रव्य) साबित होता है, आहाहा ! और द्रव्यके आधारसे गुण-पर्याय साबित होता है. वहां तो विकारी पर्याय द्रव्यके आधारसे साबित होती है, ऐसा कहा है, आहाहा ! समजमें आया ? अनंत गुण और अनंती पर्याय-वर्तमान अेक समयमें अेक-अेक गुणकी ऐसी अनंती पर्याय, उस पर्याय और गुणके आधारसे द्रव्यकी सिद्धि-साबित होती है और द्रव्यके आधारसे गुण और पर्याय साबित होता है. वहां तो मलिन पर्यायका भी लक्षण लिया है.

पंचास्तिकायमें लिया है. मलिन पर्याय हो तो भी वह द्रव्यका लक्षण है. आहाहा ! वैसे तो आत्माका ज्ञान लक्षण कहा, वह तो स्वभावका भाव करानेको (कहा). लेकिन पर्यायमें विकृत अवस्था है, वह भी उसकी है, उस लक्षसे 'यह आत्मा है' ऐसा सिद्ध होता है, उस कारणसे विकृत अवस्थाको भी आत्माका उत्पाद् लक्षण बनाकर (द्रव्यको सिद्ध किया है). ऐसी बातें (हैं) ! आहाहा ! विकारकी पर्यायको लक्षण बनाकर 'यह द्रव्य है' ऐसा लक्षण सिद्ध करते हैं.

संवर अधिकारमें तो जानन क्रियामें निर्मल परिणति है, उसके आधारसे आत्मा जाननेमें आता है, तो द्रव्यका आधार पर्याय है, (ऐसा कहा). आहाहा ! कहां समजनेकी कुरसद है ? आहाहा ! अरे भाई ! तू क्यों रभडता है ? उसकी सिद्धि करते हैं, आहाहा !

वहां प्रवचनसारमें १० वीं गाथामें तो यह लिया है न ? अशुद्ध परिणामका आश्रय भी द्रव्य है. यहां बहुत सारी बातें हो गयी हैं. विकारी पर्यायका आश्रय भी द्रव्य है. क्योंकि पर्याय द्रव्यकी है तो द्रव्यके आश्रयसे हुई. उसका अर्थ द्रव्यमें हुई तो द्रव्यके आश्रयसे हुई, ऐसा कहनेमें आया. आहाहा ! यहां तीसरी रीत है. गुण-पर्याय आधार और द्रव्य आधेय, द्रव्य आधेय और गुण-पर्याय आधार, यह तो ज्ञान करानेको बात कही.

यहां जो आधार है, यह आत्मामें अेक आधार नामकी शक्ति है. आहाहा ! समजमें आया ? है ? "भाव्यमान (अर्थात् भावनेमें आते हुए)..." भाव जो निर्मल पर्याय होती है, सम्यग्दर्शनकी, सम्यक्ज्ञानकी, सम्यक्चारित्रकी, आनंदकी ऐसा जो भाव-निर्मल पर्याय भावनेमें आती है, उस ".. भावके आधारत्वमयी.." (अर्थात्) निर्मल सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र जो भावमय पर्याय उसका आधार आधारमयी (अधिकरण शक्ति है). आधारमयी (लिया है). आधारवादी ऐसा भी नहीं (कहा है). आहाहा ! ".. आधारत्वमयी अधिकरण शक्ति" क्या कहते हैं ? सम्यग्दर्शनकी पर्याय प्रगट हुई वह भाव लिया. भाव्यमान भाव (है). (अर्थात्) भावने लायक भाव (है). वह भाव-सम्यग्दर्शनकी पर्याय (रूप), "..भावके

आधारत्वमयी..” उस भावका आधार कौन ? कि अंदर अधिकरण शक्ति है, उस भावके आधारसे सम्यग्दर्शन पर्याय उत्पन्न हुआ है, आहाहा ! समझमें आया ? सूक्ष्म बात है, बापू ! यह शक्तिका वर्णन (सूक्ष्म है).

सम्यग्दर्शनकी पर्याय—यह भाव्यमान भाव (है). सम्यक्चारित्रकी पर्याय भाव्यमान भाव (है). वर्तमान अतीन्द्रिय आनंदकी पर्याय भाव्यमान भाव (है). उसके आधारत्वमयी (अर्थात्) सम्यग्दर्शनकी पर्यायका आधार आधारत्वमयी अधिकरण शक्ति है. उसके आधारसे सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न हुआ है. आहाहा !

यह बड़ा ऊँचा अम्बी (यल रहा है न) ? व्यवहारसे निश्चय होता है. अरे भाई ! प्रभु ! सुन तो सही. तुने तत्त्वको सुना नहीं. यहां व्यवहारकी बात ही नहीं है. यहां तो व्यवहारका लक्ष छोड़कर, द्रव्यका लक्ष बनाया, तब जो सम्यग्दर्शनकी पर्याय हुआ, उसका आधारमयी (अधिकरण) शक्ति है. उससे (पर्याय) हुआ है, आहाहा ! सूक्ष्म बात (है), बापू ! (लेकिन) समझमें आये ऐसी है. भाषा तो सादी है. भाव तो बहुत ठींचे भरे (हैं). शक्तियां गजब है !

“भाव्यमान..” (अर्थात्) वर्तमान मति-श्रुत आदि सम्यक्ज्ञानकी पर्याय (यह) भाव्यमान भाव (है). यह मति-श्रुत ज्ञानकी सम्यक् पर्याय भाव्यमान भाव (है). उसका आधार, ज्ञान गुणमें अधिकरण शक्तिका स्वरूप है, उस कारणसे भाव्यमान भावका आधार, ज्ञानमें अधिकरण नामका रूप है, यह उसका आधार है. शास्त्रके आधारसे ज्ञानकी पर्याय उत्पन्न हुआ, ऐसा नहीं (है). सुननेसे (ज्ञानकी पर्याय) उत्पन्न हुआ, यह (भी) ज्ञान नहीं, आहाहा !

सम्यक्ज्ञानकी पर्याय भाव्यमान भाव (है). उसका आधार ज्ञानगुणमें अधिकरण नामका स्वरूप है, ज्ञानमें अधिकरण नामका एक भाव है, (यह है). अधिकरण शक्ति भिन्न (है). समझमें आया ? लेकिन ज्ञान गुणमें अधिकरण नामका एक स्वरूप है. अधिकरण शक्ति भिन्न है. लेकिन अधिकरण शक्तिका ज्ञानगुणमें भाव है. इस भावके कारण, भाव्यमान पर्याय उसके आधारसे उत्पन्न होती है, आहाहा !

यहां तो यह कहना है कि, सम्यक्ज्ञानकी पर्याय दर्शनके आधारसे उत्पन्न हुआ है, (ऐसा नहीं है). अंदर सम्यक्श्रद्धा है तो श्रद्धामें भी अधिकरण नामका स्वरूप है. लेकिन श्रद्धामें अधिकरणका रूप है, उससे सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न होती है. लेकिन सम्यक्ज्ञान गुणमें अधिकरणका रूप है, तो उससे सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न होती है, ऐसा नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! छतने शब्दोंमें तो बहुत भंडार भरा है !

भगवान आत्मामें श्रद्धा गुण—शक्ति त्रिकाल है. यहां ४७ (शक्तिमें श्रद्धा गुण) नहीं आया. परंतु सुषु शक्तिमें सम्यग्दर्शन और चारित्र (शक्ति) समा दी है. पल्लवी सुषु शक्ति आयी न ? सुषुशक्तिमें सम्यग्दर्शन और सम्यक्चारित्र समा दिया है. कहते हैं कि, सम्यग्दर्शनकी

जो पर्याय उत्पन्न हुई, उसका आधार कौन ? किसके आधारसे उत्पन्न हुई ? कि श्रद्धा गुणमें अधिकरण नामका स्वरूप है, उसके आधारसे सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न हुयी, आहाहा ! गजब बात है ! देव, गुरु, शास्त्रकी श्रद्धासे भी सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न नहीं होती है, औसा कहते हैं. नव तत्वकी भेद (रूप) श्रद्धासे निश्चय सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न नहीं होती, आहाहा ! श्रद्धा गुणमें अधिकरण नामका स्वरूप है, उस कारणसे सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न होती है. आहाहा !

आचार्योंने गजब काम किया है ! आहाहा ! द्विगंबर मुनिओंने तो जगतको केवलज्ञान बताया है ! समजमें आया ? यह अतिशयोक्ति नहीं है, वस्तुका स्वरूप है. भगवान ! तेरेमें तो अनंत ज्ञान, आनंद आदिकी लक्ष्मी पडी है और जो सम्यग्दर्शनकी पर्याय उत्पन्न होती है, वह किस कारणसे (उत्पन्न होती है) ? इसका आधार कौन ? व्यवहार रत्नत्रय आधार (है) ? देव, गुरु, शास्त्र आधार (है) ? आहाहा ! प्रभु ! गजब बात तेरी !

अब यारित्र गुण लेते हैं. आत्मामें वीतरागी पर्याय, आस्रव रहित संवरकी वीतरागी पर्याय उत्पन्न होती है, उसमें कारण कौन ? व्यवहार-पंच महाव्रतका परिणाम, सराग संयम यह कारण है ? आहाहा ! वीतरागी यारित्रकी पर्याय मोक्षका कारण (है). अंदर यह यारित्र नामका गुण है, उसमें यह अधिकरण नामका स्वरूप है, इस स्वरूपके आधारसे यारित्रकी पर्याय उत्पन्न होती है. आहाहा ! गजब काम किया है न ! अबकी बारी शक्तिओंका वर्णन अखण आया है. अक-अक शब्दके वाच्यमें ईर्क है, आहाहा !

वीतरागी (यारित्रकी) दशाके साथ आनंद है उसे बादमें लो. मोक्षका मार्ग सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्र. यह वीतरागी यारित्रकी पर्याय हुई, उसका आधार कौन ? कि, अंदर त्रिकावी यारित्र गुण-शक्ति है. उसमें अक अधिकरण नामका स्वरूप है. अधिकरण शक्ति उसमें नहीं (है). इस स्वरूपके कारण यारित्रकी पर्याय उसके आधारसे उत्पन्न होती है, आहाहा ! व्यवहार क्रियाकांडसे-सरागसे उत्पन्न होती है, (औसा नहीं है), आहाहा ! गजब काम किया है, प्रभु !

अरे..! (नरकादिके दृ:भकी) वह पल कैसे गयी होगी ? उस पलमें तो पत्योपम गये, पत्यमें तो अनंत काल गया. आहाहा ! प्रभु ! उस दृ:भको मिटानेका उपाय तो यह अक है.

जिसे निर्विकारी पर्याय – मोक्षमार्ग प्रगट करना हो, उसे अंदर आधार नामकी शक्ति है, उससे (मोक्षमार्ग) उत्पन्न होगा, आहाहा ! उसका अर्थ ? कि, उसको द्रव्य पर दृष्टि देनेनी याहिये. इसे द्रव्यदृष्टि (कलनेमें आती है), आहाहा ! समजमें आया ? प्रभु ! वीतराग मार्ग बहुत अलौकिक है ! जिसका इल भी अलौकिक है ! अनंत आनंद और अनंत केवलज्ञान प्रगट हो और सादि अनंत (काल) रहे, आहाहा ! सिद्ध पर्याय उत्पन्न हुई वह सादि अनंत रहे. अकेला अतीन्द्रिय आनंदका अनुभव और भोगवटा, आहाहा ! उसका कारण जो मोक्षका

मार्ग वह कैसा होता है ? भाई ! उस कारणका आधार भी अंदर शक्ति है. उसके आधारसे (मोक्षमार्ग उत्पन्न होता) है. आहाहा ! इस शक्तिका कितना माहात्म्य ! और यह शक्ति जिसके आश्रयसे है, उस द्रव्यका माहात्म्य तो अलौकिक है !! समझमें आया ? आहाहा ! भगवान तू अनंत लक्ष्मीका भंडार (है). आहाहा !

गोदाम नहीं होता है ? १७-१८-१९ सालकी छोटी उम्रकी बात है. बंबईमें गोदाम देखा था. अकेबार दुकान परसे केसर लेनेको पालेजसे बंबई गये थे. तो सारा गोदाम केसरके डिब्बेसे भरा था. बड़ा गोदाम (था). केसरके डिब्बेकी थप्पीयां थी. जैसे यह भगवान तो अनंत गुणोंका गोदाम है. यह आत्मा-गोदाम अलग जातिका है.

जिसमें अधिकरण नामकी शक्ति-गुण रूप पडा है, आहाहा ! तुझे वर्तमान सम्यग्दर्शनकी, सम्यक्ज्ञानकी, सम्यक्चारित्रकी वीतरागी धर्मदशा अंतर अधिकरण नामकी शक्तिके आधारसे उत्पन्न होती है, आहाहा ! यह अधिकरण शक्ति द्रव्यके आश्रयसे रहती है. आहाहा ! समझमें आया ?

ऐसा उपदेश लोगोंको ऐसा (कठिन) लगता है. सारा दिन निवृत्ति नहीं (और) जिंदगी जैसे ही निकाल दी. उपदेश देनेवाले (भी) जैसे मिले ! 'जहलो जोगी अेवी मावि मकवाणी' – हमारे गुजरातीमें कहावत है. 'जहलो जोगी' यानी उसे कोई स्त्री नहीं देता था. और 'मावि मकवाणी' (नामकी स्त्रीको) कोई लेता नहीं था. ऐसी कोई भोडवाली बाई थी. दोनोंका मेल हो गया ! जैसे अज्ञानीको रागकी रुचि (तो है ही) और रागसे धर्म होता है, ऐसा उपदेश देनेवाले मिले, (दोनोंका) मेल हो गया. आहाहा ! भगवान ! मार्ग तो यह (है). यह तो वीतराग मार्ग है, प्रभु ! आहाहा !

अशुभ रागकी तो बात क्या करना ? वह तो महा पाप (है). और शुभ रागको भी अनुभवी (पुरुष) तो पाप कहते हैं. आहाहा ! इस पापसे आत्माकी निर्मल मोक्षमार्गकी पर्याय उत्पन्न हो ! प्रभु ! (यह मान्यता) मिथ्यात्वका बड़ा शल्य है.

यहां तो परमात्मा ऐसा कहते हैं, "भाव्यमान..” अपने भावनेमें आते (हुअे), है ? “..(भावनेमें आते हुअे) भावके...” (अर्थात्) वर्तमान भावनेमें भाते हुअे भाव. वीतरागी सम्यग्दर्शन, ज्ञान और आनंद. उसे भाव (कहा). उस “... भावके-आधारत्वमयी..” आहाहा ! उसका आधार आधारत्वमयी (अधिकरण) शक्ति है. आधारत्वमयी कहा. द्रव्यके साथ यह शक्ति तन्मय है, आहाहा ! समझमें आया ?

ऐसे अपने आनंदकी पर्याय प्रगट हो, अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद (प्रगट हो). सबेरे 'आस्वादक' आया था न ? धर्मी जब अतीन्द्रिय आनंदके स्वादका करनेवाला है. 'आस्वादक' (है). आहाहा ! सम्यक्दृष्टि और धर्मी उसको कहते हैं कि, अपना आनंदका स्वादका करनेवाला हो. आहाहा ! प्रभु ! तेरी बलिहारी है, नाथ ! इस आनंदके स्वादको करनेवाले जबको,

एस आनंदका स्वादका आधार कौन ? क्या रागकी मंदता (आधार है) ? देव, गुरु, शास्त्रकी भक्ति (आधार है) ? उसके आधारसे (आनंद) उत्पन्न होता है ? आहाहा ! उसमें अधिकरण नामकी शक्ति है तो अनंत गुणका आधार अधिकरण शक्ति है, आहाहा ! और अंदर अक-अक गुणमें अधिकरणका रूप है, यह गुणका आधार है और निर्मल पर्याय होती है. वह भी (एस) गुणके आधारसे उत्पन्न होती है, आहाहा !

श्रोता : श्रद्धा गुणमें भी एसका रूप पडा है ?

पूज्य गुरुदेवश्री : सबका रूप पडा है, कडा न ? श्रद्धा गुणमें रूप पडा है तो (एस) रूपसे (श्रद्धाकी पर्याय) उत्पन्न होती है. जैसे पहले ज्ञान गुणमें कडा था. सब कल गये हैं. सब बात आ गयी हैं.

ज्ञानमें भी ऐसा अधिकरण नामका स्वरूप पडा है, उसके आधारसे सम्यक्ज्ञान उत्पन्न होता है. आहाहा ! केवलज्ञान भी कैसे उत्पन्न होता है ? कि पूर्वमें यार ज्ञान थे, उसका व्यय होकर (उसके) कारणसे केवलज्ञान उत्पन्न हुआ ? (तो कलते हैं कि), नहीं, ज्ञान गुणमें अधिकरण नामका स्वरूप है, उसके कारणसे केवलज्ञान उत्पन्न हुआ. यह भाव्यमान भाव (है). भाव्यमान भाव (अर्थात्) भावनेमें आया ऐसा भाव. आहाहा !

वीतरागी क्या तो देओ ! आहाहा ! अरे..! (कोई तो) एसकी मजाक करते हैं ! अरे प्रभु ! तू रहने दे नाथ ! तू भगवानस्वरूप है न ? प्रभु ! आहाहा ! तेरी विकारकी दशाके आधारसे तुझे गुण उत्पन्न हो, तो तुझे गुण और गुणके स्वरूपकी शक्तिकी प्रतीति नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! व्यवहार रत्नत्रयका रागसे निश्चय रत्नत्रय होगा, ऐसा माननेवालेको द्रव्य और गुणकी श्रद्धाका विश्वास नहीं है. बराबर है ? लोचकसे तो (भात करते हैं). आहाहा ! न्यायसे-लोचकसे तो (भात हैं). आहाहा ! तीनलोकके नाथका मार्ग न्यायसे सिद्ध है. 'नि' धातु (है). 'नि' नाम ज्ञानको अंतरमें ले जाना. आहाहा ! एसका नाम न्याय कलनेमें आता है. समझमें आया ? आहाहा ! धन्य भाग्य ! ऐसी वीतरागी वाणी ! आहाहा ! समझमें आया ?

आज तो बहनेका पुस्तक (बहनेश्रीके वचनमृत) पढकर अक मुमुक्षु जैसे भुश हो गये, कलने लगे कि, यह जैनकी गीता होगी. भात तो ऐसी आयी है ! एस (बहनेश्रीके वचनमृतमें) माल-माल आया है. जैनकी गीता (अर्थात्) जैनके गाने, वीतरागताके गाने, उसे गीता कलते हैं. वीतरागके गाने उसे गीता कलें. यह गीताका अर्थ है. आत्माके गुणके गाने गाना, एसका नाम गीता (है), आहाहा !

भगवान आत्मा अनंत गुणका सागर, गोदाम पडा है. उसके आधारसे पर्याय उत्पन्न हो, एस गुणका गाना है. पर्यायका भी (गाना) नहीं और रागका भी (गाना) नहीं. रागका (गाना) तो नहीं लेकिन पर्यायका भी (गाना) नहीं. जिसमें निर्विकल्प गुण पडा है. वीतरागी

स्वभाव पडा है. उसके आधारसे तो पर्याय प्रगट होती है, प्रभु ! तू दूसरेका आधार मानता है, वह वस्तुकी स्थिति (नहीं). तेरे गुणका स्वभावका अनादर करता है. समझमें आया ? व्यवहार करते-करते निश्चय होगा (इसमें तो) प्रभु तुम गुणी और गुणका अनादर करते हो. तेरेमें गुण है. निर्मल पर्याय अपने आधारसे उत्पन्न हो, जैसे गुणका तुम अनादर करते हो. आहाहा !

यहां एक अधिकरण शक्तिमें तो कितना भरा है ! अनंत गुणमें अधिकरणका रूप है और अधिकरणके रूपमें अनंत गुणका स्वरूप है, रूप है, आहाहा ! अधिकरण नामकी शक्ति है, उसमें अनंत गुणका स्वरूप-रूप पडा है और अधिकरण शक्तिका स्वरूप-रूप अनंत गुणमें पडा है. आहाहा ! बडा समुद्र है ! ऐसी बातें हैं ! लोगोंको व्यवहारके रसीकको यह बात अंकांत लगे. (लेकिन) क्या करें, प्रभु ? मडा समुद्र पडा है न ? प्रभु !

जलके तरंग जलमेंसे उत्पन्न होते हैं. शास्त्रमें समुद्रका दृष्टांत कडा है न ? समुद्रमें तरंग उठता है, वह हवाके कारणसे नहीं (उठता). हवा आयी तो तरंग उठता है, ऐसा नहीं. समुद्रके पर्यायका स्वभाव (ऐसा) है (तो) अपने कारणसे तरंग उठता है और वह तरंग समाकर समुद्रमें घुस जाता है, आहाहा ! समझमें आया ?

कपडेकी धजा जो होती है (वह) छिलती है तो हवाके कारणसे (छिलती) नहीं, ऐसा कहते हैं. उसमें परिणामन करनेकी शक्ति है. क्रियावर्ती शक्तिके कारण उसका परिणामन ऐसा-ऐसा होता है, हवाके कारणसे नहिल. ऐसी बातें हैं ! ८०की सालमें एक पंडित ऐसा कहते थे, प्रत्यक्ष छिपता है, उसे तुम ना कह रहे हो ? पानीमें उष्णता अग्निसे आती है और तुम कहते हो कि, अपनेसे (उष्ण) होता है. प्रत्यक्ष देखनेमें आता है. (हमने कडा) क्या प्रत्यक्ष देखते हो ? उसमें उष्ण नामकी शक्ति है, उसकी ठंडी पर्याय है, यह बहलकर उष्ण होती है. उष्ण गुणके कारण, स्पर्श गुणके कारण यह उष्णता हुई है. अग्निके कारणसे पानी उष्ण हुआ, यह तीन कालमें नहीं. वे (विद्वान्) आये थे, 'दृष्टि छष्ट' ऐसा बोल रहे थे. 'दृष्टि रडा है, देखते हैं और आप ना कहते हो ?' बापू ! तुझे क्या छिपता है ? भाई ! आहाहा !

कुंदकुंद आचार्यने उ७२ गाथामें तो ऐसा कडा कि, हम तो मिट्टीसे घडा उत्पन्न होता है, (ऐसा) देखते है. कुंभारसे घडा उत्पन्न होता (हुआ) हम तो देखते नहीं. आहाहा ! क्योंकि घडेकी पर्यायकी कर्ता तो मिट्टी है. मिट्टीमें करण नामकी शक्ति है. मिट्टीमें एक अधिकरण नामकी शक्ति है, उसके आधारसे घडेकी पर्याय उत्पन्न होती है. कुंभारके हाथसे घडा बनता नहीं. आहाहा ! द्रव्यकी पर्यायकी स्वतंत्रता तो देखो ! आहाहा ! समझमें आया ?

यहां कहते हैं, अनंत गुणमें अधिकरण नामका रूप है. अंदरमें प्रभुत्व नामका गुण है. आहाहा ! प्रभुत्व नामकी शक्ति है. वह आ गयी है. अपंडरूपसे शोभायमान स्वतंत्रतासे

शोभायमान, प्रभुत्वशक्ति. ७ वीं (शक्ति) है न ? 'जिसका प्रताप अभंडित है अर्थात् किसीसे भंडित की नहीं जा सकती ऐसे स्वातंत्र्यसे (—स्वाधीनतासे) शोभायमानपना जिसका लक्षण है ऐसी प्रभुत्वशक्ति.' आहाहा ! प्रभुत्व शक्तिमें भी अधिकरण शक्तिका स्वरूप है, तो प्रभुत्व शक्तिके परिणामनमें अभंडरूपसे—स्वतंत्ररूपसे शोभायमान पर्याय होती है. इस पर्यायका भंड करनेकी जगतमें किसीकी ताकत नहीं है, आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! कर्मका उदय हुआ तो प्रभुताकी पर्यायमें भंड डो गया, (ऐसा नहीं है). प्रभु ! तुझे मालूम नहीं. आहाहा ! (तेरेमें) प्रभुत्व शक्ति है, ईश्वर होनेकी शक्ति है. यह प्रभुताकी शक्ति जो पडी है, उसकी पर्यायमें प्रभुता प्रगट होती है, उसका आधार प्रभुत्व शक्तिमें अधिकरणका स्वरूप है, उसके आधारसे प्रभुता प्रगट होती है, आहाहा ! पामरतामें से प्रभुता आती नहीं, ऐसा कहते हैं. प्रभुत्वमें से प्रभुता आती है. उसका अर्थ क्या किया ? कि, पहले पर्याय पामर है तो उसका व्यय छोकर (विशेष पर्याय हुआ) ऐसा भी नहीं. आहाहा !

यह प्रभुत्व नामकी शक्ति तो प्रत्येक गुणमें है. ज्ञानमें प्रभुत्व शक्तिका रूप, दर्शनमें रूप, (ऐसे) अनंत गुणमें रूप (है). श्रद्धा गुणमें भी प्रभुत्व नामका स्वरूप—रूप है. आहाहा ! श्रद्धामें प्रभुत्व नामकी शक्तिका स्वरूप है. उस कारणसे सम्यक्त्वकी पर्याय प्रभुत्व स्वरूपके कारणसे, प्रभुत्वकी पर्यायकी प्राप्ति होती है. आहाहा ! समझमें आया ? ऐसा स्वरूप (है) !

एक बार मोरभी गये थे. मोरभीसे शनाणा (गये थे). वहां व्याख्यान डो गया बादमें शामको आहार (लेनेके बाद) घुमते थे. वहां एक शक्तिका मंदिर था. देवी शक्तिका मंदिर था. वहां गये थे. (वहां एक) साधु बैठा था. (हम वहां गये तो कहने लगा), 'पधारो, पधारो. इस शक्तिके बिना ईश्वर नहीं चल सकता. शक्तिके बिना ईश्वर भी नहीं चल सकता' हमने कहा कि, 'लेकिन वह कौनसी शक्ति ? इस शक्तिके बिना ईश्वर—आत्मा नहीं रह सकता है' वह कहे, 'देवी शक्ति. ईश्वरको भी देवी शक्तिकी जरूरत पडती है. वहां शनाणामें शक्तिका मंदिर है.

इस प्रभुको शक्तिके बिना एक क्षण भी नहीं चलता. गुणके बिना गुणी कैसे रहे ? शक्ति बिना शक्तिवान कैसे रहे ? और शक्तिवानके बिना उसकी पर्याय भी कैसे रहे ? आहाहा ! सभी जगह शून्य लगा दे (और) यह स्वभावसे भरा हुआ भगवान उसके शरणमें जा, उसका आश्रय ले. तुझे शांति होगी, सम्यग्दर्शन होगा, आनंद होगा, यारित्रकी पर्याय भी तेरे द्रव्यके आश्रयसे होगी. लाभ-करोड बार तेरे व्यवहार यारित्र करे (तो भी वह) राग है. उसके कारणसे (निश्चय) यारित्र होता है, सराग क्रियासे वीतराग यारित्र होता है, (ऐसा) तीन कालमें नहीं. समझमें आया ?

(कोई) ऐसा कहते हैं कि, छोड़े गुणस्थानक तक सराग यारित्र है. फिर उसके कारणसे सातवें (गुणस्थानमें) वीतराग यारित्र होता है. परंतु अभी छोड़े गुणस्थानमें सराग यारित्र

किसको कलना इसकी तुल्ये खबर नहीं है. पहले तो स्वरूपका आश्रय छोकर अनुभव हुआ हो, अनुभवमें विशेष लीनता हुई हो, परंतु (सातवें गुणस्थानमें) तदन वीतरागता—निर्विकल्पता न हो, तब तक रागको व्यवहार कलते हैं. उसका अभाव छोकर स्वरूपका उग्र आश्रय लेने से अंदरकी शक्तिके आधारसे वीतरागता उत्पन्न होती है. रागका व्यय हुआ तो वीतरागता उत्पन्न हुई. (ऐसा नहीं है). आहाहा ! लोखकसे—न्यायसे तो बात है. प्रभु ! तुल्ये तेरे न्यायकी खबर नहीं. आहाहा ! यह प्रभुत्व शक्ति वि. जैसे खवतर शक्तिमें (लेना).

पहली खवतर शक्ति (है). समयसारकी दूसरी गाथामें दिया है न ? “जीवो चरित्तदंसणणाणट्टिदो” यहाँसे खवत्वशक्ति निकाली है. “जीवो चरित्तदंसणणाणट्टिदो” खव अपने सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रमें स्थित (है). खवमें दर्शन, ज्ञान, यारित्र स्थित (है), जैसे नहीं दिया. खव अपने दर्शन, ज्ञान, यारित्रमें स्थित है, आहाहा ! रागमें स्थित था वह सम्यग्दर्शन, ज्ञानमें स्थित हुआ. आहाहा ! समझमें आया ? स्थित होनेकी शक्ति अंदरमें थी, आहाहा ! अंदर अधिकरण नामका, आधार नामका गुण है, स्वरूप है, आहाहा ! उसके आधारसे भगवान अपने सम्यग्दर्शन, ज्ञान, यारित्रकी पर्यायमें आता है. इसको खव कहे और कर्म पुद्गलके प्रदेश स्थितम् (अर्थात्) कर्मके निमित्तसे उत्पन्न हुआ राग वह तो कर्म है. उस कर्म प्रदेशमें—अंशमें स्थित है, वह आनात्मा है. “पोग्गलकम्मपदेसट्टिदं च तं जाण परसमयं” उसको परसमय ज्ञान, अनात्मा ज्ञान, वह आत्मा नहीं, आहाहा !

आत्माके सम्यग्दर्शनके आश्रय बिना अथवा स्वभावके आश्रय बिना, अकेला व्यवहार रत्नत्रयका राग आदि है, यह सब बंधका कारण है. अबंधका कारण बंधसे उत्पन्न हो, ऐसा नहीं है.

अधिकरण शक्ति अबंधस्वरूप है. अधिकरण शक्ति पारिणामिकभावसे है. क्या कदा ? अधिकरण शक्ति पारिणामिकभावसे—सहज स्वभावसे है. उसके आश्रयसे (प्रगट हुआ) भाव्यमान भाव. उपशम, क्षयोपशम, क्षायिकभावसे है—उदयभाव नहीं. समझमें आया ? आहाहा !

भगवान आत्मा ! अनंत गुणमें अधिकरणका स्वरूप और अधिकरण शक्ति (है). आहाहा ! यैतन्य रत्नाकर पर्वत ! इसमें भाव्यमान वर्तमान दशा, मोक्षमार्गकी दशा या खवतर शक्तिकी दशा (अधिकरण शक्तिके आधारसे उत्पन्न होती है). खवतर शक्ति त्रिकादी है. लेकिन उसका कार्य क्या ? कि, ज्ञान, दर्शन, आनंद और सत्ता. जैसे भावप्राणरूपी कार्य उसमें होता है. भावप्राणसे आत्मा खता है, यह खवन है. शरीरसे खना वह (खवन नहीं).

लोग कलते हैं न ? यहाँका विरोध करते हैं. ‘खओ और खने दो’ कौन खओ और किसको खने दे ? वह भगवानका वाक्य ही नहीं. वह तो अंग्रेखका वाक्य है. बाईबलका वाक्य है. (लोग) ऐसा बोले, ‘महावीरका संदेश, खओ और खने दो’ अरेरे...! (कुछ) मादूम

नहीं, प्रभु ! जओ और जने दो (यानी) “जीवो चरित्तदंसणणाणद्धिदो” वह जओ है. यह जवन (बना) और दूसरेका जवन भी ऐसा बना दे. यह (जवन) बना दे तो (तू) जवन जता है. रागसे जना, शरीरसे जना, भाव इन्द्रिय अथवा अशुद्ध भावप्राणसे जना, वह जवका जवन नहीं. आहाहा ! यह जउके १० प्राण उससे जवन वह तो आत्माका जवन है ही नहीं. तो ‘जओ और जने दो’ यह भगवानकी वाणी ही नहीं. इसकी टीका यही है कि, (कानज स्वामी) ‘जओ और जने दो’ को अज्ञान कहते हैं. अरे ! लाभभार अज्ञान (है), सुन न ! आहाहा ! प्रभु ! अंदर जवत्व नामकी शक्ति है. उसमें अधिकरण नामका स्वरूप है तो वर्तमानमें जो जवन-ज्ञान, दर्शन और आनंदकी पर्याय उत्पन्न हुई, उस जवनसे जना उसका नाम जव है. इस जवनसे जओ उसका नाम जव है. राग और पुण्य-पापसे जओ, वह जव नहीं, आहाहा ! ऐसी बातें (हैं) ! बात-बातमें ईर्क है.

कहते हैं न कि, ‘आनंद कहे परमानंद भाणसे भाणसे डेर, अक लाभे तो न मणे अने अक तांबियाना तेर’ अक लाभ इन्सानमें भी नहीं मिले ऐसे मनुष्य डोते हैं न ? और अक तांबियाना तेर. ऐसे प्रभु कहते हैं कि, तारे ने मारे वाते-वाते डेर. तेरी विपरीत दृष्टि के कारणसे भेल नहीं जाता है, नाथ ! आहाहा !

यहां कहते हैं कि, जवतर शक्तिमें भी अधिकरणका रूप है और यिति शक्ति, दशि शक्ति, ज्ञान शक्ति उसमें भी (अधिकरणका रूप है). आहाहा ! आत्मामें सर्वज्ञ शक्ति है, उसमें भी यह अधिकरण नामका स्वरूप है. उसके आधारसे केवलज्ञान उत्पन्न होता है. मोक्षमार्गकी पर्याय थी (उसका) व्यय हुआ और उससे केवलज्ञान उत्पन्न हुआ, ऐसे नहीं है. आहाहा ! गजब बात है ! मोक्षमार्गका व्यय हुआ और मोक्षकी पर्याय उत्पन्न हुई, ऐसा नहीं. अंदरमें अधिकरण स्वरूपके कारणसे मोक्षकी पर्याय उत्पन्न हुई है, आहाहा ! गजब बातें हैं ! समजमें आया ?

अंदरमें यह यिति शक्ति, दशी (शक्ति है ऐसे) सर्वज्ञ शक्ति है. सर्वज्ञ शक्ति है, यह गुण है. उसमें अधिकरण नामका स्वरूप है, उसके कारणसे केवलज्ञानकी पर्याय उत्पन्न (होती है). यह भाव्यमान भान (है). भावनेवाला भावका-सर्वज्ञ शक्तिका आधार अधिकरण (शक्तिका) स्वरूप है.

ऐसे सर्वदर्शी (शक्तिमें लेना). सर्वज्ञ हुआ उसके कारणसे सर्वदर्शी नहीं (हुआ). आहाहा ! अंदरमें सर्वदर्शीशक्ति पडी है. उसमें यह अधिकरणका स्वरूप है, उस कारणसे पर्यायमें सर्वदर्शीपना प्रगट होता है. यह भाव्यमान भाव है. समजमें आया ? आहाहा ! गुजरातीमें जितना स्पष्ट आये (घतना) हिन्दीमें नहीं आता. भाषा ढूंढनी पडे न ? आहाहा !

यहां कहते हैं कि, सर्वज्ञ, सर्वदर्शीपना प्रगट हुआ उसका आधार कौन ? अब कोई ऐसा कहते हैं, वज्रनारायसंलनन डो तो केवलज्ञान उत्पन्न होता है. अरे ! सुन न, प्रभु !

वञ्जनारायसंछनन तो कहीं दूर रह गया लेकिन पहले मोक्षका मार्ग है, वह व्यय छोकर उसके कारणसे (केवलज्ञान) हुआ, ऐसा भी नहीं. अंदरमें सर्वज्ञ और सर्वदर्शी शक्ति पडी है, उसमें अधिकरण नामका स्वरूप है, उसके कारण सर्वज्ञ, सर्वदर्शी (वर्तमान पर्याय प्रगट होती है). शक्तिमें पडा है वह वर्तमानमें प्रगट होता है, आहाहा ! समझमें आया ? एक-एक पर्यायमें षट्कारक है. यह अधिकरण शक्ति (प्रगट) हुई, (वह उसके) षट्कारकसे उत्पन्न होती है.

पंचसंग्रहमें ज्ञानदर्पणमें लिया है, भाई ! समझमें आया ? १६६ नंबरका श्लोक है. “किरिया करम सभ संप्रदान आदिकको” किया शक्ति आयी है न भाई ? पहले कियाशक्ति आयी थी. देखो ! “कारकोंके अनुसार परिणामित होनेरूप भावमयी कियाशक्ति.” ४० (वीं शक्ति है न) ? “कारकोंके अनुसार..” देखो ! छ कारक अनुसार. “..परिणामित होनेरूप भावमयी कियाशक्ति.” और उसके पहले (३८ शक्तिमें), “(कर्ताकर्म आदि) कारकोंके अनुसार जो किया..” (अर्थात्) मलिन पर्याय. “...उससे रहित भवनमात्रमयी भावशक्ति” आहाहा ! समझमें आया ? वही (बात) यहां कही है. देखो !

“किरिया करम सभ संप्रदान आदिकको” किया शक्ति, कर्म शक्ति, संप्रदान शक्ति, आदिकको “परम आधार अधिकरण कहीजिये” परम आधार अधिकरण कहीजिये. सत्मीका परम आधार अधिकरण शक्ति (है). “दरसन, ज्ञान आदि वीरज अनंत गुण, वाहीके आधार यातैं वामैं थिर हूजिये” दर्शन, ज्ञानका आधार यह अधिकरण शक्ति है, आहाहा !

यह बात तो श्वेतांबर, स्थानकवासीमें तो है ही नहीं. अन्य मतमें तो है ही नहीं. लेकिन यहां द्विगंबरमें है उसका अर्थ करनेमें भी पडा गोटा उठाया. यह तो सर्वज्ञ परमेश्वरका है. संतों वीतरागी मुनिओंने अंदरसे रामबाण मारे हैं. आहाहा ! यहां कहते हैं, “किरिया करम सभ संप्रदान आदिकको, परम आधार अधिकरण कहीजिये, दरसन ज्ञान आदि वीरज अनंत गुण, वाही के आधार यातैं वामैं थिर हूजिये, याहीकी महतताई गाई सभ ग्रंथनिमें, सदा उपादेय सुद्ध आतम गहीजिये”

यह अधिकरण शक्तिका वर्णन है. अधिकरण शक्ति—गुण है तो गुणीको उपादेय कर तो तुजे शक्तिका परिणामन होगा, आहाहा ! गुणका परिणामन भिन्न नहीं रहेगा. अनंत शक्तिका समुदाय ऐसा द्रव्य स्वभावको उपादेय करके और रागको ह्य करके जो उत्पन्न होता है, (वह) वीतरागता उत्पन्न होती है, यह अधिकरण शक्तिके कारण (उत्पन्न होती है). सभका आधार अधिकरण (शक्ति) है. विशेष कहेंगे....



શક્તિ-૪૭
પ્રવચન નં. ૪૨
તા. ૨૧-૦૯-૧૯૭૭

સ્વભાવમાત્રસ્વસ્વામિત્વમયી સમ્બન્ધશક્તિ: ॥૪૭॥

સમયસાર, શક્તિઓંકા અધિકાર હૈ. શક્તિ (અર્થાત્) ગુણ હૈ. આત્મામ્ અનંત ગુણ હૈ ઓર આત્મામ્ અનંત ગુણ હોને પર ભી એક-એક ગુણકા સ્વરૂપ દૂસરે ગુણમ્ હૈ. આત્માકા સ્વસંવેદન હોતા હૈ, ધર્મદશા (હોતી હૈ). સ્વસંવેદન નામકી એક શક્તિ હૈ ન ? ૧૨ વી પ્રકાશ નામકી શક્તિ હૈ. પ્રકાશ શક્તિકા કાર્ય કયા ? પર્યાયમ્ સ્વ-અપના, સં-પ્રત્યક્ષ વેદન હોના, યે ઇસ શક્તિકા કાર્ય હૈ.

સમ્યગ્દર્શનકે કાલમ્ અપને સ્વભાવકા આશ્રય હોને પર ભી, અપનેમ્ એક પ્રકાશ નામકા ગુણ હૈ. ઉસ કારણસે સ્વસંવેદન (અર્થાત્) અપના આનંદકા સ્વ-સં-પ્રત્યક્ષ વેદન (હોતા હૈ). ઇસમ્ યહ અધિકરણ નામકી શક્તિકા રૂપ હૈ, કિ જો સ્વસંવેદન પ્રત્યક્ષ સમ્યગ્દર્શનમ્-સમ્યક્જ્ઞાનમ્ હોતા હૈ, ઉસમ્ કોઈ પરકા અવલંબન નહીં (હોતા). ઉસમ્ વ્યવહાર રત્નત્રયકા વિકલ્પકા આધાર નહીં, આહાહા ! સમજમ્ આયા ?

શુદ્ધ ચૈતન્ય સ્વરૂપ (આત્મા) ઇસમ્ અનંતી શક્તિ (હૈ). ઉસમ્ એક શક્તિ ઐસી હૈ કિ, સ્વસંવેદન પ્રત્યક્ષ હોના. અપના આનંદ ઓર અપની જ્ઞાન પર્યાયમ્ પ્રત્યક્ષ હોના, આહાહા ! ઇસમ્ અધિકરણ શક્તિકા સ્વરૂપ હૈ. ઉસ કારણસે યહ શક્તિ પરકે આધાર બિના, અપના સ્વસંવેદનરૂપસે વેદન કરતી હૈ, યહ અપની સ્વયંસિદ્ધ દશા હૈ. વ્યવહાર રત્નત્રયકે કારણસે સ્વસંવેદન હોતા હૈ, ઐસા નહીં હૈ, આહાહા ! ઐસી બાત હૈ લેકિન લોગોંને ગડબડ કર દી. અભી વે લોગ જોર દેતે હૈં કિ, ચારિત્ર ચાહિયે, ચારિત્ર ચાહિયે... ઐસા કહતે હૈં. પરંતુ ચારિત્ર કિસકો કહૈં ? ચૌથે ગુણસ્થાનમ્ ભી સર્વગુણાંશ તે સમકિત (હોતા હૈ). કયા કહતે હૈં ? જીતની શક્તિકી સંખ્યા હૈ, ઉસકા એક અંશ ચૌથે (ગુણસ્થાનમ્) વ્યક્ત હોતા હૈ, તો ચારિત્ર ગુણકા ભી એક અંશ વ્યક્ત હોતા હૈ, સમજમ્ આયા ?

स्वरूप आयरण यारित्र जो है, यह सम्यग्दर्शनमें स्वरूप आयरण यारित्रका अंश प्रगट होता है. यारित्रका अंश वहांसे शुद्ध होता है. यह यारित्र जो पांचवें और छठे (गुणस्थानमें) कइते हैं, वह यारित्र नहीं (होता). लेकिन सम्यग्दर्शनमें 'सर्व गुणांश ते समकित' यह श्रीमद्का वाक्य है.

यहां अपने ले तो, रहस्यपूर्ण सिद्धीमें (ऐसा लिखा है), 'ज्ञानादि अेकदेश सर्वकी व्यक्तता प्रगट होना, यह यौथे गुणस्थानमें होता है' आहाहा ! जितनी संख्यामें गुण है, एतनी संख्यामें वर्तमान पर्यायमें व्यक्त रूप अंश प्रगट होता है. समजमें आया ? जैसे श्रद्धा नामका गुण है तो उसकी सम्यग्दर्शनकी पर्याय व्यक्त होती है. सम्यक्ज्ञानका गुण जो है, इसमें सम्यक्ज्ञानकी वर्तमान मति-श्रुत आदिकी पर्याय व्यक्त होती है, ऐसे यारित्र गुण जो है तो उसमें स्वरूप आयरण यारित्रका अंश भी साथमें प्रगट होता है. आहाहा ! समजमें आया ? ऐसी स्थिति है, ऐसा पडले ज्ञान तो करे. ज्ञान करे बिना प्रयोग कैसे करेगा ? अंतर्मुख होनेका प्रयोग तो पडले यथार्थ ज्ञान हो (तब होता है). समजमें आया ? आहाहा ! बादमें अंतरमें अनंत शक्तिसे भरपूर भरा हुआ भगवान ! आहाहा ! अनंत गुणसे भरपूर, गुणी-गुणसे भरपूररूपसे भरा है. भरपूर समजते हो ? (भरपूर माने) पूरा का पूरा. भगवान (आत्मा) अनंत गुणोंसे पूरापूरा भरा है. उसका जहां आश्रय लेते हैं तो उसमें से जितना भरपूर गुण है, उसका अेक अंश यौथे गुणस्थानमें व्यक्त-प्रगट होता है. आहाहा ! अनंत गुणका अेक अंश व्यक्त (होता है). अनंत गुणोंमें सबका (अेक अंश व्यक्त होता है). आहाहा ! कइ न ?

श्रद्धा गुणने अंश ज्ञायक स्वरूप द्रव्यको पकडा, जिसमें गुण और गुणीका भेद भी दृष्टिका विषय नहीं. यह शक्ति है और (यह) शक्तिवान है, ऐसा भेद भी सम्यग्दर्शनका विषय नहीं, आहाहा ! सम्यग्दर्शनका ध्येय और विषय अभेद अंश ज्ञायकभाव है. इस ध्येयमें अेक श्रद्धा नामकी शक्ति पडी है, इस ध्येयके लक्षसे यह श्रद्धा नामकी शक्तिकी भी सम्यग्दर्शनरूपी पर्यायकी व्यक्तता होती है, आहाहा ! अरे..! ऐसी बातें (हैं).

(बाहरमें तो ऐसा कइते हैं कि), संयम लो, संयम लो.. आज पेपरमें बहुत आया है. ये लोग संयमकी तो ना कइते हैं. परंतु किसको संयम-यारित्र कइें ? अभी सम्यग्दर्शन क्या है ? उसकी जबर बिना यारित्र आया कइसे ? समजमें आया ?

सम्यग्दर्शनमे तो सर्व गुणांश प्रगट होता है. इसमें आनंदकी भी पर्याय व्यक्त होती है. वीर्य नामका गुण है उसमें भी अनंत गुणकी व्यक्त पर्यायकी रचना करनेवाला वीर्यका भी अंश प्रगट होता है. आहाहा ! मार्ग बहुत अलग है, बापू ! आहाहा ! समजमें आया ? जवाहरातके (धंधेमें) कुछ हाथ आये ऐसा नहीं है. आहाहा ! अरे..! यह यीज बाहर आने से लोगोंको विरोध हो गया. बापू ! सत्य तो यह है, भाई !

तेरी शक्ति अनंत और यह शक्तिवान द्रव्य अेक. उस पर दृष्टि देनेसे अनंत शक्तिमें से अनंत अंश व्यक्त-प्रगट होता है. यौथे गुणस्थानमें प्रगट होता है. आडाडा ! अरे..! अज्ञोगपनाकी शक्ति है न ? निष्क्रियत्व शक्ति है. उसका निष्क्रियत्वका-अकंपपनाका अंश भी यौथे गुणस्थानमें प्रगट होता है, आडाडा ! सूक्ष्म बात है, भाई !

अेक द्रव्य-वस्तु अनंत शक्तिसे पूरा भरा पडा है. उसकी दृष्टि करनेसे वह छलकता है. पानीका घडा भरा हो न ? (वैसे यह) छलकता है. (हिन्दीमें) छलकतेको क्या कहते हैं ? उछलता है, आडाडा ! पडले आ गया है. पडली शक्तिमें आ गया है कि, ज्ञानमय पर्यायकी शक्ति प्रगट होनेसे दूसरी अनंत शक्ति साथमें उछलती है. देभा ? देभो ! “आत्मद्रव्यके कारणभूत..” आडाडा ! “आत्मद्रव्यके कारणभूत जैसे यैतन्यमात्र भावका धारण जिसका लक्षण अर्थात् स्वरूप है, ऐसी जवत्व शक्ति. (आत्मद्रव्यके कारणभूत जैसे यैतन्यमात्रभावरूपी भावप्राणका धारण करना जिसका लक्षण है, ऐसी जवत्व नामक शक्ति ज्ञानमात्र भावमें-आत्मामें उछलती है.” समजमें आया ?

जैसे पानी डोता है न ? नलको जैसे भोलो तो पानीकी धार डोती है. जैसे भगवान आत्मा ! आडाडा ! अनंत गुणका भंडार पर दृष्टि देनेसे नलमें से जैसे पानी झरता है, वैसे आनंद, ज्ञान और शांतिकी पर्याय झरती है. आडाडा ! बापू ! धर्म बहुत अलौकिक चीज है !

लोगोंने बाहरसे – यारित्र लो..यारित्र लो.. (में धर्म मना लिया है). बापू ! यारित्र किसके कहें ? प्रभु ! तेरे आत्माके छितकी बात है, प्रभु ! सम्यग्दर्शन बिना व्रत आदि अछितकर है, नुकसानकारी है, आडाडा ! उसको लाभदायी मानते हैं (लेकिन वह तो नुकसानकारी है). स्वरूपकी दृष्टि हो तब उसमें यारित्रका अंश भी (साथमें) आता है. वीर्यका अंश आता है. स्वरूपकी अनंत गुणकी रचना (डोती है). आत्मामें अेक बल नामकी शक्ति है, उसके कारण अनंत गुणकी स्वरूपकी पर्यायकी रचना होना, यह वीर्यका कार्य है. इस वीर्यके कार्यमें यह अधिकरणके नामका रूप है. यह वीर्य शक्ति अपनेसे स्वरूपकी रचना करती है. उसका कोई (दूसरा) आधार नहीं है. समजमें आया ? ऐसा मार्ग (है) ! कहा न ?

आडाडा ! उछलती कहा न ? ‘उछलती है’ पाठमें ऐसा है. देभो ! आडाडा ! जवत्वशक्ति. संस्कृतमें है, देभो ! “अत एवस्य ज्ञानमात्रैकभावांतःपातिन्योऽनंताः शक्तयः उत्प्लवंते” समजमें आया ? भगवान आत्मा ! आडाडा ! भगवान कहकर तो बुलाया है. इसमें अनंत शक्तिका-गुणका भंडार भरपूर भरा है. इसकी दृष्टि करनेसे सम्यक्ज्ञानकी पर्याय जो उत्पन्न डोती है (वह अंतरमें से आती है). यह अनेकांतकी यर्था है. सम्यक्ज्ञानकी पर्याय उत्पन्न डोती है, वह शास्त्रसे (नहीं डोती). अंतरसे उछलके आती है. उसके साथ अनंत गुणकी शक्ति अेक समयमें उछलती है अथवा प्रगट डोती है. ऐसा कभी कहीं सुना नहीं. आडाडा !

उसमें स्वसंवेदन-प्रकाश नामकी एक शक्ति है. आहाहा ! स्वसंवेदनमें स्व प्रकाशका वेदन, अपना स्वका प्रत्यक्ष वेदन आना, इसका अंश प्रगट होता है. यह प्रगट होता है, इसमें परका कोई आधार नहीं. व्यवहार रत्नत्रय आदि विकल्पका, निमित्तका आधार नहीं, आहाहा ! क्योंकि स्वसंवेदन प्रकाशशक्तिमें अधिकरण नामका-आधार नामका स्वरूप-रूप है. उस कारणसे प्रकाश शक्ति अपनेसे अपने कारणसे वेदन करती है. व्यवहारके कारणसे नहीं, आहाहा ! समझमें आया ?

ऐसे सम्यग्दर्शन होता है, द्रव्यकी दृष्टि होती है (तब) अनंत गुणकी पर्याय उछलती है, उसमें यौथे गुणस्थानमें यारित्रकी पर्याय भी आंशिक प्रगट होती है. यारित्रकी व्याख्या (क्या) ? आहाहा ! स्वरूपमें आयरण करना, यह यारित्र है. आहाहा ! समझमें आया ?

यहां शक्तिओंके वर्णनमें आभीरमें ४६ वीं शक्ति अधिकरणकी शक्ति आ गयी. यह थोडा अधिकरणके (विषयमें) दिया. प्रत्येक गुणमें अपने आधारसे अपनी निर्मल वीतरागी पर्याय उत्पन्न होती है, आहाहा ! १४ वें गुणस्थानमें जो अकंपना प्रगट होता है, वह अकंपना तो अपनी शक्ति है. उसमें से पूर्ण अकंपना उत्पन्न हुआ. लेकिन सम्यग्दर्शनके कालमें भी, यह अकंप शक्तिका एक अंश-कंपन नहीं होना, ऐसी शक्तिकी व्यक्तता होती है, आहाहा ! अजोगपनाका अंश शुरु होता है. ऐसी बात है. समझमें आया ? सूक्ष्म बात (है). शक्तिका वर्णन (सूक्ष्म है). आहाहा ! यह ४६ वीं शक्ति हुई.

आज आभीरकी ४७ वीं (शक्ति लेते हैं). पहले दिन कहा था कि, समयसारमें ४७ शक्तिका वर्णन है (और) प्रवचनसारमें ४७ नयका अधिकार है. यह दृष्टि प्रधान अधिकारमें शक्ति ली है. ज्ञान प्रधान अधिकारमें वर्तमानमें जो रागके कर्तृत्वकी जो पर्याय होती है, वह भी एक नय जानना. ज्ञानीको पर्यायमें रागका परिणामन है तो ज्ञानी ज्ञानमें जानते हैं कि, मेरा रागका परिणामन है. यह ज्ञानकी प्रधानतासे कथन है. (ऐसे) ४७ नय हैं और ४७ उपादान-निमित्तका दोहा और चार कर्मकी ४७ प्रकृति हैं. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, भोहिनी और अंतराय. चार घाति (कर्मकी) ४७ प्रकृति हैं. आहाहा ! ४७ शक्तिसे यह ४७ प्रकृतिका नाश होता है. नाश होता है, यह कहना भी उपचार-व्यवहार है, आहाहा ! समझमें आया ? आहाहा ! गजब बात की है !

अमृतचंद्र आचार्यने यह शक्तिका वर्णन (जो किया है, ऐसा) कहीं नहीं है. श्वेतांबरमें एक साधु हो गये. उन्होंने यह शक्तिका वर्णन पढा. पढकर श्वेतांबरकी शैलीसे शक्तिका वर्णन स्वतंत्र करने लगे. आठ शक्ति की, लेकिन ऐसी नहीं. समझमें आया ? यहां तो जवकी जवत्व शक्ति है, वहांसे शुरु किया है. आहाहा ! यह शक्तिके बाह नहीं कर सके. अभी पेपरमें आया है कि, (आगे वर्णन करना) छोड़ दिया है. यह ४७ (शक्तिका) वांचन किया न ? (तो ऐसा लगा कि) अपनेमें नहीं है तो अपने भी थोडा बनाओ. बनाने गये लेकिन

ऐसा नहीं हुआ, दूसरे प्रकारका किया. यह तो संतों, वीतरागके डेरायतों, केवलज्ञानके पंथ पर चलनेवाले, आहाहा ! और केवलज्ञान अल्पकालमें लेनेवाले, चलनेवाले और लेनेवाले, आहाहा ! इन संतोंकी यह वाणी, यह केवलज्ञानकी दिव्यध्वनिका सार है. समझमें आया ?

(यहां) ४७ (शक्तिमें) कहते हैं, “स्वभावमात्र..” स्वभावमात्र (अर्थात्) अपना आनंद, ज्ञान आदि स्वभाव. यह “स्वभावमात्र स्व..” उसका परिणामन भी स्वभावमात्रमें आ जाता है. क्योंकि, स्वभाव, स्व-स्वभाव है, उसका परिणाममें तान हुआ बिना स्व स्वभाव है, ऐसा आया कहांसे ? समझमें आया ? क्या कहना है ? कि, यहां तो “स्वभावमात्र स्व..” ऐसा दिया है. और बादमें स्वामित्व (दिया है). (अर्थात्) स्वका स्वामित्व.

भगवान आत्मा ! अनंत गुणरूपी स्वभाव उसका स्व (है). उसका स्वामित्व, कब होता है ? कि पर्यायमें जब परिणामन होता है. तब उसको यह स्व स्वभाव पूर्ण है, ऐसा तान आया. इस पर्यायमें भी स्व स्वामी संबंधकी पर्यायका अंश प्रगट होता है. पीछे द्रव्य, गुण और पर्याय तीनोंमें स्वभाव शक्तिका व्यापकपना है, आहाहा !

यहां स्वभाव मात्र स्व कहां तो स्वभाव मात्रमें अकेले त्रिकालीको नहीं लेना. पर्यायमें स्वभावमात्रका तान हुआ, तब यह स्वभावमात्र स्व, ऐसा तान हुआ है. निर्मल पर्याय, निर्मल गुण और निर्मल त्रिकाली द्रव्य, तीनोंमें स्वस्वामी संबंध शक्तिका व्यापकपना है. आहाहा ! ऐसा धर्म (है), आहाहा !

यह समयसार मिथ्यादृष्टिके लिये, अप्रतिबुद्धके लिये कहा है. पहले आया है. हम अप्रतिबुद्धके लिये समयसार कहते हैं, आहाहा ! अरे प्रभु ! क्या करते हो तुम ? भाई ! जैसे वीतरागमार्गमें बयाव नहीं होता, आहाहा ! समझमें आया ?

यौथे गुणस्थानमें सिद्धपदकी दशाका अंश प्रगट हो गया, आहाहा ! जितनी सिद्धकी निर्मल पर्यायकी संख्या है, वह निर्मल पर्याय पूर्ण है और यौथे गुणस्थानमें उसके अंशकी शुरुआत हो गयी. ‘सिद्ध समान पद मेरो’, आहाहा ! ‘सिद्ध समान सदा पद मेरो’ इसमें पर्यायकी अपेक्षासे (बात) नहीं है, शक्तिकी अपेक्षासे (बात) है. सिद्धपद स्वभाव है, ऐसा जहां तान हुआ तब स्वभाव है, ऐसी प्रतीति आयी. है तो है सही. है लेकिन उसकी प्रतीतिमें नहीं आये तो उसको है, कहां ? समझमें आया ?

जिसकी ज्ञानकी पर्यायमें यह ज्ञेय न हो तो यह ज्ञान हुआ, यह आया (कहांसे) ? उसका ज्ञान कहां हुआ ? वह तो पर्यायका हुआ, रागका ज्ञान हुआ. वह उसके (स्वरूपका) ज्ञान नहीं. आहाहा ! समझमें आया ? भगवान आत्मा ! यैतन लक्षणसे लक्षित, यैतन्य स्वभावसे यैतन (लक्षित होता है). वर्तमानमें ज्ञानकी पर्याय ज्ञेय-स्वज्ञेयको जानकर प्रगट हुई, उसमें आत्मा ज्ञेय है, ऐसा जाननेमें आया. वर्तमान पर्यायमें स्वस्वामि संबंध शक्तिका भी अंश आया, उसके द्वारा स्वस्वामी (संबंध) शक्तिकी प्रतीति आयी, आहाहा ! समझमें आया ?

अेक बार प्रश्न हुआ था. अेक मुमुक्षु थे उनको काठियावाडमें पडला द्विगंबरका अत्यास था. उनके लडकेने प्रश्न किया, 'महाराज ! यह कारण परमात्मा, कारण परमात्मा (कहते हो) त्रिकावी वस्तुको तुम कारण परमात्मा कहते हो, कारण परमात्मा (है) तो कारणका कार्य तो आना याहिये. कारण परमात्मा त्रिकावी अनंत गुणका कंद (है). कारण जब कही कि कारण परमात्मा कही (अेक ही बात है). आहाहा ! कारण ही तो कार्य तो आना ही याहिये'. अैसा प्रश्न किया. कारण परमात्मा (है लेकिन) कार्य तो है नहीं. कारण परमात्मा तो अनादिसे है और कार्य तो है नहीं और सम्यग्दर्शनका कार्य तो है नहीं. तो उसे कारण परमात्मा कैसे कहना ?' (उसे) कहा, 'भाई ! जिसकी प्रतीतिमें कारण परमात्मा आया उसके (दिये) कारण परमात्मा है', आहाहा ! जिसकी प्रतीतिमें आया नहीं उसको कारण परमात्मा कहां है ? समझमें आया ? आहाहा !

कारण परमात्मा त्रिकावी अनंत गुणस्वरूप भगवान (है). परंतु यह कारण परमात्मा तो अनादिसे है. लेकिन यह अनादि है (उसका) इसकी पर्यायमें भास नहीं हुआ, पर्यायमें भास नहीं हुआ, वहा तक इसको कारण परमात्मा कहां है ? मिथ्याश्रद्धावालेको कारण परमात्माकी श्रद्धा नहीं है. उसको कारण परमात्मा कहां है ? आहाहा ! मिथ्याश्रद्धावालेको तो राग और पर्यायकी श्रद्धा है. उसके कारण पर्यायमें राग है. सम्यक्दृष्टिको कारण परमात्माकी श्रद्धा है, आहाहा ! समझमें आया ? (सम्यक्दृष्टिको) 'यह है', (अैसा) सत्ताका स्वीकार (है).

पहले कहा था. समयसार १७-१८ गाथामें अैसा आया है. प्रत्येक अज्ञानीकी ज्ञानकी पर्यायमें भी पर्यायका स्वभाव स्वपरप्रकाशक होने से, अज्ञानीकी ज्ञानकी पर्यायमें भी स्वज्ञेय जाननेमें आता है. आहाहा ! क्या कहा ? ज्वराज ज्ञानकी अेक समयकी पर्यायमें (जाननेमें आता है). अज्ञानीकी पर्यायमें भी ज्वराज ही ज्ञानमें आता है. ज्वराज ही ज्ञानकी पर्यायमें जाननेमें आता है, लेकिन अज्ञानीकी दृष्टि द्रव्य पर नहीं, इसलिये उसे ज्ञानमें आने पर भी उसकी पर्यायमें कारण परमात्मा आया नहीं. ज्ञानमें द्रव्य आया फिर भी, द्रव्य पर दृष्टि नहीं है तो उस पर्यायमें द्रव्य आया नहीं. समझमें आया ? आहाहा ! वीतराग मार्ग बहुत अलौकिक, भापू ! आहाहा !

(लोगोंको) सम्यग्दर्शनकी ખबर नहीं. सम्यग्दर्शनका विषय अत्मे है और अनंती शक्तिका अेक अंश सम्यग्दर्शनमें प्रगट होता है, उसकी तो ખबर नहीं और व्रत, तप और संयम लो (तो धर्म हो जायेगा), आहाहा ! (अैसा मानते हैं). (परंतु वह सब) 'अेकडा विनाना मिंडा छे'. (हिन्दीमें) क्या कहते हैं ? अेक बिनाके शून्य हैं, आहाहा !

यहां कहते हैं, आहाहा ! गजब काम किया है ! 'ग्रंथाधिराज तारामां भावो ब्रह्मांडना भर्या' यहां अेक-अेक शक्तिमें ब्रह्मांडके भाव भरे हैं, आहाहा ! अरे ! लोगोंको बेचारोंको बाहरमें पीय दिया है. अपनेको राग और पर्याय जितना माना, वह तो बहिर्आत्मा है.

क्योंकि पर्याय बहिरत्त्व है. वस्तु है यह अंतःतत्त्व है और एक समयकी पर्याय भी बहिरत्त्व है. एक समयकी पर्याय पर दृष्टि है और वहां रहा है, वह तो बहिर्आत्मा है. आहाहा ! बहिरत्त्वको अपना पूर्ण (स्वरूप) माना है, वह बहिर्आत्मा है, आहाहा ! समझमें आया ? अंतः आत्मा—अंतर आत्मा—अंतःतत्त्व जो ज्ञायक मूर्ति जो अनंत शक्तिका पिंड है, उसका जहां अंतरमें स्वीकार किया, तब वह अंतरआत्मा होता है. आहाहा ! समझमें आया ? एक समयकी पर्यायमें अंतर सारी चीज अंदरमें जाननेमें आती है, वह दृष्टि तो है नहीं और एक समयकी पर्यायमें रहा और उसके भेदमें भेद किया. वह पर्याय बहिरत्त्व है. अंतःतत्त्वसे (विद्ध) बहिरत्त्व है. नियमसारमें शुद्ध भाव अधिकारमें पहली गाथा (है). 'जीवादिबहिरत्त्वं' पहली गाथा है. (क्रमसे) उ८ गाथा है. 'जीवादिबहिरत्त्वं' यहां ज्वादि यानी ज्वकी पर्यायको ज्व लेना. 'जीवादिबहिरत्त्वं हेय' वह हेय है. उपादेय, 'अप्पणो अप्पा' आत्मा जो त्रिकाली ज्ञायकभाव वह आत्मा उपादेय है, समझमें आया ? आहाहा ! निर्मल पर्याय हो, उसको भी यहां बहिरत्त्व कहनेमें आया है. संवर, निर्जराकी पर्याय है, वह भी बहिरत्त्व है. पर्याय है न वह ? (इसलिये बहिरत्त्व कहा है). आहाहा ! 'जीवादिबहिरत्त्वं हेय' वह हेय है. समझमें आया ? आहाहा !

यहां ज्वकी पर्यायको ज्व कहा और संवर, निर्जराको भी पर्याय कहा और पुण्य, पाप, आस्रवको भी पर्याय कहा. नौ तत्त्वकी पर्याय हेय है, आहाहा ! 'उपादेय अप्पणो अप्पा' ज्वादि सात तत्त्वोंका समूह पर द्रव्य है. गजब है ! यहां संवर, निर्जराकी पर्यायको भी परद्रव्य कहा है. (वह) अंतर तत्त्व नहीं. वह तो पर द्रव्य है. अंतर तत्त्व स्वद्रव्य है तो पर्यायको पर द्रव्य कहा, आहाहा ! समझमें आया ? इसमें कहां सीपने जाये ? कुरसद नहीं मिलती. मुश्किलसे ५०-६० वर्षकी उम्रमें कुरसद मिलती है, आहाहा ! भगवानका औसा स्वरूप ! अरे..! उसको सुनने नहीं मिले, तो ज्ञान (तो) कब हो ? और कैसे अंतरमें उतरे ? आहाहा ! इसके बिना सब झोगट है.

राग तो हेय है. दया, दानका विकल्प तो हेय है. परंतु स्वभावके आश्रयसे संवर, निर्जराकी (पर्याय) जो उत्पन्न हुई, वह भी हेय है. यह नियमसार भगवान कुंडकुंडआचार्यके सिद्धांत यह सब उत्कीर्ण किया है. समयसार, प्रवचनसार, पंथास्तिकाय, अष्टपाहुड और नियमसार पांय शास्त्र उत्कीर्ण किये हैं, आहाहा !

यहां कहते हैं, आहाहा ! गजब बात है ! जहां दया, दान, व्रतका विकल्प है वह तो हेय है. परंतु जहां द्रव्यदृष्टि करनी है, वहां संवर, निर्जराकी पर्याय भी हेय है. अरे..! यारित्रकी पर्याय भी हेय है. संवर कहां कि यारित्र कहां (एक ही बात है). आहाहा ! सम्यक्यारित्र (की बात है). जो भगवान आनंदकंदमें रमणता करता है, यह रमणता करनेकी यारित्र दशा (है). पंय मलाव्रत, यह कोई यारित्र नहीं है, आहाहा ! यह (सम्यक) यारित्र

दशा भी होय है. क्योंकि पर्यायके लक्षसे तो राग उत्पन्न होता है. यारित्रकी दशाको भी (यहां होय कहा है). सम्यक्चारित्र दशा—सम्यग्दर्शन सहित स्वरूपकी रमणताकी दशा, उसको यहां पर द्रव्य कहा है. त्रिकावी स्व द्रव्यकी अपेक्षासे पर्यायको पर द्रव्य कहा है, आहाहा !

अक बार श्रीमद् राजचंद्र कहते थे. श्रीमद् राजचंद्र गृहस्थाश्रममें थे और तत्त्वदृष्टि हुई थी. वे बात करते थे कि, इस नादको कौन सुनेगा ? कौन हां कहेगा ? त्रिकावी परमात्माका यह नाद है. समझमें आया ? आहाहा !

यहां तो पर द्रव्य होनेसे वास्तवमें उपादेय नहि है. संस्कृत है, देओ ! 'हेयौपादेयतत्त्वस्वरूपाख्यानमेतत्। जीवादिसप्ततत्त्वजातं परद्रव्यत्वान्न ह्युपादेयम्।' आहाहा ! अरे..! तत्त्वकी दृष्टिकी जबर नहीं. तत्त्वज्ञान क्या चीज है ? उसकी जबर नहीं और यह किया, व्रत लिया, यह किया और वह किया. संसारका नाश करनेका यह उपाय नहीं, आहाहा !

यहां कहते हैं, "स्वभावमात्र.." जैसे कारण परमात्मा है, लेकिन उसकी प्रतीति और ज्ञानमें आया उसके लिये (कारण परमात्मा) है. ऐसा स्वभाव त्रिकावी है, त्रिकावी ज्ञायकस्वभाव विद्यानंद है, वह स्व है — लेकिन किसको ? आहाहा ! जिसका आश्रय करके जाने, उसे (त्रिकावल स्वभाव है), आहाहा ! "स्वभावमात्र स्व-स्वामित्वमयी..." सम्यग्दर्शन-ज्ञानमें स्वका भान हुआ तब यह स्वभाव है, स्वभावमात्र शक्ति है, उसकी प्रतीति आयी. तो साथमें स्वभावमात्र शक्तिको धरनेवाले द्रव्यकी प्रतीति आयी. वह प्रतीतिकी पर्यायमें स्वपना आया. जो स्वभावमात्र स्व था, वह अंदर सम्यग्दर्शन, ज्ञानकी पर्यायमें भी स्व स्वभाव आया. क्योंकि स्वभावमात्र स्व—(ऐसा लिखा है). स्वभावमात्र शक्ति द्रव्य, गुण, पर्याय तीनोंमें व्याप्त हुई. द्रव्य-गुणमें तो थी लेकिन पर्यायमें उसका आश्रय लिया और जब पर्याय प्रगट हुई तो स्व स्वामि अंश पर्यायमें भी आया. समझमें आया ? जो त्रिकावी ज्ञायक स्वभाव भगवान् आत्मा ! स्व (है). परंतु स्वका परिणामनमें भान हुआ, उसमें स्व आया. तो स्व स्वामिसंबंध शक्तिका (परिणामन साथमें आया). आहाहा ! बहुत समा दिया है ! कहते हैं कि, अंदर शुद्ध चैतन्यद्रव्य, शुद्ध गुण और उसकी शुद्ध परिणति हुई, वह अपना स्व और उसके साथ स्वामित्व (अर्थात्) उस स्वका स्वामित्व धर्मी है. रागका, पुण्यका, व्यवहार रत्नत्रयका विकल्प, यह स्व और इसका स्वामि ज्ञानी नहीं है. आहाहा !

दूसरी तरफसे कहें तो, यह तो अलौकिक बातें हैं ! यहां दुकानमें से कुछ मिले ऐसा नहीं है. सारा दिन पापमें और पापमें (जाये). अरेरे...! जिंदगी यही जाती है. आहाहा ! भुदको क्या करना है ? (इसकी) जबर भी नहीं. अरेरे..! आहाहा !

यहां कहते हैं, भगवान् ! सुन तो सही, प्रभु ! तेरी स्वभावमात्र जो चीज है, वह तेरा स्व (है). उसके परिणामनमें भी स्वभाव आदि आया तो, यह शुद्ध द्रव्य, गुण और

पर्याय यह अपना स्व (है). और उसके स्वामित्व (अर्थात्) स्वस्वामित्व संबंध उसके साथ है. राग स्व नहीं, तो स्वामिपना भी नहीं, आडाडा ! भाषा कैसी है देभो ! “स्वभावमात्र स्व-स्वामित्वमयी संबंधशक्ति” जैसे दिया है. “स्व-स्वामित्वमयी संबंध शक्ति” अपना ज्ञायकभाव जो अनंत शक्तिसे त्तरपूर पडा है, ऐसा जहां अनुभव हुआ, सम्यग्दर्शन हुआ तो स्व आत्म स्वभाव, उसके परिणामनमें भी स्वभाव आया. यह स्वभाव शक्ति तीनोंमें व्यापी. द्रव्यमें, गुणमें तो थी. अनादिसे द्रव्यमें और गुणमें तो स्वभाव शक्ति थी. लेकिन तान हुआ तब पर्यायमें उसका अंश आया. आडाडा ! ऐसी बातें कहां हैं ? भाई ! आडाडा !

द्विगंबर संतोंके सिवा ऐसा वस्तुका स्वरूप कहीं नहीं है. आडाडा ! द्विगंबर संतोंने क्रुशा करके जगतके पास सारा तत्त्वको जहिर किया, प्रभु ! वारसा रभकर गये लेकिन वारसा लेनेवाले रहे नहीं. बाहरका वारसा—राग, दया, व्रतको पालना, यह वारसा भगवानका नहीं. आडाडा !

श्रोता : बाहरमें कोई दिखानेवाला तो याहिये न ?

पूज्य गुरुदेवश्री : लेकिन कब दरकार की ? समजमें आया ? बात तो सखी है, बापू ! लेकिन क्या हो सकता है ? भाई ! आडाडा ! किसीको ऐसा लगे कि, तुम्हारी दृकान सखी और हमारी सब दृकान गलत ? प्रभु ! वस्तुका स्वरूप ऐसा है. समजमें आया ?

(यहां) क्या कहते हैं ? ‘स्व-स्वामित्वसंबंध’ शब्द पडा है. अपना द्रव्य शुद्ध है, गुण शुद्ध है, गुणमें स्वस्वामि शक्ति भी शुद्ध है और जब शक्तिका धरनेवाला द्रव्यका पर्यायमें अनुभव हुआ तो स्वस्वामि शक्तिका परिणामनमें अंश आया. तो द्रव्य, गुण और पर्याय तीनों स्वभाव है. उसका स्व (माने) अपना है और उसका स्वामि आत्मा है. ऐसा स्वस्वामिसंबंध उसके साथ है.

‘पत्निका पति हुं’, ऐसा स्वामि संबंध आत्मामें नहीं है. कहते हैं न ? कि, मैं पत्निका पति हुं. धूलमें भी (पति) नहीं है. यह नृपति कहते हैं न ? नृपति यानी राजा. नर यानी मनुष्यका पति. धूलमें भी पति नहीं, आडाडा ! तेरेमें स्व-स्वामि संबंध नामका गुण है न ! प्रभु ! इस गुणका कार्य क्या ? निर्मल परिणति जो लुई (उसका वह स्वामि है). स्वस्वामि संबंधमें अधिकरण शक्तिका भी रूप है और उसमें ज्ञान, दर्शन, आनंदका भी रूप है. आडाडा ! गजब काम किये हैं ! शक्तिने तो गजब काम किया है !

अकबार कडा था. रावणने लक्ष्मणको शक्ति मारी. कथामें आता है न ? रामचंद्रज, लक्ष्मण और सीता वनवासमें गये. पिताजकी आज्ञा लुई. तेरी माताने ऐसा कडा कि, मेरे पुत्रको राज मिलना याहिये. अब सभेरेमें तो (रामचंद्रजको) राज देनेका उसके गुरुने—वसिष्ठ गुरुने नक्की किया था. रामचंद्रको सभेरे गादी देनी. दुनियाकी दरकार किये बिना राम, सीता और लक्ष्मण तीनों यह पडे. ओरमान माताने कडा हो लेकिन उस पर द्वेष नहीं, आडाडा !

“રઘુકુલ ઐસી રીતિ ચલી આયી, પ્રાણ જાયે પર વચન ન જાયે’ આહાહા ! માતાકો (દિયા હુઆ) વચન થા. પિતાજીને દિયા હુઆ વચન હૈ. પિતાજીને બરાબર કિયા હૈ. હમ તો વનવાસમેં ચલે જાયેંગે, આહાહા !

એસે કરતે-કરતે લંકામેં રાવણકે પાસ ગયે તો લક્ષ્મણ પર બાહરકી વિદ્યાકી શક્તિ મારી. બડે પંડાલ (બાંધે હુએ થે). પંડાલ સમજે ? તંબુ. તંબુમેં ૧૦-૧૦ હજાર, ૨૦-૨૦ હજાર આદમી ઔર લક્ષ્મણ (બેહોશ) પડે (હૈં). આહાહા ! (લક્ષ્મણજી) ગિરે તો કહા, હમ દુકાન પર (બૈઠતે થે) તબ ગાતે થે. ૬૫-૬૬ સાલકી બાત હૈ. ‘આવ્યા હતા ત્યારે ત્રણ જણા અને જાશું એકાએક ! માતાજી ખબરું પૂછશે તેને શું-શું જવાબ દઈશ ? લક્ષ્મણ ! બંધવ એકવાર બોલ ન’ ! આહાહા ! બંધવ બોલને એકવાર ! એકવાર બોલને ભાઈ ! ત્રણ જણ આવ્યા અને હું એકલો જઈશ. માતા પૂછશે કે શું થયું ? સીતાજીને (રાવણ) લઈ ગયા. લક્ષ્મણ (ઇસ પ્રકાર બેહોશ હો ગયે), આહાહા !

કિસીને કહા કિ, એક વિશલ્યા નામકી કન્યા હૈ. બાલ બ્રહ્મચારી હૈ, અભી શાદિ નહીં કી ઔર ઉસકે પાસ એક શક્તિ-સિદ્ધિ હૈ. પરંતુ વહ આપકે ભરતકે રાજમેં રહા રાજા હૈ. ભરતકો હુકમ કરો કિ, ઉસ રાજાકી કન્યાકો યહાં ભેજે. આહાહા ! વિશલ્યા તંબુમેં આતી હૈ. વહા ઘાયલ (સિપાહી થે) વહ અચ્છે હોને લગે. વૈસે જહાં લક્ષ્મણકે પાસ જાતી હૈ, વહાં લક્ષ્મણકી શક્તિ ખુલ જાતી હૈ. જાગતા હૈ (ઔર પૂછતા હૈ) રાવણ કહાં ગયા ? વહ ભાવ (લેકર) સોયા થા ન ? રાવણ કહાં ગયા ? વહ શક્તિ ઊડ ગઈ, આહાહા ! યહાં કહતે હૈં કિ, વિશલ્યા-આત્માકી પર્યાય શલ્ય બિનાકી જાગતી હૈ. આહાહા !

મિથ્યાદર્શનકે શલ્ય બિનાકી પરિણતિસે જહાં જાગતા હૈ, વહાં આત્મા જાગ ઊઠતા હૈ કિ, ‘મેં તો આત્મા આનંદકા કંદ હું’ આહાહા ! સમજમેં આયા ? બહનને લિખા હૈ ન ? બહુત સાદે શબ્દોમેં (લિખા હૈ), મુજે તો ઉસ શબ્દસે ઘાવ લગ ગયા. ‘જાગતો જીવ ઊભો છે ને ? તે ક્યાં જાય ?’ આહાહા ! સાદી ભાષા ! એકદમ બાલક જૈસી ! અંદર જાગતો જીવ ઊભો છે ને ? યાની ? જાગૂત જ્ઞાયક ભાવ તત્ત્વ ધ્રુવરૂપમેં અંદર ખડા હૈ ન ? વહ ધ્રુવ કહાં જાયે ? ધ્રુવ કહાં જાયે ? પર્યાયમેં આયે ? રાગમેં આયે ? કહાં જાયે ? તેરી દૃષ્ટિ કર તો જરૂર તુજે પ્રાપ્ત હોગા. સમજમેં આયા કુછ ? બહુત સાદી બાલક જૈસી ભાષા, કોઈ સંસ્કૃત-વ્યાકરણકી (કઠિન ભાષા નહિ હૈ).

જબ આત્મામેં વિશલ્યા નામકી પરિણતિ-શક્તિ જાગી, વહ જાગી (ઉસને) સારે આત્માકો જગા દિયા, આહાહા ! (અભી તક) આત્મા રાગકી એકતામેં મુર્છા ગયા થા. સમજમેં આયા ? આહાહા ! રાગકે વિકલ્પકી, દયા, દાન આદિકે વિકલ્પકી એકતામેં મુર્છા ગયા થા. અબ ઉસકી શક્તિકો જગાની હૈ, આહાહા ! ઉસકા (રાગકા) વ્યય કરકે સ્વસ્વામિ સંબંધ શક્તિકી પર્યાય પ્રગટ હુઈ (તો) નિર્મલ પર્યાય, નિર્મલ ગુણ ઔર નિર્મલ દ્રવ્ય યહ સ્વ (ઉસકા) સ્વામિ (હૈ).

(यह) स्वके साथ स्वामिका संबंध है. रागके साथ स्व और स्वामिका संबंध नहीं है. रागके साथ, व्यवहार रत्नत्रयके साथ ज्ञेय-ज्ञायकका संबंध व्यवहार मात्र है. आहाहा ! क्या कहा ? यह तो संबंध शब्द आया न ?

आत्मामें अंदर स्वस्वामि संबंध नामका गुण है. उस गुणकी परिणति कब होती है ? कि, द्रव्य पर दृष्टि होनेसे स्वस्वामि संबंधकी परिणतिमें, विकार रहित निर्मल दशा उत्पन्न हो, तो उसमें यह आत्मा स्व है, ऐसी परिणति आयी. तो गुण भी स्व है और परिणति भी स्व है. उसका स्वामि आया. उसके साथ स्वस्वामि संबंध है. लक्ष्मीके साथ, पैसेके साथ, लडकेके साथ, मकानके साथ, यह स्व है और मेरा है, (यह बात है ही नहीं). आहाहा ! अरे..! यहां तो कहते हैं कि, व्यवहार रत्नत्रय जो देव, गुरु, शास्त्रकी श्रद्धा और पंथ मलाप्रतका परिणाम—राग, उसके साथ स्वस्वामि संबंध नहीं. इसके साथ ज्ञेय-ज्ञायक संबंध है. आहाहा ! प्रभु ! यह पैसे तेरे कहां है ? वह तो जउके हैं.

अरे ! प्रभु ! अंदर दया, दान, व्रतका विकल्प ठीके तो (भी) तेरी यीजमें क्या है ? वह तो विकृत दशा है, पर है. आहाहा ! यहां जहां निर्मल पर्यायको पर द्रव्य कहा और हेय कहा तो भविन पर्याय तो हेय..हेय..हेय लाभभार हेय है. हेय तीनभार कहा. दर्शनमें हेय, ज्ञानमें हेय और यारित्रमें हेय. तीनोंमें हेय है. आहाहा ! समजमें आया ? शक्तिका वर्णन बहुत गजब है ! आहाहा !

अरेरे...! सत्य बात सुनने नहीं मिले और जिंदगी मजदूरी करके यही जाये, आहाहा ! राग-द्वेषकी मजदूरीकी (बात है). क्रियाकांडकी नहीं, बाहरकी (मजदूरी) नहीं, पुण्य और पापके विकल्प करके मजदूरी करता है, आहाहा !

भगवान ! अंक बार सुन तो सही नाथ ! तेरे स्वरूपमें अनंत शक्तिकी संपदा पडी है. उसमें यह स्वस्वामि संबंध नामका गुण पडा है. यह गुणका गोदाम भगवान है ! आहाहा ! अरेरे..! अंदरमें उसका आधार स्वरूप है. वर्तमान स्वसंवेदन परिणति उत्पन्न होती है, यह स्वस्वामि संबंधकी परिणती हुई, यह अपने आधारसे हुई है. स्वस्वामि संबंध अपना आधारमें है. राग-व्यवहार रत्नत्रय स्व नहीं, वह तो पर है और उसके साथ स्वस्वामिपनाका संबंध नहीं है. धर्मीको रागका स्वामीपना कभी नहीं होता. जिसको धर्मी कहें, समकित्ती कहें, वे दया, दान, व्रतके (और) व्यवहार रत्नत्रयके स्वामि तीन कालमें नहीं है. समजमें आया ? आहाहा ! ऐसी बात (है) !

“स्वभावमात्र स्व-स्वामित्वमयी..” (अर्थात्) स्वका स्वामीपना. अपना स्वका स्वामि आत्मा है. अपना शुद्ध द्रव्य, गुण, पर्याय स्व (है). उसका स्वामि है—रागका स्वामि नहीं. रागका स्वामि हो वह मिथ्यादृष्टि है. आहाहा !

यहां तो (लोग ऐसा कहे) क्रिया करो, व्यवहार करते-करते निश्चय होगा. अरे भगवान !

क्या करते हो प्रभु तुम ? अरे..! (उस) दुनियामें भगवानका विरह हो गया. केवलज्ञानी रहे नहीं और केवलज्ञानकी उत्पत्तिका भी विरह पड गया, आहाहा ! समझमें आया ? जैसे कालमें तू क्या कर रहा है, प्रभु ? रागकी क्रिया व्यवहार रत्नत्रयसे निश्चय होगा, सराग संयम है उससे वीतराग संयम होगा, अरेरेरे...! ऐसी प्रज्ञा ! आहाहा ! स्वरूपका घात करनेकी बात है. समझमें आया ?

भगवानकी वाणी तो ऐसी है, प्रभु ! जिनेन्द्रदेव त्रिलोकनाथ वीतराग (ऐसा कहते हैं कि) वीतरागकी परिणतिसे धर्म उत्पन्न होता है – रागसे नहीं. आहाहा ! स्वद्रव्यका आश्रय करते हैं तो वीतरागकी परिणति उत्पन्न होती है. व्यवहार रत्नत्रयका आश्रय करते हैं तो वीतरागी परिणति उत्पन्न होती है, (ऐसा) तीनकाल, तीनलोकमें नहीं. समझमें आया ?

स्वस्वामित्वमयी संबंध शक्ति. “(अपना भाव अपना स्व..)” (उसमें) द्रव्य, गुण, पर्याय तीनों लेना. “(अपना भाव अपना स्व है और स्वयं उसका स्वामि है)” स्वयं अपना स्वामि—भुट स्वयं स्वामि—अपना स्वामि अपनेको है. आहाहा ! रागके साथ स्व स्वामि संबंध तीन कालमें नहीं है. सम्यक्दृष्टिको स्वस्वामि संबंध अपने स्वरूपमें है. सम्यक्दृष्टि ज्ञानको—धर्मकी पहली सीढ़ीवाला, सम्यग्दर्शन, मोक्षमहलकी पहली सीढ़ी (वालेको) सम्यग्दर्शनमें रागका स्वामिपना और राग अपना (है, ऐसी मान्यता) नहीं है, आहाहा ! व्यवहार रत्नत्रयका विकल्प ठीकता है—आता है, वह ज्ञेय-ज्ञायक संबंधमें जाता है. वह पर ज्ञेयमें (जाता है). राग परज्ञेय (है). स्वज्ञेय अपना द्रव्य, गुण, पर्याय तो भिन्न (है). आहाहा ! राग परज्ञेय (और) भगवान (आत्मा) स्वज्ञेय. उसमें परज्ञेयका ज्ञाता और ज्ञेय इतना व्यवहार संबंध है. आहाहा ! समझमें आया ? उसके साथ दूसरा संबंध है ही नहीं, ऐसा कहते हैं. व्यवहार रत्नत्रयके साथ धर्मीका दूसरा संबंध है ही नहीं. भीठो महेरामण अंदर जूले छे ने ? आहाहा ! उसमें रागका – जहरका तो अभाव है, आहाहा ! उसका स्वामिपना उसको नहीं है. विशेष करें...

